Celebrating Mahamana Pt. Madan Mohan Malaviyaji

150th Birth Anniversary

Hallmark of excellence

वार्षिक प्रतिवेदन
Annual Report
2011-12

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
Banaras Hindu University

वार्षिक रिपोर्ट

२०११-२०१२

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

सम्पादन समिति

अध्यक्ष
प्रो. सुशीला सिंह
अंग्रेजी विभाग, म.म.वि.

सदस्य
प्रो. अवधेश प्रधान
हिन्दी विभाग, कला संकाय

प्रो. राजीव रमन
जीव विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय

प्रो. ए. वैशम्पायन
आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग
कृषि विज्ञान संस्थान

प्रो. अनिता सिंह
अंग्रेजी विभाग
कला संकाय

प्रो. राजेश सिंह
अध्यक्ष, समाचार पत्र प्रकाशन एवं प्रचार प्रकोष्ठ

प्रो. मनोज पाण्डेय
सर्जिकल ऑन्कोलॉजी विभाग
चिकित्सा विज्ञान संस्थान

सदस्य सचिव
श्री मनोज कुमार पाण्डेय
उप-कुलसचिव (शिक्षण)

लेआउट एवं डिजाइन परिकल्पना: **टी. नाथ**
कुलसचिव, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित।

संस्थापक

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय

२५.१२.१८६१ – १२.११.१९४६

(पौष कृष्ण अष्टमी, वि. सं. १९१८ – मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी, वि. सं. २००३)

The Founder

of the

BANARAS HINDU UNIVERSITY

Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya

25.12.1861 – 12.11.1946

(Paush Krishna Ashtami, V. S. 1918 – Margashirsha Krishna Panchami, V. S. 2003)

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नाऽपुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामाऽऽर्तिनाशनम् ॥

"I do not covet kingdom, neither heaven, nor Nirvana
the only desire to serve Disconsolate."

– Mahamana Malaviya

कुलगीत

मधुर मनोहर अतीव सुन्दर,
यह सर्वविद्या की राजधानी।

यह तीनों लोकों से न्यारी काशी।
सुजान धर्म और सत्यराशी।।
बसी है गंगा के रम्य तट पर,
यह सर्वविद्या की राजधानी। मधुर-।।

नये नहीं है यह ईंट पत्थर।
है विश्वकर्मा का कार्य सुन्दर।।
रचे हैं विद्या के भव्य मन्दिर,
यह सृष्टि की राजधानी। मधुर-।।

यहाँ की है यह पवित्र शिक्षा।
कि सत्य पहले फिर आत्म-रक्षा।।
बिके हरिश्चन्द्र थे यहीं पर,
यह सत्य शिक्षा की राजधानी। मधुर-।।

यह वेद ईश्वर की सत्यबानी।
बने जिन्हें पढ़ के ब्रह्मज्ञानी।
थे व्यास जी ने रचे यहीं पर,
यह ब्रह्मविद्या की राजधानी। मधुर-।।

वह मुक्तिपद को दिलाने वाले।
सुधर्म पथ पर चलाने वाले।।
यही फले फूले बुद्ध शंकर,
यह राज ऋषियों की राजधानी। मधुर-।।

सुरम्य धारायें वरुणा अस्सी।
नहाए जिनमें कबीर, तुलसी।।
भला हो कविता का क्यों न आकर,
यह वाग् विद्या की राजधानी। मधुर-।।

विविध कला अर्थशास्त्र गायन।
गणित खनिज औषधि रसायन।।
प्रतिचि-प्राची का मेल सुन्दर,
यह विश्वविद्या की राजधानी। मधुर-।।

यह मालवी की है देश भक्ति।
यह उनका साहस यह उनकी शक्ति।।
प्रकट हुई है नवीन होकर,
यह कर्मवीरों की राजधानी। मधुर-।।

मधुर मनोहर अतीव सुन्दर,
यह सर्वविद्या की राजधानी।

Dr. SHANTI SWARUP BHATNAGAR
Eminent Scientist
who composed the BHU Kulgeet

Kul-Geet (English Translation)

So sweet, serene, infinitely beautiful
This is the presiding centre of all learing.

Radiant Kashi, wonder of the three worlds
Treasure-Chest of Jnana, Dharma and Satya
Nestling on Ganga's bank, centre for all disciplines.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

No Recent work of brick and stone
Primordial design of divinity alone
Mansions of Vidya, centre for all creation.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

Clear here is the doctrine pure
Truth first, then only one's self
Home of Harishchandra, Truth's testing ground.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

The Voice of God in Vedic record
Constant Inspiration for soul-accord
Work-shop of Veda Vyasa, centre for Brahma Vidya.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

Find here the steps to freedom
Tread here the path of Dharma
Flaming trail Buddha's and Shankara's centre for philosopher-kings.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly- -)

Life-Giving waters of Varuna and Assi
Sustenance of Kabir and Tulsi
Fountainhead of eloquent speech and poetry.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

Music, Economics, other arts so many
Maths, Mining, Medicine and Chemistry
Fraternal forum of East and West, university in truest sense.
(So sweet, serene, infinitely beautifuly----)

Patriotism of Malaviyaji
His intrepidity and energy
All in youthful manifestation,
centre for men of action

So sweet, serene, infinitely beautiful
This is the presiding centre of all learing.

डा. लालजी सिंह
कुलपति

Dr. Lalji Singh
Vice-Chancellor

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी-२२१००५ (भारत)
BANARAS HINDU UNIVERSITY
(Established by Parliament by Notification No. 225 of 1916)
VARANASI-221 005 (INDIA)

वीसी/
नवम्बर ११, २०१२

प्राक्कथन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थानों, संकायों, विभागों, स्कूलों, केन्द्रों एवं अन्य इकाईयों के वर्ष २०११-१२ का शैक्षणिक तथा सहपाठ्यक्रमी गतिविधियों से युक्त वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। यह वर्ष अनेक सार्थक व महत्वपूर्ण शैक्षणिक एवं विकासात्मक कार्यक्रमों, नयी गतिविधियों तथा विश्वविद्यालय के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण गुणवत्तापूर्ण सुधारों का साक्षी रहा है।

विश्वविद्यालय अपने बहुआयामी शैक्षणिक क्षमता के साथ प्राकृतिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी विषयों के आपसी सहयोग के माध्यम से राष्ट्रीय सीमा के परे ज्ञान के संवादपरक संरचना निर्माण की दिशा में आगे बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय अपनी लगातार कोशिशों की वजह से देश के तीन सर्वोच्च विश्वविद्यालयों में अपना स्थान बनाये हुए है।

इस वर्ष दो संस्थान, एक संकाय और कई नये विभाग स्थापित किये गये हैं। शिक्षण-ज्ञान एवं शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए असाधारण उपाय के तौर पर संकायों की भर्ती प्रक्रिया को दृढ़ करने का प्रस्ताव किया गया है। विश्वविद्यालय ने अपनी १२वीं पंचवर्षीय परियोजना प्रस्ताव में अंतर-विषयी शोध एवं अध्ययन में सफलता की नयी बुलंदियां स्थापित करने हेतु लक्षित कई महत्त्वाकांक्षी परियोजनाएँ शुरू करने का प्रस्ताव किया है। वर्ष के दौरान पिछले तीन वर्षों से जारी अब तक की सर्वाधिक विस्तार वाली बुनियादी संरचनाएँ शुरू की गईं। शुरूआती दौर में प्रारम्भ की गयी कई महत्वपूर्ण बुनियादी विस्तार संरचनाएँ पूरी हो गईं एवं कई दूसरी परियोजनाएँ पूरा होने के कगार पर हैं।

यह अत्यंत गौरव का विषय है कि देश हमारे महान संस्थापक महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की १५०वीं जयंती वर्ष मना रहा है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति के संरक्षण में २७ दिसम्बर, २०११ को विज्ञान भवन, नयी दिल्ली में उद्घाटन समारोह में वर्ष पर्यंत मनाये जाने वाले कार्यक्रम पेश किये गए। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री द्वारा महामना पर एक डाक टिकट जारी किया गया।

मैं सम्पादक मण्डल के सदस्यों और इससे सम्बद्ध उन सभी व्यक्तियों, जिन्होंने इस वार्षिक प्रतिवेदन को तैयार करने में अथक परिश्रम किया है, की सराहना करता हूँ और उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

लालजी सिंह

(लालजी सिंह)

Phones : (0542) 2368938 / 2307220 (O), 2368339 / 2307209 (R), Fax : (0542) 2369100 (O), 2369951 (R), e-mail : vc_bhu@sify.com

मालवीय भवन

विषय सूची

भाग- १

१. भूमिका

१.१. विश्वविद्यालय - एक दृष्टि में १७-१९

१.२. शैक्षणिक सत्र २०११-१२ की प्रमुख विशेषताएँ २१-२६

२. विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अवयव (अंग)

२.१. मुख्य परिसर

२.१.१. संस्थान

२.१.१.१. कृषि विज्ञान २९-३६

२.१.१.२. चिकित्सा विज्ञान (आधुनिक, आयुर्वेद, दन्त चिकित्सा) ३७-४२

२.१.१.३. प्रौद्योगिकी ४३-५३

२.१.१.४. पर्यावरण एवम् संपोष्य विकास ५४-५६

२.१.२. संकाय

२.१.२.१. कला ५८-६०

२.१.२.२. वाणिज्य ६१-६२

२.१.२.३. शिक्षा ६३

२.१.२.४. विधि ६४-६५

२.१.२.५. प्रबन्ध शास्त्र ६६-६८

२.१.२.६. मंच कला ६९-७१

२.१.२.७. विज्ञान ७२-७८

२.१.२.८. सामाजिक विज्ञान ७९-८१

२.१.२.९. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान ८२-८५

२.१.२.१०. दृश्य कला ८६-८८

२.१.३. महिला महाविद्यालय ९०-९१

२.१.४. अध्ययन केन्द्र

२.१.४.१. खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र ९३

२.१.४.२. पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र ९४

२.१.४.३. आनुवांशिकी विकार केन्द्र ९५-९६

२.१.४.४. डी. एस. टी.-अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र ९७-९८

२.१.४.५. नेपाल अध्ययन केन्द्र ९९-१००
२.१.४.६. महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र १०१-१०२
२.१.४.७. मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र १०३-१०४
२.१.४.८. समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र १०५-१०६
२.१.४.९. सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र १०७-१०८
२.१.४.१०. मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र १०९
२.१.४.११. हाइड्रोजन ऊर्जा केन्द्र ११०
२.१.४.१२. नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इकाई/केन्द्र १११

२.१.५. स्कूल

२.१.५.१. सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज स्कूल ११३-११६
२.१.५.२. सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल ११७-११८
२.१.५.३. श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय ११९

२.१.६ का.हि.वि.वि. ग्रंथालय प्रणाली १२०-१२७
२.१.७ यू.जी.सी. ऐकेडमिक स्टाफ कॉलेज १२८-१२९
२.१.८ मालवीय भवन १३०-१३१
२.१.९ भारत कला भवन १३२-१३३

२.२. दक्षिणी परिसर १३५-१४०

२.३. विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत संचालित नगरीय महाविद्यालय

२.३.१. आर्य महिला पी.जी. कॉलेज १४२-१४४
२.३.२. वसन्त महिला महाविद्यालय १४५-१४७
२.३.३. वसन्त कन्या महाविद्यालय १४८-१५२
२.३.४. दयानन्द पी.जी. कॉलेज १५३-१५४

३. अध्ययन हेतु पाठ्यक्रम १५५-१६२

४. प्रदत्त उपाधियां/सनद/प्रमाण पत्र १६३

४.१. छात्रों की संख्या १६४-१६६

५. मानव संसाधन रूपरेखा १६७-१७०
६. वित्तीय संसाधन १७१-१७२
७. पुरस्कार, सम्मान व पेटेन्ट १७३-१८४
८. छात्रवृत्तियाँ/ अध्येतावृत्तियाँ (छात्रों के लिये) १८५-१८६
९. सुविधाएं १८७

९.१. आवास

९.१.१. छात्रावास (बालक) १८९-१९०
९.१.२. छात्रावास (बालिका) १९०-१९१
९.१.३. छात्रावास (विवाहित/विदेशी छात्र) १९१
९.१.४. विश्वविद्यालय कर्मचारियों के निवास हेतु आवास सुविधाएँ १९१

९.२. अतिथि गृह संकुल १९१-१९२
९.३. इन्टरनेट एवं संगणक १९२
९.४. सम्मेलन कक्ष १९२-१९३
९.५. पुरातन छात्र प्रकोष्ठ १९३
९.६. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् १९३-१९५
९.७. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय १९५-१९७
९.८. अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र १९७
९.९. समाचार पत्र प्रकाशन एवं प्रचार प्रकोष्ठ १९७-१९८
९.१०. विद्युत, जल और दूरभाष केन्द्र १९९
९.११. अनुरक्षण (भवन एवं उपकरण) १९९-२०६
९.१२. स्वास्थ्य देखभाल (अस्पताल और स्वास्थ्य केन्द्र) २०६-२०९
९.१३. विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद २०९-२१२
९.१४. छात्र अधिष्ठाता द्वारा आयोजित कार्यक्रम २१२-२१५
९.१५. अभिरुचि केन्द्र २१५-२१६
९.१६. जलपान गृह २१६
९.१७. राष्ट्रीय सेवा योजना २१६-२१९
९.१८. नेशनल कैडेट कोर २१९-२२०
९.१९. बैंक एवं डाक घर २२०
९.२०. रेल आरक्षण पटल २२०
९.२१. एयर स्ट्रीप एवं हेलीपैड २२०
९.२२. विपणन संकुल २२०

९.२३. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय क्लब २२०-२२२

९.२४. छात्र कल्याण

९.२४.१. संस्थापन सेवा २२२-२२४
९.२४.२. विश्वविद्यालय सेवायोजन सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र २२४-२२६
९.२४.३. छात्र परिषद् २२६-२२८
९.२४.४. नगर छात्र निकाय २२८
९.२४.५. समान अवसर एवं समावेशी पद्धति २२८-२३२
९.२४.६. पाठ्येतर क्रियाकलाप २३२-२३७

१०. नये अध्यादेश/संशोधन २३८

भाग – २

परिशिष्ट - १ विश्वविद्यालय के कोर्ट, कार्यकारिणी परिषद् व विद्वत् परिषद् के सदस्यगण एवं अधिकारीगण २३९-२५०

परिशिष्ट - २ विश्वविद्यालय के शिक्षकों के शैक्षणिक योगदान का विवरण २५१-२६६

परिशिष्ट - ३ विभिन्न अभिकरणों द्वारा वित्तपोषित शोध परियोजनाओं की सूची २६७-२७०

परिशिष्ट -४ वर्ष २०११-१२ में आयोजित कुछ प्रमुख संगोष्ठियाँ, सम्मेलन एवं कार्यशालाएँ २७१-२७६

परिशिष्ट - ५ वर्ष २०११-१२ में शैक्षणिक विचार-गोष्ठियों में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त शिक्षकों की संख्या का विवरण २७७-२८७

परिशिष्ट - ६ वर्ष २०११-१२ में सीधी नियुक्ति और पदोन्नति २८८

हिन्दी संस्करण

वार्षिक रिपोर्ट २०११-२०१२

केन्द्रीय ग्रंथालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

भाग - १

वार्षिक रिपोर्ट २०११-२०१२

अद्‌भुत स्थापत्य कला

प्रौद्योगिकी संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

१ - भूमिका

Banaras Hindu University
RESIDENTIAL COLONIES
GUEST HOUSES
SMALL TEMPLES
INSTITUTES & MAJOR ESTABLISHMENTS
FACULTIES
BHU Main (Lanka) Gate
Malaviyaji's Statue
YOU ARE HERE
Each Division along Roads (between kms) marked by thin cross line (in red) is 200 metres
Open Space
Water Body
Kendriya Vidyalay
Saraswati Mandir & Foundation Stone
Playground
Open Space
Madhuban
Mango Garden
Botanical Garden
Vishwanath Temple
Amphitheatre
Indoor Stadium
Office of Horticulturist
Central Nursery
Agricultural Farms
Agricultural Fields
Chittupur Gate
Seer Gate
Hyderabad Gate
Agricultural Farms
Dairy Farm
Airstrip
DEPARTMENTS & OTHER ESTABLISHMENTS
HOSTELS
OTHER ESTABLISHMENTS
Details as on January 2009
DR -DIAGONAL ROAD
RR -RADIAL ROAD
SCR -SEMI-CIRCLE ROAD
Prepared from IKONOS 1x1m Remote Sensing data in ArcGIS by
Dr.K.N.Prudhvi Raju (Professor), Sarvajeet Kumar (Research Scholar)
Dr.Kshitij Mohan (Research Assistant), & Manish Kumar Pandey (Research Scholar)
Department of Geography
0 100 200 300 400 500 1,000
Meters
To locate Institutes/Faculties/Departments and other establishments, search Sector-wise.
Sector Number(s) in the Index are given within brackets at the end of Institutes/Faculties/Departments and other establishments
Sectors in the Map are indicated by bold Numbers in Outline

BHU Layout

१.१. विश्वविद्यालय - एक दृष्टि में

ऐतिहासिक विवरण

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (का. हि. वि. वि.), देश के अति-प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक है जिसकी स्थापना महामना पंडित मदन मोहन मालवीयजी द्वारा सन् १९१६ में की गयी थी। यह एक स्वायत्तशासी उत्कृष्ठ संस्था है जिसके विज़िटर भारत के महामहिम राष्ट्रपतिजी हैं। यह एशिया का एकमात्र सबसे बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय है। पं. मदन मोहन मालवीयजी, डॉ. एनी बेसेंट एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन् जैसे मनीषियों की दूरदर्शिता का जीवन्त प्रतीक यह राष्ट्रीय संस्था प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान एवं आधुनिक वैज्ञानिक चिन्तन दृष्टि का एक अद्भुत संगम है। अपने ज्ञानदीप्त संस्थापक द्वारा पल्लवित-प्रतिपादित शिक्षा की समग्र और पवित्रतामूलक पद्धति को नूतन आयामों से जोड़कर यह विश्वविद्यालय युवा वर्ग का उन्नयन तथा उनकी सृजनात्मक प्रतिभा का संपोषण एवं सुविधाएँ प्रदान कर रहा है। यहाँ के यशस्वी कुलपतियों में महामना मालवीयजी, सर सुन्दर लाल, डॉ.एस. राधाकृष्णन् एवं आचार्य नरेन्द्र देव जैसे महापुरुष रहे, जिन्होंने इस महान विश्वविद्यालय का नेतृत्व किया। अपने प्रतिष्ठित विद्वानों के माध्यम से विशिष्ट क्षेत्रों में उच्चतम शिक्षा व ज्ञान के प्रसार में योगदान करने के साथ ही सामुदायिक मूल्यों का पुनर्स्थापन एवं सतत् प्रवाह का प्रमाण है कि यहाँ से ज्ञान प्राप्त विशिष्ट व्यक्तियों की एक लम्बी शृंखला सम्पूर्ण विश्व में विभिन्न व्यावसायिक संगठनों के प्रमुख पदों पर आसीन हैं। का.हि.वि.वि. ने अपने प्रभावशाली एवं परोपकारी अतीत के साथ ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

परिसर

पवित्र धार्मिक नगर वाराणसी नगर में पतितपावनी गंगा के पश्चिमी तट पर स्थित यह विश्वविद्यालय भारत की धार्मिक राजधानी प्राच्य विद्या ज्ञान केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध है। का.हि.वि.वि. के मुख्य परिसर का मनोहारी दृश्य १३०० एकड़ भू-क्षेत्र में फैला हुआ है जो अपने

आकर्षक वास्तुकला वाले स्मारकों, विशाल परिसर, हरे-भरे मैदानों एवं वृक्षों से आच्छादित शानदार पथों द्वारा अपने संस्थापक महामना मालवीयजी की व्यापक कल्पनाशक्ति एवं दूरदर्शिता का परिचायक है। का.हि.वि.वि. का राजीव गांधी दक्षिणी परिसर, २६०० एकड़ भू-क्षेत्र में फैला हुआ है, जो मुख्य परिसर से लगभग ८० किमी. दूर बरकछा (मिर्जापुर) में स्थित है।

का.हि.वि.वि. प्राच्य एवं पारम्परिक विषयों से लेकर आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तक के सभी शैक्षणिक विषयों में शिक्षण एवं अनुसंधान एक ही परिसर में स्थित होना इसकी अद्‌भुत पहचान है। विश्वविद्यालय की एक विशिष्टता यह भी है कि यहाँ छात्रों, शिक्षकों एवं सहयोगी कर्मचारीगण एक साथ रहकर अपने शैक्षणिक लक्ष्यों के लिए शिक्षण एवं सीखने की गुरुकुल पद्धति अपनाते हैं। यह विश्वविद्यालय स्वयं में एक नगरीय व्यवस्था है जिसके पास अपने सभी सम्बन्धितों एवं आवासियों की आवश्यकताओं को सुलभ कराने, संचालित करने एवं अनुरक्षण के लिए इसकी अपनी स्वयं की सेवा एवं सहायक प्रणाली विद्यमान है।

उद्‌देश्य

विश्वविद्यालय के उद्‌देश्य निम्नलिखित हैं :

- अखिल जगत की सर्वसाधारण जनता के एवं मुख्यत: हिन्दुओं के लाभार्थ हिन्दूशास्त्र तथा संस्कृत साहित्य की शिक्षा का प्रसार करना, जिससे प्राचीन भारत की संस्कृति और उसके उत्तम विचारों की रक्षा हो सके, तथा प्राचीन भारत की सभ्यता में जो कुछ महान तथा गौरवपूर्ण था, उसका निदर्शन हो।
- सामान्यत: कला तथा विज्ञान की समस्त शाखाओं में शिक्षा एवं अनुसंधान को बढ़ावा देना।
- भारतीय घरेलू उद्योगों की उन्नति और भारत की द्रव्य-संपदा के विकास में सहायक आवश्यक व्यावहारिक ज्ञान से युक्त वैज्ञानिक, तकनीकी तथा व्यावसायिक ज्ञान का प्रचार और प्रसार करना।
- धर्म तथा नीति को शिक्षा का आवश्यक अंग मानकर नवयुवकों में सुन्दर चरित्र का गठन करना।

महामना मालवीयजी की उच्च शिक्षा के साथ समन्वित नीति एवं मानवीय मूल्यों की दृष्टि को दिनों-दिन सृजित मूल्य-प्रोन्नयन नीति में वर्णित की गयी है। अपनी गुणवत्ता नीति के माध्यम से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने एक गुणवत्ता मूलक कार्य प्रणाली विकसित की है जो गुणवत्ता परक शिक्षण-अध्ययन, अनुसंधान, दूरस्थ सेवायें और शिक्षण व संस्थानों के प्रबंधन के माध्यम से सिद्धान्तों, मार्गदर्शिकाओं और विधियों के क्रियान्वयन के लिए निरन्तर आन्तरिक और सर्वाधिक बाह्य क्रियाविधि का क्रियान्वयन कर रहा है। भारत की राष्ट्रीय पर्यावरण नीति के क्रम में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने स्थानीय एवं वैश्विक पर्यावरण के संरक्षण को प्रेरित करने और स्थानीय व वैश्विक पर्यावरण का संरक्षण सुधार क्रियाओं के माध्यम से संपोष्य विकास के लिए कटिबद्ध है।

शैक्षणिक संरचना

विश्वविद्यालय ४ संस्थानों (चिकित्सा विज्ञान संस्थान, प्रौद्योगिकी संस्थान, कृषि विज्ञान संस्थान, पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान), १६ संकायों (आधुनिक औषधि, आयुर्वेद, दन्त चिकित्सा, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी, कृषि, पर्यावरण एवं संपोष्य विकास, कला, वाणिज्य, शिक्षा, विधि, प्रबन्ध शास्त्र, मंच कला, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, दृश्य कला), १३२ विभागों, १ महिला महाविद्यालय (वोमेन्स कॉलेज) और ५ अन्तर्विषयी स्कूलों (द्रव्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, जैव-चिकित्सकीय अभियांत्रिकी, जैव-रसायन अभियांत्रिकी, जैव-प्रौद्योगिकी, जीवन विज्ञान) से मिलकर बना है। अनेक विभाग अपने उच्च शोध उपलब्धियों के लिए उच्चीकृत किये गये हैं; इनमें १८ यूजीसी विशेष सहायता कार्यक्रम (उच्चानुशीलन केन्द्र ८, विभागीय अनुसंधान सहयोग १०), यूजीसी मान्यता प्राप्त केन्द्र/कार्यक्रम ४, अन्य कार्यक्रम ९ और डी एस टी – एफ आई एस टी (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उन्नयन कोष) कार्यक्रम ७ सम्मिलित हैं। नगर में स्थित ४ महाविद्यालयों को का.हि.वि.वि. की सुविधाओं के लिए स्वीकृत किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा बच्चों के लिए ३ विद्यालयों का अनुरक्षण भी किया जाता है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

विश्वविद्यालय सभी प्रकार के स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु प्रस्ताव आमंत्रित करता है, जिसमें प्राचीन भारतीय विषयों जैसे वेद, ज्योतिष, धर्मागम, आयुर्वेद इत्यादि से लेकर आधुनिक विषयों जैसे औषधि, शल्य, जैव-प्रौद्योगिकी, बायोइन्फार्मेटिक्स, जैव-चिकित्सा, जैव-रसायन, संगणक विज्ञान एवं अन्य विज्ञान विषयों कृषि, अभियांत्रिकी, प्रबन्धन इत्यादि के विभिन्न विभागों तक सम्मिलित हैं। विभिन्न विषयों में डॉक्टोरल एवं पोस्ट डॉक्टोरल अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए सर्वोत्तम सुविधायें उपलब्ध हैं। इसके साथ ही अनेक विषयों, जैसे रोजगारपरक विषयों, माँग आधारित तथा रोजगार आधारित विषयों में अनेक डिप्लोमा कार्यक्रम भी उपलब्ध हैं।

उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में प्रवेश, विश्वविद्यालय द्वारा अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा जैसी उच्च प्रतियोगिता के द्वारा लिया जाता है। प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.टी., का.हि.वि.वि.) तथा प्रबन्ध शास्त्र संकाय में प्रवेश क्रमश: जे.ई.ई.एवं कैट (सीएटी) के माध्यम से लिया जाता है।

कर्मचारी एवं छात्र संख्या

विश्वविद्यालय युवकों को उनकी रचनात्मक प्रतिभा के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देते हुए पारंगत बनाने हेतु उत्तम अवसर एवं सुविधाएँ प्रदान करता है। सम्पूर्ण भारत एवं विदेश के लगभग ३०००० छात्र विभिन्न विषयों के लगभग १७०० उच्च योग्यताधारी शिक्षकों एवं लगभग ५,००० समर्पित सहयोगी कर्मचारियों की

सहायता से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। अनेक शिक्षकों को पद्मश्री पुरस्कार, शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार तथा विज्ञान, अभियांत्रिकी, चिकित्सा विज्ञान व कृषि के विभिन्न राष्ट्रीय अकादमियों की छात्रवृत्तियों सहित विभिन्न प्रतिष्ठापरक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं।

वर्तमान में यूएसए, यूके, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, आस्ट्रेलिया, इराक, इरान, चिलि, पोलेण्ड, गिरि, यूक्रेन, रसियन, बंग्लादेश, नेपाल और इस्टोनिया इत्यादि सहित ६० देशों के विदेशी छात्रगण विश्वविद्यालय में अध्ययन प्राप्त कर रहे हैं। विदेशी छात्रों को उपयुक्त कार्यक्रम एवं तार्किक मामलों के चयन में एक अन्तर्राष्ट्रीय छात्र केन्द्र सहायता प्रदान करता है।

सुविधायें

वर्तमान समय में शिक्षा की चुनौतियाँ - ज्ञान सृजन, प्रक्रमण एवं वितरण की पूर्ण प्रणाली का सामना करने के लिए विश्वविद्यालय ने अपने को सफलतापूर्वक उपकरणयुक्त बना रखा है। यह विश्वविद्यालय एक उच्च विस्तार वाला इन्टरनेट संजाल, जो सभी विभागों, प्रयोगशालाओं तथा छात्रावासों सहित पूर्ण रूप से आबद्ध परिसर है, जिसका अनुरक्षण संगणक केन्द्र द्वारा दक्षता पूर्वक किया जाता है। विश्वविद्यालय के पास अबाध विद्युत आपूर्ति प्राप्त करने की अपनी सुविधा है।

केन्द्रीय ग्रन्थालय एवं संग्रहालय

विश्वविद्यालय में एक केन्द्रीय ग्रन्थालय है, जिसमें लाखों पुस्तकें हैं, विभागीय ग्रंथालय प्रणाली की शृंखला के साथ कार्यरत हैं। यहाँ का 'भारत कला भवन' एक राष्ट्रीय महत्व का विश्वविद्यालय का संग्रहालय है जो दुर्लभ कलाओं एवं मानव निर्मित प्राचीन वस्तुओं का कोषागार है। यह सम्पूर्ण विश्व के पर्यटकों को आकर्षित करता है एवं संग्रहालय विज्ञान, कला इतिहास एवं प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व जैसे विषयों में अध्यापन तथा अनुसंधान में सहायक है।

अतिरिक्त सह-पाठ्यक्रमी और सहायक सेवायें

विश्वविद्यालय अपने छात्रों के बहुमुखी विकास और शिक्षणेत्तर गतिविधियों के लिए एक बहुत ही स्वस्थ सृजनात्मक वातावरण प्रदान करता है। यहाँ पर बड़ी संख्या में खेल का मैदान, अन्तरंग एवं बहिरंग क्रीड़ांगन, व्यायामशाला, नभ/ जल/ थल एन.सी.सी., पर्वतारोहण केन्द्र तथा अभिरुचि केन्द्र स्थित हैं। विश्वविद्यालय सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र तथा विभिन्न संकायों के प्रशिक्षण एवं संस्थापन प्रकोष्ठ छात्रों को रोजगार प्राप्ति में सहायक हैं। विश्वविद्यालय के पास अपनी संचार प्रणाली, एक मुद्रणालय, एक दुग्धशाला, अनेक कृषि भूमि, एक तरण ताल, अतिथि गृह संकुल, २,००० कुर्सियों वाला आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित स्वतंत्रता भवन सहित अनेक प्रेक्षागृह, स्वास्थ्य केन्द्र, जलपान गृह, भारतीय स्टेट बैंक की चार शाखाएँ, बैंक ऑफ बड़ौदा की एक शाखा, डाक घर की तीन शाखाएँ, एक तार घर, विपणन केन्द्र, जन-संपर्क प्रणाली, हवाई अड्डा, हेलीपैड तथा परमेश्वर बाबा विश्वनाथ का भव्य मंदिर है। विश्वविद्यालय १२०० (लगभग) शैय्याओं वाला सर सुन्दरलाल चिकित्सालय संचालित करता है। इसका उपयोग केवल चिकित्सा विज्ञान के छात्रों के अध्यापन एवं प्रशिक्षण के लिए ही नहीं होता, बल्कि पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार का कुछ क्षेत्र, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़तथा नेपाल सीमावर्ती क्षेत्र की विशाल आबादी की स्वास्थ्य रक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी किया जाता है।

प्रशासन

विश्वविद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्था मुख्य रूप से कार्यकारिणी परिषद् एवं विद्वत् परिषद् द्वारा संचालित की जाती है। इस उच्च अधिकार युक्त मंडल में सत्र २०११-१२ के सदस्यों के नाम परिशिष्ट -१ में वर्णित हैं। वर्तमान आंकलन अवधि (२०११-१२) के अन्तर्गत निम्नलिखित महानुभाव विश्वविद्यालय के वैधानिक अधिकारियों के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं :

कुलाधिपति
डॉ. कर्ण सिंह

कुलपति
प्रो. डी.पी. सिंह (२२.०८.२०११ तक)
प्रो. लालजी सिंह (२२.०८.२०११ से)

कुलसचिव
डॉ. के. पी. उपाध्याय (२८.०९.२०११ तक)
प्रो. विरेन्द्र कुमार कुमरा (२८.०९.२०११ से)

छात्र अधिष्ठाता
प्रो. आशा राम त्रिपाठी

वित्ताधिकारी
श्री संजय कुमार (कार्यवाहक १५.०८.२०११ तक)
श्री ए. के. आइच (१६.०८.२०११ से)

मुख्य कुलानुशासक
प्रो. एच.सी.एस. राठौर

परीक्षा नियंता
डॉ. के. पी. उपाध्याय

पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव

श्रीमती मीरा कुमार, लोक सभा अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, ९४वाँ दीक्षान्त समारोह, १७ मार्च, २०११

१.२. शैक्षणिक सत्र २०११-१२ की प्रमुख विशेषताएँ

प्रवेश

नवीन शैक्षणिक सत्र सोमवार ४ जूलाई २०११ को प्रारम्भ हुआ और विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में १३,०१७ नये छात्रों (८९८६ छात्र, ४०३१ छात्राएँ) का पंजीकरण किया गया। विभिन्न स्नातक/स्नातकोत्तर/शोध पाठ्यक्रमों में संकायानुसार छात्र एवं छात्राओं का पंजीकरण विवरण अध्याय ४.१ में दिया गया है।

इस अवधि के अन्तर्गत विभिन्न पाठ्यक्रमों में ३२१ नये विदेशी छात्रों (२१६ छात्र, १०५ छात्राएँ) का भी प्रवेश लिया गया। देश के अनुसार इन छात्रों का विवरण अध्याय ४.१ में दिया गया है।

महामना का १५०वीं जयंती वर्षोत्सव

महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की १५०वीं जयंती वर्ष उपयुक्त रूप से मनाने के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत भारत के माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय समिति गठित की गई है। समारोह का उद्घाटन दिनांक २७ दिसंबर, २०११ को किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह ने की और राष्ट्रीय सलाहकार समिति व यूपीए की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ.कर्ण सिंह, श्री कपिल सिब्बल, मानव संसाधन विकास एवं संचार व सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, कुमारी शैलजा, संस्कृति एवं हूपा मंत्री और डॉ.लालजी सिंह, कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय उपस्थित थे। समारोह में सरकार एवं विदेशी दूतावासों के गणमान्य व्यक्तियों, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पूर्व छात्रों एवं लगभग ५०० अन्य विद्यार्थियों ने भाग लिया। समारोह में वर्ष पर्यंत चलने वाला स्मरणोत्सव कार्यक्रम पेश किया गया। इस अवसर पर श्रीमती सोनिया गांधी ने महामना के जीवन पर आधारित हिंदी एवं अंग्रेजी में दो पुस्तकों का विमोचन किया एवं प्रधानमंत्री द्वारा मालवीय जी पर एक विशेष डाक टिकट जारी किया गया।

अपने उद्घाटन भाषण में डॉ.मनमोहन सिंह ने कहा कि आधुनिक भारत के मूल्यों एवं विचारों को आकार प्रदान करने वाले मालवीय जी हमारे स्वतंत्रता संग्राम के महानतम नेताओं में से एक थे। उन्होंने शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारक, लेखक एवं विधि निर्माता के रूप में अपनी प्रतिभा द्वारा हमारी राजनीति और समाज पर गहरी एवं अमिट छाप छोड़ी है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जोकि आज देश के अग्रणी राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में से एक है, के संस्थापक के रूप में मालवीय जी हमेशा याद किये जाएंगे। डॉ.मनमोहन सिंह ने बीएचयू में मालवीय अध्ययन केन्द्र स्थापित करने की घोषणा की जहाँ उनकी रचनाओं को डिजिटल रूप में संग्रहित किया जाएगा। महामना के संदेशों, आदर्शों एवं दृष्टि को देश भर में प्रसारित करने हेतु पूरे देश में संगोष्ठियां, व्याख्यान एवं प्रदर्शनियां आयोजित की जाएंगी।

२७ दिसम्बर, २०११ को नई दिल्ली में आयोजित महामना पंडित मदन मोहन मालवीयजी की १५०वीं जयन्ती के स्मरणोंत्सव कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह के अवसर पर प्रधानमंत्री, डॉ.मनमोहन सिंह, निदेशक राष्ट्रीय सलाहकार समिति, श्रीमती सोनिया गाँधी, संघ मंत्री, मानव संसाधन विकास एवं सूचना तकनीकी एवं संचार, श्री कपिल सिब्बल एवं अन्य विभूतियां

महामना पर प्रकाशित डाक टिकट

२७ दिसम्बर, २०११ को नई दिल्ली में आयोजित महामना पंडित मदन मोहन मालवीयजी की १५०वीं जयन्ती के स्मरणोंत्सव कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह के अवसर पर प्रधानमंत्री, डॉ. मनमोहन सिंह डाक टिकट जारी करते हुए

२७ दिसम्बर, २०११ को महामना पंडित मदन मोहन मालवीयजी की १५०वीं जयन्ती के स्मरणोंत्सव पर जारी किया गया टिकट

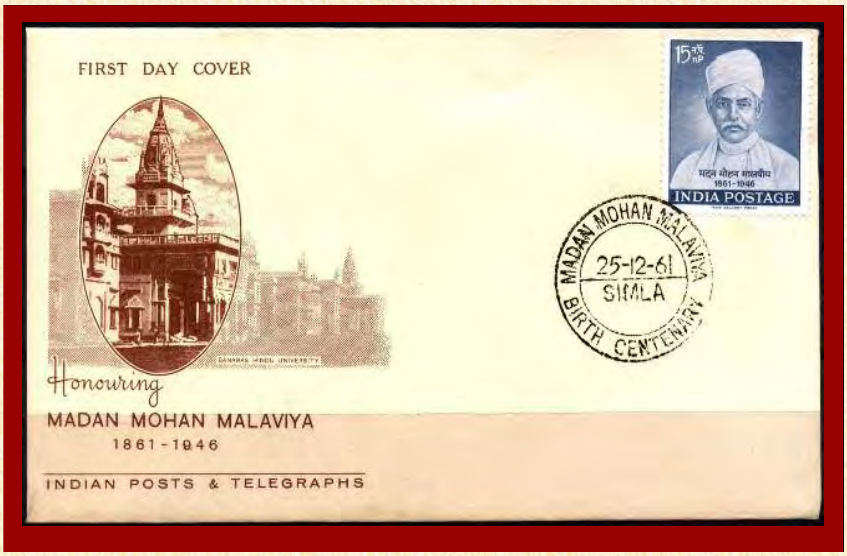

२५ दिसम्बर, १९६१ को महामना पंडित मदन मोहन मालवीयजी की जन्म शताब्दी पर जारी किया गया टिकट

राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति की संस्तुतियों को कार्यान्वित करने के उद्देश्य से विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करने हेतु कुलपति डॉ. लाल जी सिंह ने बीएचयू संचालन समिति का गठन किया है। सन् १९१६ में विश्वविद्यालय की स्थापना के समय घोषित लक्ष्यों और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति द्वारा ज्ञान के सभी विषयों सहित मूल्यपरक शिक्षा को केन्द्रित करने के लिए मानवीय मूल्यों एवं नीतियों को आकार एवं विस्तार देने एवं डिजिटल अभिलेखागार के रूप में मालवीय केन्द्र को विकसित करने के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रस्ताव को प्राथमिकता के आधार पर अनुमोदित किया गया है। राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति ने स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृति के एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए अन्तर-सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र की स्थापना का भी अनुमोदन किया है। ये दोनों केन्द्र पहले से ही कार्यरत हैं और अंतर-अनुशासनिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन कर रहे हैं। राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति ने मालवीय भवन परिसर में एक प्रेक्षागृह के साथ भवन हेतु रु.१४.९१ करोड़ के अनुदान की संस्तुति की है एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से मालवीय पीठ (चेअर) के लिए आवर्ती अनुदान व शैक्षणिक एवं अनुसचिवीय कर्मचारी देने का अनुमोदन किया है। मालवीय जी पर पूर्ण रूपेण केन्द्रित वेबसाइट विकसित करने के बी.एच.यू. के प्रस्ताव को भी राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति ने मंजूरी दी है।

विश्वविद्यालय ने मालवीय जी पर आधारित रचनाओं के प्रकाशन की जिम्मेदारी ली है। उद्घाटन समारोह में दो पुस्तकें पहले ही विमोचित की जा चुकी हैं। मालवीय जी की एक जीवनी एवं इसका विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद प्रस्तावित है। मालवीय जी की समस्त रचनाएं दस खंडों में हैं। राष्ट्रीय कार्यान्वयन समिति एवं संस्कृति मंत्रालय ने वर्ष पर्यंत चलने वाले १५०वीं जयंती वर्षोत्सव के भव्य समापन समारोह के आयोजन को मंजूरी दी है।

उत्कृष्टता का प्रतीक

इंडिया टुडे (३१ मई, २०१०) में प्रकाशित इंडिया टुडे-निल्सन सर्वेक्षण के अनुसार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को भारतीय विश्वविद्यालयों में प्रथम रैंक प्राप्त हुआ है। यह महत्वपूर्ण सर्वेक्षण-प्रसिद्धि, शैक्षणिक गुणवत्ता, संकाय गुणवत्ता, शोध प्रकाशन/रिपोर्ट/परियोजना, बुनियादी संरचना एवं रोजगार अवसरों जैसे छः विशिष्ट मानकों के विश्लेषण पर आधारित था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षण एवं शोध की गुणवत्ता के आयाम में सुधार करने के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं। सत्र २००९-१० के दौरान प्रतिष्ठित पत्रिका *करेंट साइंस* में प्रकाशित दस वर्षीय सर्वेक्षण में सूचकांक जर्नलों में अधिकतम शोध-पत्रों के प्रकाशन के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को सर्वोच्च २५ भारतीय विश्वविद्यालयों में पहले स्थान पर रखा गया है। तब से लेकर उसी एजेंसी द्वारा किए जाने वाले लगातार सर्वेक्षणों में यह विश्वविद्यालय देश के तीन सर्वोच्च विश्वविद्यालयों में अपना स्थान बरकरार रखे हुए है। अन्य एजेंसियों ने भी इस विश्वविद्यालय और इसके संकायों/विभागों को इसी तरह की रेटिंग दी है।

नई पहल

समीक्षाधीन वर्ष में दो संस्थानों (विज्ञान संस्थान, प्रबंध शास्त्र संस्थान); १५ विभागों वाले पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान के एक नए संकाय एवं तीन अनुशासनिक केन्द्रों (मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र, अनुवाद अध्ययन केन्द्र, अंतर-सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र) की स्थापना हेतु मंजूरी दी गई है। इसके अतिरिक्त, दंत चिकित्सा विज्ञान में तीन विभाग एवं आयुर्वेद संकाय में दो विभाग बनाने की भी मंजूरी दी गई है।

संकाय भर्ती

असाधारण गुणवत्ता सुधार उपाय के रूप में आईआईटी, आईआईएस-सी और आईआईएसईआर की तर्ज पर संकायों में भर्ती की नई रुपरेखा तैयार की जा रही है। संशोधित रुपरेखा से विभागों और इनके विद्यार्थियों को शोध, शिक्षण एवं नेतृत्व की दिशा में समुदाय को कैसे समृद्ध बनाया जाए, के मूल्यांकन की दृष्टि से अनूठा और अपेक्षित अवसर प्राप्त होगा।

शैक्षणिक उपलब्धियाँ

यहाँ के शिक्षकों ने उच्च गुणवत्तायुक्त शैक्षणिक वातावरण को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। वर्ष २०११-१२ की अवधि में, का.हि.वि.वि. से ४५०० से अधिक प्रकाशन (विस्तृत विवरण संलग्नक २ में किया गया है।) किये गये, इनमें ३२०८ शोध पत्र (अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका में २०७१, राष्ट्रीय शोध पत्रिका में ११३७) शामिल है।

वर्ष २०११-१२ की अवधि में शिक्षकों के शैक्षणिक योगदान

शोध पत्र			**लेख**		
राष्ट्रीय	-	११३७	राष्ट्रीय	-	४१०
अन्तर्राष्ट्रीय	-	२०७१	अन्तर्राष्ट्रीय	-	१३१
पुस्तकें			मोनोग्राफ्स	-	१९
राष्ट्रीय	-	१६७	मैनुअल्स	-	१३
अन्तर्राष्ट्रीय	-	३७	लीफलेट्स/अन्य	-	६०२

शोध परियोजनायें

वर्ष के दौरान कुल धनराशि रु.१३६६ लाख की ५७ नई परियोजनायें स्वीकृत हुई। इनके साथ ही पूर्व से संचालित ४६२ परियोजनाएँ चलती रही। देश की लगभग सभी प्रमुख वित्तीय अभिकरणों द्वारा अनुसंधान सहयोग प्रदान किया गया। शोध परियोजनाओं का विवरण संलग्नक ३ में दिया गया है।

वित्त प्रदायी अभिकरण	नवीन परियोजनाएँ		पूर्व से संचालित परियोजनाएं	
	संख्या	स्वीकृत धनराशि (लाख रू०)	संख्या	स्वीकृत धनराशि (लाख रू०)
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग	१९	७४४.४०	१३९	५९१६.०७
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	१२	९५.१०	१३२	७८६.८६
वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्	१०	१८८.१३	५६	६६०.३९
परमाणु उर्जा विभाग	५	९८.८६	१६	४५३.८६
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्	२	१५४.१७	८	१०६८.३२
भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद्	२	३५.४६	१४	१५६.८२
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्	२	९.५१	८	३६.४३
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, उ.प्र.	१	४.३७	३८	७८८.२७
केन्द्रीय आयुर्वेद विज्ञान शोध अनुसंधान परिषद्	१	२०.५७		
भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (आई.एस.आर.ओ.)	१	५.८५	६	४९.२२
तेल एवं प्राकृतिक गैस संघ	१	७.०६	१	२.३७
विदेशी अभिकरण	१	२.६७	५	४०.९३
अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्			६	११.८०
भारत सरकार			२	८१.७८
कृषि विज्ञान मंत्रालय			२	७४.९७
रक्षा मंत्रालय			१०	३०८.२०
विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लू.एच.ओ.)			३	५३०.७६
निजी अभिकरण			७	३९६.४७
माइनर हेड प्रोजेक्ट			३	२.४७
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी			५	१७.०२
भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्			१	१.२५
योग	५७	१३६६.१५	४६२	११३८४.२६

सम्मान/पुरस्कार/मान्यता

का.हि.वि.वि. के शिक्षकों के शैक्षणिक योगदान विभिन्न प्रकार से अभिज्ञान प्राप्त किये (अध्याय ७ में सूचीबद्ध है)। अनेक शिक्षक श्रेष्ठ अकादमियों के फेलो चयनित हुए (जैसे इंडियन एकडेमी आफ साइंसेज़, नेशनलएकेडेमी आफ साइंसेज़, इण्डियन नेशनल एकेडेमी आफ साइंसेज)। अनेक शिक्षकों को विदेश में अग्रणी अनुसंधान करने के लिए फेलोशिप/एसोसियेटशिप प्रदान किये गये (जैसे अलेक्ज़ेन्डर वान हाबोल्ट फेलोशिप, जर्मनी, ब्वॉयकास्ट फेलोशिप डी.एस.टी., जे एण्ड जे फारेन फेलोशिप, आई.ओ.ए., आई एन एस ए - डी एफ सी फेलोशिप, जर्मनी, फेलोशिप टू रॉयल कॉलेज ऑफ फिज़ीशियन्स, आयरलैण्ड)। अन्य उपलब्धियों में अनेक पुरस्कार, व्यावसायिक संगठनों के पदाधिकारी के रूप में चयन, सम्मेलनों के सभापति, राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय समितियों की सदस्यता, शोध पत्रिकाओं के सम्पादकीय पद इत्यादि शामिल है।

सम्मेलन

शैक्षणिक विचार विमर्श के अवसर प्रदान करने एवं विभिन्न विषय क्षेत्रों में विकास के सम्भावनाओं का अनुमान लगाने के क्रम में, अनेक विभागों/संकायों ने शैक्षणिक समागम आयोजित किये जिनमें बड़ी संख्या में बाहरी प्रतिभागियों ने सहभागिता की। सत्र २०११-१२ के दौरान का.हि.वि.वि. द्वारा कुल १३१ सम्मेलन आयोजित किये गये (संलग्नक ४ में विवरण दिया गया है)। का.हि.वि.वि. के शिक्षकों ने सक्रिय रूप से देश और विदेश में सम्पन्न विभिन्न परिसंवादो/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं इत्यादि में भाग लिया। वर्ष २०११-१२ की अवधि में, विभिन्न सम्मेलनों में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त शिक्षक की संख्या थी : विदेश ९३, देश ८५ (विवरण संलग्नक ५ में है)। विदेश के लिए प्रतिनियुक्तियों में अनेक देशों जैसे यू.एस.ए., कैनडा, अर्जेनटिना, दक्षिणी अफ्रीका, चीन, यू. के, जापान, भूटान, आस्ट्रेलिया, जर्मनी इत्यादि शामिल है।

दीक्षांत समारोह

विश्वविद्यालय के ९४वें दीक्षांत समारोह के भाग के रूप में विभिन्न संस्थानों/संकायों के दीक्षान्त समारोह का आयोजन १७ मार्च, २०१२ को किया गया। श्रीमती मीरा कुमार, अध्यक्ष, लोक सभा ने मुख्य अतिथि के रूप में दीक्षांत समारोह को सम्बोधित किया। दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता माननीय डॉ. कर्ण सिंह, कुलाधिपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने की।

प्रतिवेदन वर्ष की अवधि में ५२०८ स्नातक, ३४१४ स्नातकोत्तर, १५ एम. फिल. और ४६१ पी. एचडी. छात्रों को उनकी सम्बन्धित उपाधि प्रदान की गयी। संकाय और पाठ्यक्रमानुसार विवरण अध्याय ४ में दिया गया है।

महत्वपूर्ण बैठकें

बी. एच. यू. कोर्ट की बैठक	२६.११.२०११
कार्यकारिणी परिषद् की बैठक	१५.०३.२०१२
विद्वत् परिषद् की बैठक	०५.०३.२०१२

संकाय की बैठकें

दन्त चिकित्सा विज्ञान	१८.०४.२०११
दन्त चिकित्सा विज्ञान	१५.१२.२०११
दन्त चिकित्सा विज्ञान	३१.०१.२०१२
कला संकाय	०७.०५.२०११
कृषि विज्ञान संकाय	०४.०७.२०११
सामाजिक विज्ञान संकाय	०५.०७.२०११
मंच कला संकाय	१८.०७.२०११
अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान	२६.०९.२०११
अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान	२७.०१.२०१२
आयुर्वेद संकाय	१७.१२.२०११
आयुर्वेद संकाय	२५.०२.२०१२
प्रबन्ध शास्त्र संकाय	११.०२.२०१२

विश्वविद्यालय की शैक्षणिक संरचना

अ. संस्थान

१. प्रौद्योगिकी संस्थान
२. चिकित्सा विज्ञान संस्थान
३. कृषि विज्ञान संस्थान
४. पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास संस्थान

आ. संकाय

१. कृषि
२. कला
३. आयुर्वेद
४. वाणिज्य
५. दन्त चिकित्सा विज्ञान
६. शिक्षा
७. अभियांत्रिकी व प्रौद्योगिकी
८. पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास
९. विधि
१०. प्रबन्ध शास्त्र
११. चिकित्सा
१२. मंच कला
१३. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान
१४. विज्ञान
१५. सामाजिक विज्ञान
१६. दृश्य कला

इ. महाविद्यालय

अंगीभूत महाविद्यालय : महिला महाविद्यालय (वूमेन्स कालेज) परिसर के अन्दर स्थित

ई. अन्तर्विषयी उच्च शिक्षापीठ (स्कूल)

१. जैव-रासायनिक अभियांत्रिकी स्कूल
२. जैव-चिकित्सकीय अभियांत्रिकी स्कूल
३. जैव-प्रौद्योगिकी स्कूल
४. द्रव्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्कूल
५. जीवन विज्ञान स्कूल

उ. अध्ययन केन्द

१. खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
२. पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
३. आनुवांशिक विकृति
४. डीएसटी.सेन्टर फार इंटर डिसीप्लीनरी मैथमेटिकल साइंस
५. नेपाल अध्ययन केन्द्र
६. महिला अध्ययन एवं विकास
७. मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र
८. समन्वित ग्रामीण विकास
९. सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र

ऊ. यू.जी.सी. - एस ए पी : सी ए एस व डी आर एस कार्यक्रम

१. प्रबन्ध शास्त्र संकाय (डी.आर.एस.) -I
२. पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी (डी.आर.एस.) -I

३. गणित (डी.आर.एस.) -II

४. जैव प्रौद्योगिकी (डी.आर.एस.) –II

५. भौतिकी (सी.ए.एस.)-IV

६. भूगोल (डी.आर.एस.) –I

७. सांख्यिकी (डी.आर.एस.) –I

८. फार्मास्यूटिक्स (डी.आर.एस.) –I

९. सिविल अभियांत्रिकी (डी.आर.एस.) –II

१०. भूगर्भ विज्ञान (सी.ए.एस.)-I

११. रसायन शास्त्र (सी.ए.एस.)-I

१२. अनुप्रयुक्त गणित (डी.आर.एस.) –I

१३. प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व (सी.ए.एस.)-I

१४. रासायनिक अभियांत्रिकी (सी.ए.एस.)-IV

१५. इलेक्ट्रानिक अभियांत्रिकी (सी.ए.एस.)-III

१६. जीवविज्ञान (सी.ए.एस.)-V

१७. मनोविज्ञान (डी.आर.एस.)-I

१८. वनस्पति विज्ञान (सी.ए.एस.)-V

ए. विशेषज्ञ अनुसंधान के अन्य केन्द्र/कार्यक्रम

१. विज्ञान संकाय - डी. बी. टी. - बी. एच. यू. – इन्टर डिसीप्लीनरी स्कूल आफ लाइफ साइंसेज।

२. सी. एफ. एस. टी. , कृषि विज्ञान संस्थान - नेटवर्क प्रोजेक्ट आर एण्ड डी सपोर्ट फार प्रोसेस अपग्रेडेशन आफ इन्डीजीनस मिल्क प्रोडक्ट फार इंडस्ट्रियल एप्लीकेशन्स

३. कृषि विज्ञान केन्द्र - इन्हेन्सिंग रिसर्च केपेसिटी एण्ड इनीसियेटिंग इन्टीग्रेटेड एम.एस.सी./एम.टेक एण्ड पीएच.डी.प्रोग्राम इन द एरिया ऑफ फूड सांईस एण्ड टेक्नोलॉजी।

४. विज्ञान संकाय - भौतिकी विभाग – एम. एन. आर .ई (हाइड्रोजन उर्जा केन्द्र)

५. चिकित्सा संकाय, चि. वि. सं. – सेन्टर फार एक्सीलेन्स इन एच.आई.वी. केयर

६. चिकित्सा संकाय, चि. वि. सं. – डिटरमाइनिंग फैक्टर्स एसोसियेटेड विथ ए.आर.टी. ड्रग एडहेरेन्स एच आई वी पाजिटिव्स इन इंडिया (एन.ए.सी.ओ.)

७. भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय – स्ट्रेन्थेनिंग स्पेस साइन्स एक्टीविटीज इन यूनिवर्सिटीज

८. आई.टी., साइंस, आयुर्वेद एण्ड मेडिसिन – डी. एस. टी. प्रोमोशन ऑफ यूनिवर्सिटी रिसर्च एण्ड सांइटिफिक एक्सीलेंस (पर्स)

९. आयुर्वेद - नेशनल रिसोर्स सेन्टर आन क्षार सूत्र थीरेपी

ऐ. डी एस टी -फीस्ट कार्यक्रम

(विश्वविद्यालय एवं उच्च शैक्षणिक संस्थानों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के लिए आधारभूत कार्यक्रमों (फीस्ट) के उन्नयन के लिए कोष)

१. स्कूल आफ मेटेरियल साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी

२. रसायन विभाग

३. धातुकीय अभियांत्रिकी

४. जन्तु विज्ञान

५. मेकेनिकल इंजीनियरिंग

६. जैव रसायन, चि.वि.स.

७. भूगर्भ विज्ञान

ओ. राजीव गांधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, मिर्जापुर

औ. विश्वविद्यालय द्वारा अनुरक्षित विद्यालय

१. सेन्ट्रल हिन्दू ब्वाय़ज स्कूल

२. सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल

३. श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय

अं. विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत स्थापित नगरीय महाविद्यालय

१. आर्य महिला पी.जी. कॉलेज

२. दयानन्द पी.जी. कॉलेज

३. वसन्त महिला महाविद्यालय

४. वसन्त कन्या महाविद्यालय

२. विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अवयव (अंग)

२.१. मुख्य परिसर

२.१.१. संस्थान

२.१.२. संकाय

२.१.३. महिला महाविद्यालय

२.१.४. अध्ययन केन्द्र

२.१.५. स्कूल

२.१.६. का.हि.वि.वि. ग्रंथालय प्रणाली

२.१.७. यू.जी.सी. ऐकेडमिक स्टाफ कॉलेज

२.१.८. मालवीय भवन

२.१.९. भारत कला भवन

२.२. दक्षिणी परिसर

२.३. विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत संचालित नगरीय महाविद्यालय

२७ फरवरी-१ मार्च, २०१२ को आयोजित ७वीं अन्तर्राष्ट्रीय हार्वेस्टप्लस ह्वीट समूह बैठक

७-१० जनवरी, २०१२ को आयोजित कृषि विज्ञान संस्थान का वार्षिक समारोह

२.१.१.१. कृषि विज्ञान संस्थान

समग्र कृषि और संबद्ध विज्ञान के सतत् और समान विकास के उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्ध, मानव संसाधन विकास अध्यापन, अनुसंधान एवं विस्तार के एकीकृत अनुष्ठान के माध्यम से स्वतंत्रता, सुरक्षा और समृद्धि के द्वारा मानव संसाधन का विकास करना, ज्ञान निर्माण कारक उपयोग दक्षता, फसलों/सब्जियों/ फलों/ पशुओं/मुर्गी/ मछली में उत्पादन, गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन सुधार, आजीविका सुरक्षा में सुधार और भुखमरी मुक्त समाज के सपने को साकार करने की दिशा में कृषि विज्ञान संस्थान ने २०११-१२ में उपलब्ध संसाधनों एवं विशेषज्ञताओं के सहयोग से शिक्षा (खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों सहित) और अनुसंधान (प्रसार गतिविधियों सहित) के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

सत्र २०११-१२ में प्रवेश हेतु जुलाई ११ में १५४ छात्रों को बी०एससी० (कृषि) में, १६८ छात्रों को एम०एससी० (कृषि) में ६९, पी०एचडी० छात्रों का क्रमश: ११ विषयों में प्रवेश लिया गया। इसके अलावा १०४ छात्रों का छ: विशेष स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया गया। इस प्रकार कुल ३१८ छात्रों (वर्तमान कुल १२६६ की संख्या समेत) को अलग-अलग राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा स्वीकृत शोधवृत्ति मिल रही है। सफलतापूर्वक अपने अध्ययन पूरा करने के पश्चात् कुल ९१ बी०एससी० कृषि, १९१ एम०एससी० कृषि (११ विभागों से छ: विशेष पाठ्यक्रम के सहित) और ३२ छात्रों को पी०एचडी०(१० विषयों सहित) उपाधियाँ १६-१७ मार्च २०१२ को आयोजित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ९४वे दीक्षांत समारोह में प्रदान की गयी है। संस्थान के निदेशक द्वारा भारतीय कृषि अनुसंसाधन परिषद् की शोध फेलोशिप प्राप्त करने वाले २४ सफल छात्रों को स्मृति चिन्ह प्रदत्त कर सम्मानित किया गया।

वर्तमान में संस्थान में ७७ प्रोफेसरों, १४ एसोसिएट प्रोफेसरों, ४२ सहायक प्रोफेसरों, १ इमिरिटस प्रोफेसर और २ पुनर्नियुक्त प्रोफेसर सहित कुल १३६ शैक्षणिक सदस्य विभिन्न विभागों/इकाईयों में और १७८ गैर शिक्षण कर्मचारी निदेशालय और विभिन्न विभागों में सेवारत हैं।

हमारे अनुसंधान घटक में मुख्यरूप से संसाधन प्रबंधन (वर्षा जल प्रबंधन और नई भूमि उपयोग प्रणाली), साथ ही साथ एप्लाइड क्षेत्र (फसल सुधार, फसल मौसम सम्बन्ध एवं आई०पी०एम०, राष्ट्रीय गुणवत्ता बीज उत्पादन, जैव नियंत्रण, एक्वा कृषि मॉडल और मशरूम

की खेती, जैविक पदार्थ रिसाइक्लिंग और जैव अपशिष्ट उपयोग, कम लागत पंप विकास, मालवीय सीड्ड्रिल और जैव उर्वरक का उत्पादन और वितरण), और मौलिक एवं सामरिक अनुसंधान (जैवऊर्जा, जैविक नत्रजन स्थिटीकरण, जैविक तनाव में पी. जी. पी. आर., मिट्टी संरक्षण, मक्का में क्यू. टी. एल. मैपिग और अरहर जीनामिक्स, औषधीय सुगंधित पौधों और फलों के पेड़ का सूक्ष्म विधि विकास और मानव के उन्नत पोषण के लिये गेंहूँ की जैवदुर्ग) सम्मिलित है। वर्तमान में १० बहु-आयामी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (रूपये २६ करोड़), १ एनएआईपी (रूपये ७.० करोड़), १ निच एरिया परियोजना (रुपये २.९६ करोड़), १४ नव स्वीकृत तदर्थ अनुसंधान परियोजनाओं (कुल परिव्यय: रूपये ३.४९ करोड़), और विभिन्न एजेन्सियों और राष्ट्रीय एजेन्सियों द्वारा स्वीकृत ६७ चल रही तदर्थ अनुसंधान परियोजनाओं (कुल परिव्यय: रुपये ३७.२१ करोड़), एक मेगा बीज परियोजना (जिसमें शामिल है फसल बीज, बागवानी, मत्स्य पालन और मशरूम उत्पादन: रुपये १.५ करोड़) और एक मेगा अभिनव परियोजना राज्य बागवानी मिशन (रुपये २ करोड़) में हो रहे अनुसंधान, २९ शोध प्रबन्ध, १७३ एम०एससी० (कृषि) प्रबन्ध, १९८ संदर्भ शोधपत्र, ८२ लेख, ६० किताबें/पुस्तक अध्याय, ६ मैनुअल/मोनोग्राफ और १८१ से अधिक उपयोगी पत्रक के उत्पादन के रूप में परिलक्षित है। इस दौरान ३३ नये उपकरणों को जोड़ा गया है। अनेकों शिक्षकों के उत्कृष्ट कार्यों को उनके कृषि शिक्षा, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी आंकलन/परिवर्तन में योगदान के लिये सम्मानित किया गया है।

इस संस्थान के मेधावी संकाय सदस्यों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में १७ और राष्ट्रीय/संगोष्ठी/संगोष्ठियों और कार्यशालाओं में ६० शोध पत्र प्रस्तुत किया गया है। इक्रिसेट, सिम्मीट, मैक्सिको, आई.एफ.पी.आर.आई. तथा कॉर्नेल, इलिनोइस, जॉर्जिया व डेनमार्क विश्वविद्यालयों व आई. आर. आर. आई. तथा विभिन्न डीबीटी व आई०सी०ए०आर० अनुसंधान संस्थानों के साथ हमारे अनुसंधान सहयोग हस्ताक्षरित किये गये हैं। बहु-अर्न्तविषयी उत्कृष्टता की श्रृंखला में, हाल ही में इस संस्थान में कृषि सूक्ष्मजैविकी का एक नया विभाग, संकाय, शैक्षणिक परिषद् और विश्वविद्यालय के कार्यकारिणी परिषद् द्वारा अनुमोदित किया गया है, जिसे बारहवीं योजना में विश्वविद्यालय में समाहित किये जाने की उम्मीद है। वेटेरनरी व एनिमल्स साइंस का एक नया संकाय भी राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में खोलने की स्वीकृति इस संस्थान को प्राप्त हो चुकी है। एक्सपीरियन्सिल लर्निंग के ६ माड्यूल हमारे पाठ्यक्रम में जोड़े जाने के साथ प्रारम्भ किये जा चुके हैं।

संस्थान की अनुसंधान, विकास और विस्तार की गतिविधियाँ ११ विभागों और ४ इकाइयों के द्वारा सम्पन्न की जाती हैं। डेयरी, बागवानी, कृषि फार्म और के०वी०के० ने उत्कृष्ट और बेहद सराहनीय कार्य किया है। पाँच छात्रों को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से कृषि अनुसंधान सेवा के लिये चुना गया तथा पाँच छात्रों का चयन उत्तर प्रदेश लोकसेवा आयोग की सेवा हेतु किया गया। इसके अतिरिक्त, १३ कम्पनियों और बैंकों द्वारा संस्थान परिसर के प्लेसमेंट सेल में साक्षात्कार आयोजित किया गया, जिसमें ९३ नये स्नातक/स्नातकोत्तर छात्रों को एक या अन्य नौकरी के लिये चयनित किया गया है। २४ छात्रों ने आई०सी०ए०आर०-जेआरएफ प्रतियोगी परीक्षा मे सफलता हासिल की।

हमारे छात्र एवं छात्राओं ने पाठ्येतर गतिविधियों के साथ ही, खेल/एथलेटिक्स एवं सांस्कृतिक, साहित्यिक क्रिया-कलापों में विश्वविद्यालय और अंतर-विश्वविद्यालय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया हैं।

संस्थान द्वारा चलाये जा रहे पाठ्क्रमों को भारतीय कृषि विज्ञान परिषद् की संस्तुतियों के अनुसार अद्यतन करते हुये उसमें क्षेत्रीय/स्थानीय आवश्यकताओं का समावेश किया जान एक महत्वपूर्ण आकर्षण है। एक्सीपिरियन्सल लर्निग के साथ माड्यूलो का स्नातक पाठ्यक्रम मे समावेश मानव संसाधन की गुणवत्ता को और प्रशस्त करेगा। हामरे अनुसंधान कार्यक्रमों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि शत प्रतिशत शोधार्थियों को विभिन्न संस्थाओं यथा यू०जी०सी०, आई०सी०ए०आर०, सी०एस०आई०आर० के सहयोग से वित्तीय सहायता प्रदान किया जाता है। स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर भी छात्रों को विभिन्न केन्द्रीय एवं राज्य संस्थाओं के सहयोग से वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। नई सहस्त्राब्दी के उभरते हुये तीनों चुनौतियों यथा भूमंडलीकरण भारतीय कृषि पर प्रभाव, गरीबी एवं गरीबी के कारण कुपोषण से मुक्ति के उपाय हेतु नई तकनीकी के विकास करने के साथ-साथ संस्थान नये स्नातकों एवं भावी कृषि प्रबन्धकों को इन तकनीकी गुणों से सम्बल बनाने एवं मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत करने पर विशेष बल दे रहा है।

सक्षम अध्यापक गण, उत्कृष्ट प्रयोगशालाएं, कृषि प्रक्षेत्र व उपकरणों की सुविधाएं उत्कृष्ठता प्राप्त करने की पूर्व आवश्यकताएं हैं। इस क्रम में विभिन्न विभागों की प्रयोगशालाओं के आधुनिक उपकरणों व औजारों से सुसज्जित करते हुए राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के किसी भी विकसित शोध केन्द्र के समकक्ष बनायी गयी है। इन सुविधाओं का लाभ हमारे शोध छात्रों के अलावा शोध अध्यापकों व विश्वविद्यालय के अन्य संकायों के छात्रों को भी सुलभ कराया जाता है। वास्तव में इस संस्थान ने विश्वविद्यालय स्तर पर अन्तर्विषयक एवं बहु-विषयक शोध को मजबूती प्रदान की है। हमारे संस्थान ने परिसर के कृषि क्षेत्र को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित करने में भी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहयोग से उत्कृष्टता हासिल की है।

कृषि को मानवता सेवा के लिए मूल स्वास्थ्य सेवा का दर्जा देते हुए इसे अब केवल स्वास्थ्य कर्मियों के भरोसे छोड़ा नहीं जा सकता। हरित क्रांति के युग में खाद्यान्नों के पोषक गुणों पर थोड़ा विचार करते हुए अब हमारा ध्यान इस तरफ केन्द्रित है। कृषि विज्ञान संस्थान उपयुक्त शोध व विकास के विभिन्न प्रयासों द्वारा इस दिशा में प्रयासरत है। संस्थान की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में इॅकोलॉजिकल फाउंडेशन (मिट्टी, जल, बन व जैवविधिता) के संरक्षण व निरंतरता पर विशेष बल दिया गया है। जो कि कृषि विकास व सहयोगी तकनीकों के लिए अतिआवश्यक सेतु का कार्य करते हुए उत्पादन तथा पोस्ट हारवेस्ट

प्रबंधन में शोध एवं विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इनकी प्राप्ति हेतु मूलभूत, प्रयुक्त तथा नवोन्मेषी सहयोगात्मक विधाओं का समावेश अतिआवश्यक है।

स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों तथा अल्प और दीर्घ अवधि की परियोजनाओं के अनुसंधानों की महत्वपूर्ण उपलब्धियों निम्नलिखित है-

कृषि अर्थशास्त्र विभाग

- अन्य रबी फसलो की तुलना में मेन्था की खेती से उच्च अर्थ लाभ।
- ड्रिप सिंचाई विधि से कपास की फसल में वर्षा आधारित परिस्थियों में बाढ़ ग्रस्त सिंचाई की तुलना में उच्चतम लाभ।
- रैपसीड तथा सरसों की जयपुर में की गयी खेती का अर्थशास्त्रीय दृष्टि से विपणन व प्रॉसेसिंग से यह निष्कर्ष निकाला गया कि उत्पादन मूल्य के ८३ प्रतिशत से अधिक उत्पादक का अंश उत्पादक मूल्य की तुलना में है जबकि प्रॉसेस प्लांट की क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं किया जा सका था।

सस्य विज्ञान विभाग

- गेहूँ की फसल में खर-पतवार नियंत्रण हेतु कारफेन्ट्राज़ोन मेथाइलोन और मेथासल्फ्यूरान मिथाईल का पृथक और मिश्रित प्रयोग उपयोगी पाया गया।
- मटर की फसल में खर-पतवार नासियों की जैव क्षमता का मूल्यांकन।
- धान-गेहूँ सिस्टम का संरक्षित कृषि एवं आरसीटी पर आधारित विकास।
- नवीन संरक्षण कृषि पर आधारित तकनीकि-टिलेज रो, टिलेस उठा हुआ बेड पौध रोपण एवं तकनीकि का विकास पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में।
- टील गेहूँ की फसल का एक बेहतर विकल्प आरसीटी तकनीकि पर आधारित होना एवं उसकी उत्पादन क्षमता का विकास।

पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग

- वनस्पति आधारित मिठाई युक्त योगहर्ट का विकास।
- एलबिनों चूहों पर गैर परम्परागत आहारों के प्रभाव का अध्ययन।
- वाराणसी जिले के विभिन्न डेरी प्रक्षेत्रों पर दुग्ध उत्पादन एवं खाद्य खर्चों पर मौसमी प्रभाव का अध्ययन।
- बछड़ों के वृद्धि एवं विकास पर आहारों के प्रबंधन तकनीक के प्रभाव का अध्ययन।

कीट एवं कृषि जन्तु विज्ञान

- विभिन्न पौधों पाली फैगो टारसोनिमस लैट्स और सहयोगी ब्रिगेडरी माइंट के गति की और प्रभावशीलता का अध्ययन।
- भारत के विभिन्न सस्य जलवायु क्षेत्रों में हेलीको वर्पा आर्मीजेरा की आनुवंषीक विविधता का अध्ययन।
- जेट्रोफा पर कीट-पतंगो एवं उनके प्रबंधन का विध्य क्षेत्र में अध्ययन।

प्रसार शिक्षा विभाग

- स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों में शिक्षा, व्यावसायिक पर्यटन सामाजिक सहभागिता का उनके उद्यमशील व्यवहारों का विश्लेषण।
- एम. लर्निंग द्वारा ज्ञान की प्राप्ति।

प्रक्षेत्र अभियांत्रिकी विभाग

- आर्टिफिसियल न्यूरल नेटवर्क माडल का इस संस्थान में सर्वप्रथम विकास।
- भूमि एवं जल संसाधनों के प्रबंधन एवं भूमि संरक्षण उपायों का विभिन्न वॉटरसेट प्रक्षेत्रों की पहचान।

आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग

- नर बध्य लाइन का विलगाव अलसी और कुछ अन्य पौधों में करने का प्रयास।
- जीन प्रतिरोधी रस की टैली और क्यूटी एल एस रस्ट का मटर की फसल में चिन्हि करण और उनकी प्रतिरोधी क्षमता।
- मटर की फसल में लाजिंग और टर्मिनल हीट – स्ट्रेस के लिए प्रतिरोधी एवं सहीश्रोण जीनो टाइप का चिन्ही करण।
- उच्च भूमि और बासमती धान के संकरो के विकास के लिए ८ हिटीरोटिंग क्रास संयोगों का विलगीकरण।

उद्यान विज्ञान विभाग

- केले के सूक्ष्म प्रबंधन के लिए प्रोटोकॉल का मानकी करण ।
- केले पर २००पीपीएन जिब्रेलिक अम्ल के छिड़काव द्वारा तोड़ाई उपरान्त होने वाली हानि में कमी तथा उसकी खाने योग्य गुणवत्ता में सुधार।

- केले के फल को केएमएनओफोर तथा बंद पालिथीन में रखकर इसकी भंडारण क्षमता व गुणवत्ता को १५ दिन तक बढ़ाया जा सकता है।

कवक एवं पादप रोग विज्ञान विभाग

- मेलानीन की महत्वपूर्ण भूमिका का कोनिडोफोर व कोनिडियोफोर व कोनिडिया के भिन्नीकरण के प्रभाव व इसका बायोपोलारिस सोरोकिनियाना की जैव उत्पादकता पर प्रभाव का अध्ययन।
- सरकोस्पोरिन के पृथकीकरण एवं पहचान की विधि का मानकीकरण।
- मटर के रिपोर्टेड मारकर्स का रिकाम्बीनेन्ट लाइन पर वैधताकरण।
- कृषि प्रक्षेत्र में द्रुतकल्चर विधि का कवक डिकम्पोजिशन हेतु अन्वेषण।
- स्किलिरोशियम रोल्फसाइट के उचित प्रबंधन हेतु माइक्रोबियल कन्सारशियम का विकास।
- चावल के संभावित प्रजातियों से शीथ ब्लाइट प्रतिरोधी म्यूटेन्ट पापुलेशन का विकास।
- पौध स्वास्थ्य क्लीनिक की स्थापना।
- माइक्रोबियल कन्सारशियम हेतु जैविक नियंत्रण का विकास, विभिन्न बायोकन्ट्रोल एजेन्ट्स द्वारा प्रेरित सिंगलो का क्रासटाक के मध्य अध्ययन।
- आर.सोलानी के संरचनात्मक तथा विरूलेंश विविधता से पूर्वी उत्तर प्रदेश में की प्रजातियो पर लगने वाले सीथब्लाइट का अध्ययन।
- पूर्वी उत्तर प्रदेश में प्रशिक्षण सह आइ.पी.एम. विधि से जैविक खेती हेतु सहभागी प्रयास द्वारा प्रदर्शन।

पादप कार्यिकी विभाग

- महत्वपूर्ण चिकित्सकीय पौधों के क्षमतावान सूक्ष्म विकास प्रोटोकाल का अध्ययन।
- नाइट्रेट तथा सल्फेट लवणों द्वारा चावल, तिल तथा मूँग के बीजों की प्राइमिंग, नाइट्रोजन हारवेस्टिंग क्षमता की सहयोगी वृद्धि, एन्टीआक्सीडेंट डिफेंस मेटाबॉलिज़्म एवं उत्पाद का अध्ययन।

कृषि रसायन एवं मृदा विज्ञान विभाग

- एजोस्पीरलम, एजोटोवेक्टर और फास्फेट सोल्यूबिलाइजिंग बैक्टिरिया का वनस्पति एवं सब्जी आधारित फसल चक्र से पृथकीकरण कर उसें अन्य फसल चक्र से अधिक प्रभावी बनाना।
- ५० प्रतिशत एन.पी.के व ५० प्रतिशत नाइट्रोजन एफवाइएम प्रति हेक्टयर के समन्वित प्रयोग द्वारा गेहूँ के अधिक पैदावार के साथ-साथ जमीन की उच्च उर्वरा शक्ति का बिना खाद्य वाले प्रक्षेत्रों में बनाया जाना।
- पालक की सब्जी पर अन्य सब्जी के फसलों की तुलना में आयोडिन के अच्छे जमाव का अध्ययन।
- एसपरजिलस अवामोरी का कैडमियम के साथ प्रयोग कर इसके विषाक्त प्रभाव को बैक्टिरिया, कवक तथा एक्टीनोमाइसिटीज़ में कम करना।
- गेहूँ और सरसों की फसल में नीम मिश्रित यूरिया के प्रभाव से नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड के उत्सर्जन प्रभाव को ३० प्रतिशत घटाते हुए पैदावार में ७.५ से लेकर २४ प्रतिशत की उपज वृद्धि।

खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र

- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध लाल पेड़ा के नमूनों का सेन्सरी मूल्यांकन व प्रारम्भिक रचनात्मक स्वरूप का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- खजूर रसगुल्ला के निर्माण के विधियों का सेन्सरी मूल्यांकन व रसायनिक गुणों के आधार पर आपटीमाइजेशन।

इकाईयों की उपलब्धियाँ:

कृषि शोध प्रक्षेत्र :

कृषि प्रक्षेत्र के प्रगति पर आधारित कार्य निम्नवत है।

(i) कृषि प्रक्षेत्र के सड़क का कॉन्क्रीट व ईंटों से निर्माण का कार्य प्रगति पर है।

(ii) कृषि प्रक्षेत्र के बाउन्ड्री की कटींले तार से घेरायी।

(iii) कृषि प्रक्षेत्र में कृषक प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण।

(iv) कृषि प्रक्षेत्र में प्रायोगिक कक्ष का निर्माण।

(v) १,५०,००० रुपये की लागत से १५० मीटर लम्बे भूमिगत सिंचाई पाइप का बिछाया जाना।

(vi) मढ़ाई के पक्के छत का निर्माण ।

(vii) कृषि प्रक्षेत्र के बाउन्ड्री के चारो तरफ निकासी नाली का निर्माण।

(viii) इम्प्लीमेन्ट सेट के खुले छत का निर्माण।

(ix) कृषि प्रक्षेत्र कार्यालय व गैरेज का निर्माण प्रगति पर ।

विभिन्न संवर्गों के सुपरवाइजरी अनुसचिवीय तथा प्रक्षेत्र श्रमिक पद पर ६० कर्मचारी कृषि प्रक्षेत्र में कार्यरत है। कृषि प्रक्षेत्र में तकनीकी सुविधाएँ जैसे सिंचाई के संसाधन, कृषि यंत्र, कृषि भण्डार, सम्पलीमेन्ट शेड, थ्रेसिंग फ्लोर विद्यमामन।

संस्थान की दुग्धशाला

८३ दुधारु, २९६ शुष्क तथा २५४ गर्भावस्था की स्थिति के पशु जिनमें गायें, भैंसें, बछड़े, दुधमुँहे बच्चे, पड़िया, पड़वा व साँड़ दुग्धशाला में उपस्थित हैं। दुग्ध का उत्पादन २३०००० लीटर तथा दुग्ध बिक्री से प्राप्त धनराशि ४२.६४ लाख व कुल व्यय २१.३ लाख वर्ष २०११-१२ में रहा।

कृषि विज्ञान केन्द्र

(i) ४० आन फार्म ट्रायल

(ii) ५५९ एफ एल डी

(iii) ८७ प्रशिक्षण के कार्यक्रम फसल उत्पादन, औद्यानिकीय मृदा स्वास्थ्य तथा उपज प्रबंधन, पशुधन उत्पादन व प्रबंधन पादप संरक्षण, कृषि अभियांत्रिकीय तथा ग्रामीण क्राफ्ट विषयों पर आयोजित किये गये जिनमें १७९५ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

(iv) २७५ प्रतिभागियों हेतु १५ कृषि दिवसों का आयोजन।

(v) ११८ प्रतिभागियों हेतु ५ कृषक गोष्ठी का आयोजन।

(vi) किसान मेले का आयोजन जिसमें १५६७ प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

(vii) २-कृषक वैज्ञानिक अन्तर संवाद, १५ रेडियो-दूरदर्शन वार्ता तथा २७ लोकप्रिय लेखों का प्रकाशन।

(viii) कृषि विज्ञान केन्द्र का १५७१ कृषको द्वारा कृषि तकनीकी के ज्ञान हेतु अवलोकन एवं भ्रमण ।

नई प्रजातियाँ

१. एच.यू.डब्लू. ६५२ गेहूँ प्रजाति विकसित करने हेतु ।

२. एनईपीजेड में एबीटी में प्रयोग हेतु एच.यू.बी. ११३ और एच.यू.बी.११४ जौ की प्रजातियों का प्ररिक्षण।

३. राज्य प्रजाति निर्णायक समिति द्वारा धान की दो प्रजातियों एच.यू.आर.४४००५ और एच.यू.आर.५-१ की पहचान।

४. जुलाई माह के अन्तिम सप्ताह तक बोवाई की जाने वाली धान की जलवायु प्रतिरोधक प्रजाति एनडीआर-९७ की पहचान।

५. सामान्य संकर के रूप में मालवीय संकर मक्का की एस.बी.आर.सी द्वारा पहचान, दो कीव पीएन संकर (बीएचक्यूपीएम-३०१८ और बीएचक्यूपीएम -३०२७) और एक सामान्य संकर (बीइएच-०९-२) का परीक्षण।

६. लगभग एक तिहाई परिक्षेत्र एनईपीजेड में मसूर के अन्तर्गत और उड़ीसा और आसाम के कुछ क्षेत्र मसूर की प्रजाति के अन्तर्गत-एचयूएल-५७।

७. ५०,००० हजार हेक्टयर क्षेत्र धान की प्रजातियों की खेती के अन्तर्गत-एचयूबीआर-२-१, एचयूबीआर-१०५, एचयूबीआर-३०२२ और एचयूबीआर-४-३।

बीज उत्पादन (फसल)

१. न्यूकिलियस एवं ब्रिडरसीड का उत्पादन (कुण्टल में) ४८ और ३२८ (धान), ४० और १७० (गेहू), २ और २८ (अरहर), ४० और ३० (मटर), २.५ और ३० (मूंग), क्रमश: बायी बैक, खर्च और अवशेष राशि (रुपया लाख में) ३९.८४,२६ और १३.८४ (रवि २०१०-११) और ४६, २५.७५ और २०.२४ (खरीब) क्रमश: रहे है। अनुमोदित पुनर्वती और गैर पुनर्वती राशियाँ रुपया ९३७ लाख और ७.०२ लाख पूणत: खर्च किये गये

बीज उत्पादन उद्यान

कद्दूवर्गी पौध को पॉलिथीन बैंग में संरक्षित वातारण में उगाकर सब्जी उत्पादकों को विपणन से शुरुआती लाभ लेने के लिए उपलब्ध कराया गया। जागरूक कृषकों महत्वपूर्ण फलवर्गी फसलों के वानस्पितक पुर्नउत्पादन का प्रशिक्षण; व्यवसायिक स्तर पर औद्योगिक ट्रीवटाइप पौध रोपण सामग्री कृषकों को उपलब्ध करायी गयी। सब्जी उत्पादकों को कद्दूवर्गी फसलों से शुरुआती लाभ लेने के लिए पॉलीबैग पौधों को उपलब्ध कराया गया।

बीज उत्पादन (मत्स्य पालन)

वर्ष २०११ प्रजनन मौसम में २०० लाख स्पॉन और ३० लाख मत्स्य बीजों का उत्पादन किया गया और १४ लाख मत्स्य बीजों को मत्स्य पालन करने वाले कृषकों को उपलब्ध कराया गया। अच्छी गुणवत्ता युक्त कार्प मत्सय बीज का उत्पादन केन्द्र द्वारा किया गया और उत्तर प्रदेश के ६ जनपदों जैसे वाराणसी, मिर्जापुर, सोनभद्र, संत रविदास नगर, चंदौली और आजमगढ़ के मत्स्य उत्पादक कृषकों को विक्रय किया गया; जागरूक कृषकों को एकीकृत मत्स्य उत्पादन के संबंध में सलाहकार सेवाएँ विश्वविद्यालय कार्प फीस हैचरी केन्द्र द्वारा दी जा रही हैं।

बीज उत्पादन (मशरूम)

१. विभिन्न कृषि अवशेषों का मूल्यांकन शोध प्रयोगों द्वारा प्लीवरोट्स प्रजातियों के वृद्धि व्यवहारों एवं उत्पादन विभव के लिए किया गया। मशरूम मिश्रित कम्पोस्ट फसलों के वानस्पतिक उत्पादन के लिए बहुत ही उपयोगी और प्रभावकारी पाया गया;

२. मशरूम बीजों की खेती एवं उत्पादन के लिए कुछ खाद्य मशरूम का एकत्रीकरण;

३. २००० मशरूम स्पान बोतलें प्राप्त की गयी;

४. विभिन्न बटन, ओइस्टर और मिलकी मशरूम की नैसर्गिकप्रजातियों का संरक्षण;

५. मशरूम प्रशिक्षण पर व्याख्यान और प्रदर्शन का आयोजन;

६. मशरूम की खेती की बारीकियों को सीखने के लिए कृषकों द्वारा नियमित तौर पर प्रयोगशाला में आगमन।

एन ए आइपी के अन्तर्गत मुख्य उपलब्धियाँ (नेशनल एग्रीकल्चर इनोवेटिव प्रोजेक्ट)

मिर्जापुर और सोनभद्र जनपदो के ३ कल्सटर में संबंधित फसल उत्पादन तकनीकी का उपयोग उच्च उत्पादन करने वाली प्रजातियों एवं सिंचाइ सुविधओं के वृद्धि के साथ ८ चेक डैम्स का निर्माण और २५ वाटर हारवेस्टिंग वंश के साथ-साथ २१००० हजार पी.वी.सी. डिलिवरी पाइप का वितरण, २९ डीज़ल इंजन पम्प और बौछारी और टपक सिंचाई सिस्टम की स्थापना। पशु स्वास्थ्य संबंधित कार्य, नस्ल सुधार, कृषि उत्पादों के मूल्य योग के साथ-साथ महिला कृषकों और ग्रामीण युवकों का क्षमता निर्माण। उपरोक्त के संचित प्रभाव का परिणाम कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार के रूप में परिणित हुआ है।

निच एरिया प्रोजेक्ट के अन्तर्गत मुख्य उपलब्धियाँ

१. गेहूँ : क्यूटी एल एस संबंधित स्पॉट ब्लॉच प्रतिरोधक पर उपस्थित टु बी (क्यूएसबी.बी.एच.यू.टु बी) और ७ डी (क्यूएसबी.बी.एच.यू. टु डी) और ७ डी की प्रमाणिकता। आनुवंशिक क्षेत्रों के सेचुरेशन पर मॉलीक्युिलर वर्क स्पॉट ब्लॉच प्रतिरोध से संबंधित कार्य कुछ महत्वपूर्ण नजदीकी जुड़े हुए मार्क्स की पहचान का कार्य प्रगति पर; M-१, MAT-२ लोसाई संबंधित मिश्रित ग्रुप; स्पॉट ब्लॉच के प्रति उच्च प्रतिरोधी १० गेहूँ की लाइन का क्रास २ उच्च उत्पादक लेकिन अति संवेदशील गेहूँ की प्रजाति के साथ, एचयूडब्लू-२३४ और एचयूडब्लू ४६८ रबी २०१०-११ के दौरान २० एफवनएस की बुआई वेलिंगटन के केन्द्र पर २० एफवनएस रिकरेन्ट पैरेंट्स के साथ (एचयूबी-२३४ और एचयूडब्लू-४६८) के साथ बैकक्रास्ड; २. अरहर : विल्ट संवेदनशील जिनोटाइट (बाहार, एम एल १८) और विल्ट प्रतिरोधी डोनर के क्रास द्वारा एफ टु बीजों की प्राप्ति; कुल १८ एफवनएस जो कि फ्यूज़ेरिम विल्ट के प्रति संवेदनशील/उच्च संवेदशील जिनोटाइट और प्रतिरोधी डोनर की प्राप्ति; बीसी वन एफ वन एस पापुलेशन की ३ क्रास द्वारा प्राप्ति।

छात्रों हेतु प्रदत्त सुविधाएँ:

प्रोयोगिक कक्षाओं के लिये नये उपकरण: (१) लार्क मेक ठाइजीन प्लस इन सीटू फारमेन्टर, (२) डिज़िटल हॉट ओवन, (३) वॉटर बॉथ (डबल वाल) डिज़िटल तापमान और पीआइडी नियंत्रण के साथ, (४) डिजिटल बल्क डेन्सीटी अपरेटस, (५) डिज़िटल बम्ब कैलोरी मीटर, (६) राइस सेलर, (७) पलांट ग्रोथ चैम्बर, (८) वेजिटेबल सीड प्रासेसर, (९) डीप फ्रीजर, (१०) जेल डॉकुमेन्टेशन, (११) स्पेक्ट्रो फोटो मीटर, (१२) ट्रैक्टर, (१३) ग्रोथ चैम्बर, (१४) अल्टरा सेन्टरीफ्यूज, (१५) ग्रुप फिल्ड डिज़िटल विस्को मीटर, (१६) अल्ट्रा हाई वाटर प्यूरिफिकेसन सिस्टम, (१७) जिसी एमेस इन्क्यूवेटर व शंकर, (१८) बीओडी इन्क्यूबेटर, (१९) ओवेन, (२०) पीएच मीटर, (२१) माइक्रो स्कोप, (२२) मिनी दाल मील, (२३) क्लीनर कम ग्रेडर, (२४) मिक्सर ग्राइंडर (२५) माइक्रोवेव ओवन (२६) रेफ्रीजरेटर (२७) इलेक्ट्रानिक बैलेंस (२८) जेल डाक सिस्टम।

संगणक एवं इन्टरनेट सुविधायें लैन के माध्यम से:

सभी कर्मचारियों एवं कक्षाओं में प्रदत्त है।

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु अन्वेषण:

- प्रशिक्षण हेतु मल्टीमीडिया प्रयोग।
- ई-कोर्स की परिकल्पना, नमूना एवं उसकी व्यवस्था।
- विभाग में स्नातक, परास्नातक, शोध छात्रों को प्रदत्त सुविधाएँ जैसे- एलसीडी प्रोजेक्टर, इन्टरनेट।
- सस्य विज्ञान एवं मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग, आईएएस बीएचयू के एम.एससी. (एजी.) के छात्रों के लिए सस्य विज्ञान विभाग एवं फर्टीलाइज़र एसोसियेशन ऑफ इण्डिया (उत्तरी प्रक्षेत्र द्वारा उर्वरक ओरियनटेशन कोर्स का आयोजन)।
- छात्रों को एक माह के लिए प्रशिक्षण हेतु सेन्ट्रल स्वॉयल एण्ड वाटर रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट, नेशल इन्स्टीट्यूट ऑफ हाइग्रो लाजी, सागर में भेजा गया।
- सेन्टर फॉर फूड साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी ने इन्टरेक्टिव मॉनीटर और प्लाज़्मा टेलीज़िन की स्थापना की।

कृषि विज्ञान संस्थान में आधारभूत संरचना का विकास

मृदा एवं कृषि रसायन विज्ञान विभाग में डिज़िटल बल्क डेन्सीटी उपकरण स्थापित किया गया।

परिसर का विकास, उपरोक्त अवधि में नये भवनों के निर्माण की संक्षिप्त रिपोर्ट

१ नवीन कृषि महिला छात्रावास के प्रथम तल का निर्माण कार्य पूरा होने के पश्चात् मानीय कुलपति का०हि०वि०वि० पद्मश्री लालजी सिंह के करकमलों द्वारा २८ जनवरी, २०१२ (स्थापना दिवस) को उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

२ पशुपालन एवं डेयरी विभाग का प्रथम तल का निर्माण।

३ कृषि विज्ञान संस्थान के दो भवनों को जोड़ने का कार्य पूर्ण होने वाला है जिसमें दो से तीन विभागों को कार्य-स्थल आवंटित किया जा चुका हैं।

४ आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन में मक्का अनुसंधान के प्रयोगशाला के जीर्णोद्धार का कार्य प्रगति पर है।

५ दोनो परिसर मे दो बीज भण्डार निर्मित हुए।

६ प्रक्षेत्र अभियांत्रिकीय विभाग के औजारों के रखने की जगह का जीर्णोद्धार प्रगति पर है (खाली जगह में ईंट लगाने एवं कमरों का जीर्णोद्धार प्रगति पर है।

७ कृषि विज्ञान संस्थान के प्रथम दो भवनों को जोड़ने का कार्य प्रगति पर है।

८ चार मंजिला शैक्षणिक खण्ड एवं प्रेक्षागृह के निर्माण का कार्य प्रगति पर है।

पशुपालन एवं डेयरी विभाग के प्रथम तल का निर्माण

२.१.१.२. चिकित्सा विज्ञान संस्थान

वर्तमान काल में चिकित्सा विज्ञान संस्थान में तीन संकाय चिकित्सा विज्ञान, दन्त चिकित्सा विज्ञान एवं आयुर्वेद संकाय सन्निहित है, जो इसकी सतत् यात्रा का प्रतिफल है। संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय में सन् १९२२ में यह एक विभाग के रूप में और सन् १९२७ में आयुर्वेद महाविद्यालय के रूप में स्थापित हुआ जो बाद में सन् १९६० में चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय के रूप में परिणत हुआ। तत्पश्चात् विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा १९७१ में चिकित्सा विज्ञान संस्थान के रूप में उच्चीकृत हुआ। सन् १९७८ में संस्थान में दो संकाय, चिकित्सा विज्ञान एवं आयुर्वेद अस्तित्व में आया। संस्थान उत्तरोत्तर उल्लेखनीय प्रगति करते हुए वर्तमान स्वरूप तक पहुँचा।

सन् १९६० में एम.बी.बी.एस. स्नातक पाठ्यक्रम के साथ चिकित्सा विज्ञान, संकाय के रूप में अस्तित्व में आया। आधुनिक चिकित्सा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम सन् १९६३ में प्रारम्भ हुआ तथा वर्तमान काल में १३४ सीटों के साथ एम.डी./ एम.एस. पाठ्यक्रम ३३ विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में संचालित है। सन् १९७६ में उच्च विशेषज्ञता वाले जैसे डी.एम./एम.सी.एच. पाठ्यक्रम की शुरूआत हुई और अब चिकित्सा विज्ञान के अन्तर्गत २५५ बेड हैं। २० सीटों के साथ डी.एम./एम.सी.एच. पाठ्यक्रम ११ उच्च विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में चल रहे हैं। वृक्करोग, रेडियोथिरेपी एवं पैथालॉजी विभाग में तकनीकी कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए विभिन्न स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। चिकित्सा विज्ञान संकाय में विभिन्न विशेष दक्षतावाले प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे- पी.जी.डी.एम.सी.एच., आई.एम.एन.सी.आई., आई.डी.एस.पी., पी.डी.सी.सी. (नि:संज्ञा) भी चलाये जा रहे हैं।

आयुर्वेद संकाय विश्वविद्यालय का सबसे पुराना संकाय है, यह वर्ष १९२७ में अस्तित्व में आया। वर्तमान समय में स्नातकोत्तर, स्नातक, स्नातकोत्तर डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम आयुर्वेद संकाय द्वारा चलाया जा रहा है। यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आयुर्वेद संकाय देश का एकमात्र अकेला संकाय है जो १५ विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में स्नातकोत्तर उपाधि उपलब्ध करा रहा है। द्रव्यगुण विभाग के अन्तर्गत १० एकड़ भूमि से आच्छादित एक औषधीय पौधों का बगीचा जिसमें २०० औषधीय पौधों की प्रजातियाँ विद्यमान है, सुशोभित है। रसशास्त्र विभाग में एक हरबेरियम एवं क्रूड ड्रग म्यूज़ियम व्यवस्थित है जिसमें ४५० प्रजातियाँ विद्यमान है। पंचकर्म विभाग विभिन्न रोगों के निदान की विधि उपलब्ध कराता है। वृहद संख्या में गुर्दा रोग से ग्रसित शल्य तन्त्र विभाग के अन्तर्गत संचालित क्षारसूत्र इकाई द्वारा लाभान्वित होते हैं।

एम.बी.बी.एस. के छात्रों की पढ़ाई के लिए सन् १९६२ में दन्तरोग विज्ञान शल्य विभाग की एक इकाई के रूप में प्रारम्भ हुआ। अक्टूबर सन् १९७१ में दन्तरोग विज्ञान एक विभाग के रूप में

अस्तित्व में आया और दो छात्रों के प्रवेश के साथ सन् १९७९ में एम.डी.एस. (ऑपरेटिव डेन्टल सर्जरी) पाठ्यक्रम शुरू हुआ। एक छात्र प्रतिवर्ष की दर से सन् १९८८ में एम.डी.एस. (प्रोस्थोडॉन्टिक्स) पाठ्यक्रम शुरू किया गया। सितम्बर २००५ में दन्तरोग विज्ञान विभाग दन्तरोग विज्ञान संकाय में उच्चीकृत हुआ। सन् २००८ में २५ छात्रों के प्रवेश के साथ बी.डी.एस. पाठ्यक्रम की शुरूआत हुई। एक छात्र के प्रवेश के साथ एम.डी.एस. (आर्थोडॉन्टिक्स) पाठ्यक्रम की भी शुरूआत हुई। चिकित्सा विज्ञान संस्थान के साथ सम्बद्ध सर सुन्दरलाल चिकित्सालय के पास आयुर्वेद के १८६ बेड को मिलाकर कुल १२०० बेड हैं। संस्थान के साथ कर्मचारी स्वास्थ्य केन्द्र एवं छात्र स्वास्थ्य संकुल भी सम्बद्ध हैं। सर सुन्दरलाल चिकित्सालय पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं पड़ोसी राज्यों की जनता को आधुनिक स्तर की स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराता है। चिकित्सा विज्ञान संस्थान एवं सर सुन्दरलाल चिकित्सालय को उच्चीकृत करने के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार ने चुना है। इसी कड़ी में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय ने प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के अन्तर्गत ट्रॉमा सेन्टर के साथ एक अस्पताल एवं ४ विशेष दक्षता वाले विभाग के निर्माण के लिए सहायता उपलब्ध करायी है। अस्पताल के पास कम्पोनेन्ट सेपरेशन सुविधा के साथ एक आधुनिक रक्तकोष भी है। नेशनल एड्स कण्ट्रोल ऑर्गेनाइज़ेशन (नाको) नई दिल्ली द्वारा इसे 'ए' ग्रेड मिला है। नाको द्वारा अस्पताल रक्तकोष को एक मोबाइल ब्लड बैंक वैन उपलब्ध करायी गया है, जिसकी कीमत एक करोड़ सैंतीस लाख रूपये है, रोगी सेवा के लिए प्रयोग में लायी जा रही है।

चिकित्सा विज्ञान संस्थान विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाये विद्यार्थियों को अत्याधुनिक शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध सुविधाओं को उपलब्ध कराता है। विभिन्न विभागों में शिक्षण एवं शोध कार्यक्रमों के लिए उच्च तकनीक से युक्त प्रयोगशाला की सुविधाएं उपलब्ध हैं। संस्थान का ग्रन्थालय रविवार एवं अन्य अवकाश के दिनों में भी खुला रहता है। ग्रन्थालय में इण्टरनेट एवं फोटोकॉपी सुविधाएं हैं। छात्रावास में रहने वाले छात्रों को छात्रावास में कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट की सुविधाएँ प्राप्त है। संस्थान से सम्बद्ध विशेष इकाई के रूप में एक जनसंख्या, शिक्षा, विस्तार एवं शोध केन्द्र है जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से वित्तपोषित है।

चिकित्सा विज्ञान संकाय

चिकित्सा विज्ञान संस्थान के इस संकाय के छात्रों एवं आवासीय चिकित्सकों ने सत्र २०११-१२ अवधि में विभिन्न संगोष्ठियों में भाग लिया एवं पुरस्कार जीते।

शरीर रचना विभाग के ६ स्नातकोत्तर विद्यार्थियों ने दिसम्बर २०११ में इन्दौर में आयोजित नेशनल कांग्रेस ऑफ एनाटॉमी में भाग लिया।

जैव रसायन विभाग के पीएच.डी. छात्र श्री मानस कुमार नायक ने वाशिंगटन, अमेरिका में एक शोध पत्र प्रस्तुत किया।

इंडोक्रिनोलॉजी विभाग के शोध छात्रा/छात्र सुश्री शलभा तिवारी व श्री अवनीन्द्र द्विवेदी ने फोनिक्स, अमेरिका में शोध पत्र प्रस्तुत किया एवं सुश्री तिवारी ने थर्ड बेस्ट पेपर अवार्ड जीता।

गला, नाक, कान विभाग के जूनियर रेज़ीडेन्ट (तृतीय वर्ष) के छात्र डॉ. एस. प्रधान ने शोध पत्र प्रस्तुतीकरण में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

डॉ. शिवांशु सिंह जूनियर रेज़ीडेन्ट II, जनरल सर्जरी ने आई.एच.पी.बी.ए. ट्रवेल बरसरी अवार्ड प्राप्त किया।

मनोरोग विभाग के जूनियर रेज़ीडेंट छात्रों डॉ० अभिषेक पाठक, डॉ० आशीष नायर, डॉ० अनिल यादव, डॉ० माधवी, डॉ० हेमन्त कुमार एवं डॉ० रमित गुप्ता ने विभिन्न संगोष्ठियों में भाग लिया एवं विभिन्न शोध ग्रन्थों में १२ शोध पत्र प्रकाशित किया।

पैथोलाजी विभाग के जूनियर रेजीडेंट III, डॉ० आरती कुमार ने पी.जी.आई. चंडीगढ़ में आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया एवं यात्रा भत्ता अनुदान प्राप्त किया।

रेडियोथिरेपी एण्ड रेडिएशन विभाग के जूनियर रेजीडेंट III डॉ० चितरंजन खदांगा ने एसोसिएशन ऑफ रेडिएशन आंकोलाजिस्ट्स ऑफ इण्डिया की नील जोसेफ फेलोशिप प्राप्त किया।

डा. विनय कुमार (पूल ऑफिसर, सर्जिकल आंकोलॉजी विभाग) को इण्डिया एसोसिएशन ऑफ सर्जिकल आंकोलॉजी द्वारा डिट्रायोट फेलोशिप प्रदान की गयी।

चिकित्सा विज्ञान संस्थान के इस संकाय के अध्यापकों ने सत्र २०११-१२ में विभिन्न अवार्ड्स एवं फेलोशिप प्राप्त किया।

प्रो. एस.एस. पाण्डेय ने त्वचा एवं रति रोग विभाग में एशियन एकेडमी ऑफ डर्माटोलॉजी एण्ड वेनरोलॉजी की फेलोशिप प्राप्त किया।

प्रो. एस.के. गुप्ता (जनरल सर्जरी) ने ७१वें एनुअल कांफ्रेंस ऑफ एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इण्डिया में बेस्ट पेपर अवार्ड प्राप्त किया।

डॉ० सोमप्रकाश बसु (जनरल सर्जरी) को अमेरिकन कालेज ऑफ सर्जन्स की ओर से इण्टरनेशनल बेस्ट स्कालर अवार्ड से सम्मानित किया गया।

प्रो. एम.के. अग्रवाल (कान, नाक, गला) को एफ.ए.एम.एस. की उपाधि मिली।

डॉ० विनीता गुप्ता (बाल रोग विभाग) को सेंट जूडे विवा फोरम ट्रेवेलिंग फेलोशिप मिली।

डॉ० श्रीपर्णा बसु (बाल रोग विभाग) को रॉयल कॉलेज ऑफ पेडियाट्रिक्स एण्ड चाइल्ड हेल्थ, लन्दन की फेलोशिप प्राप्त हुई।

Microbiologists
Medical Sciences,

ational Conference of
ation of Medical Microbiologists
23rd - 26th November 2011
Organized by:
itute of Medical Sciences,
Varanasi
Microbes, Molecules & Beyond
DR. LALJI SINGH

संकाय के चिकित्सकों ने विभिन्न अतिथि व्याख्यान दिये-

प्रो. डी.दास (जैव रसायन) ने एकबिकॉन-२०११ में जी.पी. तलवार ओरेशन दिया।

डॉ० एन.के. अग्रवाल (इंडोक्रिनोलॉजी) ने थाईलैण्ड में आयोजित इण्टर नेशनल एकेडमी ऑफ कार्डियो वैसकुलर साइंसेज़, कनाडा द्वारा आयोजित संगोष्ठी में व्याख्यान दिया।

प्रो. वी.के. शुक्ला (जनरल सर्जरी) ने उदयपुर में आयोजित चौथे इण्टरनेशनल सिम्पोज़ियम में ट्रेडिशनल रिसर्च पर अतिथि व्याख्यान दिया।

प्रो. एस.के. गुप्ता ने उण्डकॉन २०११ में अतिथि व्याख्यान दिया।

प्रो. ए.एन. गंगोपाध्याय (पेडियाट्रिक सर्जरी) ने आई.ए.पी.एस. २०११ का एम. रोहतगी ओरेशन व्याख्यान दिया।

संकाय सदस्यों ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक निकायों में प्रतिष्ठित पद प्राप्त किया।

प्रो. टी.एम. महापात्रा (माइक्रोबायोलाजी) : एच.आई.वी./एड्स के लिए डब्लू.एच.ओ.-सी.डी.सी. कन्सल्टैन्ट/आई.सी.एम.आर अवार्ड्स के लिए एक्सपर्ट मेम्बर, एम्स में सदस्य-शोध सलाहकार परिषद्, एन.ई.आई.जी.आर.आई. एच.एम.एस., स्वास्थ्य मंत्रालय, कार्यकारिणी सदस्य- चयन एवं क्रय समिति, इण्डो-यूके शिक्षा एवं शोध इनीसिएटिव के प्रमुख, सेन्ट जार्ज यूनिवर्सिटी, लन्दन।

प्रो. रतन कुमार श्रीवास्तव (सामुदायिक चिकित्सा) ने इण्डियन सोसायटी ऑफ हाइपरटेन्सन में महासचिव पद धारण किया।

प्रो. एस.के. सिंह (इण्डोक्रिनोलॉजी) डायबिटीज़ इण्डिया में उपाध्यक्ष।

प्रो. जय प्रकाश (वृक्क रोग विभाग) अध्यक्ष-इण्डियन सोसायटी ऑफ नेफ्रोलॉजी।

प्रो. एस.सी. गोयल (अस्थिरोग विभाग) चयनित अध्यक्ष ट्रॉमा सोसायटी ऑफ इण्डिया।

प्रो. पी.बी. सिंह (मूत्ररोग विभाग) अध्यक्ष-यूरोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इण्डिया।

शोध परियोजनाएँ

जैव रसायन विभाग- ६ परियोजनाएँ वित्तपोषित द्वारा डी.बी.टी., डी.एस.टी., सी.एस.आई.आर. एवं आई.सी.एम.आर.।

सामुदायिक चिकित्सा विभाग- ६ परियोजनाएँ द्वारा प्रायोजित क्रमश: यूनिसेफ, यू.जी.सी., विश्व बैंक एवं यू.एस.एड।

गैस्ट्रोइंट्रोलॉजी- दो यू.जी.सी. प्रोजेक्ट।

जनरल मेडिसिन- ५ परियोजनाएँ प्रायोजित द्वारा एन.आई.एच-यू.एस.ए., आई.सी.एम.आर. यूरोपियन कमीशन।

जनरल सर्जरी- ५ परियोजनाएँ प्रायोजित द्वारा यू.जी.सी. आई.सी.एम.आर. एवं डी.बी.टी.

फिजियोलॉजी- एक परियोजना द्वारा वित्तपोषित आई.सी.एम.आर.।

डर्माटोलॉजी- नाको सहायतित एस.टी.डी. क्लीनिक।

इंडोक्रिनोलॉजी- दो परियोजनाएँ क्रमश: प्रत्येक यू.जी.सी. एवं आई.सी.एम.आर. द्वारा वित्तपोषित।

माइक्रोबायोलॉजी- दो परियोजनाएँ प्रत्येक वित्तपोषित द्वारा डी.एस.टी. एवं डी.बी.टी.।

नेत्र रोग विभाग- एक परियोजना।

स्त्री रोग विभाग- नाको द्वारा वित्तपोषित एक पी.पी.टी.सी.टी. परियोजना।

पैथोलॉजी- तीन परियोजनाएँ- प्रत्येक प्रायोजित क्रमश: जीव दया फाउण्डेशन, सी.एस.टी. एवं डी.बी.टी.।

पेडियाट्रिक सर्जरी- एक डी.बी.टी. परियोजना।

सर्जिकल आंकोलॉजी- एक डी.बी.टी. परियोजना।

शिक्षणेत्तर कार्यक्रम

कार्डियोथोरेसिक सर्जरी- ''तम्बाकू से होने वाले कैंसर की रोकथाम'' पर सार्वजनिक जागरूकता कार्यक्रम।

इण्डोक्रिनोलॉजी- साप्ताहिक रोगी शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन।

जनरल सर्जरी- सीतामढ़ी में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन।

न्यूरोलॉजी-वाराणसी के विद्यालयों में मिर्गी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

नेत्र रोग विभाग- विभिन्न क्षेत्रों में नेत्र रोग शिविर आयोजित किया गया।

मूत्र रोग विभाग- नेहरू हास्पिटल, सिंगरौली में विभिन्न तरह के आपरेशनों का प्रदर्शन किया गया एवं यूरोलॉजी क्लीनिक का आयोजन किया गया।

भविष्यगत उद्देश्य :

बोन मैरो ट्रांसप्लांटेशन एण्ड स्टेम सेल रिसर्च।,

अत्याधुनिक कैंसर केन्द्र विभाग।

वृद्धजनित चिकित्सा विभाग।

ट्रॉमासेन्टर की पूर्णता।

आयुर्वेद संकाय

संकाय के विद्यार्थियों ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध पत्र प्रस्तुत किया।

कायाचिकित्सा विभाग के आवासीय चिकित्सकों ने २० शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रस्तुत किया।

रस-शास्त्र विभाग के आवासीय चिकित्सकों एवं विद्यार्थियों ने १५ शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किया।

आयुर्वेद के संकाय सदस्यों ने सत्र २०११-१२ में विभिन्न अतिथि व्याख्यान दिया।

प्रो. एस.के. तिवारी (कायाचिकित्सा) ने ६ अतिथि व्याख्यान दिये।

प्रो. डी.एन. पाण्डे (संज्ञाहरण) ने डॉ० एस.बी. पाण्डे मेमोरियल ओरेशन पुणे एवं डॉ० एम.एम. चौधरी मेमोरियल ओरेशन बेलगाम में व्याख्यान दिया।

डॉ० संगीता गहलोत (क्रिया-शरीर) ने ९ अतिथि व्याख्यान दिये।

संकाय सदस्यों ने वैज्ञानिक निकायों में भी प्रतिष्ठित पद सुशोभित किया।

इमेरिटस प्रो. आर.एच. सिंह (काया चिकित्सा) चेयरमैन, साइंटिफिक एडवाइज़री कमेटी ऑफ सी.सी.आर.ए.एस. एवं अध्यक्ष- ए.ए.पी.आई.।

प्रो. डी.एन. पाण्डे (शल्य तन्त्र)- कार्यकारिणी सदस्य- ए.ए. आई.एम., ए.ए.पी.आई.।

डॉ० बी. मुखोपाध्याय (शालाक्य तन्त्र) उपाध्यक्ष, इंडियन एसोसिएशन ऑफ शालाक्य तन्त्र।

आयुर्वेद संकाय में संचालित शोध परियोजनाएं

द्रव्यगुण-आयुष नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित एक परियोजना।

मेडिसिनल कमेस्ट्री-तीन परियोजनाएं क्रमश: वित्तपोषित द्वारा- सी.एस.आई.आर., बी.आर.एन.एस. एवं यू.जी.सी.।

कायाचिकित्सा- एक परियोजना- प्रायोजित द्वारा सी.सी.आर.ए.एस. नई दिल्ली।

शल्य तन्त्र- दो परियोजनाएँ।

शिक्षणेत्तर कार्यक्रम

कायाचिकित्सा- पंचकर्म सेवाओं के लिए केरल आयुर्वेद लिमिटेड के साथ अनुबन्ध।

स्वस्थवृत्त एवं योग- बच्चों की याददाश्त बढ़ाने एवं अवसाद को घटाने के लिए योग का प्रशिक्षण एवं स्कूलों में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन।

शालाक्य तन्त्र-मालवीय शिशु विहार में नेत्रों को स्वस्थ रखने के लिए जागरूकता कार्यक्रम एवं नेत्र परीक्षण।

दन्त विज्ञान संकाय

दन्त विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों ने विभिन्न संगोष्ठियों में विभिन्न पुरस्कार प्राप्त किया।

डॉ० ईशा नारंग जे आर III ने अहमदाबाद में आयोजित पी.जी.कन्वेंशन में बेस्ट पेपर अवार्ड जीता। उन्होंने दिल्ली में आयोजित पी.जी. कांफ्रेंस में भी प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

डॉ० आरती गुप्ता जे आर III ने प्रोस्थोडोन्टिक कनवेन्शन में बेस्ट पेपर अवार्ड प्राप्त किया।

संकाय सदस्यों ने कई पुरस्कार प्राप्त किया एवं अतिथि व्याख्यान दिया।

प्रो. नीलम मित्तल ने आई.डी.ए. में अतिथि व्याख्यान दिया।

प्रो. टी.पी. चतुर्वेदी ने ४६ वें इण्डियन आर्थोडोन्टिक कांफ्रेंस में सत्र की अध्यक्षता की एवं अतिथि व्याख्यान दिया।

वैज्ञानिक निकायों में संकाय सदस्यों ने विभिन्न पदों को सुशोभित किया।

प्रो. टी.पी. चतुर्वेदी- सदस्य- कार्यकारिणी समिति-इण्डियन आर्थोडोन्टिक सोसायटी,

शोध परियोजनाएँ

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वित्तपोषित एक परियोजना।

नर्सिंग कॉलेज

नर्सिंग स्कूल नर्सिंग कॉलेज में उच्चीकृत हुआ और ६० विद्यार्थियों के प्रवेश के साथ सन् २००९-१० सत्र से नर्सिंग कॉलेज ने ४ वर्षीय बी.एस.सी. उपाधि की शुरूआत की। इण्डियन नर्सिंग कौंसिल ने नर्सिंग कॉलेज का चयन ग्लोबल फण्डेड परियोजना को संचालित करने के लिए देश के ५५ संस्थानों में सम्मिलित कर किया जिसके अन्तर्गत ४ वर्षों में (२००९-२०१३) एच.आई.वी./एड्स, क्षय रोग एवं मलेरिया क्षेत्र में पूरे देश में ९०,००० नर्सों को प्रशिक्षित करना है। ग्लोबल फण्ड- स्विटज़रलैंड द्वारा सहायता प्राप्त यह परियोजना इण्डियन नर्सिंग कौंसिल एवं नाको द्वारा लागू की गयी है। २०११-१२ सत्र में १० कार्यशालाओं का आयोजन एवं वाराणसी तथा यू.पी. के अन्य विभिन्न अस्पतालों में कार्यरत २७१ नर्सों का प्रशिक्षण कॉलेज के शिक्षकों द्वारा दिया जा चुका है। जुलाई २०११ में नर्सिंग प्रशासक, पुलिस नर्सिंग कॉलेज, म्यांमार एवं थाईलैण्ड के विशेषज्ञ इस कॉलेज का दौरा कर चुके हैं।

२.१.१.३. प्रौद्योगिकी संस्थान

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में तकनीकी शिक्षा प्रदान करने हेतु मालवीयजी द्वारा तीन महाविद्यालयों अर्थात् बनारस इंजीनियरिंग कॉलेज (बेंको), खनन एवं धातुकीय कॉलेज (मिन्मेट) और कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी (टेक्नों) की स्थापना क्रमशः सन् १९१९, १९२३ और १९३२ में की गयी। भारत में पहली बार का.हि.वि.वि. में यांत्रिकी अभियांत्रिकी के साथ-साथ खनन अभियांत्रिकी, धातुकीय अभियांत्रिकी, सिरेमिक अभियांत्रिकी और भैषजिकी विज्ञान में एकीकृत उपाधि पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। देश की आजादी के बाद यहाँ स्नातकोत्तर शोध एवं अनुसंधान के कार्यक्रम भी प्रारम्भ किये गये। इन कॉलेजों ने ऐसे मेधावी अभियंता दिये हैं जिन्होने स्वतंत्र भारतवर्ष के अनेक स्वदेशी उद्योगों, शिक्षण संस्थानों तथा शोध एवं अनुसंधान प्रयोगशालाओं का नेतृत्व किया है। सम्पूर्ण तकनीकी शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से सन् १९६८ में इन तीनों महाविद्यालयों को मिलाकर प्रौद्योगिकी संस्थान बना दिया गया जिसके संस्थापक निदेशक प्रो. गोपाल त्रिपाठी थे।

प्रौद्योगिकी संस्थान ने अपने विषयों में दक्ष शिक्षकों के कारण की होनहार अभियंताओं एवं प्रशासकों को निर्मित किया है जिन्होनें राष्ट्र के प्रति अपनी नैतिक सेवायें समर्पित की है। संस्थान को अपने पूर्व विद्यार्थी, शिक्षक एवं हितैशी प्रो. पी. रामाराव पर गर्व है जिन्हें महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने पद्म विभूषण सम्मान से अलंकृत किया।

इस वर्ष आउटलुक पत्रिका ने अपने सर्वेक्षण में काशी हिन्दू विद्यालय के प्रौद्योगिकी संस्थान को राष्ट्र का ७वाँ श्रेष्ठ संस्थान घोषित किया है। वर्ष २०११ के लिए देश में सर्वोत्तम तकनीकी संस्थान के लिए संस्थान को आई.एस.टी.के.– के.आई.आई.टी.पुरस्कार से नवाजा गया है। हाल ही में, संस्थान में प्रो. गोपाल त्रिपाठी एवं प्रो. गोडबोले मेमोरियल लेक्चर की तर्ज पर प्रो.टी.आर अनंतरामन मेमोरियल लेक्चर प्रारम्भ किए गए हैं। तीसरा मेमोरियल लेक्चर पद्मविभूषण प्रो.पी.रामा राव, अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स, ए.आर.सी.आई., हैदराबाद द्वारा दिया गया।

संस्थान में इस समय शिक्षकों के ५५८ (३७१+१८७ अ.पि.वर्ग के लिए आरक्षित) स्वीकृत पदों के सापेक्ष मात्र २४६ शिक्षक हैं, जबकि तकनीकी व गैर-तकनीकी कर्मचारियों की संख्या ४५६ है। वर्तमान में, संस्थान में १३ विभाग व ३ अन्तर्विषयी स्कूल हैं। संस्थान की केन्द्रीय सुविधाओं के अन्तर्गत राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी सुविधा

(एन.ई.एल.एम.आई.एफ.), संस्थान का कार्यशाला, ग्रंथालय, ज़िमखाना, प्रशिक्षण व नियोजन प्रकोष्ठ, औद्योगिक परामर्श एवं परीक्षण सेवाएँ उपलब्ध है।

आई.टी. बी.एच.यू. को आई.आई.टी. बी.एच.यू. में रुपातंरण के लिए लोकसभा और राज्य सभा द्वारा इस वर्ष के दौरान पारित कर दिया गया। इस रुपातंरण के सन्दर्भ मे संस्थान के शिक्षकगण एवं भूतपूर्व छात्रों ने विश्वविद्यालय प्रशासन के सक्रिय सहयोग के साथ सभी वांछित आवश्यकताओं की पूर्ति की ।

शैक्षणिक कार्यक्रम

संस्थान अपने समस्त अभियांत्रिकी विभागों में चतुर्वर्षीय बी.टेक्. उपाधि कार्यक्रम और फार्मास्यूटिक्स में चतुर्वर्षीय बी.फार्मा. उपाधि पाठ्यक्रम के साथ-साथ पंचवर्षीय एकीकृत (बी.टेक.-एम.टेक./बी.फार्मा.-एम.फार्मा.) द्विउपाधि कार्यक्रम भी प्रदान करता है। समस्त विभागों एवं स्कूलों में पीएच.डी. कार्यक्रम भी चलाये जाते है जो कि शोध एवं अनुरूपांकी की विशेष प्रसंगिकताओं से निबद्ध है।

स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रतिष्ठित संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जे.ई.ई.) के माध्यम से किये जाते है। चतुर्वषीय बी.फार्मा. कार्यक्रम में प्रवेश के लिए ५०% सीटें जेईई के माध्यम से और ५०% सीटें का.हि.वि.वि. द्वारा संचालित पी.एम.टी./पी.ए.टी. के माध्यम से पूर्ण किया जाता हैं। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश तकनीकी स्नातक योग्यता परीक्षा (जी.ए.टी.ई.) के माध्यम से लिया जाता है। नेट/गेट उत्तीर्ण करने वाले अभ्यर्थियों के लिए पीएच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश खुला है। सहयोगात्मक अनुसंधान व विकास कार्यक्रम को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिष्ठित उद्योगों और राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के अभ्यर्थियों को पीएच.डी. उपाधि हेतु पंजीयन के प्राविधान द्वारा अनुसंधान कार्यों की अनुमति दी जाती है। देश के निरन्तर बदलते परिदृश्य की माँग के अनुसार सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों व पाठ्यक्रमों का नियमित पुनरीक्षण किया जाता है। संस्थान ने अब तक लगभग २४१३९ बी.टेक./बी.फार्मा, ३९५३ एम.टेक./एम.फार्मा. तथा ७८७ पीएच.डी. उपाधि प्रदान की है।

आउट रिच प्रोग्राम

डीएसटी.के इन्स्पायर कार्यक्रम में सहभागिता

१० जून, २०११ को कक्षा १० स्तर के बोर्ड परीक्षा में टॉप १०,००० रैंक के १५० विद्यार्थियों को संस्थान के विभागों और स्कूलों के भ्रमण द्वारा इंजीनियरिंग प्रैक्टिसेज़ एवं मैटीरियल्स से परिचित कराया गया। प्रो. आर. के. मंडल, धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग, इस कार्यक्रम के समन्वयक रहे।

टी.ई.पी.पी. इनोवेशन सेन्टर

पूरे देश भर में फैले विभिन्न आउट रिच केन्द्रों के संजाल के माध्यम से टीईपी़पी़.कार्यक्रम कार्य करता है। अपने सहयोगियों के साथ टीईपी़पी़. नये स्वतंत्र अविष्कारकों को उद्यमियों के तौर पर उभरने के लिये उनके विचार और उद्यम को बढ़ावा देने के लिए द्विस्तरीय अनुदान और तकनीकी दिशा-निर्देश तथा पथ प्रदर्शन करता है।

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के १५०वें जन्मदिवस समारोह के अवसर पर संस्थान ने वाराणसी और आस-पास के कक्षा १०, ११ एवं १२ के युवा विद्यार्थियों के लिए १ जुलाई और २ जुलाई को ९.०० से ६.००बजे तक ''ओपेन हाउस'' को पुर्नजीवित किया ताकि संस्थान में वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के क्षेत्र में चल रही गतिविधियों, विभिन्न उपकरणों और गैजेट्स से उन्हें परिचित कराया जा सके। यह ''ओपेन हाउस'' कार्यक्रम नि:शुल्क है।

अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

शिक्षण एवं प्रशिक्षण के साथ-साथ शोध एवं अनुसंधान इस संस्थान के महत्वपूर्ण एवं बुनियादी तत्व हैं जहाँ उच्च योग्यताधारी शिक्षक एवं प्रतिभाशाली शोध छात्र अनुसंधान के अग्रणी क्षेत्रों में सक्रिय हैं। उनके विशिष्ट प्रयासों को विभिन्न प्रायोजक प्राधिकरणों जैसे यू.जी.सी, सी.एस.आई.आर., डी.ओ.ई.डी.एस.टी., ए.आर.डी.बी., डी.ए.ई., ए.आई.सी.टी.ई., डी.आर.डी.ओ., आर.डी.एस.ओ., एम.आर.ई.एम. एवं अनेक प्रतिष्ठित उद्योगों जैसे टिस्को, हिण्डाल्को, ओ.एन.जी.सी., सेल, भेल, मैकान, यू.पी.एस.ई.बी., एफ.सी.आई. कोल इंडिया इत्यादि से वित्तीय सहायता प्राप्त की है। इस वर्ष के दौरान भी अनेक परियोजनाएँ स्वीकृत की गई हैं। विभागों एवं स्कूलों में संचालित समस्त परियोजनाओं, फिस्ट/यूजीसी-सैप की कुल वित्तीय सहायता राशि रु.९८७.०० लाख से ऊपर है। यूजीसी द्वारा धातुकीय अभियांत्रिकी, खनन अभियांत्रिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी, रसायनिक अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी के लिए सीएएस के अर्न्तगत आधारभूत संरचना विकास के लिये २०० लाख रुपये की सहायता स्वीकृत की गई।

वर्तमान में जितनी भी शोध परियोजनायें प्रस्तावित है वह सभी विकसित प्रौद्योगिकी पर आधारित हैं तथा अनुसंधान के आवश्यक विषयों पर केन्द्रित भी हैं। यह रेखांकित करना निहितार्थ है कि धातुकीय अभियांत्रिकी ने भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग से नैनो साइंस एवं नैनो टेक्नोलॉजी पर आधारित शोध परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है जबकि रसायन अभियांत्रिकी विभाग एम.आर.ई.एस., विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् के द्वारा प्रयोजित हाइड्रोजन ऊर्जा पर आधारित शोध परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है। इस वर्ष के दौरान धातुकीय अभियांत्रिकीय विभाग में एक अन्त:संस्थान परियोजना जो कि इन्डो-फ्रेंच सेन्टर फॉर प्रमोशन ऑफ रिसर्च, नई दिल्ली के कोष से सफलता पूर्वक पूर्ण किया गया। इस परियोजना में द स्कूल ऑफ माइन्स, फ्रांस, डिपार्टमेन्ट ऑफ मेटालर्जिकल इंजिनियरिंग, बीएचयू, डिपार्टमेन्ट ऑफ फिज़िक्स, बीएचयू, और डिपार्टमेन्ट ऑफ फिज़िक्स, आई.आई.टी., दिल्ली सहयोगी रहे।

बड़े अनुदान की एजेन्सियों जैसे कि बोर्ड ऑफ रिसर्च इन न्यूक्लियर साइंसेज़ (बी.आर.एनएस) और डिफेन्स रिसर्च और

डेवलपमेंन्ट आर्गेनाइज़ेशन (डीआरडीओ) ने अपनी फण्डिंग नीति और भविष्य के मुख्य क्षेत्रों के सम्बन्ध में विस्तारित प्रस्तुतिकरण दिये और बहुत से प्रस्तावों का चयन किया।

विभिन्न चल रहे प्रयोजक शोध परियोजनाओं की एक झलक निम्नवत है :

संगणक अभियांत्रिकी विभाग

१. नेक्स्ट जेनेरेशन इ-कन्टेन्ट ऑन हाई पर्फॉर्मेंस कम्प्यूटिंग, एमएचआरडी, नई दिल्ली।

२. डिज़ाइन एण्ड डेवलपमेंट ऑफ एन इन्टरेक्टिव इ-कन्टेन्ट फॉर द सबजेक्ट, डिज़िटल इमेज प्रोसेसिंग एण्ड मशीन विज़न, एमएचआरडी, नई दिल्ली।

३. डिज़ाइन एण्ड डेवलपमेंट ऑफ इ-कन्टेन्ट फॉर डिज़िटल विडियो प्रोसेसिंग, एमएचआरडी, नई दिल्ली।

रसायनिक अभियांत्रिकी विभाग

१. ऐरोसॉल एण्ड ब्लेक कार्बन मॉनिटरिंग इन इण्डो-गैंगेटिक प्लेन, वीएसएसआरसी (इसरो)।

२. टेक्नो-इण्टरप्रेन्यूरियल प्रमोशन प्रोग्राम, एआईसीटीई।

३. डेवलपमेंट ऑफ पीजीएम-फ्री डिपीएफ केटेलिस्टस फॉर साइमलटेनियज़ कन्ट्रोल ऑफ NO_x एण्ड डिज़िटल शूट एमिशन्स, डीएसटी।

४. डेवलपमेंट ऑफ ऑटोथर्मल प्रोसेस फॉर अमोनिया क्रेकिंग, एआईसीटीई।

५. टीआरई एमएपी, टीआईएफएसी, नई दिल्ली।

६. रिमूवल ऑफ SO_x एण्ड NO_x M_OEF।

७. स्टडीज़ ऑन मेथानोजेनिक ऑरकि वेक्टेरियल कम्यूनिटी स्ट्रक्चर एण्ड फंक्शन इन राइस इकोसिस्टम बाई यूज़िग मॉलिक्यूलर एण्ड इकोलॉजिकल एप्रोच, डीएसटी।

८. वैल्यू एडिशन टू किनू (सिट्रस) प्रोसेसिंग रेज़िड्यू, यूजीसी।

९. हाइड्रोडायनैमिक एण्ड हीट ट्रांसफर स्टडीज़ इन पलसेटिंग हिट पाइप, एआईसीटीई।

१०. डेवलपमेंट ऑफ ऑटोथर्मल अमोनिया क्रेकिंग प्रोसेस फॉर फूएल सेल ग्रेड हाइड्रोजन प्रोडक्शन, एआईसीटीई।

११. डेवलपमेंट ऑफ लार्ज स्केल फोटोकेटेलेटिक प्रोसेसेज़ यूज़िंग मोड्यूलर रियेक्टर्स फॉर यूटिलाइज़ेशन ऑफ सोलर एनर्जी फॉर हाइड्रोजन प्रोडक्शन बाई डिसोसिएशन ऑफ वॉटर, मिनिस्ट्री ऑफ पेट्रोलियम।

सिविल अभियांत्रिकी विभाग

१. एसएपी (एट डीआरएस लेवल II) प्रोजेक्ट आन 'अर्थक्वेक रेजिस्ट्रेन्ट कन्फाइंड ब्रिक मशीनरी फॉर स्टोरी अपार्टमेंट टाइप बिल्डिंग्स', यूजीसी।

२. पी-टी पाथ एण्ड जिओडायनामिक इवोल्यूशन ऑफ एम्फीवोलाइट फेसिज़ रॉक्स ऑफ द मेघालया प्लेट, मेघालया, डीएसटी, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया।

३. न्यूमेरिकल सॉल्यूशन ऑफ एडवेक्शन डिर्स्पसन इक्वेशन यूज़िंग वेवलेट्स, डिर्पाटमेंट ऑफ एटॉमिक एनर्जी, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।

विद्युतकीय अभियांत्रिकी विभाग

१. इम्प्रूव्ड ऑपरेशन ऑफ डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क इनकॉरपोरेटिंग लोड मॉडल्स, सीपीआरआई, बैंगलोर।

इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी विभाग

१. रिसर्च एण्ड डेवलेपमेंट सैन्क्शनिंग एजेन्सी प्लानेक्श।

मेकैनिकल अभियांत्रिकी विभाग

१. डेवलपमेंट ऑफ ए ट्राइबोलॉज़िकल टेस्ट मैथड टू मेजर गैलिंग रेज़िस्टेन्स फॉर वेरियस मेटल पेयर्स अण्डर ड्राई, लूब्रीकेटेड एण्ड वॉटर लूब्रीकेटेड एनवॉयरमेंट।

२. डेवलपमेंट एण्ड डिसेमिनेशन ऑफ लो कार्बन टेक्नोलॉजीज़ एण्ड एनर्जी कन्जरवेशन टेक्निक्स फॉर रुरल एण्ड अर्बन कम्यूनिटीज़।

३. द कम्बन्शन सिन्थेसिस (एसएचएस) ऑफ T_iO+Metal टू क्रियेट ए हाइली पोरस एण्ड हाई सर्फेस एरिया इलेक्ट्रोलाइट लेयर इन ए डाइ सेन्सीटाइज्ड सोलर सेल।

४. इन्वस्टिगेशन ऑफ हीट ट्रान्सफर एण्ड प्रेशर ड्रॉप कैरेक्टरिस्टिक्स ऑफ नैनो फ्ल्डस इन डबल ट्यूब एण्ड प्लेट हिट एक्स्चेंजर्स।

धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग

१. डेवलेपमेंट ऑफ इ कन्टेन्ट आन एनशिएंट इण्डियन मैटलर्जी एण्ड मार्डन मैटलर्जीकल प्रॉसेस, एमएचआरडी।

२. इफेक्ट ऑफ सरफेस नैनो क्रिस्टलाइज़ेशन ऑन फैटिक लाइफ ऑफ एरोनोटिकल एलॉइज़, डीएसटी।

३. एक्सप्लोरेटरी वर्क ऑफ एलसीएफ बिहेवियर विद सॉल्ट कोटिंग, जीटीआरई।

४. इवेल्यूएशन ऑफ साइक्लिक डीफार्ममेशन बिहेवियर ऑफ स्ट्रक्चरल मैटेरियल्स फॉर एडवॉन्स्ड न्यूक्लियर रियेक्टर एप्लीकेशन्स, बीआरएनएस।

५. माडर्नाइज़ेशन ऑफ कम्प्यूटर लैबोरेटरी, एआईसीटीई।

६. स्टडीज़ ऑन थर्मोडायनामिक एण्ड फिज़िकोकैमिकल प्रोपर्टीज़ ऑफ लेड-फ्री शोल्डर एलॉयज़, डीएसटी।

७. फ्री एनर्जी मिनिमाइज़ेशन इन बायनरी एलोएज़ वाया जेनेटिक एलगोरिदम्स, यूजीसी।

८. डेवलपमेंन्ट ऑफ बल्क अल्ट्रा फाइन ग्रेन्ड स्टील ऑफ हाई स्ट्रेंथ एण्ड हाई डक्टीलिटी थ्रू सीवियर प्लास्टिक डीफॉरमेशन, डीएसटी।

९. डेवलपमेंन्ट ऑफ लो क्यूरी टेम्परेचर मैग्नेटिक नैनो-पार्टिकल्स फॉर बायो-एप्लीकेशन्स, डीएसटी।

१०. सिन्थेसिस एण्ड कैरेक्टराइज़ेशन ऑफ ZrO_2 बेस्ड नैनोकम्पोज़िट्स यूज़िंग माइक्रोवेव टेक्नोलॉजी, यूजीसी।

११. सिन्थेसिस एण्ड कैरेक्टराइज़ेशन ऑफ Ag-Cu, Ag-Au एलॉयज़, एआईसीटीई।

खनन अभियांत्रिकी विभाग

१. डेवलपमेन्ट ऑफ इ कन्टेन्ट फॉर स्लोप इंजिनियरिंग, एमएचआरडी, नई दिल्ली।

२. डेवलपमेन्ट ऑफ ए मेथोडोलॉजी फॉर ह्यूमन एरर क्लासीफिकेशन, एनालिसिस एण्ड रिडक्शन टू इम्प्रूव सेफ्टी एण्ड प्रोडक्टीविटी फॉर अण्डर ग्राउण्ड कोल माइन्स, सीएसआईआर, नई दिल्ली।

भैषजिकी अभियांत्रिकी विभाग

१. एंग्जिओलिटिक एक्टिवीटी ऑफ सिलेक्सान एण्ड न्यूरोफॉर्मोकोलॉजीकल कैरेक्टराइजेशन ऑफ WS-1375, आरटीजीएस – डॉ.विलियम श्वाबे GmbH Co. जर्मनी।

२. एक्सपेरिमेंटल एण्ड क्लीनिकल. . . . . नियोनटेल एनोरेक्सिया, डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, नई दिल्ली।

अनुप्रयुक्त रसायन विभाग

१. माइक्रोवेव एसिस्टेड सेन्थेसिस ऑफ हेट्रोसाइक्लिक कॉम्पाउन्ड्स फॉर इनहिविज़ेशन ऑफ मेटालिक क्रॉसियन।

२. ट्राइबोकेमिस्ट्री ऑफ ट्रान्सिज़ेशन मेटल्स कम्पल्क्सेस।

३. सिन्थेसिस ऑफ नैनो स्ट्रक्चर्ड एडसोरबेन्ट्स एण्ड स्टडी ऑफ देयर एबसॉरबेन्स कैरेक्टरिस्टिक फॉर द रिमूवल ऑफ सेलेक्टेड मेटॉलिक पॉल्यूटेन्टस फ्रॉम वॉटर एण्ड वेस्ट वाटर।

४. ए लो कास्ट प्रोडक्शन ऑफ मेथान फ्रॉम द बाई-प्रोडक्ट (ग्लेसॉल) एण्ड वेस्ट वॉटर जेनेरेटेड ड्यूरिंग सिन्थेसिस ऑफ बायोडीज़ल।

५. डेवलपमेन्ट ऑफ फोटोक्रोमिक थिन फिल्म ऑफ बेक्टिरिओहोडोप्सिन।

६. सिन्थेसिस एण्ड केरेक्टराइज़ेशन ऑफ अल्ट्रा फॉइन पार्टिकल्स इन Ag, Au, Cu एण्ड देयर एलॉइज़।

भौतिकी विज्ञान एवं अभियांत्रिकी स्कूल

१. लो टेम्प्रेचर मैग्नेटिक ट्रांसिज़ंशन इन डिसॉडर्ड $BiFeO_3$, इण्डो-जापान।

२. प्रॉउस पॉलेमेरिक मैटेरियल यूज़िग स्वीफ्ट हेवी आइनस, आईयूएसी-नई दिल्ली।

३. ग्रोथ ऑफ नैनोविरेस एण्ड नैनोट्यूब्स ऑफ ट्रान्सिज़ेशन मेटल डोपेड TiO_2: स्ट्रक्चर, प्रोपर्टीज़ एण्ड फोटोकेटालेटिक एप्लिकेशन, यूजीसी।

४. साइज़ डेपेन्डेन्ट इलेक्ट्रीक, मैग्नेटिक एण्ड मैग्नेटोइलेक्ट्रिक कॉप्लिंग बिहेविअर इन क्रोमाइट स्पाइनेल्स, डीएसटी।

५. डेवलपमेन्ट ऑफ डीएनए बेस्ड बायोसेन्सर एण्ड एप्लिकेशन फॉर डेटेक्शन ऑफ लिस्टेरिया मोनोसायटोजेनेस, डीएसटी।

६. डेवलपमेन्ट ऑफ एजिडोथेमिडिन (एन्टि एचआईवी ड्रग) एण्ड इट्स रिएक्टिव फास-I मेटाबोलिट इलेक्ट्रोकेमिकल सेन्सर बेसड ऑन लो कास्ट स्क्रिम प्रिन्टेड इलेक्ट्रोडेस, डीएसटी।

७. इमोबिलाइज़ड रिच-पेरोक्सिडेस बायोसेन्सर फॉर डोपामाइन डेटरमिनेशन बेसड ऑन फंग्सनलाइज़ड कन्डक्टिंग पोलेमर्स, डीएसटी।

८. मोर्फोलॉज़ी कन्ट्रोल ऑफ ऑर्गेनिक मैटेरियल्स फॉर नैनोबायोइलेक्ट्रोनिक्स डेवाइसेस, जेएसपीएस-डीएसटी।

९. डिज़ाइन एण्ड डेवलपमेन्ट ऑफ लो कास्ट प्लास्टिक डेवाइसेस फॉर इलेक्ट्रानिक एण्ड फोटोनिक एप्लिकेसन्सि, डीआरडीओ।

१०. इलेक्ट्रोकेमिकल सेन्सर्स फॉर हेवी मेटल आयन्स (Zn, Cu, Ni) इन इण्डस्ट्रियल वेस्ट वॉटर, एनएलसी एलएएनसीओ।

जैव-रसायन अभियांत्रिकी स्कूल

१. प्रोडक्शन ऑफ इप्सिलॉन पोलिलाइसिन एण्ड इट्स स्पेसिफिक कंजगेट्स फॉर इफेक्टिव ड्रग अर्गेटिंग, डीआरडीओ।

२. टीईपीपी आउटरिच सेन्टर्स, डीएसआईआर।

जैव-चिकित्सा अभियांत्रिकी स्कूल

१. नैनोपार्टिकल्स एण्ड ब्लड ब्रेन बेरियर, ईओएआरडी स्पोन्सर्ड प्रोजेक्ट्स।

२. मॉडिफिकेशन ऑफ क्वॉयर मेट्रेसेस फॉर हास्पिटल बेड्स इन्हेन्सिंग पेसेन्ट कम्फर्ट, लॉगविटी, एण्ड मेकिंग इट इम्परमेबल टू बॉडि डिस्चार्ज देयरबाई डिक्रिज़िग हास्पिटल

एक्वार्ड इन्फेक्सन्स थ्रू मेट्रेसस, मिनिस्ट्री ऑफ एग्रो एण्ड रुरल इन्डिस्ट्रिज़, गर्वनमेंन्ट ऑफ इण्डिया।

३. डीएसटी पीयूआरएसई।

इसके अतिरिक्त प्रौद्योगिकी संस्थान के विभिन्न विभागों ने सेमिनार, कार्यशालायें एवं व्याख्यानमालाओं का सफल आयोजन किया जिसमें देश-विदेश के कई प्रतिभागियों ने भाग लिया। इन आयोजनों की सफलता के लिए प्रौद्योगिकी संस्थान के पूर्व छात्रों ने भी अपने अंशदान दिये और इस हेतु प्रौद्योगिकी संस्थान अपने पूर्व छात्रों के प्रति साभार व्यक्त करता है।

संस्थान में विकसित की गई प्रौद्योगिकी को जन-जन तक पहुँचाने के लिये विभिन्न लघु एवं वृहद् उद्योगों के साथ परामर्श का एक मंच भी विकसित किया गया है। परामर्श के द्वारा तकनीकी हस्तांतरित करने का भी उद्देश्य रहता है जिससे इस क्षेत्र के उद्योग धन्धों को प्रोत्साहन मिल सके। इस वर्ष परामर्श के द्वारा रु.२५७ लाख की परियोजनाओं को सफलतम रूप से पूर्ण किया जा चुका है।

वर्ष २०१०-११ में प्रौद्योगिकी संस्थान के विभिन्न विभागों ने शोध व अनुसंधान को त्वरित करने के लिए कई महत्वपूर्ण उपकरणों का क्रय किया है जिसमें प्रयुक्त भौतिकी विभाग में एक्स-रे मशीन एवं एल.सी.आर. जैसे उपकरणों का क्रय किया। सेरेमिक अभियांत्रिकी विभाग ने स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप का क्रय किया। जन अभियांत्रिकी विभाग ने पेट्रोथिन सेक्शनिंग सिस्टम, डिजिटल ट्राइक्सीयल टेस्टींग सिस्टम, कम्प्यूटर कन्ट्रोल्ड ह्वील रट टेस्टर का क्रय किया। इसी प्रकार इलेक्ट्रानिक्स अभियांत्रिकी विभाग ने एजीलेन्ट स्पेक्ट्रम एनालाइजर, जाइलीनेक्स सॉफ्टवेयर, टूल्स हार्डवेयर तथा पीआईसी माइक्रो सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर क्रय किये। यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग ने सबसोनिक विंड टनल व कैड (सीएडी) आधारित साफ्टवेयर का क्रय किया। धातुकीय अभियांत्रिकी ने एचपी प्रेसीजन इम्पेडान्स एनालाईजर, थर्मोग्रेवीमेट्रिक कान बैलेन्स एवं आईबीएम सर्वर के साथ एबीएसीयूएस साफ्टवेयर क्रय किया। माइनिंग अभियांत्रिकी विभग ने ग्लोबल पोजीशन सिस्टम का क्रय किया। फार्मास्युटिक्स विभाग ने एच.पी.टी.एल.सी, एलाईजा प्लेट रीडर, सीएचएनएस एलिमेंट एनालाइजर, हाईस्पीड कुलिंग सेन्ट्रीफ्यूज; बायोकेमिकल इंजीनियरिंग ने अक्ट्रावायलेट स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, जेल डॉक डीआरटी एलेक्ट्रो केमीकल एनालॉईजर एवं कुलिंग सेन्ट्रीफ्यूज क्रय किया। पदार्थ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्कूल ने एफटीआईआर स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, लिक्विड नाइट्रोजन प्लान्ट एवं एनवायरमेन्टल चेम्बर का क्रय किया।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

अनुप्रयुक्त रसायन विज्ञान विभाग

अनुप्रयुक्त रसायन विज्ञान विभाग की स्थापना वर्ष १९८५ में हुई जिसमें उच्च योग्यताधारी, प्रशिक्षित और समर्पित शिक्षक हैं। विभाग में बी.टेक. और बी.टेक./एम.टेक (डीडी) और (आईएमडी) भाग-१ के छात्रों को रसायनशास्त्र पाठ्यक्रम और पर्यावरण विज्ञान पढ़ाने के साथ-साथ सत्र २००५-०६ से औद्योगिक रसायन में एम.टेक्. पंचवर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। विभाग के पास डॉक्टोरल एवं पोस्ट-डॉक्टोरल अनुसंधान की समृद्ध परम्परा है।

वर्तमान में विभाग में विभिन्न अभिकरणों, जैसे एआईसीटीई, यूजीसी, डीएसटी और सीएसटी द्वारा प्रायोजित सात परियोजनाएँ संचालित हो रही हैं। विभाग के कुछ शिक्षकों ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में आमंत्रित व्याख्यान/शोध पत्र प्रस्तुत किये।

अनुप्रयुक्त गणित

अनुप्रयुक्त गणित विभाग को सन् १९८५ में पूर्णरुपेण स्वतंत्र विभाग का दर्जा प्रदान किया गया, जो पूर्व में सन् १९६८ से एक अनुभाग की क्षमता में कार्य कर रहा था। इसका महत्व वास्तविक रुप से इस प्रकार का है कि यह संस्थान के स्नातक छात्रों के साथ-साथ स्नातकोत्तर छात्रों की आवश्यकताओं की भी पूर्ति करता है। इसके साथ ही विभाग मैथमेटिक्स एण्ड कम्प्यूटिंग में अपना एक पंचवर्षीय एकीकृत एम. टेक. पाठ्यक्रम संचालित करता है। अनुसंधान एवं वैज्ञानिक प्रकाशन के क्षेत्र में विभाग का योगदान काफी सराहनीय और संस्थान तथा विश्वविद्यालय में उत्तम रहा है। विभाग को अपने वैज्ञानिक शोध पत्रों के प्रकाशनों पर गर्व है। अनेक इमेरिटस वैज्ञानिकों ने अपने उचित एवं सत्य निष्ठ प्रयासों के साथ कार्यों को और भी आगे बढ़ाया है।

अनुप्रयुक्त भौतिकी

अनुप्रयुक्त भौतिकी (प्रारम्भिक अनुप्रयुक्त भौतिकी अनुभाग १९६८) की स्थापना १९८५ हुई, जो अन्तरिक्ष विज्ञान में गुणयुक्त अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के लिये प्रसिद्ध है तथा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय उत्कृष्ठ केन्द्रों द्वारा बहुत ही प्रशंसित है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय उत्कृष्ट केन्द्रों द्वारा बहुत ही प्रशंसित है। राष्ट्रीय अन्तरिक्ष विज्ञान, ग्रह विज्ञान इत्यादि में परिसंवाद आयोजित करने के साथ ही, इसके शिक्षकगण प्रतिष्ठित राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ अग्रिम पंक्ति के अनुसंधान क्षेत्रों में परिदर्शन एवं सहयोग कर रहे हैा यह विभाग अन्तरिक्ष विज्ञान, सौर भौतिकी, प्लाजमा भौतिकी, फाइबर ऑप्टिक्स, फोटानिक व आप्टोइलेक्ट्रानिक्स, वातावरणीय विज्ञान, थर्मोडायनेमिक्स ऑफ अण्डर कूल्ड लिक्विड्स, सूदूर संवेदी और नैनो-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्ठ अनुसंधान कार्यक्रम चला रहा है।

विभाग भौतिकी अभियांत्रिकी में पंचवर्षीय एकीकृत एम. टेक. पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। यह कार्यक्रम युवा छात्रों को अन्तरिक्ष भौतिकी प्लाजमा भौतिकी, फाइबर ऑप्टिक्स, फोटानिक व आप्टोइलेक्ट्रानिक्स के क्षेत्रों में प्रशिक्षित करता है। यह विभाग प्रतिवर्ष बी.टेक. भाग-१ के छात्रों (अभियांत्रिकी के सभी शाखाओं के छात्रों के लिए) चार पाठ्यक्रम तथा बीफ़ार्मा भाग-१ के छात्रों के दो पाठ्यक्रम संचालित करता है विभाग में एम. टेक. एवं बी. टेक. पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त एक सशक्त पीएचड़ी. कार्यक्रम संचालित होता है जिसके परिणामस्वरुप लगभग ८० शोध छात्रों ने सफलतापूर्वक अपने पीएच०डी०पूर्ण किये हैं।

मृत्तकाशिल्प अभियांत्रिकी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पं० मदन मोहन मालवीय जी द्वारा सन् १९२४ में ही भारत में शीशा और मृत्तिका प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के महान् उद्देश्य के साथ शीश और मृत्तिका प्रौद्योगिकी में पाठ्यक्रम की स्थापना की गयी। तभी से यह देश का एकमात्र ऐसा विभाग है जहाँ मृत्तिका शिल्प अभियांत्रिकी में बी.टेक्., बी.टेक.-एम.टेक. (द्विउपाधि पाठ्यक्रम), एम.टेक. एवं पीएच.डी. उपाधियाँ प्रदान की जाती है। एम.टेक. व पीएच.डी. कार्यक्रम अभियांत्रिकी की उन अन्य शाखाओं तथा एम.एस.सी. भौतिकी और रसायन के लिए भी खुले हैं जिन्होंने राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) और गेट को उत्तीर्ण कर लिये हैं । विभाग मे छात्रो की संख्या कमशः बी.टेक. में ५९, आईडीडी में २० तथा एम०टेक० पाठ्यक्रम में १९ है।

यह विभाग ग्लास, ग्लास सिरेमिक, जैव शीशा और जैव शीशा सिरेमिक्स, रिफ्रैक्ट्रीज, सिरेमिक, ह्ववाइट वेयर्स, पॉटरी व पोर्सिलीन, सीमेन्ट, इलेक्ट्रिकल और इलैक्ट्रानिक सिरेमिक्स के नवप्रकट क्षेत्रों में सक्रिय अनुसंधान संचालित कर रहा है।

रसायन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी

औद्योगिक रसायन विभाग का प्रारम्भ सन् १९२१ में विज्ञान महाविद्यालय में प्रारम्भ हुआ तथा १९२८ तक एक वर्षीय डिप्लोमा (औद्योगिक रसायन) पाठ्यक्रम चला। सन् १९२८ में बी.एससी. (औद्योगिक रसायन) द्विवर्षीय पाठ्यक्रय प्रारम्भ किया गया। तदुपरान्त, सन् १९३५ में एम.एससी. (औद्योगिक रसायन) उपाधि प्रदान करने वाला दो वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किया गया। रसायनिक उद्योगों की तीव्र वृद्धि और बदलते अभियांत्रिकी अवधारणाओं को ध्यान में रखते हुए वर्ष १९४९ में औद्योगिक रसायन विभाग को नवसृजित रसायन अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी विभाग में समाहित कर दिया गया एवं उसी वर्ष इण्टरमीडिएट विज्ञान वर्ग के उपरान्त चार वर्षीय बी.एससी. (रसायन अभियांत्रिकी) पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया। विभाग द्वारा एम.एससी. (रसायन अभियांत्रिकी) एवं पीएचड़ी.(रसायन अभियांत्रिकी) भी आरम्भ किया गया। वर्तमान में, यह विश्वविद्यालय के प्रौद्योगिकी संस्थान के १३ अंगीभूत विभागों में से एक है जहाँ चार वर्षीय बी.टेक्. (रसायन अभियांत्रिकी), द्वि-वर्षीय एम.टेक्. (रसायन अभियांत्रिकी) और पीएच.डी. (रसायन अभियांत्रिकी) उपाधियाँ संचालित की जाती है।

विभाग द्वारा अब तक बी.टेक.में २५००, एमटेक्.में ३५० एवं १०० पीएच.डी.उपाधि प्रदान किया जा चुका है। विभाग में शिक्षकों की कुल संख्या ४७ पद स्वीकृत है जिसमें वर्तमान में ९ प्रोफेसर ४ एसोसिएट प्रोफेसर एवं ५ असिस्टेन्ट प्रोफेसर कार्यरत हैं। शिक्षकगण शोध कार्य में अध्यापन हेतु सक्रिय रुप से भागीदारी की।

विभाग सीएएस द्वितीय चरण २०१२ में सफलतापूर्वक पूर्ण किया एवं यूजीसी से तृतीय चरण में अनुदान प्राप्त किया। विभाग फीस्ट द्वितीय चरण के कार्यक्रम के लिये आवेदन भी किया है। वर्तमान में विभाग में विभिन्न एजेन्सियों द्वारा रु३३२.०४५ लाख की अनुमानित योजना में एवं रु.४.७५ करोड़ की डीएसटी द्वारा पोषित टेक्नोलॉजी बिजेनेस इनक्यूबेटर (सीबीआई) आदि अन्य योजनायें चल रही हैं। विभाग रु. १.२० लाख से अधिक मूल्य को फोटोइलेक्टॉन स्पेक्ट्रोस्कोप क्रय किया है एवं डाइफैक्ट्रो मीटर एक्स-रे से क्रय विचाराधीन है।

विभाग का नियोजन लक्ष्य उल्लेखनीय रहा है। बिट्रेक् छात्रों का नियोजन लगभग १००% रहा है एवं उनमें अधिकांश छात्र नौकरियां प्राप्त की। ६०% से अधिक एम.टेक. के छात्र प्रतिष्ठित उद्योगों में शिक्षण संस्थानों शोध एवं विकास के संस्थानों में नियोजित हुए।

सन् २०११-१२ में प्रो. गोपाल त्रिपाठी एवं प्रिन्सिपल एनएन गोडबोले विश्वविद्यालीय स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन विभाग में किया गया ये प्रतिष्ठित व्याख्यान प्रो. जीड़ी. यादव यूआईसीटी, मुम्बई एवं प्रोफेसर वी.के. श्रीवास्तव, आई.आई.टी, दिल्ली द्वारा दिया गया। इसी दौरान पं.मदन मोहन मालवीयजी के १५०वीं.जयंती के उपलक्ष्य में विभाग में ''एडवान्स इन केमिकल इंजिनियरिंग २०१२'' विषय पर ''मालवीय व्याख्यान माला'' का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान माला का श्रेष्ठ विद्वान जैसे प्रो.के.डी.पी.निगम, आई.आईटी, दिल्ली; प्रो.के.कृष्णइयाह, आई.आईटी, चैन्नई; प्रो.सचिन सी पटवर्धन, आई. आईटी, मुम्बई; प्रो. एस. एन. उपाध्याय, आई. आई, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय; प्रो.ओ.एन.श्रीवास्तव, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय; प्रो. पी.के.भट्टाचार्या, आईआईटी, कानपुर, प्रो.वी.जी.गाइकर, रसायन प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई एवं प्रो.आई.एम.मिश्रा, आईआईटी.रुड़की ने व्याख्यान दिये।

विभाग का एक सम्पन्न पुस्तकालय है जिसमें १०,५०३ पुस्तकें एवं असंख्य पत्रिकायें हैं। वर्ष २०११-१२ के दौरान कुल ११८२ पुस्तकें सम्मिलित किये गये। दसवीं योजना के अन्तर्गत ओबीसी अनुदान के अन्तर्गत ४००० वर्ग फीट का दो प्रयोगशालाओं का निर्माण किया गया तथा प्रो.गोपाल त्रिपाठी सभागार का पुनरुद्धार किया गया।

जनपद अभियांत्रिकी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग कॉलेज के भाग के रुप में जनपद अभियांत्रिकी विभाग की स्थापना १९५१ में हुई। वर्तमान में बी.टेक्. आई.डी.डी. एवं एम.टेक. स्तर के पाठ्यक्रम में क्रमशः ८०, २० एवं ४७ छात्रों के प्रवेश लेने की क्षमता है। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पाँच विशेष विषयों के पाठ्यक्रम इस प्रकार से है; स्ट्रक्लचरल इंजीनिरिंग, हाईड्रोलिक्स एण्ड वाटर रिर्सोसेज, जीयोटेकनिक्ल इंजीनिरिंग, इनवारमेन्टल इंजीनिरिंग एण्ड ट्रान्सपोटेशन इंजीनिरिंग। पीएच.डी. प्रोग्राम भी इन उपरोक्त विशेष अध्ययन के अन्तर्गत निहित है। वर्तमान सत्र में करीब ४५ राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर, विभाग के प्राध्यापकों द्वारा शोध प्रपत्र प्रकाशित कराया गया। संस्थान के करीब सभी प्राध्यापकगण पीएच.डी. धारक है। विभाग के प्राध्यापक प्रायः विदेशों एवं आंतरिक ख्याति प्राप्त विषयनिपुण विद्वानों के सम्पर्क में रहते हैं। विभाग को विभिन्न एजेन्सियों

से पिछले कई वर्षों से, शोध कार्य हेतु अनुदान मिलता रहा है, उनमें प्रमुख है यूजीसी, ए.आई.सी.टी.ई., डी.एस.टी., एम.एच.आर.डी. हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित 'सैप' एवं डी.आर.एस. के अन्तर्गत वित्तीय अनुदान दिया जाता है। राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर विभाग द्वारा कन्सलटेन्सी एवं टेस्टिंग सेवा प्रदान की जाती है।

संगणक अभियांत्रिकी

संगणक अभियांत्रिकी की स्थापना सन् १९८५ में व्यापक प्रशिक्षण और अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण वाले ९ शिक्षक सदस्यों के साथ हुयी। यहाँ पर प्रमुख अनुसंधान क्षेत्रों में आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स, न्यूरो कम्प्यूटिंग, पैरेलल् प्रोसेसिंग, साफ्टवेयर इन्जीनियरिंग, इमेज प्रोसेसिंग और बायोमैट्रिक्स हैं। संयुक्त प्रवेश परीक्षा के माध्यम से चयनित अभ्यर्थीगण जो इस संस्थान में आते हैं उनमें संगणक अभियांत्रिकी विषय अत्यन्त वांछनीय हैं। उद्योगों में यहाँ के स्नातकों का नियोजन सर्वोपरि है। भूतपूर्व छात्रों द्वारा शैक्षणिक क्रिया कलापों एवं विकास के कार्यों में परामर्श कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के पत्रिकाओं में विभाग के अनेक प्रपत्र प्रकाशित हुए हैं, जिनमें पुस्तकें एवं इनके अध्याय आदि सम्मिलित हैं

विभाग द्वारा संगणक विज्ञान तथा अभियांत्रिकी में चार वर्षीय बी. टेक. उपाधि तथा पांच वर्षीय इन्टेग्रेटेड ड्यूवेल डिग्री एम.टेक. उपाधि प्रदान की जाती है। विभाग ने द्विवर्षीय एम.टेक. पाठ्यक्रम प्रस्तावित किया है। इस वर्ष विभाग ने ''मंथन'' मैगज़ीन का प्रकाशन किया।

विद्युतकीय अभियांत्रिकी

विद्युतकीय अभियांत्रिकी विभाग का सन् १९१९ में प्रादुर्भाव के साथ ही विद्युतकीय व यांत्रिक अभियांत्रिकी में एक सम्मिलित उपाधि पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। सन् १९४९ से विद्युतकी अभियांत्रिकी में एक पूर्णरुपेण स्वतंत्र स्नातक उपाधि कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। विभाग में सन् १९५७ से मशीन व ड्राइव्स में विशेषज्ञता के साथ स्नातकोत्तर शिक्षण प्रारम्भ हुआ। तदुपरान्त, वर्ष १९८२ में पावर इलेक्ट्रॉनिक्स में विशेषज्ञता एवं सिस्टम्स इंजीनियरिंग में एक अर्न्तविषयी कार्यक्रम की शुरुआत की गयी।

विभाग में शोध गतिविधियों के प्राथमिकी क्षेत्र इस प्रकार है:

इलेक्ट्रिक मशीन्स एण्ड ड्राइव्स: इलेक्ट्रिक ट्रेक्शन, स्पेशल मशीन्स, लीनियर इन्डिक्शन मोटर, इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फिल्ड्स, एनर्जी मेनेजमेन्ट इन एचएम बेस्ड ट्रांसपोर्टेशन।

पॉवर सिस्टम: इलेक्ट्रिसिटी मार्केट्स डेरेगूलेशन, इलेक्ट्रिसिटी पॉलिसी एण्ड प्लानिंग, पॉवर सिस्टम ऑप्टिमाइज़ेशन, ऑपरेशन एण्ड कन्ट्रोल, डायनेमिक्स, वोल्टेज, स्टेबिलिटी, FACTs कन्ट्रोलर डिज़ाइन, एनालिसिस एण्ड एप्लिकेशन, लोड फॉरकास्टिंग, स्टैट स्टीमेशन, डिस्ट्रीब्यूशन सिसटम आटोमेशन एण्ड प्लानिंग, स्मार्ट ग्रिड, डिस्ट्रीब्यूटेड जेनेरेशन एण्ड रिर्सोसेज़ एआई एप्लिकेशन्स, इएचवी एसी एण्ड डीसी ट्रांसमिशन, इन्सुलेशन को-आर्डिनेशन, हाई वोल्टेज इंजिनियरिंग, पॉल्यूशन परफार्मेन्श ऑफ इन्सलेटर्स, पॉवर सिस्टम रिलाइबिलिटी, पॉवर क्वालिटी, सेटेलाईट सोलर पॉवर स्टेशनस, एनर्जी स्टडीज़।

कन्ट्रोल सिस्टम: रोबोटिक्स, लार्ज स्केल सिस्टम्स, सिस्टम्स आईडेन्टिफिकेशन।

पॉवर इलेक्ट्रॉनिक्स: एक्टिव फिल्टर्स, रिएक्टिव पॉवर कम्पनसेशन, पॉवर क्वालिटी, माइक्रोकम्प्यूटर एप्लिकेशन्स, सिलिकॉन कार्बाइड बेस्ड पॉवर सिस्टम्स, हाई वोल्टेज माइक्रोइलेक्ट्रानिक्स।

सिस्टम इंजिनियरिंग: रिलाइबिलिटी इंजीनियिरिंग, सिस्टम डिज़ाइन, मॉडलिंग एण्ड सिमूलेशन, आर्टिफिशयल इन्टेलिजेंस, मशीन लर्निंग, सेन्सर नेटवर्क्स।

अन्य: इन्स्ट्रूमेन्टेशन, थेराहर्टज़ रेडिएशन जेनेरेशन, प्लाज़्मा फिज़िक्स, कम्प्यूटर इन्टरकनेक्शन नेटवर्किंग।

इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी

इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी का अस्तित्व सन् १९७१ में विद्युतकीय अभियांत्रिकी की एक शाखा के रूप में आया (बेंको, माइनमेट तथा टेक्नो के समिश्रण से औद्योगिकी संस्थान वर्तमान स्वरुप बना)। विभाग में प्रतिवर्ष प्रवेश के लिए बी.टेक. स्तर में ८० और एम.टेक. स्तर में ४७ सीट निर्धारित हैं। इसके अतिरिक्त हम अपने विषय (इले.अभि.) के छात्रों के अध्यापन के साथ लगभग सभी विभागों के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी में प्राथमिक पाठ्यक्रम और विद्युतकीय अभियांत्रिकी और संगणक अभियांत्रिकी विभागों के छात्रों को उच्च स्तर के पाठ्यक्रमों का भी अध्यापन करते हैं। संचालित डॉक्टोरल कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रतिवर्ष ३-६ शोध छात्रों को पीएच.डी. उपाधि प्राप्त होती है। बाह्य शोधकर्ता कार्यक्रम के अन्तर्गत विभाग में राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के ४-५ वैज्ञानिक शोध कार्य के लिए पंजीकृत होते हैं।

विभाग के पास १० स्वतंत्र अनुसंधान प्रयोगशालाएँ जिनमें माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स प्रयोगशाला, वीएलएसआई सीएडी प्रयोगशाला, माइक्रोवेव प्रयोगशाला, ऑप्टिकल कम्यूनिकेशन प्रयोगशाला, एनालॉग एण्ड डिजिटल कम्युनिकेशन प्रयोगशाला, डिवाइसेस प्रयोगशाला, एनालॉग एण्ड डिजिटल सर्किट प्रयोगशाला, माइक्रोप्रोसेसर प्रयोगशाला, सोलर सेल प्रयोगशाला और सॉफ्टवेयर प्रयोगशाला जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। स्टेट-ऑफ-द-आर्ट विभाग ने इसके सतत् उत्कृष्टता के लिए यू.जी.सी. द्वारा ३ उच्चानुशीलन केन्द्र का दर्जा प्रदान किया है। विभाग के पास यू.जी.सी./एम.एच.आर.डी. के तीन स्वतंत्र बृहद् अनुसंधान केन्द्र अर्थात् सेन्टर ऑफ रिसर्च इन माइक्रोवेव ट्यूब्स (सीआरएमटी); सेन्टर ऑफ रिसर्च इन माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स (सीआरएमई); और सेन्टर ऑफ रिसर्च इन माइक्रोप्रोसेसर एप्लीकेशन्स (सीआरएमए) हैं। यह विभाग इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी में एम.टेक. के लिए डी.आर.डी.ओ. केन्द्रों में से एक है।

यांत्रिकी अभियांत्रिकी

यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग सन् १९१९ में स्थापित हुआ और सम्भवत: इसे देश का पहला अभियांत्रिकी कॉलेज होने का गौरव प्राप्त हुआ इस विभाग में विद्युत एवं यांत्रिक अभियांत्रिकी संयुक्त रुप से उपाधि प्रदान किया गया। जबकि अन्य संस्थानों में केवल डिप्लोमा प्रदान की जाती रही। ब्रिटिश नागरिक प्रो.चार्ल्स ए.किंग इस विभाग के प्रथम प्रिंसपल एवं अध्यक्ष थे। वर्ष १९५३ से विभाग यांत्रिकी अभियांत्रिकी से उपाधि प्रदान की जा रही है। विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्टताओं के साथ वर्तमान में इस संस्थान का यह बड़ा विभाग है।

विभाग में बी.टेक. के अतिरिक्त एम.टेक. पाठ्यक्रम मशीन डिज़ाइन (१९६४), हीट पावर (१९६६), प्रोडक्शन अभियांत्रिकी (१९७७) एवं इन्डस्ट्रियल मैनेजमेंट (१९७९) से आदि विशिष्टताओं के साथ चलाया जा रहा है। विभाग का शोध पाठ्यक्रम अत्यन्त ही लोकप्रिय है जिसमें वर्तमान में १५ शोधार्थी पंजीकृत हैं। वर्तमान वर्ष में विभाग के शिक्षकों ने अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल में ५० से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किये हैं। परियोजना विभाग में एवं अन्तर्राष्ट्रीय परियोजना सहित पांच परियोजनायें एवं फीस्ट संचालित हो रहे हैं।

विभाग में वृहद् रुप में शोध सुविधाएँ जैसे रेपिड प्रोटोटाइप, सीएनसी मशीन, हॉट एण्ड कोल्ड प्रेस, कम्प्यूटराइज़ मेटेरियल्स टेस्टिंग सिस्टम, वायर वेल्डिंग मशीन, वाइन्ड ट्यूनेल, फाइन्ड टयूब हिट एक्सचेंजर, वर्टिकल कन्डेन्सर, हार्डनेस टेस्टर, बोच गैस एनालाइज़र, एयर जेट इरोज़न टेस्टर, थ्री बॉडी एब्रेशन मशीन, पिन ऑन डिस्क वेयर मशीन आदि उपलब्ध हैं। एबाकस फॉर फाइनाईट एलिमेंट एनालिसिस, लिन्डो, एपीआई ४.०, आईडीयास आर्टिशन सीएडी, सॉफ्टवेयर, हायपर वर्क, एलएसडीवाईएनए, प्रो-ई, प्लूनेट, एएनएसवाईएस, हायपर एक्स्ट्रूड, डेफ्रॉम, प्रोकास्ट एण्ड सालिड काड आधारित सिमूलेशन साफ्टवेयर उत्पादन विधि के लिए विभाग में उपलब्ध है विभाग में ५० संगणक ४२ नोड्स (जेयान प्रोसेसर) केन्द्रीय संगणक सुविधा उपलब्ध है।

इसके अतिरिक्त ट्राइबोलॉजी ऑफ कम्पोजिट मेटेरियल्स, सिन्थेसिस एण्ड डिज़ाइन ऑफ मैकेनिज़म, सीएफडी, स्प्रिंग बैक इन मेटल फॉर्मिंग, रेन्यूअल एनर्जी, फंक्शनली ग्रेडेड मेटैरियल्स, एक्सट्रक्शन एनालिसिस, वाइब्रेशन एनालिसिस ऑफ ब्राइड पाइप लाइन, सीएडी/सीएएम/सीएपीपी एण्ड ऑटोमेशन सेलुलर मैन्यूफैक्चरिंग सिस्टम, सप्लाई चेन मैनेजमेन्ट, टोटल क्वालिटी मैनेजमेन्ट/क्वालिटी अभियांत्रिकी, सीआईएम एण्ड कम्प्यूटेशनल मैकेनिक्स विभाग में उपलब्ध है।

धातुकीय अभियांत्रिकी

धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग की स्थापना महामना पं.मदन मोहन मालवीयजी की कल्पनाओं को मूर्त रुप से प्रौद्योगिकी संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सन् १९१९ में हुई। तदुपरान्त, वर्ष १९२३ में स्नातक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ और देश में धातुकी विषय में प्रथम स्नातक एवं डॉक्टोरल उपाधि इसी विभाग द्वारा क्रमश: वर्ष १९२७ एवं १९५५ में प्रदान किया गया। इस विभाग ने अपना वर्ष १९७३ में गोल्डेन जुबली वर्ष १९८३ में डायमण्ड जुबली तथा १९९८ में बड़े पैमाने पर अपना प्लेटिनम जुबली वर्ष मनाया। नवम्बर २०१३ में विभाग इसके सुनहरे ९० वर्ष व्यतीत होने के उपलक्ष्य में भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के सहयोग से प्रतिष्ठित नेशनल मेटर्लीजीशट्स डे मनाने की योजना बनाई है। धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग ने अब तक २३५१ स्नातकों, ३५१ परास्नातकों और १५५ पीएच.डी. धारकों को तैयार किया है। विभाग के उत्कृष्ट अनुसंधान योगदान के परिणाम स्वरूप सन् १९८० में यूजीसी द्वारा इसे धातुकीय उच्चानुशीलन केन्द्र के रूप में मान्यता प्रदान की गयी, जो देश का इस प्रकार का मान्यता प्राप्त प्रथम अभियांत्रिकी विभाग है। विभाग ने फिस्ट प्रथम परियोजना को सफलता पूर्वक पूर्ण किया और फिस्ट के दूसरे चरण की अनुदान प्राप्ति विचाराधीन है। स्वीकृत धनराशि रु.३.८ करोड़ वर्तमान वित्तीय वर्ष २००८-०९ में उपलब्ध होने की सम्भावना है। वर्तमान में विभाग में १० आचार्य, ३ उपाचार्य एवं ७ प्रवक्ता हैं

इस विभाग को वर्ष १९८१ से एमएचआरडी/एआईसीटीई के क्यूआईपी के लिए एक केन्द्र के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। विभाग को यूजीसी के कोसिस्ट कार्यक्रम के अन्तर्गत विशेष अनुदान प्राप्त है और सन् १९८२ में डीएसटी से राष्ट्रीय इलेक्ट्रान सूक्ष्मदर्शी सुविधा (एनईएलएमआईएफ) भी प्राप्त है। विभाग ने उत्कृष्ट योगदान की मान्यता के रूप में बड़ी संख्या में पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त किये जिसमें अनेक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यावसायिक समितियों व अन्य संगठनों से पदक, पुरस्कार, उपाधियाँ एवं छात्रवृत्तियाँ सम्मिलित हैं। इन पुरस्कारों में जॉन टेलर गोल्ड मेडल, हेनरी सी. सार्बी एवार्ड, एलेक्जेंडर वॉन हॅम्बोल्ट छात्रवृत्ति, एएल ख़राज़्मी पुरस्कार, एस.एस. भटनागर पदक, प्लैटिनम पदक, टाटा स्वर्ण पदक और पुरस्कार, जी.डी. बिरला पुरस्कार, राष्ट्रीय धातु विज्ञानी दिवस पुरस्कार, इन्सा युवा वैज्ञानिक पदक, डॉ. आर.एच. कुलकर्णी स्मृति छात्रवृत्ति के साथ अनेक उत्तम शोध पत्र पुरस्कार सम्मिलित हैं। संकाय के शिक्षकों ने अनेक व्यावसायिक समितियों से एफएनए, एफएएससी, एफएनएएससी, एफआईआईएम और एफआईई जैसी अध्येतावृत्तियाँ प्राप्त की हैं।

जिनमें से एक अध्ययन अवकाश एवं तीन असाधारण अवकाश पर हैं। वर्तमान शोध गतिविधियाँ काफी व्यापक क्षेत्रों, जैसे नैनोमेटेरियल्स, क्वासीक्रिस्टल्स, स्प्रे फार्मिंग, पाउडर मेटेलर्जी का संश्लेषण एवं चरित्रण, मॉडलिंग ऑफ फेज डायग्राम बाईसीवीएम, फेज ट्रान्सफर इन स्टील्स एण्ड नान फेरस एल्वायज एण्ड स्ट्रक्चर प्रापर्टी कोरिलेशन्स, क्रीप एण्ड फैटिग्यू बिहैवियर ऑफ मेटैरियल्स, थर्मोडायनेमिक्स ऑफ सेमीकन्डक्टिंग इन्टरमेटैलिक्स एण्ड टेनरी एलॉयज, पाइरोमेटेलर्जी ऑफ सल्फाइड मिनरल्स, प्रीपरेशन ऑफ मॉलीकार्बाइड, प्रोसेसिंग ऑफ फेरस एण्ड नॉन-फेरस एलॉयज, फाउन्डरी एण्ड वेल्डिंग, वीयर स्टडीज ऑफ कम्पोजिट्स, वेस्ट यूटीलाइजेशन एण्ड एनर्जी मैनेजमेंट इत्यादि में चल रही हैं।

हमारा विभागीय पुस्तकालय में १०,४२५ टेक्निकल पुस्तकें, ७६ नॉन टेक्निकल पुस्तकें, ३८८६ पत्रिकाएँ और १५६ अन्य पुस्तकों से समृद्ध है। अनेक शोध पत्रिकाओं एवं सामयिक पत्रिकाओं को आईटी मुख्य ग्रन्थालय एवं बीएचयू के केन्द्रीय ग्रन्थालय के माध्यम से ऑनलाइन सम्पर्क किया जा सकता है।

खनन अभियांत्रिकी

भारत में खनिज अभियांत्रिकी शिक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीयजी द्वारा मान्यता प्राप्त हुआ एवं सन् १९२३ में खनन अभियांत्रिकी विभाग प्रारम्भ हुआ। देश में प्रथम उपाधि इस विशिष्ट विभाग द्वारा प्रदान की गयी। यह विभाग खनन अभियांत्रिकी में तीन विशेषज्ञताओं (खान पर्यावरण, रॉक मेकेनिक्स और खान योजना) सहित ४-वर्षीय बी.टेक. पाठ्यक्रमों ५-वर्षीय द्विउपाधि और दो वर्षीय एम.टेक. और पीएच.डी. उपाधि प्रस्तावित करता है।

सत्र २०१०-११ से अन्य पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षित सीटों को बढ़ाने पर छात्रों के लिए स्वीकृत सीट बी. टेक. में १००, एकीकृत द्विउपाधि मे २० और एम.टेक. में २९ निर्धारित हैं।

इस वर्ष में इस विभाग को आधुनिक संदर्भों में शिक्षण कार्यक्रम तथा खनन और खनिज अभियांत्रिकी के विभिन्न पक्षों पर अग्रणी मूलभूत और व्यवहारिक अनुसंधान आयोजित करने के लिए पूर्णरूपेण सुसज्जित किया गया। विभाग के अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए समय-समय पर कोयला विभाग तथा खान एवं खनिज विभाग, भारत सरकार से समय-समय पर प्राप्त उदारतापूर्वक सहायता के लिए धन्यवाद है। खनन अभियांत्रिकी विभाग, का.हि.वि.वि. वास्तव में देश के उन कुछ विभागों में से एक है, जिसे कोसिस्ट और सैप कार्यक्रमों के अन्तर्गत वि.अ.आ. से धनराशि प्राप्त हुई है। यहाँ पर ''रॉक मैकेनिक्स् व ग्राउन्ड कन्ट्रोल और जीओइन्विरान्मेंट'' के क्षेत्र में उच्चानुशीलन केन्द्र है जो इसके तृतीय-चरण में चल रहा है। विभाग को खनन अभियांत्रिकी में उच्च-अध्ययन संपादित करने के लिए विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षकों हेतु क्विप केन्द्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। हाल ही में विभाग ने डी.एस.टी. के फिस्ट कार्यक्रम से धनराशि प्राप्त की है। विभाग ने नैक (वि.अ.आ.) द्वारा ''श्रेणी-ए'' दिया गया है और इसके प्रति-शिक्षक प्रतिवर्ष के प्रकाशनों के साथ-साथ उच्च-मानक बनाए रखने के लिए प्रशंसित किया गया है। बी.टेक. के लिए व्यवहारिक प्रयोगशाला मैनुअलों का डिजिटल संस्करण तैयार किया गया है। इस विभाग के उच्चानुशीलन केन्द्र द्वारा दो अल्पावधि पाठ्यक्रम: रॉक मैकेनिक्स व ग्राउन्ड कन्ट्रोल एवं एप्लीकेशन ऑफ न्यूमेरिकल मॉडलिंग इन स्ट्राटा कन्ट्रोल संचालित होता है

भैषजिकी विभाग

पंडित मदन मोहन मालवीयजी की प्रेरणा एवं स्व.प्रोफेसर एमएल. श्रॉफ के उत्साह एवं अथक प्रयास के कारण सन् १९३२ के आरम्भ में इस विभाग की स्थापना हुयी। देश का यह पहला संस्थान है जहाँ भैषजिकी शिक्षा में स्नातक पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया एवं एशिया अफ्रीका तथा विश्व के सुदूरपूर्व के क्षेत्रों में यह एक अग्रणी केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ के स्नातक अमेरिका, यूरोप, थाईलैंड, मलेशिया, फिजी एवं अन्य केन्द्रीय अफ्रीकी देशों में फैले हुए हैं। यह एक अनोखा पाठ्यक्रम है जो औषधियों के प्रारुप, विकास, निरीक्षण, सुरक्षा, प्रभावी प्रयोग एवं इसके वितरण प्रणाली के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराता है। यह पाठ्यक्रम विभिन्न प्रकार के दवाओं के उत्पादन एवं इसके मूल्यांकन, औषधि वितरण प्रणाली तथा उपभोक्ता उत्पादन के संदर्भ में अभियांत्रिकी प्रवीणता के साथ बायोलॉजी तथा तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराता है। अपने शोध एवं औषधि के सफल तथा प्रभावी परीक्षण के संदर्भ में यह पाठ्यक्रम अनोखा अवसर प्रदान करता है।

इस विभाग से ४-वर्षीय बी.फार्मा., ५-वर्षीय द्विउपाधि (बी. फार्मा एवं एम. फार्मा) एवं २-वर्षीय एम.फार्मा चार विशेष पाठ्यक्रमों के साथ (भैषजिकी, भैषजिकी रसायन, फार्माकोलॉजी, फार्माकॉग्नोसी) एवं पीएच.डी. के पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। सत्र २०१०-११ से अन्य पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षित सीटों को बढ़ाने पर छात्रों के लिए स्वीकृत सीट बी. फार्मा. में ६९, एकीकृत द्विउपाधि में २० और एम.फार्मा. में २८ निर्धारित हैं। इस वर्ष अध्यापकों के बहुत से राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

जैवरसायन अभियांत्रिकी स्कूल

जैवरसायन अभियांत्रिकी स्कूल अपने प्रादुर्भाव के साथ ही प्रौद्योगिकी संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रसायन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विभाग में स्थित है। यह स्कूल जैव रसायन अभियांत्रिकी मे द्विउपाधि (बी.टेक. व एम.टेक), एम.टेक. और पीएच.डी.कार्यक्रम संचालित करता है। यह स्कूल रसायन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रदत्त आधारभूत सुविधाओं का उपयोग कर रहा है यह स्कूल (१) प्रौद्योगिकी संस्थान के रसायन, सिविल, इलेक्ट्रानिक्स, विद्युतिकी एवं संगणक अभियांत्रिकी तथा भेषजिकी में बी.टेक और एम.टेक/एम.फार्मा. के छात्रों तथा (२) विज्ञान संकाय के एम.एससी. (जैवप्रौद्योगिकी), एम.एससी. (अनुप्रयुक्त जैवप्रौद्योगिकी), तथा बी.एससी. (औद्योगिक सूक्ष्मजैविकी) के छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

स्कूल में संचालित वर्तमान पाठ्यक्रम: जैवरसायन अभियांत्रिकी व जैव प्रौद्योगिकी में पंचवर्षीय एकीकृत द्विउपाधि पाठ्यक्रम (बी.टेक व एम.टेक), जैवरसायन अभियांत्रिकी में द्विवर्षीय एम.टेक., जैवरसायन अभियांत्रिकी में पीएच.डी.।

छात्रों के लिए उपलब्ध सुविधायें:

(अ) स्कूल के पास निम्नलिखित वृहद् प्रयोगशाला हैं जिसमें: (१) बायोरिएक्टर (२ एल); (२) एयर कम्प्रेसर (आयल मुक्त); (३) बायोरिएक्टर (१४ एल); (४) फ्लूडाइज्ड बेड बायोरिएक्टर (२ एल); (५) एच.पी.एल.सी.; (६) अल्ट्रा सेन्ट्रीफ्यूज़ (कम तापमान); (७) यूवी-वीआईएस स्पेक्ट्रोमीटर; (८) एनवायरमेंटल कन्ट्रोल

आरबीटल शाकर; (९.) बुकफील्ड विस्कोमीटर; (१०.) इलेक्ट्रॉनिक बेलेंस; (११.) टेबल टाप सेन्ट्रीफ्यूज़; (१२.) गेस क्रोमेटाग्राफ; (१३.) बायोरिएक्टर (५ एल); (१४.) लेमिनर फ्लो आदि उपलब्ध है।

जैव-चिकित्सा अभियांत्रिकी स्कूल

जैव-चिकित्सा अभियांत्रिकी स्कूल की स्थापना पांचवी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत सन् १९७८ में यूजीसी द्वारा की गयी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भाग्यशाली है कि यहाँ पर एक ही परिसर में प्रौद्योगिकी संस्थान एवं चिकित्सा विज्ञान संस्थान स्थित है। इसके कारण यहाँ जैव-चिकित्सा अभियांत्रिकी से सम्बन्धित उत्कृष्ट सहयोगी कार्य संचालित होता है। स्कूल के आधारभूत संरचना का विकास कार्य सन् १९८५ में कोर शिक्षक सदस्यों की नियुक्ति से प्रारम्भ हुआ। शैक्षणिक सत्र १९८६-८७ से यह स्कूल बायोमेडिकल इंजीनियरिंग में एम.टेक.और पीएच.डी.कार्यक्रम संचालित कर रहा है। स्कूल ने २० छात्र प्रतिवर्ष के प्रवेश के साथ आई.डी.डी. कार्यक्रम प्रारम्भ किया। स्कूल का मुख्य लक्ष्य आर एण्ड डी कार्य के लिये उपयुक्त आधारभूत संरचना विकसित करना तथा जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी के क्षेत्र में सक्षम व्यक्तियों को विकसित करना है।

स्कूल में उपलब्ध प्रयोगशालाएँ: १. बायोइंस्ट्रूमेंटेशन लैब निम्नलिखित अनुसंधान के प्राथमिकी क्षेत्रों के साथ केन्द्रीय बायोसिग्नल रिकार्डिंग, थिराप्यूटिक एण्ड असिस्ट डिवाइस, सर्जिकल सिस्टम, २. बायोमेकेनिक्स प्रयोगशाला, ३.पॉलिमर प्रयोगशाला, ४. बायो-इलेक्ट्रानिक्स प्रयोगशाला, ५. संगणक प्रयोगशाला । इसके अतिरिक्त हम अपने छात्रों को प्रदर्शन के लिये चि.वि.सं., का.हि.वि.वि.ले जाते हैं।

पदार्थ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्कूल

पदार्थ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्कूल एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति वाला पदार्थ अनुसंधान एवं शिक्षण केन्द्र है। इसकी स्थापना वर्ष १९७८ मे यूजीसी की पाँचवी योजना समिति की संस्तुतियों मे अनुपालन में की गयी। स्कूल को सात कोर-शिक्षकों एवं सात सहयोगी कर्मचारियों के पद मिले हैं। समीपवर्ती विभागों या स्कूलों से बड़ी संख्या में शिक्षकगण स्कूल के शिक्षण एवं अनुसंधान गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

स्कूल में पीएच.डी., एम.टेक. एवं एकीकृत द्विउपाधी पाठ्यक्रम क्रमशः १९८२, १९८४ एवं २००५ से संचालित है। इन छात्रों में से अधिकाशत: अग्रणी अ.व वि. संगठनों, उद्योगों एवं शैक्षणिक संस्थाओं में ले लिये गये हैं। विषय में हुए वर्तमान महत्व के विषयवस्तुओं को समाहित करने के लिये एम.टेक कार्यक्रम के पाठ्यसूची को निश्चित समय पर पुनरीक्षित किया जाता है। सत्र २००५-०६ से ६ छात्रों के प्रवेश के साथ एक नया पंचवर्षीय द्विउपाधि (आई.डी.डी) कार्यक्रम बी.टेक. और एम.टेक. उपाधि एक साथ प्रदान करने के लिये प्रारम्भ किया गया। एम.टेक और आई.डी.डी. में प्रवेश आई.आई.टीज् द्वारा आयोजित क्रमशः गेट और जे.ई.ई के माध्यम से लिया जाता है।

यहाँ के शिक्षकों ने पिछले पाँच वर्षों में विभिन्न प्रायोजक अभिकरणों जैसे डीएसटी, डीबीटी, डीआईटी, एमएचआरडी, डीआरडीओ, एआईसीटीआई, यूजीसी-डीएआई- सीएसआर, आईयूएससी, सीएसआईआर से प्रायोजित परियोजनाओं/योजनाओं के माध्यम से रु० ८ करोड़ प्राप्त किये हैं।

इसके साथ ही स्कूल डीएसटी "फंडस् फॉर इन्फ्रास्ट्रचरल सपोर्ट इन इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी (फिस्ट)" कार्यक्रम के अन्तर्गत यूजीसी के एसएपी (डीआरएस) कार्यक्रम से सहायता प्राप्त है। स्कूल के पास लगभग १०,००० वर्गफीट तल क्षेत्र का एक आधुनिक दो मंजिला भवन है। जहाँ मेटेरियल निर्माण, चरित्रण एवं फेज परिवर्तन अध्ययन के लिए आधुनिक व असाधारण उपकरणों सहित अनेक प्रयोगशालाएँ हैं। स्कूल के पास अपना स्वयं का पुस्तकालय है।

इस स्कूल के शिक्षकविद् एवं छात्रगण अपने उच्च स्तरीय प्रकाशन, भारत सरकार एवं औद्योगिक घरानों द्वारा अनुदानित परियोजनायें प्राप्त कर विश्वविद्यालय के गौरव को बढ़ाया है। यह स्कूल भारत वर्ष एवं विदेश स्तर पर विभाग से सम्बन्धित विषयों पर अनेक व्याख्यानमाला एवं सेमिनार आयोजित किये हैं।

मुख्य कार्यशाला

इस विश्वविद्यालय में अभियांत्रिकी शिक्षा के बारे में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय जी की सोच, उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार हैं-

"आवश्यक व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ मिलकर ऐसे वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यावसायिक ज्ञान को आगे बढ़ाना और प्रसार करना जो स्वदेशी उद्योगों की उन्नति और देश के भौतिक संसाधनों का विकास करने में उत्तम हो।"

इस विचार के साथ मालवीय जी ने इस अभियांत्रिकी महाविद्यालय के लिये एक पूर्ण विकसित कार्यशाला का निर्माण कराया जो बनारस इंजीनियरिंग कॉलेज के अधीन था। इस कार्यशाला का उपयोग सभी प्रकार के निर्माण में उपयोगी उपकरणों जैसे कि खराब मशीन, उपकरण, बिजली के पंखे आदि के निर्माण में किया जाता था। यह इकाई मार्टिन बर्न विद्युत कम्पनी और डीजल लोकोमोटिव वर्क्स के अनुरक्षण और उनके विविध अंकों के निर्माण में तकनीकी सहायता प्रदान करती थी। उल्लेखनीय है कि यह इकाई लम्बे समय तक शिक्षण विभाग अर्थात् यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग का हिस्सा थीं। संसाधनों का उत्तम उपयोग करने, मशीन एवं मानव संसाधन दोनों के संदर्भ में, यह इकाई समाज के अल्प सुविधाप्राप्त वर्ग को तकनीकी एवं रोजगार तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करती थी। इससे विश्वविद्यालय में उपयोगी उत्पादों के निर्माण और अनेक प्रकार के रख रखाव कार्यों में अतिरिक्त सहायता मिलती थी और विश्वविद्यालय को एक बड़ी धनराशि की बचत होती थी। उदाहरण के लिये, विश्वविद्यालयी वाहनों के पूरे समूह को इस कार्यशाला द्वारा अनुरक्षित किया जाता था। प्रौद्योगिकी संस्थान के मुख्य कार्यशाला द्वारा संस्थान/विश्वविद्यालय को निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान की जाती हैं-

संस्थान स्तर पर

१- बी.टेक. प्रथम वर्ष की सभी शाखाओं तथा बी.टेक. द्वितीय वर्ष यांत्रिक अभियांत्रिकी के छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान करना और विभिन्न निर्माण प्रक्रिया एवं अभ्यास का परिदर्शन कराना।

२- सभी प्रौद्योगिकी छात्रों के लिये निर्माण परियोजना के कार्य में सुविधाएँ प्रदान करना।

३- अनुसंधान के लिए नमूनों एवं उपकरणों के निर्माण में छात्रों का सहयोग करना।

४- छात्रों के सृजनात्मक एवं अभिनव सोच को उत्पादन का आकार देने में सहयोग करना।

विश्वविद्यालय स्तर पर

५- फर्नीचर आदि जैसे उत्पादन प्रदान करना (आई.टी गर्ल्स छात्रावासत्र संकाय एक्सचेंज भवन आदि के लिए), विश्वविद्यालय के विद्युत एवंज ल आपूर्ति इकाई के लिए स्विच बोर्ड आदि का उत्पादन करना।

६- विश्वविद्यालय और संस्थान की विभिन्न इकाईयों को अनुरक्षण सेवाएँ प्रदान करना।

७- विश्वविद्यालय के सभी प्रकार के वाहनों की खरीद एवं अनुरक्षण की सेवाएँ प्रदान करना।

८- औद्योगिकी और अभिनव उत्पादों के विकास के लिए सुविधाएँ एवं तकनीकी जानकारी (उदाहरणार्थ, अस्थिरोग विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि. के सहयोग से सम्पूर्ण कूल्हे के जोड़ के विकास के रुप में) प्रदान करना।

बाह्य व्यक्तियों के लिये

९- अन्य अभियांत्रिकी महाविद्यालयों के छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान करना (विगत दिनों भारतीय कालीन प्रौद्योगिकी संस्थान, भदोही के छात्रों को प्रशिक्षण दिया गया)।

१०- बाहरी व्यक्तियों को प्रसंस्करण और उत्पादन सुविधाएँ प्रदान करना।

उद्योग–संस्थान साझेदारी प्रकोष्ठ

प्रकोष्ठ, सरकार एवं अन्य संस्थाओं के साथ परामर्शी सेवा, प्रबन्धन, औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास के प्रोत्साहन के प्रभावी कार्यान्वयन के उद्देश्यों के साथ स्थापित हुआ।

संस्थान एवं उद्योगो के बीच पारस्परिक सम्बन्ध के अतिरिक्त, प्रकोष्ठ क्षेत्र के उद्योगों के उद्यमिता एवं प्रौद्योगिकी स्थानान्तरण को उन्नत करने के लिये विभिन्न गतिविधियां आयोजित किया। यह प्रकोष्ठ उद्यमिता, प्रौद्योगिकी प्रबन्धन, विचारों के उद्भव, बौद्धिक सम्पदा आविष्कार एवं प्रबन्ध के अतिरिक्त संसाधन उत्पादन पर प्रकाश डालता है।

अल्मुनी एसोसिएशन

संस्थान अल्मुनी के साथ हमेशा नजदीकी सम्बन्ध बनाए रखा है। आईटी, बीएचयू अल्मुनी संघ 'सिल्वर जुबली रियूनियन' का वार्षिक परिणाम आयोजित किया।

अल्मुनी का एक संगठन ''आईटी, बीएचयू अल्मुनी संघ'' जिसका मुख्य कार्यालय नई दिल्ली है जो संस्थान एवं आर्थिक सहायता वृद्धि में रुचि रखता है। संघ का एक वेबसाइट www.itbhuglobal.org. भी है।

जिमखाना

सत्र २०११-१२ अपने अंत तक आते-आते बहुत से यादगार क्षणों को अपने पीछे छोड़ गया, जिन्हें आने वाले वर्षों में याद रखा जाएगा। इस सत्र की शुरुआत छात्र परिषद् के पदों पर यथा मि.प्रतीक रत्नाकर (चतुर्थ वर्ष रासायनिक)- जनरल सेक्रेटरी, मि. प्रदीप जैन (चतुर्थ वर्ष, रासायनिक) एवं सुश्री मधु मिश्रा (चतुर्थ वर्ष फार्मा) – विंग के जनरल सेक्रेटरी नामांकित हुए।

प्रौद्योगिकी संस्थान छात्रावास

इस संस्थान के सभी विद्यार्थीगण परिसर में ही निवास करते हैं। वर्तमान में यहाँ ९ छात्रावास छात्रों तथा २ छात्रावास छात्राओं के लिए है। छात्रों के सर्वोन्मुखी विकास हेतु संस्थान छात्रावासों में सुन्दर पर्यावरण एवं विकास हेतु सभी साधन उपलब्ध कराने हेतु सतत् प्रयत्नशील है। सभी हास्टलों में इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध है। छात्रावासों में राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर के 'खेलकूद' का आयोजन किया गया। तीन छात्रावासों में २०० कमरे एवं दो छात्राओं के छात्रावास के १०० कमरों के निर्माण हेतु संस्तुति हो चुकी है तथा निर्माणाधीन है।

अगले शैक्षणिक वर्ष के लक्ष्य

दिनांक २९ जून २०१२ से यह प्रौद्योगिकी संस्थान से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हो गया है। इसकी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के तर्ज पर इसके प्रावधानों एवं नीतियों का निर्धारण करने के लिए इस संस्थान की योजना प्रयासरत है। राष्ट्रीय स्तर की सूची में स्थान प्राप्त करने के लिए यह संस्थान अतिरिक्त अनुदानों के साथ अनेकों योजनाओं को लागू करने के लिए मूर्त रूप दिया जा रहा।

नये शैक्षणिक प्रोग्राम आरम्भ करने के लिए यह संस्थान योजनाएँ बना रहा है ताकि चिन्हित आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके।

२.१.१.४. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दिसंबर, २००२ में अपने ५७वें सत्र में वर्ष २००५-२०१४ तक की अवधि की 'संपोष्य विकास हेतु शिक्षा-दशक' (डीईएसडी) के रूप में घोषित किया था। डीईएसडी के दृष्टिकोण से संपोष्य विकास हेतु शिक्षा से व्यक्तियों, समूहों, समुदायों, संगठनों एवं देशों की संपोष्य विकास के पक्ष में निर्णय लेने तथा विकल्प चुनने की क्षमता विकसित व मजबूत होगी। संयुक्त राष्ट्र के इस दृष्टिकोण के अनुसार उपयुक्त ज्ञान के विकास एवं संपोष्य् विकास क्षमता के क्षेत्र में उच्चतर शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होना चाहिए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने वर्ष २०१० में एक राष्ट्रस्तरीय पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान स्थापित किया। वर्ष २०११ में शैक्षिक पदों पर भर्ती की गई। वर्तमान में संस्थान में एक प्रोफेसर (आचार्य), तीन एसोशिएट प्रोफेसर (सह-आचार्य) एवं चार असिस्टेंट प्रोफेसर (सहायक आचार्य) हैं।

संस्थान का उद्देश्य संपोष्य विकास के बारे में शिक्षा (समाविष्ट के बारे में जागरुकता विकसित करना) एवं संपोष्य विकास हेतु शिक्षा (संपोष्यता की प्राप्ति हेतु शिक्षा को एक औजार के रूप में उपयोग करना) को शामिल (कवर) करना है। संस्थान का मिशन ऐसा शिक्षण, शोध व विस्तार कार्य करना है जिससे भविष्योन्मुख भारत का संपोष्य विकास हो तथा गरीबी मिटे और देश के प्राकृतिक संसाधनों का कुशल व समुचित प्रबंधन बरकरार रहे। संस्थान का उद्देश्य : १- पर्यावरणीय एवं संपोष्य विकास शिक्षा को बढ़ाना, इसमें सुधार करना एवं तत्संबंधी शिक्षा प्रदान करना, २- पर्यावरणीय एवं संपोष्य विकास शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए अंतर-अनुशासनिक उपागम में कार्य करना, ३- समुदाय स्तर पर संपोष्य सामाजिक एवं आर्थिक विकास संबंधी मुद्दों और चुनौतियों के बारे में जन-जागरुकता बढ़ाने में योगदान करना, ४- संपोष्य विकास के संदर्भ में पर्यावरणीय एवं सामाजिक समस्याओं की बेहतर समझ प्रदान करने के लिए एक विचार-विमर्श मंच तैयार करना, वैज्ञानिक चर्चाओं को बढ़ावा देना एवं निर्णयकर्त्ताओं के लिए उपयुक्त उपागम व विश्लेषण नीति विकसित करना तथा ५- एक राष्ट्रीय नीति विकसित करने एवं संपोष्य विकास संबंधी पहलों को क्रियान्वित करने के लिए सरकारी एजेंसियों के साथ कार्य करना है।

शिक्षण कार्यक्रम

संस्थान पर्यावरण एवं संपोष्य विकास के क्षेत्र में अंतर-अनुशासनिक शिक्षा प्रदान करता है। इसे ध्यान में रखते हुए आईइएसडी के संकाय सदस्य बी.एस-सी. (विज्ञान संकाय), बी.ए. (मंच कला संकाय) एवं बी.ए.एम.एस. (आयुर्वेद संकाय) के छात्रों को पर्यावरणीय अध्ययन पाठ्यक्रम की शिक्षा देते हैं। संकाय ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के महिला महाविद्यालय में एम.एससी. जैव सूचना, विज्ञान संकाय में एम.एससी. टेक. भूभौतिकी एवं एम.एससी. पर्यावरण विज्ञान में शिक्षण एवं विनिबंध मार्गदर्शन कार्यक्रम में भी सहभागिता किया।

पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संकाय, आईइएसडी ने शैक्षिक सत्र २०१२-१३ और उससे आगे के लिए एकीकृत एम.फिल.-पीएच-डी. कार्यक्रम शुरू किया है। एकीकृत एम.फिल.-पीएच-डी. उपाधि कार्यक्रम संबंधी पाठ्यक्रमएवं अध्यादेश दिनांक ५ मार्च, २०१२ के एसीआर सं.-६८ के अंतर्गत विश्वविद्यालय के शिक्षण परिषद् द्वारा अनुमोदित किए गए थे।

शोध कार्यक्रम

संस्थान सामाजिक आवश्यकताओं को बेहतर तरीके से पूरा करने वाली प्रणाली को डिजाइन करने, मूल्यांकन व प्रबंधन करने वाले अंतर-अनुशासनिक एवं सहयोगी शोध का आयोजन एवं नेतृत्व करता है। आईइएसडी द्वारा चिन्हित पाँच प्राथमिकता प्राप्त शोध हैं : १- वैश्विक परिवर्तन एवं वातावरण-प्रदूषण, २- प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, ३- संपोषणीय कृषि, ४- वैकल्पिक ऊर्जा संसाधन तथा ५- संपोष्य विकास के सामाजिक-आर्थिक एवं विधिक आयाम। आईइएसडी के संकाय सदस्यों ने शैक्षिक सत्र २०११-१२ के दौरान आठ शोध परियोजनाएँ संचालित कीं। इन परियोजनाओं के लिए ज्यादातर धनराशि भारत सरकार प्रायोजक एजेंसियों यथा- पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, जल संसाधन मंत्रालय एवं पर्यावरण व वन मंत्रालय से प्राप्त हुई। आमतौर पर इसरो, आई.एम.डी., डी.बी.टी., यू.जी.सी. तथा एसडीएमसी-सार्क, नई दिल्ली जैसे संगठनों ने भी आईइएसडी के संकाय-सदस्यों की परियोजनाओं को धन प्रदान किया।

सुदूर पहुँच/विस्तार

यह संस्थान अपनी सुदूर गतिविधियों के माध्यम से समुदाय स्तरीय प्रदर्शन परियोजनाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों इत्यादि समेत संपोष्यता को बढ़ावा देने के लिए कई तरह के भागीदारों को शामिल करना चाहता है। संस्थान का उद्देश्य तथ्यपत्र, स्थिति रिपोर्ट एवं शैक्षणिक संसाधन तैयार करना भी है। इस दिशा में सार्क आपदा प्रबंधन केन्द्र (एसडीएमसी), नई दिल्ली ने आईइएसडी को ''सार्क देशों में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन पर सारांश'' तैयार करने का जिम्मा सौंपा है।

आईइएसडी ने २९-३० अप्रैल, २०११ को 'भारत में आपदा प्रबंधन में उच्चतर शिक्षा की भूमिका : मुद्दे एवं चुनौतियाँ' विषय पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में कई सत्र भारत में आपदा प्रबंधन की अधुनातन गतिविधियाँ; राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भू-वैज्ञानिक/जल-मौसम वैज्ञानिक आपदाओं की स्थिति; आपदा जोखिम कम करने में विज्ञान/प्रौद्योगिकी एवं उच्चतर शिक्षा की भूमिका तथा जलवायु परिवर्तन में आपदा जोखिम कम करने की चुनौतियों जैसे विशिष्ट विषयों पर केन्द्रित थे।

आईइएसडी ने सीइइ-नार्थ के साथ मिलकर सहयोगी गैर सरकारी संगठनों हेतु 'राष्ट्रीय जलीय जीव-गंगा नदी में पाई जाने वाली

डाल्फिन' विषय पर एक तीन-दिवसीय (२८-३० जुलाई, २०११) राष्ट्र स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यशाला सहयोगी स्वैच्छिक संगठनों को उनके क्षेत्र के विद्यालय समूहों में संरक्षण कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु रणनीति विकसित करने एवं क्षमता निर्माण हेतु डिज़ाइन की गई थी।

आईइएसडी को ८-११ नवंबर, २०११ तक एनटीएससी-डीएसटी, भारत सरकार की छठी राष्ट्रीय अध्यापक विज्ञान कांग्रेस के आयोजन की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इस कांग्रेस ने प्रगतिशील विचारों को साझा करने तथा विज्ञान की शिक्षा की मौजूदा स्थिति की आलोचनात्मक समीक्षा करने एवं विद्यालयी प्रणाली में विज्ञान की शिक्षा को समृद्ध बनाने हेतु स्थानीय/राष्ट्रीय स्तर पर हस्तक्षेप के लिए एक मंच प्रदान किया। इस वर्ष का केंद्रीय विषय था- 'विज्ञान की शिक्षा में प्रचलन एवं चुनौतियाँ'। यह पाया गया कि संपोष्य विकास की प्राप्ति के लिए शिक्षा एक अनिवार्य तत्व है। इसीलिए प्रतिभागी भी संपोष्य विकास को बढ़ावा देने वाली शिक्षा के संबंध में जोरदार सहमति के लिए प्रेरित हुए।

आईइएसडी संकाय द्वारा ०१-२१ अक्टूबर, २०११ के दौरान अकादमिक स्टाफ कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पर्यावरण अध्ययन में चतुर्थ पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। आईइएसडी द्वारा ०१-०२ मार्च, २०१२ तक 'एफएएसएएल (अंतरिक्ष, कृषि-मौसम विज्ञान एवं भूमि आधारित लक्षणों के उपयोग द्वारा कृषि उत्पादन का पूर्वानुमान) : खरीफ २०११ एवं रबी २०११-१२' पर एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। आईइएसडी ने २-४ मार्च, २०१२ तक 'पर्यावरणीय समस्याएँ एवं संपोष्य विकास : भारत के लिए मुद्दे एवं चुनौतियाँ' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया।

कार्यकलापों एवं कार्यक्रमों की उपलब्धियों का विवरण

आईइएसडी संकाय सदस्यों द्वारा प्राप्त बाह्य वित्तपोषण

१. पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित परियोजना ''प्लांट फंक्शनल ट्रेट्स एनालिसिस ऑफ ड्राई ट्रॉपिकल फारेस्ट ईकोसिस्टम'' अवधि ३ वर्ष, धनराशि-रु.५.५ लाख।

२. इसरो, एसएसी-अहमदाबाद द्वारा वित्तपोषित परियोजना 'एनर्जी एण्ड मॉस एक्चेंज इन वेजिटेशन सिस्टम' अवधि ३ वर्ष, धनराशि-रु.१.५ लाख।

३. डीएसटी, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित सितंबर, २०१० से जारी परियोजना 'इममोबिलाइज्ड राइस-परॉक्सीडेस बायोसेंसर फॉर डोपामिन डिटरमिनेशन बेस्ड ऑन फंक्शनलाइज्ड कंडक्टिंग पॉलिमर्स' अवधि २ वर्ष, धनराशि-रु.१८ लाख।

४. यूजीसी द्वारा वित्तपोषित फरवरी, २०११ से जारी परियोजना 'इनफ्लुएंस ऑफ नाइट्रिक ऑक्साइड एण्ड सॉलिसिलिक एसिड सिग्नलिंग ऑन कैडमिअम- स्ट्रेस-इंड्यूस्ड ऑक्सीडेटिव बर्स्ट एण्ड प्रोफाइल इन राइस' अवधि ३ वर्ष, धनराशि-रु.६.३८ लाख।

५. डीबीटी, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित ०४ मई, २०१० से जारी परियोजना 'आइडेंटिफिकेशन ऑफ एण्ड कैरेक्टराइज़ेशन ऑफ नोवेल जेनेटिक एण्ड मॉलिकुलर मेकेनिज्म्स बिहाइंड आर्सेनिक टॉलरेंस यूजिंग ब्रैसिका जंसिया ऐस मॉडल सिस्टम' अवधि ३ वर्ष, धनराशि-रु.११.७१ लाख।

६. भूभौतिकी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सहयोग से आईएमडी, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित परियोजना 'इंटीग्रेटेड एग्रो मेटरोलॉजिकल ऐडवाइजरी सर्विसेस फॉर द फार्मस ऑफ ईस्ट विंध्यन एग्रो-क्लाइमेटिक जोन ऑफ यू.पी.'।

७. भूभौतिकी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सहयोग से पृथ्वी विज्ञान विभाग, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित परियोजना 'यील्ड फोरकास्टिंग फॉर डिफरेंट क्रॉप्स इन ईस्टर्न इण्डो-गैन्जेटिक प्लेन ऑफ उत्तर प्रदेश अण्डर एफएएसएएल'।

८. भूभौतिकी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सहयोग से जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित परियोजना 'इम्पैक्ट ऑफ क्लाइमेट चेंज ऑन ग्राउंडवाटर रिसोर्सेस इन साई-गोमती इंटरफ्ल्यू, सेंट्रल गंगा प्लेन, उत्तर प्रदेश, इण्डिया'।

९. एसडीएमसी, सार्क, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित परियोजना 'कम्पेनडियम ऑन क्लाइमेट चेंज एडेप्टेबिलिटी इन सार्क कंट्रीज़'।

आईइएसडी संकाय सदस्यों द्वारा शैक्षणिक/शोध/प्रशासनिक कार्यकलाप

१. ५ बैचों हेतु बी.एस-सी. पर्यावरणीय अध्ययन (प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थी)

२. छठें सेमेस्टर के विद्यार्थियों हेतु बी.ए. पर्यावरणीय अध्ययन (मंच कला)

३. महिला महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में एम.एससी. जैवसूचना विज्ञान शिक्षण एवं परीक्षा (प्रश्नपत्र तैयार करना/मूल्यांकन/प्रायोगिक) तथा एम.एससी. जैवसूचना विज्ञान में विनिबन्ध मार्गदर्शन।

४. एम.एससी. टेक (भूभौतिकी I व III सेमेस्टर, जुलाई-दिसंबर, २०११) - सामान्य मौसमविज्ञान, कृषि मौसमविज्ञान, संख्यात्मक पद्धतियाँ एवं कंप्यूटर प्रोग्रामिंग (सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक)।

५. एम.एससी. टेक (भूभौतिकी II व IV सेमेस्टर, जनवरी-

अप्रैल, २०१२) - सामान्य भूभौतिकी एवं भू-जलविज्ञान (सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक)।

६. एम.एससी. शिक्षण - स्नातकोत्तर स्तरीय पर्यावरणीय विज्ञान (I सेमेस्टर के विद्यार्थी)।

७. आयुर्वेद संकाय में बी.ए.एम.एस. शिक्षण - स्नातकोत्तर स्तरीय पर्यावरणीय विज्ञान (II सेमेस्टर के विद्यार्थी)।

आईइएसडी संकाय सदस्यों द्वारा प्रस्तुत की गईं शोध परियोजनाएँ

१. 'माइक्रोबियल कंट्रोल ऑफ सॉइल रेस्पिरेशन एण्ड इट्स रिस्पांस टू ग्लोबल वार्मिंग' नामक परियोजना के लिए रु.४३.१० लाख के शोध अनुदान हेतु जैवप्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार को प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया (प्रस्ताव समीक्षाधीन है)।

२. 'इनहैंसिंग रिजोडिग्रेडेशन ऑफ लिंडेन बाई सूटेबल एग्रोनॉमिक पैकेजेस' नामक परियोजना के लिए रु.१२.६६ लाख के शोध अनुदान हेतु प्रमुख शोध प्रस्ताव यू.जी.सी. को प्रस्तुत किया गया (प्रस्ताव समीक्षाधीन है)।

३. 'एग्रीकल्चरल यूटिलाइजेशन ऑफ सीवेज स्लज एण्ड फ्लाई ऐश : सिंगल एण्ड इंटरैक्टिव इफेक्ट्स ऑन सॉइल एण्ड प्लांट ग्रोन' नामक परियोजना के लिए रु.१२.६१ लाख के शोध अनुदान हेतु प्रमुख शोध प्रस्ताव यू.जी.सी. को प्रस्तुत किया गया (प्रस्ताव समीक्षाधीन है)।

४. 'एम्बिएंट एअर क्वालिटी एसेसमेंट फॉर केमिकल कैरेक्टराइजेशन एण्ड सोर्स एपॉर्शनमेंट ऑफ सस्पेंडेड पर्टिकुलेट मैटर' नामक परियोजना के लिए रु.११.५८ लाख के शोध अनुदान हेतु प्रमुख शोध प्रस्ताव यू.जी.सी. को प्रस्तुत किया गया (प्रस्ताव समीक्षाधीन है)।

५. 'क्वांटिफिकेशन एण्ड कैरेक्टराइज़ेशन ऑफ म्यूनिसिपल सॉलिड वेस्ट प्रोड्यूस्ड इन वाराणसी सिटी एण्ड कंपोस्टिंग/वर्मीकंपोस्टिंग ऐज़ इट्स सस्टेनेबल मैनेजमेंट ऑप्सन्स' नामक परियोजना के लिए रु.२७.३७ लाख की वित्तीय मदद हेतु फास्ट ट्रैक योजना के अंतर्गत डी.एस.टी. को युवा वैज्ञानिक पुरस्कार शोध प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया (प्रस्ताव समीक्षाधीन है)।

६. 'इफेक्ट ऑफ चेंजिंग क्लाइमेट ऑन प्लांट-रिजोस्फेरिक-केमिकल इंटरैक्शंस एण्ड बायोरेमेडिएशन ऑफ आर्गेनिक पॉल्यूटैंट्स' के लिए रु.२७.५५ लाख के शोध अनुदान हेतु फास्ट ट्रैक योजना के अंतर्गत डी.एस.टी. को युवा वैज्ञानिक पुरस्कार शोध प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया (प्रस्ताव समीक्षाधीन है)।

७. 'आइडेंटिफिकेशन एण्ड स्क्रीनिंग ऑफ प्लांट ग्रोथ प्रोमोटिंग रिजोबैक्टीरिया (पीजीपीआर) टू डेवलप इफेक्टिव बायोफर्टिलाइजर फॉर मल्टिपल क्रॉप प्रोडक्शन' के लिए रु.११.९१ लाख के शोध अनुदान हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली में प्रमुख शोध प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया (प्रस्ताव समीक्षाधीन है)।

आईइएसडी द्वारा आयोजित संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला

१. २९-३० अप्रैल, २०११ को **'भारत में आपदा प्रबंधन में उच्चतर शिक्षा की भूमिका : मुद्दे एवं चुनौतियाँ'** विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

२. आईइएसडी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं सीइइ, लखनऊ द्वारा २८-३० जुलाई, २०११ को **'राष्ट्रीय जलीय जीव-गंगा नदी में पाई जाने वाली डाल्फिन'** विषय पर राष्ट्र स्तरीय नीतिगत कार्यशाला का आयोजन किया गया।

३. ८-११ नवंबर, २०११ को एनटीएससी-डीएसटी, भारत सरकार की **छठीं राष्ट्रीय अध्यापक विज्ञान कांग्रेस** का आयोजन किया गया।

४. अकादमिक स्टॉफ कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में ०१-२१ अक्टूबर, २०११ के दौरान **पर्यावरण अध्ययन में चतुर्थ पुनश्चर्या पाठ्यक्रम** का आयोजन किया गया।

५. ०१-०२ मार्च, २०१२ को **'एफएएसएएल : खरीफ २०११ एवं रबी २०११-१२'** पर एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

६. २-४ मार्च, २०१२ को **'पर्यावरणीय समस्याएँ एवं संपोष्य विकास : भारत के लिए मुद्दे एवं चुनौतियाँ'** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

पुस्तकालय सुविधाएँ:

वर्ष २०११-२०१२ के दौरान १४८ पुस्तकों की खरीद की गई।

परिसर विकास:

पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान के शिक्षण एवं शोध इकाई हेतु हरित भवन डिज़ाइन तत्व वाले नवीन भवन योजना के लिए ६.५ एकड़ का पहला भूखण्ड अनुमोदित किया गया है और निर्माण कार्य शीघ्र आरम्भ होगा।

२.१.२. संकाय

२.१.२.१. कला संकाय

कला संकाय का काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित उत्कृष्ट उदार कला शिक्षा के लिए प्राथमिक स्थान है। मानवता से परिचित कराने के माध्यम से छात्रों को मानव अनुभव, अतीत और वर्तमान के नैतिक सौन्दर्यात्मक और बौद्धिक आयामों का प्रशिक्षण प्रदान करना और भविष्य के संस्कृति के विवेकपूर्ण और चिन्तनशील योगदान हेतु तैयार करना है। डॉ. एनी बेसेंट द्वारा सन् १८९८ में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज में स्थापित कला संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का न केवल प्राचीनतम संकाय है बल्कि यह २५० से अधिक शिक्षकों, ४००० छात्रों और १२० सहायक कर्मचारियों सहित सबसे बड़ा संकाय भी है। इसने अपने महान संस्थापक पं. मदन मोहन मालावीय जी की दूरदर्शिता के उन्नयन में इतिहास, संस्कृत, दर्शन, धर्म और भाषाओं व साहित्य के क्षेत्र में अग्रणी कार्य एवं अनुसंधान के माध्यम से हमारी संस्कृति के उत्कृष्ट विचारों, आदर्शों एवं मूल्यों के संरक्षण एवं प्रसार में सदैव ही सशक्त भूमिका निभायी है।

संकाय में इक्कीस शिक्षण विभाग हैं, जिनके नाम प्रचीन भारतीय इतिहास संस्कृति व पुरातत्व, अरबी, बंगाली, अंग्रेजी, विदेशी भाषाएँ (रशियन, चाइनीज़, सिंहली, जापानीज़, स्पेनिश और पोलिश), फ्रांसीसी अध्ययन, जर्मन अध्ययन, हिन्दी, कला इतिहास, भारतीय भाषाएँ (कन्नड़, नेपाली, तमिल), पत्रकारिता एवं जनसंचार, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, भाषा विज्ञान, मराठी, म्यूज़ियोलॉजी (बी के बी), पाली व बौद्ध अध्ययन, फारसी, दर्शन विज्ञान व धर्म, शारीरिक शिक्षा, संस्कृत, तेलुगु और उर्दू। इन विभागों के अतिरिक्त संकाय में कार्यालय प्रबन्धन एवं कार्यालयी तकनीक, विज्ञान एवं सेल्समैनशिप, बीमा प्रबंधन, वित्त एवं अंकेक्षण, पुरातत्व एवं संग्रहालय विज्ञान और यात्रा एवं पर्यटन प्रबंधन में व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी है। इन विभागों के माध्यम से संकाय द्वारा विविध शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं जिसमें प्रमाण-पत्र और डिप्लोमा स्तर से लेकर पीएच.डी. और डी.लिट्. जैसे अनुसंधान कार्यक्रम भी हैं।

इसके साथ ही वैश्विक ज्ञान प्रणाली में विस्थापन और बदलते सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संरचनाओं के परिप्रेक्ष्य में जो मानववादी क्षेत्रों ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी बढ़ते Interface को मान्यता देने वाली है, संकाय ने वर्तमान विषयों के सुदृढ़ीकरण और ज्ञान के नये क्षेत्रों में अर्न्तविषयी कार्यक्रमों को प्रारम्भ करने का बड़ा कदम उठाया है। यह कदम समकालीन मांगों आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये उठाया गया है। सत्र २०११-१२ में संकाय ने आरम्भिक रूप से निम्नलिखित कदम उठाये है:

स्नातक स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली लागू की गयी। इसके साथ ही यह संकाय शिक्षा की सेमेस्टर प्रणाली को पूरी तरह से क्रियान्वित कर चुका है।

संकाय द्वारा प्रस्तावित अर्न्तविषयी अध्ययन केन्द्रों भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, अर्न्तसांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र और अनुवाद

अध्ययन केन्द्र को विश्वविद्यालय द्वारा संस्तुति प्रदान की गयी है। एक अन्य केन्द्र मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र को शैक्षणिक कार्यक्रम चलाने के क्रम में संकाय से सम्बद्ध किया गया है।

कुछ विदेशी विश्वविद्यालय जैसे बीजिंग यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज़, चाइना, बीजिंग लैंग्वेज एण्ड कल्चरल यूनिवर्सिटी, चाइना और यूनिवर्सिटी ऑफ गोथेनबर्ज, स्वीडेन के साथ नये सहमति पत्र हस्ताक्षरित/ नवीनीकरण किये गये हैं।

अन्तर्विषयी अनुसंधान एवं अध्ययन को बढ़ावा देने के क्रम में संकाय ने एक अन्तर्राष्ट्रीय और तीन राष्ट्रीय समीतियों का गठन किया। यह संकाय अपने विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित पाँच अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी और सोलह राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशालाओं का कार्यक्रम स्थल भी रहा है।

संकाय द्वारा ख्यातिलब्ध विदेशी विद्वानों जैसे कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रो. ज. न. स्ट्रास हावने, वेनेजुएला केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. लुइक ब्रिट्टो गार्सिया, ऑक्सफोर्ड के प्रो. ऐज़ाज अहमद, इमोरी विश्वविद्यालय के प्रो. वी. नारायन राव, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय बर्कले के प्रो. वसुधा डालमिया और अनेक अन्य विद्वानों के व्याख्यान आयोजित हुए। इसके अतिरिक्त, संकाय द्वारा श्री मारकण्डेय काटजू, माननीय न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय, प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल, सदस्य, यू.जी.एस.सी., प्रो. नामवर सिंह और प्रो. अशोक बाजपेई के विशेष व्याख्यान आयोजित किये गयें।

तीस विद्यार्थियों के बैठने की क्षमता के एक पूर्ण सुसज्जित कम्प्यूटराइज्ड मल्टी-मीडिया भाषा प्रयोगशाला स्थापित किया गया।

नेत्रबाधित और अन्य शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों के लिए एक विशेष संगणक प्रयोगशाला बनायी गयी।

एक मल्टीमीडिया इक्विप्ड कॉन्फरेंस फैसीलिटी युक्त डॉ. एनी बेसेन्ट सभागार की स्थापना की गयी।

इन नये कार्यों को पूर्ण करने के साथ संकाय ने अपनी शोध पत्रिका 'अपूर्वा ' का नियमित प्रकाशन जारी रखा। संकाय ने बड़ी संख्या में सम्पूर्ण विश्व से विदेशी छात्रों को आकर्षित करने में कामयाब रहा जिनमें से बड़ी संख्या में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से छात्र आये। विदेशी भाषा के उन्नयन के उद्देश्य से विभिन्न देशों के साथ विदेशी भाषा विभागों की सक्रिय सहभागिता जारी रही। इस सहभागिता कार्यक्रम के भाग के रूप में हमारे छात्र चाइना, जापान, पोलैण्ड और स्पेन के विदेशी भाषा छात्रवृत्ति के लिए चयनित हुए। सत्र २०११-१२ के दौरान संस्थापन गतिविधि और सुदृढ़ हुई तथा हमारे अनेक छात्रों, सरकारी एवं गैर सरकारी खण्ड़ों में रोजगार के प्राप्ति के लिए सफलता प्राप्त किया और अनेकों परिसर चयन के माध्यम से इन्फोसिस जैसे अग्रेणी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों द्वारा नियुक्ति प्रदान की गयी।

अंग्रेजी विभाग

विभाग ने वर्ष के दौरान दो संस्मृति व्याख्यानों – प्रो.आनन्द लाल द्वारा डॉ.वी.राय संस्मृति व्याख्यान एवं प्रो.हरिश त्रिवेदी द्वारा श्री पुरोहित स्वामी संस्मृति व्याख्यान का आयोजन किया।

प्रो. अनिता सिंह को आईसीएसएसआर, नई दिल्ली द्वारा ''स्ट्रेज़िंग जेण्डर परफार्मिंग वूमेन इन रामलीला ऑफ रामनगर'' पर अध्ययन के लिए रू.७,६१,१०० के ग्राण्ट के साथ प्रोजेक्ट स्वीकृत हुआ।

विदेशी भाषाएँ

सन् १९६१ में स्थापित विदेशी भाषा विभाग में सात मेजर भाषाओं की पढ़ाई होती है, जिनमें एशिया और यूरोप की भाषाएं सम्मिलित है जैसे : चाइनीज़, जैपनीज़, सिंहलीज़, एशियन, ईटेलियन, स्पेनिश एवं पोलिश विभाग की सभी भाषाओं में डिप्लोमा एवं सर्टीफिकेट कोर्स है। एशियन और चाइनीज़ भाषा में स्नातक की पढ़ाई के साथ-साथ एमए.एवं शोध कार्य भी कराया जाता है।

यह विभाग विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों, विभिन्न सेक्टरों से ६०० से अधिक छात्रों को अंशकालिक डिप्लोमा एवं पूर्णकालिक डिग्री कोर्सों को प्रदान करता है। विस्तृत सार्वभौमिकता के साथ, हमारे छात्रों को सरकारी और एमएनसी में रोजगार के अच्छे अवसर प्राप्त हुए। हमारे छात्र चीन, जापान, स्पेन, पौलैण्ड, इटली एवं एशिया से छात्रवृत्तियाँ प्राप्त कर चुके हैं।

बारहवीं योजना के दौरान, विभाग द्वारा जैपनीज़ में डिग्री कोर्स शुरू करने का प्रस्ताव है, हमारी सरकार की ओर से 'पूर्व देशों' के उद्देश्य के साउथ ईस्ट एशियन देशों की बड़ी संख्या में विदेशी भाषाओं को शुरू करने की योजना है।

संकाय द्वारा प्रस्तावित अन्तर्सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र और अनुवाद अध्ययन केन्द्र अन्तर्विषयी शोधों और अध्ययन को बढ़ावा देने के लिये स्थापित किया गया।

विभाग के शोध

चाइनीज़ भाषा एवं साहित्य, संस्कृति, इतिहास, राजनीति, साइनो-इन्डियन इन्टरेक्शन्स, रशियन भाषा एवं साहित्य।

कला इतिहास विभाग

संस्थापन

कौनी डेस्टीनेशन मैनेजमेन्ट कम्पनी, गुड़गाँव, हॉलिडे इण्डिया, दिल्ली की कम्पनियों ने नियुक्ति के लिये भ्रमण किया। कौनी ने दो छात्रों और हॉलीडे इण्डिया ने मास्टर ऑफ टूरिज़्म एडमिनिस्ट्रेशन के ५ छात्रों का चयन किया, इसके अतिरिक्त स्पाईस जेट द्वारा ५ छात्र समाविष्ट हुए और आने वाले दिनों में और ज्यादा छात्रों की नियुक्ति होनी प्रस्तावित है।

विभिन्न कार्यक्रमों/सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में छात्रों की भागीदारी

टूरिज्म एवं हॉस्पिटैलिटी स्टडीज़ विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तरीय क्विज़ प्रतियोगिता में एमटीए चौथे सेमेस्टर के दो छात्रों ने दूसरा पुरस्कार जीता।

ज्ञान प्रवाह, वाराणसी द्वारा आयोजित विभिन्न विषयों में कला इतिहास विभाग के छात्रों ने भाग लिया।

संस्कृत एवं स्पन्दन में कला इतिहास विभाग के छात्रों ने उपस्थित होकर विभिन्न पुरस्कार जीते।

प्रगति मैदान में फरवरी २०१२ को एसएटीटीई अन्तर्राष्ट्रीय भ्रमण मेला में एमटीए के दो छात्र भाग लिये।

मार्च २०१२ को दिल्ली में आयोजित ट्रवेल ट्रेड फेअर २०१२ में एमटीए के दो छात्रों ने भाग लिया।

शैक्षणिक भ्रमण

कला इतिहास एम.ए. के छात्रों द्वारा एक शैक्षणिक भ्रमण चुनार का संचालन किया गया। मास्टर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन के छात्रों के लिये राजस्थान के विभिन्न स्थानों (जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, माउण्ट आबू और उदयपुर) का शैक्षणिक भ्रमण संचालित किया गया।

स्मार्ट क्लास रूम श्रव्य-दृश्य उपकरणों की व्यवस्था एवं दृश्य डाटा बैंक के विकास द्वारा स्मार्ट क्लास रूम में विकसित हो चुका है।

भारतीय भाषा विभाग

भारतीय भाषा विभाग सन् १९६० में एक सामान्य कार्यक्षेत्र में सभी भारतीय भाषाओं के अध्यापन हेतु स्थापित हुआ था। वर्तमान में, भारतीय भाषा विभाग के ३ सेक्शन हैं, जैसे – तमिल, नेपाली कन्नड़। तमिल, नेपाली और कन्नड़ में अध्यापन क्रमशः १९४५, १९४३ और १९७६ में प्रारम्भ हुआ। विभाग स्नातक एवं स्नातकोत्तर कोर्स के साथ ही पीएच. डी. कार्यक्रम भी संचालित करता है। डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कोर्स निरन्तर चल रहे हैं।

विभाग के विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों की संख्या अच्छी है। उनकी प्रगति भी संतोषजनक है। नेपाली में एक वर्षीय ब्रिज कोर्स में छात्रों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है जो सन् २०१० से शुरू हुआ था। इस वर्ष से प्री पीएच. डी. कोर्स वर्क प्रारम्भ हो चुका है। विभागीय सदस्य अध्यापन के साथ विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों में संलग्न है।

भाषा विज्ञान विभाग

सत्र २०११-१२ में विभाग के अध्यापकों ने राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठियों और सम्मेलनों में भाग लिया। कुछ छात्रों और शोध छात्रों ने भी राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लिया और अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। विभाग में बी.ए.(आनर्स), एमए.और पीएच.डी. कार्यक्रम चलाये जाते हैं। इन में प्रविष्ट छात्रों की संख्या गत पाँच वर्षों में बढ़ी है।

विभाग चाहता है कि नये सत्र से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के घटक और सम्बद्ध महाविद्यालयों में भी भाषा विज्ञान (ऑनर्स) का पाठ्यक्रम चले। ग्यारहवीं योजना में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने तीन लाख रूपये पुस्तकों के लिए तथा दो लाख रुपये उपकरणों की खरीद के लिए स्वीकृत किया है। एक प्रवक्ता का पद भी स्वीकृत किया है। अन्य पिछड़ी जातियों के विस्तार कार्यक्रम के संदर्भ में एक प्रोफेसर तथा दो प्रवक्ता पद भी स्वीकृत हुआ है।

छः छात्रों ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की राष्ट्रीय प्रवक्ता परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा तीन ने कनिष्ठ शोध छात्रवृत्ति (जे.आर.एफ.) पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण की है।

पाली एवं बौद्ध अध्ययन विभाग

विभाग पाली एवं बौद्ध अध्ययन, पाली संस्कृत चाइनीज़ अभिधम्म दर्शन पर शोध के लिए प्रतिबद्ध है। स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर संकाय में पाली का अध्ययन होता है। वर्तमान में बौद्ध अध्ययन के विभिन्न विषयों पर १७ शोधार्थी पंजीकृत हैं। विभाग के विभिन्न विषयों का लाभ १३ विदेशी छात्र भी उठा रहे हैं। विभागीय सदस्यों द्वारा ९ शोध-पत्रों का प्रकाशन राष्ट्रीय/ अंतर्राष्ट्रीय/ अभिनन्दन ग्रन्थ/ कांग्रेस प्रोसीडिंग में किया गया है। विभागीय संदस्यों द्वारा ''द इण्डियन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज़, वॉल्यूम -११, २०११'' का संपादन भी किया गया है।

प्रतिवेदन वर्ष के दौरान विभागीय सदस्यों ने ११ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेस/सेमीनार में सहभागिता की है।

छात्रों के ज्ञान के पल्लवन के लिए विभाग प्रख्यात राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों के सेमिनार एवं व्याख्यान भी आयोजित करता है। भगवान बुद्ध की २५५५वीं जयंती के अवसर पर बुद्ध जयंती का आयोजन १७ मई २०११ को हुआ।

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग

विश्वविद्यालय योजना आयोग द्वारा प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग को सेन्टर ऑफ एडवांस स्टडी पुरस्कार के रूप में प्राप्त हुआ।

२.१.२.२. वाणिज्य संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का वाणिज्य संकाय, जो आज देश के बड़े वाणिज्य संकायों में से एक है, का प्रादुर्भाव सन् १९४० में विश्वविद्यालय के रजत जयंती समारोह के समय अर्थशास्त्र विभाग के एक आवश्यक अंग के रुप में हुआ। सन् १९५० में यह एक स्वतंत्र विभाग बना एवं इसने सन् १९६५ में उच्चीकृत होकर एक संकाय का दर्जा प्राप्त किया। इस संकाय द्वारा सन् २०११-१२ की अवधि में बी.कॉम. (प्रतिष्ठा), एम.कॉम. तथा पीएच.डी. के पाठ्यक्रम का संचालन जारी रहा। इसके साथ ही एम.एफ.सी., एम.आर.आई.एम. और एम.ई.एम.पी. जैसे विशेष पाठ्यक्रम भी स्ववित्तपोषित आधार पर संचालित किये गये। इसके अतिरिक्त वर्तमान सत्र में राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर (रा.गाँ.द.प.), बरकछा, मिर्जापुर में भी वाणिज्य संकाय के नियंत्रण में पेड सीट श्रेणी के आधार पर बी.कॉम. (प्रतिष्ठा) और एफ.एम.एम. के पाठ्यक्रम भी संचालित किये गये।

एमएफसी का पुर्ननामकरण कर एमएफएम किया गया।

एमआरआईएम का पुर्ननामकरण एमएफआरआई किया गया।

एमईएमपी का पुनर्नामकरण एमएफटी किया गया

संकाय ने नेपाल, थाईलैंड, अफगानिस्तान और भूटान जैसे विदेशी राष्ट्रों के छात्रों को आकृष्ट किया है। संकाय के सभी पाठ्यक्रमों में छात्राओं ने सन्तोषजनक संख्या में प्रवेश प्राप्त किया।

संकाय के सदस्यों ने पीएच०डी० निर्देशन, शोध पत्रों/लेखों एवं पुस्तकों के प्रकाशन, भारत व विदेशों में सम्पन्न हुए विभिन्न स्थानों पर हुए संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में सहभागिता, और विभिन्न विश्वविद्यालयों/संस्थानों तथा महिला महाविद्यालयों और राजीव गाँधी दक्षिण परिसर, बरकछा, मिर्जापुर सहित, का.हि.वि.वि. के अन्य विभागों में परीक्षकों तथा अतिथि वक्ताओं के रूप में कार्य किया।

संकाय के सदस्य संकाय के स्तर पर मुख्य रूप से बी०काम० (प्रतिष्ठा), एम०काम०, एम०एफ०एम, एम० एफ० एम० आर० आई० एम०एफ०टी० जैसे पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत शिक्षण कार्य करने के साथ-साथ पीएच०डी० उपाधि धारक भी तैयार करने में लगे रहे। संकाय के कुछ शिक्षक सदस्य का.हि.वि.वि. के महिला महाविद्यायल, कला संकाय, संगणक विज्ञान विभाग और सांख्यिकी विभाग में भी अध्यापन कार्य में संलग्न रहे।

छात्रों को सुविधाएँ

छात्रों को गुणवत्ता एवं उनके प्रदर्शन में उन्नयन के उद्देश्य से संकाय उन्हें अनेक प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करता है। वे सुविधाएँ है:-

(क) विभागीय पुस्तकालय से सम्पर्क

(ख) वाणिज्य संघ पुस्तकालय से सम्पर्क

(ग) एम०एफ०एम०/ एम०एफ०एम०आर०आई०/ एम० एफ० टी० पुस्तकालय से सम्पर्क

(घ) पाठ्यपुस्तकों की सुविधा

(ड.) नि:शुल्क छात्रता

(च) योग्यता एवं पुण्यार्थ छात्रवृत्ति

(छ) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग छात्रवृत्ति

(ज) का.हि.वि.वि. पीएच.डी. शोध छात्रवृत्ति

(झ) अनुसूचित जाति/अनु. जनजाति के छात्रों को छात्रवृत्ति

(ञ) एन.सी.सी.

(ट) एन.एस.एस.

(ठ) अतिथि शिक्षण व्याख्यान

(ड) परियोजना प्रशिक्षण

(ढ) व्यापारिक अधिकारियों के साथ विमर्श

छात्रों को अन्य सुविधाएँ-कम्प्यूटर-४७, लैपटाप-३४, फोटो कॉपियर-४, लेज़र प्रिंटर-३७ इन सुविधाओं के साथ ही वाई-फाई इन्टरनेट सुविधा भी छात्रों को उपलब्ध है।

परिसर विकास कार्यक्रम

संकाय के प्रशिक्षण एवं नियुक्ति प्रकोष्ठ को और अधिक सुदृढ़ किया गया जिसके परिणाम स्वरूप अनेक संगठनों का परिसर में चयन हेतु संकाय में आगमन हुआ।

मास्टर ऑफ रिस्क एण्ड इन्श्योरेन्स मैनेजमेंट (एम.आर.आई.एम.) और मास्टर ऑफ एक्सपर्ट मैनेजमेंट एण्ड प्रमोशन (एम.ई.एम.जी.) पाठयक्रमों के छात्रों को व्यावसायिक अधिकारियों के साथ प्रत्यक्ष विमर्श करने का अवसर प्राप्त हो सके।

व्यावहारिक कार्यों हेतु विभाग के छात्रों को सुविधा प्रदान करने के लिए उपकरणों से पूर्ण सुसज्जित एक संगणक प्रयोगशाला का कार्य प्रगति पर है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत इन्श्योरेन्स प्रिन्सिपल एवं प्रैक्टिसेस नामक एक रोजगार परक पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया।

वर्तमान संकाय भवन (जिसे ठाकुर रतन पाल सिंह वाणिज्य भवन के नाम से जाना जाता है) की दूसरी मंजिल का शेष निर्माण, जिसमें जी-२ फ्लोर बिल्डिंग (अर्थात् सम्मेलन कक्ष- व्याख्यान सभागार और वर्तमान साइकिल स्टैंड क्षेत्र (फ्रेम्ड एरिया) के पास पार्किंग जो भवन से सटा है) विश्वविद्यालय द्वारा कुल व्यय- रु. ४२९.६५ लाख (अर्थात् रु.२१७.६५ लाख एवं रु.२१२ लाख) के अनुमोदन के साथ कार्य प्रगति पर है।

संकाय की छात्राओं के लिए गोमती छात्रावास का निर्माण कार्य प्रगति पर है, जिसका शिलान्यास माननीय कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कर कमलों से दिनांक १४ अगस्त २००८ को सम्पन्न किया गया।

सेमेस्टर विधि पर बी.काम. (प्रतिष्ठा) के लिए नये ऑर्डिनेंस

२.१.२.३. शिक्षा संकाय

शिक्षा संकाय की स्थापना सन् १९१८ ई० में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कमच्छा प्रांगण में हुई थी तद्नन्तर इसे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संकाय के रूप में विकसित किया गया। अपनी स्थापना काल से ही संकाय ऐसे शिक्षकों को तैयार करने का सर्वोत्तम प्रयास कर रहा है जिनमें भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं और आधुनिक प्रविधियों के ज्ञान का सुन्दर मेल हो ताकि वे समयानुकूल परिवर्तनशील समाज की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

संकाय में बी.एड., बी.एड. (विशिष्ट). एम.एड., एम.एड. (विशिष्ट) एवं एम.एड. (अंश-कालिक) पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। वर्तमान में संकाय में कुल १८२ शोध-छात्र एवं ४९२ छात्रों (१५९ दक्षिणी परिसर) को बी.एड., ८३ छात्रों को बी.एड. (विशिष्ट), ४८ छात्रों को एम.एड., २५ छात्रों को एम.एड. (अंश-कालिक) एवं २७ एम.एड. (विशिष्ट) पाठयक्रम में प्रवेश दिया गया है।

संकाय में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का एक अध्ययन केन्द्र है। सत्र २०११-२०१२ के दौरान संकाय में दो राष्ट्रीय व्याख्यान आयोजित किये गये। अन्य महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्वों के अतिरिक्त शिक्षक दिवस, विकलांग दिवस आदि का आयोजन संकाय में पूरी गरिमा के साथ किया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे लोक-नृत्य, वाद-विवाद, लघु नाट्य आदि में छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। बी.एड. पाठ्यक्रम के अर्न्तगत् छात्रों के लिए समाजोपयोगी उत्पादन कार्य एवं सप्ताह पर्यन्त स्काउट एवं गाइड कार्यक्रम आयोजित किए गये। संकाय के शिक्षकों ने महत्वपूर्ण संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं में भाग लिया तथा उनके द्वारा शोध पत्र एवं लेखों का प्रकाशन किया गया।

छात्रों हेतु उपलब्ध सुविधाएँ – लगभग ३०० छात्रों हेतु छात्रावास की सुविधा; बुक बैंक से पुस्तकों की सुविधा के साथ पुस्तकालय में अबाध प्रवेश की सुविधा; व्यायाम व खेल हेतु पर्याप्त सुविधाएँ; लगभग ९० प्रतिशत छात्रों को योग्यता-कम-सुविधा के आधार पर शिक्षण शुल्क में छूट; संगणक व इन्टरनेट सुविधा; विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त स्वास्थ्य सुविधाएँ।

छात्रों और शोधार्थियों हेतु शिक्षा संकाय में समृद्ध पुस्तकालय है जिसमें लगभग १८,००० (शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों) से जुड़ीं पुस्तकें हैं। संकाय में नवीन उपकरणों से सुसज्जित मनोविज्ञान प्रयोगशाला, विज्ञान प्रयोगशाला एवं संगणक प्रयोगशाला उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त संकाय में विशिष्ट शिक्षा प्रयोगशाला, पर्यावरण प्रयोगशाला, भाषा प्रयोगशाला, शैक्षिक तकनीक प्रयोगशाला एवं व्यायाम व खेलकूद कक्ष, नवनिर्मित सुसज्जित संगोष्ठी कक्ष भी उपलब्ध है।

चूँकि शिक्षा संकाय केन्द्रीय विश्वविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का एक संकाय है, अत: वित्त अंकेक्षण व लेखा परीक्षा आदि विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है।

२.१.२.४. विधि संकाय

विधि संकाय अपने स्थापना से ही विधिक शिक्षा के सुधार और उसको समाजिक रुप से संगत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान करता आ रहा है। यह संस्था विधि स्नातक पूर्णकालिक तीन वर्षीय पाठ्यक्रम एवं पूर्णकालिक दो वर्षीय विधि स्नातकोत्तर को लागू करने में अग्रणी रही है। १९९८-९९ में इस विधि महाविद्यालय ने दो वर्षीय विधि स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम ''मानवधिकार एवं कर्त्तव्य शिक्षा'' एवं २००१-२००२ में एक नया पाठ्यक्रम ''पशु विधि'' को लागू किया। विधि संकाय ने बार कौंसिल ऑफ इण्डिया के निर्देशानुसार विधि पूर्वस्नातक पाठय्क्रम में आमूल चूल परिवर्तन किया और सत्र २००९-१० से एल.एल.बी. (ऑनर्स) प्रारम्भ किया।

विधि संकाय ने विश्वविद्यालय के उपयुक्त अध्यादेशों के अनुसरण में सत्र २०१०-२०११ से एल.एल.बी. (ऑनर्स), एल.एल.एम. और एल.एल.एम. (मानव अधिकार एवं कर्त्तव्य शिक्षा) के पाठ्यक्रम में विकल्प आधारित क्रेडिट पद्वति को अंगीकृत किया। इसके अतिरिक्त, विधि संकाय ने जनवरी २०११ से पीएच.डी. पाठ्यक्रम में कोर्स वर्क भी प्रारम्भ किया ।

शैक्षणिक क्रिया कलाप

(१) प्रवेश एवं अध्यापन सम्बन्धी कार्य निश्चित अवधि के अन्दर पूरी कर ली गयीं तथा परीक्षायें शांतिपूर्ण ढंग से समाप्त हुईं।

(२) संकाय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. बी.एस. मिश्रा को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत रु.४,२१,०००/- की परियोजना शीर्षक 'प्रोटेक्शन ऑफ वाटर वाडीज़ एण्ड रेगुलेटरी रिसोर्सेज़-ए केस स्टडी ऑफ वाराणसी एन्ड एडज्वायनिंग एरियाज़' पर कार्य प्रगति पर रहा।

(३) कई अध्यापकों ने स्रोत व्यक्ति के रुप में एकेडेमिक स्टाफ कालेज में चलाये जा रहे पुनश्चर्या पाठ्यक्रम और ओरिएण्टेशन कोर्स में योगदान दिया। इसके अतिरिक्त संकाय के कई अध्यापकों ने विभिन्न राष्ट्रीय कार्यशालाओं में भी भाग लिया।

(४) डॉ. अली मेंहदी, प्रोफेसर, विधि संकाय इन्टरनेशनल यूनियन फार कन्ज़रवेशन आफ नेचर एण्ड नेचुरल रिर्सोसेज (वर्ल्ड कन्ज़रवेशन यूनियन), स्वीटजरलैण्ड द्वारा नामित पर्यावरण विधि आयोग के सदस्य के रूप में कार्य करते रहे।

(५) विश्वविद्यालय के ९४वें दीक्षान्त समारोह के अन्तर्गत संकाय का दीक्षान्त समारोह मार्च १७, २०१२ को सम्पन्न हुआ।

(६) बड़ी संख्या में विधि स्नातकोत्तर तथा विधि स्नातक के विद्यार्थियों का चयन न्यायिक अधिकारी एवं अभियोजन अधिकारी के रूप में कई राज्यो में यथा बिहार, उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि में हुआ।

(७) एक मूट कोर्ट हाल का निर्माण कार्य पूरा हुआ ।

(८) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा सत्र २०११-२०१२ में आयोजित अन्तर संकाय युवा पर्व २०१२ और 'स्पन्दन' के बैनर के अन्तर्गत सम्पन्न हुए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों यथा लघु नाट्य, प्रश्नोत्तर, नृत्य, गीत आदि और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में संकाय के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और पुरस्कार एवं प्रशंसा प्राप्त किया।

(९) सत्र २०११-२०१२ के दौरान विधि संकाय को विधि संस्थान में परिणित करने की दिशा में कार्य प्रगति पर रहा।

अध्यापन का कार्यक्रम

देश के विभिन्न विधि महाविद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विधि के पारम्परिक विषयों के अलावा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विधि महाविद्यालय में और पाठ्यक्रमों जैसे अपराध एवं दंडशास्त्र, अर्न्तराष्ट्रीय आर्थिक विधि, सार्वजनिक नियंत्रण एवं सहयोग विधि, ग्रामीण विकास सम्बन्धी विधि, किराया नियंत्रण विधि, सैन्य विधि, हिन्दू विधिशास्त्र एवं मुस्लिम विधिशास्त्र के लिये भी प्रबन्ध किये गये हैं। इसी प्रकार विधि महाविद्यालय में अनेक सेमिनार पाठ्यक्रमों जैसे विधि एवं समाज, विधि एवं गरीबी, विधि एवं शिक्षा, विधि एवं धर्म, विधि एवं महिलायें, विधि एवं बच्चे, विधि एवं योजना, विधि एवं उपभोक्ता, एवं विधि एवं चिकित्सा के लिये भी प्रबन्ध किये गये हैं। इनमें से अधिकतर पाठ्क्रमों का अध्यापन विगत कई वर्षो से हो रहा है।

देश के अनेक विधि महाविद्यालयों में विधि स्नातकोत्तर अध्यापन के साथ-साथ विधि संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विधि स्नातकोत्तर में मानवाधिकार एवं कर्त्तव्य शिक्षा के अध्ययन की व्यवस्था है जिसमें मानवाधिकार विधिशास्त्र, मानवाधिकार और भारत, मानवाधिकार की अर्न्तराष्ट्रीय विधि, मानवाधिकार एवं आपराधिक न्याय, अन्तर्राष्ट्रीय शरणार्थी विधि, अन्तर्राष्ट्रीय मानवीय विधि, मानवाधिकार एवं पर्यावरण, मानवाधिकार एवं महिलायें, मानवाधिकार एवं बच्चे, जैसे विषय शामिल हैं। विधि स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को विधि स्नातकोत्तर उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु एक लधु शोध प्रबन्ध का लिखना भी अपेक्षित होता है।

पुस्तकालय सुविधायें

विधि महाविद्यालय पुस्तकालय एक हजार चार सौ से अधिक पुस्तकालय की सुविधा लेने वालों के लिये पठन-पाठन एवं शोध आवश्यकताओं की पूर्ति करती है जिसमें अध्यापक, शोधछात्र, विधि स्नातक और विधि स्नातकोत्तर के विद्यार्थी हैं। पुस्तकालय किताब देना, परामर्श, निर्देशन एवं ग्रन्थ सूची सम्बन्धी सेवायें प्रदान करता है। स्नातक स्तर के विधि विद्यार्थियों को कुछ किताबें उधार के रूप में दिया जाता है। विधि पुस्तकालय में छायाप्रति की मशीन है और उसके प्रयोगकर्ताओं को छायाप्रतियाँ प्रदान की जाती है। यह सुविधायें इस पुस्तकालय में आने वाले अन्य विश्वविद्यालयों एवं संकायों के अन्य सदस्यों को भी दी जाती हैं। स्थानीय बार के सदस्य एवं वादकारी भी इस पुस्तकालय में अपने आवश्यकता के संदर्भ में आते हैं। पुस्तकालय का समय मई से जुलाई तक पूर्वान्ह १०-०० से सांय ५ बजे तक है और अगस्त से अप्रैल तक ११-०० पूर्वान्ह से सांय ७ बजे तक का है। यह विधि स्नातक और स्नातकोत्तर के परीक्षाओं के दौरान रविवार को भी खुलता है।

सन् २०११-२०१२ के लिए अपेक्षित सूचना निम्नलिखित है:

विधि संकाय पुस्तकालय विधि संकाय परिसर के शैक्षिक खण्ड के प्रथम तल पर स्थित है। इसका कारपेट क्षेत्रफल १८,७०० वर्ग फीट है। इसके अध्ययन कक्ष में एक साथ १५० विद्यार्थियों बैठकर अध्ययन कर सकते है। पुस्तकालय में कोई शुल्क नहीं लिया जाता है।

विधि संकाय पुस्तकालय निम्नलिखित सुविधाएँ प्रदान करता है: अध्ययन कक्ष, सन्दर्भ सेवाएँ, विद्यार्थी पुस्तक ऋण सुविधा, पुस्तक बैंक सुविधा (अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रों के लिए, फोटोकापी सेवा, कम्प्यूटर और इन्टरनेट सुविधा, आनलाइन विधिक डेटाबेस (मनुपात्रा, बेस्ट लॉ इंडिया)।

नवीन अध्यादेश

सत्र २०११-२०१२ के दौरान, विकल्प आधरित क्रेडिट पद्वति को प्रभाव देने के दृष्टिकोण से एल.एल.बी.(आनर्स), एल.एल.एम. और एल.एल.एम.(मानव अधिकार एवं कर्त्तव्य शिक्षा) पाठ्यक्रमों में प्रवेश, परीक्षा और अन्य विषय से सम्बन्धित अध्यादेशों को विश्वविद्यालय के शिक्षा परिषद द्वारा सत्र २०१०-२०११ से अनुमोदित किया गया और विधि संकाय द्वारा तदनुसार सत्र २०१०-११ से अंगीकृत किया गया। इसके अतिरिक्त, पीएच.डी. पाठ्यक्रम में २० क्रेडिट अंक का कोर्स वर्क लागू करने सम्बन्धित अध्यादेश को भी विधि संकाय द्वारा जनवरी २०११ से अंगीकृत कर लिया गया ।

२.१.२.५. प्रबन्धशास्त्र संकाय

हम सभी उस संसार में रह रहे है, जिसमें प्रबन्धकीय शिक्षा का महत्व बढ़ता जा रहा है। इस शिक्षा से नवयुवकों में अपने स्वप्न पूरे करने हेतु नया उत्साह मिलता है। संस्थानों को भी अपने भविष्य की योजनाओं को आगे बढ़ाने हेतु प्रबन्धकीय ज्ञान अर्जित प्रोफेशनल्स की आवश्यकता होती है।

वर्तमान परिदृश्य में हम समझतें है कि प्रबन्धकीय संस्थानों के समक्ष उत्तरदायित्व तथा चुनौतियाँ देश में एक अग्रणी प्रबन्ध संस्थान होने के नाते विशेषतया बहुत अधिक है।

दृष्टिक्षेत्र

संकाय पूरे विश्व पटल पर उत्कृष्टता का एक प्रमुख केन्द्र बनने की आकांक्षा रखता है, जिसमें समाज के प्रति समर्पित प्रबन्धकों का निर्माण किया जा सके।

उद्देश्य

संकाय का उद्देश्य व्यापार, उद्योग व अन्य उपयोगी वर्गों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा, शोध एवं सलाह तथा अन्य व्यावसायिक सेवाएँ प्रदान करना है।

लक्ष्य

- प्रबन्धन के क्षेत्र में कॅरियर के इच्छुक युवा प्रतिभाओं को आवश्यकता आधारित शिक्षा प्रदान करना।
- प्रबन्धन के क्षेत्र को अनुप्रयोगात्मक एवं अवधारणात्मक दोनों ही शोध के तरीकों से समृद्ध बनाना एवं गुणवत्ता युक्त प्रकाशन।
- एमडीपी के द्वारा कार्यरत प्रबन्धकों की प्रशासनिक योग्यता एवं निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ावा देना एवं कंसल्टेन्सी सेवाओं के द्वारा उनकी समस्याओं का समाधान करना।
- विभिन्न प्रबन्धन संस्थानों के शिक्षकों के ज्ञान और कुशलता को क्वालिटी इम्प्रूवमेन्ट कार्यक्रमों के द्वारा बढ़ावा देना।
- प्रबन्धन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कॉरपोरेट जगत एवं विश्वस्तरीय शिक्षण संस्थाओं के बीच सहयोग करना और दोनो के बीच की दूरी को कम करने का प्रयास करना।

कॉर्पोरेट जगत के साथ सहयोग

- इलाहाबाद बैंक चेयर
- पीवीवीएनएल के सी एवं डी कर्मचारियों और फ्रेन्चाइज़ी के

लिये राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिये प्रशिक्षण संस्थान के तौर पर सूचीबद्ध किया गया (ग्रामीण विद्युतीकरण निगम, मिनिस्ट्री ऑफ पॉवर के साथ सहयोग)।

- प्रबन्ध एवं बीमा में एक वर्षीय पीज़ी.डिप्लोमा को संचालित करने के लिए आईसीआईसीआई प्रूलाइफ के साथ सहायोग।
- तकनीकी संस्थाओं के विद्यार्थियों के मध्य उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिये डीएसटी, मानव संसाधन मंत्रालय के एनआईएमएटी परियोजना के अन्तर्गत फैकल्टी डवलपमेन्ट कार्यक्रम आयोजित करना।
- विभिन्न संगठनों जैसे एनटीपीसी, यूपीआरवीयूएनएल (अनपरा थर्मल पॉवर प्रोजेक्ट), विंध्याचल सुपर थर्मल पॉवर स्टेशन, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, भारतीय डाक विभाग इत्यादि के लिये इन हाउस प्रशिक्षण कार्यक्रम/ एमडीपी आयोजित करना।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन, स्वास्थ्य कर्मियों के लिये फैलोशिप कार्यक्रम एवं यूएनडीपी के लिये कन्सलटेंसी प्रोजेक्ट आयोजित करना।
- नेशनल स्टाक एक्सचेंज के सहयोग से स्टॉक एक्सचेंजों की कार्य प्रणाली पर सर्टीफाइड प्रोग्राम की शुरुआत अपने अन्तिम चरण में है।
- संकाय को केपासिटी बिल्डिंग के लिए पार्टनर ट्रेनिग संस्थान के तौर पर विभिन्न पब्लिक सेकटर संगठनों जैसे पॉवर फाइनेन्स कॉर्पोरेशन के साथ सूचीबद्ध करना।
- लघु एवं मध्यम उपक्रमों के मंत्रालय के अन्तर्गत बिज़नेस इन्क्यूबेशन सेन्टर (वार्ता अन्तिम चरण में)।

अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थाओं के साथ सहयोग

उच्चशिक्षा के विश्वविख्यात संस्थानों के साथ संकाय दृढ़तापूर्वक अन्तर्राष्ट्रीय अकादमिक सम्पर्क को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहा है।

हाल ही में विभिन्न देशों के विख्यात संस्थानों के शीर्ष शिक्षाविदों ने संकाय को विज़िट किया। और विश्वविद्यालय ने निम्नलिखित संस्थानों के साथ एमओयू हस्ताक्षर किये।

- इथियोपियन सिविल सर्विसेज़ कॉलेज, इथियोपिया
- विल्कस् विश्वविद्यालय, पेन्सिलवानियाँ, यूएसए
- स्कूल ऑफ बिज़नेस, क्लेफ्लिन विश्वविद्यालय, यूएसए (अभी हस्ताक्षर किया जाना है)
- लॉसिज़ विश्वविद्यालय,जर्मनी (अभी हस्ताक्षर किया जाना है)

मान्यता

- क्वालिटी इम्प्रूवमेन्ट कार्यक्रम के तौर पर चिन्हित किया जाना।
- सीखने के प्रति गहन प्रतिबद्धता और विशेषज्ञता को ध्यान में रख कर एआईसीटीई द्वारा वर्ष २००१ के लिये देश में प्रबन्धन संस्थानों के शिक्षकों के विकास और अद्यतन हेतु संकाय को एक क्वालिटी इम्प्रूवमेन्ट केन्द्र के तौर पर चिन्हित किया गया। इस योजना के अन्तर्गत विभिन्न विषयों पर तब से संकाय में लगभग ३० अंशकालिक (छः दिवसीय) कार्यक्रम आयोजित कराये हैं।
- प्रबन्धन में राष्ट्रीय डॉक्टोरल फैलोशिप के लिए मेजबान संस्थान के तौर पर चिन्हित किया जाना।
- डीआरएस-१ सैप (यूजीसी)
- इन्टरप्रेन्योरशिप डवलपमेन्ट सेल, (एआईसीटीई)
- इन्डस्ट्री इन्स्टीट्यूट पार्टनरशीप सेल, (एआईसीटीई)

योगदान

नियमित शैक्षणिक कार्यक्रम: अपनी शुरुआत से लेकर संकाय ने ४००० से अधिक प्रबन्ध स्नातकों को तैयार किया है जो कि पूरे विश्व भर के प्राइवेट और पब्लिक सेक्टर संगठनों में मुख्य प्रशासनिक पदों पर कार्यरत हैं। यह संकाय के द्वारा डॉक्टोरल डिग्री और डिप्लोमा कार्यक्रमों के अतिरिक्त है।

शोध प्रकाशन: संस्थान का अपना शोध जर्नल है: बीएचयू. मैनेजमेन्ट रिव्यू-ए जर्नल ऑफ कन्टेम्पोरेरी मैनेजमेन्ट रिसर्च (आईएसएसएन २२३१०१४२)

शिक्षकों द्वारा १०० से अधिक पुस्तकें एवं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के जर्नल में ५०० से ज्यादा शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं।

आउटरिच /एक्सटेन्शन गतिविधियाँ: पिछले दो वर्षों में उच्च स्तरीय शैक्षणिक गतिविधियाँ आयोजित हुईं।

- इन्टरनेशनल वर्कशाप ऑन पोस्ट इकोनामिक मेल्टडाउन ऐरा: चैलेन्ज़ेज एण्ड स्ट्रेटेज़िज, एलायन्स यूनिवर्सिटी, बेंगालुरु, ४-५ फरवरी, २०१२।
- डाएरेक्टर्स कॉनक्लेव ऑन क्वालिटी पेराडाइम इन हायर एजुकेशन
- नेशनल वर्कशाप ऑन फाइनेन्शियल एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स ऑफ हायर एजुकेशन
- इन्टरनेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन एग्रीकल्चर एण्ड रुरल डवलपमेन्ट
- कॉन्फ्रेन्स ऑन इन्क्लुसिव ग्रोथ एण्ड माइक्रो फाइनेन्स एक्सेस।
- इसके अलावा पिछले २ वर्षों में संकाय ने लगभग ४० शैक्षणिक कॉनक्लेव आयोजित किये।

अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये

- रुरल एलेक्ट्रेफिकेशन कॉरपोरेशन लिमिटेड
- एचआरडी सेल बीएचयू.
- एनएमईआईसीटी के माइक्रोसॉफ्ट द्वारा टीचर एम्पॉरमेन्ट प्रोग्राम
- एनआईएमएटी डीएसटी के एफडीपी
- एआईसीटीई के क्वालीटी इम्प्रूवमेन्ट प्रोग्राम

- गत दो वर्षों में प्रशिक्षित कुल मानव संसाधन: ५०० से ज्यादा
- एआईसीटीई के क्वालीटी इम्प्रूवमेन्ट प्रोग्राम के अन्तर्गत प्रशिक्षित प्रबन्धक शिक्षक: ५०० से ज्यादा

बिजनेस क्लीनिक

बिजनेस क्लीनिक को स्थापित करना संकाय द्वारा उठाया गया एक नया कदम था। इसके लक्ष्य थे: सीखने की प्रक्रिया को कक्षाओं से बाहर विस्तार देकर प्रबन्धन के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक अवधारणाओं के मध्य के अन्तराल को भरना और उद्यमियों एवं व्यावसायिक इकाईयों को विशेषज्ञ सेवायें देना।

सामुदायिक सेवायें: यूजीसी के डीआरएस १ सैप कार्यक्रम के हिस्से के तौर पर संकाय के प्रबन्धक विद्यार्थियों द्वारा मानवता की सेवा के लिए सामाजिक क्लब सेवार्थ बनाया गया। इस प्रयास के द्वारा युवा पीढ़ी को समाजिक उद्देश्यों के प्रति जागरुक बनाना है और युवाओं में सामाजिक जिम्मेदारी की एक भावना को भरना है।

अभी तक की गतिविधियाँ

रक्तदान शिविर आयोजित करना, एसएस अस्पताल में भर्ती गरीब मरीजों को कम्बल वितरण, सामाजिक उद्यमियों के साथ अन्त:क्रिया, विभिन्न सामाजिक उद्यमों का विज़िट, जॉय ऑफ गिविंग सप्ताह मनाना इत्यादि। इस वर्ष १५ अक्टूबर, २०११ को एक रक्तदान शिविर अयोजित किया गया।

कैम्पस प्लेसमेन्ट

प्रबन्ध शास्त्र संकाय के विद्यार्थियों ने एक बार फिर से अपनी योग्यता को साबित किया है। सभी विद्यार्थी देश और विदेश के विभिन्न विख्यात संगठनों द्वारा भर्ती किये गये हैं। संकाय के विद्यार्थियों के कैम्पस प्लेसमेन्ट में संकाय के समन्वित प्रयास प्रतिबिम्बित होते हैं। संकाय को इस बात का गर्व है कि आरबीआई जैसा प्रमुख वित्तीय संस्थान भी अब इसके कैम्पस रिक्रूटर्स में जुड़ गया है। कमोवेश, हमारे विद्यार्थियों को शोध एवं कन्सलटिंग फर्म आईसीआरएम के अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्ताव मिले हैं। सत्र २०११-१२ में लगभग ३० प्रमुख कम्पनियों ने प्रबन्ध शास्त्र संकाय, बीएचयू.विज़िट किया और हमारे विद्यार्थियों को औसतन सात लाख प्रतिवर्ष की तनख्वाह पर भर्ती किया। ऐसे विभिन्न प्रस्ताव मिले: कॉरपोरेट फाइनेन्स, इक्वीटी रिसर्च, इन्वेस्टमेन्ट बैंकिंग, मार्केटिंग, सेल्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन, सप्लाई चेन मैनेजमेन्ट, बिजनेस कन्सल्टिंग, आई टी कन्सल्टिंग, एग्री बिजनेस, इन्डस्ट्रियल रिलेशन्स एवं कॉरपोरेट एचआर। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि संकाय ने विश्वद्यालय के दूसरे संकायों को भी कैम्पस प्लेसमेन्ट के लिये शामिल किया जैसे कि एमपीएमआईआर, एमएससी एग्रीकल्चर एवं मास्टर ऑफ फाइनेन्सियल मैनेजमेन्ट। कैम्पस प्लेसमेन्ट में विशिष्ट उपलब्धियाँ संकाय को शीर्ष रैंकिंग में खड़ा कर देतीं हैं जैसा की हाल के बी-स्कूल सर्वेक्षणों में प्रतिबिम्बित होता है।

अन्य कम्पिनियाँ

इलाहाबाद बैंक, अन्सल एपीआई, एक्सीस बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, बर्जर पेन्टस, बैंक ऑफ इण्डिया, कैनरा बैंक, कोल इण्डिया लिमिटेड, देना बैंक, फिनों, इन्फोसिस, आईसीआईसीआई बैंक, आईडीबीआई बैंक, एनसीएमएसएल, पेन्टालून्स, आरबीआई यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, वीजा स्टील।

एलुमनी गतिविधियाँ

बीएचयू. मैनेजमेन्ट एलुमनी एसोसिएशन यहाँ से पढ़ चुके एवं देश विदेश में कार्यरत स्नातकों के नेटवर्क को मजबूती प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

संकाय के विकासपरक प्रयासों में, कॉरपोरेट जगत के साथ जुड़ाव को मजबूती प्रदान करने में, संकाय के प्रबन्धन विद्यार्थियों के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेन्ट कार्यक्रम आयोजित करने में यह एसोसिएशन महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

विश्वविद्यालय कैम्पस में यह एसोसिएशन नियमित वार्षिक बैठक आयोजित करता है

कोर्स स्ट्रक्चर का रिविज़न

विभिन्न स्तरों पर कठिन परिश्रम के बाद एमबीए आईबी और एमबीएएबी कोर्स स्ट्रक्चर का संशोधन अब पूरा हो गया है और अकादमिक सत्र २०१२-१३ से प्रभावी होगा।

नये कार्यक्रमों की शुरुआत

कॅरियर ओरिएन्टेड कोर्सेज़ के अन्तर्गत यूजीसी ने निम्नलिखित तीन स्किल ओरिएन्टेड कोर्स अनुमादित किये हैं।

१. माइक्रो फाइनेन्स एण्ड इन्टरप्रेन्योरशिप में डिप्लोमा
२. लेज़र एण्ड हॉस्पिटलिटी मैनेजमेन्ट
३. हेल्थ केयर मैनेजमेन्ट

आधारभूत संरचना का विकास

- नर्वनिर्माण एवं भवनों की मरम्मत
- वर्तमान भवन जिसमें कि शिक्षकों के कमरे, कक्षायें, सेमिनार हॉल, कार्यालय एवं पुस्तकालय है, मरम्मत किया गया और एक नया तल, जिसमे की ६० विद्यार्थी प्रति कक्ष की क्षमता वाले २ कमरे हैं, निर्मित किया गया। संकाय परिसर का सौन्दर्यीकरण एवं बागवानी प्रगति पर है।
- वर्तमान भवन के सामने नया पुस्तकालय सह-शिक्षक कक्ष पूरा हो गया और कुलपति द्वारा उद्घाटन किया गया। पुस्तकालय का ऑटोमेशन पूरा हो गया। परिसर वाई-फाई युक्त हैं। साथ ही वीडियो कन्फरेंन्सिंग एवं स्मार्ट क्लास रुम से भी युक्त हैं।

विद्यार्थियों के लिये सुविधायें

छात्रावास, पुस्तकालय, बल्ड बैंक, फ्री-शिप एवं स्कालरशिप, कम्प्यूटर प्रशिक्षण।

२.१.२.६. संगीत एवं मंच कला संकाय

भारत की सांस्कृतिक परम्परायें भारतीय कला, संगीत तथा नृत्य से बनी हैं। संगीत एवं मंचकला संकाय, का.हि.वि.वि.भारतीय संगीत कला तथा नृत्य कला की उन्नति तथा सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर है। पं. गोविन्द मालवीय तथा संस्थापक प्राचार्य संगीत मार्तण्ड पं.ओंकार नाथ ठाकुर के प्रयत्नों से वर्ष १९५० में संगीत एवं ललित कला महाविद्यालय की स्थापना हुई। यह १९६६ में गायन, वादन एवं संगीतशास्त्र विभाग के रूप में पल्लवित संगीत एवं मंच कला संकाय के रूप में परिणत हुआ। तत्पश्चात यह संकाय उत्तरोत्तर सफलतापूर्वक भारतीय शास्त्रीय संगीत कला (गायन एवं वादन) तथा नृत्य शैली में उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय पद्धतियों में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर रहा है, साथ ही शास्त्र पक्ष को एक विशिष्ट अनुशासन के रूप में भी प्रतिष्ठित करने के लिए संकाय में संगीतशास्त्र विभाग भी प्रतिष्ठित है। देश में केवल इसी संकाय में सर्वप्रथम संगीतशास्त्र विभाग की स्थापना हुई थी। का.हि.वि.वि. एकमात्र केन्द्रीय विश्वविद्यालय है जिसमे संगीत का पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया।

संगीत एवं मंचकला संकाय के अन्तर्गत चार विभाग हैं। - गायन, वाद्य, संगीत शास्त्र तथा नृत्य विभाग। नृत्य विभाग की स्थापना सत्र २००७-०८ में हुई। भरत नाट्यम् तथा कथक में स्नातकोत्तर उपाधि के लिए सत्र २००७-०८ में नया पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इस संकाय में निम्नलिखित पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं। : पीएच.डी., स्नातकोत्तर (एम.म्यूज़) गायन, वादन, नृत्य, (एम.म्यूज़िकोलॉजी) संगीतशास्त्र, स्नातक (बी.म्यूज़) गायन, वादन, नृत्य तथा कनिष्ठ डिप्लोमा- गायन (हिन्दुस्तानी/कर्नाटक), वादन (सितार/वायलिन/बाँसुरी/तबला), संगीतशास्त्र में एक वर्षीय प्रमाण पत्रीय पाठ्यक्रम, नृत्य (कथक/भरतनाट्यम)। संकाय की विशिष्ट गतिविधियों में विद्यार्थियों तथा संगीत प्रेमियों के लाभार्थ गुरूवासरीय कार्यक्रम वर्ष भर चलते रहते हैं। संकाय द्वारा छात्रों एवं संकाय परिवार के लाभार्थ विभिन्न सुप्रसिद्ध कलाकारों के सोदाहरण व्याख्यान एवं मंच प्रस्तुतियाँ आयोजित की गयीं।

पंडित मदन मोहन मालवीय जी की १५०वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रमों की शृंखला में आयोजित विशिष्ट कार्यक्रम

'करेन्ट ट्रेन्ड इन म्यूज़िक थेरैपी प्रैक्टिसेस: मैथोडोलॉजी, टेक्निक्स एण्ड इम्प्लीमेंटेशन' विषय पर गायन विभाग एवं आईसीसीआर के संयुक्त तत्वावधान में एक दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन १७-१८ फरवरी, २०१२ को हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध म्यूज़िक थेरैपीस्ट एवं इस क्षेत्र के विद्वानों को यूके, यूएसए, कनाडा, इथियोपिया आदि देशों से आमंत्रित किया गया लगभग ४५० प्रतिभागियों ने संगोष्ठी में शोध-पत्र पढ़ें। सुश्री लुसेन मैगिल संगोष्ठी की मुख्य अतिथि थी।

विभागों की प्रमुख गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

गायन विभाग

अध्येतावृत्ति एवं छात्रवृत्ति/पुरस्कार

३ विद्यार्थियों कु.आंकाक्षा शर्मा, कु.पूनम श्रीनाथन तथा श्री भूपेन्द्र कुमार को एस.आर.एफ.अध्येतावृत्ति।

५ विद्यार्थियों को जे.आर.एफ. अध्येतावृत्ति।

श्री गति कृष्ण नायक तथा श्यामा कुमार भारती को क्रमश: गायन तथा हार्मोनियम वादन के क्षेत्र में मानव संसाधन मंत्रालय की ओर से छात्रवृत्ति।

कु. तन्वी भट्टाचार्या एवं श्री श्यामा कुमार भारती को उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी में क्रमश: गायन तथा हार्मोनियम वादन में प्रथम पुरस्कार।

स्पन्दन २०१२

शास्त्रीय गायन एकल में प्रथम पुरस्कार - विजेता गति कृष्ण नायक

सुगम संगीत में द्वितीय पुरस्कार। विजेता - श्री मासूम अलि

समूह गायन भारतीय में प्रथम पुरस्कार। विजेता - आकांक्षा तिवारी एवं समूह

क्षेत्रीय युवा महोत्सव, तेजपुर, आसाम में शास्त्रीय गायन में प्रथम पुरस्कार एवं समूह गीत में प्रथम पुरस्कार।

राष्ट्रीय युवा महोत्सव, नागपुर, महाराष्ट्र - शास्त्रीय गायन में द्वितीय पुरस्कार और समूह गायन में तृतीय पुरस्कार।

कु. आकांक्षा तिवारी को भूपेन हजारिका का स्मृति सुगम संगीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिभागिता

गायन विभाग के छात्र-छात्राओं ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों, समारोहों, शैक्षणिक कार्यक्रमों इत्यादि में कुलगीत की प्रस्तुति की। साथ ही जन्माष्टमी, मालवीय जयन्ती एवं गांधी जयन्ती में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

गायन विभाग के छात्र-छात्राओं ने विज्ञान भवन, नई दिल्ली में प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा आयोजित पं. महामना मालवीय जी की १५०वीं जयन्ती समारोह के अवसर पर वन्दे मातरम् की प्रस्तुति की।

गायन विभाग के छात्र-छात्राओं ने शिक्षक कांग्रेस के अवसर पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी

विभाग के शोध छात्रों ने दिनांक ९ मार्च, २०१२ को आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी में विभिन्न विषयों पर अपने शोध प्रपत्र प्रस्तुत किये।

वाद्य विभाग

क्षेत्रीय युवा महोत्सव २०११ में वाद्य संगीत वर्ग में सितार में प्रथम पुरस्कार विजेता - श्री अंकुर मिश्रा

क्षेत्रीय युवा महोत्सव २०११ में वाद्य संगीत वर्ग में तबला में प्रथम पुरस्कार विजेता - श्री आशीष मिश्रा

श्री अंकुर मिश्रा को मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पुरस्कार।

श्री कृतानन्द पाण्डेय वरिष्ठ अध्येतावृत्ति।

'स्पन्दन २०१२' में श्री अभिषेक महाराज को सितार वादन (एकल) में प्रथम पुरस्कार।

श्री चन्दन विश्वकर्मा को तबला वादन (एकल) में प्रथम पुरस्कार।

नृत्य विभाग

कु. श्वेता चौधरी को कनिष्ठ अध्येता वृत्ति प्राप्त।

मंच प्रदर्शन

पूर्वाचार्य स्मृति समारोह

बिहार दिवस

शारदोत्सव

संकटमोचन संगीत समारोह

युवा महोत्सव एवं स्पन्दन

राष्ट्रीय युवा महोत्सव में लोक नृत्य में तृतीय पुरस्कार

शास्त्रीय नृत्य एकल में प्रथम पुरस्कार

लोक नृत्य में प्रथम पुरस्कार

रचनात्मक नृत्य में द्वितीय पुरस्कार

नृत्य वर्ग में विजेता ट्राफी

सुर सिंगार, संसद मुम्बई द्वारा प्रदत्त शृंगार मणि उपाधि। विजेता- मिस किम जिन यांग कथक।

संगीत विभाग

चार विद्यार्थियों को जेआरएफ.अध्येतावृत्ति।

दो विद्यार्थी नेट उत्तीर्ण।

अंकिता गोस्वामी को शास्त्रीय गायन में युवा वर्ग कलाकार में संगीत नाटक अकादमी की ओर से प्रथम पुरस्कार।

अंकिता गोस्वामी को मानव संसाधन मंत्रालय की ओर से शास्त्रीय गायन में प्रथम पुरस्कार।

अंकिता गोस्वामी को अखिल भारतीय संगीत प्रतियोगिता, प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से प्रथम पुरस्कार।

'स्पन्दन २०१२' में नाट्य प्रतियोगिता में जयप्रकाश, सीमा, ज्योति, प्रतिभा, स्वाती, जयदेव को प्रथम पुरस्कार।

नाट्य प्रतियोगिता में जयप्रकाश, सीमा, ज्योति, प्रतिभा, स्वाती, जयदेव को भावानुकीर्तनम् संस्थान से प्रथम पुरस्कार।

कु. आस्था त्रिपाठी द्वारा मराठी फिल्म 'ध्यास एक नोवियोलाख' में पार्श्व गायन।

आस्था त्रिपाठी का जी टीवी सारेगामापा में चयन।

आस्था त्रिपाठी उत्तर प्रदेश की आइडिया प्राइड की विजेता।

शानिश ज्ञावाली, विदिशा हाजरा, शिवानी सोनकर, सुब्रोताराय चौधरी, अंकिता गोस्वामी द्वारा वाराणसी सहित भारत के विभिन्न भागों में मंच प्रदर्शन।

सुविधायें

दृश्य तथा श्रव्य प्रयोगशाला, छात्रावास सुविधायें, ग्रन्थालय, प्रेक्षागृह, साप्ताहिक सजीव कार्यक्रम, शोध छात्रों के लिए पाण्डुलिपियाँ, सोदाहरण व्याख्यान आदि।

'करेन्ट ट्रेन्ड्स इन म्यूजिक थेरापी प्रैक्टीसेसः मैथोडोलॉजी, टेक्नीक्स एण्ड इम्प्लीमेन्टेशन' विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार के दौरान मुख्य अतिथि सुश्री लुकेन मॅगिल एवं पद्मश्री डा. लालजी सिंह, कुलपति, का.हि.वि.वि.

२.१.२.७. विज्ञान संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के महान संस्थापक पं० मदन मोहन मालवीय जी ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शिक्षण तथा अनुसंधान पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया। उनकी इच्छा थी कि स्नातक, स्नातकोत्तर तथा अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए एक छात्र को सीखने के लिए अनुकूलतम वातावरण तैयार किया जाय। यहाँ पर वैज्ञानिक चेतना एवं सोच को प्रेरित करने और बढ़ावा देने के लिए बुनियादी सुविधाओं से युक्त प्रचुर पुस्तकों से परिपूर्ण समृद्ध अनेक पुस्तकालय, अनेक विज्ञान संग्रहालय, वानस्पतिक उद्यान और जैव विविधता से परिपूर्ण पर्याप्त खुला जीवंत स्थान उपलब्ध हैं।

आज विज्ञान संकाय को इस तथ्य पर गर्व का अनुभव हो रहा है कि वह अपने पुरातन छात्रों, पूर्व शिक्षकों और भारतीय विज्ञान के लब्धप्रतिष्ठ वैज्ञानिकों जैसे प्रो० आर०के० असुंधि, एस०एस० भटनागर, एम०एस० कानूनगो, ए०बी० मिश्रा, गणेश प्रसाद, एस०एस० जोशी, सी०एन०आर० राव, यू०आर० राव, जे०वी० नार्लिकर, के०के० माथुर, राजनाथ, जी०बी० सिंह, आर० मिश्रा, एस०पी०रे० चौधरी, लालजी सिंह, ए०आर० वर्मा, आर०एस० मिश्रा, एच०एस० राठौर, एच०एल० छिब्बर, आर०एल० सिंह, एस०एल० कायस्था, वी०के० गौर, एम०एस० श्रीनिवासन और अन्य अनेक भारतीय विज्ञान शिक्षाविदों से मार्गदर्शन प्राप्त कर शिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में सतत् उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है। विज्ञान संकाय के शिक्षकों ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में विकास का प्रयास करते हुए विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षण एवं अनुसंधान में सदैव उत्कृष्टता एवं नवाचार हेतु कटिबद्ध हैं। संकाय अपने छात्रों को विश्व वैज्ञानिक समुदाय के रूप में मुकाबला करने हेतु वचनबद्ध है। छात्रों को उनके परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओ के मूल्यांकन पद्धति को देखने की अनुमति द्वारा पारदर्शिता बरती जा रही है वहीं दूसरी तरफ छात्रों द्वारा उनके शिक्षकों के बारे में वार्षिक विचार प्राप्त कर शिक्षण गुणवत्ता में सुधार किया जा रहा है।

संकाय के सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से लिया जाता है। यहाँ पर अध्यापन पूर्ण रूप से सेमेस्टर आधारित है। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर पाठ्यक्रम की विषय वस्तुओं को नियमित रूप से पुनरीक्षित किया जाता है। पाठ्यक्रमों के लिए क्रेडिट प्रणाली और मूल्यांकन के ग्रेड प्वाइंट प्रणाली से संकाय के अद्यतन पहचान है जिससे निष्पक्षता और पारदर्शिता को बढ़ावा मिला है। स्नातक स्तर पर अर्न्तसंकायी आनुसंज्ञि पाठ्यक्रमों और स्नातक स्तर पर लघु ऐच्छिक पाठ्यक्रमों ने विज्ञान छात्रों के लिए अन्तर्विषयी मौलिक ज्ञान को विस्तार और व्यापक दृष्टिकोण को मजबूती प्रदान की है। स्नातक स्तर के अन्तिम सेमेस्टर के पाठ्यक्रम में क्षेत्र कार्य/परियोजना कार्य/ऐच्छिक प्रश्नपत्र का प्रावधान शामिल हैं, जबकि स्नातकोत्तर स्तर पर स्वतंत्र लघु–शोध प्रबंध/शोध

प्रबंध अनिवार्य किया गया है। कुछ विभागों में स्नातकोत्तर छात्रों को प्रतिष्ठित संस्थाओं एवं औद्योगिक घरानों में प्रशिक्षण हेतु भेजा जाता हैं। अर्न्तसंकायी और अन्तर्विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रमों का क्रियान्वयन और क्रेडिटों का हस्तांतरण भी विकास की प्रक्रिया में है। इसके साथ ही पुनरीक्षित पीएच. डी. के माध्यम से सत्र २००९-१० से पीएच. डी. पाठ्यक्रम कार्य प्रारम्भ किया गया है। यहाँ पर कैम्पस साक्षात्कार के माध्यम से छात्रों को रोजगार के अवसर भी तेजी से प्राप्त हो रहे हैं।

संकाय में १३ विभाग, २ स्कूल और ६ अन्तर्विषयी केन्द्र हैं जो संकायाध्यक्ष कार्यालय द्वारा नियंत्रित और समन्वित होते हैं। संकाय में ८ विभागों में से ५ उच्चानुशीलन केन्द्र हैं जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विशेष अनुदान कार्यक्रम के अन्तर्गत सहायता प्राप्त कर रहे हैं जबकि तीन डी०एस०ए०/डी०आर०एस० स्तर पर सहायता प्राप्त कर रहे हैं, जो यहाँ के शिक्षण और अनुसंधान की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। एक तरफ संकाय के ५ विभाग हैं, जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से कोसिस्ट सहायता प्राप्त कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ ११ विभागों/स्कूलों को डी०एस०टी० से फिस्ट कार्यक्रम के अन्तर्गत सहायता प्राप्त हो रही है। इनमें से ३ विभाग द्वितीय चरण में कार्य कर रहे हैं। अभी डी एसटी पीयूआरएसई कार्यक्रम से सहायता प्राप्त कर रहे हैं। डी०बी०टी०, भारत सरकार द्वारा जैव प्रौद्योगिकी स्कूल, आण्विक एवं मानव अनुवांशिकी एवं अन्तर्विषयी जीव विज्ञान स्कूल को सहायता प्राप्त है।

विज्ञान संकाय के शिक्षकों का अनुसंधान के क्षेत्र में योगदान को विगत दिनों देश में पाँच शीर्ष स्थानों के अन्तर्गत रखा गया है। वर्तमान प्रतिवेदन वर्ष के अन्तर्गत संकाय के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों द्वारा ५७३ स्नातकोत्तर उपाधि, ११४ शोध–छात्रों को पी०एचडी० उपाधि प्रदान कराने में योगदान के साथ-साथ ९४८ शोध–पत्र प्रकाशित किये हैं और लगभग रु०१२.२ करोड़ की धनराशि अनुसंधान राशि के रूप में प्राप्त किये हैं। यहाँ के शिक्षकों द्वारा अनेक विशिष्ट सम्मान के साथ-साथ विभिन्न विज्ञान अकादमियों के तीन पुरस्कार तथा एक सी.एन.आर .राव पुरस्कार प्राप्त किए है

संकाय में सम्पन्न उत्कृष्ट अनुसंधान कार्यों के परिणामस्वरूप विगत वर्षों में नैनोसाइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अन्तर्विषयी गणितीय विज्ञान, जेनेटिक डिस्ऑडर्स और ब्रेन रिसर्च जैसे शोध केन्द्रों की स्थापना की गई। डी०बी०टी०–बी०एच०यू० अन्तर्विषयी जीवन विज्ञान स्कूल को जैव–प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा जबकि भौतिकी विभाग में अन्तरिक्ष विज्ञान में अनुसंधान एवं शिक्षण के विकास के लिए इसरो द्वारा सहायता प्रदान की गयी।

जैव रसायन विज्ञान विभाग

जैव रसायन विज्ञान विभाग की स्थापना विज्ञान संकाय के अन्तर्गत एक स्वतंत्र विभाग के रूप में जनवरी १९८४ में की गयी। विभाग में जैव रसायन के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षण एवं अनुसंधान की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राथमिक आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध हैं। विभाग में एम०एससी० (जैव रसायन) उपाधि प्रदान करने वाला दो वर्षीय (४ सेमेस्टर) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है। इस पाठ्यक्रम में प्रत्येक सत्र में २५ छात्रों का प्रवेश लिया जाता है।

वर्तमान अनुसंधान गतिविधियों के अन्तर्गत जैव रसायन में पीएच. डी. उपाधि प्रदान करने वाले जैवरसायन के विविध क्षेत्रों के साथ इन्ज़ाइमोलॉजी एवं इन्ज़ाइम तकनीकि, स्ट्रेस मेटाबॉलिज़्म इन प्लान्टस, क्लीनिकल जैव रसायन, इन्फेक्शियस डिजीज़ेज़ और पैरासाइटिक इम्यूनोलॉजी और पादप जैव रसायन आदि सम्मिलित हैं।

जैव प्रौद्योगिकी स्कूल

जैव प्रौद्योगिकी स्कूल की स्थापना, सन् १९८६ में भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के वित्तीय सहयोग से की गयी। स्कूल जैव प्रौद्योगिकी में एम०एससी० एवं पीएच०डी० कार्यक्रम संचालित करता है। इसकी प्रारम्भिक अवस्था में शिक्षण कार्य में भागीदारी करने वाले विश्वविद्यालय के अन्य विभागों प्रौद्योगिकी संस्थान, बी०एच०यू० का रसायनिक अभियांत्रिकी विभाग के साथ–साथ विज्ञान संकाय के वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, जैव रसायन विज्ञान, रसायन विज्ञान और सांख्यकी विभागों के नाम पर शामिल है। कुछ संकाय अन्य पाठ्यक्रम/विभागों में जैसे आणविक एवं मानव अनुवांशिकी एवं इण्डस्ट्रियल माइक्रोबायोलॉजी वनस्पति विभाग अध्यापन कार्य संचालित करते हैं। स्कूल भी विभिन्न विभागों के एम०एससी० और पी०एचडी० के छात्रों के लिये निरन्तर प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करता है।

विभाग के शिक्षकगण मैक्रोफज़ेज़ का कोशिकीय एवं आणविक इम्यूनोलॉज़ी, कैंसर एण्ड इन्फ्लेमेटरी डिजीज़ेज़ का इम्यूनोथिरेपी, इन्फेक्सियस डिजीज़ेज़ का माइक्रोबायोलॉजी, इंज़ाइम आधारित डाइग्नोस्टिक एण्ड स्ट्रक्चर फंक्शन सम्बन्ध, जीन टैपिंग में आण्विक चिन्हक का प्रयोग, जर्मप्लाज़्म संरक्षण एवं उत्पादन तथा बैक्टीरियल जीन रेगुलेशन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों के अनुसंधान कार्य में संलग्न हैं। प्रो० ए०एम० कायस्थ को इस वर्ष विज्ञानी अनुंसंधान में उत्कृष्ठता के लिये प्रो० सी०एन०आर० राव पुरस्कार प्राप्त हुआ।

वनस्पति विज्ञान विभाग

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में वनस्पति विज्ञान पाठ्यक्रम के अन्तर्गत स्नातकोत्तर शिक्षण की शुरुआत सन् १९१९ में प्रसिद्ध वनस्पतिविद् प्रो० बीरबल साहनी, फेलो ऑफ रॉयल सोसाइटी, प्रो० वाई० भारद्वाज (१९३३–१९५५), प्रो० आर० मिश्रा (१९५५–१९७१) और प्रो० आर० एन० सिंह (१९७१–१९७६) के नेतृत्व में सफलतापूर्वक विभाग का संचालन किया गया और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शैवाल विज्ञान एवं परिस्थितिकी विज्ञान स्कूलों को स्थापित किया । अपने उद्भवकाल से ही यह विभाग देश में पादप विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षण एवं अनुसंधान में बहुत ही उच्च स्तर बनाये हुए है। यहाँ इस बात का उल्लेख करते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि सन् १९२७ मे डॉ.बी.एन.सिंह पर एक डी.एससी.की उपाधि प्रदान की गयी। विभाग की लगभग आधी सदी से अधिक समय तक की यात्रा में उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं उपलब्धियों के सम्मान में

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने सन् १९७२ में विभाग को विशेष अनुदान (डीएसए), सन् १९८० में तीन प्रमुख प्राथमिकता क्षेत्रों के साथ उच्चानुशीलन केन्द्र (सीएएस) और सन् १९८४ में कोसिस्ट कार्यक्रम के अन्तर्गत सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स के रूप में मान्यता प्रदान की। विभाग में शिक्षण एवं अनुसंधान की सुविधा के लिए एक केन्द्रीय उपकरण प्रयोगशाला है जिसमें बड़ी संख्या में उत्कृष्ट प्रकार के उपकरण उपलब्ध हैं। इसके साथ ही यहाँ पर कम्प्यूटर प्रयोगशाला, १००३४ पुस्तकों से समृद्ध पुस्तकालय और विशाल वानस्पतिक उद्यान है। वर्तमान में यहाँ के शिक्षकों द्वारा नीलहरित शैवाल एवं पौधों में तनाव प्रतिरोध, सूक्ष्मजीवों एवं वनस्पतियों में जैव प्रौद्योगिकीय क्षमता, जैव विविधता का आकलन और पर्यावरण संरक्षण तथा वनस्पतियों एवं सूक्ष्म जीवों का तनाव प्रतिरोध का पर्यावरणीय प्रभाव के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य किये जा रहे हैं। विभाग के शिक्षकों ने अपने उच्च स्तरीय अनुसंधान के लिए अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान के साथ–साथ बड़ी मात्रा में आर्थिक अनुदान भी प्राप्त किये हैं। विभाग में स्नातकोत्तर स्तर पर अप्लाइड माक्रोबायोलॉजी और इन्वायरमेन्टल साइंस के दो विशेष कोर्स चल रहे हैं।

रसायन शास्त्र विभाग

रसायन शास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही स्थापित उन कुछ विभागों में से एक है जिसे सन् १९१६ में स्थापित किया गया था। उसके बाद से यह विभाग प्रो० एस०एस० भटनागर, प्रो० बाबा करतार सिंह, प्रो० एस०एस० जोशी, पद्मश्री प्रो० गुरुबक्श सिंह, प्रो० बी०एम० शुक्ला एवं अन्य प्रतिष्ठित शिक्षाविदों के सुयोग्य निर्देशन में निरन्तर विकसित होता रहा। प्रो० सी०एन०आर० राव, प्रो० वी० कृष्णन, डॉ० जे०एस० यादव, प्रो० डी० वसवइयाह, डॉ० गणेश पाण्डेय, डॉ० पी० नटराजन् जैसे आज के विख्यात रसायनविद् इस विभाग के पुरातन् छात्र हैं।

विभाग के शिक्षकगण विभिन्न अनुसंधान क्षेत्रों जैसे स्ट्रक्चरल केमेस्ट्री, फंशनल मैटीरियल्स – इलेक्ट्रोकैटेलिसिस, पॉलीमर्स, मैगनेटिक मैटीरियल्स, सेन्सर्स एण्ड बायोसेन्सर्स, लिक्विड क्राइस्टल्स, सोलर सेल मैटेरियल्स, ऑरगेनोमेटेलिक्स और मॉलिक्यूल्स ऑफ बायोरेलिवेंस, थियोरेटिकल केमिस्ट्री, रिएक्शन डायनेमिक फोटोकेमिस्ट्री और स्पेक्ट्रोस्कोपी, प्लाज़्मा इलेक्ट्रोकेमेस्ट्री, बायोआरगेनिक और नेचुरल प्रोडक्ट्स, केमेस्ट्री और सुप्रामॉलिक्यूलर केमिस्ट्री में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

इस विभाग ने पिछले दिनों डीएसटी–फिस्ट सहायता प्राप्त किया है और यहाँ अनुसंधान की प्राथमिकता क्षेत्र के रूप में विभाग को ''संरचनात्मक रसायन शास्त्र और क्रियात्मक वस्तुओं'' के साथ यूजीसी–सीएएस के रूप में उच्चीकृत भी किया गया है जिसके लिए रु० १.५ करोड़ का अनुदान भी प्राप्त हुआ है।

इस विभाग में आधुनिक अनुसंधान के लिए रसायन उपकरण सेवा केन्द्र जो सभी प्रकार के विशिष्ट उपकरणों से पूर्णतया सुसज्जित है। उपकरणों में ३०० एमएचजेड एनएमआर, सिंगल क्रिस्टल एक्सआरडी, एफटी–आइआर, एचपीएलसी, स्टीडी–इस्टेट स्पक्ट्रोफ्लोरोमीटर, इलेक्ट्रोकेमिकल इंडिपेंडेंस सिस्टम, डीएससी, टीजीए-डीटीए, सीएचएन एनालाइजर, चौबीसो घंटे लैन सुविधा से युक्त कंप्यूटर प्रयोगलशाला इत्यादि। फिस्ट/कैश के अंतर्गत प्राप्त अनुदान के द्वारा कुछ अन्य उपकरण जैसे मोडेल स्पेक्ट्रोफ्लोरोमीटर, कन्ट्रोल्ड, माइक्रोवेव ओवेन, इलेक्ट्रोकेमिकल सिस्टम का आधुनिक मोडेल, एएफएम, और हाई लेवल कम्प्यूटिंग सिस्टम शीघ्र ही आने वाले हैं। ये सभी केमिस्ट्री इन्स्ट्रूमेंटेशन सर्विस सेंटर (सीआईएससी) के भाग हैं जिसे अन्य विभागों/संस्थानों के अनुसंधानकर्ताओं द्वारा नाममात्र के शुल्क भुगतान पर सुविधाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। विभाग द्वारा बी०एससी० (ऑनर्स), एम०एससी० (विश्लेषणात्मक, अकार्बनिक, कार्बनिक और भौतिक रसायन शास्त्र में विशेषज्ञता के साथ) और पीएच०डी० उपाधि के पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं तथा एमएससी. पाठ्यक्रम में चतुर्थ सेमेस्टर स्तर पर लागू किया गया है। ग्रीष्म ऋतु में एमएससी. के छात्रों के लिए प्रतिवर्ष देश के प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों में नियमित रूप से व्यावहारिक प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता है।

संगणक विज्ञान विभाग

संगणक विज्ञान विभाग की स्थापना सन् १९८७ में हुई। विभाग द्वारा संगणक विज्ञान में बी०एससी० (आनर्स), में एम०एससी० और पीएच०डी० कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं। यद्यपि विभाग में सीमित संख्या में शिक्षक हैं परन्तु संगणक विज्ञान के स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों के पाठ्यक्रम को विश्वविद्यालय के अन्य विभागों के विशेषज्ञ सदस्यों के सहयोग से पूरा किया जाता है। विश्वविद्यालय संगणक केन्द्र के साथ मिलकर यह विभाग ६ सेमेस्टरों का एक एम०सी०ए० पाठ्यक्रम भी संचालित करता है। यहाँ के छात्रों को भारत और विदेशों की प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय साफ्टवेयर कंपनियों में नियुक्ति मिलना सुनिश्चित है। यहाँ पर किये जाने वाले वर्तमान अनुसंधान क्षेत्रों में पैरेलल प्रॉसेसिंग, हाई परफॉरमेंस कंप्यूटिंग, न्यूरल नेटवर्क्स, जेनेटिक एलगोरिद्म्स, साफ्टवेयर इंजीनियरिंग और सीमूलेशन मॉडलिंग प्रमुख हैं।

भूगर्भ विज्ञान विभाग

भूगर्भ विज्ञान में शिक्षण कार्य काशी हिन्दू विश्वद्यालय की स्थापना के प्रारम्भिक चरण के साथ ही भूगर्भ, खनन एवं धातुकीय विज्ञान के एकीकृत विभाग के रूप में सन् १९१९ में प्रारंभ की गई। सन् १९२१ में भूगर्भ शास्त्र को एक स्वतंत्र विभाग का दर्जा प्राप्त हुआ। वर्तमान में यहाँ ३५ शिक्षक पदों के समूह के साथ यह देश भर के भूगर्भ शास्त्र में शिक्षण एवं अनुसंधान के उत्तम केन्द्र के रूप में सबसे बड़ा, विविधतायुक्त एवं पुराना विभाग है। यह विभाग भूगर्भ विज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे कोल जियोलॉजी, इकोनॉमिक जियोलॉजी, जियोकेमिस्ट्री, जियोहाइड्रोलॉजी, इग्नियस पेट्रोलॉजी, इनवर्टिब्रेट पैलियोंटोलॉजी, मेटामार्फिक पेट्रोलॉजी, माइक्रोपैलियेंटोलॉजी और ओसेनोग्राफी, मेरीन जियोलॉजी, रिमोट सेंसिंग और जीआईएस,

११ फरवरी, २०१२ को एस.एन.बोस हॉल, भौतिकी विभाग में 'ग्रुप्स एज़ यूनिफाइंग ऑबजेक्ट्स' विषय पर बोलते हुए प्रो. दिपेन्द्र प्रसाद, डीन स्कूल ऑफ मैथेमेटिक्स, टी.आई.एफ.आर., मुम्बई

२०.०३.२०१२ को लेक्चर हॉल, डीएसटी-सीआईएमएस विज्ञान संकाय में 'यूज़ेज एण्ड मिसयूज़ेज ऑफ स्टैटिस्टिक्स' पर बोलते हुए डॉ. के. सी. चक्रवती, डिप्टी गर्वनर, रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया

प्राणी विज्ञान विभाग में कान्फोकल माइक्रोस्कोप सुविधा

प्राणी विज्ञान विभाग में ड्रोसोफिला लैब

आईएसएलएस पर लाइव इमेज़िंग सुविधा

आईएसएलएस पर प्रोटियोमिक्स सुविधा

सेडिमेंटोलॉजी, स्ट्रेटोग्राफी, स्ट्रक्चरल जियोलॉजी और टेक्टानिक्स, इत्यादि के क्षेत्रों के अनुसंधान में सक्रिय रूप से संलग्न है।

विभाग को यूजीसी–सैप फेज ३ के सफलतापूर्वक पूर्ण होने के साथ ही यूजीसी द्वारा उच्चीकृत कर सेंटर फॉर एडवांस्ड स्टडी का दर्जा प्रदान किया गया। इसके साथ ही डीएसटी–फीस्ट लेवल वन के अन्तर्गत आधारभूत उपकरणों के संतोषजनक सुदृढ़ता के उपरान्त विभाग ने डीएसटी–फीस्ट लेवल टू सहायता अनुदान (२००९-१४) में प्रवेश किया। विभाग द्वारा भूगर्भ विज्ञान मे त्रिवर्षीय एमएससी.(टेक.) कार्यक्रम के साथ-साथ पेट्रोलियम जीओसाइंस मे द्विवर्षीय एमएससी. पाठ्यक्रम विशेष रूप से संचालित किये जाते हैं। वर्तमान सत्र से महिला महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर तीन विषयों में से एक के रूप में भूगर्भ विज्ञान में शिक्षण प्रारम्भ कर दी गयी है। विगत वर्षों में भी २०११-१२ के अन्तर्गत विविध विकासकारी गतिविधियाँ सम्पन्न हुईं, जिसमें उपकरणों का क्रय के साथ–साथ, व्याख्यान कक्षों सभागारों एवं प्रयोगशालाओं का नवीनीकरण शामिल है। अनेक शिक्षकों ने अपने विशिष्ट योगदान के लिए व्यक्तिगत पुरस्कार, सम्मान, छात्रवृत्तियाँ और अन्य विशिष्ट सम्मान प्राप्त किए हैं। परिसर साक्षात्कार के माध्यम से स्नातकोत्तर छात्रों के ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण और रोजगार के लिए चयन में लगातार अंकित की गयी है।

भूगोल विभाग

भूगोल विभाग की स्थापना सन् १९४६ में एक पूर्णरूपेण स्वतंत्र विभाग के रूप में की गई। इसका विकास प्रो० एच०एल० छिब्बर, प्रो० आर०एल० सिंह एवं प्रो० एस०एल० कायस्थ के कुशल निर्देशन में नियमित एवं त्वरित गति प्राप्त करता रहा। यहाँ पर भूमि उपयोग और नगरीय स्थापन भूगोल पर केन्द्रित विशेष अनुसंधान किए जाते हैं। विभाग द्वारा अन्तर्विषयी भौगोलिक थिमस पर पूर्णतया केन्द्रित अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सम्मेलनो को सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। पिछले दिनों यूजीसी द्वारा डीआरएस सहयोग के विशेष अनुदान कार्यक्रम के अन्तर्गत विभाग को मान्यता प्रदान की गई। विभाग के शिक्षकों ने व्यक्तिगत स्तर पर शोध पत्र, पाठ्य पुस्तकों और मोनोग्राफ प्रकाशनों के माध्यम से भारतीय एवं राष्ट्रीय भौगोलिक परिदृश्य पर भूगोल शिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान किये हैं। वर्तमान में विभाग में ५ पूर्णरूप से स्थापित प्रयोगशालाएँ यथा : सर्वेक्षण, पर्यावरण, कार्टोग्राफी, जीआईएस और कंप्यूटर के क्षेत्रों में पूर्ण सुसज्जित विशिष्ट उपकरण और अन्य सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

विभाग द्वारा भूगोल में बी.ए./बीएससी, एमए/एमएससी. और पीएचडी. पाठ्यक्रम आयोजित किये जाते है। इसके साथ ही विभाग में विशेष व्यावसायिक पाठ्यक्रम के रुप में रिमोट सेंसिंग और जी आई एस मे एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी संचालित किये गये हैं। विभाग का मुख्य प्राथमिकता क्षेत्र के अन्तर्गत रिमोट सेंसिंग और जी आई एस में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी संचालित किये गये हैं विभाग का मुख्य प्राथमिकता क्षेत्र के अन्तर्गत रिमोट सेंसिंग और जीआईएस के माध्यम से संसाधन सर्वेक्षण तथा पर्यावरणीय विशेषण और जनसंख्या स्थापन तथा जनसंख्या अध्ययन है।

भू–भौतिकी विभाग

भू–भौतिकी विभाग की स्थापना सन् १९४९ में हुई जो भारत के भू–भौतिकी विभागों में स्नातकोत्तर शिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में सबसे पुराने और आरंभिक विभागों में से एक है। विभाग में तीन वर्षीय एम०एससी० (टेक्) भू–भौतिकी कार्यक्रम दो प्रमुख विशेषज्ञताओं – एक्सप्लोरेशन जियोफिजिक्स और मेटिरियोलॉजी के साथ और पीएचडी. कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं। भारत सरकार के मौसम विभाग और केन्द्रीय भूजल बोर्ड के साथ मिलकर विभाग मौसम सर्वेक्षण, सेस्मोलॉजिकल सर्वेक्षण और ओजोन इकाई के महत्वपूर्ण प्राथमिक आँकड़ा भण्डार को एकत्र करने के लिए परिसर में स्थापित किया गया है। विभाग में इस समय अनेक पूर्ण सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं और यहाँ (१) जियोइलेक्ट्रोमैगनेटिक्स एण्ड मैगनेटोट्यूरिक्स (२) ग्राउण्ड वॉटर जियोफिज़िक्स, वॉटर रिसोर्सेस, (३) नॉन लीनियर डाइनेमिक्स, फ्रैक्टल डाइनेमिक्स जैसे लगभग दस प्राथमिकता क्षेत्रों में अनुसंधान किया जाता है। ग्रीष्मकालीन अवकाश की अवधि मे एम. एससी.(टेक) के छात्रों के लिए नियमित रुप से देश के प्रतिष्ठित तेल उद्योग एवं अनुसंधान संस्थानों में ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। विभाग को डीएसटी और पर्स कार्यक्रमों के माध्यम से उपकरण खरीदने के लिए सहायता प्राप्त हुई और उपकरण प्राप्त कर लिया गया है। इस सत्र में एक नवीन 'जीयोफिज़िकल डाटा प्रोसेसिंग प्रयोगशाला' प्रारम्भ किया गया है। विभाग द्वारा पब्लिक एवं प्राइवेट उद्योगों को परामर्शी सेवाएँ भी प्रदान की जाती हैं। विगत वर्षों में यहाँ के छात्रों को परिसर साक्षात्कार के माध्यम से रोजगार भी प्राप्त हुए हैं।

गृह विज्ञान विभाग

गृह विज्ञान विभाग की शुरुआत घरेलू विज्ञान के रूप में पंडित मदन मोहन मालवीय जी के द्वारा महिला महाविद्यालय की सन् १९२७ में स्थापना के साथ ही की गयी। पहले यह एक अनुभाग के रूप में शुरू हुआ बाद में विज्ञान संकाय, बीएचयू. के अन्तर्गत सन् १९८४ में महिला महाविद्यालय में एक विभाग बना।

सत्र २०११-१२ में विभाग की प्राध्यापिकाओं एवं शोध छात्राओं का शोध प्रपत्र एवं लेख, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ तथा सम्मेलन एवं संगोष्ठी में भाग भी लिये। १० छात्राओं ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित 'नेट' की परीक्षा पास की है; विभाग की ६ शोध छात्राओं ने जेआरएफ छात्रवृत्ति प्राप्त की; ५ छात्राओं को पीएच. डी. की उपाधि प्रदान की गई; २ स्नातकोत्तर छात्राओं को मंडी परिषद् द्वारा छात्रवृत्ति के लिये चयनित किया गया और एक अल्पसंख्यक शोध छात्रा को मौलाना आजाद राष्ट्रीय फेलोशिप प्राप्त हुई है।

गृह विज्ञान विभाग के स्नातकोत्तर कक्षाओं में सेमेस्टर पद्धति से खाद्य पोषण, विस्तार एवं संचार और वस्त्र विज्ञान एवं परिधान विषयों का अध्ययन सफलतापूर्वक संचालित है। एम.ए. / एमएससी. प्रथम सेमेस्टर की छात्राओं ने एक शैक्षणिक भ्रमण के अन्तर्गत ''सुरभि संस्थान'' गैर शासकीय संगठन मिर्जापुर का भ्रमण किया। इस सत्र

स्नातक एवं स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर के छात्रों को विभिन्न संबंधित विषयों में प्रशिक्षण सह-इन्टर्नशीप के लिये भेजा गया। विश्वविद्यालय के विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में छात्राओं ने भाग लिया।

पाठ्यक्रम के भाग के रूप में विभाग की स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर के छात्राओं को इन्टर्नशिप निम्नलिखित जगहों से कराई गयी: नेशनल इन्सटिट्यूट ऑफ पब्लिक कारपोरेशन एण्ड चाइल्स डेवलेपमेन्ट, लखनऊ; उद्यमिता विकास संस्थान यू.पी., कानपुर रोड, लखनऊ; दूरदर्शन केन्द्र, वाराणसी एवं लखनऊ; डेयरी रामनगर, वाराणसी; भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी; खाद्य संरक्षण केन्द्र, वाराणसी; विभिन्न समाचार पत्रों जैसे टाइम्स ऑफ इण्डिया, हिन्दुस्तान, आज और अमर उजाला से भी करया गया।

अन्तर्विषयी जीव विज्ञान स्कूल (आई०एस०एल०एस०)

विज्ञान संकाय में एक अन्तर्विषयी जीव विज्ञान स्कूल (आई एस एल एस) की स्थापना की गई है। जैव-प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा पाँच वर्षों के लिए रुपये २३.८९ करोड़ की सहायतित धनराशि के साथ यह स्कूल जीव-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में उच्च स्तरीय अर्न्तसंक्रिय, अन्तर्विषयी अनुसंधान कार्य के प्रति कटिबद्ध है। अनुसंधान कार्य हेतु निम्नलिखित प्राथमिकी क्षेत्र चिन्हित किये गये हैं : संरक्षण जीव विज्ञान, व्याधि जीव विज्ञान, फंक्शनल जीनोटिक्स, सूक्ष्म-जैविकीय पारिस्थितिकी, न्यूरो बायलॉजी, प्रजनन जीव विज्ञान और प्रतिबल जीव विज्ञान।

उपरोक्त वर्णित धनराशि को स्कूल के आधारभूत संरचना (निर्माण भवन एवं उपकरण), विशेषज्ञ क्षेत्रों में नये शिक्षकों कर्मचारियों की नियुक्ति, प्रारंभिक अन्तर्विषयी अनुसंधान और जीव-विज्ञान में नवीन शिक्षण (एम.एससी.और पी.एचडी.) कार्यक्रम को प्रारंभ करने के लिए किया जाएगा। प्रायोगिक कार्य को गति प्रदान करने के लिए प्रोटियोमिक फैसिलिटीज़, माइक्रो-एरै, एफएसीएस, आईसीपी स्पैक्ट्रोमीटर, अल्ट्रा-सेन्ट्रीफ्यूज़, रियल टाइम पीसी आर, एच.पी.एल.सी., एफ़पीएलसी, फास्फर इमेंजर, लाइव इमेज़िंग सिस्टम्स इत्यादि जैसे अति विशिष्ट संयंत्र प्राप्त किये गये हैं। इसके साथ ही जैव प्रौद्योगिकी स्कूल के समीप ही एक नये भवन का निर्माण किया जा रहा है। अतिविशिष्ट तकनीकियों में प्रशिक्षण कार्यशाल का आयोजन किया जा रहा है और जीव-विज्ञान विभागों के शिक्षण सदस्यों के साथ सक्रिय सहयोग को बढ़ाने का प्रयास चल रहा है। डीबीटी से सहयोग के पूर्ण होने के उपरान्त आई एस एल एस का पूरा दायित्व निर्वहन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा किया जायेगा।

गणित विभाग

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की गणित विभाग की स्थापना वर्ष सन् १९१६ से काफी पहले ही सन् १८९८ में कमच्छा स्थित सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज के एक भाग के रूप में हुई। तत्पश्चात् सन् १९१७ में यह गणित विभाग सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज के साथ ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्थानांतरित हो गया। विभाग को अपने लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों जैसे प्रो० वी०वी० नार्लिकर, प्रो० गणेश प्रसाद, प्रो० आर० वैद्यनाथ स्वामी और प्रो० आर० मिश्रा को यहाँ पर शिक्षक के रूप में होने का गर्व है। विभाग के शिक्षकों ने अपने उच्च स्तरीय अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मान के साथ साथ आर्थिक अनुदान भी प्राप्त किए। विभाग ने फंक्शनल एनालीसिस, जियोमेट्री, रिलेटिवीटी, मैथेमेटिकल प्रोग्रामिंग, टोपोग्राफी, फ्लूइड मेकेनिक्स और फ़ज़ी मैथेमेटिक्स के क्षेत्रों में उल्लेखनीय अनुसंधान कार्य किए। विभाग ने विज्ञान संकाय में अन्तर्विषयी गणितीय विज्ञान केन्द्र- डीएसटी के आविष्कार में मुख्य भूमिका निभाया और निरन्तर इसकी गतिविधियों में एक निर्णायक की भूमिका में है।

आण्विक एवं मानव आनुवंशिकी विभाग

यह संकाय का सबसे नया विभाग है जिसकी स्थापना अगस्त २००४ में हुई। प्रो० एस०पी०रे० चौधरी ने सन् १९६० में जन्तु विज्ञान विभाग में आनुवांशिकी एवं कोशानुवांशिकी का एक सशक्त दल स्थापित किया जो आगामी वर्षों से निरंतर एक सशक्त एवं विविधितापूर्ण शिक्षण प्रदान करता आ रहा है। सन् १९९९ में विज्ञान संकाय के अन्तर्गत विभिन्न विभागों के अनेक शिक्षकों एवं चिकित्सा विज्ञान संस्थान के सहयोग से इस विभाग में विशेष पाठ्यक्रम के रूप में आण्विक एवं मानव आनुवांशिकी पर दो वर्षीय एम०एससी० पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है। अपने उद्भवकाल से ही एम.एससी. कार्यक्रम अपनी गुणवत्ता और विस्तृत प्रशिक्षण मे अद्वितीय रहा है। इसके परिणामस्वरूप इस विभाग ने बहुत ही कम समय में ही सम्पूर्ण देश में काफी ख्याति प्राप्त कर ली है। विभाग में पी.एचडी.कार्यक्रम भी संचालित किया जाता है।

यह विभाग कैंसर जेनेटिक्स, सिग्नल ट्रान्सडक्शन, इम्यूनोजिनेटिक्स, रिप्रोडक्टिव जेनेटिक्स और न्यूरोडीजेनेरेशन जैसे चुनौतीपूर्ण अग्रणी अनुसंधान क्षेत्रों में शोध कार्यक्रम विकसित कर रहा है।

भौतिकी विभाग

भौतिकी विभाग का ९ दशकों का इतिहास काफी प्रशंसनीय रहा है और यह विज्ञान संकाय के अंर्तगत प्रारंभ में स्थापित विभागों में से एक है। यह विभाग सैद्धान्तिक भौतिकी के साथ–साथ प्रायोगिक भौतिकी के क्षेत्र में हमारे अनेक उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय योगदान के लिए चिन्हित किया गया है। सैद्धांतिक और प्रायोगिक अनुसंधान गतिविधियों के समूह में नैनो साइन्स एवं नैनो टेक्नोलॉजी, हाइड्रोजन स्टोरेज मैटेरियल्स, मल्टीफेरोइक एण्ड स्पिन्ट्रानिक्स, फिलिक्स ऑफ क्वार्क ग्लूकॉन प्लाज़्मा, डीएनए डीनेचूरेशन, पॉलीमर्स एवं प्रोटीन फोल्डिंग, गाज़थ्योरी, फील्डथियोरी लेज़र स्पेक्ट्रोस्कोपी ऑफ ग्लासेज़ एण्ड अदर मैटेरियल्स अन्ट्रासोनिक, एटॉमिक एण्ड मालीक्यूलर फिज़िक्स, सेन्सर, आईआर एण्ड रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी, एटामॉस्फियरिक रिसर्च, एमार्फसमेटेरियल्स, स्ट्रक्चर एण्ड स्पेक्ट्रा ऑफ बायोमॉलिक्यूल्स, ऑप्टिकल फाइबर जैसे अनेक नवेद्भिद अनुसंधान क्षेत्रों पर प्रमुख रुप से केन्द्रित हैं। यह विभाग दो अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं में भी सक्रिय सहभागिता निभा रहा है। भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय हाइड्रोजन

उर्जा केन्द्र, नैनो साइन्स एण्ड टेक्नोलॉजी इकाई और यूजीसी नेटवर्किंग के लिए मुख्य विभाग है। इसरो ने पिछले दिनों अंतरिक्ष भौतिकी के क्षेत्र में अनुसंधान एवं शिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ करने के लिए इसे आर्थिक सहायता प्रदान की है।

सांख्यिकी विभाग

सांख्यिकी में स्नातक स्तर और डिप्लोमा पाठ्यक्रम के रूप में शिक्षण का कार्य सन् १९५० में प्रारंभ किया गया। जो गणित विभाग के अन्तर्गत सांख्यिकी खण्ड द्वारा संचालित हुआ। सांख्यिकी में स्नातकोत्तर स्तरीय शिक्षण की शुरुआत सन् १९६२ में हुई और सन् १९७० में सामाजिक विज्ञान के स्नातक छात्रों के लिए अनुप्रयुक्त सांख्यिकी में दो वर्षीय पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया। यह विभाग विश्वविद्यालय के अन्य विभागों और विभिन्न संस्थानों के कर्मचारियों, छात्रों तथा शोध छात्रों के लिए सांख्यिकी विधियों में एक वर्षीय प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम भी संचालित करता है।

एक स्वतंत्र विभाग के रूप में जनवरी १९८४ में स्थापित होने के बाद से यह डेमोग्राफिक अनुसंधानों के क्षेत्र में अग्रणी हो गया। इसने इस्टोकेस्टिक मॉडलिंग के माध्यम से मानव आबादी की जनन क्षमता, मृत्यु के विस्थापन इत्यादि के अध्ययन की एक नई विधि प्रदान की। इस विभाग ने डीएसटी के सहयोग से सेंटर फॉर इंटरडिसीप्लिनरी मैथेमेटिकल साइंसेस की स्थापना में मुख्य भूमिका निभाई है। वर्तमान समय में विभाग में स्टेटिस्टिकल इन्फरेंस, बेसिन इन्फरेंस, रीलाइबिलिटी और लाइफ टेस्टिंग विधि, मैथमेटिकल डेमोग्राफी इत्यादि के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य चल रहा है।

जन्तु विज्ञान विभाग

जन्तु विज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना सन् १९२१ में हुई और यह भारत में इस विषय के आरम्भिक विभागों में से एक है इस विभाग ने जन्तु विज्ञान में शिक्षण एवं अनुसंधान के क्षेत्र में विशेष नेतृत्व और उत्कृष्ट योगदान किया है जो अत्यन्त ही सराहनीय रहा है। इसे कैश, कोसिस्ट, डीएसटी–फिस्ट कार्यक्रमों और डीएसटी के पर्स कार्यक्रम के अन्तर्गत पर्याप्त आर्थिक धनराशि सहायता प्राप्त हुई है। विभाग ने कैश फेज ४ के पाँचवें वर्ष को भी सफलतापूर्वक पूर्ण किया है जबकि डीएसटी–फीस्ट कार्यक्रम फेज दो का कार्य चल रहा है। यहाँ अनुसंधान के मुख्य प्राथमिकता क्षेत्रों में बायोकेमिस्ट्री, साइटोजेनेटिक्स, रिप्रोडक्टशन बायोलॉजी, इण्डोक्राइनोलॉजी और इकोफिजियोलॉजी हैं। यह विभाग उच्च स्तरीय अनुसंधान गतिविधियों में सक्रिय रहा है जिसका प्रमाण है कि यहाँ से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में उच्च इम्पैक्ट फैक्टर के साथ काफी संख्या में शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं और शिक्षकों द्वारा अनेक शोध परियोजनाएँ संचालित की जा रही हैं। विभाग के पास उत्कृष्ट उपकरणों से पूर्ण सुसज्जित प्रयोगशालाएँ और केन्द्रीय प्रयोगशाला सुविधा भी उपलब्ध है जिसमें एचपीएलसी/एफपीएलसी, रीयल टाइम पीसीआर, स्केनिंग इलक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप जैसे विशिष्ट उपरकरण हैं (इसके साथ ही कोशानुवांशिकी प्रयोगशाला में मल्टीफोटान कॉन्फोकल माइक्रोस्कोप राष्ट्रीय सुविधा उपलब्ध है।) विभाग के शिक्षकों ने अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त किए हैं जिनमें उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विभिन्न अकादमियों से अध्येतावृत्ति भी प्राप्त हुई हैं।

इस विभाग के सम्बन्ध में इस तथ्य का उल्लेख करते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है कि काफी पहले ही सन् १९८६ में प्रो.बीएन.सिंह को जन्तु विज्ञान में डीएससी.की उपाधि प्रदान की गई। ड्रासोफिला पर विश्व के सबसे अधिक अनुसंधान कार्य करने वालों की सूची में प्रो.सिंह को २४वाँ स्थान प्राप्त हुआ है और वे भारत के एकमात्र ऐसे अनुसंधानकर्ता हैं जिनका नाम उस सूची में सम्मिलित किया गया है। विभाग द्वारा जीव विज्ञान के विभिन्न अग्रणी क्षेत्रों में अन्तर्विषयी सहयोगात्मक अनुसंधान कार्यक्रम विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। कुल मिलाकर यह विभाग भारत में एक मार्गदर्शक जन्तु विज्ञान विभाग के रूप में उभर कर सामने आया है।

व्याख्यान श्रृखंला की कुछ झलकियां

२.१.२.८. सामाजिक विज्ञान संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के महान संस्थापक महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी की पवित्र दूरदर्शिता के अनुसार सामाजिक विज्ञान संकाय उत्कृष्टता की खोज में अनवरत प्रयास कर रहा है तथा राष्ट्रीय एवं वैश्विक समुदाय के बीच सामाजिक तथा राजनैतिक चुनौतियों का सामना करने के लिए रचनात्मक ढंग से मध्यस्थता करता रहा है। वास्तव में बिना विवेचक और प्रशिक्षित सामाजिक वैज्ञानिकों के न तो भारत जैसे विकासशील देश का सामाजिक और राजनैतिक विकास ही कर सकते हैं और न ही व्यक्ति, समुदाय और राष्ट्रों के बीच व्याप्त अन्तर को ही समाप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार परिवर्तन की शक्ति के रूप में नये उत्साह के साथ यह सामाजिक विज्ञान संकाय सन् १९७१ में सृजित हुआ जिसमें अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र पांच विभाग शामिल हैं। इसके अतिरिक्त पाँच स्वतंत्र अन्तर्विषयी केन्द्र के रूप में नेपाल अध्ययन केन्द्र (स्थापित- १९७६), महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र (स्थापित- १९८७), मालवीय शान्ति अनुसंधान केन्द्र (स्थापित- १९९८), समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र (स्थापित- १९८०) और सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र (स्थापित-२००९) हैं। इसके साथ ही राजनीति विज्ञान विभाग में एक केन्द्र राज्य सरकार अध्ययन केन्द्र और मनोविज्ञान विभाग में मार्गदर्शन एवं परामर्श अपने लक्ष्यों के लिये कार्य कर रहा है।

इतिहास विभाग

इतिहास विभाग पं. मदन मोहन मालवीयजी द्वारा स्थापित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीनतम विभागों में से एक है जिसकी स्थापना सन् १९१८ में की गई थी। विभाग की ओर से स्नातक और परास्नातक के पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। स्नातक स्तर पर इतिहास (प्रतिष्ठा) के पाठ्यक्रम पढ़ाए जाते हैं और परास्नातक स्तर पर अनेक नए प्रश्न पत्र सम्मिलित किए गए हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानक के अनुरूप सत्र २०११-१२ से संशोधित पाठ्यक्रम की पढ़ाई हो रही है।

संशोधित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत परास्नातक स्तर पर सभी वैकल्पिक प्रश्न-पत्रों की पढ़ाई की व्यवस्था है।

वर्तमान में परास्तनाक स्तर पर ४९ प्रश्नपत्रों की पढ़ाई जारी है, जिनमें प्रवासी भारतीय के इतिहास का अध्ययन, भारतीय जनजातियों के इतिहास का अध्ययन, नेपाल और श्रीलंका का इतिहास विज्ञान तकनीक और आयुर्विज्ञान का इतिहास, चीन एवं जापान का बौद्धिक इतिहास, समकालीन विश्व, समकालीन एशिया, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी का इतिहास, औपनिवेशिक भारत के दलित आंदोलन का इतिहास को विशेष रूप में नए प्रश्न-पत्र पढ़ाए जा रहे हैं। साथ ही, इन विषयों पर शोध कार्य करने को प्रोत्साहित किया जाता है।

विभाग के पुस्तकालय में वर्तमान सत्र में १८०० पुस्तकें क्रय की गई हैं जो छात्रों के कल्याणार्थ अब अध्ययन हेतु उपलब्ध करायी जा रही हैं।

इस सत्र से स्नातक स्तर पर भी सेमेस्टर प्रणाली पूर्णरूपेण लागू कर दी गई है। उसी के अनुरूप पाठ्यक्रम व्यवस्थित कर दिया गया है।

इतिहास विभाग में अब ८५ शोध छात्र शोधरत हैं। पूर्व पी.एचडी. के पाठ्यक्रम के रूप में पाँच प्रश्नपत्रों की पढ़ाई भी हो रही है। २०११-१२ में सात शोध छात्रों ने अपना शोध प्रबंध जमा किया और पी.एचडी. की उपाधि प्राप्त किया।

बढ़ती हुई छात्रों की संख्या एवं विस्तृत होते हुए शोध के फलक के फलस्वरुप १२वीं योजना में प्रवासी अध्ययन, एशियाई अध्ययन एवं इस क्षेत्र विशेष के अध्ययन पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है।

विभाग में एशिया के अन्य देशों से भी छात्र-छात्राएँ स्नातक, परास्नातक एवं शोध हेतु आते हैं।

यह हर्ष का विषय है कि विभाग के तत्वाधान में २०११ में उत्तर प्रदेश इतिहास परिषद् का २२वाँ अधिवेशन आयोजित किया गया। इसमें लगभग ५०० से ज्यादा इतिहास के विद्वानों ने भाग लिया एवं इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

मनोविज्ञान विभाग

मनोविज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय ने अपने स्वतंत्र अस्तित्व के पचास वर्ष १ मार्च २०१२ को पूरे किये तथा अप्रैल २०११ से मार्च २०१२ के काल में विभाग अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रविष्ट हुआ। उत्कृष्टता तथा प्रगति के प्रति समर्पण के परिणामस्वरूप विभाग २४ अगस्त २०११ से एस०ए०पी०- डी०आर०एस०-१ पद यू०जी०सी० से प्राप्त करने में सफल रहा तथा यह उपलब्धि विभाग के सदस्यों के शैक्षणिक योगदान के कारण ही संभव हो सकी।

विभाग शिक्षा, शोध एवं शोध गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के संपादन के द्वारा शैक्षणिक उत्कृष्टता के उत्तरोत्तर विकास के प्रति प्रतिबद्ध रहा। एस०ए०पी० कार्यक्रम के अन्तर्गत ''संज्ञान तथा स्वास्थ्य में वर्तमान प्रगतियाँ'' विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त ''समकालिक वाणिज्यिक संगठनों में मानवीय संसाधन कार्यप्रणालियाँ'' विषय पर एक राष्ट्रीय गोष्ठी भी विभाग द्वारा आयोजित की गई। विभाग में आयोजित तीन कार्यशालाओं, ''व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम पर चतुर्थ राष्ट्रीय कार्यशाला'', ''व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम पर पंचम राष्ट्रीय कार्यशाला'' तथा ''मनोस्नायविक मूल्यांकन पर प्रथम राष्ट्रीय कार्यशाला'' से प्राप्त होने वाले शैक्षणिक योगदानों से शिक्षकों तथा छात्रों के साथ-साथ बाह्य सहभागियों का भी संवर्धन हुआ।

विभाग के वरिष्ठ शिक्षकों के पर्यवेक्षण में आई०सी०एस०एस०आर तथा यू०जी०सी० द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त चार प्रमुख शोध योजनाएँ चल रही हैं। विभाग के नए शिक्षकों को विश्वविद्यालय द्वारा शोध योजनाओं की तैयारी हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की गई थी और वे सभी अब अपने प्रस्तावों को अंतिम रूप दे चुके हैं तथा प्रस्तावित अनुसंधान योजनाओं को संपादित करने हेतु वित्तीय सहायता के लिए विभिन्न संस्थाओं को भेज रहे हैं। दो शिक्षकगण एस०ए०पी० से वित्तीय सहायता प्राप्त कर लघु अनुसंधान योजनाएँ संपादित कर रहे हैं।

शोध छात्रों तथा परास्नातक छात्रों के लिए देश के विभिन्न भागों से आमंत्रित विशेषज्ञों के भाषणों की शृंखला का आयोजन किया गया ताकि उनमें विस्तृत दृष्टिकोण का विकास हो तथा वे अपने शैक्षणिक और शोध अवसरों को विस्तारित कर सकें। ''पी०जी० डिप्लोमा परामर्श तथा मनोचिकित्सा'' एवं ''पी०जी० डिप्लोमा परामर्श, निदेशन तथा मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप'' के जो दो पाठ्यक्रम विभाग में चल रहे हैं उनके छात्रों के लिए मनोविकारों के प्रबंधन तथा विशेष मनोचिकित्सीय तकनीकों जैसे ई०एम०डी०आर० से संबंधित विषयों पर विशेष व्याख्यान तथा कौशलों के प्रदर्शन का आयोजन किया गया। पी०जी० डिप्लोमा के २०११-१२ सत्र के छात्रों को भोपाल में एन०सी०ई०आर०टी०, बी०एम०एच०आर०सी० तथा राँची में आर०आई०एन०पी०ए०एस० जैसी संस्थाओं में चार हफ्तों की इन्टर्नशिप तथा प्रशिक्षण के लिए भेजा जा रहा है ताकि प्राप्त व्यावहारिक अनुभव भविष्य में उनके व्यवसाय में सहायक हो सके।

पिछले वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए किये गए प्रयासों को और आगे बढ़ाया गया। विभाग में विदेशों से कई शिक्षाविदों का आगमन हुआ। डॉ.सबा सफदरी, निदेशक, सेन्टर फॉर क्रास कल्चरल स्टडीज़, गुएल्फ यूनिवर्सिटी, कनाडा, श्री दिमित्री पुतलिन, फुलब्राइट फेलो, ड्यूक यूनिवर्सिटी, यू०एस०ए० तथा डॉ० ऐक सैन्डर, प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी ऑफ गौथनबर्ग, स्वीडन ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय मेहमान थे जिन्होंने छात्रों के साथ पारस्परिक संवाद किये तथा उन्हे नए क्षेत्रों में शोध के लिए प्रेरित किया। हमारे कुछ शिक्षकों को अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान में भागीदारी के लिए तथा कुछ को अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए चयनित किया गया। विभाग में स्नातक, स्नातकोत्तर साथ ही पी०एचडी० स्तरों पर भी अंतर्राष्ट्रीय छात्रों द्वारा प्रवेश के लिए प्रार्थनाओं तथा प्रवेशों की संख्या में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है।

''कार्मिक प्रबंधन तथा औद्योगिक संबंध'' के परास्नातक पाठ्यक्रम के छात्रों की परिसर नियोजन द्वारा नियुक्तियों में वृद्धि होकर कोल इंडिया लिमिटेड में तेरह छात्रों तथा डी०एस०सी०एल० में एक छात्र का चयन हुआ तथा इन्हें लगभग सात लाख रूपयों से भी अधिक के वेतन का प्रस्ताव मिला। पी०जी० डिप्लोमा के छात्रों के परिसर नियोजन के कार्यक्रमों को भी और प्रभावी बनाने के लिए सतत् प्रयास किए जा रहे हैं।

अर्थशास्त्र विभाग

अर्थशास्त्र विभाग पं० मदन मोहन मालवीय जी द्वारा स्थापित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीनतम् विभागों में से एक है। जिसकी स्थापना १९१८ में की गयी। विभाग में स्नातक, परास्नातक तथा शोध

के पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। स्नातक स्तर पर अर्थशास्त्र (प्रतिष्ठा) के पाठ्यक्रम पढ़ाए जाते हैं तथा परास्नातक स्तर पर कुछ नवीन एवं महत्वपूर्ण प्रश्नपत्रों जैसे पर्यावरण का अर्थशास्त्र, काल श्रेणी अर्थमिती, पैनल डेटा अर्थमिती, गत्यात्मक व्यापक अर्थशास्त्र की भी पढ़ाई होती है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानक के अनुरूप शोध पाठ्यक्रम की पढ़ाई हो रही है।

विभाग में परास्नातक तथा शोध विद्यार्थियों हेतु ३० की क्षमता वाला एक कम्प्यूटर लैब भी बनकर तैयार है तथा व्याख्यान कक्षों में ण्ः प्रोजेक्टर भी लगाये गये हैं। परास्नातक एवं शोध विद्यार्थियों को पढ़ाने हेतु सांख्यिकी/अर्थमिती सॉफ्टवेयर की भी व्यवस्था विभाग ने की है। शिक्षा में गुणवत्ता बढ़ाने हेतु विभाग ने सभी शिक्षकों को लैपटाप भी प्रदान किये हैं।

विभाग के पुस्तकालय में करीब १५०० से अधिक पुस्तकें हैं जिन्हें छात्रों को समय-समय पर उपलब्ध कराया जाता है। इस समय स्नातक स्तर पर भी सेमेस्टर प्रणाली पूर्ण रूप से लागू कर दी गयी है तथा इसी के अनुरूप पाठ्यक्रम भी व्यवस्थित किया गया है।

अर्थशास्त्र विभाग में वर्तमान में कुल ९९ शोध छात्र पंजीकृत हैं जिनमें से २०११-१२ में ०३ को शोध उपाधि (पी.एचडी.) प्रदान की गयी।

समाजशास्त्र विभाग

समाजशास्त्र विभाग की स्थापना एक पृथक विषय के रूप में अप्रैल १९६६ में की गयी। प्रो. एस.के. श्रीवास्तव के नेतृत्व में तथा जी.एस. नेपाली एवं डा. सुरेन्द्र जेटली के क्रमशः रीडर एवं प्रवक्ता की सहभागिता में प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो. राधा कमल मुखर्जी के द्वारा विभाग का उद्घाटन किया गया। वर्तमान में समाजशास्त्र विभाग में कुल बीस अध्यापक- प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर एवं असिस्टेन्ट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं इसके अन्तर्गत स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएच.डी. स्तर का अध्ययन-अध्यापन जारी है।

समाजशास्त्र विभाग के द्वारा सत्र १९९९ के दरम्यान विश्वविद्यालय योजना आयोग के स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत एमए. समाजकार्य का अध्ययन-अध्यापन आरम्भ किया गया। एक दशक के उपरान्त समाजकार्य को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली तथा सत्र २०१० तथा सत्र २०११ में इसे अखिल भारतीय स्तर पर क्रमशः सातवां एवं छठा स्थान प्रदान किया गया।

समाजकार्य का अलग पुस्तकालय है जिसमें इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। समाजशास्त्र के कक्षाओं में स्मार्ट क्लास की सुविधाएं उपलब्ध हैं। समाजशास्त्र विभाग में अध्यापकों के द्वारा विश्वविद्यालय योजना आयोग एवं आई.सी.एस.एस.आर. द्वारा प्रायोजित विविध परियोजनायें पूरी की गयीं एवं कुछ परियोजनाओं पर कार्य जारी है। समाजशास्त्र विभाग की उपलब्धियों से संकाय, विश्वविद्यालय एवं भारत के अन्य विश्वविद्यालयों में अलग पहचान मिली।

राजनीति विज्ञान विभाग

राजनीति विज्ञान विभाग ने पिछले अकादमिक वर्ष में अपने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के सफल अकादमिक प्रयासों की वजह से जबरदस्त सफलता अर्जित की है। बहुत सारे विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति अर्जित की है। इसके अलावा देश के प्रतिष्ठित एवं विशिष्ठ शोध केन्द्रों यथा जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के एम.फिल. एवं पी.एचडी. प्रवेश परीक्षाओं में अपना चयन सुनिश्चित किया है। विभाग के वरिष्ठ शिक्षकों को यू.जी.सी. एवं मानव संसाधन विकास विभाग, भारत सरकार के विभिन्न समितियों में सदस्यता प्रदान की गई है। इनमें से कुछ आचार्यों को देश एवं दुनिया की कुछ प्रतिष्ठित अकादमियों एवं विश्वविद्यालयों में स्मृति व्याख्यान, आमंत्रण वक्तव्य देने एवं विशिष्ट सम्मानित अध्येतावृत्ति प्राप्त करने का अवसर मिला है। करीब सभी अध्यापकों ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की ख्यातिलब्ध शोध पत्रिकाओं में अपना शोध प्रपत्र प्रकाशित किया है। विभाग में पिछले २१-२२ फरवरी, २०१२ को सफलता पूर्वक 'भारत में राज्यों के पुनर्संगठन की अवधारणा पर पुनर्चिन्तन' विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। इस संगोष्ठी में प्रो० ए.के. बरुआ (उत्तर पूर्व हिल विश्वविद्यालय, शिलांग), प्रो. एम.पी. सिंह (दिल्ली विश्वविद्यालय), प्रो.जी. हरगोपाल (हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय), प्रो. आशा सारंगी (जे.एन.यू., नई दिल्ली) डॉ० संजय भारद्वाज, डॉ. इशानी नश्कर, डॉ. अनुपमा कौशिक, डॉ. राजेन्द्र पाण्डेय जैसे विषय विशेषज्ञ एवं देश और विदेश से आए विभिन्न विद्वानों ने शोध प्रपत्रों का पाठन-मनन किया गया।

राजनीति विज्ञान विभाग ने इसी अवसर पर अपना आठवाँ पूर्व छात्र सम्मेलन भी आयोजित किया, जिसकी बौद्धिक एवं भावनात्मक सहभागिता में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि ही हुई है।

विभाग में वर्तमान में ४ बृहदशोध परियोजनाएँ प्रगति में है।

विभाग में अभी द्विवर्षीय परास्नातक कार्यक्रम, लोक प्रशासन विषय में सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है। इसके साथ-साथ राजनीति विज्ञान विषय में चार विशिष्ट उप-विषयों में परास्नातक स्तर पर उत्तरार्द्ध वर्ष में पढ़ाई होती है।

सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र का नवनिर्मित भवन

२.१.२.९. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीन भाषाओं में से एक है। इसका वाङ्गमय भारतीय संस्कृति के सभी अंगों की प्रामाणिक एवं व्यापक अभिव्यक्ति करता है। इस भाषा एवं साहित्य के ऐतिहासिक महत्त्व का अनुभव करते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में संस्कृत कॉलेज (महाविद्यालय) की स्थापना सन् १९१८ में हुई थी। बाद में इसी का नामान्तर प्राच्यविद्या धर्मविज्ञान संकाय हुआ। वर्तमान में यह संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय के नाम से सुविख्यात है।

यह संकाय मुख्य रूप से प्राचीन शास्त्रों, संस्कृत भाषा और साहित्य के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित है साथ ही इसका एक अन्य प्रयोजन पूर्व और पश्चिम में सार्थक संवाद स्थापित करना है।

यह संकाय अपनी प्रकृति में विलक्षण है। इसमें शास्त्रीय ग्रंथों का शब्दशः अध्ययन-अध्यापन प्राचीन पद्धति के अनुसार होता है। इसमें छात्रों का मौखिक और लिखित-उभयविध परीक्षण किया जाता है। इस संकाय को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के व्यापक परिवेश में आधुनिक चिंतन, विज्ञान और तकनीक से संवाद स्थापित करने का विशिष्ट अवसर प्राप्त है, क्योंकि इस प्रकार का व्यापक परिवेश भारत के अन्य किसी भी संस्थान में दुर्लभ है।

वर्तमान में इस संकाय के अन्तर्गत कुल आठ विभाग कार्यरत हैं- वेद विभाग, व्याकरण विभाग, साहित्य विभाग, ज्योतिष विभाग, वैदिक दर्शन विभाग, जैन-बौद्ध दर्शन विभाग, धर्मशास्त्र मीमांसा विभाग एवं धर्मागम विभाग। इन विभागों में लगभग २३ विषयों का शिक्षण होता है तथा त्रिवर्षीय शास्त्री सम्मान और द्विवर्षीय (षाण्मासिक परीक्षा विधि से) आचार्य की उपाधियाँ दी जाती हैं। इसके अतिरिक्त सभी विषयों में उच्चकोटि के अनुसंधान की सुविधा भी उपलब्ध है, जिसके माध्यम से विद्यावारिधि की उपाधि दी जाती है। इन पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त धर्मागम विभाग के अन्तर्गत एक वर्षीय संस्कृत प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम तथा द्विवर्षीय 'डिप्लोमा इन शैवागम' पाठ्यक्रम भी संचालित होते हैं। इन पाठ्यक्रमों का भारतीय और विदेशी - सभी छात्र समान रूप

से लाभ लेते हैं। वेद और ज्योतिष विभाग क्रमश: कर्मकाण्ड में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम और ज्योतिष तथा वास्तुशास्त्र में द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करते हैं। शोध सहित सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है। स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोधार्थियों के लिए छात्रवृत्ति एवं छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है। संकाय का अपना स्वतंत्र पुस्तकालय है, जिसमें लगभग २५ हजार सामान्य और दुर्लभ पुस्तकें एवं पाण्डुलिपियों का संग्रह है। यह ग्रंथालय भारतीय एवं विदेशी जिज्ञासुओं को अपनी सेवाएं प्रदान करता है। शिक्षकों एवं छात्रों के अनुसंधानपरक गंभीर लेखों के प्रकाशनार्थ 'संस्कृतविद्या' नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन भी यह संकाय करता है। प्रकाशन की गतिविधियाँ संकाय के प्रकाशन अनुभाग के माध्यम से संचालित होती हैं। संकाय का **पंचांग अनुभाग** सन् १९२६ से नियमित रूप से **विश्वपंचांग** का प्रकाशन कर रहा है।

इस संकाय के प्राय: सभी छात्रों को सावधि जमा छात्रवृत्ति, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की छात्रवृत्ति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्तियों में से कोई न कोई छात्रवृत्ति अवश्य प्राप्त हो जाती है। इस वर्ष छात्रों की योग्यता के आधार पर राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा कई छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इसके अतिरिक्त समस्त शोध छात्रों को ५०००/- रु० प्रतिमाह विश्वविद्यालय द्वारा यू०जी०सी० छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है तथा निर्धन छात्रों को श्री विश्वनाथ मंदिर द्वारा नि:शुल्क भोजन भी प्रदान किया जाता है।

उक्त विषयों में त्रिवर्षीय शास्त्री ऑनर्स उपाधि, द्विवर्षीय (४ सेमेस्टर) आचार्य उपाधि तथा विद्यावारिधि की उपाधियां प्रदान की जाती हैं। धर्मागम विभाग के अन्तर्गत एक वर्षीय संस्कृत प्रमाणपत्र व आगमतंत्र में द्विवर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रदान किया जाता है। वेद विभाग कर्मकाण्ड में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम और ज्योतिष विभाग ज्योतिष तथा वास्तुशास्त्र में द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करते हैं।

विभिन्न पाठ्यक्रमों में उपलब्ध सीटें:

आचार्य - १७६, शास्त्री (ऑनर्स) - २११।

संकाय में आयोजित संगोष्ठियाँ:

१. अखिल भारतीय व्यास महोत्सव के अन्तर्गत वेदान्त संगोष्ठी, २. अखिल भारतीय शास्त्रार्थ , परिषद्, ३. अखिल भारतीय वैदिक गणित सम्मेलन, ४. संस्कृत दिवस महोत्सव का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है।

संकाय के विभागों में स्वीकृत एवं प्रस्तावित परियोजनाएँ

क्रम सं.	प्रधान अन्वेषक का नाम	प्रदत्त संस्था का नाम	विषय
१	**व्याकरण विभाग**		
	१- प्रो. आर. सी. पण्डा	यू०जी०सी०	व्याकरण दर्शनकोश
	२- डॉ. भगवत्शरण	यू०जी०सी०	शुक्लयजुर्वेदस्थमाध्यन्दिनशारणाया: तिङन्तपदसमीक्षणम्
	३- डॉ. रमाकान्त पाण्डेय	यू०जी०सी०	व्युत्पत्तिवाद के प्रथमाकारकान्त भाग की प्रकाशित अप्रकाशित टीकाओं का विश्लेषण
२	**वैदिक दर्शन विभाग**		
	१- प्रो. राजाराम शुक्ल	यू०जी०सी०	द्वैतप्रमाण मीमांसा का अन्त:शास्त्रीय समीक्षा
३	**ज्योतिष विभाग**		
	१. प्रो. एसएन. मिश्र २. डॉ. रामजीवन मिश्र - सह-समन्वयक ३. डॉ. विनय कुमार पाण्डेय – सह-समन्वयक ४. शत्रुध्न त्रिपाठी - सह-समन्वयक	यू०जी०सी०	शास्त्र शुद्ध सूक्ष्म पंचांग निर्माण की दृष्टि से सूर्य सिद्धान्त की समीक्षा **कार्य पूर्ण**
	१. डॉ. शत्रुध्न त्रिपाठी २. डॉ. विनय कुमार पाण्डेय - सह-समन्वयक	यू०जी०सी०	हृदय रोग
	१. डॉ. विनय कुमार पाण्डेय २. डॉ. शत्रुध्न त्रिपाठी - सह-समन्वयक	यू०जी०सी०	अस्थमा रोग
	दो नये प्रोजेक्ट प्रस्तावित हैं		
४	**धर्मागम विभाग**		
	प्रो. कमलेश झा	यू०जी०सी०	मालिनिविजयोत्तर का संस्कृत भाष्य निर्माण एवं उसका हिन्दी अनुवाद
	डॉ. शीतला प्रसाद पाण्डेय	यू०जी०सी०	ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ माईनर आगमज़।
५	**धर्मशास्त्र मीमांसा विभाग**		
	१- डॉ. शंकर कुमार मिश्र, एक प्रधान अन्वेषक २- डॉ. माधव जनार्दन रटाटे, को. पी. आई.	यू०जी०सी०	संस्कार एवं मानवीय मूल्य-समीक्षात्मक अध्ययन

२७-२९ फरवरी, २०१२ को आयोजित अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन: 'वैदिक वाङ्मये वैज्ञानिक चिंतनम'

संकाय ग्रंथालय एवं पंचांग अनुभाग

संकाय ग्रंथालय में लगभग २५,००० से भी अधिक पुस्तकों तथा सैकड़ों पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह है।

संकाय के पंचांग अनुभाग द्वारा प्रतिवर्ष विश्वपंचांग का निर्माण एवं संपादन किया जाता है।

कार्यक्रम

प्रत्येक वर्ष विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित होने वाली महामना मालवीय जयन्ती कार्यक्रम आयोजित करते हुए संकाय ने अपना सहयोग प्रदान किया है।

भावी योजनाएँ

वेद विभाग

अध्यापन में शैक्षणिक श्रेष्ठता लाने के लिए वैदिक ग्रन्थों के व्याख्यान में वेदों के आधिदैविक पक्ष के विज्ञान को प्रकाशित करना।

वेदों में निहित प्राचीन विज्ञान को शोध एवं प्रकाशनों के द्वारा लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना

अनुसन्धानपरक उपर्युक्त तथ्यों को सामने लाने के लिए वैदिक प्रयोगशाला प्रस्तावित है।

वैदिक श्रौत योगों का प्रयोग एवं प्रशिक्षण

महत्त्वपूर्ण वैदिक ग्रन्थों का अनुवाद

सर्टिफिकेट कोर्स एवं डिप्लोमा कोर्स चलाने का प्रस्ताव

व्याकरण विभाग

छात्रों को संस्कृत भाषा में निपुण बनाकर व्याकरण शास्त्र का गम्भीर ज्ञान कराना एवं व्याकरण शास्त्र को समाजोपयोगी बनाना विभाग का प्रथम संकल्प है।

पाणि निव्याकरण के प्राचीन ग्रन्थों का परम्परागत पद्धति से पंक्तिश: अध्ययन एवं अध्यापन के माध्यम से व्याकरण शास्त्र की संरक्षा।

पाणिनीय व्याकरण में निहित भाषातात्त्विक तत्त्वों को शोध, परिसंवाद तथा दृश्य श्रव्यांकन के माध्यम से आधुनिक सम्बद्ध शोधार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करवाना।

प्राचीन व्याकरण ग्रन्थों का हिन्दी भाषा में अनुवाद।

व्याकरण शास्त्र का बृहद् कोश तैयार कराना।

प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी को संगोष्ठी के माध्यम से काशी की शास्त्रार्थ परम्परा को छात्रों तक पहुंचाने का प्रयास करना।

शोध-छात्रों को परम्परागत वास्तविक शोधविधियों का ज्ञान कराना तथा उच्च शोध कराने का प्रयास करना । साथ ही पारम्परिक विषयों में नवीनतम शोध के माध्यम से उनका विश्लेषण करना ।

किसी पारम्परिक विद्वान् को विभाग में आहूत कर 'वैयाकरणसिद्धान्तलघुमंजूषा' जैसे दार्शनिक ग्रन्थ का पंक्तिशः अध्ययन कराना तथा उस पर दिये गये समस्त व्याख्यानों को टीका के रूप में प्रकाशित कराना।

ज्योतिष विभाग

वेधशाला का निर्माण

लघुयंत्रों का व्यावहारिक प्रशिक्षण

संगणक प्रयोगशाला

आचार्यभट्ट वराहमिहिर व्याख्यानमाला

विस्तार भाषण एवं कार्यशालाएं

वैदिक दर्शन विभाग

छः माह का योग में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम

दो वर्षीय योग में पी०जी० डिप्लोमा

प्राचीन दर्शन ग्रंथों का हिन्दी तथा संस्कृत भाषा में अनुवाद तथा प्रकाशन

शोध, संगोष्ठी, कार्यशालाएं एवं विभिन्न विद्वानों के व्याख्यान कराने की योजना है।

जैन बौद्ध दर्शन विभाग

विभागीय शोध पत्रिका का प्रकाशन, शोध संगोष्ठियों का आयोजन एवं व्याख्यानमालाओं का आयोजन । इसी प्रकार अन्य विभागों में भी अनेक परियोजनाएँ प्रकल्पित हैं, जिन पर प्रारम्भिक कार्य विद्वानों के द्वारा किये जा रहे हैं ।

कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन

नवनिर्मित लेक्चर थियेटर कॉम्प्लेक्स

२.१.२.१०. दृश्य कला संकाय

दृश्य कला संकाय (स्थापित १९५०), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, भारतवर्ष के प्रमुखतम् कला संस्थानों में से एक है, जहाँ ललित कला के मुख्य पाठ्यक्रमों में व्यावहारिक कला, चित्रकला, टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग, प्लास्टिक आर्ट (मूर्तिकला) तथा पॉटरी-सिरेमिक में स्नातक (बीएफए) और परास्नातक (एमएफए) की उपाधियाँ प्रदान की जाती हैं। संकाय परास्नातक के उपरान्त परास्नातकोत्तर (डॉक्टोरल) पाठयक्रम के अर्न्तगत शोध-कार्य के अवसर भी प्रदान करना है। दृश्य कला का इतिहास एवं रूपांकन एक आवश्यक विषय के रूप में, स्नातक एवं परास्नातक के साथ कला की समस्त शाखाओं में शोध के अवसर प्रदान करता है। दृश्य कला संकाय उन गिने चुने संस्थानों में से एक है, जहाँ उपर्युक्त सभी पाठ्यक्रमों में परास्नातक की उपाधि प्रदान करने की विशिष्टता के कारण, न केवल सम्पूर्ण भारत, बल्कि सार्क राष्ट्रों (एसएएआरसी) एवं दूरस्थ अमेरिका-यूरोप के छात्र भी इसकी ओर आकर्षित होते हैं। यह संस्थान अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों द्वारा विद्यार्थियों में सृजनात्मक विचारों को विकसित करने के साथ उनमें उद्यमशीलता को भी बढ़ावा देने का सतत् प्रयास कर रहा है, जिससे छात्र समाज में सकारात्मक भूमिका निभाते हुए सार्थक चिंतन के साथ, समग्र राष्ट्र की समसामयिक कलात्मक गतिविधियों में परस्पर सामंजस्य स्थापित कर सकें। इसे और तर्क संगत बनाने के लिए सेमेस्टर प्रणाली के वैश्विक अनुरूप माध्यम से शिक्षा के मुख्य धारा में जोड़ने का प्रयास किया गया है जिससे छात्र समसामयिक कलात्मक गतिविधियों को आत्मसात करते हुए देश की मुख्य धारा से जुड़ सकें। बीएफए एवं एमएफए स्तर के निर्धारित सभी पाठ्यक्रम रोजगार परक हैं, तथा समस्त उपाधि धारक देश-विदेश में विभिन्न नियोजकों द्वारा रोजगार प्राप्त कर अपनी दक्षता का परिचय देते आ रहे हैं। शिक्षणेतर गतिविधियों, में संकाय की भूमिका उल्लेखनीय रही है। संकाय के छात्रों ने अंतर्विश्वविद्यालयीय पूर्वी क्षेत्र महोत्सव में ललित कला प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठता के साथ राष्ट्रीय युवा महोत्सव में प्रशंसनीय कार्य किया। अंतर संकायीय युवा महोत्सव स्पंदन २०१२ में संकाय समस्त संकायों में उपविजेता रहा।

अस्तु, वर्तमान सत्र विश्वविद्यालय तालिका के अनुसार निर्दिष्ट तिथियों के अनुरूप, १० मई २०१२ तक सफलतापूर्वक पूर्ण कर

संकाय ने महामना पं. मदन मोहन मालवीयजी के १५०वीं जयंती वर्ष को समर्पित अनेकानेक कार्यक्रमों का सफलता पूर्वक आयोजन किया है। वर्तमान सत्र २०११-१२ के दौरान शैक्षिक व पाठ्येतर कार्यक्रमों को विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित तिथियों के अनुरूप, समय सीमा के अन्दर बिना किसी विलम्ब अथवा रुकावट के सफलता पूर्वक पूरा कर लिया गया।

गतिविधियों की संक्षिप्त समीक्षा

१८ जुलाई २०११ को नये सत्र का आरम्भ हुआ, बीएफए तथा एमएफए पाठ्यक्रमों में नये प्रवेश प्रारम्भ के कुछ ही दिनों में पूर्ण कर लिये गये। बीएफए प्रथम वर्ष में कुल ९२ तथा एमएफए प्रथम वर्ष में १४० छात्रों ने प्रवेश लिया। चित्रकला एवं व्यावहारिक कला के एक वर्षीय प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम में २६ छात्रों ने प्रवेश लिया। वर्तमान में संकाय में कुल ३६ शोध छात्र पंजीकृत हैं।

निर्धारित शैक्षणिक तालिका के अनुसार १८ जुलाई २०११ से अध्यापन कार्य आरम्भ हुआ। वार्षिक २८ फरवरी २०१२ तक शैक्षिक कार्य एवं मार्च-अप्रैल २०१२ तक प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक परीक्षाएँ सम्पन्न करा ली गईं। वर्ष में दो बार स्केच प्रतियोगिता आयोजित की गयी। सेमेस्टर प्रणाली के अन्तर्गत होने वाली बीएफए (सेमेस्टर एक एवं दो तथा तीन एवं चार) तथा एमएफए (सेमेस्टर एक एवं दो तथा तीन एवं चार) की परीक्षाएँ क्रमश: दिसम्बर २०११ एवं अप्रैल २०१२ में सम्पन्न हुईं। एक सत्र में दो बार होने वाली स्केच प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। वर्ष पर्यंत पूरे सत्र में कुल ११ प्रदर्शनियों २ एकल एवं ९ सामूहिक प्रदर्शनियों संकाय की वार्षिक प्रदर्शनी ''उन्मीलन'' भी शामिल है जिसे इस वर्ष विभागानुसार फरवरी ६-७, २०१२ (व्यावहारिक कला) फरवरी १३ से १५, २०१२ (चित्रकला), फरवरी १८-२२, २०१२ (मूर्तिकला) का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया जिनका उद्घाटन क्रमश: डॉ. ए.एन. शर्मा, निदेशक, एकेडमिक स्टॉफ कालेज, का.हि.वि.वि., निदेशक, प्रौद्योगिक संस्थान एवं प्रो. के.डी. त्रिपाठी ने किया। ''कला मेला'' संकाय के एक प्रमुख आयोजनों में से एक था जिसे मार्च ३ से ४, २०१२ को आयोजित किया गया जिसे इस सांस्कृतिक नगर के कला प्रेमियों द्वारा खूब सराहना मिली।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ९४वाँ दीक्षान्त समारोह के अंश रूप में दृश्य कला संकाय एवं मंच कला संकाय का संयुक्त दीक्षान्त समारोह, १७ मार्च २०१२ को संगीत एवं मंच कला संकाय प्रेक्षागृह में आयोजित किया गया, जिसके अन्तर्गत सत्र २०१०-११ में उर्त्तीण बीएफए, एमएफए एवं शोध छात्रों को उपाधि वितरित की गयी।

गतिविधियाँ

सृजनात्मक विकास की दृष्टि से वर्तमान शैक्षणिक सत्र अति सफल कहा जा सकता सदभागिता है। संकाय के अध्यापकों द्वारा देश-विदेश में विभिन्न संगोष्ठियों में एकल प्रदर्शनियाँ, सामूहिक प्रदर्शनियों में भागीदारी, शोध-प्रपत्रों का प्रकाशन एवं मूल्यांकन हेतु विभिन्न संस्थानों में आमंत्रित तथा प्रदर्शनियों के निर्णायक मण्डल के सदस्य के रूप में नामंकित किये गये। ६-१२ फरवरी २०१२ के मध्य विभागानुसार वार्षिक कला प्रदर्शनियाँ आयोजित हुई। सम्पूर्ण सत्र में एकल एवं सामूहिक कुल ११ प्रदर्शनियों में संकाय के शिक्षकों की प्रदर्शनियाँ भी शामिल है। संकाय की टीम का.हि.वि.वि. की अर्न्तसंकायीय सांस्कृतिक उत्सव स्पंदन-१२ में उपविजेता रही। ३ एवं ४ मार्च २०१२ को आयोजित कलामेला नगर के कला प्रेमियों एवं सामान्य जन को अति आकृष्ट किया।

हमारे महान संस्थापक, महामना पं. मदन मोहन मालवीय की १५०वीं जन्म महोत्सव वर्ष में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की ओर से पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन विशेष उल्लेखनीय है।

डिग्री/डिप्लोमा अधिनिर्णय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ''९३वें दीक्षान्त समारोह'' के अंश रूप में दृश्य कला संकाय एवं मंच कला संकाय का संयुक्त दीक्षान्त समारोह मंच कला संकाय प्रेक्षागृह में दिनांक ११ मार्च २०११ को आयोजित किया गया जिसमें शैक्षणिक सत्र २००९-१० में उत्तीर्ण बीएफए, एमएफए एवं शोध छात्रों (पी.एचडी.) को उपाधि एवं पदक वितरित किये गये। स्वर्ण पदक प्राप्त छात्रों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले बीएफए एवं एमएफए के एक-एक छात्र को १२ मार्च २०११ को एम्फीथियेटर मैदान में आयोजित मुख्य दीक्षान्त समारोह में मानव संसाधन मंत्री एवं माननीय उपराष्ट्रपति के द्वारा पदक प्रदान किया गया। संकाय के २१ छात्रों को चित्रकला एवं विज्ञापन डिज़ाइन में सफलता पूर्वक पाठ्यक्रम को पूरा करने पर एक वर्षीय प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम के प्रमाण पत्र दिये गये।

संकाय-पुस्तकालय

कुल पुस्तकों की संख्या	- ९०४२
कुल शोध पत्रिकाओं की संख्या	- ४५६ (सजिल्द)
संकाय ग्रन्थालय में रिपोर्ट अवधि के दौरान आयी पुस्तकों की संख्या	- ८५३
रंगीन स्लाईड्स	- ३००
मूल ग्राफिक्स प्रिंट	- ३५०
सामयिक जर्नल	- १५

अधिसूचित प्रस्तुत वर्ष में शुरू किए गए या पूर्ण हुए भवन-निर्माण, मरम्मत कार्यो का संक्षिप्त विवरण

संकाय प्रदर्शनी कक्ष का विस्तारीकरण।

नई कला दीर्घा।

मूर्तिकला विभाग में लैब।

व्यावहारिक कला एवं संकाय कमेटी रूम की मरम्मत।

संकाय की वार्षिक कला प्रदर्शनी

२.१.३. महिला महाविद्यालय

२.१.३. महिला महाविद्यालय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने सन् १९२९ में 'स्त्री उच्च शिक्षा के ध्येय' से वूमेंस कॉलेज (वर्तमान में महिला महाविद्यालय) को स्थापित किया। जहाँ महामना के आदर्शों के अनुरूप एक ही छत्र के नीचे छह संकायों- कला, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, दृश्य कला, मंच कला एवं शिक्षा- के अन्तर्गत ३६ विषयों के पाठ्यक्रम की सम्पूर्ण शिक्षा समाविष्ट है। कला, सामाजिक विज्ञान, एवं विज्ञान (प्रतिष्ठा व आनर्स) में त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम सेमेस्टर पद्धति में नियोजित है। बायोइन्फार्मेटिक्स तथा गृह विज्ञान विषयों में स्नातकोत्तर द्विवर्षीय पाठ्यक्रम चार सेमेस्टर में सम्पन्न होता है। 'भरतनाट्यम' और 'कत्तक' नृत्य विषय में त्रिवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम की भी व्यवस्था है। निश्चित रूप से २००० छात्राओं से समन्वित यह संस्था पठन-पाठन की गुणवत्ता और शोधपरक गतिविधियों के नैरंतर्य से शिक्षा को उर्ध्व दिशा की ओर संचालित कर रही है। महिला महाविद्यालय के समग्र सदस्य इसके आलोक स्तम्भ को सुदृढ़करने के लिए सदैव कटिबद्ध हैं।

महिला महाविद्यालय की योग्य छात्राओं ने वर्ष २०११ में विश्वविद्यालय की परीक्षा में संस्था को गौरवान्वित करते हुए अपनी अमिट छाप छोड़ी है। संकाय सदस्यों की नियमित एवं आत्मनियोजित अध्यापन तथा छात्राओं के गंभीर चेष्टा के परिणाम स्वरूप ५० छात्राओं ने विश्वविद्यालय की बी०ए०, बी०एससी०, एम०एससी० एवं नृत्य डिप्लोमा की परीक्षाओं में सर्वोच्च दस स्थान अधिकार करने की योग्यता हासिल की है।

अकादमिक गतिविधियाँ

महिला महाविद्यालय के सदस्य कक्षाओं में पढ़ाने के साथ-साथ अत्यधिक उत्साह से शोध कार्य सम्पन्न करते हैं। उनके ३७ अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्र प्रकाशित हुए हैं। चार वरिष्ठ प्रोफ़ेसर- प्रो० सुशीला सिंह, प्रो० मीना सोढ़ी, प्रो० संध्या सिंह कौशिक एवं प्रो०गीता राय ने अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में अध्यक्ष पद को सुशोभित किया तथा अन्य कई सदस्यों ने विषय-विशेषज्ञ के रूप में अपने तथा अन्य विश्वविद्यालयों में व्याख्यान् प्रस्तुत किये।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं डी०एस०टी० के द्वारा प्रदत्त १.५७ करोड़ की वित्तीय सहायता उपलब्ध करके डॉ० रश्मि सिंह, डॉ० राधा चौबे, डॉ० अरुण कुमार सिंह, डॉ० हृदयेश मिश्रा एवं डॉ० संजय कुमार श्रीवास्तव शोध परियोजनाओं में कार्यरत हैं।

डॉ० नीलम श्रीवास्तव एवं उनकी टोली (टीम) ने महिला महाविद्यालय की प्रयोगशाला में ही नवीन प्रायोगिक खोज की है कि ०.२ वोल्ट पर पानी इलेक्ट्रोलाइज्ड हो जाता है। टी०आइ०एफ०ए०सी० तथा डी०एस०टी० ने इसे अनुमोदित किया है। इसकी उपलब्धियों को भारत में पेटेन्ट करने के लिए पेटेंटिंग एजेन्सी में भेज दिया गया है। डॉ० नीलम का शोधपत्र 'कार्बोहाइड्रेट पॉलिमर' भी प्रकशित हुआ है। 'नेचर इंडिया' जर्नल में इसका रिव्यू प्रकाशित हुआ है।

डॉ० मिताली देव को संस्कृत में अवन्तिका राजीव गाँधी एक्सीलेन्स अवार्ड-२०११ एवं पूर्वांचल रत्न अलंकारम् सम्मान-२०१२ से नवाज़ा गया है।

'गाँधी की प्रासंगिकता एवं उनकी कालातीत विरासत' विषय पर २०-२१ मार्च २०१२ में राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रो० रूपा शाह (पूर्व कुलपति, एस०एन०डी०टी० विश्वविद्यालय एव बी०एच०यू० कोर्ट की सदस्य) ने किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति पद्मश्री डॉ० लालजी सिंह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। गाँधी वाङ्मय की अध्यक्षता डॉ० वर्षा दास एवं विषय मर्मज्ञ प्रो० सुधीर कुमार ने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों की प्रस्तुति की। समापन सत्र में महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० पृथ्वीश नाग ने गाँधी के राजनीतिक यात्रा को सचित्र प्रस्तुत करते हुए अध्यक्षीय उद्बोधन किया। संगोष्ठी का यह विषय युवा पीढ़ी को गाँधी के विचार और दर्शन से परिचय कराने में सफल सिद्ध हुआ। इसके परिणाम स्वरूप दो दिनों में १०७ शोध पत्रों की प्रस्तुति सम्पन्न हुई।

बायोइन्फॉर्मेटिक्स विभाग की ओर से आयोजित कार्यशाला में मई २०११ में डॉ० पी० अशोकन एवं आई०आई०टी० मुंबई की फोसी परियोजना की टोली ने 'पिथॉन साइन्टिफिक लैंग्वेज प्रोग्रामिंग' के तहत शोध छात्रों को प्रशिक्षण दिया इसकी पुनरावृत्ति ३० अप्रैल एवं १-२ मई २०१२ में हुई। इस अवसर पर डॉ० प्रभा रामचन्द्रन, डॉ० श्रीकांत पाठक एवं डॉ० पी० विमल आमंत्रित वक्ता थे।

शोध कार्य हेतु सुविधाएँ

डीबीटी ने स्टार कॉलेज योजना के तहत ३६ लाख रु० की धनराशि की वित्तीय सहायता दी है, जिसमें ९ लाख रु० की धनराशि वर्ष २०११-१२ में प्राप्त हो गई है।

केन्द्रीय यांत्रिक प्रयोगशाला की निर्मिति ५ वर्ष पूर्व हुई। वर्तमान में वह यू०वी विज़िबल स्पेक्ट्रोफोटो मीटर, ज़ेल डॉकुमेन्टेशन्स,-८०० एवं- २०० डीप फ्रीज़र तथा कॉलम क्रोमोटोग्राफी से युक्त रोटा वेपर इत्यादि अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है।

महिला महाविद्यालय के कंप्यूटरीकृत पुस्तकालय की सुविधा पूर्वाह्न १०.०० बजे से अपराह्न ५.०० बजे तक छात्राओं एवं संकाय सदस्यों को उपलब्ध रहती है।

कौस्तुभ जयन्ती वर्ष २००४-२००५ से प्रारम्भ 'कौस्तुभ जयन्ती महोत्सव व्याख्यानमाला' के अंतर्गत २९ नवम्बर २०११ में माननीय कुलपति पद्मश्री डॉ० लालजी सिंह का जेनेटिक डाइवर्सिटी इन इंडियन पापुलेशन्स एण्ड इट्स हेल्थ इम्प्लिकेशन्स' विषय पर व्याख्यान सम्पन्न हुआ। उन्होंने वैश्विक जिनोम के अध्ययन एवं भारत के मूल निवासी आर्यों से इसके परस्पर संबंध पर बल दिया।

विज्ञान संकाय के प्रमुख प्रो० अजित सोढी ने १९ सितम्बर २०११ में 'बर्डस एण्ड ट्रीस ऑफ बी०एच०यू०' शीर्षक से परिसर में उपलब्ध ११५ वृक्षों, ५७ प्रजाति के पक्षियों तथा १०० जंगली फूलों का संचयन चित्र प्रदर्शन के माध्यम से अत्यधिक आकर्षक व मोहक ढंग से दर्शाया।

संरचना

'प्रज्ञा कुंज' २०० सीटों वाला छात्रावास निर्माणाधीन है। इसके निर्माण के बाद महिला महाविद्यालय की छात्राओं के रहने की समस्याओं का निराकरण कुछ हद तक अवश्य हो सकेगा। महामना जी के विचार, आदर्श और मूल्य आज भी छात्र-छात्राओं के लिए प्रासंगिक हैं और निश्चित रूप से वे युवा पीढ़ी को समाज तथा देश के प्रति सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित करते हैं। महिला महाविद्यालय की छात्राएँ भविष्य की परम्परा की निर्माणकर्त्री हैं। यह संस्था नवीन विचारों का उद्गम करती है। वास्तव में इसका स्वरूप अद्भुत है, क्योंकि यह मस्तिष्क में नूतन विचारों की रचना करती और परस्पर संबंध बनाने की कला सिखाती है और ज्ञान का अन्धानुकरण न करके सत्य पर आधारित विचारों को स्थापित करती है।

नवनिर्मित लेक्चर थियेटर कॉम्प्लेक्स

२.१.४. अध्ययन केन्द्र

२.१.४.१. खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र
२.१.४.२. पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र
२.१.४.३. आनुवांशिकी विकार केन्द्र
२.१.४.४. डी.एस.टी.-अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र
२.१.४.५. नेपाल अध्ययन केन्द्र
२.१.४.६. महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र
२.१.४.७. मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र
२.१.४.८. समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र
२.१.४.९. सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र
२.१.४.१०. मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र
२.१.४.११. हाइड्रोजन ऊर्जा केन्द्र
२.१.४.१२. नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इकाई/केन्द्र

२.१.४.१. खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र

खाद्य विज्ञान प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना २००८ में हुई और यह जैव खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अनुसंधान की क्षमता को बढाने के लिए जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा अनुदानित है। इसका अधिदेश खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर तथा डाक्टरेट कार्यक्रम को उपलब्ध कराना तथा तरल खाद्य पदार्थ जैसे डेरी खाद्य पदार्थ, सब्जी प्रसंस्करण, खाद्य जैव प्रौद्योगिकी, जैव उत्प्रेरक तथा किण्वण तकनीक जैसे मुख्य क्षेत्रों में अनुसंधान कराना है।

२०११ - २०१२ में किए गए कार्य का संक्षिप्त वर्णन

खाद्य विज्ञान प्रौद्योगिकी केन्द्र ने अपना शैक्षिक कार्यक्रम जारी रखते हुए स्नातकोत्तर के ११ तथा डाक्टरेट के ६ छात्रों को छात्रवृत्ति सहित दाखिला दिया। द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने भारत की शीर्ष खाद्य उद्योगों में संयंत्र प्रशिक्षण प्राप्त किया। गुण समृद्ध आंतरिक डेरी उत्पादों की जीवावस्था बढ़ाने तथा सब्जी प्रंसस्करण करने के लिए अनुसंधान कार्यक्रम चलाया गया। केन्द्र को विभिन्न संस्थाओं जैसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय से अनुसंधान हेतु अनुदान प्राप्त हुआ। केन्द्र के पास दुग्ध एवं फल-सब्जी प्रसंस्करण हेतु एक प्रायोगिक संयंत्र, सभी आधुनिक उपकरणों युक्त खाद्य गुणवत्ता सुधारने हेतु एक प्रयोगशाला है।

कार्यक्रम और गतिविधियों की उपलब्धियाँ

खाद्य विज्ञान प्रौद्योगिकी केन्द्र द्वारा ''किणुन पदार्थों के विकास में हाल के अग्रिम बदालावों'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा फल एवं सब्जियों के उत्पादकों तथा प्रंसस्करणकर्ताओं के तीन दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। केन्द्र, चिकित्सा विज्ञान संस्थान तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के साथ सहयोग कर खाद्य विज्ञान प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अनुसंधान कर रहा है। अनुसंधान के मुख्य क्षेत्र डेरी उत्पाद, फल एवं सब्जी प्रंसस्करण, खाद्य जैव प्रौद्योगिकी, किण्वन तकनीक, जैव उत्प्रेरक तकनीक तथा कार्यात्मक खाद्य पदार्थों का विकास आदि है। विभिन्न क्षेत्रों में किए जा रहे अनुसंधान कार्यों के मुख्य अंश इस प्रकार है।

१. डेरी खाद्य उत्पाद

कम उर्जीय बाल मिठाई की तकनीक का विकास

अनाक्सीकृत तत्वों से समृद्ध योगार्ट का विकास

२. फल एवं सब्जी प्रसंस्करण

एम.ए.पी. तकनीक द्वारा मशरुम की जीवावस्था में वृद्धि पर अध्ययन

अनार, संतरा तथा अदरक जूस का प्रयोग कर जैव सक्रिय यौगिकों से समृद्धयुक्त पेय पदार्थ का विकास

३. खाद्य जैव प्रौद्योगिकी

गन्ना मौलेसिस से लैक्टिक अम्ल का उत्पादन

४. जैव उत्प्रेरक तथा किण्वन तकनीक

कृषि उद्योगों के व्यर्थ पदार्थों से रैमनोसाइडेस जैव उत्प्रेरक का उत्पादन

स्टार्च से सी. जी. टी. एएस जैव उत्प्रेरकों का उत्पादन

५. अनाज पर आधारित कार्यात्मक भोजन

सॉरगम के आटे तथा इनूलिन का प्रयोग कर उच्च टैशे तथा निम्न उर्जीव बिस्कुट बनाने की विधि का मानकीकरण

स्पाइरुलिया आधारित बिस्कुट की विधि का मानकीकरण

त्वरित देने हेतु दाल की प्रक्रिया का विकास

२.१.४.२. पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र

विज्ञान संकाय के अर्न्तगत पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना विश्वविद्यालय के सभी पर्यावरणीय कार्यक्रमों के समन्वय स्थापित करने एवं पर्यावरण मित्रवत् तकनीकी विकसित करने हेतु की गयी।

केन्द्र द्वारा संचालित कार्यक्रम

पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में एम०एससी० (टेक) केन्द्र द्वारा स्नातकोत्तर स्तर का त्रिवर्षीय (छः सेमेस्टर) पाठ्यक्रम राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में संचालित किया जाता है। इस कोर्स में छात्रों का चयन राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा के द्वारा किया जाता है। पाठ्यक्रम का मुख्य उददे्श्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण आंकलन, प्रबन्धन, इ०आई०ए०, आई०एस०ओ० प्रमाणीकरण, पर्यावरण विधि तथा पर्यावरणीय खतरों आदि के प्रबन्धन के बारे में विशेषज्ञों को तैयार करना है। यह एक बहुत ही उपयोगी डिग्री है जिसे प्राप्त करने के बाद छात्रों को विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, औद्यौगिक क्षेत्रों, मंत्रालय, न्यायालय, शोध संस्थानों, अंर्तराष्ट्रीय संस्थानों, प्रशासन एवं गैर सरकारी संगठनों में नियुक्ति मिल सकती है।

केन्द्र द्वारा पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी में डाक्टर ऑफ फिलोसॉफी की उपाधि हेतु शोध भी प्रारभ्भ किया गया है। जिसमें नेट अथवा क्रेट में उत्तीर्ण छात्रों को विश्वविद्यालय के नियमानुसार दाखिला दिया जाता है।

जल संरक्षण कार्यक्रम

भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय के सहयोग से केन्द्र ने जल समस्या के समाधान हेतु जल संरक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किया। वर्षा जल संचयन, भू-जल पुर्नभरण के लिए विश्वविद्यालय परिसर में ५ तालाबों का पुनरोद्धार एवं ७ स्थानों पर रुफ-टॉप रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाया गया। जन सहभागिता एवं जागरूकता के लिये विश्वविद्यालय के चारों तरफ ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न ग्राम सभाओं में ११ जल संरक्षण समितियों का गठन किया गया। प्रत्येक जल संरक्षण समिति में ग्राम प्रधान को संयोजक एवं १० महिला एवं १० पुरुषों को सदस्य के रुप में चयनित किया गया।

एन.सी.सी., एन.एस.एस., गैर सरकारी संगठनों एवं सरकारी क्षेत्रों से विद्यार्थियों सहित २५० जल संरक्षण समितियों के सदस्यों को प्रशिक्षित किया गया।

सेमिनार /सिम्पोजिया/वर्कशाप एवं डाक्यूमेंट्री फिल्म

केन्द्र द्वारा ''रिसेन्ट एडवांसेस इन इन्वायरमेन्टल साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी'' पर एक अर्न्तराष्ट्रीय कांग्रेस तथा राष्ट्रीय स्तर के कार्यशाला का आयोजन किया गया तथा आम लोगो को वर्षा जल संचयन, भू-जल पुर्नभरण हेतु प्रशिक्षित करने के लिए एक डाक्यूमेंट्री फिल्म का भी निर्माण किया गया।

प्रौद्योगिकी स्थानान्तरण कार्यक्रम

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की इच्छाओं के अनुरुप विश्वविद्यालय द्वारा अर्जित ज्ञान को आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुचाने हेतु प्रौद्योगिकी स्थानान्तरण कार्यक्रम भी केन्द्र द्वारा शुरु किया गया है। जिसका मुख्य उददे्श्य हैं-१. क्षेत्र विशेष पर आधारित पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान करना। २. प्रकृति एवं मनुष्य द्वारा उत्पन्न संसाधनों की खोज करना। ३. विश्वविद्यालय परिसर, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध पर्यावरण मित्रवत तकनीकियों की पहचान करना। ४. उपलब्ध तकनीकियों की ग्रामीण क्षेत्रों में क्रियान्वयन के लिए जांच एवं प्रदर्शन करना। ५. क्षेत्र विशेष हेतु नयी पर्यावरण मित्रवत तकनीकियों का विकास करना।

जैव विविधता पार्क

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के दक्षिणी परिसर में ५०० एकड़ भूमि पर जैव विविधता पार्क की स्थापना की गयी है इसमें विन्ध्य क्षेत्र की १७४ पादप जातियों की पहचान की गयी है जिनमें से २२ अत्यन्त दुर्लभ प्रजातियां है। इस जैव विविधता पार्क के मुख्य उददे्श्य है:

- जैव विविधता का आंकलन करके सामान्य दुर्गम देशों एवं विन्ध्य क्षेत्र हेतु आँकड़ा जमा करना।
- दुर्लभ, अति दुर्लभ प्रजातियों की पहचान करके उनके संरक्षण हेतु योजना तैयार करना।
- जलीय एवं भूमि पर पाये जाने वाले पौधों के जीन के लिए जीन बैंक की स्थापना करना तथा विन्ध्य क्षेत्र में पाये जाने वाली सभी प्रजातियों को जैव विविधता पार्क में लगाना।
- जल एवं मृदा के संरक्षण की योजनाओं का उपयोग जैव विविधता पार्क के विकास हेतु करना।
- जन जागरण एवं उचित प्रबन्धन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करना।

गंगा जल प्रदूषण एवं गंगा घाटी संरक्षण कार्यक्रम

राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन अथॉरिटी, भारत सरकार के विशेषज्ञ सदस्य के रूप में माननीय प्रधानमंत्री द्वारा केन्द्र के समन्वयक प्रो. बी.डी. त्रिपाठी नामांकित है।

पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र ने गंगा से सम्बन्धित पर्यावरणीय समस्याओं के आंकलन हेतु इस कार्यक्रम का प्रारम्भ किया है इसके अर्न्तगत मल-जल एवं कारखानों से उत्पन्न प्रदूषित जल, शव-दाह से उत्पन्न प्रदूषण का आंकलन किया जा रहा है इस कार्यक्रम के प्रमुख उददे्श्य है-

- गंगा नदी के प्रमुख प्रदूषण स्रोतों की जाँच एवं आंकलन करना।
- मल- जलशोधन संयत्रों की जाँच करना।
- मल जल का शुद्विकरण एवं भू-जल का पुर्नभरण।
- गंगा जल प्रदूषण को जैविक विधियों द्वारा नियंत्रित करना।
- जैव विविधता का आंकलन एवं संरक्षण करना।
- गंगा जल प्रदूषण का सामाजिक एवं अर्थव्यस्था पर पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन करना।
- गंगा जल प्रदूषण के उचित प्रबन्धन हेतु जन जागरण कार्यक्रम चलाना।

२.१.४.३. आनुवांशिकी विकार केन्द्र

प्रारम्भ में डीब्रीट्री. द्वारा वित्तपोषित (२००६-२०११), आनुवांशिक रोग केन्द्र २००८ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा विज्ञान संकाय में स्थापित एक नया केन्द्र है। यह एक श्रेष्ठ केन्द्र के रूप में रोगों की जांच, शिक्षण प्रशिक्षण एवं मानव आनुवांशिकी क्षेत्रों में शोध कार्यो में संलग्न है। रोग के आणविक कारणों को समझ करके तथा उनके उपचार एवं उचित प्रबंधन की खोज करके आनुवांशिक रोगों के भार को कम करना इस केन्द्र का संकेन्द्रण है। यह केन्द्र गुणसूत्रीय व जेनेटिक रोगों की जांच द्वारा रोगियों को सेवा प्रदान करता है। इसमें एक-एक वार्षिक गुणसूत्रीय, जेनेटिक व आणविक नैदानिकी पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रारम्भ किया गया है, जिसके प्रथम बैच के छात्रों ने इस वर्ष वार्षिक परीक्षा सम्पन्न की है। पिछले वर्ष के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों का विवरण निम्नलिखित है:

डीएमडी.एवं β थैलीसिमिया को सम्मिलित करते हुए लगभग ५५० रोगियों का गुणसूत्रीय/जेनेटिक रोगों की जांच की गयी।

थैलीसिमिया की जन-समूह (बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, पूर्वी उ.प्र.से १६००) पर जांच करने से ज्ञात हुआ कि इसकी संवाहक की बारम्बारता ३% है, जो अन्य स्थानों की तुलना के लगभग बराबर या थोड़ी कम है।

पूर्वी भारतीय क्षेत्रों (पूर्वी उ.प्र., बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, छत्तीसगढ़) के स्वस्थ जन-समूहों पर एक सर्वेक्षण द्वारा ज्ञात हुआ कि लगभग२५% जन-समूह में हाइपरहोमोसिस्टीनेमिया (hypHcy) है। hypHcy अनेक रोगों (हृदय-वक्ष, न्यूरल-ट्यूब डिफेक्ट इत्यादि) के होने के लिए एक खतरा है।

hypHcy के प्रति संवेदनशीलता एक प्रबल जेनेटिक सम्बन्ध प्रदर्शित करता है, परन्तु इस जन-समूह में hypHcy का प्रमुख कारण विटामिन-बी १२ की कमी है; अध्ययन किये गये नमूनों में ४०% से अधिक में विटामिन बी-१२ की कमी पायी गयी है।

चिरे-हाथ/पैर विकृति (split-hand/foot malformation) के लिए एक अकेला गुणसूत्रीय लोकस 10q25.1 खोजा गया।

कटे होंठ एवं तालू के लिए भी एक नया गुणसूत्रीय लोकस 16q12.2 खोजा गया। इन खोजों को प्रकाशन के लिए लिखा जा रहा है।

यह केन्द्र अपनी शोध एवं जांच प्रक्रियाएँ जीव-विज्ञान एवं जैव-अभियांत्रिकी विभाग, आई.आई.टी, कानपुर, बाल-रोग विभाग, नेत्र-रोग विभाग, दंत-रोग विभाग, आईएमएस, बीएचयू.और जी एस मेमोरियल प्लास्टिक सर्जरी हास्पिटल एवं ट्रॉमा सेन्टर, वाराणसी के सहयोग से करता है।

शोध के मुख्य विषय:

केन्द्र में शोध के मुख्य विषय 'आणविक मानव आनुवांशिकी' है, जिसमें प्रमुख (i) गुणसूत्रीय रोग, (ii) कटे होंठ एवं तालू विकृतियां एवं (iii) कुछ जैव-रासायनिक पथों में जीन-विभिन्नताओं और उनका

रोगों पर असर के लिए जन-समूहों पर सर्वेक्षण हैं। यह केन्द्र कोशिका-आनुवांशिक एवं आणविक-आनुवांशिक जांच द्वारा रोगियों को सेवाएं प्रदान करता है। यह पूर्वी भारत में वाराणसी एवं इससे जुड़े हुए क्षेत्रों में इस प्रकार का एक अकेला केन्द्र है।

केन्द्र में उपलब्ध प्रयोगशाला सुविधाएं :

इस केन्द्र में शोध व प्रशिक्षण हेतु निम्नलिखित विशेष प्रयोगशाला सुविधाएँ उपलब्ध है :

अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक जन्तु-ऊतक संवर्धन

कैरियोटॉइपिंग कार्य व्यवस्था एवं प्रतिदीप्ति सूक्ष्मदर्शिकी

पॉलिमिरेज शृंखला अभिक्रिया (PC)

डी.एन.ए. अनुक्रमण स्वचालित डी.एन.ए. अनुक्रमण

माइक्रोसैटेलाइट टाइपिंग एवं जीनोटाइपिंग

जैल-प्रलेखन तंत्र

उपरोक्त अत्याधुनिक सुविधाओं का सफलतापूर्वक प्रयोग रोगियों की सेवा और विभिन्न शोध-कार्यक्रमों (आधारभूत एवं चिकित्सकीय दोनों) में हो रहा है।

यह केन्द्र प्रत्येक वर्ष लगभग ५०० रोगियों, जो सम्पूर्ण पूर्वी उत्तर-प्रदेश एवं पश्चिमी बिहार से निर्दिष्ट किये जाते हैं, के लिए कोशिका आनुवांशिक एवं आणविक जांच की सुविधा अत्यन्त निम्न दरों पर करता है।

संचालित अनुसंधान परियोजनाएँ

क्र. सं.	परियोजना का नाम	अन्वेषक का नाम	फण्डिंग बॉडी	बजट (रु. लाख में)
१.	प्रोग्राम सपोर्ट आन जेनेटिक डिस्ऑर्डर्स (कोर ग्रान्ट)	मुख्य अंवेषक: आर .रमन सहायक अंवेषक: ए. कुमार सहायक अंवेषक: एस के सिंह	डीबीटी	३९४.८१
२.	मालीक्यूलर जेनेटिक एनालिसिस आफ ओरोफेसियल डिस्आर्डर्स	मुख्य अंवेषक: आर .रमन सहायक अंवेषक: एस. के. सिंह सहायक अंवेषक: एस. गणेश	डीबीटी	२५.६८
३.	ए पापुलेशन स्टडी आन द १-कार्बन मेटाबालिज्म पैथवे जीन्स लेवल आफ होमोसिस्टीन, न्यूट्रीशन स्टेट्स एण्ड डिजीज ससेप्टेबिलीटी	मुख्य अंवेषक: आर .रमन	डीबीटी	२७.१३
४.	जेनेटिक्स आफ टूथ डेवलपमेंट: जीन्स अण्डरलाइंग टूथ एजेनेसिस इन ह्यूमन	मुख्य अंवेषक: पी दास सहायक अंवेषक: आर बंसल	डीबीटी	३९.०
५.	इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवेलपमेंट फार सेल कल्चर	पी. दास, ए. के. राय, ए. अली	बीएचयू.	२.७

अन्य परियोजनाएँ

केन्द्र में अन्य महत्वपूर्ण अनुसंधान परियोजना प्रारम्भ की गयी है उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

क्र. सं.	परियोजना का नाम	अन्वेषक का नाम
१.	जीनोमिक्स ऑफ इन्टेस्टिनल गट फ्लोरा	राजीव रमन
२.	जीनोमिक्स ऑफ डिस्टोनिया	परिमल दास
३.	पार्किंसंस डिज़ीज	परिमल दास
४.	जेनेटिक एनालिसिस ऑफ दि क्लीनिकल डाइवर्सिटी इन क्रोमोसोमल डिसऑर्डर्स (डाउन सिन्ड्रोम, टर्नर सिन्ड्रोम)	अमित कुमार राय
५.	जीनोमिक्स ऑफ कंजेनाइटल लिम्ब मालफारमेशन्स	अख्तर अली

भविष्य की योजनाएँ

शिक्षण : इस केन्द्र में शैक्षिक सत्र २०११-२०१२ से गुणसूत्रीय, आनुवांशिक व आणविक जांच पर एक वर्षीय स्नातकोत्तर सनद पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इसका उद्देश्य तकनीकी रूप से भली-भाँति प्रशिक्षित मानव-संसाधनों का निर्माण करना है जो अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं, रोग-जांच केन्द्रों, जैव-आणविक और परमाणु-चिकित्सा प्रयोगशालाओं में कार्य कर सकें।

तकनीकी विकास : आईएमएस, बीएचयू. के विभाग (नेत्र-रोग विभाग एवं अस्थि रोग विभाग) तथा जैव-अभियांत्रिकी विभाग, आईटी, बीएचयू.के सहायोग से विभिन्न उतकों के स्टेम सेल संवर्धन के तकनीकी का विकास करना और उन्हें उपचार हेतु उपलब्ध कराने की योजना बनाई गई है।

यह केन्द्र टैक-पॉकिलमिरेज़ (जो व्यवसायिक रूप से एक मंहगा अभिकर्मक है) और इससे सम्बन्धित प्रतिरोध विलयन (विभिन्न स्तरों पर जांचा गया है) का संश्लेषण भी करता है, और आग्रह करने पर अन्य प्रयोगशालाओं को प्रदान करने के लिए तैयार है।

शोध कार्य: प्रारम्भ से जारी शोध कार्यक्रमों के साथ-साथ कुछ नये प्रश्नों का प्रारम्भ, जैसे बांझपन की जीनोमिक्स, चेहरे की विकृतियां और अनेक कार्यो को प्रभावित करने वाले उपापचय-जालों का जनसमुदायन जेनेटिक्स।

२.१.४.४. डी.एस.टी.-अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र

(विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तपोषित)

डी.एस.टी.-अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विशिष्ट क्षेत्रों में कोर ग्रुप अनुसंधान सुविधाओं को स्थापित करने एवं गणितीय विज्ञानों में अनुसंधान को प्रोन्नत करने के लिये स्थापित किया गया।

डी.एस.टी.–सी. आई. एम. एस. ने सन् २०११-१२ में विभिन्न क्रिया-कलापों का संचालन किया। राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं गणितीय विज्ञान के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा आमन्त्रित व्याख्यानों का आयोजन सफल था।

एक ही समय में, सी. आई. एम. एस. संकायों, छात्रों के लिये उत्कृष्ट आधारभूत संरचना को बढ़ाने, सुविधाओं को विकसित करने एवं विज़िटिंग गेस्टों के शैक्षिक गतिविधियों को एक प्रेरक के रूप में उत्तरदायित्व लेने और जीवन्त पर्यावरण को विकसित करने में लगा हुआ है।

केन्द्र की गतिविधियाँ

प्रशिक्षण कार्यक्रमों/कार्यशालाओं का आयोजन

व्याख्यानों का आयोजन

विशिष्ट एवं सम्बन्धित क्षेत्रों में अनुसंधान

शैक्षिक एवं बाह्य शोध गतिविधियाँ में सीआईएमएस के सदस्यों के माध्यम से भागीदारी/अन्तर्क्रिया

आधारभूत संरचनीय सुविधाओं की वृद्धि (जैसे, भवन, सॉफ्टवेयर, पुस्तकालय के लिये पुस्तकों के साथ कम्प्यूटेशनल सुविधाएँ)

डीएसटी प्रायोजित राष्ट्रीय कार्यशाला/प्रशिक्षण कार्यक्रम

१. वर्कशाप ऑन डिफरेन्शियल ज्योमेट्री (डब्ल्यूडीजी); मई ०२-११, २०११

२. वर्कशाप ऑन ग्रॉफ थ्योरि एण्ड इट्स एप्लीकेशन्स (डब्ल्यूजीटीए); मई २३-२८, २०११

३. वर्कशाप ऑन मल्टीवैरिएट एनालिसस: मैट्रीक्स मेथड्स (डब्ल्यूएमएएमएम); २८ नवम्बर, २०११ से ३ दिसम्बर, २०११

४. एडवान्स्ड ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन आप्टीमाइजेशन एण्ड इट्स एप्लीकेशन (एटीपीओए); नवम्बर २३-२९, २०१२

५. फर्स्ट लैटेक्स ट्रेनिंग प्रोग्राम; फरवरी १३-१८, २०१२

६. सेकेन्ड लैटेक्स ट्रेनिंग प्रोग्राम; २७ फरवरी, २०१२ से ३ मार्च, २०१२

७. थर्ड लैटेक्स ट्रेनिंग प्रोग्राम; मार्च १९-२४, २०१२

८. नेशनल कान्फ्रेंस ऑन बेशियन स्टैटिस्टिक्स एण्ड इट्स एमर्जीग एप्लीकेशन्स (बीएसईए); स्पॉन्सर्ड बाई आईसीएमआर, दिसम्बर ९-१०, २०११

इनके अतिरिक्त इस वर्ष के दौरान यूजीसी एकेडमिक स्टाफ कॉलेज के तत्त्वाधान में १० एसपीएसएस प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित किये गये।

डिस्टिंगविश्ड वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान

१. प्रो. अविनाश वी. खरे, राजारमन्ना फेलो (डीएई), आईआईएसईआर पुणे। अप्रैल ७-९, २०११

२. प्रो. वी. वी. मेनन, रिटायर्ड प्रोफेसर, डिपार्टमेन्ट ऑफ एप्लाएड मैथेमेटिक्स, बीएचयू, वाराणसी; अप्रैल २१-२९, २०११

३. प्रो.एस.बी.जोशी, डिपार्टमेन्ट ऑफ मैथेमेटिक्स, वालचन्द कॉलेज ऑफ इंजिनियरिंग, सांगलि; जून २-३, २०११

४. प्रो.जी.पी.सिंह, डिपार्टमेन्ट ऑफ मैथेमेटिक्स, वी.एन.आई.टी., नागपुर; १७ जून, २०११

५. प्रो. डी. एन. वर्मा, टाटा इन्स्टिटयूट ऑफ फन्डामेन्टल रिसर्च, मुम्बई; जूलाई २० और २२, २०११

६. प्रो.ए.एम.मथाई, डाइरेक्टर, सीएमएस, पाला; अगस्त १-२, २०११

७. प्रो. डी. एन. वर्मा, टाटा इन्स्टिटयूट ऑफ फन्डामेन्टल रिसर्च, मुम्बई; १४ अक्टूबर, २०११

८. प्रो गैबर कॅसे, फैक्ल्टी ऑफ मैथेमेटिक्स एण्ड कम्प्यूटर साइंस, बेब्स-बोल्टाई यूनिर्वसिटी, क्लज़, रोमानिया; १६ नवम्बर, २०११

९. प्रो.जॉयदेव चट्टोपाध्याय, आईएसआई कोलकाता; दिसम्बर १-२, २०११

१०. प्रो. राम गोपाल विश्वकर्मा, यूनिर्वसिटी ऑफ जेकेटकस, मैक्सिको; ७ दिसम्बर, २०११

११. प्रो.जी.राजशेखरन, आईएमएस, चेन्नई; दिसम्बर ८-१०, २०११

१२. प्रो. ओल्डरिच कौवॉल्सकि, चार्लेस यूनिर्वसिटी, केच रिपब्लिक; दिसम्बर १४-१७, २०११

१३. प्रो.कोजी मत्सुमोटो, यमगत यूनिर्वसिटी, जापान; दिसम्बर १५-१६, २०११

१४. प्रो. सी. एस. अरविन्द, टीआईएफआर, सेन्टर फॉर एप्लिकेबल मैथमेटिक्स, बंगलोर; जनवरी ३-६, २०१२

१५. प्रो.अशोक डब्ल्यू.देशपाण्डेय, गेस्ट फैक्ल्टी, यूनिर्वसिटी ऑफ कैलिफोंनिया एण्ड एडजक्ट प्रोफेसर, यूनिर्वसिटी ऑफ पूणे; ९ जनवरी, २०१२

१६. प्रो. वाई. एच. किम, ग्वाँग्जू इन्स्टिट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, साउथ कोरिया; जनवरी २३, २०१२

१७. प्रो. एच. डब्ल्यू. हेथकोट, इमेरिट्स प्रोफेसर, यूनिर्वसिटी ऑफ लोवा, यूएसए; ३१ जनवरी, २०१२

१८. प्रो. जे. बी. शुक्ला, एक्स-प्रोफेसर, आईआईटी, कानपुर; ३१ जनवरी, २०१२

१९. प्रो. मशूद चाइचियान, डिपार्टमेन्ट ऑफ फ़िजीकल साइंस एण्ड हेलसिन्कि इन्स्टिट्यूट ऑफ फिज़िक्स, यूनिर्वसिटी ऑफ हेलसिन्कि, फिन्लैण्ड, ८ फरवरी, २०१२

२०. प्रो.अंका टूरैनू, यूनिर्वसिटी ऑफ हेलसिन्कि, फिन्लैण्ड, ८ फरवरी, २०१२

२१. प्रो. पवन के. जैन, फॉर्मली प्रोफेसर एण्ड हेड, डिपार्टमेन्ट ऑफ मैथमेटिक्स, यूनिर्वसिटी ऑफ दिल्ली; फरवरी २७-२९, २०१२

२२. प्रो.आर. एस.सिंह, यूनिर्वसिटी ऑफ गुलेफ, कनाडा; २९ फरवरी, २०१२

२३. प्रो.एच.एम.श्रीवास्तव, इमेरिट्स प्रोफेसर ऑफ मैथमेटिक्स, यूनिर्वसिटी ऑफ विक्टोरिया, कनाडा; मार्च १२-१३, २०११

२४. प्रो.रेखा श्रीवास्तव, प्रोफेसर ऑफ मैथमेटिक्स, यूनिर्वसिटी ऑफ विक्टोरिया, कनाडा; १५ मार्च, २०११

२५. डॉ. प्रशान्त कु.श्रीवास्तव, आईआईटी, पटना; २४ मार्च, २०११

२६. डॉ.एम.पी.मिश्रा, इग्नू, नई दिल्ली; २९ मार्च, २०११

२७. प्रो. वी. के. भट, हेड, डिपार्टमेन्ट ऑफ मैथमेटिक्स; एसएमवीडी यूनिर्वसिटी, कटरा; ३० मार्च, २०११

पुस्तकालय सुविधाएं : पुस्तकों की संख्या : १९१ पुस्तकें

ग्राफ थ्योरी एवं इनके अनुप्रयोगों (डब्ल्यूजीटीए-२०११) पर राष्ट्रीय निदेशक कार्यशाला

२.१.४.५. नेपाल अध्ययन केन्द्र

कार्यशाला एवं व्याख्यान

नेपाल अध्ययन केन्द्र द्वारा 'क्षेत्रीय अध्ययन मे शोध प्रविधि' विषय पर एक सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जो न्यू पी० जी० बिल्डिंग, सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सेमिनार हाल में ०३ अगस्त से ०९ अगस्त, २०११ तक चली। कार्यशाला का शुभारम्भ प्रो० अनिल कुमार जैन, संकाय प्रमुख, सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। केन्द्र की समन्वयिका प्रो० अंजू शरण उपाध्याय ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला एवं क्षेत्रीय अध्ययन में शोध प्रविधि की महत्ता पर भी प्रकाश डाला। सात दिवसीय कार्यशाला के दौरान वाराणसी के विभिन्न संस्थानों एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों एवं विभागों से आए विद्वानों ने क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान अपनायी जाने वाली विभिन्न शोध प्रविधियों एवं उससे सम्बन्धित विषयों पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं सम्बद्ध कालेजों के अलावा वाराणसी के अन्य विश्वविद्यालयों एवं कालेजों के साठ से अधिक प्रतिभागियों ने कार्यशाला मे भाग लिया। नेपाल अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के डॉ० नृपेन्द्र प्रताप सिंह एवं श्रीमती अरूणा राई, ने कार्यशाला के सह-समन्वयक के रूप में कार्य किया।

नेपाल अध्ययन केन्द्र द्वारा अगस्त माह में 'क्षेत्रीय अध्ययन के शोध प्रविधि' विषय पर आयोजित कार्यशाला की सफलता एवं विद्यार्थियों की मांग को ध्यान मे रखते हुए ३१ अक्टूबर से ०६ नवम्बर २०११ को इसी विषय पर पुन: एक सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। पिछली कार्यशाला में जिन विद्यार्थियों को अवसर नहीं दिया जा सका था, इस बार उन्हें प्राथमिकता दी गई। कार्यशाला का आयोजन न्यू पी०जी० बिल्डिग, सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सेमिनार हाल मे किया गया। कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को प्रशिक्षण एवं ज्ञान देने हेतु विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा व्याख्यान दिया गया। करीब ८० से अधिक प्रतिभागियों ने कार्यशाला मे सहभागिता की। कार्यशाला का संचालन एवं समन्वयन नेपाल अध्ययन केन्द्र के डॉ० नृपेन्द्र प्रताप सिंह एवं श्रीमती अरूणा राई द्वारा किया गया।

१३ अक्टूबर, २०११ को न्यू पी०जी० बिल्डिंग, सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सेमिनार हाल मे डॉ० निहार नायक, एसोसिएट फेलो, इन्सटीट्यूट फॉर डिफेन्स स्टडीज़ एण्ड एनालिसिस, नई दिल्ली, द्वारा 'वर्तमान नेपाल : चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ' शीर्षक पर एक विशिष्ट व्याख्यान दिया गया। उनका व्याख्यान वर्तमान नेपाल के राजनीतिक विकास पर संकेन्द्रित था जो एक प्रजातांत्रिक देश के रूप में उभर रहा है। उन्होंने माओवादी दल की स्थिति पर भी अपना विचार प्रस्तुत किया। इस व्याख्यान में बड़ी संख्या में शिक्षकगण, शोधार्थीगण एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की। व्याख्यान के बाद एक अत्यन्त रोचक वैचारिक आदान-प्रदान का दौर भी चला।

शोध छात्रों का पंजीकरण

नेपाल अध्ययन केन्द्र द्वारा पहली बार २०११-१२ सत्र में पीएच०डी० प्रोग्राम के तहत शोध छात्रों का पंजीकरण आरम्भ किया गया। इस सत्र में दो शोध छात्रों का शोध पंजीकरण हुआ।

सहभागियों का स्वागत करते हुए प्रो. अंजु शरण उपाध्याय, समन्वयिका, नेपाल अध्ययन केन्द्र

डॉ. एन.पी. सिंह द्वारा संचालित कार्यशाला

क्षेत्र में शोध प्रविधि पर कार्यशाला

''आज का नेपालः चुनौतियाँ एवं अवसर'' पर आयोजित व्याख्यान में श्रोतागण

२.१.४.६. महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र

'महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' महिला अध्ययन के क्षेत्र में देश के अग्रगामी केन्द्रों में से एक है तथा १९८८ से ही यह लैंगिक अन्याय एवं विषमता मिटाने की दिशा में अभिन्न योगदान दे रहा है। इसकी स्थापना वर्ष १९८८ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सातवीं योजना के अन्तर्गत की गयी थी। जब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कुछ विश्वविद्यालयों में महिला अध्ययन केन्द्र की स्थापना करने का निर्णय लिया तो उसने देश के सात मानिंद विश्वविद्यालयों को चुना जिनमें से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एक था। आज इसे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर ख्याति प्राप्त हो चुकी है। इसके उत्तम कार्य प्रदर्शन तथा प्रदेश में लैंगिक संवेदनशीलता प्रसारित करने के लिए इसके द्वारा किये गये सतत् प्रयास के परिणाम स्वरूप यू०जी०सी० निरीक्षण समिति ने १९९७ में इसे भारत का एक प्रमुख केन्द्र घोषित किया जो कि किसी भी महिला अध्ययन केन्द्र की श्रेष्ठता का उच्चतम मानक है।

अब तक यह ३२ परियोजनायें पूरी कर चुका है। इनमें मुख्य है- ''इण्डो-डच प्रोजेक्ट ऑन रूरल सेनीटेशन एण्ड हेल्थ एजुकेशन इन यू०पी०'' परियोजना। जिसमें २७ गाँवों तथा नौ हजार परिवारों पर अध्ययन किया गया। केन्द्र अब तक ४८ राष्ट्रीय परिसंवादों / कार्यशालाओं, ५७ समूह चर्चाओं एवं विशेष व्याख्यानों का आयोजन कर चुका है। हाल ही में महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान तथा राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय, पुणे के संयुक्त तत्वावधान में चार दिवसीय 'स्त्री केन्द्रित फिल्मोत्सव और फिल्म प्रशंसा कार्यशाला' का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था स्त्री की सिनेमाई अर्थ छवियों पर विमर्श करना एवं उस विमर्श के आलोक में स्त्री की एक सम्पूर्ण तस्वीर बनाना।

महिला चाहे वह जिस वर्ग, नस्ल, धर्म की हो वह हमेशा हाशिये पर ही रखी जाती है। हाशियेपन के क्या कारण है, कैसे हाशिये के लोगों को केन्द्र में लाया जा सके, इन्हीं सभी पहलुओं पर विचार करने हेतु केन्द्र ने एक संगोष्ठी का आयोजन १३-१४ मार्च २०१२ को किया। महिला अध्ययन को समझने, इसके अकादमिक विकास को आगे बढ़ाने एवं नये समाज की संरचना करने में महिला शोध प्रणाली एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसी कारण से महिला अध्ययन केन्द्र ने स्त्रीवादी अध्ययन पद्धति विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी २९-३० सितम्बर २०११ को आयोजित किया।

इसके अतिरिक्त केन्द्र, महिला अध्ययन के क्षेत्र में शिक्षण व प्रशिक्षण प्रदान करने में अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रहा है। अब तक केन्द्र ११ यूजीसी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित कर चुका है। इनमें से प्रत्येक कार्यक्रम तीन सप्ताह के रहे हैं और इसके द्वारा ४९३ से अधिक अध्यापक, अध्यापिकाओं को महिला अध्ययन में शिक्षित किया गया है। इसी क्रम में केन्द्र शोध छात्रों के लिए बारह अभिविन्यास पाठयक्रमों का भी आयोजन कर चुका है।

केन्द्र ने अन्य महिला अध्ययन केन्द्रों, गैर-सरकारी संस्थाओं और उच्चशिक्षा संस्थाओं के साथ एक समृद्ध सम्पर्क तन्त्र (नेटवर्किंग) विकसित किया है। इस वर्ष प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र का मुख्य ध्येय ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक स्वावलम्बन एवं शिक्षा रहा। केन्द्र द्वारा अमरा खैरा गाँव, वाराणसी में ग्रामीण व्यथित महिलाओं के लिए सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र तथा ग्रामीण महिला/बालिका शिक्षण केन्द्र चलाया जा रहा है।

केन्द्र ने विभिन्न कार्यक्रमों यथा-महिला अदालत, पोस्टर प्रतियोगिता तथा संकाय सदस्यों, छात्रों तथा गैर-सरकारी संस्थाओं के सदस्यों के साथ शैक्षणिक बैठकों में सक्रिय प्रतिभागिता की। केन्द्र ने

लैंगिक संवेदनशीलता सृजन सम्बन्धित अध्ययन सामग्री तथा जागरूकता सृजन के क्षेत्र में सराहनीय प्रगति की है। अब तक इसने हिन्दी में एक प्रशिक्षण पुस्तिका, २७ प्रोजेक्ट प्रतिवेदनों, विभिन्न पुनश्चर्या कार्यक्रमों, अभिमुखीकरण पाठ्यक्रमों एवं राष्ट्रीय परिसंवादों की ४१ से अधिक विवरण पुस्तिकाओं तथा द्विभाषीय त्रैमासिक पत्र ''नारी दर्पण'' के १२ अंक, ३ अवसरिक प्रपत्रों, १६ डोज़ीयर का प्रकाशन किया है। साथ ही सामयिक दो राष्ट्रीय परिसंवादो में प्रस्तुत किये गये प्रपत्रों के योग तथा परियोजना प्रतिवेदन से कुल ८ पुस्तकें प्रकाशित कर चुका है।

केन्द्र ने विभिन्न स्तरों पर संगठित करने के लिए किये गये प्रयास द्वारा अन्य विभागों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। अब तक यह केन्द्र तीन स्तरों पर सम्बन्धीकरण का कार्य कर चुका है: (१) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की सहोदर संस्थाओं के साथ, (२) वाराणसी के विभिन्न गैर सरकारी संस्थाओं के साथ; जिनमें प्रमुख है: वर्ल्ड लिट्रेसी ऑफ कनाडा, यू०पी० वालंटियरी हेल्थ एसोसियेशन, श्री शम्भुनाथ रिसर्च फाउन्डेशन, महिला समाख्या, अस्मिता आदि, (३) केन्द्र द्वारा अपना एक प्रकोष्ठ 'तेजस्विनी', आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, वाराणसी में स्थापित किया गया है। केन्द्र ढाँचागत सुविधाओं से समृद्ध है। केन्द्र का अपना एक साधन संपन्न पुस्तकालय, एक सुसज्जित परिसंवाद कक्ष है जहां इन्टरनेट सुविधा भी उपलब्ध है।

विभिन्न गतिविधियों का संक्षिप्त प्रतिवेदन : महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र महिला अध्ययन के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को संचालित करने वाला एक अतिशय सक्रिय केन्द्र है। वर्ष २०११-१२ कुछ प्रमुख गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं-

महिला अध्ययन में ग्यारहवाँ पुनश्चर्या पाठ्यक्रम ९-२९ अगस्त २०११ तक।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'स्त्रीवादी अध्ययन पद्धति' २९-३० सितम्बर, २०११ तक।

बारहवाँ अभिविन्यास पाठ्यक्रम २५ नवम्बर २०११- १३ दिसम्बर २०११ तक।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हाशियेपन की मध्यस्थता' १३-१४ मार्च २०१२ तक।

चित्रकला प्रतियोगिता १४ मार्च, २०१२।

विद्यार्थियों के लिए सुविधायें : १. अभिमुखीकरण पाठ्यक्रम, २. विविध प्रसार एवं सेवा गतिविधियों में विद्यार्थियों की भागीदारी, ३. पुस्तकालय में इन्टरनेट की सुविधा, ४. विद्यार्थियों के लिए समय-समय पर कार्यशाला का आयोजन, ५. परामर्श की सुविधा (व्यक्तिगत, शैक्षणिक, व्यावसायिक एवं पारिवारिक आदि)।

पुस्तकालय : महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र में उत्तम पुस्तकालय सुविधा है जिसमें ५० से अधिक शोधार्थियों के बैठने की क्षमता है। इस पुस्तकालय में कुल ३००० (उपहार स्वरूप प्राप्त पुस्तकों सहित) पुस्तकें हैं। १ अप्रैल २०११ से ३१ मार्च २०१२ के मध्य ९५ नवीन पुस्तकें क्रय की गयीं। केन्द्र में ९ पत्रिकायें, १ जर्नल तथा ८ दैनिक समाचार पत्र भी उपलब्ध हैं। पुस्तकालय अपने पाठकों को निरन्तर समाचार कर्तन सेवा प्रदान करता है। पुस्तकालय के पास आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/सम्मेलनों एवं महिलाओं से सम्बन्धित सरकारी प्रकाशन भी उपलब्ध हैं।

एकेडमिक स्टॉफ कॉलेज में आयोजित रिफ्रेशर कोर्स के दौरान सहभागी एवं विशेषज्ञ

२.१.४.७. मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आठवी पंचवर्षीय योजना में संस्तुत (एम०सी०पी०आर०): मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र की स्थापना वर्ष १९९८ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अन्तर्गत एक स्वतन्त्र, अन्तर्विषयक केन्द्र के रुप में समाज विज्ञान संकाय के अन्तर्गत की गई। मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र ने कुछ ही समयान्तराल में अपने विकास से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है। एक अन्तर्विषयक केन्द्र होने के कारण मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र विभिन्न विषयों के विद्वानों को शोध का अवसर प्रदान करता है एवं राजनीतिज्ञों, प्रशासनिक अधिकारियों तथा राजनयिकों, गैर सरकारी संस्थाओं एवं अन्य जो संघर्षो के निवारण में कार्यरत है, के लिए महत्वपूर्ण विचार स्थली बन गया है। एम०सी०पी०आर० राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार के संघर्षो के विश्लेषण एवं समाधान के लिए शोधरत है।

एम०सी०पी०आर० का एक प्रमुख उद्देश्य है- गोष्ठियों, वाद-विवाद एवं कार्यशालाओं का आयोजन करना। स्थापना के साथ ही अनेक राजनीतिज्ञ, प्रशासनिक अधिकारी एवं राजनयिक, गैर सरकारी संस्थाओं के सदस्य, शोध छात्र एवं छात्राएँ, शिक्षकगण एवं समाजसेवक केन्द्र की इस प्रकार की गतिविधियों में भाग ले चुके हैं। इस प्रकार की गोष्ठियां, परिचर्चाएं एवं कार्यशालाएं केन्द्र की संघर्ष विषयक सूचनाओं एवं शोध के लिए आकड़ों को विस्तृत करने में मददगार सिद्ध हुई हैं। गोष्ठियों, परिचर्चाओं एवं कार्यशालाओं से प्राप्त जानकारियों का केन्द्र के शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्य में उपयोग किया जाता रहा है।

बौद्धिक गतिविधियों के एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में उत्तर भारत में स्थापित मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र, भारत तथा विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण संसाधन केन्द्र के रूप में सेवारत है। मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र का समाज विज्ञान संकाय में होना तथा संकाय के शिक्षकगणों का शान्ति अध्ययन के प्रति रुझान एम० सी० पी० आर० के विकास का एक प्रमुख कारण रहा है एवं यह संकाय के छात्रों एवं शोधार्थियों को शान्ति अध्ययन संबंधी एक नवीन आयाम प्रदान करता रहा है।

उपलब्धियाँ

दिसम्बर २०१० में यूनेस्को द्वारा केन्द्र में प्रतिष्ठित ''यूनेस्को चेयर फॉर पीस एण्ड इन्टरकल्चरल अंडरस्टैंडिंग'' की स्थापना की गयी है।

सत्र २००९-१० में केन्द्र ने इन्टरनेशनल पीस रिसर्च इन्स्टीट्यूट, नार्वे के साथ शैक्षणिक एवं शोध कार्य में सहयोग हेतु सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया है।

सन् २००८ में केन्द्र ने संयुक्त राष्ट्र संघ के आदेश पत्र द्वारा स्थापित यूनिवर्सिटी फॉर पीस, कोस्टा रिका के साथ शांति अध्ययन के क्षेत्र में नये पाठ्यक्रम एवं परास्नातक पाठ्यक्रम में सह-शिक्षण की नयी तकनीकी के विकास के लिए सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है। इस समझौते के तहत केन्द्र में यूनिवर्सिटी फॉर पीस के कई विद्वतजनों ने विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों को प्रशिक्षण दिया है तथा केन्द्र के कुछ शिक्षकों ने संघर्ष समाधान के विभिन्न प्रतिमानों के संदर्भ में कोस्टा रिका में उच्चतर प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

सन् २००६ से ही संयुक्त राज्य अमेरिका-भारत शैक्षणिक फांउडेशन, नई दिल्ली ने मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र में फुलब्राइट-नेहरू प्रोफेसरशिप गठित किया है तथा तब से अब तक संयुक्त राज्य अमेरिका से पाँच फुलब्राइट प्रोफेसर एवं स्कॉलर केन्द्र में अध्यापन एवं शोध कार्य हेतु आ चुके है।

केन्द्र की गतिविधियों का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू समसामयिक पत्रों, कार्यशालाओं एवं संगोष्ठी रिपोर्ट तथा शोध प्रपत्रों के प्रकाशन का है। सन् २००३ से मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र अंतर्राष्ट्रीय सम्पादकीय समिति के निर्देशन में शोध पत्रिका ''संघर्ष प्रबंधन एवं विकास'' प्रकाशित कर रहा है।

प्रकाशन: मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र के शिक्षकों का कुछ अद्यतन प्रकाशन इस प्रकार है-

प्रो० प्रियंकर उपाध्याय, चेयरहोल्डर, यूनेस्को चेयर फार पीस एण्ड इन्टरकल्चरल अंडरस्टैंडिंग एवं समन्वयक, मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र

१. उपाध्याय, प्रियंकर ''एक्सप्लोरिंग इण्डियन पीस पर्सपेक्टिव इन न्यू मिलेनियम'' इन एचिन विनायक (एडि.) ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन पॉलिटिकल साइंस - वाल्यूम IIV इण्टरनेशनल रिलेशन्स, (ऑक्फोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: लंदन: २०१२)
२. ''कॉम्यूनल पीस इन इण्डिया: लेसन्स फ्रॉम मल्टीकल्चरल बनारस'' इन के. वेरिकू (एडि.) रिलिजन एण्ड सेक्यूरिटी इन साउथ एण्ड सेन्ट्रल एशिया, (रॉउटलेज: लंदन: २०११)

पुस्तकालय

केन्द्र के पास अपना एक पुस्तकालय है, जिसमें कई राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय पुस्तकें एवं शोध पत्रिकाएं शामिल है। केन्द्र की अपनी एक वेबसाइट (www.mcpr-bhu.org) है साथ ही केन्द्र के पास एक श्रेष्ठ डिज़िटल लाइब्रेरी भी मौजूद है जिसमें लगभग २००० प्रपत्र शामिल हैं, जो विभिन्न राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय किताबों, जरनल एवं समाचार पत्रिका से लिए गए है। केन्द्र ऑनलाइन प्रकाशन के माध्यम से उन लोगों को प्रोत्साहित करता है जो अपने लेख एवं विचारों को वेबसाइट के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहते है।

२.१.४.८. समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र

भारत गाँवों का देश है तथा गाँव के विकास में देश का विकास सन्निहित है। संपोषित विकास, आर्थिक सुधार और गाँव के आम आदमी की चिंता नवीन वास्तविकताएँ है। चुनौतियाँ फिर भी बरकरार हैं। इसके निराकरण हेतु भारत सरकार के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामीण विकास की अवधारणा के पश्चात् १९८० में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की पहल पर समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र की स्थापना की गयी।

समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की इकाई के रूप में सामाजिक विज्ञान संकाय के अधीन कार्य करता है एवं विश्वविद्यालय के अन्य संकायों, विभागों एवं संस्थानों से निरन्तर सहयोग रखता है। ग्रामीण विकास में संलग्न गाँव के तथा अन्य संगठनों के एवं उद्देश्यपूर्ण कार्यक्रमों के संजालीकरण में समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र सकारात्मक भूमिका निभाता है।

उपलब्धियाँ

- समन्वित ग्रामीण विकास केन्द्र द्वारा चिरईगाँव विकास खण्ड के अमौली गाँव में ग्राम्य वनौषधि औद्योगिक उत्पादन सहकारी समिति नामक संस्था का संचालन १९८७ से किया जा रहा है। इस औद्योगिक इकाई को वाराणसी जिला प्रशासन द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान कर समूचे प्रदेश में पहली बार औषधीय पौधों के आर्थिक विकल्प को खेती के अतिरेक स्वीकृति प्रदान की गयी है। साथ ही चिरईगाँव विकास खण्ड को हर्वल ब्लाक घोषित किया गया है।
- **सस्ते आवास का पुनर्निमाण-** नमूने के तौर पर प्रदेश में पहली बार सन् १९८० में केन्द्र द्वारा चयनित चिरईगाँव विकास खण्ड के गाँव सभा रूस्तमपुर की हरिजन बस्ती में निर्मित १० सस्ते आवास को वित्तीय सहायता प्रदान किया गया।
- केन्द्र द्वारा मेंहदीगंज, आराजीलाईन, भुपौली चहनियाँ, अमौली चिरईगाँव, भीषमपुर चकिया, विसौरी नौगढ़, में संचालित गाँव विकास के विविध कार्य जनसम्पर्क द्वारा तथा अन्य स्वंयसेवी संगठनो के माध्यम से केन्द्र के दिशा निर्देश में सम्पादित किये जा रहे हैं।
- केन्द्र द्वारा प्रशिक्षित करीब एक हजार की संख्या में औषधीय

उत्पादन कर्त्ता वाराणसी जनपद के ५०० दवा निर्माताओं के सम्पर्क से जड़ी-बूटी बेचकर जीवन यापन कर रहे हैं।

- रुरल फार्मेसी के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा प्रशिक्षित ग्रामीण चिकित्सकों द्वारा दूर दूराज के गाँव के मरीजों को केन्द्र द्वारा चिकित्सकीय परामर्श का कार्य सम्पादित किया जाता है।

केन्द्र द्वारा १९८२-८३ के दौरन चकिया विकास खण्ड के भीषमपुर गाँव में २० सस्ते आवास, ५२ गोबरगैस, स्वास्थ्य उपकेन्द्र, प्रदेश में पहली बार सौर ऊर्जा यंत्र का प्रदर्शन, वृक्षारोपण, मत्स्यपालन आदि के साथ ५२५ अम्बर चर्खा द्वारा स्वरोजगार देने की कल्पना का कार्य मूर्तरूप ले चुका है।

२०११-१२ के मुख्य कार्यक्रमों का विवरण

- **औषधीय पौध उत्पादन प्रशिक्षण:** औषधीय पौध उत्पादन प्रशिक्षण के एक वर्षीय कोर्स के शैक्षणिक सत्र २०११-२०१२ में कुल २९ छात्रों ने दाखिला लिया। जिसमें वाराणसी जनपद के आराजी लाइन, सेवापुरी, काशी विद्यापीठ, रामनगर, मिर्जापुर के सीखड़ ब्लाक तथा पॉच बिहार राज्य के प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।
- **महिला सशक्तीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम:** शैक्षणिक सत्र २०११-२०१२ में कुल ४१ महिला प्रशिक्षणार्थियों ने दाखिला लिया। जिसमें १९ प्रशिक्षणार्थी ११-१ बजे तथा २२ प्रशिक्षणर्थी दोपहर २-५ के बीच प्रशिक्षण ले रही है।
- सामाजिक विज्ञान संकाय के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा एक वर्षीय ग्रामीण विकास एवं प्रबंधन का पी० जी० डिप्लोमा कोर्स चलाया जाता है। जिसमें विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान संस्थान, कृषि विज्ञान संस्थान, प्रौद्योगिकी संस्थान तथा सामाजिक विज्ञान एवं अर्थशास्त्र से सम्बन्धित शिक्षक शिक्षण एवं प्रशिक्षण का कार्य करते है। २०११-२०१२ के सत्र मे कुल २३ छात्रों ने प्रवेश लिया और २० छात्र परीक्षा में सम्मिलित हुए।
- एक वर्षीय ग्रामीण विकास एवं प्रबंधन के पी.जी.डिप्लोमा कोर्स के २० छात्रों ने केन्द्र द्वारा चयनित आराजीलाइन के मोहनसराय गाँव में सर्वेक्षण का कार्य किया। छात्रों द्वारा चयनित शोध प्रपत्र का कार्य कृषि, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र विषयों के अन्तर्गत किये जा रहे विकास कार्यों पर आाधरित था।
- रूसी चिकित्सक के एक तीन सदस्यीय दल को १३ अक्टूबर से २६ अक्टूबर २०११ तक ग्रामीण विकास केन्द्र द्वारा संचालित औषधीय पौधों की खेती एवं पेड़-पौधों पर आधारित रोगों को ठीक करने की पारम्परिक चिकित्सकीय हुनर के बारे में जानकारी दी गयी। साथ ही ग्रामीण फार्मेसी एवं स्वास्थ्य सहकारिता के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया गया इस दल में सर्जन एलेक्जेंडर मिसुरिन, नेफ्रोलाजिस्ट डॉ. एकेटेरिना निकितिना और गायनाकोलाजिस्ट डॉ.ओवेजिहा स्वेतलाना शामिल थें। रूसी चिकित्सको का दल केन्द्र द्वारा संचालित चिरईगॉव ब्लाक स्थित अमोली गाँव में ''ग्राम्य वनौषधि औद्योगिक उत्पादन सहकारी समिति'' के सदस्यों द्वारा किये जा रहें औषधीय पौधों की खेती एवं दवा निर्माण के कार्यो का अवलोकन किया गया।
- ग्रामीण विकास केन्द्र द्वारा विद्यालय स्तर पर गंगा डाल्फिन को बचाने की सार्थक पहल की गई । इस कार्यक्रम में जिले के २५ विद्यालय के शिक्षकों को दो दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। दिनांक २२-२३ अक्टूबर २०११ को गंगा नदी के तटवर्ती इलाकों में स्थित २०-२५ विद्यालयों के शिक्षकों ने छात्रों के माध्यम से जनजागरूकता पैदा करने की पहल की।
- भारत साकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, पर्यावरण शिक्षा केन्द्र, मानस एवं प्रकृति उन्नयन समिति एवं ग्रामीण विकास केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक २९ सितम्बर २०११ को स्कूल के छात्रों को पर्यावरण के प्रति अभिरूचि पैदा करने हेतु अध्यापकों के बीच पुनश्चर्या पाठयक्रम का आयोजन किया गया।
- पुनश्चर्या पाठ्यक्रम को चार विभिन्न सत्रों में विभाजित किया गया। जलवायु परिवर्तन एवं हमारा दायित्व, मानव जीवन पर जलवायु परिवर्तन के पड़ने वाले प्रभावों की विस्तृत चर्चा की गयी। जलवायु परिवर्तन के विभिन्न आयामों पर फिल्म के प्रसारण के माध्यम से जानकारी दी गई। पर्यावरण एवं छात्रों में एक वर्षीय शैक्षिणिक विकास पर चर्चा एवं पर्यावरण के विभिन्न गतिविधियों की संलग्नता पर प्रकाश डाला गया।
- केन्द्र के प्रशिक्षणार्थियों के बीच ''नशा नाश की निशानी और अपराध की जननी है'' नामक विषय पर १२ दिसम्बर २०११ को मद्यनिषेध एवं समाजोत्थान विभाग तथा ग्रामीण विकास केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रमाणपत्र वितरण समारोह

२७ फरवरी २०१२ को केन्द्र द्वारा संचालित औषधीय पौध उत्पादन प्रशिक्षण एवं महिला सशक्तिकरण अन्तर्गत सिलाई, कढ़ाई, बुनाई के प्रशिक्षणार्थियों को शैक्षणिक सत्र २०१०-२०११ का प्रमाण पत्र वितरण किया गया।

ग्राम्य वनौषधि औद्योगिक उत्पादन सहकारी समिति अमौली, चिरईगाँव का पुर्नगठन

औषधीय पौधा संवर्धन एवं पारम्परिक चिकित्सा के संरक्षण हेतु गॉव में, गॉव के लोगों द्वारा, गॉव के पेड़-पौधों पर आधारित ग्राम्य वनौषधि औद्योगिक उत्पादन सहकारी समिति का पुर्नगठन १२ जनवरी २०१२ को किया गया।

२.१.४.९. सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र

भारत वर्ष में सामाजिक वैज्ञानिकों ने सामाजिक रूप से बहिष्कृत वर्गों को केवल एक वर्ग या एक पहचान के रूप में माना है, इनको जाति, धर्म, वर्ग एवं लिंग के रूप में समझा गया है। ये वर्ग अपने को समाज का कमजोर वर्ग मानते हैं, जिनको आधार बनाकर पहचान के विभिन्न आयामों का अध्ययन, स्वयं के सम्मान से जुड़ा आन्दोलन, सामाजिक न्याय, समानता, शक्ति, आरक्षण इत्यादि का विश्लेषण किया जाता रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दिया गया सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने यह प्रस्तावित किया है कि सामाजिक रूप से बहिष्कृत लोगों का वर्ग एक ऐसे परिप्रेक्ष्य का द्योतक है जो कि भारतीय समाज एवं इतिहास का अध्ययन, उपनिवेषवाद तथा राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र एवं समग्र जगत के बृहद समाज से जुड़े समकालीन या वर्तमान अनुभवों के अध्ययन करने में मदद करता है। वास्तव में, सामाजिक रूप से बहिष्कृत लोगों को एक साथ जुड़े रखने के पीछे एक ऐसी संरचनात्मक वास्तविकता होती है जो कि ऐतिहासिक एवं सामाजिक रूप से बहिष्कृत होती है, जिनकी पहचान को नकारा जाता रहा है। फलस्वरूप, वे विभिन्न स्तरों की वंचना के शिकार होते हैं। दलित अवधारणा एक पहचान से जुड़ी होती है, साथ-साथ यह पहचान विरोधी भी होती है। फिर भी कालक्रम से आधुनिक विद्वान पहचान के निर्माण एवं ऐतिहासिक वास्तविकता के ज्ञान मीमांसात्मक परिप्रेक्ष्य की मदद से सामाजिक वंचना को स्थायी नहीं मानते हैं, यह एक अस्थायी स्थिति है जिसे समकालीन राजनीति निर्धारित करती है। इस स्थान का सैद्धान्तिकरण एवं परिभाषा कठिन है। एक बार जब सामाजिक बहिष्करण अध्ययन एक विद्वत विषय के रूप में विकसित हो जायेगा, तब सामाजिक बहिष्करण परिप्रेक्ष्य एक ऐसे विषय के रूप में स्वीकार्य होगा जो कि हम अपने आस पास के सामाजिक जगत को समझ सकेंगे।

इस बात की भी चर्चा करना महत्वपूर्ण है कि जब हम सामाजिक वंचना को अपने अनुभव से अलग करने का प्रयास करते हैं और इसको एक अन्य परिप्रेक्ष्य में रखते हैं जिसके माध्यम से राजनैतिक या ज्ञान मीमांसात्मक क्रियाओं को समझा जा सकता है, तब हम प्रस्तुतिकरण के मुद्दे को गौण कर देते हैं। इस प्रकार, एक ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक अन्वेषण हेतु उभरते हुए क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में जो लोग उद्देश्यात्मक एवं प्रगतिशील राजनीति में रूचि रखते है, विशेषतया इस प्रकार की स्थिति में उन्हे कार्यशील होना चाहिए, क्योंकि यह वंचना एवं विभेदीकरण की संरचनाओं की पुनरावृत्ति को रोकता है।

मानविकी एवं सामाजिक वैज्ञानिकों का मानना है कि राज्य-पोषित संस्थाओं के अर्न्तगत सामाजिक रूप से अवसादित वर्गों की वंचना सकारात्मक विभेदीकरण की नीति के बावजूद आज भी बनी हुयी है। उपाश्रित वर्गो के अध्ययन को अभी भी एक दलित इतिहासकार को स्वीकार्य करना बाकी है। इस प्रकार का संरचित बहिष्करण बहुत से विद्वानों को अपने अध्ययन में दलित, अल्पसंख्यक महिला एवं विकलांगो से जुड़े मुद्दों को शामिल करने के लिये प्रेरित करता है। फिर भी, सामाजिक रूप से बहिष्कृत लोगों के बदले ऐसे विद्वानों के द्वारा किये गये सैद्धान्तिक दावा में अत्यन्त सीमायें भी हैं।

केन्द्र का संक्षिप्त रिपोर्ट

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्थापित इस केन्द्र के निम्न उद्देश्य एवं लक्ष्य हैं।

इस अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत दो वर्ष का परास्नातक पाठ्यक्रम प्रस्तावित है। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के भेदभाव की प्रकृति एवं जाति, जनजाति, लिंग अपंगता, धर्म, कला, साहित्य से जुड़े बहिष्करण और साथ ही साथ समावेशी नीति से संबंधित विभिन्न आयामों- संवैधानिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक-का अध्ययन किया जा रहा है।

इस केन्द्र के अर्न्तगत एम.फिल एवं पी.एच.डी. स्तर पर उपाश्रित वर्गों का अध्ययन हेतु पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है। इसके अर्न्तगत सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति हेतु विभिन्न सैद्धांतिक एवं शोध प्रारूप का प्रयोग करके एक नीति का निर्धारण हो सकेगा जो कि उपाश्रित वर्गों का मुख्य धारा में समायोजन हेतु लाभकारी होगा ।

सामाजिक रूप से बहिष्कृत समूहों की समस्याओं को समझने में सैद्धान्तिक एवं अनुभवात्मक परिपक्वता प्राप्त करने हेतु यह केन्द्र अनुसंधान एवं विस्तार कार्यक्रम को प्रोत्साहित करता है। इस परिप्रेक्ष्य में केन्द्र के विद्यार्थीगण, शिक्षकगण एवं अन्य कर्मचारी अध्यापन एवं शोध कार्य के माध्यम से एक ऐसी नीति का निर्माण कर सकेंगे जो कि समाज के प्रताड़ित लोगों के अधिकार को संरक्षित कर सकेगा।

यह केन्द्र उपर्युक्त उद्देश्यों में संलग्न विभिन्न प्रकार के संस्थाओ से संबंध स्थापित करके सामाजिक बहिष्करण के परिप्रेक्ष्य में पैनापन लाकर अपने उद्देश्यों के संबंधित तथ्यों को मजबूती प्रदान करेगा।

यह केन्द्र निरन्तर व्याख्यान माला, सेमिनार, संगोष्ठी तथा कार्यशालाओं का आयोजन करता है जहां कि प्रबंधन शास्त्र, सामाजिक विज्ञान एवं कला विज्ञान के विद्यार्थी एवं विद्वान तथा राजनीतिक एवं सामाजिक नेता भाग लेते है।

यह केन्द्र प्रविधि को बढ़ावा देकर पहुँच से दूर समुदाय के विभिन्न पहलुओं के बहिष्करण से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करता है।

क्रियाएं एवं कार्यक्रम

शैक्षिक गतिविधियां (२०११-१२)

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इस सत्र में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का संचालन किया गया। शैक्षिक सत्र २०११-१२ के दौरान ११ विशेष व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया गया एवं कुछ अन्य कार्यक्रम निम्नवत है।

१. दिनांक ०५ अप्रैल २०११ को *''धार्मिक विविधता और राज्य''* पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में प्रो. चार्ल्स टेलर, मैक्गिल यूनीवर्सिटी, कनाडा एवं प्रो. राजीव भार्गव, निदेशक, सेन्टर फार स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज़, नई दिल्ली मुख्य वक्ता थे।

२. ''जौनपुर, मीरजापुर एवं सोनभद्र जिलों में बाल अधिकार संरक्षण'' नामक परियोजना का आधारभूत अध्ययन सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र, यूनिसेफ एवं उत्तर प्रदेश सरकार के संयुक्त तत्वावधान में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

३. दिनांक २४ नवम्बर से ३० नवम्बर २०११ तक *''सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी में शोध विधि : अंत: विषय परिप्रेक्ष्य में''* एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

४. दिनांक ३०-३१ मार्च २०११ को *''विकास पर पुनर्विचार: विकल्प की तलाश''* पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

५. प्रो. नीता कुमार, ब्राउन फैमिली प्रोफेसर, साउथ एशियन हिस्ट्री, क्लैरमांट मैकेना कॉलेज, यूएसए एवं प्रो. अब्देल्लाह एस. हमौदी, प्रोफेसर ऑफ एन्थ्रोपॉलोजी, प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी, यूएसए केन्द्र में विजिटिंग प्रोफेसर के तौर पर आये।

६. ''प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स इन थ्री डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ जौनपुर, मिरजापुर, सोनभद्र ऑफ उत्तर प्रदेश'' नामक बेस लाइन प्रोजेक्ट सम्पन्न किया गया।

शोध छात्रों के लिये उपलब्ध सुविधाएँ

सत्र २०११-१२ में उपाश्रित वर्गों के अध्ययन में एम०फिल० पाठ्यक्रम में कुल २० छात्र पंजीकृत किये गये एवं उपाश्रित वर्गों के अध्ययन में पीएच०डी० पाठ्यक्रम में कुल ०७ छात्र पंजीकृत किये गये।

अध्ययन हेतु नए कोर्स का प्रारम्भ

केन्द्र दो वर्षीय परास्नातक कोर्स एक्सक्लूज़न स्टडीज़ में प्रारम्भ करने जा रहा है। इस कोर्स में मूलत: विभिन्न प्रकार के भेदभाव पर आधारित असंख्य रूपों में संबंधित जाति, जनजाति, लिंग, अक्षमता, धर्म कला, साहित्य और मीडिया की प्रकृति एवं गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित करते हुए इनके विभिन्न आयामों जैसे संवैधानिक, कानूनी, सामाजिक-राजनीतिक और समावेशी नीति के संबंध में विचार होगा।

पुस्तकालय सुविधा

i) केन्द्र के द्वारा संबंधित विषयों में अब तक ६८१ पुस्तकें क्रय की गयी है, जिसमें से सत्र २०११-१२ में ८६ किताबें क्रय की गयी है।

ii) संदर्भ पुस्तके केवल पुस्तकालय में पढ़ने एवं परामर्श हेतु उपलब्ध है।

iii) पुस्तकालय में अलग से एक साथ ३० लोगों के बैठने की उचित व्यवस्था है।

परिसर विकास

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के द्वारा सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र को व्याख्यान कक्ष संकुल (हिन्दी भवन के पीछे) में केन्द्र के सुचारू रूप से क्रियान्वयन हेतु स्थान उपलब्ध कराया गया है। उपरोक्त भवन का उद्घाटन माननीय डॉ० कर्ण सिंह, कुलाधिपति द्वारा किये जाने के बाद सेन्टर में एल्युमिनियम विभाजन एवं बिजली का कार्य कराया गया।

२.१.४.१०. मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र

मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र

जन्तु विज्ञान विभाग के जैवरसायन खण्ड के शिक्षक सदस्यों द्वारा मस्तिष्क जैवरसायन पर अनुसंधान की उपलब्धियों के आधार पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के अंश के रूप में जन्तु विज्ञान विभाग के जैवरसायन खण्ड में मुख्य केन्द्र के साथ विज्ञान संकाय में ''मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र'' को अनुमोदित किया। यह केन्द्र आण्विक स्तर पर मस्तिष्क की संरचना एवं क्रियाविधि को समझने के उद्देश्य के साथ तंत्रिका जीवविज्ञान और तंत्रिकीय व्युतिक्रम के क्षेत्र में गहन अनुसंधान गतिविधियों में मुख्य रूप से संलग्न है जिससे वृद्धावस्था डिमेन्सिया और अन्य तंत्रिकीय व्युतिक्रम जैसे एल्जाइमरर्स पाकिन्सोनिज्म, हंटिग्टन्स रोग और मेटाबोलिक डिस्फसन्स जैसे हिपेटिक इन्सिफैलोपैथी, डाइबेटिक न्यूरोपैथी इत्यादि के साथ जुड़े मस्तिष्क व्युतिक्रम के प्रबंधन के लिए डेसिग्नेड का समुचित थेरापूटिक इन्टरवोकेशन की रूपरेखा तैयार किया जा सके। यहाँ के शिक्षकगण मस्तिष्क आयु का आण्विक जीव विज्ञान, एल्जाइमर से जुड़े जीन का नियमितिकरण, फोकल इस्चेमिया, हिपैटिक इन्सिफैलोपैथी का न्यूरोबॉयोलॉजी, एजिंग ब्रेन में एफ एम आर आई जीन का नियमितिकरण और मस्तिष्क में पेक्स ६ का नियमन जैसे अनुसंधान क्षेत्रों में संलग्न हैं। वर्ष २०११-१२ की अवधि में इस केन्द्र ने केन्द्र के लगभग प्रत्येक पहलुओं में प्रशंसनीय प्रगति की है। इस केन्द्र ने अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में लगभग दो दर्जन से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित किया है।

केन्द्र की गतिविधियाँ

१. मस्तिष्क विकास, एजिंग और तंत्रिकीय व्युतिक्रम के क्षेत्र में अग्रणी स्तर का अनुसंधान करना।

२. तंत्रिका जीव विज्ञान के क्षेत्र में युवा अनुसंधानकर्ताओं को प्रशिक्षित करना और सम्बन्धित ज्ञान के प्रचार – प्रसार हेतु अल्पकालीन परिसंवाद व कार्यशाला इत्यादि का आयोजन करना।

३. स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में तंत्रिका विज्ञान के महत्व के लोकप्रियकरण हेतु मस्तिष्क जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करना।

अनुसंधान झलकियाँ

- एस्ट्रोजेन रीसेप्टर अल्फा और बीटा को क्रियाशील न्यूक्लियर एवं माइटोकान्ड्रियल प्रोटीनों और उनके कान्सेन्सस मोटिव के रूप में चिन्हित किया गया। ये प्रोटीन एक्सप्रेशन और इयरएक्सन में उम्र और लिंग पर आधारित प्राप्तियाँ मस्तिष्क की क्रियाविधियों में इन प्रोटीनों के महत्व को बतलाता है।
- चूहे के मस्तिष्क में एल्जाइमर्स रोग के जीन जैसे एपोलिपोप्रोटीन (एपीओ)ई, प्रेसेनीलीन (पीएस)१ एवं (पीएस)२ ने उम्र और लिंग आधारित परिवर्तन को प्रदर्शित करता है। एपो प्रोटीन और एमआरएनए वयस्क की तुलना में युवाओं में अधिक होता है और वृद्ध चूहों के सेरिब्रल कार्टेक्स अपरिवर्तित रह जाता है, जो सामान्य एजिंग के दौरान वृद्ध चूहों में वयस्कों के समान ही एपो ई लेवल के अनुरक्षण को प्रदर्शित करता है। इससे यह भी पता चलता है कि वृद्धों में एपो ई आधारित मस्तिष्क क्रिया को अन्य कारक भी प्रभावित करते हैं।
- एसओडी – जीपीएक्स मार्ग इंजाइम के स्तर चूहे में हाइपर एमोनिमिया के विभिन्न श्रेणी के साथ कार्टेक्स और सेरीबेलम में विविध प्रकार से नियंत्रित रहते है।
- माडरेट ग्रेड हिपेटिक इन्सिफेलोपैथी का सीएलएफ नमूना में एनएनओएस के विविध प्रदर्शनों को क्रियान्वित पाया गया । हीपेटिक इन्सिफेलोपैथी का सीएलएफ नमूना को न्यूरोबिहैबियरल अध्ययन द्वारा चिन्हित और स्थापित किया गया ।
- एफ एम आर १ जीन के नियमन में उम्र और लिंग आधारित परिवर्तनों पर कार्य किया गया जो एजिंग के दौरान विकसित हो रहे मेंटल रिटॉर्डेशन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका की तरफ इशारा करता है।
- एफ एम आर १ प्रोमोटर के साथ विभिन्न ट्रान्सएक्टिंग कारकों की अन्तर्क्रिया और एफ एम आर १ जीन के यू टी आर शृंखला के मिथाइलीकरण उपयोग पर अध्ययन एजिंग मस्तिष्क में इस जीन के नियमन का यांत्रिकीय पहलुओं को इंगित करता है: ईएमएसए डाटा प्रदर्शित करता है कि वयस्क मस्तिष्क में १३६बीपी एफएमआर १ प्रोमोटर सेग्मेंट के साथ तीन विशिष्टताओं के साथ बनता है और काम्प्लेक्स सी१ के स्तर को यथार्थ रूप से बढ़ा देता है लेकिन वयस्क और युवा की तुलना में वृद्ध मस्तिष्क में घट जाता है।
- केन्द्र के समूह ने मस्तिष्क में पीएएक्स ६ के प्रदर्शन में उम्र आधारित परिवर्तन पाये है। पीएएक्स ६ क्रियाविधि पर कुछ व्यर्थ उत्परिवर्तनों के प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। माइस ब्रेन के विभिन्न भागों में पीएएक्स ६ के एक्सप्रेशन में उम्र आधारित परिवर्तनों से भी मस्तिष्क एजिंग के दौरान इसकी भूमिका की ओर इशारा करता है। पीएएक्स ६ प्रोटीनों के इन्टरएक्सन पार्टनर्स की पहचान की गयी जो न्यूरोनल सर्वाइवल में इसके उपयोग और पीएएक्स ६ के स्वनियमन में निर्णायक भूमिका निभाने के बारे में बतलाता है। पीएएक्स ६ जीनों में उत्परिवर्तनों का इन्सिलिको विश्लेषण और मस्तिष्क कार्य प्रणालियों में इसके सम्भावित उपयोगिता का अध्ययन किया गया।

२.१.४.११. हाइड्रोजन ऊर्जा केन्द्र

ऊर्जा, इसकी उपलब्धता और उपयोग मानवजीवन की मूलभूत आवश्यकता है जिसकी तुलना किसी अन्य से नहीं की जा सकती। अन्य अवश्यकताओं से अलग हटकर ऊर्जा मानव जीवन के जीवित रहने के लिये जरूरी है और जीवन आकंक्षाओं की वृद्धि रहन-सहन स्तर में वृद्धि तथा जनसंख्या वृद्धि के साथ बढ़ती मात्रा में ऊर्जा की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए जैसा कि हम गतिशीलता और कार्य क्षमता में वृद्धि चाहते है, यातायात और सड़क यातायात, इसके लिए तरल जीवाश्म ईधन तेल/पेट्रोल के रूप में बढ़ती ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। ऊर्जा उत्पादन, प्राप्ति और उपयोग आपूर्ति, भण्डारण, उपयोगिता, प्रदूषण और निष्पक्षता के स्रोतों से सम्बन्धित आर्थिक और तर्कपूर्ण समस्या पैदा करती है। उल्लेखनीय है कि हाइड्रोजन एक मात्र ऐसा ईधन है जो पेट्रोलियम आधारित वाहन उत्सर्जनों से उत्पन्न CO_2 के कारण पैदा हो रहे जलवायु परिवर्तन समस्या का सफल समाधन हैं। हाइड्रोजन अन्य वैकल्पिक ईंधन जैसे गैसोहाल, सीएनजी, बायोडीजल इत्यादि के विपरीत कोई कार्बन नही उत्सर्जित करता। हाइड्रोजन जब आन्तरिक दहन इंजन में जलता है तो यह भाँप (जल) अर्थात् H_2o में में परिवर्तित हो जाती है। इससे कोई भी Co_2 नहीं निकलती अत: इससे कोई भी जलवायु परिवर्तन नही होता।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए हाइड्रोजन ऊर्जा केन्द्र का लक्ष्य हाइड्रोजन ऊर्जा के अनुसंधान व विकास प्रयासों एवं उपयोगिता पर केन्द्रित है। यह देश को नगरीय वायु प्रदूषण, जीवाश्म ईंधन को क्षरण के बुरे प्रभाव से बचा सकता है और वर्तमान में यह जलवायु परिवर्तन के समाधान के लिए काफी आवश्यक है।

हाइड्रोजन ऊर्जा के निम्नलिखित क्षेत्रों में अनुसंधान केंद्रित है:

मेटेरियल टेलरिंग के माध्यम से Lanis और $ZrFe_2$ प्रकार के इन्टरमेटेलिक प्रणाली में लगभग 6 wt % तक भण्डारण क्षमता वृद्धि का अध्ययन।

6wt% की वांछित भण्डारण क्षमता प्राप्त करने के कम्पोज़िट इन्टर मेटेलिक मेटीरियल्स का अन्वेषण।

नये काम्प्लेक्स हाइब्रिड $NaAIH_4$ के चौतरफा सीमाओं पर अन्वेषण और इसे संचय क्षमता भण्डारण प्रणाली में बदलना।

Mg_2FeH_6 और कैटेलाज़्ड mg जैसे नवीन काम्प्लेक्स हाइब्रिड का अध्ययन।

पारम्परिक इलेक्ट्रोड की तुलना में लगभग दुगुना क्षमता के साथ हाइड्रोजन उत्पादन के लिए नये इलेक्ट्रोड मेटेरियल्स के रूप में कार्बन नैनो ट्यूब।

सोलर हाइड्रोजन उत्पादन के लिए नये फोटो इलेक्ट्रोड मेटेरियल के रूप में Tio_2 नैनो ट्यूब्स।

वैक्यूम रेजिड्यू से हाइड्रोजन उत्पादन।

हाइड्रोजन उत्पादन का फोटो कैटेलिटिक विघटन।

फोटो कैटेलिटिक हाइड्रोजन उत्पादन।

अति उच्च स्थितियाँ जैसे सीवेज़ स्लज, एसिडोफिलिक/ एल्केलोफिलिक और उच्च ताप परिस्थितियो से नये हाइड्रोजन उत्पादन करने वाले जीवाणु स्ट्रेन्स की प्राप्ति और उसके लक्षणों का चित्रण करना।

हाइड्रोजन परिर्वतन क्षमता के प्रभावी सब्सट्रेट के लिए अन्य कृषि-अपशिष्ट फीड स्टाक प्रौद्योगिकी के गुणों का वर्णन करना।

जैव हाइड्रोजन उत्पादन सीमा के रूकावटों की पहचान करना और इसके वाणिज्यीकरण विधियों को वास्तविकता में बदलने के लिए इसके समाधान की रणनीति तैयार करना।

पाइलट-स्केल अध्ययन के माध्यम से हाइड्रोजन उत्पादन का पैमाना निर्धारित करना।

अनुसंधान परियोजनाएँ

हाइड्रोजन ऊर्जा केन्द्र से जुड़े शिक्षक सदस्यों द्वारा वर्तमान में विभिन्न वित्त प्रदायी संस्थाओं, भारत सरकार से अद्यतन विषयों पर अनेक शोध परियोजनाएँ संचालित की जा रही है। हाल ही में गैर पारम्परिक ऊर्जा मंत्रालय ने इस केन्द्र को हाइड्रोजन मेटेरियल्स (हाई ब्रीड्स) पर कार्य करने के लिए मेगा मिशन मोड प्रोजेक्ट प्रदान किया है।

शिक्षण एवं अनुसंधान: केन्द्र द्वारा भौतिकी विभाग में भौतिकी में स्नातकोत्तर स्तर पर इलेक्टिव प्रश्न पत्र के रूप में हाइड्रोजन ऊर्जा का अध्यापन कार्य किया जा रहा है। इसके साथ ही केन्द्र द्वारा ऐसे विशेषज्ञों को तैयार करने का लक्ष्य है जो तकनीकी रूप से पूर्ण सुसज्जित हों और हाइड्रोजन ऊर्जा के क्षेत्र में पूरे विश्व में आर एण्ड डी के क्षेत्र में कार्य करने के लिए सुयोग्य हों।

२.१.४.१२. नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इकाई/केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय विशुद्ध शिक्षण का एक अति महत्वपूर्ण क्षेत्र है जहाँ अनेक अन्तर्विषयी और पराविषयी अनुसंधान ईकाइयां/केन्द्र हैं। इनमें से एक नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इकाई/केन्द्र है जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तपोषित है। इस केन्द्र ने नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अग्रणी क्षेत्रों में अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनायी है। यह केन्द्र अनुसंधान के क्षेत्र में गहनता के साथ संलग्न है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने २८ फरवरी, २००७ के अपने राष्ट्रीय टेलीविजन प्रसारण में नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इकाई काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को कार्बन नैनो ट्यूब फिल्टर पर कार्य को संज्ञान में लेते हुए देश में किये जा रहे पाँच अनुसंधानों में शीर्ष पर रखा है। यह इकाई/केन्द्र भौतिकी विज्ञान (मुख्य विभाग), धातुकीय विज्ञान विभाग, प्रौ.सं., काहिविवि और मेडिसिन व जैव रसायन विभाग, चि.वि.सं., का.हि.वि.वि. के साथ मिलकर शोध गतिविधियाँ संचालित करता है।

अनुसंधान की प्राथमिकता क्षेत्र

मेल्ट-क्वेन्च टेक्निक द्वारा मेटेलिक सिरेमिक ग्लासेज़ का उत्पादन एवं कन्ट्रोल्ड क्रिस्टेलाइज़ेशन के दौरान उनके सूक्ष्म संरचना के टेम्पोरल मूल्यांकन का अध्ययन।

उपरोक्त विधि द्वारा NsM उत्पाद की कठोरता का लेन्थ स्केल का नैनो आइडेन्टिफिकेशन के माध्यम से अध्ययन और अल्ट्रामाइक्रोहार्डनेस परीक्षण का उनके ट्रान्जिसन रेजिम का अध्ययन।

ए एफ एम/ एसटी एम/ टीईएम तकनीकों द्वारा बल्क अमार्फस फेजेज़ सहित संरचना और सूक्ष्म संरचना का मूल्यांकन।

बायोमिट्रिक मार्ग द्वारा जैव पदार्थों का संश्लेषण।

नैनो क्रिस्टलों का आकार और बाह्याकृत्ति पर रसायन और मैट्रिक्स मीडियेटेड मेटेरियल्स का अनुकूलन।

कार्बन नैनो ट्यूब (सीएनटीज़), स्कार्बन, सीएनटीज से छड़ और सिलिन्डर के बड़े आकार का निर्माण का बड़े संयुक्तता का संश्लेषण।

सीएनटीज के बड़े लक्ष्य और सम्बन्धित संयुक्तता के लिए बैलिस्टिक ट्रान्सपोर्ट, फील्ड इमिसन लक्षणों के विशेष संदर्भ के साथ इलेक्ट्रिकल/इलेक्ट्रॉनिक्स जैसो का भौतिक गुणों का अन्वेषण।

नैनो कणों का संश्लेषण : नैनो स्ट्रक्चर्ड Zno, Tio_2 (उन्नत फोटोइलेक्ट्रोकेमिकल क्षमता के लिए) कम्पोज़िट नैनो पार्टिकल्स Sio_2/Au और अन्य समान बनावटें।

पीएसी-१ और पी-सेलेक्टीन का एक्टिवेशन स्पेसिफिक इपीटोज़ के विरूद्ध एन्टीबाडीज़ से आवरित चुम्बकीय नैनो कणों के उपयोग द्वारा आद्यात, एक्यूट मायोकार्डियल इन्फारेक्शन और डाइबिटीज़ मेलिटस के रोगियों के रक्त में 'हाइपरएक्टिव' प्लेटलेट्स की खोज।

आनुवांशिकी अनुक्रमों में उत्परिवर्तनों की खोज हेतु विशेष डीएनए क्रम से अवरित नैनो कणों (स्वर्ण कण, लेटेक्स बीड्स फिन्ड विथ क्वांन्टम डॉट्स ऑफ स्पेसिफिक साइज़ टू प्रोड्यूज़ स्पेक्ट्रल बार कोड) का उपयोग और प्रीनेटल जाँच का संचालन।

प्रोटिओमिक अनुसंधान में उपयोग के लिए सेल लाइजेट (अल्टरनेटिव टू वेस्टर्न बमाटिंग एण्ड इम्यूनों प्रेसिपिटेशन) से वांछित प्रोटीनों की खोज और अलग करने के लिए विशेष एन्टीबाडी आवरित नैनों कणों का उपयोग।

नैनों कणों के उपयोग द्वारा संक्रामक रोगों (लेस्मेनिएसिस और मलेरिया) का विश्लेषण।

केन्द्र पर उपलब्ध प्रयोगशालयी सुविधायें

अनुसंधान और प्रशिक्षण कार्यों के लिए निम्नलिखित प्रयोगशालयी सुविधा केन्द्र पर उपलब्ध है : अ. स्केनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी (एसईएम), ब. एटामिक फोर्स माइक्रोस्कोपी (एएफएम)।

केन्द्र की उच्च तकनीकि सुविधाएँ
विश्वविद्यालय के कई विभागों द्वारा उपयोग की जाती है

२.१.५. स्कूल

२.१.५.१. सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज़ स्कूल
२.१.५.२. सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल
२.१.५.३. श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय

२.१.५.१. सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज़ स्कूल, कमच्छा

भारत की प्राचीन सांस्कृतिक नगरी काशी में ७ जुलाई १८९८ को आयरिश महिला डा. एनी बेसेण्ट द्वारा इस विद्यालय की स्थापना की गई। सर्वप्रथम यह विद्यालय कॉलेजिएट स्कूल के नाम से टाउनहाल के समीप कर्णघण्टा मुहल्ले में किराये के एक भवन में आरम्भ हुआ। कुछ समय पश्चात् तत्कालीन काशिराज महाराजा प्रभुनारायण सिंह जी की कृपा से कमच्छा में दानस्वरुप प्राप्त इस विशाल भू-खण्ड पर मार्च १८९९ में यह विद्यालय स्थानान्तरित हुआ। उस समय काशीनरेश हाल (जो अभी कम्प्यूटर कक्ष है) तथा उसके साथ ही निर्मित कुछ कमरों में यह विद्यालय संचालित होता रहा। कालान्तर में अनेक विद्यानुरागी, उदारचेता दानदाताओं के सहयोग से विभिन्न कक्षों का निर्माण होता गया और आज इस विद्यालय का उन्नत और भव्य स्वरुप सबके सामने है।

यहाँ विद्यालय स्तर पर लगभग सभी विषयों जैसे- गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, स्वास्थ्य तथा एसयूपीडब्ल्यू के विषयों के अध्ययन के साथ ही +२ स्तर तक कला, वाणिज्य तथा विज्ञान वर्ग के सभी विषयों के साथ ही हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत तथा उर्दू भाषाओं के शिक्षण की व्यवस्था है।

इसके अतिरिक्त छात्रों में एकता, अनुशासन, देशसेवा, समाजसेवा जैसे पवित्र भावों को जगाने के लिए एन.सी.सी. की चार शाखाएँ स्थापित हैं। स्थल सेना में जूनियर डिविज़न की दो शाखाएँ, सीनियर डिविजन की एक शाखा तथा वायु सेना में एक जूनियर विंग हैं।

विद्यालय में कक्षा ६ से १२ तक अध्ययनरत असहाय, निर्धन तथा मेधावी २० प्रतिशत छात्रों को प्रतिवर्ष विद्यालय की ओर से पूर्ण शुल्क मुक्ति की सुविधा प्रदान की जाती है। इसके साथ ही विद्यार्थी सहायक सभा (वीएसएस) द्वारा उन्हें समुचित आर्थिक मदद, स्कूल यूनिफार्म एवं पुस्तकों की सहायता प्रदान की जाती है।

छात्रों की रचनात्मक क्षमता को मुखरित एवं विकसित करने हेतु सन् २००६ से अनवरत विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन हो रहा है। सन् २०११-१२ की वार्षिक पत्रिका 'सृजन' अपने प्रकाशन के अन्तिम चरण में है। यह पत्रिका इस बार **'महामना विशेषांक'** के रुप में प्रकाशित हो रही है।

विद्यालय में कक्षा-६, ९ तथा ११ में रिक्त स्थानों पर छात्रों का प्रवेश विद्यालयीय प्रवेश परीक्षा (एसईटी) के माध्यम से होता है। यह परीक्षा प्रतिवर्ष मई माह में विश्वविद्यालय द्वारा सम्पन्न कराई जाती है। इस वर्ष स्कूल प्रवेश परीक्षा में ४४,००० छात्र केवल इस विद्यालय में प्रवेश हेतु सम्मिलित हुए जो अपने आप में एक रिकार्ड है।

शैक्षणिक सत्र की विशिष्ट उपलब्धियाँ

- सीबीएसई परीक्षा २०११ में कक्षा-१० का परीक्षाफल शतप्रतिशत रहा। बोर्ड की नई ग्रेड प्रणाली के अनुसार इस वर्ष कक्षा-१० के कुल २७ छात्रों ने पूरे ग्रेड प्वाइंट-१० अर्जित किये है। हमारे विद्यालय ने स्व विद्यालय आधारित परीक्षा न अपनाकर बोर्ड आधारित परीक्षा को अपनाया था।

- सीबीएसई परीक्षा २०११ में कक्षा-१२ का परीक्षाफल ९८ प्रतिशत रहा, जो एक रिकार्ड है।
- सी.बी.एस.ई. कक्षा-१० की परीक्षा में पाँचों विषयों में आउटस्टैडिंग परफारमेंस के आधार पर ०.१ प्रतिशत सूची में विद्यालय के तीन छात्रों को बोर्ड द्वारा मेरिट प्रमाणपत्र प्रदान किये गये है तथा कक्षा-१२ के ८ छात्रों को मेरिट प्रमाणपत्र प्रदान किये गये।
- विद्यालय के लिए बड़े गर्व की बात है कि प्रत्येक वर्ष यहाँ के छात्र भारतवर्ष की विभिन्न प्रतिष्ठापरक इंजिनियरिंग तथा मेडिकल की प्रवेश परीक्षाओं में अपने प्रथम प्रयास में ही चयनित होते रहे हैं। २०११ में विद्यालय के कक्षा-१२ के १८ छात्रों ने अपने प्रथम प्रयास में जेईई-२०११ में अच्छे रैंक के साथ चयनित होकर कीर्तिमान स्थापित किये है।
- सी.बी.एस.ई पी.एम.टी. में ०४ छात्रों ने प्रथम प्रयास में ही चयनित होने का गौरव प्राप्त किया।
- सांइस ओलम्पियाड फांउडेशन, नई दिल्ली द्वारा देश स्तर पर आयोजित १३वाँ नेशनल सांइस ओलम्पियाड में ०५ बच्चे उत्कृष्टता के आधार पर पुरस्कृत हुये।
- चौथे आईएमओ (अन्तर्राष्ट्रीय मैथ्स ओलम्पियाड) द्वितीय स्तर की परीक्षा में पाँच छात्र पुरस्कृत हुए।
- एस कनसल्टेंट्स, नई दिल्ली द्वारा इन्डियन आयल स्कॉलरशिप योजना के अन्तर्गत कक्षा-१० की परीक्षा में उत्तम प्रदर्शन के आधार पर विद्यालय के तीन छात्रों को १२-१२ हजार रुपयें प्रतिवर्ष की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई।
- दिनांक १४.०९.२०११ को राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हिन्दी प्रकोष्ठ, का.हि.वि.वि. द्वारा 'राजभाषा वैजयन्ती' विद्यालय को प्रदान की गयी।
- हिन्दी दिवस २०११ के अवसर पर राजभाषा प्रकोष्ठ का.हि.वि.वि. द्वारा आयोजित 'निबन्ध प्रतियोगिता' में पीयूष रंजन परमार-१२ एफ को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।
- हिन्दी प्रकाशन बोर्ड (भौतिक प्रकोष्ठ) द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता में विद्यालय के चार छात्रों को पुरस्कृत किया गया।
- सीबीएसई द्वारा इण्डो-जापानीज़ कल्चरल एक्सचेंज प्रोग्राम के अन्तर्गत जापान जाने के लिए विद्यालय के छात्र पीयूष रंजन परमार-१२ एफ को चयनित किया गया है।
- सीबीएसई द्वारा सीनियर कक्षाओं में कृषि विज्ञान के पाठ्यक्रम निर्धारण हेतु कृषि के अध्यापक श्री राजेश वर्मा का चयन किया गया है।
- गाँधी जयन्ती के अवसर पर सम्पन्न हुई चित्रकला प्रतियोगिता में ५ तथा हिन्दी कवितापाठ प्रतियोगिता में ५ छात्रों ने प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर नगद एवं प्रमाणपत्र प्राप्तकर विद्यालय का मान बढ़ाया है।
- एनसीसी द्वारा सीएटीसी कैम्प मुगलसराय में आयोजित वाद-विवाद एवं गायन प्रतियोगिताओं में संदीप गौड़-९डी को प्रथम स्थान का पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- दैनिक जागरण (नगर का प्रमुख दैनिक पत्र) द्वारा विद्यालय के छात्र आदर्श कुमार राव कक्षा-८ तथा अमन प्रकाश चतुर्वेदी-८ को 'युवा सम्पादक' का पुरस्कार प्रदान किया गया।
- एनसीसी द्वारा फतेहगढ़ (उ.प्र.) में आयोजित निशानेबाजी प्रतियोगिता में सौरभ कुमार श्रीवास्तव कक्षा-१२ई ने स्वर्ण पदक जीतकर विद्यालय को गौरवान्वित किया है।
- सीबीएसई क्लस्टर चतुर्थ में विहाग वैभव कक्षा-१२एफ ने भाला प्रक्षेप (जबलिन थ्रो) में द्वितीय स्थान तथा चक्रप्रक्षेप (डिस्कस थ्रो) में तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विद्यालय के छात्र चैतन्य मंगलम् कक्षा-८ को कथक नृत्य में प्रदेश स्तर की प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए टैलेन्ट सर्च स्कालरशिप के अन्तर्गत चयनित किया गया।
- महामना मालवीय जी की १५०वीं जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल द्वारा आयोजित विश्वविद्यालय के कुलगीत के आधार पर पेन्टिग (कला प्रतियोगिता में) रामनिहोर पटेल कक्षा-१० को द्वितीय तथा अमूल वर्मा-८ को तृतीय स्थान का पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- छात्रों को विज्ञान में रुचि उत्पन्न करने तथा उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए विद्यालय में प्रतिवर्ष आयोजित सर सी.वी. रमन सांइस क्विज़ में इस वर्ष सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज़ स्कूल प्रथम, सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल द्वितीय तथा सनबीम इंगलिश स्कूल, भगवानपुर तृतीय स्थान पर विजेता रहा।
- श्री निवास रामानुजम मेमोरियल मैथमैटिक्स कन्टेस्ट प्रतिवर्ष विद्यालय में वाराणसी नगर स्तर पर आयोजित होता है। इस प्रतियोगिता परीक्षा में वाराणसी महानगर के सभी प्रतिष्ठित विद्यालयों के चयनित मेधावी छात्र भाग लेते है। इसमें कक्षा ६, ७, ८, ९, तथा ११ के छात्रों को एक वर्ष के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।
- डालिम्स, सिगरा, वाराणसी द्वारा आयोजित १५वीं शिशिर मेमोरियल इंटर स्कूल मैथेजीनियस कम्पटीशन में जूनियर वर्ग के पवन कुमार - प्रथम स्थान (७८/१००), सब जूनियर वर्ग में गौतम कुमार को - प्रथम स्थान (८०/१००), इसके अतिरिक्त १० छात्रों को सान्त्वना पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्राप्त हुए।
- एनएसटीएसई (नेशनल साइंस टैलेन्ट सर्च एक्ज़ामिनेश-२०११) में इस विद्यालय के कक्षा-६ से १२ तक के कुल १९९ छात्रों ने भाग लिया। इसमें ०८ छात्रों को सभी विषयों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर विशेष मेघा सम्मान से सम्मानित किया

गया। कक्षा-१२ के चार छात्रों को ऑल इण्डिया रैंक अण्डर १०० के अन्तर्गत रहने के कारण नेशनल टॉपर घोषित किया गया।

- एनसीसी में जिला स्तर पर आयोजित शूटिंग प्रतियोगिता में सौरभ चतुर्वेदी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।
- एयर एनसीसी के पांच छात्रों (प्रत्येक को) उनके श्रेष्ट प्रदर्शन के आधार पर छः- छः हजार की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई।
- श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर झाँकी सजावट में विद्यालय ने प्रथम स्थान का पुरस्कार प्राप्त किया। विश्वविद्यालय द्वारा गठित निरीक्षण समिति की संस्तुति पर विद्यालय की झाँकी को श्रेष्ठ घोषित किये जाने पर विश्वविद्यालय द्वारा १,०००/- रुपये का नगद पुरस्कार प्राप्त हुआ। ज्ञातव्य है कि विद्यालय विगत ८ वर्षों से अनवरत प्रथम स्थान पर आता रहा है।

इनके अतिरिक्त विद्यालय के छात्र न केवल अध्ययन बल्कि अध्ययन के साथ कला, गायन, वादन, पत्रकारिता, खेलकूद, वाद-विवाद, निबन्ध, लेखन, आशुभाषण, एनसीसी आदि के क्षेत्रों में आयोजित अन्य प्रतियोगिताओं में भी अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करते हुए उच्च स्थान प्राप्त कर विद्यालय की प्रतिष्ठा व गौरव को बढ़ाने में अग्रिम पंक्ति में रहे हैं।

अधिसंरचनात्मक विकास- विगत वर्षों में विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए जो कार्य प्रस्तावित थे और जिनकी शुरुआत हो गई थी, वे सभी कार्य पूर्ण हो चुके है। जैसे विद्यालय का भव्य प्रवेशद्वार, सुरक्षा कार्यालय, प्रकाश व्यवस्था के लिए हाईमास्ट लाईट, जिम्नेज़ियम के पार्श्वभाग में अध्यापक कक्ष, क्राफ्टहाल का निर्माण इस वर्ष की विशेष उपलब्धि रही है। समय से दूरवर्ती क्षेत्रों से आनेवाले प्रतिभाशाली छात्रों की सुविधा के लिए छात्रावास की समस्या का समाधान हुआ है।

भविष्य की योजनाएँ

- विद्यालय में दूरवर्ती छात्रों की अधिक संख्या को ध्यान में रखते हुए नवनिर्मित छात्रावास के ऊपरी भाग पर एक और मंजिल का निर्माण कराना।
- छात्रावास परिसर में वार्डेन क्वाटर का निर्माण कराना।
- विद्यालय में छात्रों के लिए सामूहिक दैनिक कार्य हेतु कोई स्थान उपलब्ध नहीं है, इसके लिए हास्टल के सामने वाली भूमि पर मल्टीपरपज़ हाल का निर्माण कराना।
- छात्रों को बैठकर अल्पाहार करने हेतु कैंटीन के सामने वाले स्थान पर छत का निर्माण एवं छात्रों के बैठने की व्यवस्था कराना।

सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज स्कूल का नवनिर्मित मुख्यद्वार

सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज स्कूल की मुख्य आधारभूत संरचना के विकास की गतिविधियाँ

नवनिर्मित ब्वायज हॉस्टल

नवनिर्मित क्राफ्ट्स हॉल

नवनिर्मित सुरक्षा सैनिक कार्यालय

२.१.५.२. सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल

सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का एक अभिन्न अंग एवं वाराणसी में बालिकाओं की शिक्षा की अग्रणी एवं प्रमुख संस्था है, जिसे श्रीमती एनी बेसेन्ट ने अपनी दूरदर्शिता एवं दृढ़संकल्प से सन् १९०४ में स्त्री शिक्षा के महत्व को समझते हुए कन्या विद्यालय के रूप में स्थापित किया था।

वाराणसी के हृदय में स्थित इस संस्था का परिसर अत्यन्त विस्तृत एवं मनोरम है जो विद्यालय की संस्थापिका डा० एनी बेसेन्ट एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के राष्ट्रीय, धार्मिक विचारों एवं नैतिक आदर्शों, भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण, प्रसार एवं प्रचार के प्रति पूर्णत: समर्पित है।

विद्यालय में नर्सरी से कक्षा १२ तक की शिक्षण व्यवस्था है। नर्सरी से कक्षा ५ तक छात्र एवं छात्राओं दोनों को तथा कक्षा ६ से १२ तक केवल छात्राओं की शिक्षण व्यवस्था है।

विद्यालय की प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में छात्र एवं छात्राओं की शिक्षण व्यवस्था कोल्हुआ परिसर में एवं छात्राओं की माध्यामिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षण व्यवस्था कमच्छा परिसर में की गई है।

उपलब्ध सुविधाएँ

सन् १९७६ से विद्यालय सीबीएसई से सम्बन्ध है। जिसके अन्तर्गत एआईएसएसई एवं एआईएससीई की परीक्षाएँ संचालित होती है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालय में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य तीन धाराओं में पठन-पाठन की सुविधा उपलब्ध है। जिसके अन्तर्गत भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, कम्प्यूटर, मनोविज्ञान, भूगोल, इतिहास, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, लेखा निधि, व्यावसायिक अध्ययन, अग्रेंजी केन्द्रिक, ऐच्छिक, हिन्दी केन्द्रिक, ऐच्छिक, संस्कृत केन्द्रिक, ऐच्छिक, वैकल्पिक कला, शारीरिक शिक्षा, गायन, वादन तबला (सितार-गिटार) की शिक्षा दी जाती है। विद्यालय में विज्ञान, गृह विज्ञान एवं कम्प्यूटर शिक्षा के लिए प्रयोगशालायें है। बच्चों की यातायात सुविधा हेतु दस बसों की व्यवस्था है।

सत्र २०११-१२ में पंजीकृत छात्र-छात्राओं की संख्या १९०० है।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

- विद्यालय में योग्य शिक्षक एवं शिक्षिकाओं द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है। फलस्वरूप छात्राएँ बोर्ड की परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करती है। सत्र २०११ में विद्यालय का एआईएसएसई तथा एआईएससीइ का परीक्षाफल क्रमश: १००% तथा ९६% रहा। प्राइमरी कक्षाओं में कक्षा एक से ही छात्र-छात्राओं के लिये कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था की गई है।
- कक्षा १० की १३ छात्राओ ने सर्वोच्च अंक १० ग्रेड प्वाइन्ट प्राप्त किया।
- कक्षा १२ की ७ छात्राओं को उच्चतम अंक प्राप्त करने के लिये ०.१% मेरिट सर्टिफिकेट सीबीएसई द्वारा प्रदान किये गये।
- वार्षिकोत्सव 'अभिव्यक्ति' हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमे मालवीय जी पर आधारित फिल्म 'अन्तहीन यात्रा' का प्रदर्शन किया गया तथा गौतम बुद्ध के जीवन की आज के संदर्भ में प्रासंगिकता पर आधारित नाटक 'बुद्ध' प्रस्तुत किया गया।

अन्य उपलब्धियाँ : छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास हेतु विद्यालय में शैक्षणिक कार्यक्रम के साथ विभिन्न सहपाठ्यगामी कार्यक्रम, खेलकूद प्रतियोगितायें, एनसीसी, गाइड, रेड क्रास, प्राथमिक चिकित्सा एवं अन्य का आयोजन पूरे सत्र में किया गया।

१. श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर सजायी गई झाँकी को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

२. कु. सौम्या सोनकर को रु. १०००/- की नगद धनराशि तथा सेमसंग मोबाइल फोन गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने पर दिया गया।

३. ओपन स्टेट एथलेटिक प्रतियोगिता में कु.अन्शुला राय कक्षा १० ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

४. १५०वीं मालवीय जयन्ती कार्यक्रम शृंखला में अर्न्तविद्यालयी चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

५. कु. विदुषी स्वरुप ने गीता जयंती के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

विद्यालय गतिविधियाँ

१. महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की १५०वीं जयन्ती के अवसर पर विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

२. मालवीय जयन्ती पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तरविद्यालयी चित्रकला प्रतियोगिता में छात्राओं ने भाग लिया और कक्षा ४ से ७ वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

३. ओपन स्टेट लेवल एथलेटिक प्रतियोगिता में कु. अन्शुला राय कक्षा १० ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

खेलकूद कार्यक्रम

१. बाल दिवस पर विद्यालय में जूनियर तथा सीनियर वर्ग में छात्र छात्राओं की विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया।

२. ओपन जिला एवं मण्डलीय कबड्डी प्रतियोगिता में कक्षा ७ की छात्रा कु. सपना गोंड ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

लाइब्रेरी सुविधाएँ

विद्यालय में सर्वसुविधा युक्त पुस्तकालय छात्राओं के लिए उपलब्ध है। पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या १७००० है।

परिसर प्रगति

१. सत्र २०११-१२ में विद्यालय में नया भवन तैयार हुआ है।

२. स्कूल बसों की धुलाई के लिये रैम्प बनवाया गया है।

२. स्कूल के प्राइमरी विभाग में नयी कम्प्यूटर प्रयोगशाला का निर्माण।

३. मालवीयजी तथा एनीबेसेन्टजी की मूर्तियों के चारों ओर फेन्सिग का कार्य प्रगति पर है।

यह अत्यन्त गौरव की बात है कि पिछले १०० वर्षों से विद्यालय ऐसे मूल्यों को अपने में समाहित करता चला आ रहा है जिससे छात्रायें व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ देश की जिम्मेदार, कर्तव्यनिष्ठ एवं ईमानदार नागरिक के रूप में तैयार हो सके।

१९ दिसम्बर, २०११, सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल के वार्षिक दिवस की झलकियाँ

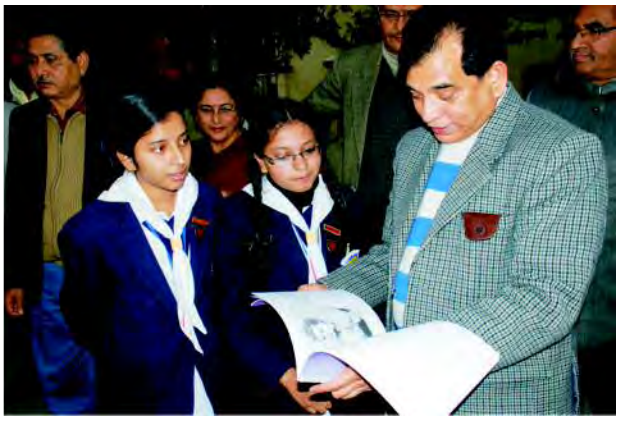

२.१.५.३. श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय

श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। पं अम्बा दास शास्त्री एवं पं. अनन्त राम शास्त्री, जो पूज्य मदन मोहन मालवीय के गुरूतुल्य अध्यापक रहे इस विद्यालय के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर चुके हैं।

प्रारम्भ में इस विद्यालय की स्थापना जम्मू के सदरे रियासत द्वारा १८८३ में प्राचीन भारतीय ज्ञान के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए जम्मू संस्कृत पाठशाला के रूप में जम्मू कश्मीर भवन, जो टेढ़ीनीम, दशाश्वमेध, वाराणसी में स्थित हैं, में हुई थी। कालान्तर में यह विद्यालय सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल कालेजियट सोसायटी के रूप में तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. एनी बेसेन्ट को हस्तांतरित हुई। तदनन्तर विद्यालय का कार्यस्थल कमच्छा स्थित महाराजा काशी नरेश के ऐतिहासिक राजभवन में हो गया एवं विद्यालय का नाम श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय जम्मू सदरे रियासत महाराजा प्रताप सिंह के पिता के नाम पर कर दिया गया। विकास के इस क्रम में बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी सोसायटी अस्तित्व में आयी और इस प्रकार रणवीर संस्कृत विद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का अंग बन गया जिसका वर्तमान परिसर कमच्छा स्थित काशी नरेश राजभवन है।

प्राच्य विद्या एवं धर्मविज्ञान संकाय (वर्तमान में संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय) के अस्तित्व में आने पर मध्यमा एवं आचार्य पर्यन्त उसकी अग्रिम कक्षाएं वहीं (विश्वविद्यालय) चलना प्रारम्भ हुई एवं इस विद्यालय में केवल प्रथमा (कक्षा-८) तक कक्षाएं शेष रह गयीं। यह स्थिति सन् १९६८ तक रही। जुलाई १९७८ से मध्यमा कक्षाओं में सभी विषयों के चारों भाग (साहित्य, वेद, व्याकरण, ज्योतिष, एवं दर्शन) चल रहे हैं वे निम्नलिखित है-१. प्राईमरी (कक्षा १ से ५), २. प्रथमा (कक्षा ६ से ८), ३. प्रवेशिका (कक्षा ९ एवं १०) व ४. मध्यमा (कक्षा ११ एवं १२)

विद्यालय का वर्तमान स्वरूप

इस विद्यालय में परम्परागत संस्कृत ज्ञान के साथ अंग्रेजी, हिन्दी, सामाजिक अध्ययन इत्यादि विषय केन्द्रीय विद्यायल स्तर से संचालित होते हैं जो कि प्राचीन और अर्वाचीन ज्ञान को जोड़ते हुए एक सेतु का कार्य कर रहा है।

विद्यालय भारत के विभिन्न भागों एवं नेपाल के छात्रों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करता है। अध्यापन कार्य २० अध्यापक/ अध्यापिकाओं द्वारा संचाचित होता है।

छात्रावास

१. सरस्वती गार्डन छात्रावास (२० छात्र क्षमता)

२. भार्गव हाउस (२० छात्र क्षमता)

२०११-२०१२ में सांस्कृतिक क्रियाकलाप एवं उपलब्धियाँ

१. विद्यालय में दिनांक १५-०८-२०११ को स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

२. दिनांक २१-०८-२०११ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन पूजा, उत्सव एवं झाँकी का कार्यक्रम हुआ।

३. दिनांक १४-११-२०११ को बाल दिवस मनाया गया।

४. दिनांक ०८-०२-२०१२ को वसंत पंचमी के दिन सरस्वती पूजा।

५. विभिन्न संस्थाओं के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यालयी छात्रों द्वारा भाग लिया गया तथा वे पुरस्कृत भी हुए।

पुस्तकालय: विद्यालय के पुस्तकालय में लगभग ७,५०० पुस्तकों का संग्रह है जो पाठ्य एवं सन्दर्भ ग्रन्थों से परिपूर्ण हैं।

प्रयोगशाला: संस्कृत विद्यालय में विज्ञान विषय का समावेश कर एक प्रयोगशाला स्थापित किया गया है जहाँ पर प्रथमा (८), प्रवेशिका (९-१०), मध्यमा (११-१२) के विद्यार्थियों के प्रायोगिक कार्य विज्ञान अध्यापक द्वारा कराये जाते हैं।

संगणक: आधुनिक शिक्षा व्यवस्था से प्राच्य अध्येता छात्रों को परिचित कराने एवं आज की अद्यतन धारा से जोड़ने हेतु छात्रों को संगणक शिक्षा से समन्वित कराने का प्रयास विद्यालय शिक्षकों द्वारा किया जा रहा है।

विकास योजना

१. काशी नरेश हाल का जीर्णोद्धार कर उसे महाराजा रणवीर सिंह सभागार का स्वरूप प्रदान कराना।
२. एक नवीन पुस्तकालय भवन का निर्माण कराना।
३. एक नवीन सुसज्जित विज्ञान प्रयोगशाला का निर्माण कराना।
४. ज्योतिष सम्बन्धी उपकरणों से सुसज्जित ज्योतिष प्रयोगशाला का निर्माण।
५. एक सुसज्जित संगणक प्रयोगशाला की स्थापना।
६. १०० छात्रों के लिए छात्रावास का निर्माण।

उपर्युक्त विकास एवं विस्तार से श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय उत्तरोत्तर उत्कर्ष को प्राप्त करेगा।

२.१.६. का.हि.वि.वि. ग्रंथालय प्रणाली

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पुस्तकालय, देश के सबसे बड़े पुस्तकालयों में से एक है। इसका प्रारम्भ, सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज, कमच्छा के तैलंग हाल से हुआ, जहाँ न्यायमूर्ति स्व. काशी नाथ त्रयम्बक तैलंग की पुस्तकों को उनके पुत्र प्रो. पी.के. तैलंग ने दान स्वरूप प्रदान किया। अपने प्रारम्भिक काल में इसे प्रसिद्ध इतिहासकार सर जदुनाथ सरकार ने संवारा और बाद में पुस्तकालय आन्दोलन के जनक डॉ. एस.आर. रंगनाथन व उनके बाद प्रो. पी.एन. कौल व डॉ. जे.एस. शर्मा यहाँ के पुस्तकालयाध्यक्ष बने।

१९१६ में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज में स्थापित पुस्तकालय १९२१ में आर्ट्स कॉलेज सम्प्रति कला संकाय के केन्द्रीय हाल में स्थानान्तरित हुआ। वर्तमान भवन में पुस्तकालय १९४१ में आया। वर्तमान भव्य भवन १९२७ में बडौदा के महाराज सयाजीराव गायकवाड के उदार २ लाख रूपये के दान से बना। इसलिए इसका नाम भी उन्हीं के नाम से है। १९३१ में जब मालवीयजी लन्दन के गोल मेज सम्मेलन से लौटे तो उनके सुझाव पर इसे ब्रिटिश संग्रहालय के स्वरूप पर बनाया गया। इसके भव्य गोलाकार पठन कक्ष में बर्मा की प्रसिद्ध टीक लकड़ी के फर्नीचर हैं।

इस पुस्तकालय की वृद्धि में देश के प्रसिद्ध व्यक्तियों व उदार परिवारों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। १९३१ में ही पुस्तकों की संख्या साठ हजार हो गयी। उदार दाताओं में दिल्ली के लाला श्रीराम, कोलकाता के सर आशुतोष चौधरी तथा श्री सेठ रूपमल गोयनका तथा वर्धा के श्री जमुना लाल बजाज का नाम उल्लेखनीय हैं। कई परिवारों ने अपने व्यक्तिगत संग्रह का भी दान दिया जिसके कारण कई प्राचीन व दुर्लभ पुस्तकें यहाँ है जिनमें से कुछ १८वीं शती की भी हैं।

संग्रह

इस समय विश्वविद्यालय में १६ संकाय व १४० विभाग हैं। यहाँ की पुस्तकालीय व्यवस्था में शीर्ष पर केन्द्रीय पुस्तकालय (सयाजीराव गायकवाड ग्रन्थालय) है और इसके अतिरिक्त ४ संस्थान पुस्तकालय : चिकित्सा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान संस्थान, ८ संकाय पुस्तकालय एवं कला व विज्ञान संकाय, जहाँ संकाय पुस्तकालय नहीं हैं वहाँ ४२ विभागीय पुस्तकालय हैं। सभी पुस्तकालयों को मिलाकर १४.५ लाख से अधिक पुस्तकों का संग्रह है। भारत की विश्वविद्यालीय पुस्तकालय व्यवस्था में यह पुस्तकालय व्यवस्था सबसे वृहद् व्यवस्था में से एक है। २०११-२०१२ वित्तीय वर्ष में १६७८१ पुस्तकें आयीं। पुस्तकालय में ६१० भारतीय व विदेशी पत्रिकाओं के अतिरिक्त ९८६ पत्रिकाएं नि:शुल्क आती हैं। पुस्तकालय में लगभग ७२२७ पाण्डुलिपियों का अद्‌भुत संग्रह है।

केन्द्र, राज्य सरकार व उनके अधिकरणों के प्रकाशन समाज विज्ञान, विधि, वाणिज्य व कृषि विषयों के लिए बहुत उपयोगी हैं, जिन्हें पुस्तकालय या तो क्रय करता है या नि:शुल्क एकत्र करता है।

केन्द्रीय पुस्तकालय संयुक्त राष्ट्र संघ तथा उसके अधिकरणों के प्रकाशन की नि:शुल्क प्राप्त करता था और इसे डिपॉजिटरी पुस्तकालय

का स्थान प्राप्त था। १९७३ में नि:शुल्क वितरण प्रथा के समाप्त हो जाने के बाद भी पुस्तकालय इन प्रकाशनों को खरीदता है। पुस्तकालय की यह विशेषता किसी भारतीय विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में नहीं है।

पुस्तकालय समय

केन्द्रीय ग्रन्थालय वर्ष में ३५९ दिन खुला रहता है। स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस, दशहरा, दीपावली, बसंत पंचमी व होली इन छह दिनों को छोड़कर पुस्तकालय पूरे वर्ष खुला रहता है। सामान्यतया पुस्तकालय का समय सप्ताह के दिनों में प्रात: ९.०० बजे से सायं ९.०० बजे तक व रविवार व छुटिटयों में प्रात: १०.०० से सायं ५.०० बजे तक रहता है।

छायाप्रति सुविधा

केन्द्रीय पुस्तकालय में छायाप्रति सुविधा की भारी मांग है। छात्रों, अध्यापकों व अन्तर-पुस्तकालय उधार के अन्तर्गत अन्य पुस्तकालयों की माँग पूरी करने के लिए यहाँ पाँच फोटोकापी मशीने हैं। इस सत्र २०११-२०१२ में पुस्तकालय ने ३,०७,०२५ छायाप्रतियां प्रदान की।

इंटरनेट सुविधाएं

केन्द्रीय पुस्तकालय में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। इंटरनेट पर २२ नोड की व्यवस्था है। साथ ही डाउन लोडिंग और प्रिन्ट आउट निकालने की भी सुविधा है जो कम शुल्क देकर प्राप्त की जा सकती है।

दृष्टिबाधित विभाग

केन्द्रीय ग्रन्थालय में दृष्टिबाधित पाठकों की सुविधा के लिए अलग से अनुभाग है, जिन्हें पाठ्यक्रम से सम्बन्धित सामग्री को साफ्ट कापी के द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। वर्ष २०११ -१२ में ५९ दृष्टिबाधित पाठकों को ग्रन्थालय द्वारा यह सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

ऑनलाइन जर्नल्स एण्ड डाटाबेस

केन्द्रीय पुस्तकालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ई जर्नल्स प्राप्ति हेतु यू०जी०सी० इंफोनेट तथा इण्डेस्ट और कंफोर्सिया का भाग है। केन्द्रीय ग्रन्थालय के पास वर्तमान में १३००० फुल टेक्स्ट जर्नल्स और डाटाबेस को सर्च करने की सुविधा उपलब्ध है। इसके अन्तर्गत अमेरिकन केमिकल सोसाईटी, रॉयल सोसाईटी आफ केमस्ट्री, नेचर, साइंस, साइंस डाइरेक्ट इमेराल्ड, इंस्टिट्यूट ऑफ फिज़िक्स, अमेरिकन इन्सटिच्यूट ऑफ फिज़िक्स, अमेरिकन फिज़िकल सोसाइटी, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, स्प्रिंगर वारलॉग, क्लुवर ऑनलाइन पब्लिकेशन आदि के प्रकाशन उपलब्ध है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पास केमिकल एब्सट्रेक्ट और एब्सट्रेक्ट, मैथ साइनेट, मनुपात्रा (लॉ) आदि डाटाबेस भी है। सभी ऑनलाइन जर्नल्स के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर में नेटवर्क के माध्यम से सर्च किया जा सकता है इसकी विस्तृत जानकारी बी०एच०यू० की बेवसाइट http://www.bhu.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला

१. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के केन्द्रीय ग्रन्थालय में ''प्रिन्ट टू ई-रिर्सोसेस : चेलेंजेस एण्ड एपॉरच्यूनिटीज़'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी १५-१६ अप्रैल २०११ के दौरान आयोजित की गयी थी। इस संगोष्ठी में पूरे भारतवर्ष से १३८ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

२. गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं पंडित मदन मोहन मालवीयजी के जन्म शताब्दी वर्ष के शुभ अवसर पर ''ऑनलाइन रिर्सोसेस : यूज़र एजुकेशन प्रोग्राम'' का उद्घाटन एवं पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गयाा इस अवसर पर शिक्षकगण, विद्यार्थी एवं विभिन्न ग्रन्थालयों के ग्रन्थालयी ने भाग लिया।

३. ''स्ट्रेग्थेनिंग द एकेडमिक लाइब्रेरी टू इनहेन्स एग्रीकल्चर एजुकेशन'' विषय पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में १५-१६ दिसम्बर २०११ के दौरान किया गया।

४. यूजीसी इन्फलिवनेट के एन-लिस्ट कार्यक्रम के तहत एसेस टू ई-रिर्सोसेस विषय पर आधारित राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ग्रन्थालय में दिनांक ६ जनवरी २०१२ को किया गया। इस गोष्ठी में भाग लेने के लिए वाराणसी के विभिन्न महाविद्यालयो के साथ-साथ उत्तर पूर्वी भारत से भी प्रतिभागी आये थे।

प्रलेख वितरण केन्द्र

इन्फिलबनेट कार्यक्रम के अन्तर्गत इसकी स्थापना की गयी। इसमें देश के पांच अन्य ग्रंथालय भी हैं। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से बाहरी पाठकों के लिए अभिलेख भेजे जाते हैं। कम खर्च में यह सूचना भेजने का साधन है। अन्य पुस्तकलयों से माँग के आधार पर यह सेवा प्रदान की जाती है।

संगणक व तंत्रीकरण

पुस्तकालय ने सोल साफ्ॅटवेयर (इन्फिलबनेट) को पुस्तकालय संचालन हेतु क्रय किया। केन्द्रीय ग्रन्थालय के इस सॉफ्ट्वेयर में ग्रन्थालय से सम्बन्धित सभी कार्य प्रणालियों की सुविधा उपलब्ध है। सत्र २०११-१२ में ३१५३७ डाटाबेस ग्रन्थालय के संग्रह में जोड़ा गया।

दुर्लभ ग्रन्थों का अंकीकरण

वर्ष २०११-२०१२ में २८५ दुर्लभ ग्रन्थों (४०५०५ पेज) का अंकीकरण किया गया है।

अन्य क्रिया-कलाप

मण्डलीय शाक-भाजी, फल एवं पुष्प प्रदर्शनी-वाराणसी २०१२ में केन्द्रीय ग्रन्थालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने श्रेणी संख्या २१८,५०० वर्ग मीटर से ऊपर की प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

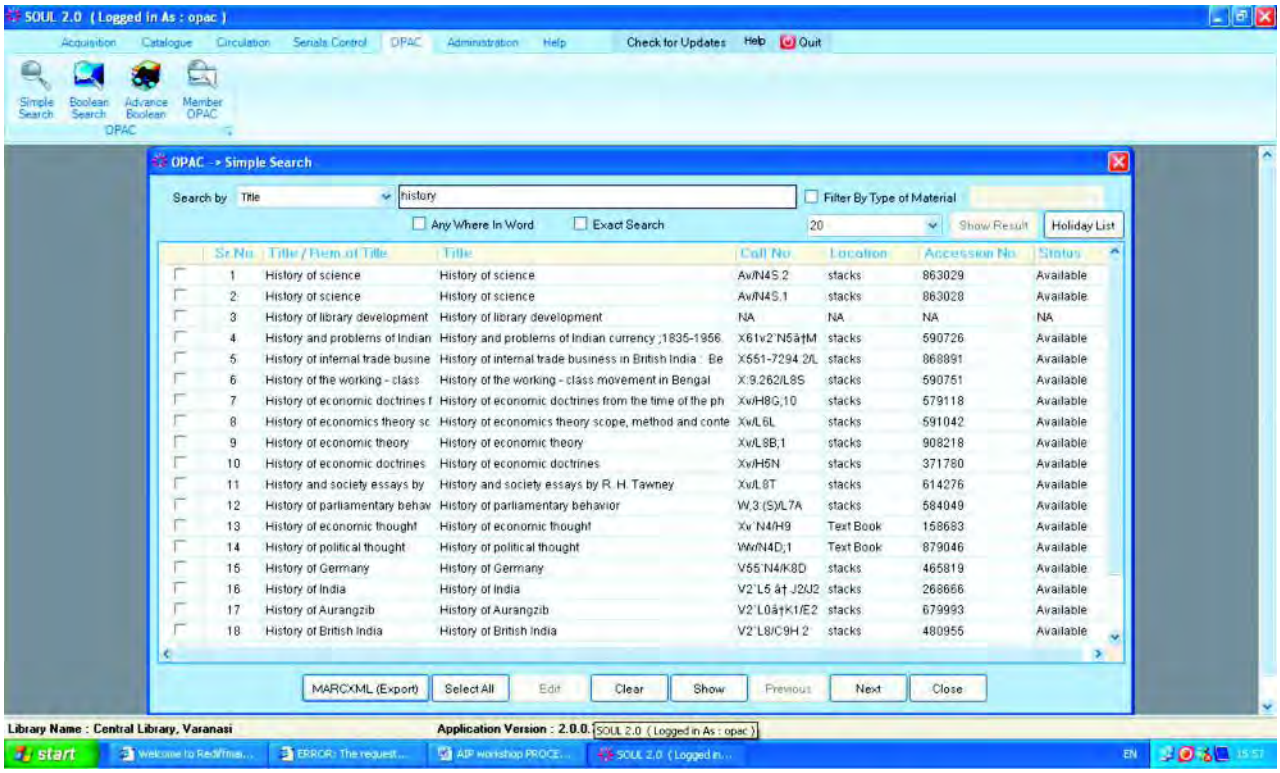

सांख्यकीय

भाग-अ

१. पुस्तकें व पत्रिकाएँ

अ) वर्ष २०११-२०१२ के प्रारम्भ में पुस्तकों व पत्रिकाओं की कुल संख्या	१०,७८,४००
आ) वर्ष २०११-२०१२ के दौरान पुस्तकों में वृद्धि	१६,७८१
इ) प्राप्त पत्रिकाओं की संख्या (जनवरी से दिसम्बर २०११)	
(I) शुल्क देकर	६१०
(II) नि:शुल्क (अनियमित)	९८६
उ) जिल्द कार्य	६,४१३

२. तकनीकी (अंग्रेजी)

अ) तैयार पुस्तकों की संख्या	२१,९४१
आ) तैयार जिल्द बन्धी पत्रिकाओं की संख्या	६१९
इ) तैयार शोध प्रबन्धों की संख्या	२४३
ई) तैयार जिल्द बन्दी पुस्तकें	१,१६६

२अ.तकनीकी (हिन्दी)

अ) तैयार पुस्तकों की संख्या	८,६९१
आ) तैयार जिल्द बन्धी पत्रिकाओं की संख्या	४३
इ) तैयार जिल्द बन्दी पुस्तकें	७७१

३. सेवाएं

अ) कार्य दिवस

१) साप्ताहिक कार्य दिवस	प्रात:९.०० से सायं ९.०० बजे तक
२) रविवार व अवकाश के दिन	प्रात:१०.०० से सायं ५.०० बजे तक
३) ग्रन्थालय खुलने के दिवस (एक वर्ष में)	३५९

आ) सदस्य व पुस्तकों का वितरण

(१) सदस्यता

क) छात्र	१५,०९७
ख) कर्मचारी	४,५९९
ग) परामर्श सुविधा (बाहरी पाठकगणं)	५७४

(२) पुस्तकों का वितरण

क) छात्र	१,०१,५०७
ख) कर्मचारी	१०,४९५
ग) विभागीय पुस्तकालय	१२,५०५

४. सन्दर्भ विभाग

क) प्रश्न व पत्रों की संख्या	७,५००
ख) सन्दर्भ पुस्तकें उपयोग की गयी	८,०००

५. पाठ्य-पुस्तक विभाग

पढ़ी गयी पुस्तकों की संख्या	४५,५६०

६. स्टैक्स (पुस्तक भण्डार)

क) दी गयी पुस्तकें व पत्रिकाएं	२,७५,५१२
ख) बदली गयी पुस्तकें व पत्रिकाएं	३,१४,४८७

७. पत्रिका विभाग

क) सेवा प्रदान पाठकों की संख्या	६२,८५०
ख) पढ़ी गयी पत्रिकाओं, दैनिकों की संख्या	७५,३८०

८. संयुक्त राष्ट्र संघ व सरकारी प्रकाशन विभाग

क) सेवा प्रदान पाठकों की संख्या	४७७
ख) पढ़े गये दस्तावेजों की संख्या	८६०
ग) बढ़े दस्तावेजों मिमियोग्राफ सहित की संख्या	७२

९. पांडुलिपि विभाग

क) सेवा प्रदान पाठकों की संख्या	३१४
ख) पढ़े गये दस्तावेजों की संख्या	५७८
ग) पांडुलिपि डिज़िटाईज़्ड	२८५

१०. प्रतिलिपि इकाई

फोटो कापी किये गये पृष्ठों की संख्या (कार्यालयीन सहित)	३,०७,०२५

११. संगणक सुविधाएं

क) डेलनेट सेवा प्रदान	४
ग) डेलनेट से प्राप्त सामग्री	२

१२. इण्टरनेट सुविधाएं

क) उपयोगकर्ताओं की संख्या	१४,९३२
ख) प्रिन्ट आउट पृष्ठों की संख्या	६,७९८

१३. शोध ग्रंथ

क) पाठकों की संख्या	१५,५०४
ख) पढ़ी गई शोध ग्रंथों की संख्या	१६,११६

१४. ऑनलाइन सेवा:

क) ऑनलाइन पत्रिकाएँ (सम्पूर्णपाठ सहित)	६,६००
ख) ऑनलाइन डाटाबेस	११

१५. राजीव गांधी दक्षिण परिसर

क) वर्ष २०११-१२ के प्रारम्भ में पुस्तकों की कुल संख्या	१०,२९३
ख) वर्ष २०११-१२ के दौरान पुस्तकों में वृद्धि	१,२८२
ग) पढ़ी गयी पुस्तकों की संख्या	१,३४,६६०
घ) निर्गत की गयी पुस्तकों की संख्या	३५,४००

१६. वित्त

(१ अप्रैल २०११ से ३१ मार्च २०१२)

अ) खर्चे

१) पुस्तकें व पत्रिकाएं रखरखाव अनुदान :	
आवर्ती अनुदान	४,७९,६४,३७५.००
विलय अनुदान	१७,६५,८७५.००
२) जिल्द बंधवाई	३,०६,०००.००
३) प्रतिलिपि करना	१,१९,०००.००

आ) आमदनी

१) विलम्ब शुल्क	३,१६,६५६.००
२) पुस्तक भरपाई मूल्य	१,१४,७४६.००
३) टोकन खोना	२४५.००
४) प्रतिलिपिकरण	१,७४,२७४.००
५) इण्टरनेट सेवायें	
छपाई	३,७९१.००
६) परामर्श शुल्क	२७,४४०.००
७) अन्य शुल्क	३५,१५२.००

राजीव गांधी दक्षिणी परिसर, बरकछा

रा०गा०द०प० के ग्रन्थालय में संगणक कक्ष का शुभारम्भ किया गया है जिससे ६० संगणक आवश्यक उपसाधनों के साथ सुसज्जित किए गये है। इस संगणक कक्ष में संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों के लिए इन्टरनेट सुविधा उपलब्ध है। ग्रन्थालय रा०गा०द०प० परिसर के केन्द्र में स्थित है। परिसर ग्रन्थालय का भवन अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ क्रियाशील है। यह ग्रन्थालय विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियो के लिए शिक्षा का केन्द्र बिन्दु है। परिसर का यह ग्रन्थालय मुख्य परिसर वाराणसी के केन्द्रीय ग्रन्थालय के आधीन क्रियाशील हैं। ग्रन्थालय का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों को किताबो, पत्र-पत्रिकाओं को ले जाने तथा समय से वापस करने एवं छायाप्रति की सुविधा उपलब्ध है। अध्यापकों एवं विद्यार्थियो के पढ़ने तथा परामर्श के लिए अलग-अलग कक्ष की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। मुख्य परिसर में शोध से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रो से प्रकाशित होने वाली शोध पत्रिकाएं बढ़ायी जा रही हैं। लगभग दस हजार पुस्तकों की क्षमता का ग्रन्थालय बनाने की योजना हैं। विश्वविद्यालय ने एस०ओ०यू०एल० सोफ्टवेयर का क्रय किया हैं जोकि आँकड़ा कोष तैयार करने के सहायक होगा।

सत्र २०११-१२ के अन्तर्गत रा०गा०द०प० ग्रन्थालय के विकास का अवलोकन

१. ३१.०३.२०१२ तक कुल पुस्तकों की संख्या	: १०६८८
२. इस सत्र में बढ़ी हुई पुस्तको की संख्या	: ३२७
३.निगर्त/परामर्श की गयी पुस्तके : निर्गत	: ३५४००
:परामर्श	: १३४६६०
४. ग्रन्थालय खुलने का समय:	
कार्य दिवसो में	: ९.३० सुबह
से ६.०० शाम तक रविवार	: खुला
५. ग्रन्थालय सदस्यों के रूप में पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या	: ८८५
श. सब्सक्राइब्ड पत्रिकाओं की संख्या	: शून्य
७. ग्रन्थालय में कर्मचारियों की संख्या :	
व्यवसायिक	: ०५
गैर व्यवसायिक	: ०३

कृषि विज्ञान संस्थान का पुस्तकालय

कृषि विज्ञान संस्थान का पुस्तकालय संस्थान के ११ शिक्षण विभागों के लिये केन्द्रीय सुविधा के रूप में कार्य करता है। सत्र २०११-१२ में संस्थान के पुस्तकालय को पूर्ण रूप से पुराने भवन से नवीन भवन में स्थानान्तरण कर दिया गया है। (डायरेक्टोरेट, कृषि विज्ञान संस्थान के भूतल पर) और वर्तमान में यह नवीनीकरण की प्रक्रिया में है अर्थात उच्चीकृत कम्प्यूटर नेटवर्क, इण्टरनेट सुविधा, स्वचलीकरण आदि का कार्यान्वयन आइसीएआर द्वारा स्वीकृत भारत में कृषि शिक्षा के सुदीर्णीय करण योजना के अन्तर्गत रुपया ७५ लाख की सहायता से किया गया। इसके अन्तर्गत नवीन टेक्स्ट बुक, रिफ्रेंस बुक एवं अन्य आवश्यकता आधारित वस्तुओं को शामिल किया गया। विभिन्न संबंधित विभागों और विशेष पाठ्यक्रमों (मुख्य परिसर और राजीव गांधी दक्षिणी परिसर) के समन्वयकों के अनुरोध के आधार पर एक हजार से अधिक उपयोगी पुस्तको और रिफ्रेंस मैटेरियल्स खरीदे गये है। इन पुस्तकों, ग्रन्थों की संस्तुति भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा नवीन स्वीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार है। इस सत्र में कुल रूपये ७५ लाख का उपयोग विकास स्कीम संख्या ४१८६ के अन्तर्गत स्वीकृत हैं जो कि अन्तर्विषयीय, चलाये जा रहे विशेष पीजी स्तर के कोर्सों एवं यूजी स्तर अनुभव आधारित विशेष प्रशिक्षण कोर्स से संबंधित है। वर्तमान में पुस्तकों और पिरियाडिकल्स का कुल स्टाक २६,९०८, है। १००० हजार पुस्तकों एवं रिफ्रेंस वॉल्यूम्स को २०११-१२ में बी.एससी (एजी.), एम.एससी.(एजी.) और पीएच.डी छात्रों के लिए है। संस्थान की लाइब्रेरी इंटरनेट सुविधा और विश्वविद्यालय की वेब ऑफ साइंस से पूर्णत: युक्त है।

प्रौद्योगिकी संस्थान ग्रंथालय

प्रौद्योगिकी संस्थान ग्रथालय अपने मुख्य ग्रंथागार के साथ पाँच विभागीय ग्रंथालयों का समुच्चय हैं जो शिक्षण, अनुसंधान एवं अनुसंधान की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। ग्रंथागार में अभियांत्रिकी विज्ञान, तकनीकी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों व शोध पत्रिकाओं का संग्रह है।

प्रौद्योगिकी संस्थान का मुख्य ग्रंथागार प्रारम्भ में बनारस, इंजीनियरिंग कालेज के भवन में ही हुआ करता था, १९८१ में वह अपने नवीन भवन में स्थानान्तरित हो गया।

दिनांक ३१.०३.२०१२ तक मुख्य ग्रंथागार में पुस्तकों व पत्रिकाओं की संख्या निम्नलिखित है:

किताबें (संदर्भित, टी. बी. बी, सामान्य व अनुसूचित जाति, जनजाति के लिए आरक्षित किताबें)	९५४९९
शोध पत्रिकायें (मढ़ी हुई)	१७७०६
काम्पेक्ट डिस्क	७७९

चिकित्सा विज्ञान संस्थान ग्रन्थालय

चिकित्सा विज्ञान संस्थान के तीनों संकायों एवं कॉलेज ऑफ नर्सिंग के लिये १२०० नई किताबें खरीदी गई। वाई-फाई इंटरनेट से युक्त १२ नया कम्प्यूटर ई-जर्नल एवं किताबों के एसेसिंग के लिये लगवाये गये। संस्थान ग्रंथागार रविवार व अन्य छुट्टियों में खुला रहता है। छात्रावासों में रहने वालों को कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट सुविधाएं प्रदान की जाती है। संस्थान में एक विशेष विंग के रूप में, २००६ में यूज़ीसी. द्वारा निधिबद्ध जनसंख्या शिक्षा प्रसार एवं अनुसंधान के लिये एक अद्‌भुत केन्द्र भी है।

पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास संस्थान ग्रन्थालय

सत्र २०११-२०१२ में १४४ किताबें खरीदी गयी।

पुस्तकालय संग्रह	पुस्तकों की संख्या	जुड़ी हुई किताबों की संख्या
पुस्तकें	३१४४४ + ८५४	८५४
पत्रिकायें (मढ़ी हुई)	२८५३७ + ०६	०६
पत्रिकायें (नवीन)	२६	
पत्रिकायें (बनारस लॉ जर्नल द्वारा विनिमय)	३०	
थिसिस एवं डिसर्टेशन	११४२	
विद्यार्थी पुस्तक ऋण (अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के लिये)	१०६२८	
कुल	**७७४४७**	**८६०**

विधि संकाय

विधि महाविद्यालय पुस्तकालय १८७०० वर्गफीट क्षेत्र में फैला है जिसमें एक विस्तृत पठन-पाठन कमरा जहाँ एक साथ १५० विद्यार्थी बैठ सकते हैं। पुस्तकालय एक ओपेन एसेस सिस्टम है और निम्नलिखित सुविधाएं प्रदान करता है : लेंडिंग सर्विस, पठन-पाठन कमरा सुविधाएं, संदर्भ सेवाएँ, छात्र पुस्तक ऋण सुविधा, पुस्तक बैंक सुविधा अनुसूचित/जनजाति छात्रों के लिये, फोटोकॉपी सेवा, कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट खर्च सुविधा, ऑनलाइन सिंगल डाटाबेस (मनुपत्रा, वेस्टलॉ इण्डिया)।

संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

संकाय में लगभग २५००० पुस्तकों का अपना स्वतन्त्र ग्रंथालय है जिसमें सामान्य, दुर्लभ पुस्तकें एवं पाण्डुलिपियाँ है।

शिक्षा संकाय

शिक्षा संकाय में १८००० पुस्तकों का समृद्ध पुस्तकालय है जिसमें शिक्षा, विशेष शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों से जुड़ी पुस्तकें हैं।

दृश्य कला संकाय

कुल पुस्तकों की संख्या	९०४२
कुल पत्रिकाओं की संख्या	४५६
संकाय ग्रंथालय में रिपोर्ट अवधि के दौरान आयी पुस्तकों की संख्या	८५३
रंगीन स्लाईड्स	३००
मूल ग्राफिक्स प्रिंट	३५०
सामयिक जर्नल	१५

प्रबन्ध शास्त्र संकाय

कुल पुस्तकों की संख्या	१९०७५
वर्ष की अवधि में समाहित पुस्तकें	११००
सबसक्राइब्ड जर्नल की संख्या	६०
पुस्तक निर्गम एवं कन्सल्टेड	१७५००

संगीत एवं मंच कला संकाय

संकाय ग्रन्थालय में ७५०० दुलर्भ पुस्तकें, जर्नल, पाण्डुलिपियाँ एवं पत्रिकाएँ है पिछले वर्ष २० पुस्तकें लगभग ३०० काम्पेक्ट डिस्क खरीदी गयी एवं ग्रन्थालय में समाहित की गयी।

वाणिज्य संकाय

सत्र २०१०-११ में कुल पुस्तकों की संख्या	२३८४४
सत्र २०११-१२ में पुस्तकों की वृद्धि	१४३१

महिला महाविद्यालय

महिला महाविद्यालय पुस्तकालय निम्नलिखित सुविधाएं प्रदान करता है : सरकुलेशन, इन्टरनेट, सन्दर्भ सेवा, पठन-पाठन कक्ष, ओपेक। जहाँ लगभग १००० पत्रिकायें एवं ४८,००० पुस्तकें है।

संस्थानों, संकायों व महाविद्यालयों के पुस्तकालय

अनेक विभागों के पास छात्रों एवं शिक्षकों के लिए उनके अपने पुस्तकालय हैं।

१. कला इतिहास विभाग

कला इतिहास की पुस्तकें	६४३
पर्यटन की पुस्तकें	८३७

२. खनन अभियांत्रिकी

पुस्तकें	९८१०

३. वनस्पति विज्ञान विभाग

पुस्तकें	१००३४

४. इतिहास विभाग

पुस्तकें	१८००

५. राजनीति विभाग

पुस्तकें	६५०
पीरियाडिकल/जर्नल	३५

६. अर्थशास्त्र विभाग

पुस्तकें	१५००

७. जैव प्रौद्योगिकी स्कूल

पुस्तकें	२४१७
इस सत्र में समाहित पुस्तकें	१०८

८. डी.एस.टी.– अन्तर्विषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र

पुस्तकें	१९१

९. महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र

पुस्तकें	३०००
जर्नल	१
वर्ष की अवधि में समाहित पुस्तकें	५६८
मैगज़ीन	९

१०. सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र

पुस्तकें	६८१
वर्ष की अवधि में समाहित पुस्तकें	८६

११. यूज़ीसी.एकेडमिक स्टॉफ कालेज

पुस्तकें	१८०६
पीरियाडिकल	७
वर्ष की अवधि में समाहित पुस्तकें	१०४

१२. खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र

पुस्तकें	५५
पीरियाडिकल	३

१३. भारत कला भवन

पुस्तकें	२४५४१
वर्ष की अवधि में समाहित पुस्तकें	२५८
जर्नल	६२३०

सम्बद्ध महाविद्यालयों के पुस्तकालय

१. आर्य महिला पी.जी.कालेज

पुस्तकें	लगभग २६६६३
जर्नल	४७
मैगजिन	२२

२. दयानन्द पी.जी.महाविद्यालय

पुस्तकें	३९८३८
जर्नल	३५

३. वसन्त कन्या महाविद्यालय

पुस्तकें	२१३९८
पत्रिकाएँ	८

४. वसन्त महिला महाविद्यालय

पुस्तकें	४०४०८
मैगजिन	१३
पत्रिकाएँ	४१

विद्यालयों के पुस्तकालय

१. सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज स्कूल (कमच्छा)

पुस्तकें	३२०००

२. सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल, कमच्छा

पुस्तकें	१७०००

३. श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय

पुस्तकें	१००००

२.१.७ यू.जी.सी. ऐकेडमिक स्टाफ कॉलेज

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (१९८६) ने शिक्षा की गुणवत्ता एवं अध्यापकों की अद्यतन ज्ञान अर्जन की प्रवृत्ति में सम्बद्धता को देखते हुए दिशा निर्देश तय किये थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने न केवल अध्यापक के महत्त्व को रेखांकित किया बल्कि इस बात पर भी बल दिया कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार निभाने के लिए उन्हें अधिकतम अवसर दिये जायें। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ के अन्तर्गत काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज की स्थापना का निर्देश दिया और तदनुसार १९८६ में इस कॉलेज की स्थापना हुई। इस समय इस कॉलेज का विस्तार १२वीं पंचवर्षीय योजना (अप्रैल २०१२ से मार्च २०१७) में कर दिया गया है।

एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज का मुख्य कार्य है- विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में नव-नियुक्त अध्यापकों और प्रशासनिक अधिकारियों को दिशा निर्देशन, पाठ्यक्रमों एवं पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों के द्वारा प्रशिक्षित करना। इसके अतिरिक्त प्रशासकों के लिए कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं। समय-समय पर संगोष्ठियाँ और विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों के भाषण भी इस कॉलेज में आयोजित किये जाते हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अद्यतन दिशा निर्देशों के अनुसार दिशा निर्देशन एवं पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में आई.टी. पर आधारित व्याख्यानों पर विशेष बल दिया जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक अत्याधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला वर्ष २००५-०६ में एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज में स्थापित की गई और आई.टी. पर आधारित पाठ्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता रहा है। वर्ष २००५-०६ में ही इसरो एडूसैट केन्द्र भी यहाँ स्थापित किया गया जो सफलतापूर्वक चल रहा है।

अब तक यहाँ १ समर स्कूल, १ हेल्दी एजिंग कार्यशाला, ६ शार्ट टर्म प्रोग्राम एकेडेमिक एडमिनिस्ट्रेटर्स (प्रशासनिक अधिकारियों एवं अशैक्षणिक कर्मचारियों के लिए), ६० दिशा निर्देशन एवं निम्नलिखित विषयों में १६३ पुनश्चर्या कार्यक्रम (३१ मार्च २०१२ तक) आयोजित किये गये हैं : हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, तुलनात्मक साहित्य, दर्शनशास्त्र, राजनीति विज्ञान, महिला अध्ययन, पत्रकारिता, तिब्बती अध्ययन, वाणिज्य, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, प्राणी शास्त्र, भौमिकी, भूगोल, समाज शास्त्र, विधि शास्त्र, अभियांत्रिकी, कृषि विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, संगीत एवं गायन और सूचना एवं संचार तकनीक अनुप्रयोग।

वर्ष २०११-२०१२ की संक्षिप्त रिर्पोट

यू.जी.सी.-एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा वर्ष २०११-२०१२ में चार दिशानिर्देशन कार्यक्रम, १३ पुनश्चर्या कार्यक्रम और एक छः दिवसीय शार्ट टर्म कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिससे कुल ५६४ प्रतिभागी लाभान्वित हुए, जिसमें ४१२ पुरूष एवं १५२ महिलाएँ थीं। प्रतिभागी विभिन्न विषयों के थे जो अरूणाचल, असम, मिज़ोरम, नागालैण्ड, पश्चिम बंगाल, बिहार, पंजाब, जम्मू कश्मीर, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश राज्यों से थे। पुनश्चर्या पाठ्यक्रम शिक्षा, महिला अध्ययन, दर्शन एवं धर्मागम, कृषि, वनस्पति शास्त्र, गणित, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, लॉ, तुलनात्मक साहित्य और इन्जिनियरिंग विषयों में आयोजित हुए। इन कार्याक्रमों में देश के प्रमुख विषयों के विशेषज्ञों ने अपने व्याख्यान से प्रतिभागियों को लाभान्वित किया। जिनमें प्रमुख रूप से पद्मभूषण प्रो. पी.एम. भार्गव, पद्म भूषण डा. चण्डी प्रसाद भट्ट, पद्मश्री प्रो. लालजी सिंह, डा. एस.एन. सुब्बाराव (प्रख्यात समाजसेवी) प्रो. एस.पी. दीक्षित (महान शिक्षाविद्) हैं।

अन्य सुविधाएँ

व्याख्यान कक्ष और कॉलेज के गेस्ट हाऊस को विश्वविद्यालय के सहयोग से आधुनिक सुविधाओं से युक्त बनाया जा रहा है। व्याख्यान कक्ष को वर्तमान सत्र में वातानुकूलित किया जा रहा है। जिसके लिए वातानुकूलित संयंत्र कॉलेज में आ चुके हैं। फरवरी, २०१२ में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् की टीम ने इस कालेज का पुनरीक्षण किया एवं कालेज के द्वारा आयोजित किए गए पाठ्यक्रमों एवं अन्य कार्यो की सराहना की तथा एक रिपोर्ट कालेज को और यू.जी.सी. नई दिल्ली को प्रेषित किया।

पाठ्यक्रम आयोजन (सत्र २०११-१२)

क्रम सं.	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि	प्रतिभागियों की संख्या	पुरुष/ महिला
१.	दिशानिर्देशन पाठ्यक्रम-५७	मई २१ से जून १७, २०११	५४	४१/१३
२.	दिशानिर्देशन पाठ्यक्रम-५८	सितम्बर ०१ से २८, २०११	३८	३२/०६
३.	दिशानिर्देशन पाठ्यक्रम-५९	जनवरी ०३ से ३०, २०१२	३४	२४/१०
४.	दिशानिर्देशन पाठ्यक्रम-६०	फरवरी २३ से मार्च २१, २०१२	४३	३२/११
	योग		**१६९**	**१२९/४०**
पुनश्चर्या पाठ्यक्रम				
१.	हिन्दी का सोलहवाँ पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	जून २१ से जुलाई ११, २०११	२६	१४/१२
२.	शिक्षा का चौथा पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	जुलाई १५ से अगस्त ०४, २०११	२४	१२/१२
३.	महिला अध्ययन का ग्यारहवाँ पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	अगस्त ०९ से २९, २०११	३९	२०/१९
४.	दर्शन एवं धर्म विज्ञान का द्वितीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	सितम्बर ०३ से २३, २०११	३१	२७/०४
५.	पर्यावरण अध्ययन का चौथा पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	अक्टूबर ०१ से २१, २०११	५१	३४/१७
६.	गणित और सांख्यिकी का पहला पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	अक्टूबर २९ से नवम्बर १६, २०११	२२	१८/०४
७.	बिज़नेस अध्ययन का द्वितीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	नवम्बर ०५ से २५, २०११	२२	२१/०१
८.	प्लांट साइंस का प्रथम पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	नवम्बर २२ से दिसम्बर १२, २०११	१६	१३/०३
९.	पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान का चौथा पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	दिसम्बर ०१ से २१, २०११	२९	२२/०७
१०.	फिज़िकल साइंस का प्रथम पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	जनवरी ३१ से फरवरी २०, २०१२	२४	२३/०१
११.	मानवाधिकार एवं वैल्यू एजुकेशन का प्रथम पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	फरवरी ०१ से २१, २०१२	३०	२३/०७
१२.	तुलनात्मक साहित्य का प्रथम पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	फरवरी १६ से मार्च ०७, २०१२	३७	२४/१३
१३.	केमिकल साइंस का प्रथम पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	मार्च ११ से ३१, २०१२	१५	१०/०५
	योग		**३६६**	**२६१/१०५**
कार्यशाला				
१.	शार्ट टर्म का छठा पाठ्यक्रम- एक्सीलेंस इन हायर एजूकेशन विषय पर	फरवरी २३-२८, २०१२	२९	२२/०७
	योग		**२९**	**२२/०७**
	महायोग		**५६४**	**४१२/१५२**

अपनी स्थापना के समय से ही एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ में सुनिश्चित किये गये उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरन्तर प्रयासरत है और पिछले २५ वर्षो में इस उद्देश्य को प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

२.१.८ मालवीय भवन

मालवीय भवन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के आदरणीय संस्थापक व स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों में से एक पं. मदनमोहन मालवीय जी का पूर्व आवास होने के साथ-साथ विश्वविद्यालय-परिसर का मुख्य स्मारक-भवन भी है और यह १९६१ में मालवीय-शताब्दी वर्ष के अवसर पर जनसाधारण के दर्शन हेतु खोल दिया गया था। स्मारक होने के साथ ही मालवीय-भवन मालवीयजी की शिक्षा, उनके विचारों, उनके अतिप्रिय विषयों की पढ़ाई और जीवन के ऊपर शोध-कार्य का दायित्व भी लेता है। आज मालवीय भवन में निम्नलिखित प्रकल्प कार्यरत है-

१. योग साधना केन्द्र
२. गीता-समिति
३. गीता-योग पुस्तकालय
४. सभागृह एवं
५. मालवीय-मूल्य अनुशीलन केन्द्र।

सुविधाएँ और कार्यक्रम

१. योगसाधना-केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का योगसाधना-केन्द्र १९७५ फरवरी से कार्य कर रहा है। यह योग की शिक्षा, निर्देश और शोध-कार्य की अन्तरानुशासनिक शैक्षणिक संस्था है और योग के क्षेत्र में विश्वविद्यालय-परिसर में होने वाली सभी गतिविधियों का केन्द्र-बिन्दु है। यहाँ दो प्रकार के पाठ्यक्रम संचालित होते हैं जो इस प्रकार है-

		पुरुष	महिला	विदेशी	कुल संख्या
१.	सर्टिफिकेट कोर्स इन योग	४९५	२९४	००	७८९
२.	डिप्लोमा इन योग	१०५	६५	०८	१७८

इस वर्ष फरवरी माह में दिनांक ०६ से ११ फरवरी २०१२ की अवधि में योगसाधना-केन्द्र में कोरियन छात्रों के लिये अल्पकालीन योग प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाया गया।

२. गीता-समिति

गीता-समिति मालवीय भवन की प्राचीन संस्था है। यहाँ प्रत्येक रविवार की सुबह भगवद्गीता के धार्मिक व दार्शनिक विषयों पर व्याख्यान का आयोजन होता है। यह समिति वार्षिक भगवद्गीता प्रवचन-प्रतियोगिता का आयोजन भी करती है। ये साप्ताहिक गीता-प्रवचन नियमित रूप से हर रविवार को आयोजित किये जाते हैं। कुल ३२ नियमित प्रवचन इस सत्र में सम्पन्न हुए।

३. गीता-योग-पुस्तकालय

मालवीय भवन का गीता-योग पुस्तकालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का एक प्रतिष्ठित पुस्तकालय है। पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की लगभग १०,०००० पुस्तकें हैं जिनमें ५००० पुस्तकें विशेष रुप से केवल भगवद्गीता योग और आध्यात्म पर हैं। बहुत से महत्वपूर्ण व्यक्ति यहाँ अध्ययनार्थ आते रहते हैं। गीता-योग पुस्तकालय का निर्धारित समय प्रात: १०.३० से सायं ५.०० बजे तक है। इस वर्ष इसमें 'कल्याण' जैसे कुछ आध्यात्मिक-धार्मिक पत्रिकाओं तथा हिन्दी-अंग्रेजी समाचार पत्रों के नियमित रूप से उपलब्ध रहने की व्यवस्था भी की गई है।

४. महामना सभागार (सभागृह)

मालवीय-भवन के सभागृह में विश्वविद्यालय के सभी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है तथा यह सभागृह नियमित रूप से योग से सम्बन्धित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, गीता, योग व मूल्य शिक्षा से सम्बद्ध व्याख्यानों तथा संगोष्ठियों के लिये उपयोग में लाया जाता है।

सत्र २०११-१२ में सभागृह में आयोजित कार्यक्रम इस प्रकार है-

१. गीता प्रवचन	३२
२. विशेष व्याख्यान	०२
३. भाषण	०२
४. सांस्कृतिक कार्यक्रम	०३
५. धार्मिक कार्यक्रम	०४
(एक श्रीमद्भागवत-सप्ताह प्रवचन सहित)	
६. त्योहार	०२
७. समारोह	०५
८. प्रदर्शन	०३
९. प्रतियोगिता	०३
१०. प्रशिक्षण	०४

(चार माह का एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम तथा एक-एक माह के तीन प्रमाण-पत्रीय पाठ्यक्रम)।

५. मालवीय भवन उद्यान

मालवीय-भवन के चारों तरफ एक प्राचीन सुन्दर बगीचा है जिसमें २९ प्रकार के पौधे लगे हुए हैं जिसमें ६ प्रकार के फूल, १३ औषधीय प्रयोग के पेड़ और ७ तरह की झाड़ियाँ लगी हैं।

भविष्य योजना

उपर्युक्त सुविधाओं को मजबूत करने व आगे बढ़ाने के लिये विश्वविद्यालय के समक्ष एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है। जिसमें एक नये एनेक्स भवन, कार्यालय, कमेटी रुम, पुस्तकालय व एक अतिरिक्त व्याख्यान कक्ष उन विशेष मेहमानों के लिये जो धार्मिक व आध्यात्मिक भाषण व व्याख्यान के लिये आमंत्रित किये जाते हैं, उनके लिए कुछ अतिथि कक्षों का निर्माण सम्मिलित है तथा सप्ताह में दो दिन श्रीमद्भागवत का धारावाहिक प्रवचन भी प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त भवन के दाहिने पार्श्व में श्रीमती कुन्दन देवी बाल क्रीड़ोद्यान का निर्माण भी प्रस्तावित है।

२.१.९. भारत कला भवन

भारत कला भवन, संग्रहालय भारतीय कला एवं पुरातत्व सामाग्री का एक अनूठा संग्रहालय है जो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सन् १९५० से सम्बद्ध है। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के एक अंग के रूप में 'भारतीय कला परिषद्' नाम से १ जनवरी सन् १९२० को इस संग्रहालय की स्थापना हुई। कविन्द्र रविन्द्र नाथ टैगोर इसके प्रथम सभापति थे। वस्तुत: इस संग्रहालय का जन्म एवं विकास पद्मविभूषण राय कृष्णदास की कल्पना का मूर्त रूप है जो इसके आजीवन अवैतनिक निदेशक रहे। सन् १९२८ में 'भारतीय कला परिषद्' के स्थान पर इसका नाम परिवर्तित कर 'भारत कला भवन' रखा गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित वर्तमान भवन का शिलान्यास १७ जुलाई सन् १९५० को तथा उद्घाटन १३ जनवरी सन् १९६२ ई को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने किया।

शैशवास्था से ही भारत कला भवन दुर्लभ, सुन्दर, और कलात्मक वस्तुओं का संग्रहकर्त्ता रहा है। इस संग्रहालय में लगभग १ लाख से भी अधिक कलाकृतियाँ संग्रहित हैं जिसमें प्रस्तर मूर्तियाँ, सिक्के, चित्र, वसन, मृण्मूर्तियां, मनके, शाही फरमान, आभूषण, हाथी दांत की कृतियाँ, धातु की वस्तुएँ, नक्कासी युक्त काष्ठ, मुद्राएँ, प्रागैतिहासिक उपकरण, मृदभाण्ड, अस्त्र-शस्त्र, साहित्यिक सामाग्री इत्यादि हैं तथा निर्धारित १३ वीथिकाओं में इसे प्रदर्शित किया गया है। प्रसिद्ध विद्वान डॉ० ओ.पी. केजरीवाल के अनुदान से महान संग्राहक फ्रेड पिन के संग्रहों की एक वीथिका भी यहाँ है। यह संग्रहालय अपने दुर्लभ, अद्वितीय तथा उत्कृष्ट चित्रों के संग्रह के लिए भी विश्वविख्यात है। यहाँ ताड़पत्र, कागज, कपड़ा, काष्ठ, चर्म, हाथी दांत, सीसा तथा अभ्रक चित्रित लगभग १२ हजार चित्रों का संग्रह है।

यह संग्रहालय एशिया के विश्वविद्यालयीय संग्रहालयों में उत्तम कोटि का है। छात्र, शोधार्थी, शिक्षक एवं अध्ययनार्थी अपने उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए पुस्तकालय में कला तथा पुरातात्विक संदर्भ की जानकारी एवं परामर्श के लिए प्रतिदिन आते रहते हैं। इसके अतिरिक्त भारत कला भवन में कला एवं पुरातनता के उचित देखरेख और जीर्णोद्धार के लिए एक संरक्षण प्रयोगशाला है। मात्र इसी संग्रहालय में छायाचित्र अनुभाग है जो अध्ययनार्थियों के उनके वांछित पुरातनता के जरूरी सन्दर्भ एवं आगामी शोध के लिए छायाचित्र एवं डिज़िटल छायाचित्र प्रदान करती हैं, इसके साथ ही संग्रहालय में पारम्परिक मुगल एवं आरेखी कला के दो कलाकार हैं जो आगन्तुकों एवं जनता में इन कला वस्तुओं की जागरूकता बढ़ाने में संलग्न हैं।

वर्तमान समय में इसके पुस्तकालय में लगभग २४५४१ पुस्तकें तथा ६२३० पत्रिकाएँ संकलित हैं।

नवीन वीथिका का निर्माण : १. निकोलस रोरिक वीथिका, २.मालवीय वीथिका, ३.साहित्य वीथिका, ४.विज्ञान उपकरण एवं ताम्र मूर्ति वीथिका।

प्रशिक्षण कोर्स में सहभागिता

विक्टोरिया एण्ड अलबर्ट म्यूजियम तथा बंगाल क्लब, कोलकाता द्वारा आयोजित म्यूजियम मास्टर ट्रेनिंग कोर्स में संस्थान के तीन संग्रहालय कर्मियों ने सहभागिता कर प्रशिक्षण प्राप्त किया। भारत कला भवन पुस्तकालय के सदस्यों ने केन्द्रीय ग्रन्थागार, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'सोल' सॉफ्टवेयर कार्यशाला में सहभागिता की।

संग्रहालय शैक्षणिक गतिविधियाँ

शैक्षणिक गतिविधियों के अन्तर्गत भारत कला भवन में नियमित विद्यार्थी दर्शकों में जागरूकता उत्पन्न करने हेतु विविध प्रकार के शैक्षणिक क्रियाकलाप आयोजित किये गये। गोष्ठियों, अस्थायी प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं आदि के माध्यम से संग्रहालय यहां संग्रहीत विविध प्रकृति के दुर्लभ धरोहरों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु प्रयासरत रहता है जिससे दर्शक इस मूल्यवान राष्ट्रीय संपदा एवं उसके महत्व को समझ सके। संग्रहालय अवलोकनार्थ आये दर्शकों एवं विभिन्न स्कूल, कॉलेजों के छात्र, छात्राओं के भ्रमणार्थ गाइड सुविधा उपलब्ध करायी गयी।

पुस्तक लेखन/लोकार्पण

भारत कला भवन के निदेशक डॉ० डी.पी.शर्मा द्वारा अधोलिखित ५ पुस्तकें इस सत्र में प्रकाशित एवं लोकार्पित हुईं-१. 'हड़प्पन सांइस एवं मेटल टेक्नोलॉजी ऑफ हड़प्पन', २. 'हड़प्पन सिविलाइजेशन', ३. 'स्टडी ऑफ क्वाइन्स', ४. 'रूट्स ऑफ साउथ एशियन आर्ट', ५. 'डेसिफरमेन्ट ऑफ हड़प्पन स्क्रिप्ट'।

विकास गतिविधियाँ

भारत कला भवन संग्रहालय के समस्त प्रभारी एवं सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष को दुर्लभ संग्रहों एवं पुस्तकों से सम्बन्धित समस्त सूचनाओं को सामयिक व अद्यतन रखने हेतु कम्प्यूटर एवं मल्टीमीडिया की सुविधा प्रदान की गयी। संग्रहालय सभागार में म्यूजिक सिस्टम की सुचारू व्यवस्था की गयी। तीन नई वीथिकाओं हेतु योजना का प्रारूप एवं डिजाईन तैयार किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय दर्शकों की सुविधा हेतु विक्रय पटल, विश्राम गृह, सुरक्षाधिकारी कक्ष आदि का निर्माण किया गया। भारत कला भवन के छत का पुनर्निर्माण किया गया। मूर्तियों के प्रदर्शनार्थ नवीन लंबे सीमेन्ट के चबूतरे व लकड़ी के मूर्तितल (पेडेस्टल) का निर्माण किया गया।

महत्वपूर्ण आगन्तुक : वर्ष २०११-१२ के दौरान लगभग १५००० (६५६७ विदेशी एवं ८४३१ भारतीय) आगन्तुकों ने भारत कला भवन का भ्रमण किया। इनकी स्मृतियाँ भारत कला भवन के रजिस्टर में अंकित है कुछ विशिष्ट आगन्तुकों के नाम निम्नलिखित हैं-निदेशक, इन्दिरा गांधी कला केन्द्र, प्रो. डैंग योचिन, बीजिंग, चाइना, कम्बोडिया से आये संसद सदस्य, महाराष्ट्र शासन मंत्रालय के सदस्य, दक्षिण कोरिया से आये विद्यार्थी, प्रो. मारे पेरी एवं प्रो. प्रीती कृष्णा, कनाडा, यू.जी.सी., नई दिल्ली के आमन्त्रित सदस्य, आई.सी.एच.आर.,नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डॉ. एस. सेट्टर,श्रीमती प्रीती खोसला, लंदन विश्वविद्यालय, श्रीमती रेणुका चौधरी, संसद सदस्य, प्रो० मॉम फ्रेड स्खेर्तें, साइकोलोजिकल कमेस्ट्री जर्मनी, श्री अशोक कुमार हरिनट,डी०जी०, डिफेंस स्टेट, दिल्ली, मंगोलियन एम्बेस्डर, एडिथकामन् विश्वविद्यालय, पर्थ, आस्ट्रेलिया, डेविड टेम्पलिन एलईबामा, यू.एस.ए., डॉ० देहपिया, कनाडा।

महामना पर तैयार वृत्तचित्र एवं पुस्तक का विमोचन करते हुए, पद्मश्री डा. लालजी सिंह, कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

भारत की सांस्कृतिक विरासत पर स्कूल के विद्यार्थियों के साथ बातचीत के दौरान निदेशक, भारत कला भवन

संसद सदस्य श्रीमती रेनुका चौधरी द्वारा भारत कला भवन का दर्शन

२.२. दक्षिणी परिसर

२.२. दक्षिणी परिसर

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा संचालित एक मानकीकृत शैक्षिक संस्था के रूप में (इजारा/पट्टा में) भारत मण्डल ट्रस्ट द्वारा १ अप्रैल १९७९ में स्वीकृत किए गए ११०४ हेक्टेयर भूखण्ड में विस्तारित है। यह मिर्जापुर शहर से लगभग ८ किमी० दक्षिण पश्चिम राबर्ट्सगंज राजमार्ग पर स्थित है। भू-आकृतिक एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण से यह समग्र विन्ध्य परिक्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जो कि मध्य प्रदेश, बिहार एवं छत्तीसगढ़ प्रांत के निकटवर्ती हैं। रा०गाँ०द०प०, शिक्षा के एक केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है जहाँ पर सुदूर क्षेत्र के जनजाति और वंचित वर्ग विशेषतया युवाओं और महिलाओं के प्रशिक्षण और उद्यमिता पर विशेष बल दिया जा रहा है। परिसर विद्यार्थियों के समग्र प्रगति को केन्द्र में रखते हुए उनके हृदय और मस्तिष्क का विकास, शैक्षिक, सांस्कृतिक, भौतिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं के लिए एक ऐसे वातावरण कि स्थापना करता है जो कि विद्यार्थियों के मन एवं शरीर को समृद्ध बनाने में सहायक है। यहाँ के सभी संकाय सदस्य पूर्ण रूप से गुणवत्तायुक्त शिक्षा को अपने कौशल एवं ज्ञान से प्रदान करने के प्रति संकल्पित है। परिसर न केवल उच्च शैक्षिक परिणामों को देने के लिए प्रयत्नशील है बल्कि सफल एवं उच्च पेशेवरों का निर्माण करता है तथा ग्रामीण अंचल के लोगों के उत्थान हेतु प्रयत्नशील है।

परिसर में कार्यरत संस्थानों/संकायों/विभागों का एक संक्षिप्त विवरण

एम०बी०ए० (एग्री बिज़नेस), प्रबन्ध संकाय, रा०गाँ०द०प० ने एग्री बिज़नेस एवं ग्रामीण विकास समस्याओं एवंम चुनौतियाँ पर ५ नवम्बर, २०११ को पंडित मदन मोहन मालवीय जी की १५० वीं वर्षगाठ पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया एवं इस अवसर पर ''एग्री बिज़नेस एवम् ग्रामीण विकास'' शीर्षक पर एक पुस्तक आई०एस०बी०एन० संख्या. ९७८-९३-८१५६४-०-२-८ का विमोचन किया गया। संकाय द्वारा विद्यार्थियों के लिए मुख्य परिसर में विशिष्टीकृत छ:दिवसीय कुल चार प्रशिक्षण कार्यक्रम सत्र २०११-१२ में आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम आमीटि विश्वविद्यालय द्वारा अनुशंसित था।

सत्र २०११-१२ में एम०बी०ए० संकाय सदस्यों द्वारा ४४ ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण एवं ४५ लघु शोध प्रबन्ध निर्देशित किये गये। एम०बी०ए० एग्री बिज़नेस के लगभग ९० प्रतिशत विद्यार्थियों का सम्मानित पब्लिक सेक्टर एवं निजी संस्थानों में औसतन ४.५ लाख प्रतिवर्ष वेतन पर चयन हुआ।

पादप जैव प्रौद्योगिकी कोर्स में प्रयोगशाला स्थापना की प्रक्रिया जून २०११ से प्रारम्भ हुई। एक सुसज्जित प्रयोगशाला ऊतक संवर्धन भवन में बनाने की योजना है जिसके निर्माण हेतु धनराशि का आवंटन कर दिया गया है जो कि प्रायोगिक कक्षाओं के संचालन हेतु नितान्त

आवश्यक है। प्रथम चरण में विक्रय किये गये उपकरणों का नाम क्रमश: हॉरिज़ेन्टल इलेक्ट्रोफोरेसिस यूनिट, वर्टिकल इलेक्ट्रोफोरेसिस यूनिट, रेफ्रीजेटर, मिनी स्पिन रेफ्रीजेटर, माइक्रोसेन्ट्री फ्यूज़, मास फेलेकिंग, मशीन वाटर बाथ, वोटक्स आदि है। अग्रिम चरण में प्रगतिशील उपकरण के विक्रय हेतु आदेश निर्गत हो चुका है जिसके नाम क्रमश: लेमिनार एयर फ्लो, पी०सी०आर० उपकरण, जल डॉकुमेंटेशन सिस्टम, आरबिटल शेकिंग इनक्यूबेटर, डिप फ्रीज़र, फ्लोर सेन्ट्रीफ्यूज़, इनर्वटेड माइक्रोस्कोप, यू०वी० विज़बल स्पैक्ट्रो फोटोमीटर, वेईंग बैलेंस, ज़ेल ब्लाटिंग उपकरण आदि हैं। इसके अतिरिक्त उपभोज्य के लिए धन का आवंटन और कुछ उपभोज्य का क्रय भी किया जा चुका है। पहली बार विद्यार्थियों ने परिसर चयन प्रक्रिया में भाग लिया। इसमें दो विद्यार्थियों का चयन भी हुआ। विद्यार्थियों ने रा०गाँ०द०प० द्वारा आयोजित विभिन्न पाठ्येतर सहभागी क्रिया-कलापों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया एवं विभिन्न पुरस्कारों को प्राप्त किया। पादप जैव प्रौद्योगिकी हेतु आवश्यक पुस्तकों का क्रय ग्रन्थालय द्वारा किया गया।

डिप्लोमा इन ऑफिस मैनेजमेंट एवं डिप्लोमा इन टूरिज़्म मैनेजमेन्ट द्वारा चौदह दिवसीय कार्यशाला दिनांक ६ से २१ जनवरी, २०१२ को आयोजित किया गया जिसका शीर्षक ''ऐन इम्प्लायमेन्ट जेनरेशन एण्ड एम्प्लायमेन्ट अपारच्युनिटी'' था।

शिक्षा संकाय रा०गाँ०द०प० द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन दिनांक २८ से २९ फरवरी, २०१२ को आयोजित किया गया जिसका शीर्षक ''फैक्टर्स अफेक्टिंग टीचिंग एण्ड रिसर्च स्ट्रेटज़ी टु इम्प्रुव क्वालिटी इन हायर एजुकेशन'' था। इस अवसर पर चार पुस्तकों का आई०एस०बी०एन० संख्या के साथ विमोचन किया गया। जिनका नाम क्रमश: ''क्वालिटी टीचर एजुकेशन इन इंडिया'', ''एग्रीकल्चर रिसर्च एण्ड सस्टेनेबल डेवलपमेन्ट इन इण्डिया'', ''डिसिप्लिनरी एप्रोच इन टूरिज़्म एनवायरमेंट आयुर्वेदा एवं योगा'' तथा ''रीसेन्ट ट्रेन्ड्स इन कॉमर्स एण्ड मैनेजमेन्ट'' था।

आयुर्वेद संकाय द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक २६ मार्च २०१२ को आयोजित की गई जिसका शीर्षक ''नेशनल सेमिनार ऑन रिसेन्ट एडवान्सेज़ एण्ड फ्यूचर चैलेन्जेस इन आयुर्वेदा'' था।

पी०जी० डिप्लोमा इन रिमोट सेंसिग एण्ड जी०आई०एस० कोर्स में प्रयोगशाला की स्थापना फरवरी २०१२ में पूर्ण हुआ एवं द्वितीय सेमेस्टर की प्रायोगिक कक्षाओं को रा०गाँ०द०प० में ही करवाया गया। इस कोर्स के सभी १६ छात्रों को सत्र २०११-१२ में दिल्ली की विभिन्न प्रतिष्ठित कम्पनियों ने चयनित किया।

प्रमुख कार्यक्रम

माननीय कुलपति महोदय ने पदग्रहण के उपरान्त रा०गॉ०द०प० परिसर के संकाय सदस्यों, गैर शैक्षणिक कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को अक्टूबर २०११ को सम्बोधित किया।

मालवीय जी के १५०वीं वर्षगाँठ पर ११ से १८ दिसम्बर, २०११ में श्रीमद्भागवत पारायण एवं भागवत कथा का आयोजन किया गया।

मालवीय जी की १५०वीं वर्षगाँठ पर विभिन्न प्रतियोगी कार्यक्रमों का दिनांक २० से २५ दिसम्बर, २०११ में सफल आयोजन किया गया जिसमें रा०गॉ०द०प० एवं मिर्जापुर जनपद के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया।

माननीय कुलपति महोदय ने दिनांक १२ फरवरी, २०१२ को विन्ध्यवासिनी महिला छात्रावास के आगन्तुक कक्ष का उद्घाटन किया।

माननीय कुलपति महोदय ने दिनांक १२ फरवरी, २०१२ को तीन चेक डैम का शिलान्यास किया जिसका उपयोग जल संरक्षण, रबी एवं खरीफ फसलों की सिचाई एवं बीज उत्पादन हेतु किया जायेगा।

माननीय कुलपति महोदय ने दिनांक १२ फरवरी, २०१२ को रा०गॉ०द० परिसर, बरकछा में संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को ''मिस्ट्रि ऑफ आवर ओरिज़िन'' पर अत्यन्त रोचक व्याख्यान दिया।

रा०गाँ०द०प० में ६३वें गणतन्त्र दिवस को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

रा०गाँ०द०प० के सभी प्रमुख भवनों को वाई-फाई नेटवर्क से जोड़ दिया गया है जो कि शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक उत्थान हेतु लाभप्रद है।

छात्रावासों द्वारा अपने स्तर पर विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। छात्रों के बीच पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र

कृषि विज्ञान केन्द्र कृषक समुदाय के लिए विभिन्न प्रकार के कृषि क्रियाकलापों जैसे - प्रक्षेत्र परीक्षण, प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, प्रशिक्षण, किसान मेला, किसान गोष्ठी, प्रसार कार्यक्रम, आदि का आयोजन करता है। कृषि विज्ञान केन्द्र कृषि की नवीनतम तकनीकों व उत्पादों का मूल्याकंन, परिष्कृतकरण और प्रदर्शन निम्न प्रकार से करता है :-

प्रक्षेत्र विशेष हेतु कृषि तकनीकों को चिन्हित कर प्रक्षेत्र परीक्षण करना।

कृषक के खेत पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन द्वारा उत्पादन को संभावित करना।

कृषक/महिला कृषक/प्रसार कार्यकर्ताओं को नवीनतम तकनीकों का प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आधुनिक कृषि तकनीकों द्वारा खेती करने हेतु प्रोत्साहित करना।

विषय विशेषज्ञ एवं ज्ञान केन्द्र के रूप में कृषक समुदाय, निजी एवं स्वयंसेवी क्षेत्रों को आधुनिक कृषि तकनीकी प्रदान कर जनपद की कृषि आर्थिक दशा सुधारने में सहयोग करना।

किसानों को उन्नतशील प्रजातियों के बीज एवं पौध सामग्री उपलब्ध कराना।

कृषि विज्ञान केन्द्र का लक्ष्य जनपद की स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप निर्धारित किया गया है जो इस प्रकार है :-

शुष्क/बारानी क्षेत्रों में संसाधन संरक्षण तकनीक का समावेश।

जनपद में दलहन/तिलहन फसलों की उत्पादकता वृद्धि पर बल।

शुष्क/बारानी क्षेत्रों के लिए फलदार वृक्षों का समावेश।

जनपद में सब्जियों की उन्नत तकनीक आधारित खेती पर बल।

जैव उर्वरक, समन्वित कीट, रोग, खर-पतवार प्रबन्धन एवं पोषक तत्व प्रबन्धन तकनीक अपनाये जाने पर बल।

जनपद में उपलब्ध दुधारू एवं मांस वाले पशुओं की उत्पादकता में वृद्धि।

कृषि यांत्रिकीकरण द्वारा कम श्रम से अधिकतम उत्पादन एवं कटाई उपरान्त प्रौद्योगिकी अपनाये जाने का प्रयास।

ग्रामीण युवाओं/महिलाओं में व्यावसायिक/उद्यमिता का विकास ।

उपरोक्त समस्त कार्यक्रम निम्नानुसार सम्पादित किये जा रहे हैं:- प्रशिक्षण कार्यक्रम, नवीनतम उपलब्ध तकनीकी/प्रजातियों का परीक्षण, तकनीकी प्रदर्शनों/अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन, प्रसार कार्यक्रमों (गोष्ठी, मेला, प्रशिक्षण) का आयोजन, बीज एवं पौध उत्पादन तथा वितरण, मृदा एवं जल की जाँच, संसाधन एवं ज्ञान केन्द्र के रूप में कार्य करना, आदि। इन कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र जनपद में कृषि के विकास हेतु लगातार प्रयासरत है। इसके अतिरिक्त मीडिया लैब एशिया के वित्तीय सहयोग एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के माध्यम से इस केन्द्र पर ग्रामीण ज्ञान केन्द्र की स्थापना की गयी है जिसमें किसानों के प्रशिक्षण के लिए अत्याधुनिक संचार माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है।

रा०गाँ०द०प०कृषि फार्म

रा०गा०द०प०, कृषि फार्म वर्षा आधारित खेती के अंतर्गत कार्य कर रहा है तथा चेक डैम निर्माण करके सूक्ष्म सिंचाई की मदद से बहुत सी फसलो की खेती की जा रही है। बीज उत्पादन एवं फल की खेती हेतू १५० हे० भूमि विकसित की गयी है। विश्वविद्यालय ने तीन चेक डैम निर्माण हेतू ४२.०० लाख रुपये प्रदान किया हैं एवं निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है। इस चेक डैम की मदद से २०१२-१३ में रबी की बुआई ६० हेक्टेयर अत्यधिक प्रक्षेत्र में होगी। वर्ष २००९-१० से बीज उत्पादन का कार्य काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के फसल प्रजनक एवं राष्ट्रीय बीज निगम, वाराणसी के सहयोग से व्यवस्थित रूप से किया जा रहा है । खरीफ की फसलों जैसे धान, तिल, मक्का, बाजरा, मूँग एवं ढैचा का शुद्ध बीज पैदा कर किसानों की सस्ते मूल्य पर रा०गाँ०द०प०, फार्म से विक्रय किया जा रहा है। २०११-१२ में गेहूँ, जौ, चना, सरसों एवं मसूर की ऐसी प्रजातियाँ जो यहाँ के वातावरण में अच्छी उपज दे सके, की बिक्री की गई।

फार्म पर उपलब्ध संसाधन का समुचित उपयोग करते हुए खर्चों को ३० प्रतिशत कम किया गया है। रा०गाँ०द०प० का मुख्य उद्देश्य

विंध्याचल प्रक्षेत्र के शुद्ध बीज की आवश्यकता की पूर्ति, सिंचाई के साधनों का विकास एवं बीज विधायन संयत्र का निर्माण करना है।

वर्ष २०१०-११, में ७ हेक्टेयर कृषि भूमि का विकास सिंचाई के फौव्वारा तकनीक से हुआ है। इस आदर्श तकनीक से कम पानी में पूरे वर्ष सघन खेती की जा सकती है। मूँग के प्रजनक बीज की कमी को देखते हुए कृषि विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक प्रजनक बीज के उत्पाद, बीज का प्रमाणीकरण एवं बिक्रय की व्यवस्था इस वर्ष भी प्रदान कर रहे हैं। मनरेगा परियोजना के अतंर्गत इस वर्ष भी बड़े पैमाने पर पौध रोपण का कार्य चल रहा है।

वर्ष २०११-१२ में छोटे स्तर पर डेयरी फार्म का विकास, शोध एवं दूध की उपलब्धता हेतु किया गया है।

कार्यक्रम गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सत्र २०११-१२ में अर्न व्हाइल लर्न योजना (वर्तमान में ४१ छात्र कार्यरत है) परिसर में सुचारू रूप से संचालित की जा रही है।

कृषि विज्ञान संस्थान द्वारा आयोजित किसान मेले में रा०गॉ०द०प० स्टाल ने प्रथम पुरस्कार अर्जित किया।

बासमती चावल की उन्नति प्रजाति एच०यू०बी०आर० १०-९ को विशेष कार्याधिकारी, रा०गॉ०द०प० प्रोफेसर रवि प्रताप सिंह और उनके सहयोगी कृषि वैज्ञानिकों ने विकसित किया। सेन्ट्रल वैरायटल आइडेन्टिफिकेशन कमेटी ने ४७वीं एनुअल राइस मिटिंग, डी०आर०आर०, हैदराबाद में ७ अप्रैल, २०१२ को इस प्रजाति को चिन्हित एवं जारी किया।

विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध अनुसंधान सुविधाओं का विवरण

रा०गाँ०द०प० में अनुसंधान गतिविधियों को मजबूत आधारशिला रखे जाने की आवश्यकता है। विभिन्न पाठ्यक्रमों जैसे

२९ अक्टूबर, २०११ को राजीव गांधी दक्षिणी परिसर में आयोजित विन्ध्य किसान मेला

एम०बी०ए० एग्री बिज़नेस, एम०सी०ए०, एम०एससी०(टेक) इन इनवायरमेन्टल साइंस एवं टेक्नोलॉजी, एम०एससी०(एजी०) एग्रो फॉरेस्ट्री, एम०एससी० (एजी०) स्वायल एवं वॉटर कन्ज़रवेशन, एम०एससी० इन प्लान्ट बायोटेक्नालॉजी में ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण, लघु शोध एवं शोध प्रबन्ध के लिये संगणक प्रयोगशाला और रासायनिक प्रयोगशाला की सुविधा कुछ सीमा तक प्रदान की जा रही है।

विश्वविद्यालय द्वारा रा०गाँ०द०प० में स्वीकृत नये पाठ्यक्रमों का विवरण

सत्र २०११-१२ में आयुर्वेद संकाय में रा०गाँ०द०प० में एम०फार्मा (आयुर्वेद) पाठ्यक्रमों की शुरूआत की गयी जिसमें विद्यार्थियों की कुल संख्या १५ है।

सत्र २०११-१२ में एम०बी०ए० (एग्री बिज़नेस) विषय में पाठ्यक्रम को पुनः संशोधित करके संगठित व्यवसायिक समूह के माँग एवं पूर्ति के अनुरूप नियोजित किया गया है।

बी०एससी० (कृषि) पाठ्यक्रम सत्र २०१२-१३ में प्रारम्भ करने की योजना है।

पशु चिकित्सा विज्ञान संस्थान के अन्तर्गत १८ नये विभागों के संचालन के लिए आगामी २०१२-१३ के लिए विश्वविद्यालय द्वारा अनुमति प्रदान की गयी है।

परिसर में एक केन्द्रीय प्राथमिक विद्यालय स्थापित करने की प्रक्रिया चल रही है।

अनुस्थापन सेवा प्रशिक्षण का कार्यक्रम

परिसर में एक अनुस्थापन समिति का गठन किया गया है जो कि विद्यार्थियों को सत्र के दौरान प्रशिक्षण एवं नियुक्ति हेतु आवश्यक अवसरों को उपलब्ध कराती है। यह समिति मुख्य परिसर के अनुस्थापन समिति से सक्रिय रूप से समन्वय बनाये रखती है।

पाठ्येतर क्रियाएँ/गतिविधियाँ

इस सत्र में शैक्षिक कार्यक्रमों के साथ-साथ विभिन्न कार्यक्रमों, गतिविधियों का आयोजन किया गया।

पं० महामना मदन मोहन मालवीय जी की १५०वी० वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में पाँच दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमे भारतीय सांस्कृतिक नृत्य, लोकगीत, प्रहसन, हिन्दी, संस्कृत एवं आँग्ल भाषा में वाद-विवाद प्रतियोगिता, नाटक एवं तत्काल चित्रकला प्रतियोगिता आदि थी। स्पंदन २०११-१२ में रा०गाँ०द०प० के विद्यार्थियों ने तीन पुरस्कार अर्जित किया। विन्ध्याचल एवं शिवालिक छात्रावास में छात्रों के स्वस्थ्य मनोमस्तिष्क के विकास हेतु आंतरिक एवं बाह्य खेल-कूद का सफल आयोजन किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत विभिन्न शिविरों का आयोजन किया गया जो कि तात्कालिक सामाजिक मुद्दों से सम्बन्धित था।

परिसर के नव-निर्मित एवं योजनागत भवनों की संक्षिप्त रूप रेखा

सत्र २०११-१२ रा०गाँ०द०प० की परिधि में निम्न विकास/ निर्माण कार्य पूर्ण एवं प्रारम्भ किए गये।

खेल-कूद परिसर एवं पैवेलियन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। जिसके अन्तर्गत ४००मी० का मानकीकृत पथ तैयार किया गया है।

विन्ध्यावासिनी महिला छात्रावास को जाने वाली सड़क तैयार हो चुकी है।

परिसर को जोड़ने वाली विभिन्न सड़कों का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

शिक्षक आवास के पास बनने वाला गैरेज का कार्य प्रगति पर है।

जल शोधन संयत्र एवं पानी टंकी का निर्माण कार्य प्रगति पर है जिसके पूर्ण होने पर शुद्ध एवं सुरक्षित पीने योग्य जल की उपलब्धता परिसर में २४ घंटे हो जायेगी।

बीज भण्डारण एवं बीज संवर्धन सयंत्र का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है।

विन्ध्यावासिनी महिला छात्रावास में आगन्तुक कक्ष का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है।

सिंचाई एवं जल संरक्षण हेतु तीन चेक डैम की परिकल्पना एवं निर्माण कार्य इस सत्र में प्रारम्भ हो चुका है।

पादप जैव प्रौद्योगिकी तथा मृदा एवं जल सरक्षण विषय के विद्यार्थियों हेतु पादप जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला तथा मृदा एवं जल संरक्षण प्रयोगशाला का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इन प्रयोगशालाओं में उपकरण मंगाने एवं कार्यरत कराने के लिए ५० लाख का आवंटन किया गया है।

लोवर खजुरी जल परियोजना का कार्य प्रगति पर है।

राजीव गांधी दक्षिणी परिसर का प्रशासनिक ब्लाक

२.३. विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत संचालित नगरीय महाविद्यालय

२.३.१. आर्य महिला पी.जी. कॉलेज
२.३.२. वसन्त महिला महाविद्यालय
२.३.३. वसन्त कन्या महाविद्यालय
२.३.४. दयानन्द महाविद्यालय (डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज)

२.३.१. आर्य महिला पी.जी. कॉलेज

महर्षि ज्ञानानन्द जी की शिष्या श्रीमती विद्यादेवी ने श्री आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद् के संरक्षण में सन् १९५६ में काशी क्षेत्र में आर्य महिला डिग्री कॉलेज की स्थापना की। सन् १९५८ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा बी०ए०पाठ्यक्रम को अस्थायी तथा १९६८ में स्थायी सम्बद्धता प्राप्त हुई। इस संस्था से उच्च शिक्षा प्राप्त कर शिक्षा, प्रशासन, प्रबन्धन तथा विविध कलाओं के क्षेत्र में कार्यरत महिलाएँ देश के विभिन्न प्रदेशों एवं विदेश में अपने कौशल तथा कार्यक्षमता का परिचय दे रही हैं।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

महाविद्यालय में त्रिवर्षीय बी०ए० (प्रतिष्ठा) कला और समाजविज्ञान पाठ्यक्रम के साथ एकवर्षीय बी०एड०पाठ्यक्रम का अध्ययन-अध्यापन नियमित रूप से होता है। सत्र २००४-२००५ से त्रिवर्षीय बी०कॉम०(प्रतिष्ठा) पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। बी०ए० (प्रतिष्ठा) पाठ्यक्रम में कला एवं सामाजिक विज्ञान वर्ग के अन्तर्गत २१४-२१४ छात्राओं को तथा बी०एड्० में १२० छात्राओं को प्रवेश दिया जाता है। स्ववित्तपोषित योजना के अन्तर्गत संचालित बी०कॉम० पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कुल ८५ स्थान नियत है। सत्र २००८-०९ से हिन्दी, संस्कृत एवं समाजशास्त्र, २०१०-११ से राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र में तथा २०११-१२ से इतिहास, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व एवं मनोविज्ञान विषय में द्विवर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है।

परीक्षाफल विवरण: सत्र २००९-१०

कक्षा	परीक्षा में सम्मिलित छात्राएँ	उत्तीर्ण	प्रतिशत	परीक्षाफल		
बी०ए०(आनर्स) तृतीय वर्ष	३१२	२६२	८३.९	५९	१६१	४२
बी०कॉम०(आनर्स) तृतीय वर्ष	४७	४७	१००	२६	१८	०३
बी०एड०	८६	लिखित-८५	९८.८४	८३	०२	--
		प्रायो०-८६	१००	८६	--	--
एम.ए. द्वितीय वर्ष, हिन्दी	२८	२७	९६.४३	२२	०५	--
एम.ए. द्वितीय वर्ष, संस्कृत	२६	२५	९६.१५	--	--	--
एम.ए. द्वितीय वर्ष, समाजशास्त्र	२५	२३	९२.०	२३	--	--

शिक्षण एवं शिक्षणेतर गतिविधियाँ

बंगाली विभाग

२०११-१२ में बंगाली हिन्दी अनुवाद (इग्नू द्वारा मान्य) द्विवर्षीय प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस पाठ्यक्रम में १३ छात्राओं ने प्रवेश लिया। २१.०२.२०१२ को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा दिवस के अवसर पर एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी माल्वीयाज विज़न ऑन इण्डियन लेन्वेज़ेज़ (भारतीय भाषाओं पर मालवीय जी की दृष्टि) का आयोजन किया गया। छात्राओं ने २२-२४ नवम्बर, २०११ को 'मेधा संकुल' में बंगला निबन्ध, रवीन्द्र संगीत, बंगला संगीत एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया। ४ जनवरी, २०१२ को राम कृष्ण मिशन वाराणसी के सहयोग से एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। १८ फरवरी, २०१२ को हिन्दी विभाग के सहयोग से 'मालवीय जी की शिक्षानीति' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अंग्रेजी विभाग

१५ अक्टूबर, २०११ को विश्व काव्य दिवस के अवसर पर कविता पाठ प्रतियोगिता का अयोजन किया गया। ४ नवम्बर २०११ को ''रिवाइवल ऑफ रोमैन्टिशिज्म इन नाइन्टिंथ सेन्चूरी इंग्लिश लिटरेचर'' विषय पर साहित्यिक वक्तव्य का आयोजन किया गया।

हिन्दी विभाग

२० सितम्बर, २०११ को हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दी दिवस मनाया गया। ९ अक्टूबर, २०११ को कविता पाठ का आयोजन किया गया। २८ जनवरी से ०३ फरवरी, २०१२ तक सप्तदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला 'मैथॅडॉलोजी ऑफ सोसल साइंसेज़ एण्ड ह्यूमनिटीज' का आयोजन किया गया। १४-१५ मार्च, २०१२ को आधुनिक भारत के निर्माण में पं० मदन मोहन मालवीय का योगदान' विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। २४ मार्च, २०१२ को कहानी पथ का आयोजन किया गया।

संस्कृत-विभाग

८ दिसम्बर, २०११ को अखिल भरतीय व्यास महोत्सव द्वारा आयोजित छन्दोगान प्रतियोगिता की गई। दिनांक २० फरवरी, २०१२ को ज्ञानप्रवाह में आयोजित श्रौतेष्टि-प्रयोग मित्रविन्दा इष्टि के अवलोकनार्थ एवं ज्ञानार्जनार्थ छात्राओं को ले जाया गया। २१.०१.२०१२ को 'इण्डियन हेरिटेज वाराणसी' विषय पर ज्ञानप्रवाह में आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में छात्राओं की सहभागिता रही। ३० मार्च, २०१२ को 'व्यक्तित्व प्रबंधन के मूल मंत्र' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'सर्जना' २०११-१२ का प्रकाशन हुआ। विभाग के द्वारा प्रतिवर्ष 'सूकृति' नामक वाल मैग्जिन प्रकाशित की जाती है।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व-विभाग

'प्राचीन भारत के सिक्के' इस विषय पर डॉ. रंजना मालवीय एवं सुनीता यादव द्वारा पावर प्वाइंट प्रेजेन्टेशन किया गया। २३ फरवरी, २०१२ को डॉ. भानु अग्रवाल पूर्व संकाय प्रमुख, संगीत मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के द्वारा 'आहत सिक्के एवं प्रतीक' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया।

दर्शनशास्त्र विभाग

दिनांक २५ नवम्बर २०११ को अन्तर्राष्ट्रीय दर्शनशास्त्र दिवस के अवसर पर प्रो. एस.पी. पाण्डेय धर्म दर्शन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने **रेलेवेन्स ऑफ भगवद्गीता इन द कॉन्टेम्प्रोरी वर्ड** पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। आई.सी.पी.आर. व्याख्यान शृंखला २०११-१२ के अन्तर्गत २२ फरवरी, २०१२ की मुख्य वक्ता थीं डॉ. रमा घोष, पूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज एवं डॉ. डी.ए. गंगाधर, पूर्व अध्यक्ष, धर्मदर्शन-विभाग, का.हि.वि.वि.। व्याख्यान का विषय था **'द कान्सेप्ट ऑफ मोक्ष इन इण्डियन फिलॉसफी'।** आई.सी.पी.आर. ने राशि २०,६८५/- विभाग को प्रदान किया। यू.जी.सी. द्वारा मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक २१-२२ जनवरी, २०१२ को **'बौद्ध दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्य'** विषय पर हुआ।

यू.जी.सी. मान्यताप्राप्त बौद्ध अध्ययन केन्द्र

गत वर्ष की भाँति छः मास का सर्टिफिकेट कोर्स दिनांक ८ सितम्बर, २०११ को आरम्भ किया गया। ६ मास का पाली एवं भोटी भाषाओं में नया डिप्लोमा कोर्स आरम्भ किया गया। दिनांक ०१ अक्टूबर, २०११ को गाँधी जयन्ती के अवसर पर **'लार्ड बुद्धा एण्ड गाँधी'** विषय पर ही विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। दिनांक ११ दिसम्बर, २०११ तक यू.जी.सी. द्वारा अनुदानित पॉली एवं भोटी भाषा पर सप्तदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया दिनांक २१-२२ जनवरी, २०१२ को 'बौद्ध साहित्य में लोकतान्त्रिक मूल्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगीत (गायन) विभाग

'मेधा संस्कृति संकुल' के अन्तर्गत युवा महोत्सव (२३ से २५ नवम्बर, २०११) में छात्राओं ने भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किये।

संगीत (वादन) विभाग

अक्टूबर २०११ में दूरदर्शन द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में संगीत (वादन) विभाग की छात्राओं ने सहभागिता की।

गृहविज्ञान-विभाग

इग्नू केन्द्र (संख्या-४८०२२) आर्य महिला पी.जी. कॉलेज में १९ नवम्बर २०११ को प्रारम्भ हुआ। इस केन्द्र के द्वारा एकवर्षीय एवं द्विवर्षीय प्रमाणपत्र -पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

समाजशास्त्र विभाग

२६.०९.२०११ से ०३.१०.२०११ तक व्याख्यान शृंखला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. अशोक कुमार कौल, समाजशास्त्र-विभाग, का.हि.वि.वि., प्रोफेसर अरविन्द कुमार जोशी, समाजशास्त्र विभाग, का.हि.वि.वि. थे।

इतिहास विभाग

२०.०३.२०१२ को 'रिलिज़न एण्ड एनवायरमेंन्ट' और 'सोशल पोजिशन ऑफ वूमन इन एनसिएन्ट इण्डिया' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

राजनीतिशास्त्र विभाग

१७ जनवरी, २०१२ को आयोजित भाषण प्रतियोगिता 'रोल ऑफ यूथ इन एलेक्शन' विषय के अन्तर्गत छात्राओं ने लोकतंत्र को मजबूत बनाने के मूल्यों पर विचार प्रस्तुत किया। दिनांक ३० मार्च, २०१२ को डॉ. अमरनाथ मोहन्ती, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विभाग, का.हि.वि.वि. द्वारा **'डेमोक्रेसी इन इण्डिया'** विषय पर विशिष्ट व्याख्यान दिया गया।

अर्थशास्त्र विभाग

दिनांक २४ एवं २६ मार्च, २०१२ को 'स्टैटिस्टिकल पैकेजेज़-एस.पी.एस.एस. एण्ड एक्सेल' विषय पर स्नातकोत्तर छात्राओं के लिए द्विदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण विभाग (बी.एड.)

हिन्दी दिवस के अवसर पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय 'अपने देश में हिन्दी विदेशी क्यों' था। ३ से ९ जनवरी, २०१२ के मध्य ५ दिन का स्काउट एवं गाइड शिविर का आयोजन किया गया।

वाणिज्य विभाग

प्रत्येक शनिवार को छात्राओं को वैश्विक आर्थिक समस्या बजट से सम्बन्धित विचारों से मल्टीमिडिया द्वारा अवगत कराया जाता है एवं इन्टरनेट के द्वारा ज्ञानार्जन की सुविधा दी जाती है।

पुस्तकालय

महाविद्यालय के पुस्तकालय में छात्राओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अनेक प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध हैं। अध्ययनकक्ष की सुविधा के साथ-साथ समसामयिक सन्दर्भों तथा कैरियर गाइडेंस सम्बन्धी सूचनाएँ भी पुस्तकालय में उपलब्ध होती है। पुस्तकों की कुल संख्या २६,६६३ तथा शोध पत्रिकाओं की संख्या ४७ है। हिन्दी और अंग्रेजी में ११ समाचारपत्र और २२ पत्रिकाएँ दैनन्दिन घटनाक्रमों की जानकारी के लिए मंगायी जाती हैं।

प्रकाशन

महाविद्यालय में प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाओं का विवरण निम्नवत् है-

१. न्यूज लेटर -प्रशिक्षण विभाग (बी.एड्.) समाचारपत्र २. दर्पण-महाविद्यालयीय समाचारपत्र ३. सर्जना-महाविद्यालयीय वार्षिक पत्रिका ४. क्रियेशन-षाण्मासिकी शोध पत्रिका

उपचार-कक्षाएँ

हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत की अल्पज्ञ तथा एस.सी./एस.टी./ओ.बी.सी. (नॉन-क्रीमीलेयर) वर्ग की छात्राओं के लिए यू.जी.सी. की ११ वीं योजना के अन्तर्गत उपचार-कक्षाओं का संचालन किया जाता है जिनमें छात्राओं को विषय का आधारभूत ज्ञान कराने पर बल दिया जाता है।

एन.सी.सी.

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा संचालित आर्य महिला पी.जी. कॉलेज ने सन् २००४ से ८९ यू.पी. एन.सी.सी. के अन्तर्गत एन.सी.सी. की सब-यूनिट को स्थापित किया है।

एन.एस.एस.

२४ सितम्बर २०११ को आर्य महिला पी.जी. कॉलेज ने राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनाया। इस अवसर पर स्वच्छता अभियान के तहत छात्राओं ने सुन्दरबगिया (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) में गाँधी जयन्ती मनाया।

तेजस्विनी

महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की एक इकाई महाविद्यालय में कार्यरत है जो स्त्रीजाति में जागरूकता उत्पन्न करने में संलग्न है।

स्पिक मैके

वर्तमान सत्र में **स्पिक मैके** कार्यक्रम के अन्तर्गत विख्यात शास्त्रीय गायकों एवं लोक कलाकारों को आमंत्रित किया गया। इसका उद्देश्य छात्राओं को भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों से अवगत कराना था। दिनांक २६ नवम्बर २०११ को उस्ताद अब्दुल रशीद खाँ (१०५ वर्ष) को शास्त्रीय गायन के लिए आमंत्रित किया गया। अपने गायन से उस्ताद ने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। दिनांक ३० नवम्बर २०११ को पद्मभूषण तीजन बाई (पाण्डवानी गायिका) का अभिनन्दन किया गया। उन्होंने **'द्रौपदी चीरहरण'** नामक लोक गायन से अपने श्रोताओं को भावविभोर कर दिया।

अन्तःसंरचना सुविधाएँ

महाविद्यालय में पाँच प्रयोगशालाएँ हैं जिनमें १ मनोविज्ञान विभाग में, ३ गृह विज्ञान विभाग में (फूड एवं न्यट्रीशियन, टेक्सटाइल एण्ड क्लाथिंग, होम मैनेजमेंट एक्टेंशन एजुकेशन) तथा १ प्रशिक्षण विभाग में है।

महाविद्यालय में एक आडिटोरियम (हॉल), स्टेज, खेल का मैदान, पुस्तक एवं पठन-पाठन सामग्री केन्द्र, छायाप्रति-सुविधा एवं जलपान गृह की सुविधा है। कम्प्यूटर प्रयोगशाला में २५ कम्प्यूटर इन्टरनेट सुविधा से युक्त हैं।

२.३.२. वसन्त महिला महाविद्यालय

वसन्त महिला महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत है अत: महाविद्यालय का संचालन विश्वविद्यालय के एकेडमिक कलैण्डर के अनुसार होता है। २०११-१२ सत्र के लिए महाविद्यालय ४ जुलाई, २०११ को खुला। प्रवेश-प्रक्रिया पूरी होने के पश्चात प्राचार्या डॉ. विजय शिवपुरी ने नवागत छात्राओं का स्वागत करते हुए उन्हें महाविद्यालय की ऐतिहासिक परम्परा से अवगत कराया। इस सत्र में चार विषयों में हिन्दी, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर कक्षायें प्रारम्भ हुईं। महाविद्यालय में व्यासायिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत यू.जी.सी. द्वारा मॉस कम्यूनिकेशन में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा एवं एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम संतोषजनक रहा। बी.काम., बी.एड., एम. ए. अंग्रेजी एवं मनोविज्ञान-१००%, बी. ए. -८८%। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में महाविद्यालय की चार छात्राओं को अंग्रेजी, चित्रकला, संगीत-सितार एवं उर्दू में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के लिए सम्मानित किया गया।

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की अध्यक्ष डॉ.इरावती के संयोजन में 'कला एवं धर्म' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (२३-२४ सितम्बर, २०११) का आयोजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सौजन्य से किया गया। संगोष्ठी में लगभग पच्चीस शोध-पत्र पढ़े गये। ६-७ फरवरी, २०१२ को उर्दू विभाग की अध्यक्ष डॉ. नफीस बानो के संयोजन में 'असरारूल हक मजाज फन और शख्सीयत' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परीषद, नई दिल्ली के सौजन्य से हुआ। संगोष्ठी में तेईस शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये। इसी अवसर पर अखिल भारतीय मुशायरा 'याद-ए-मज़ाज' का भी आयोजन किया गया।

शिक्षक वर्ग: महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ.विजय शिवपुरी का डॉ. एनी बेसेण्ट के जन्मदिवस पर थियोसॉफिकल सोसाइटी में 'स्त्री शिक्षा के संदर्भ में डॉ. एनी बेसेण्ट के विचार' विषय पर व्याख्यान हुआ। 'महिला दिवस' पर महिला अध्ययन केन्द्र, का. हि. वि. में डॉ. विजय शिवपुरी ने सारगर्भित व्याख्यान दिया। 'वैल्यू एजूकेशन' पर डॉ.विजय शिवपुरी की पुस्तक प्रकाशित हुई। डॉ. इरावती के चार, विभिन्न संस्थाओं में व्याख्यान हुए। 'ज्ञान-प्रवाह' की ऐकेडेमिक कमेटी में डॉ. इरावती को सदस्य बनाया गया। महाविद्यालय के प्रबन्धक स्वामी चिदानंद और प्राचार्या डॉ. विजय शिवपुरी के निर्देशन में 'स्टूडेन्ट फोरम' का गठन किया गया। इस फोरम के माध्यम से छात्राओं के छोटे-

छोटे समूहों को कृष्णमूर्ति अध्ययन केन्द्र में परिचर्चा के लिए भेजा जाता रहा। डॉ. परवीन सुल्ताना को राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ द्वारा वाराणसी के स्कूलों में 'पर्यावरण तथा वन संरक्षण' विषय पर चित्रकला प्रदर्शनी आयोजित करने हेतु जिला समन्वयक नियुक्त किया गया।

कृष्णमूर्ति अध्ययन केन्द्र द्वारा जे. कृष्णमूर्ति सम्मेलन-२०११ में 'स्वयं को समझने की आवश्यकता' विषयक गैदरिंग में चार शिक्षकों ने भाग लिया। महाविद्यालय के छः शिक्षकों ने विभिन्न विषयों पर आयोजित कार्यशालाओं में भाग लिया।

महाविद्यालय के सात शिक्षकों ने दिशानिर्देशन कार्यक्रम तथा एक शिक्षक ने पुनश्चर्या कार्यक्रम में सहभागिता की।

महाविद्यालय के शिक्षकों ने विभिन्न अन्तरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय संगोष्ठियों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

व्यावसायिक परामर्श (कॅरिअर काउन्सिलिंग)

'केयर' संस्था द्वारा 'व्यक्तित्व विकास' सम्बन्धी दो दिवसीय कार्यक्रम हुआ। वाणिज्य विभाग की छात्राओं के लिए रोजगार सम्बन्धी क्विज तथा प्रेजेन्टेशन का आयोजन एस.एम.एस., वाराणसी द्वारा किया गया। बी.ए., बी.काम.एवं बी.एड.की अंतिम वर्ष की छात्राओं के लिए 'व्यक्तित्व विकास' सम्बन्धी कार्यक्रम हुआ। बीए., बी.एड.एवं एम.ए.की छात्राओं हेतु अजेलिया, वाराणसी द्वारा 'व्यक्तित्व विकास' पर कार्यक्रम हुआ।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

तीन दिवसीय, द्वितीय भारतीय छात्र संसद का आयोजन स्वामी विवेकानंद मंडप, एम. आई. टी. कैम्पस, पुणे में हुआ। भारतीय छात्र संसद का मुख्य था - 'युवा राजनीति से किस प्रकार जुड़े' महाविद्यालय की दस छात्राओं ने इसमें भाग लिया। युनाइटेड वर्ल्ड स्कूल ऑफ गुड़गाँव तथा आई. आई. एम. बंगलुरू के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित यूनाइटेड माइण्डस जनरल अवेअरनेस कार्यक्रम में चुनी गई चौबीस छात्रायें गुड़गाँव गईं। श्री रामचंद्र मिशन तथा यूनाइटेड नेशन इन्फारमेशन सेण्टर फॉर इण्डिया द्वारा अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता में हिन्दी निबन्ध में दो तथा अंग्रेजी निबन्ध में दो छात्राओं को प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। सारस्वत खत्री पाठशाला सोसाइटी तथा एसएस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज (इलाहाबाद वि.वि.) द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता - 'शिक्षा और राष्ट्र निर्माण' में महाविद्यालय की छः छात्राओं को प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। सनबीम कॉलेज फॉर वीमेन, भगवानपुर (काशी विद्यापीठ) द्वारा आयोजित विविधा २०११, युवा महोत्सव में हुई प्रतियोगिता सुडाकू में एक छात्रा को प्रथम, कोलॉज मेकिंग में द्वितीय तथा सोशल एड्वर्टीज़मेण्ट में एक प्रथम तथा चार छात्राओं को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। स्कूल ऑफ मैनेजमेण्ट साइंसेज़, वाराणसी द्वारा वारणसी और उसके आस पास के क्षेत्रों में आयोजित एस. एम.ए.आर.टी.टेस्ट में पाँच छात्रायें चुनी गईं। इसी टेस्ट के अंतिम चक्र में एक छात्रा को प्रथम पुरस्कार के रूप में पन्द्रह हजार रुपये नकद राशि के रूप में दिये गये। 'रामकथा के विदेशी विद्वान' विषय पर आयोजित पद्मभूषण फादर कामिल बुल्से स्मृति निबन्ध प्रतियोगिता में एक द्वितीय तथा एक सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। रोटरी क्लब द्वारा आर्य महिला पीज़ी. कॉलेज में आयोजित 'लोकपाल भ्रष्टाचार को हटाने में सहायक है' विषयक वाद-विवाद प्रतियोगिता में एक सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। महाविद्यालय में पाऊजी ए. डी. सर्राफ स्मृति भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अमर उजाला द्वारा आयोजित 'फ्यूचर मेरे हाथ में' प्रतियोगिता में लगभग दो सौ छात्राओं ने कॅरिअर स्वप्न को कहानी रूप में प्रस्तुत किया।

का. हि. वि. वि. द्वारा आयोजित युवा महोत्सव स्पंदन-२०१२ में छात्राओं ने भाग लिया। जिसमें महाविद्यालय को 'शार्टप्ले' में द्वितीय स्थान, हिन्दी निबन्ध, हिन्दी भाषण प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान तथा स्केचिंग में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

प्रदर्शनी : चित्रकला विभाग द्वारा आर.बी.एस.के एम्फीथियेटर परिसर में आयोजित 'कला मेला' में छात्राओं ने भाग लिया। इसमें छात्राओं द्वारा हस्तनिर्मित कलाकृतियाँ जैसे-मधुबनी, ग्लास पेटिंग, बाँस निर्मित कृतियाँ तथा ग्राफिक्स द्वारा डिजाइन किये कैलेण्डर का प्रदर्शन किया गया।

वसंत संघ - 'वसंत संघ' छात्राओं की रचनात्मक क्षमता के विकास का मंच है। नवागत छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। बी.एड.की शिक्षार्थियों द्वारा 'शिक्षक दिवस' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्राचार्या विजय शिवपुरी ने शिक्षक और शिक्षार्थी के परस्पर सम्बन्धों की व्याख्या की। एक अक्टूबर को महाविद्यालय का स्थापना दिवस मनाया गया। वसंत देवि डॉ. एनी बेसेण्ट, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, श्रद्धेय लाल बहादुर शास्त्री को श्रद्धा सुमन अर्पित किये गये। इस अवसर पर प्राचार्या डॉ.विजय शिवपुरी ने 'डॉ.एनी बेसेण्ट और स्त्री' को केन्द्र में रखकर अपना व्याख्यान दिया। छात्राओं ने ऊँ नमो वसंत देवि, बापू का प्रिय भजन और रामधुन प्रस्तुत की। महाविद्यालय द्वारा बी.ए.तृतीय वर्ष, बी. काम., बी. एड., एम. ए. द्वितीय वर्ष (अंग्रेजी, मनोविज्ञान) की छात्राओं के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

शैक्षणिक पर्यटन- छात्राओं को राजस्थान भ्रमण कार्यक्रम के अन्तर्गत जोधपुर, जयपुर, जैसलमेर, माउण्ट आबू, पोखरन ले जाया गया। अल्प दूरी के भ्रमण कार्यक्रम में छात्रायें लखनिया दरी गई।

राष्ट्रीय सेवा योजना- राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की पाँच इकाईयाँ महाविद्यालय में कार्य कर रही हैं। चौबीस सितम्बर को 'राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस' मनाया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय शिविर ग्राम कोटवाँ में लगाया गया। इस शिविर के माध्यम से छात्राओं ने मताधिकार का प्रयोग, बालिका भ्रूण हत्या, निरक्षरता, वृक्षारोपण अभियान के प्रति जनजागरूकता अभियान चलाया।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की पुण्यतिथि पर छात्राओं ने मौनव्रत धारण किया। स्वयं सेवियों को हीमोफीलिया के प्रति जागरूक किया गया। स्वयं सेवियों ने दो सौ पचास फलदार, छायादार वृक्ष लगाये। शिविर के समापन समारोह में स्वयं सेवियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

स्काउट गाइड शिविर- महाविद्यालय में बीएड. की छात्राओं के लिए सात दिवसीय शिविर लगाया गया। इस शिविर के माध्यम से छात्रायें स्काउट गाइड के इतिहास, सिद्धांत एवं अन्य महत्वपूर्ण तथ्यों से परिचित हुई।

बीएड. की छात्राओं के लिए एक दिवसीय सामुदायिक कार्य का आयोजन के. एफ. आई. रूरल सेण्टर में किया गया। जिसमें उन्होंने अस्पताल, डेयरी सेण्टर, सिलाई सेण्टर में अपनी सेवायें दी।

स्पीक मैके- स्पीक मैके (अनुभूति कला संस्कृति अध्यात्म) की विरासत श्रृंखला के अन्तर्गत श्रीमती मालविका मित्रा का कथक नृत्य हुआ। सांस्कृतिक विरासत के इसी क्रम में पं. बिरजू महाराज ने कथक नृत्य, पं. कुशलदास का सितार वादन, शास्त्रीय संगीत के उस्ताद अब्दुल राशिद अली खाँ ने गायन तथा लोकगायिका श्रीमती तीजनबाई ने पंडवानी गायन प्रस्तुत किया। 'हेरिटेज वीक फेस्टिवल' के अन्तर्गत विभिन्न विधाओं के कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी।

परिसर प्रगति- बीएड. की पच्चीस छात्राओं के लिए एक छात्रावास का निर्माण किया गया। महाविद्यालय को इण्टरनेट से जोड़ा गया। पुस्तकालय में 'लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर' की सुविधा से छात्रायें लाभान्वित हो रही हैं। अ.पि.व. के अन्तर्गत सीटों की संख्या बढ़ने के कारण का.हि.वि. द्वारा यूजीसी. के अनुदान से भवनों का जीर्णोद्धार किया जा रहा है।

महाविद्यालय की भविष्य सम्बन्धी योजनायें- महाविद्यालय में 'कृष्णमूर्ति अध्ययन केन्द्र' के लिए यू. जी. सी. को लिखा गया है। पुस्तकालय में पुस्तकालय बेब ओपीएसी ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलाग, इण्टरनेट की सुविधा दी जायेगी। कम्प्यूटर की संख्या बढ़ायी जायेगी ताकि छात्रायें इसका लाभ उठा सकें।

वसंत आश्रम छात्रावास- छात्रावास में पाठ्यसहगामी कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यक्तित्व विकास सम्बन्धी दो दिवसीय कॅरिअर काउन्सिलिंग हुई। छात्राओं को क्राफ्ट तथा ब्यूटीशियन कोर्स का प्रशिक्षण दिया गया। छात्रावास में श्री कृष्ण जन्माष्टमी, क्रिसमस, वसंत पंचमी उत्सव मनाये गये। अंत में बिदाई समारोह का आयोजन किया गया।

२.३.३. वसन्त कन्या महाविद्यालय

वसन्त कन्या महाविद्यालय थियोसोफिकल सोसायटी के भारतीय प्रभाग के सुरम्य परिसर में स्थित वह विद्या मन्दिर है जो नारी शिक्षा के क्षेत्र में विगत ५८ वर्षों से डॉ० एनी बेसेन्ट के शिक्षा सिद्धान्तों पर आधारित शिक्षा देने में संलग्न है। इस महाविद्यालय को नैक २००७ में बी++ स्थान प्राप्त हुआ है। १९५४ में स्थापित यह महाविद्यालय 'शिक्षा ही सेवा है' के सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए छात्राओं में व्यक्तित्व विकास, अनुशासन और आदर्शों के प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न करने की ओर भी प्रयासरत है। यह महाविद्यालय कला एवं समाज विज्ञान के अन्तर्गत कुल १४ विषयों का अध्यापन विद्यार्थियों को प्रदान कर रहा है। ३ वर्षों के प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (स्नातक) के साथ सत्र २००९-१० से कला एवं समाज विज्ञान के अन्तर्गत कुल ५ विषयों- हिन्दी, समाजशास्त्र, अंग्रेजी, गृहविज्ञान एवं मनोविज्ञान में परास्नातक स्तर पर भी शिक्षा दी जा रही है। विभिन्न परास्नातक विषयों में कुल २९ शोध छात्र/छात्राएँ शोध कार्य कर रही हैं। अर्न्तसंकायिक शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में अपनी वर्तमान प्रतिष्ठा को महिला उच्च-शिक्षा एवं शोध केन्द्र के रूप में रूपायित करता हुआ यह महाविद्यालय अपने को शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिष्ठापित करने की ओर भी अग्रसर हो रहा है।

शैक्षणिक उपलब्धियाँ

वर्ष २०११-१२ की स्नातक में कुल ११४५ छात्राएँ पंजीकृत हुई। बी०ए० तृतीय वर्ष में २८३ छात्राएँ परीक्षा में सम्मिलित हुई। उत्तीर्ण छात्राओं का प्रतिशत : ९५% रहा। स्नातकोत्तर स्तर पर छात्राओं की कुल पंजीकृत संख्या : २८८ उत्तीर्ण छात्राओं का प्रतिशत : ९८% रहा।

प्रदत्त पदक एवं पुरस्कार

प्रति वर्ष महाविद्यालय की पुरातन छात्राओं एवं प्राक्तन शिक्षिकाओं द्वारा विभिन्न प्रतिष्ठित छात्रवृत्तियाँ/ गोल्ड मेडल तथा पुरस्कार मेधावी छात्राओं को प्रदान किये जाते हैं। इस वर्ष भी ये पुरस्कार महाविद्यालय की १९ छात्राओं को प्रदान किये गये।

का०हि०वि०वि० के ९४वें दीक्षान्त समारोह में बी०एच०यू० कुलाधिपति महामान्य डॉ० कर्ण सिंह के द्वारा महाविद्यालय की छात्रा कु० अदिति को बी०ए० तृतीय (मनोविज्ञान) ऑनर्स २०११ में सामाजिक विज्ञान संकाय में प्रथम स्थान प्राप्त करने हेतु बी०एच०यू० गोल्ड मेडल से पुरस्कृत किया।

सह-शैक्षणिक गतिविधियाँ

राष्ट्रीय संगोष्ठी

२४.०३.२०१२ को महाविद्यालय द्वारा एक राष्ट्रीय संगोष्ठी शान्ति : सम् से शम की ओर का आयोजन किया गया। विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो० एस० सी० लखोटिया (एमेरिटस प्रोफेसर, का०हि०वि०वि०), प्रो० पी०कृष्णा (सेक्रेटरी राजघाट एजुकेशन

सेन्टर, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन, वाराणसी), प्रो० सुशीला सिंह (एमेरिटस प्रोफेसर, महिला महाविद्यालय, का०हि०वि०वि०), शोभना राधाकृष्णन (गांधी चिन्तक), श्रीमती उमा भट्टाचार्या (अवकाश प्राप्त भारतीय प्रशासनिक सेवाधिकारी), प्रो० सूर्य प्रकाश व्यास (पूर्व अध्यक्ष, बौद्ध जैन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का०हि०वि०वि०), श्रीमती मंजु सुन्दरम् (प्रख्यात गायिका)।

हिन्दी दिवस, तुलसी जयन्ती एवं अन्तर्राष्ट्रीय दर्शन दिवस भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के सौजन्य से दिनांक १९.११.२०११ को व्याख्यानमाला आयोजित की गयी जिसमें 'शून्यवाद' पर प्रो० ए० के० चटर्जी, 'दर्शन की प्रासंगिकता' पर प्रो० सूर्य प्रकाश व्यास तथा 'श्रीमद्भगवद्गीता में योग' पर प्रो० कमलाकर मिश्र के व्याख्यान हुए।

व्याख्यान

समाजशास्त्र विभाग

२६.१०.२०११, ग्राफिक प्रेजेन्टेशन ऑफ डाटा, व्याख्याता - डॉ० कल्पलता डिमरी, (अर्थशास्त्र विभाग) व०क०म०, १३.११.२०११, इण्डिजेनाइज़ेशन ऑफ सोशियोलॉजी, व्याख्याता - प्रो० ए०एल० श्रीवास्तव (पूर्व अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, का०हि०वि०वि०), १९.११.११ अग्रेरियन मोड ऑफ प्रोडक्शन, व्याख्याता - प्रो० जे० के० तिवारी, (अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, का०हि०वि०वि०) २८.०३.१२ मॉडर्निटी एण्ड पोस्ट मॉडर्निटी, व्याख्याता - प्रो० ए०के० कौल (समाजशास्त्र विभाग, का०हि०वि०वि०) १०.०४.२०१२ टेस्टिंग ऑफ सिग्नीफिकेन्स, प्रो० एस०आर० यादव, (अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, का०हि०वि०वि०)

हिन्दी विभाग

०५.०४.२०१२, पाली तथा संस्कृत में सन्धि एवं स्वर व्यंजन परिवर्तन, व्याख्याता - डॉ० शान्ता चटर्जी (संस्कृत विभाग, व०क०म०)। तुलसी जयंती एवं हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में विशेष आयोजन सम्पन्न हुआ।

अंग्रेजी विभाग

- २९-३० सितम्बर, २०११ - अंग्रेजी विभाग के शिक्षक/शिक्षिकाओं ने 'फेमिनिस्ट मेथोडोलॉजी' विषय पर महिला अध्ययन केन्द्र, का.हि.वि.वि. द्वारा आयोजित द्विदिवसीय सिम्पोज़ियम में सहभागिता की।
- १५-१७ नवम्बर, २०११ - अंग्रेजी विभाग के शिक्षक/शिक्षिकाओं ने 'डिकॉलोनाइजिंग दि स्टेज: पैराडाइम, प्रैक्टिस एण्ड पॉलिटिक्स' विषय पर महिला अध्ययन केन्द्र, का.हि.वि.वि. द्वारा आयोजित द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेन्स में सहभागिता की।
- प्रो. आर.एस.शर्मा, पूर्व विभागाध्यक्ष-अंग्रेजी, का.हि.वि.वि. द्वारा इण्डियन एस्थेटिक्स विषय पर दो व्याख्यान दिये गये।
- डॉ. आशीष कुमार पाठक, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, एस.आर.एफ., इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा 'टी.एस. एलियट एण्ड ट्वेंटियथ सेन्चुरी लिटरेरी क्रिटिसिज़्म' विषय पर व्याख्यान दिया गया।
- २३-२४ मार्च, २०१२ - अंग्रेजी विभाग के शिक्षक/शिक्षिकाओं ने अंग्रेजी विभाग, का.हि.वि.वि. द्वारा आयोजित स्वामी पुरोहित मेमोरियल व्याख्यानमाला में सहभागिता की। प्रो. हरीश द्विवेदी द्वारा पोस्ट कॉलोनियलिज़्म विषय पर दो व्याख्यान आयोजित किये गये।

स्पोकेन इंग्लिश

पिछले सत्र की तरह महाविद्यालय में यू०जी०सी० द्वारा संचालित स्पोकेन इंग्लिश का सर्टिफिकेट कोर्स सितम्बर २०११-अप्रैल २०१२ तक चलाया गया। इसमें १८ छात्राओं का पंजीकरण हुआ।

कार्यशाला

गृहविज्ञान विभाग

१- दिनांक २४.०९.११ तथा २५.०९.२०११, विषय - ड्रेपिंग पैटर्न तथा ड्रेपिंग फैशन की विभिन्न शैलियाँ, काउल नेकलाइन, डार्ट, प्लीट्स, टक्स संबंधी जानकारी। वक्ता श्री सत्येन्द्र मिश्रा (फैकल्टी, निफ्ट, पटना)।

२- दिनांक २.१०.२०११ तथा ०३.१०.२०११ विषय - स्केचिंग के विभिन्न चरण (ब्लॉक फिगर) ड्रेस डिज़ाइनिंग, (फैशन फिगर) विभिन्न प्रकार के सिलहोट, थीम बोर्ड, मूड बोर्ड, कलर बोर्ड। वक्ता : श्रीमती मिताली लाल, (फैकल्टी ऑफ फैशन डिज़ाइनिंग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)।

३- दिनांक ४.१०.२०११, विषय 'मशीन की कार्यप्रणाली से छात्राओं को अवगत कराना' - एकदिवसीय कार्यशाला, व्याख्याता श्री सुनील (उषा कम्पनी, वाराणसी)।

४- दिनांक २२.१०.११ तथा २३.१०.२०११ - विषय 'फैशन संचार तथा पोर्टफोलियो विकास' व्याख्याता श्रीमती लाली प्रिया, (फैकल्टी एमिटी, लखनऊ)।

५- दिनांक २१.११.११ - विषय 'पेग प्लान' व्याख्याता श्री सुब्रमण्यम्, (फैकल्टी, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हैण्लूम टेक्नोलॉजी, चौकाघाट, वाराणसी)।

६- दिनांक ०३.०२.१२ - विषय 'डाइंग और प्रिंटिंग की विभिन्न शैली', व्याख्याता प्रो० व्यास (फैकल्टी, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हैण्लूम टेक्नोलॉजी, चौकाघाट, वाराणसी)।

७- दिनांक ११.०२.१२ - विषय 'कम्प्यूटर द्वारा डिजाइन' व्याख्याता श्री फिरदौस (फैकल्टी, ब्लीट्ज इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव व आर्ट्स, वाराणसी)।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- दिनांक १४.०३.१२ - विषय - ग्रामीण ज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित एकदिवसीय ट्रेनिंग कार्यक्रम। प्रशिक्षक - श्री नवीन तथा श्री अरूण (रिसर्च साइंटिस्ट, नई दिल्ली)।
- दिनांक १५.१०.११ - ३०.१०.११ सामुदायिक कार्यक्रम - विषय - १. महिलाओं में रक्ताल्पता सम्बधी जागरूकता, २. जीविकोपार्जन हेतु महिलाओं को प्रशिक्षण। प्रशिक्षक : शोध छात्राएँ - १. स्वाति राय २. मीनू वर्मा।
- सत्र पर्यन्त २०११-१२ में आयोजित विशेष व्याख्यान, वक्ता प्रो०टी०बी० सिंह (आई०एम०एस०, का०हि०वि०वि०) विषय: सांख्यिकी तथा अनुसंधान विधियाँ। डॉ० इन्दू उपाध्याय (असिस्टेन्ट प्रोफेसर वसन्त कन्या महाविद्यालय) विषय : भारत के वस्त्र उद्योग (एम०ए० द्वितीय सेमेस्टर)।

इन्टर्नशिप

एम०ए० प्रथम और द्वितीय की छात्राओं ने वाराणसी के विभिन्न औद्योगिक संस्थाओं में तथा इन्स्टीट्यूट ऑफ फैशन टैक्नोलॉजी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आठ सप्ताह की इन्टर्नशिप की।

प्रदर्शनी

दिनांक १ एवं २ मार्च २०१२ को वसंत कन्या महाविद्यालय की गृह विज्ञान विभाग द्वारा द्वि-दिवसीय स्वहित रोजगार प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। छात्राओं द्वारा निर्मित बैग, सजावटी सामान, क्रोशिया, ज्वैलरी, बटुए, कढ़ाई वाली चादरों इत्यादि के ८० प्रतिशत उत्पादों की बिक्री हुई। इस प्रदर्शनी के फलस्वरूप छात्राओं को ब्लॉक प्रिंटिंग के लिए ट्रेनिंग तथा फ्री लान्सर डिजाइनर के लिए उद्योगों से अवसर प्राप्त हुए हैं। खादी ग्रामोद्योग कमीशन से आए विकास अधिकारियों ने छात्राओं को प्रधानमंत्री रोजगार योजना के अन्तर्गत प्रोजेक्ट देने की सलाह दी। छात्राओं को ट्रेनिंग के लिए आमंत्रित किया तथा इच्छुक छात्राओं को पार्ट टाइम डिजाइनर के रूप में कार्य करने और रोजगार के अवसर मिले। सैद्धान्तिक ज्ञान को व्यावहारिक रूप प्रदान करने में यह कार्यक्रम बहुत हद तक सफल रहा। इस कार्यक्रम का उद्घाटन महाविद्यालय की प्रबंधक एमेरिटस प्रो० सुशीला सिंह ने किया।

मनोविज्ञान विभाग

- दिनांक १६.११.११, विषय : प्रत्यक्षीकरण, वक्ता: प्रो० आर०एन०सिंह (मनोविज्ञान विभाग, का०हि०वि०वि०) लाभान्वित समूह स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राएँ।
- दिनांक २२.०२.१२ विषय : अर्न्तसांस्कृतिक मनोविज्ञान की रूपरेखा, वक्ता: प्रो० आर० सी० मिश्रा (मनोविज्ञान विभाग, का०हि०वि०वि०) लाभान्वित समूह स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राएँ।

पुस्तक प्रदर्शनी

दिनांक १७-१८ अक्टूबर, २०११ तथा २०-२१ अक्टबूर, २०११ को महाविद्यालय के पुस्तकालय में गंगासरन एवं कला प्रकाशन ने पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई।

सर्जना

महाविद्यालय के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का मंच 'सर्जना' का शुभारम्भ २ फरवरी, २०१२ को हुआ। क्रमश: २ से ६ फरवरी तक तीन चरणों में विभिन्न १६ प्रतियोगितायें फाइन आर्ट्स, संगीत, साहित्यिक विषयान्तर्गत आयोजित की गयीं, जिनका उद्देश्य छात्राओं के अन्दर छिपी कलात्मक, रचनात्मक, बौद्धिक क्षमता को बढ़ाना व व्यक्तित्व विकास था।

'सर्जना कार्यक्रम का समापन समारोह १० फरवरी, २०१२ को सम्पन्न हुआ जिसमें प्रतियोगिता में सराही गई कुछ विशेष प्रस्तुतियों के अतिरिक्त महाविद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा भी समूह गीत, श्रुति नाटक, काव्य रचनायें छात्राओं के प्रेरणा हेतु प्रस्तुत की गयीं। कार्यक्रम में प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

स्पंदन

का०हि०वि०वि० के अंतर्सकाय युवा महोत्सव, स्पंदन, २०१२ में महाविद्यालय को नौ (०९) पुरस्कार प्राप्त हुए। प्रथम- कुल २ (पोएट्री रेसिटेशन अंग्रेजी, क्रिएटिव डांस) द्वितीय- कुल ५ (१. पोएट्री रेसिटेशन संस्कृत २. लोकनृत्य, ३. वैस्टर्न सोलो गायन, ४. स्कैचिंग, ५. रंगोली) तथा तृतीय- कुल २ (डिबेट-संस्कृत, सितार-वादन)

राष्ट्रीय सेवा योजना

महाविद्यालय की पाँचों इकाईयों की गतिविधियों का सार: इकाई प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय द्वारा ०५.१२.११ को स्वयं सेवक दिवस पर एक दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। दिनांक २१.०१.१२ से २७.०१.१२ तक विशेष शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें १५० छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में स्वयं सेविकाओं ने मतदाता जागरूकता रैली में भागीदारी की। उन्हें कौशल विकास कार्यशाला ''हुनर'' के आयोजन द्वारा कम पूँजी में अनुपयोगी सामग्रियों से उपयोगी सामग्री बना कर स्वरोजगार के उपाय बताये गए तथा प्रतिभागियों द्वारा ऐसे हस्तनिर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। विभिन्न महत्वपूर्ण व्याख्यान हुए, जिनमें प्रो० कमलाकर मिश्रा, डॉ० विभा त्रिपाठी, प्रो० एस० के० शर्मा, प्रो० अजित नारायण त्रिपाठी, श्रीमती मंजू सुंदरम् और मोहम्मद आरिफ अंसारी आदि ने छात्राओं के समग्र व्यक्तित्व विकास से सम्बन्धित महत्वपूर्ण व्याख्यान दिए। मलिन बस्ती भ्रमण के अन्तर्गत आवासियों को स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिक्षा के प्रति सेविकाओं को जागरूक किया। गंगा स्वच्छता एवं महाविद्यालय की साफ सफाई का भी कार्य किया। निबन्ध, वाद-विवाद, भाषण व पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। राष्ट्रीय सेवा योजना की चतुर्थ और पंचम इकाइयों ने एक सप्ताह का विशेष शिविर दिनांक १९.०१.१२ से २५.०१.१२ तक आयोजित किया। छात्राओं ने महाविद्यालय परिसर, थियोसॉफिकल सोसायटी परिसर, दशाश्वमेध घाट, मानमंदिर घाट, मलिन बस्ती इत्यादि जगहों पर सफाई कार्य किया। विभिन्न प्रतियोगिताएँ एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। प्राणायाम,

योगासन की शिक्षा का०हि०वि०वि० के योग प्रशिक्षक श्री योगेश भट्ट ने दी। श्रीमती अनुराधा मेहता ने प्राणिक हीलिंग की जानकारी दी। शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, गायत्री मंत्र, भगवद्गीता से व्यक्तित्व विकास, काशी तत्त्व सभा की अध्यक्षा श्रीमती मंजू सुन्दरम ने डॉ० एनी बेसेण्ट के बहुआयामी उज्ज्वल जीवन पर प्रकाश डाला। समापन दिवस-एनी बेसेण्ट सभागार में का०हि०वि०वि० रा०से०यो० के समन्वयक प्रो० एस०पी० सिंह ने शिविर आयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला।

एन०सी०सी० एवं खेलकूद

- एन०सी०सी० (वसन्त कन्या महाविद्यालय की इकाई) पंजीकृत छात्रा संख्या १८, ६ नौसेना विंग, ३ वायु सेना विंग और ९ थल सेना विंग।
- बी०ए० द्वितीय वर्ष की छात्रा सुमन, का चयन ३८वीं वूमेन यू.पी. स्टेट कबड्डी चैम्पियनशिप (८-१० अक्टूबर, २०११) के लिए हुआ, जहाँ उसकी टीम को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।
- सुमन (बी.ए. द्वितीय) का चयन चतुर्थ नेशनल लेवल रुरल टूर्नामेन्ट-कबड्डी (९-१३ जनवरी, २०११) के लिए हुआ, टीम को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।
- सुमन का चयन स्टेट लेवल रुरल टूर्नामेन्ट-कबड्डी (२७-३० दिसम्बर, २०१२) के लिए हुआ।
- महाविद्यालय की छात्राओं (नेहा कुमारी, रिशिता सिंह, पायल, मिंकी गौंड, शालिनी सैनी, रूपा देवी, तथा तृप्ति) ने १६-११-११ को अलमाइटी पब्लिक स्कूल में ताइक्वांडो कला का प्रदर्शन किया।
- १८.१२.११ को तृतीय इन्वीटेटीशनल चैम्पियनशिप (जिसका आयोजन 'वाराणसी ताइक्वांडो एसोसियेशन द्वारा किया गया था) के लिए पायल बी०ए० द्वितीय तथा रूपा देवी बी०ए० द्वितीय का चयन हुआ। प्रतिस्पर्धा में पायल को रजत पदक तथा रूपा को कांस्य पदक प्राप्त हुआ।
- महाविद्यालय में १४-१५ मार्च, २०१२ को 'वार्षिक खेल दिवस' का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरूआत छात्राओं के ताइक्वांडो प्रदर्शन से हुई। इस अवसर पर बैडमिंटन, दौड़, शॉट पुट, डिस्कस थ्रो, कबड्डी तथा नेट बॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कुल १५० छात्राओं ने सहभागिता की।

महिला प्रकोष्ठ उड़ान

महाविद्यालय के महिला प्रकोष्ठ के द्वारा ५.४.२०१२ को १ व्याख्यान आयोजित हुआ। विषय - वूमेन इम्पावरमेन्ट, मुख्य वक्ता - प्रो० अनिता सिंह (उप-निदेशक, सेण्टर फॉर वूमेन्स स्टडीज़, का०हि०वि०वि०, वाराणसी) थीं। लगभग २०० छात्राओं ने भागीदारी की।

निर्देशन एवं परामर्श (छात्राओं के लिए)

०९.०९.११ अपना व्यवसाय चुनिए पखवारा: विश्वविद्यालय सेवा योजना, सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र द्वारा संचालित कार्यक्रम का प्रारम्भ प्राचार्या डॉ० कुसुम मिश्रा तथा अध्यक्ष प्रो० ए०के० श्रीवास्तव (ब्यूरो प्रमुख, वि० वि० सेवायोजन, सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र, का०हि०वि०वि०) ने दीप प्रज्जवलन से किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में : प्रो० ए०के० श्रीवास्तव (मनोविज्ञान विभाग, का०हि०वि०वि०) ने वर्तमान के तीव्र प्रतियोगितावादी समय में करियर चुनते समय छात्राओं को अपनी तर्क व मेधाशक्ति को निखारने तथा भाषा के समुचित ज्ञान तथा प्रस्तुतिकरण की क्षमता के विकास पर बल दिया। केन्द्र के उप-प्रमुख श्री यशवंत सिंह ने छात्राओं को करियर, व्यवसाय एवं रोजगार (पार्ट टाईम जॉब, कैम्पस प्लेसमेण्ट) संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी। डॉ० मालविका रंजन (इतिहास विभाग, का०हि०वि०वि०) एवं डॉ० अनुराधा सिंह (इतिहास विभाग, का०हि०वि०वि०) ने इतिहास विषय के माध्यम से करियर की सम्भावनाओं के बारे में बताया। जैसे शिक्षण, संग्रहालय, वाचनालय एवं पर्यटन आदि महत्वपूर्ण क्षेत्रों में रोजगार की अपार सम्भावना बतायी। डॉ० पी०एस० राना (पर्यटन विभाग, का०हि०वि०वि०) ने इतिहास से पर्यटन क्षेत्र में करियर की सबसे सस्ती और सहज सम्भावना के विषय में बताया। ट्रैवेल सर्विसेज, टूर पैकेज, होटल अरेंजमेंट एवं गाइडेंस सर्विस की आधुनिक प्रगति एवं प्रकृति से भी छात्राओं को अवगत कराया।

डॉ० अमित गौतम (प्रबंध शास्त्र संकाय का०हि०वि०वि०) ने वर्तमान समय में भारत में पश्चिमी देशों की तरह करियर के रूप में इवेंट मैनेजमेण्ट के महत्वपूर्ण प्रसार की बात कही। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० कुसुम मिश्रा ने भी छात्राओं को महाविद्यालय की ओर से भाषा एवं करियर से सम्बन्धित कक्षाओं पर विशेष ध्यान की बात कही।

शैक्षणिक परिभ्रमण

- दिनांक २२.१०.११ 'देवा इंटरनेशनल सोसायटी फॉर चाइल्ड केयर' संस्था के वार्षिक कार्यक्रम दीपशिखा मेला अवलोकन। स्नातक छात्राओं की भागीदारी थी।
- दिनांक ०३.११.११ रामनगर स्थित पार्ले-जी बिस्किट फैक्ट्री के औद्योगिक प्रणाली की जानकारी प्राप्त की। स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं की भागीदारी।
- दिनांक २५.११.११ को गृह विज्ञान विभाग द्वारा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ कार्पेट टेक्नोलॉजी, भदोही में एम०ए० प्रथम और द्वितीय वर्ष की छात्राएँ गई। जहाँ उन्होंने कार्पेट निर्माण की प्रक्रिया, परीक्षण प्रयोगशाला का अवलोकन किया।
- दिनांक २९.०१.१२ को हिन्दी, संस्कृत, राजनितिशास्त्र और इतिहास विभाग की स्नातक तथा स्नातकोत्तर की छात्राएँ सीतामढ़ी परिभ्रमण के लिए गईं।

पुरा छात्रा सम्मेलन

दिनांक ०२.०३.१२ अष्टम वार्षिक सम्मेलन 'आवर्तन' २०१२ सम्पन्न हुआ। पुरा छात्रा उमा भट्टाचार्या (आई०ए०एस० अवकाश प्राप्त) का अभिनन्दन किया गया। पूर्व छात्रा सुश्री विजया पन्त (समाजसेविका एवं पत्रकार नई दिल्ली), श्रीमती सरिता लखोटिया, डॉ० कुसुम मिश्रा (प्राचार्या), डॉ० कमला पाण्डेय, डॉ० कुमुद रंजन, डॉ० आशा यादव, डॉ० शान्ता चटर्जी, सुश्री रंजना भारती ने विशिष्ट सहभागिता निभाई। पूर्व छात्राओं ने गायन व काव्यपाठ प्रस्तुत किया। अब तक लगभग १००० पुरा छात्रायें पंजीकृत हुई हैं।

बसन्त चेतना प्रसार (बेसेण्ट स्पिरिट प्रोग्रेशन)

- दिनांक १३.१०.२०११ को थियोसॉफिकल सोसाइटी के अध्यक्ष प्रो० थम्पी, मद्रास यूनिवर्सिटी के अंग्रेजी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष ने छात्राओं को वर्तमान जीवन में मूल्यपरक जीवन व्यतीत करने से सम्बन्धित विषय 'लुकिंग अहेड' पर व्याख्यान दिया। संयोजन डॉ० रेणु श्रीवास्तव ने किया।
- दिनांक ०१.१०.११ को एनी बेसेण्ट जयन्ती समारोह में डॉ० एनी बेसेण्ट के शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में किये गए कार्य विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में श्री मनोज सिंह (असिस्टेन्ट प्रोफेसर, दर्शन विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय) ने विचार व्यक्त किये। डॉ० आशा यादव ने डॉ० बेसेण्ट द्वारा रचित सार्वभौम प्रार्थना (अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी) का सामूहिक पाठ करवाया। सुश्री दिव्या पाण्डेय ने (एम०ए० अंग्रेजी, प्रथम वर्ष) डॉ० बेसेण्ट के जीवन एवं कार्यों पर विचार व्यक्त किये। बालकों की शिक्षा में संगीत के समावेश पर डॉ० बेसेन्ट की दृष्टि पर संयोजिका डॉ० स्वरवंदना शर्मा ने प्रकाश डाला।
- बेसेण्ट एजूकेशन फेलोशिप के अंतर्गत वसन्त कन्या महाविद्यालय सहित समस्त शिक्षा संस्थानों के एनी बेसेण्ट जयन्ती के संयुक्त आयोजन ०१.१०.११ में डॉ० रेणु श्रीवास्तव (एसो०प्रोफेसर राजनीतिशास्त्र, व०क०म०) ने 'डॉ० बेसेण्ट की धार्मिक सहिष्णुता की दृष्टि' विषय पर सोसायटी सभागार में व्याख्यान दिया।
- ९ जनवरी, २०१२ को छात्राओं ने थियोसॉफिकल सोसायटी परिसर स्थित एम्फीथियेटर, डॉ० बेसेण्ट का निवास स्थान ''शान्तिकुंज'' तथा पुस्तकालय का अवलोकन किया।

संस्कृत वाग्वर्धिनी सभा

सत्र २०११-१२ में दस बार वाग्वर्धिनी सभा का आयोजन हुआ। सभा का समापन समारोह दिनांक ३० मार्च, २०१२ को सम्पन्न हुआ। छात्राओं द्वारा ही सभा का संचालन किया गया। भाषण, काव्यपाठ, श्लोक पाठ आदि किये गये।

रेमेडियल कोर्स

२०११-१२ में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग (क्रीमीलेयर के अतिरिक्त) एवं अल्पसंख्यक वर्ग के छात्रों के लिए यूजीसी की स्कीम के तहत रेमेडियल कोचिंग चलाई गयी जिसके अन्तर्गत महाविद्यालय की २१४ छात्राएँ लाभान्वित हुयीं।

प्रतियोगितायें

दिनांक १९.०१.२०१२ को क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, वाराणसी द्वारा आयोजित ''मतदान में युवाओं की भूमिका'' पर वसन्त कन्या महाविद्यालय में जिला-स्तरीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन।

नगर में विभिन्न महाविद्यालयों तथा संस्थाओं द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय की छात्राओं ने उल्लेखनीय भागीदारी की।

निबंध प्रतियोगिता- स्वामी विवेकानन्द की १५०वीं जयन्ती के अवसर पर वसन्त कन्या महाविद्यालय में महाविद्यालय और रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम के संयुक्त तत्त्वावधान में विवेकानन्द स्मृति निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में स्नातक कक्षा की छात्राओं ने सउत्साह भाग लिया।

चिकित्सा एवं फर्स्ट एड - सत्र २०११-१२ में महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी गई। जिसके अन्तर्गत एक अनुभवी चिकित्सक ने वर्ष पर्यन्त सेवायें दीं।

केयरिंग सॉल फाउण्डेशन (एनजीओ) द्वारा दिनांक २७ जनवरी से ७ फरवरी २०१२ तक कैन्सर रोग विषयक जागरूकता अभियान चलाया गया। फाउण्डेशन द्वारा इस सन्दर्भ में बुकलेट्स का वितरण किया गया। विद्यार्थियों को सर्टिफिकेट्स तथा पदक दिये गये।

शिक्षकों की उपलब्धियाँ (परियोजना, सम्मान एवं संगोष्ठी) : डॉ० शुभ्रा सिन्हा दिनांक २८-३१ मार्च २०१२ कार्यशाला:आईसीटी एनेबलमेन्ट प्रोग्राम बाई एचआरडी एण्ड माइक्रोसॉफ्ट। डॉ० अनुराधा बनर्जी भारत सरकार के संस्कृति विभाग के उत्तर मध्य सांस्कृतिक केन्द्र के तत्वावधान में १० रवीन्द्र संगीत का अनुवाद स्वर लिपि सहित तथा रवीन्द्र नाटक ''चण्डालिका'' का अनुवाद तथा उसमें संवाद पात्र। २७.०२.१२ से ०३.०४.१२ को श्री लम्बोदर नायक के पेंटिंग की क्यूरेटिका आर्ट गैलरी में प्रदर्शनी। डॉ० उषा कुशवाहा की पुस्तक प्रकाशित - तर्कशास्त्र : एक परिचय। शिक्षिकाओं की आकाशवाणी तथा दूरदर्शन में भागीदारी : रिकॉर्डिंग, शोध पत्र २५ अन्तर्राष्ट्रीय, ५५ राष्ट्रीय प्रस्तुति। डॉ० कमला पाण्डेय, विद्याश्री पुरस्कार, विद्याश्री धर्मार्थ न्यास द्वारा। वाकोवाक्यम सम्मान, विश्वभारती सम्मान एवं बृहद् शोध परियोजना (यूजीसी द्वारा प्रदत्त) सम्पन्न हुई। डॉ० पूनम पाण्डेय एवं डॉ० इन्दू उपाध्याय की लघु शोध परियोजना (यूजीसी द्वारा प्रदत्त) सम्पन्न हुई।

२.३.४. दयानन्द महाविद्यालय (डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज)

महाविद्यालय की स्थापना सन् १९३८ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त इण्टरमीडिएट कॉलेज के रूप में हुई। विश्वविद्यालय ने सन् १९४७ में इसे महाविद्यालय का दर्जा प्रदान किया तथा सन् १९५४ में स्थायी सम्बद्धता प्रदान की। महाविद्यालय ने कला, सामाजिक विज्ञान तथा वाणिज्य विषयों में स्नातक स्तरीय पाठ्यक्रमों का अध्यापन प्रारंभ किया। विश्वविद्यालय ने सन् २००८ में महाविद्यालय को चार विषयों यथा- वाणिज्य, अर्थशास्त्र तथा इतिहास में परास्नातक तथा शोध कार्य प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान की। विश्वविद्यालय ने शैक्षिक सत्र २०१०-११ से महाविद्यालय में तीन विषयों यथा- राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान एवं अंग्रेजी में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम एवं दो विषयों यथा-अंग्रेजी व मनोविज्ञान में शोध (पीएच.डी.) हेतु अनुमति दी।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (एनएएसी), बंगलौर ने वर्ष २०११ में डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज को सर्वोच्च ग्रेड-ए प्रदान किया।

शैक्षणिक पाठ्यक्रम

वर्तमान में महाविद्यालय में तीन संकायों के पाठ्यक्रम यथा- १. बी.कॉम (वाणिज्य संकाय), २. बी.ए. (कला संकाय), ३.बी.ए. (समाज विज्ञान संकाय) उपलब्ध हैं। बी.कॉम, बी.ए. (कला) एवं बी.ए. (समाज विज्ञान) के प्रथम वर्ष में सीटों की संख्या क्रमश: १८४, १९८ व २११ हैं और स्नातक स्तर के कुल विद्यार्थियों की संख्या क्रमश: ४१८, ४०९ व ४९० है। इस प्रकार छात्र-छात्राओं की कुल संख्या १३१७ है। इसके अतिरिक्त, महाविद्यालय अग्रलिखित विभागों - १. वाणिज्य, २. इतिहास, ३.अर्थशास्त्र, ४. समाजशास्त्र, ५. राजनीति विज्ञान, ६. अंग्रेजी एवं ७. मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर एवं शोध पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के लिए प्रत्येक स्नातकोत्तर विषय में ३० सीटें निर्धारित हैं।

अध्ययन के नवीन कार्यक्रमों की पहल

दो ऐड ऑन पाठ्यक्रमों की शुरुआत

१. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त 'कंप्यूटर अनुप्रयोग में स्नातक डिप्लोमा'।

२. यू.जी.सी. द्वारा मान्यता प्राप्त 'यात्रा एवं पर्यटन प्रबंधन'।

३. यू.जी.सी. एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त 'कम्यूनिकेटिव इंगलिश'।

४. यू.जी.सी. एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त 'जोखिम एवं बीमा प्रबंधन'।

निम्नलिखित के माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल प्रदान करना

१. स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों हेतु स्पोकेन इंगलिश की अलग-अलग कक्षाओं द्वारा।

२. संस्कृत संभाषण कक्षा - धारा प्रवाह संस्कृत बोलने हेतु दस दिवसीय शिविर द्वारा।

महाविद्यालय में यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित दो केन्द्र निम्नानुसार कार्य कर रहे हैं :

१. गांधीवादी अध्ययन केन्द्र : छात्रों एवं समाज में गांधी जी के सामाजिक-आर्थिक विचारों के प्रचार-प्रसार हेतु केन्द्र ने कार्यक्रम शुरू किये।

२. अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र : छात्रों एवं समाज में डॉ० अम्बेडकर के सामाजिक-आर्थिक विचारों के प्रचार-प्रसार हेतु केन्द्र ने कार्यक्रम शुरू किये।

कार्यक्रमों एवं क्रियाकलापों का विवरण

महाविद्यालय क्षमता और दक्षता में वृद्धि के लिए प्रत्येक शैक्षिक सत्र में गतिविधियाँ संचालित करता है। इस कार्यक्रम से विद्यार्थियों में क्षमता, सृजनात्मकता एवं सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा मिलता है। कुछ कार्यक्रम अन्य हितधारकों के लिए भी लाभप्रद होते हैं।

विभिन्न मंचों की गतिविधियाँ

महाविद्यालय ने महाविद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियों में वृद्धि हेतु विभिन्न मंचों का गठन किया है।

१. एसओडीएचः शोध मंच एसओडीएच का गठन महाविद्यालय में शोध एवं शोध आधारित व्याख्यानों की प्रगति के लिए किया गया है।

i) यूजीसी, आईसीएसएसआर एवं अन्य अभिकरणों द्वारा प्रायोजित जारी शोध परियोजनाएँ :

१. वृहद परियोजना (एक)

डॉ० पी.के. सेन एवं डॉ० अनूप कुमार मिश्र - यूनिवर्सिटी ऑफ नार्विक, यू.के.।

२. प्रमुख परियोजनाएँ (दस)

(१) डॉ० एस.डी. सिंह, वाणिज्य (यूजीसी) (२) डॉ० वी.के.एल. श्रीवास्तव, वाणिज्य (आईसीएसएसआर), (३) डॉ० राजेश कुमार सिंह, वाणिज्य (आईसीएसएसआर) (४) डॉ० पी.के. सेन एवं डॉ० अनूप कुमार मिश्र, अर्थशास्त्र (यूजीसी) (५) डॉ० अनूप कुमार मिश्र, अर्थशास्त्र (यूजीसी) (६) डॉ० शिव बहादुर सिंह, राजनीति विज्ञान (यूजीसी) (७) डॉ० विक्रमादित्य राय, समाजशास्त्र (यूजीसी) (८) डॉ० ओ.पी. भारतीय, समाजशास्त्र (यूजीसी) (९) डॉ० ऋचा रानी यादव, मनोविज्ञान (यूजीसी) (१०) डॉ० इन्द्र जीत मिश्र, अंग्रेजी (यूजीसी)

३. लघु परियोजनाएँ (आठ)

(१) डॉ० सत्य गोपाल जी (यूजीसी) (२) डॉ० मधु सिसोदिया (यूजीसी) (३) डॉ० राजेश कुमार सिंह (यूजीसी) (४) डॉ० पी. कमल (यूजीसी) (५) डॉ० आलोक कुमार पाण्डेय (यूजीसी) (६) डॉ० वी.एस. सिंह एवं डॉ० एस.डी. सिंह (यूजीसी) (७) डॉ० राकेश कुमार राम (यूजीसी) (८) डॉ० प्रशान्त कश्यप यूजीसी (यूजीसी)

ii) व्याख्यान : भारत कला भवन - एक सर्वेक्षण - डॉ० प्रतिभा मिश्रा द्वारा एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति की गई

अध्यापकों की 'शैक्षणिक उन्नति' हेतु मंच

महिला स्टॉफ एवं छात्राओं हेतु 'स्त्री विमर्श' मंच

विभिन्न विभागों के छात्र मंच

डॉ. अंबेडकर अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजित शैक्षणिक गतिविधियाँः 'अंबेडकर के परिदृश्य में आरक्षण नीति' पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया।

गांधीवादी अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजित शैक्षणिक गतिविधियाँः 'गांधी जी की दृष्टि का ग्राम स्वराज एवं निर्वाचित जन प्रतिनिधियों की भूमिका' पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। संसद की माननीया अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार इस कार्याशाला की मुख्य अतिथि थीं।

'गांधी : सामार्थिक विकास एवं पत्रकारिता' पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के पत्रकारिता विभाग के डॉ० अनिल कुमार उपाध्याय थे।

महाविद्यालय स्तर पर शैक्षणिक गतिविधियाँ

व्याख्यान

श्री सैयद महफूज हुसैन 'पुंडरीक' द्वारा 'रामचरित मानस' पर एक व्याख्यान दिया गया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रो० अशोक उपाध्याय ने 'सामाजिक' पर व्याख्यान दिया।

संगोष्ठी

अंबेडकर अध्ययन केन्द्र द्वारा २६ फरवरी, २०१२ को 'वैभव की दरिद्रता बनाम दरिद्रता का वैभव' पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

विद्यार्थियों हेतु उपलब्ध शोध सुविधाओं का विवरण

पी-एच.डी. शोध के लिए अवसंरचना : स्मार्ट कक्षाओं की संख्या - ०५; वास्तविक कक्षा की संख्या - ०१

पुस्तकालय

पुस्तक - ३९,८३८ (लगभग) जर्नल – ३५	इंटरनेट सहित कंप्यूटर - १४	आईएनएफएलआईबीएनईटी एवं डाटा बेस	पुस्तकालय में शोध छात्रों हेतु पढ़ने/बैठने के लिए अलग स्थान

३. अध्ययन के पाठ्यक्रमों की सूची

विभिन्न संस्थानों, संकायों, महाविद्यालयों एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में शिक्षण हेतु उपलब्ध पाठ्यक्रम इस प्रकार हैं :

अ. पोस्ट डॉक्टोरल उपाधि

१. डॉक्टर ऑफ साइंस (डी.एससी.)
२. डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (डी.लिट्.)
३. डॉक्टर ऑफ लॉ (एलएल.डी.)

ब. शोध उपाधियाँ **न्यूनतम अवधि २-वर्ष**

१. डॉक्टर ऑफ फिलॉसॉफी (पीएच.डी.)
२. चक्रवर्ती

स. डॉक्टर ऑफ दर्शनशास्त्र

१. सवअल्टर्न स्टडीज़ में एम. फिल्.
२. संगीतशास्त्र में एम. फिल्.

१. कला संकाय

कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
शारीरिक शिक्षण स्नातक (बी.पी.एड्.) १-वर्ष
कला स्नातकोत्तर (एम.ए.) : २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

१. अंग्रेजी
२. हिन्दी
३. संस्कृत
४. तेलगू
५. जर्मन
६. फ्रेंच
७. नेपाली
८. बंगाली
९. उर्दू
१०. पर्शियन
११. अरबी
१२. पालि एवं बौद्ध अध्ययन
१३. मराठी
१४. भूगोल
१५. प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व
१६. भारतीय दर्शनशास्त्र एवं धर्म
१७. गणित
१८. सांख्यिकी
१९. कला इतिहास
२०. भाषा विज्ञान
२१. दर्शनशास्त्र
२२. गृह विज्ञान
२३. चीनी
२४. कन्नड़
२५. रूसी

व्यावसायिक पाठ्यक्रम : **२-वर्ष (४-सेमेस्टर)**

१. जन-संचार में स्नातकोत्तर
२. शारीरिक शिक्षा में स्नातकोत्तर (एम.पी.एड्.)
३. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर (एम्.लिब्.एण्ड आई.एससी.)
४. प्रयोजनमूलक हिन्दी (पत्रकारिता)
५. एम.ए. इन म्यूजियोलॉजी

एडवांस पी.जी. डिप्लोमा **१-वर्ष**

१. पुरातत्व विज्ञान
२. कला इतिहास
३. भारतीय इतिहास एवं संस्कृति
४. अरबी
५. तेलगू
६. हिन्दी
७. फ्रांसीसी अध्ययन
८. जर्मन
९. भारतीय दर्शनशास्त्र एवं धर्म
१०. नेपाली
११. मराठी
१२. पर्शियन
१३. उर्दू

स्नातक डिप्लोमा : **२-वर्ष**

१. हिन्दी
२. तमिल
३. तेलगू
४. रूसी
५. चीनी

६. मराठी
७. फ्रांसीसी
८. अरबी
९. पर्शियन
१०. जर्मन अध्ययन
११. अंग्रेजी
१२. कन्नड़
१३. उर्दू
१४. नेपाली
१५. पाली
१६. संस्कृत
१७. इटालियन
१८. स्पेनिश
१९. प्राकृत
२०. जापानी

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम : **१-वर्ष**

१. हिन्दी
२. अंग्रेजी
३. पर्शियन
४. उर्दू
५. अरबी
६. इटालियन
७. पाली
८. फ्रांसीसी (ब्रिज कोर्स)

विशेष पाठ्यक्रम: **२-वर्ष (४-सेमेस्टर)**

१. पर्यटन प्रबन्धन में स्नातकोत्तर
२. कार्यालय प्रबन्धन एवं व्यवसाय संचार में स्नातक डिप्लोमा पाठ्यक्रम
३. पर्यटन प्रबन्धन में स्नातक डिप्लोमा पाठ्यक्रम
४. भाषा प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
५. पाण्डुलिपि विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
६. स्वास्थ्य संचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
७. कुशल संचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
८. पत्रकारिता (हिन्दी) में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
९. खेलकूद पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
१०. भोजपुरी में अल्पावधि सर्टिफिकेट कोर्स ४ माह

२. सामाजिक विज्ञान संकाय

कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष (६-सेमेस्टर)
कला स्नातकोत्तर २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

१. अर्थशास्त्र
२. इतिहास
३. राजनीति विज्ञान
४. समाजशास्त्र
५. मनोविज्ञान

विशेष पाठ्यक्रम : **२-वर्ष (४-सेमेस्टर)**

१. कार्मिक प्रबन्धन व औद्योगिक संपर्क में स्नातकोत्तर (एम पी एम आई आर)
२. समाज कार्य में स्नातकोत्तर
३. जन प्रशासन में स्नातकोत्तर (एम. पी. ए.)
४. कॉन्फलिक्ट मैनेजमेंन्ट एण्ड डेवलेपमेन्ट में स्नातकोत्तर (एम. सी. एम. डी.)
५. जापानी अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १ वर्ष
६. कॉन्फलिक्ट मैनेजमेंन्ट एण्ड डेवलेपमेन्ट में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
७. एकीकृत ग्रामीण विकास एवं प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष
८. परामर्श एवं मन:चिकित्सा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पूर्ण कालिक) १-वर्ष
९. लिंग एवं महिला अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

३. विधि संकाय

१. विधि स्नातक (एलएल. बी.) ३-वर्ष (६-सेमेस्टर)
२. विधि स्नातकोत्तर (एलएल. एम.) २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

विशेष पाठ्यक्रम:

१. मानवाधिकार में विधि स्नातकोत्तर (एच. आर. डी. ई.) २-वर्ष (४-सेमेस्टर)
२. इण्डस्ट्रियल एण्ड इन्टेलेक्चुअल प्रापर्टी लॉ में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष (२-सेमेस्टर)
३. इन्वारोमेंटल लॉ, पॉलिसी एण्ड मैनेजमेन्ट में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

४. शिक्षा संकाय : १ वर्ष (२-सेमेस्टर)

१. शिक्षा स्नातक (बी.एड.)

२. शिक्षा स्नातक (बी.एड. विशेष)

३. शिक्षा स्नात्तकोत्तर (एम.एड.)

४. शिक्षा स्नातकोत्तर (एम. एड्.विशेष)

५. वाणिज्य संकाय

१. वाणिज्य स्नातक (बी. काम्. प्रतिष्ठा) ३-वर्ष

२. वाणिज्य स्नातकोत्तर (एम्. काम्.) २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

विशेष पाठ्यक्रम: २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

१. मास्टर ऑफ फॉरेन ट्रेड (एम.एफ. टी.)

२. मास्टर ऑफ फाइनेन्सियल मैनेजमेन्ट (रिस्क एण्ड इन्श्योरेंस) (एम.एफ. एम.आर.आई.)

३. मास्टर ऑफ फाइनेन्स मैनेजमेन्ट (एम. एफ. एम.)

६. प्रबंध शास्त्र संकाय: २-वर्ष

१. मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (एम. बी. ए.)

२. मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (इंटरनेशनल बिजनेस) (एम. बी. ए. - आई. बी.)

डिप्लोमा पाठ्यक्रम : (१-वर्ष) (अंश कालिक)

१. माइक्रो फाइनेन्स एण्ड इन्टरप्रेन्योरशीप में डिप्लोमा

२. लेज़र एण्ड हॉस्पिटलिटी मैनेजमेन्ट

३. हेल्थ केयर मैनेजमेन्ट

विशेष पाठ्यक्रम: १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी. जी. डी. बी. ए.)

७. विज्ञान संकाय

विज्ञान स्नातक (बी. एससी. प्रतिष्ठा) (गणित और जीव ग्रुप) ३-वर्ष

विज्ञान स्नातकोत्तर (एम. एससी.) २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

१. रसायन विज्ञान

२. वनस्पति विज्ञान

३. भूगर्भ विज्ञान

४. गणित

५. सांख्यिकी

६. भौतिकी विज्ञान

७. प्राणि विज्ञान

८. भूगोल

९. जैवरसायन

१०. गृह विज्ञान

११. जैव प्रौद्योगिकी

१२. संगणक विज्ञान

१३. मनोविज्ञान

१४. बायोइन्फार्मेटिक्स (केवल महिलाओं के लिए, म.म.वि.)

१५. भू-भौतिकी में स्नातकोत्तर विज्ञान (टेक्.) (एम. एससी. टेक्.) ३-वर्ष (६-सेमेस्टर)

१६. भूगर्भ विज्ञान में मास्टर ऑफ साइंस (टेक्.) ३-वर्ष (६-सेमेस्टर)

१७. मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (एम.सी.ए.) ३-वर्ष (६-सेमेस्टर)

डिप्लोमा पाठ्यक्रम: (१-वर्ष)

१. स्पेक्ट्रोस्कोपी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

२. प्राकृतिक आपदा प्रबन्ध में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

सांख्यिकी विधि (१-वर्ष)

विशेष पाठ्यक्रम: २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

१. पर्यावरण विज्ञान में एम.एससी.

२. आणविक एवं मानव जनन विज्ञान में एम.एससी.

३. अनुप्रयुक्त सूक्ष्म जीव विज्ञान में एम.एससी.

४. पेट्रोलियम जिओसाइंस में एम.एससी.

५. रिमोट सेन्सिंग एण्ड जी.आई.एस. में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

६. जनसंख्या अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

७. क्रोमोसोमल जेनेटिक एण्ड मोलेकुलर डायग्नोस्टिक में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष (पूर्ण कालिक)

८. दृश्य कला संकाय

स्नातक ललित कला (बी.एफ.ए.) : ४-वर्ष

स्नातकोत्तर ललित कला (एम.एफ.ए.): २-वर्ष

१. चित्र कला

२. अनुप्रयुक्त कला

३. प्लास्टिक कला

४. मृद्भाण्ड एवं मृतिका शिल्प

५. वस्त्र रूपांकन

विशेष पाठ्यक्रम:

१. चित्रकला में प्रमाण-पत्र : १-वर्ष (अंश कालिक)

२. विज्ञापन एवं रूपांकन में प्रमाण-पत्र : १-वर्ष

९. मंच कला संकाय

संगीत स्नातक (बी.म्यूज.) : ३-वर्ष

१. गायन

२. वाद्य (सितार/वायलिन/तबला/बांसुरी)

३. नृत्य (कत्थक/भरतनाट्यम्)

संगीत स्नातकोत्तर (एम.म्यूज.): २-वर्ष

१. गायन

२. वाद्य (सितार/वायलिन/तबला/बांसुरी)

३. नृत्य (कत्थक/भरतनाट्यम्)

मास्टर ऑफ म्युजिकालॉजी: २-वर्ष

म्युजिकोलॉजी

संगीत एवं नृत्य में जूनियर डिप्लोमा: ३-वर्ष

१. कंठ संगीत: हिन्दुस्तानी, कर्नाटकी,

२. वाद्य संगीत : (सितार/ वायलिन/ बांसुरी/ तबला/ कर्नाटकी वीणा)

अ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -१

आ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -२

इ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -३

३. नृत्य (कत्थक/भरतनाट्यम्)

अ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -१

आ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -२

इ) जूनियर डिप्लोमा, स्तर -३

इस त्रिवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रत्येक वर्ष की समाप्ति पर अभ्यर्थियों को निम्नलिखित प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है :

प्रथम वर्ष - कनिष्ठ प्रमाण-पत्र

द्वितीय वर्ष- वरिष्ठ प्रमाण-पत्र

तृतीय वर्ष- डिप्लोमा

विशेष पाठ्यक्रम : २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

रविन्द्र संगीत शास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

१०. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

शास्त्री (प्रतिष्ठा) : ३-वर्ष

आचार्य : २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

१. वेद-ऋग्वेद/ यजुर्वेद, (शुक्ल/कृष्ण)/ सामवेद

२. धर्मागम

३. पुराणेतिहास और साहित्य (अलंकार प्रधान एवं काव्य प्रधान व नाट्य प्रधान)

४. ज्योतिष (गणित एवं फलित)

५. व्याकरण

६. मीमांसा

७. न्याय वैशेषिक

८. वेदान्त

९. जैन दर्शन

१०. बौद्ध दर्शन

११. प्राचीन न्याय

१२. सांख्य योग

१३. धर्मशास्त्र

स्नातकोत्तर डिप्लोमा: आगमतंत्र २-वर्ष

प्रमाण-पत्र: संस्कृत १-वर्ष

११. चिकित्सा विज्ञान संकाय

स्नातक मेडिसिन और स्नातक सर्जरी (एम.बी.बी.एस.) ५१/२ -वर्ष

डॉक्टर ऑफ मेडिसिन (एम.डी.) ३-वर्ष

१. निःसंज्ञा विज्ञान

२. जैव रसायन

३. जैव भौतिकी

४. त्वचा विज्ञान

५. रतिरोग विज्ञान एवं कुष्ठ

६. विधि चिकित्सा शास्त्र

७. चिकित्सा

८. बाल चिकित्सा

९. सूक्ष्म जीव विज्ञान

१०. व्याधि विज्ञान

११. औषधि विज्ञान

१२. कार्यिकी

१३. निवारक एवं सामाजिक औषधि

१४. मनोरोग विज्ञान

१५. विकिरण निदान (विकिरण-निर्धारण)

१६. विकिरण चिकित्सा और विकिरण औषधि

१७. यक्ष्मा एवं श्वसन रोग विज्ञान

बैचरल ऑफ साइंस इन नर्सिग **४-वर्ष**

इंटर्नशिप के साथ

मास्टर ऑफ सर्जरी (एम.एस.): **३-वर्ष**

१. शरीर रचना विज्ञान
२. नेत्र चिकित्सा
३. अस्थि रोग विज्ञान
४. कर्ण, नासा, कंठ विज्ञान
५. शल्य चिकित्सा
६. प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान

डाक्टोरेटस् मेडिसिनस् (डी.एम.): **३-वर्ष**

१. तंत्रिकीय चिकित्सा
२. अंत:स्राव विज्ञान
३. जठरांत्र शोथ विज्ञान
४. हृदय रोग विज्ञान
५. वृक्क रोग विज्ञान

मैजिस्टर चिरूरगॉय (एम.सीएच.) : **३-वर्ष**

१. तंत्रिकीय शल्य चिकित्सा
२. प्लास्टिक शल्य चिकित्सा
३. मूत्र रोग विज्ञान
४. बाल शल्य चिकित्सा
५. हृदय-लसिका एवं वक्षीय शल्य चिकित्सा

स्वास्थ्य सांख्यिकी में स्नातकोत्तर **२ वर्ष**

प्रमाण पत्र

पेन एण्ड पैलिएटिव केअर में पोस्ट डॉक्टोरल सर्टिफिकेट कोर्स

विशेष पाठ्यक्रम : **२-वर्ष**

१. विगलन चिकित्सा (डायलिसिस) में डिप्लोमा
२. चिकित्सकीय तकनीकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (रेडियोथिरेपी)
३. प्रयोगशाला तकनीकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

१२. आयुर्वेद संकाय

स्नातक आयुर्वेदिक मेडिसिन और सर्जरी (बी.ए.एम.एस.) ५१/२-वर्ष

डॉक्टर ऑफ मेडिसिन-आयुर्वेद (एम.डी.आयु.): ३-वर्ष

१. मौलिक सिद्धान्त
२. द्रव्य गुण
३. रस शास्त्र
४. काय चिकित्सा
५. प्रसूति तंत्र (स्त्री रोग)
६. प्रसूति (कौमारभृत्य/बालरोग)

मास्टर ऑफ सर्जरी-आयुर्वेद (एम.एस.आयुर्वेद): ३ वर्ष

१. शल्य
२. शालक्य

विशेष पाठ्यक्रम: **२ वर्ष**

१. पंचकर्म चिकित्सा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
२. आयुर्वेदिक औषधि मानकीकरण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
३. मातृक स्वास्थ्य देखभाल में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.एम.सी.(आयुर्वेद))
४. नेओनाटाल एण्ड चाइल्ड केयर में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.एन.सी.(आयुर्वेद))
५. क्षार कर्म में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
६. विकिरण एवं छाया में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
७. आयुर्वेदिक फार्मास्युटिक्स में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी. जी. डी. आयुर्वे. पी.)
८. संज्ञाहरण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
९. अग्निकर्म एवं जलौका वाचरण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
१०. प्रसव विज्ञान में प्रमाण पत्र (केवल महिलाओं के लिए १-वर्ष)

१३. दंत संकाय

बेचलर आफ डेन्टल सर्जरी (बी.डी. एस.) ३-वर्ष

मास्टर आफ डेन्टल सर्जरी (एमडीएस.) ३-वर्ष

विशेष पाठ्यक्रम : **२-वर्ष**

१. डेन्टल मेकैनिक में स्नातक डिप्लोमा
२. डेन्टल हाइजेनिस्ट में स्नातक डिप्लोमा

१४. अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संकाय

स्नातक प्रौद्योगिकी (बी.टेक.): **४-वर्ष**

१. मृत्तिका शिल्प अभियांत्रिकी
२. रासायनिक अभियांत्रिकी
३. सिविल अभियांत्रिकी
४. संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
५. विद्युत अभियांत्रिकी
६. विद्युतकीय अभियांत्रिकी

७. यांत्रिकी अभियांत्रिकी
८. धातुकीय अभियांत्रिकी
९. खनन अभियांत्रिकी
१०. स्नातक फार्मास्युटिक्स (बी.फार्मा.)

अभियांत्रिकी में द्वि उपाधि
(बी.टेक्. एवं एम.टेक्.): ५-वर्ष

१. मृत्तिका शिल्प अभियांत्रिकी
२. संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
३. संरचना अभियांत्रिकी
४. यांत्रिकी अभियांत्रिकी
५. धातुकीय अभियांत्रिकी
६. पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
७. विद्युतकीय अभियांत्रिकी
८. खनन अभियांत्रिकी
९. जैव-रसायनिक अभियांत्रिकी
१०. जैव-चिकित्सकीय अभियांत्रिकी

भेषजकी विज्ञान में दोहरी उपाधि
(बी.फार्मा. एवं एम्.फार्मा.) ५-वर्ष

अनुप्रयुक्त विज्ञान में एकीकृत कार्यक्रम (एम.टेक्.) ५-वर्ष

१. औद्योगिक रसायन
२. गणित और संगणन
३. भौतिकी अभियांत्रिकी

स्नातकोत्तर प्रौद्योगिकी (एम.टेक.): २-वर्ष

१. मृत्तिका शिल्प अभियांत्रिकी
२. रासायनिक अभियांत्रिकी
३. सिविल अभियांत्रिकी
४. सिस्टम अभियांत्रिकी
५. विद्युत अभियांत्रिकी
६. विद्युतिकीय अभियांत्रिकी
७. यांत्रिकी अभियांत्रिकी
८. धातुकीय अभियांत्रिकी
९. खनन अभियांत्रिकी
१०. जैव-चिकित्सकीय अभियांत्रिकी
११. जैव-रसायनिक अभियांत्रिकी
१२. औद्योगिक प्रबन्धन
१३. पदार्थ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
१४. मास्टर ऑफ फार्मास्युटिक्स (एम.फार्मा.)

१५. कृषि संकाय

स्नातक कृषि विज्ञान (बी.एससी.एजी.) ४-वर्ष (८-सेमेस्टर)
स्नातकोत्तर कृषि विज्ञान (एम.एससी.एजी.) :
२-वर्ष (४-सेमेस्टर)

१. शस्य विज्ञान
२. कृषि अर्थशास्त्र
३. पादप कार्यिकी
४. कीट विज्ञान एवं कृषि जन्तु विज्ञान
५. प्रसार शिक्षा
६. आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन
७. पशु पालन एवं दुग्ध विज्ञान
८. कवक एवं पादप रोग विज्ञान
९. उद्यान विज्ञान
१०. मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन शास्त्र

विशेष पाठ्यक्रम : २ वर्ष (४-सेमेस्टर)

१. कृषि व्यवसाय प्रबन्ध में स्नातकोत्तर
२. एम.टेक्. इन् एग्रीकल्चरल इंजिनियरिंग (सॉइल एण्ड वाटर कन्जरवेशन इंज.)
३. एम.एससी. इन् फूड साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी

१६. महिला महाविद्यालय

१. कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
२. विज्ञान स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
३. विज्ञान स्नातकोत्तर (गृह विज्ञान) २-वर्ष
४. विज्ञान स्नातकोत्तर (बायोइन्फारमेटिक्स) (महिलाओं के लिए) २-वर्ष (४-सेमेस्टर)
५. नृत्य में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (कत्थक, भरतनाट्यम्) ३-वर्ष

१७. विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत संचालित नगरीय महाविद्यालय

१.आर्य महिला पी.जी.महाविद्यालय

१. कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
२. वाणिज्य स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष
३. शिक्षा स्नातक (बी.एड्.) १-वर्ष

४. कला स्नातकोत्तर (एम. ए.) २-वर्ष

(क) संस्कृत

(ख) हिन्दी

(ग) समाजशास्त्र

२. वसन्त कन्या महाविद्यालय

१. कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष

२. कला स्नातकोत्तर (एम. ए.) २-वर्ष

(क) हिन्दी

(ख) अंग्रेजी

(ग) मनोविज्ञान

(घ) समाजशास्त्र

(च) गृह विज्ञान

३. स्पिकिंग इंग्लिश में ६ माह का प्रमाण पत्र/ डिप्लोमा/ एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम

३. वसन्त महिला महाविद्यालय (राजघाट)

१. कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष

२. वाणिज्य स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष

३. शिक्षा स्नातक (बी. एड्.) १-वर्ष

४. शिक्षा स्नातकोत्तर (एम. एड्.) १-वर्ष

५. कला स्नातकोत्तर (एम. ए.) २-वर्ष

(क) अंग्रेजी

(ख) मनोविज्ञान

६. पत्रकारिता और पर्यटन प्रबन्धन में १ वर्षीय पूर्णकालिक प्रमाण पत्र/ डिप्लोमा/ एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम

४. दयानन्द पी. जी. महाविद्यालय (डी. ए. वी. डिग्री कालेज)

१. कला स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष

२. वाणिज्य स्नातक (प्रतिष्ठा) ३-वर्ष

३. वाणिज्य स्नातकोत्तर (एम. काम.) २-वर्ष

४. कला स्नातकोत्तर (एम. ए.) २-वर्ष

(क) अर्थशास्त्र

(ख) इतिहास

(ग) समाजशास्त्र

५. पत्रकारिता और पर्यटन प्रबन्धन में १ वर्षीय पूर्णकालिक प्रमाण पत्र/ डिप्लोमा/ एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम

राजीव गांधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, मिर्जापुर

अध्ययन हेतु नियमित पाठ्यक्रम

१. शिक्षा संकाय

शिक्षा स्नातक (बी.एड्.) १-वर्ष

२. आयुर्वेद संकाय

१. बी.फार्मा. (आयुर्वेद) ४-वर्ष

२. एम. फार्मा. (आयुर्वेद) २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

३. विज्ञान संकाय

१. मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (एम.सी.ए.) (पेड सीट श्रेणी के अन्तर्गत) ३-वर्ष (६-सेमेस्टर)

४. वाणिज्य संकाय

१.स्नातक वाणिज्य (प्रतिष्ठा) (पेड सीट श्रेणी के अन्तर्गत) ३-वर्ष

अध्ययन के विशेष पाठ्यक्रम के अन्तर्गत

१. कला संकाय

१. पर्यटन प्रबन्धन में एम.ए. २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

२. कार्यालय प्रबन्धन और व्यवसाय संचार में डिप्लोमा २-वर्ष

३. पर्यटन प्रबन्धन में स्नातक डिप्लोमा पाठ्यक्रम २-वर्ष

४. पत्रकारिता और जन संचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

५. भ्रमण प्रबन्धन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पूर्ण कालिक) १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

६. कॉरपोरेट सेक्रेटेरीशिप में स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

२. प्रबन्ध शास्त्र संकाय

१. कृषि व्यवसाय में एम.बी.ए. (पूर्ण कालिक) २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

३. विज्ञान संकाय

१. पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में एम.एस.सी. (टेक्.) ३-वर्ष (६-सेमेस्टर)

२. पी.जी.डिप्लोमा इन रिमोट सेन्सिंग एण्ड जी.आई.एस. १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

४. वाणिज्य संकाय

१. वाणिज्य स्नातक (प्रतिष्ठा) फाइनेंशियल मार्केट मैनेजमेंट ३-वर्ष

२. बीमा प्रबन्धन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
(पी.जी.डी.आई.एम.)
(पूर्ण कालिक) १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

५. कृषि संकाय

१. एम.एससी. (कृषि) एग्रो फोरेस्ट्री २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

२. एम.एससी. (कृषि)
मृदा और जल संरक्षण २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

३. एम.एससी. इन
प्लान्ट बायोटेनोलॉजी २-वर्ष (४-सेमेस्टर)

४. बीज प्रौद्योगिकी में
स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

५. पोस्ट हार्वेस्ट प्रौद्योगिकी में
स्नातकोत्तर डिप्लोमा १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

६. सामाजिक विज्ञान संकाय १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

१. परामर्श और मनश्चिकित्सा में
स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पूर्ण कालिक)

२. व्यापार अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

७. आयुर्वेद संकाय

१. प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग उपचार में स्नातक डिप्लोमा
(पूर्ण कालिक) २१/२-वर्ष

८. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

१. वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष में स्नातक डिप्लोमा पाठ्यक्रम
२-वर्ष

२. कर्मकाण्ड में प्रमाण पत्र १-वर्ष

९. दृश्य कला संकाय

१. हथकरघा कढ़ाई एवं हस्तकला में
प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम ६-माह

२. रंगाई और छपाई में प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम ६-माह

३. वस्त्र रूपांकन में प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम ६-माह

१०. अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संकाय

१. उद्यमिता प्रबन्धन में स्नातक डिप्लोमा
(पूर्ण कालिक) १-वर्ष (२-सेमेस्टर)

४. सत्र २०१२ की अवधि में प्रदत्त उपाधि/सनद/प्रमाण-पत्र

१. अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संकाय

बी.टेक./बी.फार्मा	४०२
एम.टेक./एम.फार्मा.	३२६

२. कृषि विज्ञान संकाय

बी.एससी.(एजी.)	९१
एम.एससी.(एजी.)	१८७
पीएच.डी.	३२

३. चिकित्सा विज्ञान संकाय

एम.बी.बी.एस.	५९
एम.डी.	५५
एम.एस.	२७
एम.सीएच.	४
डी.एम.	८
डिप्लोमा	२७
पीएच.डी.	१४
योगा में डिप्लोमा	१३१

४. आयुर्वेद संकाय

बी.ए.एम.एस.	६६
बी.फार्म.(आयुर्वेद)	२१
एम.डी. (आयुर्वेद)	१७
एम.एस. (आयुर्वेद)	१०
डिप्लोमा	३७
पी.एचडी.	१९

५. दन्त चिकित्सा संकाय

एम.डी.एस.	२
डिप्लोमा	७
पीएच.डी.	-

६. वाणिज्य संकाय

बी.काम्. (प्रतिष्ठा)	५१९
एम.काम्.	१८६
एम.एफ.टी.	२०
एम.एफ.एम.- आर आई.	२०
एम.एफ.एम.	३६
डिप्लोमा	१२
पीएच.डी.	२९

७. विज्ञान संकाय

बी.एससी. (प्रतिष्ठा)	५८६
एम.एससी.	५३४
एम.सी.ए.	५०
डिप्लोमा	३६
पीएच.डी.	११४

८. विधि संकाय

एलएल.बी.	२४२
एलएल.एम.	३९
एलएल.एम (एचआरडीई)	१५
पीएच.डी.	६

९. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

शास्त्री (प्रतिष्ठा)	४४
आचार्य	३६
डिप्लोमा	१९
चक्रवर्ती	२२

१०. प्रबन्ध शास्त्र संकाय

एम.बी.ए.	४७
एम.आई.बी.ए.	५१
एम.बी.ए. (कृषि व्यवसाय)	३२
डिप्लोमा	१०
पीएच.डी.	४

११. दृश्य कला संकाय

बी.एफ.ए.	५४
एम.एफ.ए.	५१
पीएच.डी.	२
डिप्लोमा	३४

१२. मंच कला संकाय

बी. म्यूज़	३६
एम. म्यूज़	५९
एम. म्यूज़िकोलॉजी	१२
एम.फिल. इन म्यूज़िकोलॉजी	१५
पीएच.डी.	५

१३. शिक्षा संकाय

बी.एड्.	७०४
बी.एड्. (विशेष)	७८
एम.एड्.	३७
एम.एड्. (विशेष)	२५
एम.एड्. (अंशकालिक)	२१
पीएच.डी.	११

१४. सामाजिक विज्ञान संकाय

बी.ए. (प्रतिष्ठा)	९८०
एम.ए.	५८३
डिप्लोमा	९९
पीएच.डी.	७१

१५. कला संकाय

बी.ए. (प्रतिष्ठा)	१२३२
एम.ए.	८६३
बी.पी.ई.	९४
एम. लिब. और सूचना विज्ञान	२७
एम.पी.ई.	३४
डिप्लोमा	३८५
पीएच.डी.	१३२

४.१. छात्रों की संख्या नवपंजीकृत छात्र एवं छात्राएँ

विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थानों/संकायों/महाविद्यालयों में नवपंजीकृत छात्रों की संख्या नीचे वर्णित है:

क्र. सं.	संकाय/महाविद्यालय का नाम	छात्र	छात्रा	योग
१.	कृषि विज्ञान संकाय	४१७	१२५	५४२
२.	अभियांत्रिकी एव प्रौद्योगिकी संकाय	११९६	१६०	१३५६
३.	चिकित्सा विज्ञान संकाय	२१८	१४८	३६६
४.	आयुर्वेद संकाय	११७	८३	२००
५.	दन्त विज्ञान संकाय	२१	२३	४४
६.	कला संकाय	२२३६	७३४	२९७०
७.	वाणिज्य संकाय	४८९	२७१	७६०
८.	शिक्षा संकाय	५६९	१८३	७५२
९.	विधि संकाय	४५४	६५	५१९
१०.	प्रबन्ध शास्त्र संकाय	१४८	५६	२०४
११.	मंच कला संकाय	२६७	२०७	४७४
१२.	विज्ञान संकाय	१५१०	६३९	२१४९
१३.	सामाजिक विज्ञान संकाय	९७५	३६२	१३३७
१४.	संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय	२४०	१६	२५६
१५.	दृश्य कला संकाय	१२९	८६	२१५
१६.	महिला महाविद्यालय	०	८७३	८७३
	सम्पूर्ण योग	**८९८६**	**४०३१**	**१३०१७**

सम्बद्ध महाविद्यालयों में नवपंजीकृत छात्रों की संख्या नीचे वर्णित है:

क्र. सं.	सम्बद्ध महाविद्यालय का नाम	छात्र	छात्रा	योग
१.	वसंत कन्या महाविद्यालय	०	५९६	५९६
२.	आर्य महिला पी. जी. कॉलेज	०	१०८८	१०८८
३.	वसन्त महिला पी. जी. कॉलेज	०	७४९	७४९
४.	दयानन्द महाविद्यालय	१५१३	१५४	१६६७
	सम्पूर्ण योग	**१५१३**	**२५८७**	**४१००**

विश्वविद्यालय द्वारा अनुरक्षित विद्यालयों में नवपंजीकृत छात्रों की संख्या नीचे वर्णित है:

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	योग
१.	सेन्ट्रल हिन्दू ब्वॉएज़ स्कूल	७६७
२.	सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल	३५२
३.	श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय	५००
	सम्पूर्ण योग	**१६१९**

नवपंजीकृत विदेशी छात्र एवं छात्राएँ

क्र. सं.	देश का नाम	छात्र	छात्रा	योग
१.	अफ़गानिस्तान	११	१	१२
२.	अमेरिका	२	२	४
३.	आस्ट्रेलिया	३	१	४
४.	बांग्लादेश	६	३	९
५.	भूटान	३	०	३
६.	बॉस्निया	०	१	१
७.	ब्रिटेन	०	१	१
८.	कनाडा	०	४	४
९.	चिली	०	१	१
१०.	चीन	०	२	२
११.	कम्बोडिया	५	१	६
१२.	डेनमार्क	०	१	१
१३.	एस्टोनिया	०	२	२
१४.	फ्रांस	१	१	२
१५.	ग्रीस	१	२	३
१६.	ईरान	६	३	९
१७.	ईराक	३	१	४
१८.	इज़राइल	४	१	५
१९.	इटली	४	३	७
२०.	जापान	२	५	७
२१.	कोरिया	५	४	९
२२.	मालदीव	०	१	१
२३.	मारीशस	१	०	१
२४.	मेक्सिको	१	०	१
२५.	म्यांमार	४	०	४
२६.	नेपाल	१००	३६	१३६
२७.	न्यूज़ीलैण्ड	१	०	१
२८.	नाइजेरिया	०	१	१
२९.	पोलैण्ड	१	१	२
३०.	रुस	४	०	४
३१.	दक्षिण अफ्रीका	०	१	१
३२.	स्पेन	१	४	५
३३.	श्रीलंका	७	९	१६
३४.	स्वीडेन	४	०	४
३५.	थाईलैण्ड	२२	६	२८
३६.	तिब्बत	४	३	७
३७.	तुर्की	३	०	३
३८.	युक्रेन	१	१	२
३९.	वियतनाम	१	२	३
४०.	यमन	५	०	५
	सम्पूर्ण योग	**२१६**	**१०५**	**३२१**

वर्गानुसार और संकायानुसार सम्पूर्ण विद्यार्थियों की संख्या

क्र. सं.	संकायों के नाम	सामान्य वर्ग के छात्रों की संख्या			अनु. जाति वर्ग के छात्रों की संख्या			अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों की संख्या			अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की संख्या			अल्प संख्यक वर्ग के छात्रों की संख्या			शारीरिक विकलांग छात्रों की संख्या			विदेशी छात्रों की संख्या			कुल योग		
		पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग
१.	कृषि विज्ञान संकाय	३१३	१४१	४५४	१२६	२७	१५३	५४	२२	७६	२७५	७९	३५४	११	३	१४	१८	६	२४	५४	२	५६	८५१	२८०	**११३१**
२.	अभियांत्रिकी एव प्रौद्योगिकी संकाय	२०५१	२५३	२३०४	५०७	६४	५७१	१९५	२९	२२४	६४७	७८	७२५	२९	४	३३	१०	१	११	१२	०	१२	३४५१	४२९	**३८८०**
३.	चिकित्सा विज्ञान संकाय	३९१	२२५	६१६	९९	४९	१४८	३४	१५	४९	१३४	९७	२३१	३	४	७	९	०	९	१६	१५	३१	६८६	४०५	**१०९१**
४.	आयुर्वेद संकाय	१९५	१०३	२९८	४७	२६	७३	१०	९	१९	७५	४३	११८	०	०	०	२	१	३	१३	७	२०	३४२	१८९	**५३१**
५.	दन्त विज्ञान संकाय	२८	२६	५४	९	११	२०	२	१	३	१४	२६	४०	४	०	४	०	०	०	०	१	१	५७	६५	**१२२**
६.	कला संकाय	१५५०	५६९	२११०	६३२	११३	७४५	२०६	४७	२५३	१४८८	३६३	१८५१	५४	१०	६४	६१	५	६६	८८	४५	१३३	४०७९	११५२	**५२३१**
७.	वाणिज्य संकाय	५३३	३१०	८४३	१७१	६२	२३३	६४	३२	९६	३६८	१५५	५२३	४४	११	५५	३०	७	३७	२८	३५	६३	१२३८	६१२	**१८५०**
८.	शिक्षा संकाय	२००	७२	२७२	९७	१५	११२	३४	१२	४६	२११	७६	२८७	०	०	०	२०	५	२५	७	३	१०	५६९	१८३	**७५२**
९.	विधि संकाय	५०५	१४९	६५४	१४३	१९	१६२	५५	७	६२	२५२	४४	२९६	९	५	१४	१४	२	१६	१	०	१	९७९	२२६	**१२०५**
१०.	प्रबन्ध शास्त्र संकाय	११०	५१	१६१	३९	४	४३	१३	४	१७	७५	१५	९०	११	३	१४	५	०	५	२०	५	२५	२७३	८२	**३५५**
११.	मंच कला संकाय	४२०	३०१	७२१	२२	१८	४०	४	०	४	२७	३८	६५	०	०	०	१	२	३	३२	३१	६३	५०६	३९०	**८९६**
१२.	विज्ञान संकाय	१२७६	६६९	१९४५	४२६	१२६	५५२	१४६	५३	१९९	१०२९	३६२	१३९१	५३	१७	७०	५९	९	६८	४७	६	५३	३०३६	१२४२	**४२७८**
१३.	सामाजिक विज्ञान संकाय	८७९	३०६	११८५	३३२	८०	४१२	१५३	३४	१८७	६७२	१५३	८२५	३२	४	३६	४३	८	५१	३०	८	३८	२१४१	५९३	**२७३४**
१४.	संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय	४७१	१३	४८४	३	१	४	१	१	२	१५	११	२६	०	०	०	०	०	०	२	३	५	४९२	२९	**५२१**
१५.	दृश्य कला संकाय	४९	५७	१०६	८५	२०	१०५	१८	१४	३२	१५३	६६	२१९	१	१	२	३	५	८	१२	५	१७	३२१	१६८	**४८९**
१६.	महिला महाविद्यालय	०	११५९	११५९	०	२७१	२७१	०	११०	११०	०	५०४	५०४	०	५७	५७	०	४०	४०	०	१६	१६	०	२१५७	**२१५७**
	सम्पूर्ण योग	**८९७१**	**४४०४**	**१३३७५**	**२७३८**	**९०६**	**३६४४**	**९८९**	**३९०**	**१३७९**	**५४३५**	**२११०**	**७५४५**	**२५१**	**११९**	**३७०**	**२७५**	**९१**	**३६६**	**३६२**	**१८२**	**५४४**	**११०२१**	**८२०२**	**२७२२२**

वर्गानुसार और सम्बद्ध महाविद्यालयों के सम्पूर्ण विद्यार्थियों की संख्या

क्र. सं.	महाविद्यालयों के नाम	सामान्य वर्ग के छात्रों की संख्या			अनु. जाति वर्ग के छात्रों की संख्या			अनु. जनजाति वर्ग के छात्रों की संख्या			अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की संख्या			अल्प संख्यक वर्ग के छात्रों की संख्या			शारीरिक विकलांग छात्रों की संख्या			विदेशी छात्रो की संख्या			कुल योग		
		पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग
१.	वसंत कन्या महाविद्यालय	०	६९०	६९०	०	२१६	२१६	०	८०	८०	०	४०१	४०१	०	५२	५२	०	८	८	०	०	०	०	१४४७	१४४७
२.	आर्य पी.जी. कॉलेज	०	११४९	११४९	०	४४०	४४०	०	५३	५३	०	६७०	६७०	०	७३	७३	०	१२	१२	०	०	०	०	२३९७	२३९७
३.	वसन्त महिला महाविद्यालय	०	८४७	८४७	०	२६०	२६०	०	५०	५०	०	३९८	३९८	०	२५४	२५४	०	१०	१०	०	०	०	०	१८१९	१८१९
४.	दयानन्द पी.जी. कॉलेज	१७७३	१८६	१७१५	५४१	१९	५६०	१०६	५	१११	९१२	६६	९७८	०	०	०	३०	२	३२	०	०	०	३११८	२७८	३३९६
	सम्पूर्ण योग	**१७७३**	**२८७२**	**४४०१**	**५४१**	**९३५**	**१४७६**	**१०६**	**१८८**	**२९४**	**९१२**	**१५३५**	**२४४७**	**०**	**३७१**	**३७१**	**३०**	**३२**	**६२**	**०**	**०**	**०**	**३११८**	**५९४१**	**९०५९**

५. मानव संसाधन की रूपरेखा

अध्यापकों की संख्या

प्रतिवेदन अवधि में विश्वविद्यालय के महिला महाविद्यालय सहित संस्थानों व संकायों में विभिन्न पदों के शिक्षक सदस्यों की संख्या इस प्रकार रही

आचार्य और उनके समकक्ष (स्तर-V)

संकाय/ संस्थान	पुरुष						महिला						कुल योग					
	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.
चि.वि.सं.	१०१	००	००	००	०२	००	१९	००	००	००	००	००	१२०	००	००	००	०२	००
प्रौ. सं.	१००	०१	००	००	०३	००	०७	००	००	००	००	००	१०७	०१	००	००	०३	००
कृ.वि.सं.	०७५	०१	००	००	००	००	०२	००	००	००	००	००	०७७	०१	००	००	००	००
कला	०५९	००	००	००	०३	००	१८	००	००	००	०२	००	०७७	००	००	००	०५	००
विज्ञान	११४	०१	००	००	०२	००	०७	००	००	००	००	००	१२१	०१	००	००	०२	००
सामाजिक वि.	०३६	००	००	००	०२	००	०७	००	००	००	००	००	०४३	००	००	००	०२	००
सं.वि.ध.वि.	०१५	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१५	००	००	००	००	००
संगीत एवं मंच कला	००१	००	००	००	००	००	०४	००	००	००	००	००	००५	००	००	००	००	००
दृश्य कला	००२	००	००	००	००	००	०१	००	००	००	००	००	००३	००	००	००	००	००
वाणिज्य	०२०	००	००	००	०१	००	००	००	००	००	००	००	०२०	००	००	००	०१	००
विधि	००८	००	००	००	०१	००	००	००	००	००	००	००	००८	००	००	००	०१	००
प्रबन्ध शास्त्र	००९	००	००	००	००	००	०२	००	००	००	००	००	०११	००	००	००	००	००
शिक्षा	००८	००	००	००	००	००	०१	००	००	००	००	००	००९	००	००	००	००	००
म.महा.वि.	०००	००	००	००	००	००	२४	००	००	००	०२	००	०२४	००	००	००	०२	००
एकेडमिक स्टाफ कॉलेज	००१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००१	००	००	००	००	००
योग	**५४९**	**०३**	**००**	**००**	**१४**	**००**	**९२**	**००**	**००**	**००**	**०४**	**००**	**६४१**	**०३**	**००**	**००**	**१८**	**००**

उपाचार्य/एसोसिएट प्रोफेसर (स्तर-IV)

संकाय/ संस्थान	पुरुष						महिला						कुल योग					
	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.
चि.वि.सं.	४१	०३	००	००	०३	००	१०	००	००	००	००	००	५१	०३	००	००	०३	००
प्रौ. सं.	४४	०३	०१	००	०१	००	०५	०१	००	००	००	००	४९	०४	०१	००	०१	००
कृ.वि.सं.	१८	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	१८	००	००	००	००	००
कला	३८	०१	००	००	०३	००	१०	०१	००	००	००	००	४८	०२	००	००	०३	००
विज्ञान	५२	०१	०१	००	००	००	०३	००	०१	००	००	००	५५	०१	०२	००	००	००
सामाजिक वि.	१५	०४	००	००	००	००	०९	००	००	००	००	००	२४	०४	००	००	००	००

सं.वि.ध.वि.	०५	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०५	००	००	००	००	००
संगीत एवं मंच कला	०५	०१	००	००	००	००	०१	००	००	००	००	००	०६	०१	००	००	००	००
दृश्य कला	०२	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०२	०१	००	००	००	००
वाणिज्य	०९	०२	००	००	०१	००	०१	००	००	००	००	००	१०	०२	००	००	०१	००
विधि	१५	००	००	००	०१	००	०१	००	००	००	००	००	१६	००	००	००	०१	००
प्रबन्ध शास्त्र	०६	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०६	०१	००	००	००	००
शिक्षा	०३	०२	००	००	००	००	०६	००	००	००	००	००	०९	०२	००	००	००	००
म.महा.वि.	२०	००	००	००	००	००	०४	००	००	००	००	००	२४	००	००	००	००	००
एकेडमिक स्टाफ कॉलेज	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
आईईएसडी	०२	००	००	००	००	००	०१	००	००	००	००	००	०३	००	००	००	००	००
योग	**२७५**	**१९**	**०२**	**००**	**०९**	**००**	**५१**	**०२**	**०१**	**००**	**००**	**००**	**३२६**	**२१**	**०३**	**००**	**०९**	**००**

संयुक्त आचार्य/सेलेक्शन ग्रेड लेक्चरर (स्तर-III)

संकाय/ संस्थान	पुरुष						महिला						कुल योग					
	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.
चि.वि.सं.	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
प्रौ. सं.	०७	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०७	००	००	००	००	००
कृ.वि.सं.	०५	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०५	०१	००	००	००	००
कला	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	००	००	००	००	००
विज्ञान	०१	००	००	००	००	००	०१	०१	००	००	००	००	०२	०१	००	००	००	००
सामाजिक वि.	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
सं.वि.ध.वि.	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	००	००	००	००	००
संगीत एवं मंच कला	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	००	००	००	००	००
दृश्य कला	०६	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०६	००	००	००	००	००
वाणिज्य	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
विधि	००	००	००	००	००	००	०१	००	००	००	००	००	०१	००	००	००	००	००
प्रबन्ध शास्त्र	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
शिक्षा	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
म.महा.वि.	०१	००	००	००	००	००	०४	००	००	००	००	००	०५	००	००	००	००	००
एकेडमिक स्टाफ कॉलेज	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
आईईएसडी	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
योग	**२३**	**०१**	**००**	**००**	**००**	**००**	**०६**	**०१**	**००**	**००**	**००**	**००**	**२९**	**०२**	**००**	**००**	**००**	**००**

सहायक आचार्य और उनके समकक्ष (स्तर-II)

संकाय/ संस्थान	पुरुष						महिला						कुल योग					
	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.
चि.वि.सं.	१८	०१	०१	००	००	००	०५	०१	००	००	००	००	२३	०२	०१	००	००	००
प्रौ. सं.	२९	०८	०१	००	०३	००	०७	०१	००	००	००	००	३६	०९	०१	००	०३	००
कृ.वि.सं.	१३	०१	०१	००	०१	००	०२	००	००	००	००	००	१५	०१	०१	००	०१	००
कला	१४	०१	००	००	०१	००	०७	०१	००	००	००	००	२१	०२	००	००	०१	००
विज्ञान	१४	०१	००	००	०२	००	०८	००	००	००	००	००	२२	०१	००	००	०२	००
सामाजिक वि.	०७	०१	००	००	०१	०१	०३	००	००	००	००	००	१०	०१	००	००	०१	०१
सं.वि.ध.वि.	१४	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	१४	००	००	००	००	००
संगीत एवं मंच कला	०१	००	००	००	००	००	०२	०१	००	००	००	००	०३	०१	००	००	००	००
दृश्य कला	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	००	००	००	००	००
वाणिज्य	०१	००	०१	००	००	००	०१	००	००	००	००	००	०२	००	०१	००	००	००
विधि	०१	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	००	००	००	००
प्रबन्ध शास्त्र	०२	००	०१	००	००	००	०१	००	००	००	००	००	०३	००	०१	००	००	००
शिक्षा	०५	०१	०१	००	००	००	०३	००	००	००	००	००	०८	०१	०१	००	००	००
म.महा.वि.	००	००	००	००	००	००	१४	०१	००	००	०१	००	१४	०१	००	००	०१	००
एकेडमिक स्टाफ कॉलेज	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
आईईएसडी	०५	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०५	००	००	००	००	००
योग	**१२५**	**१६**	**०६**	**००**	**०८**	**०१**	**५३**	**०५**	**००**	**००**	**०१**	**००**	**१७८**	**२०**	**०६**	**००**	**०९**	**०१**

सहायक आचार्य (वरिष्ठ वेतनमान उपाचार्य और उनके समकक्ष (स्तर-I)

संकाय/ संस्थान	पुरुष						महिला						कुल योग					
	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.	सामान्य	अ. जा.	अ. ज. जा.	अ. पि. वर्ग	अल्प सं.	शा. वि.
चि.वि.सं.	६९	११	०२	०६	००	००	१३	०४	००	००	००	००	८२	१५	०२	०६	००	००
प्रौ. सं.	३८	०५	०२	००	०२	००	०७	०१	००	००	००	००	४५	०६	०२	००	०३	००
कृ.वि.सं.	२४	०९	०४	०२	००	००	०१	००	००	००	००	००	२५	०९	०४	०२	००	००
कला	२७	०४	०१	००	०२	००	१०	०२	०१	००	००	००	३७	०६	०२	००	०२	००
विज्ञान	४०	१४	०४	००	०२	००	१५	००	००	००	००	००	५५	१४	०४	००	०२	००
सामाजिक वि.	११	०२	०२	०१	००	००	११	०२	०१	०१	००	००	२२	०४	०३	०२	००	००
सं.वि.ध.वि.	०३	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०३	०१	००	००	००	००
संगीत एवं मंच कला	०५	०१	००	०१	००	००	०३	००	००	००	००	००	०८	०१	००	०१	००	००
दृश्य कला	०६	०१	००	००	००	००	०३	००	००	००	००	००	०९	०१	००	००	००	००
वाणिज्य	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	००	००	००	००	००
विधि	१३	०२	०१	०४	००	००	०२	०१	००	००	००	००	१५	०३	०१	०४	००	००
प्रबन्ध शास्त्र	०४	०१	००	००	००	००	०३	०१	००	०१	००	००	०७	०२	००	०१	००	००

शिक्षा	०४	०१	००	००	००	०१	०१	००	००	००	००	००	०५	०१	००	००	००	०१
म.महा.वि.	०९	०१	०१	००	००	००	१८	०७	०१	००	०१	००	२७	०८	०२	००	००	००
एकेडमिक स्टाफ कॉलेज	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
आइईएसडी	०५	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०५	०१	००	००	००	००
योग	**२५९**	**५४**	**१७**	**१४**	**०६**	**०१**	**८७**	**१८**	**०३**	**०२**	**०१**	**००**	**३४६**	**७२**	**२०**	**१६**	**०७**	**०१**

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या इस प्रकार है:

'अ' वर्गीय कर्मचारी

१. कुलपति	१
२. परीक्षा नियन्ता	१
३. वित्ताधिकारी	१
४. प्रोफेसर इन्चार्ज	१
५. शोध अधिकारी	९
६. निदेशक	२
७. चेयरमैन	१
८. उप-कुलसचिव	१५
९. सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी	१
१०. उप-निदेशक	७
११. पुस्तकालयाध्यक्ष	१
१२. उप-पुस्तकालयाध्यक्ष	६
१३. अधिशासी अभियन्ता	४
१४. सिस्टम प्रबन्धक	१
१५. वरिष्ठ शोध अधिकारी	१
१६. उप-चिकित्सा अधीक्षक (एम.एम.)	१
१७. उप-चिकित्सा अधीक्षक (आई.एम.)	२
१८. मुख्य चिकित्सा अधिकारी	१५
१९. वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी	६
२०. परियोजना अधिकारी	२
२१. सिस्टम प्रबन्धक	१
२२. अनुरक्षण अभियंता (वरिष्ठ)	१
२३. प्रलेखन अधिकारी (एस०जी०)	१
२४. प्रधानाचार्य	२
२५. अध्यक्ष	१
२६. सीनियर आरथोप्टिस्ट	२
२७. सहायक कुलसचिव	१९
२८. सहायक लेखा/वित्त अधिकारी	१
२९. सुरक्षाधिकारी	१
३०. सहायक अभियंता	६
३१. फोरमैन	३
३२. सहायक कार्यशाला अधीक्षक	१
३३. सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	१३
३४. प्रोग्रामर	३
३५. सिस्टम प्रोग्रामर	१
३६. कनिष्ठ शोध अधिकारी	१
३७. सहायक सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी	१
३८. विज्ञानी (फोटो वोल्टिक)	२
३९. अनुरक्षण अभियंता (कनिष्ठ)	१
४०. रेडियोलॉजिकल फिज़िसिस्ट	१
४१. कनिष्ठ शोध अधिकारी	१
४२. शोध अधिकारी	१
४३. सूचना अधिकारी	१
४४. वेटरनरी ऑफिसर	१
४५. आडियोलॉजिस्ट	१
४६. वाणी उपचार	१
४७. चिकित्सा अधिकारी	१६
४८. सहायक निदेशक	५
४९. सूचना विशेषज्ञ	१
५०. अनुरक्षण अभियंता	१
५१. सूक्ष्म विश्लेषक	१
५२. नेटवर्किंग इंजिनियर	१
५३. रिसर्च एसोसिएट	८
५४. शोध अधिकारी	१
५५. सिस्टम अभियंता	१
योग ('अ' वर्ग कर्मचारी)	१८१

'ब', 'स' एवं 'द' वर्गीय कर्मचारी

वर्ग	सामान्य	अनु.जाति	अनु.ज.जाति	अ.पिछड़ा वर्ग	योग
'ब' वर्गीय कर्मचारी	०१४३	०३८	०१६	०३२	०२२९
'स' वर्गीय कर्मचारी	१२२८	१९४	०६५	४७८	१९६५
'द' वर्गीय कर्मचारी	१११४	४५९	११९	९२५	२६१७
योग	**२४८५**	**६९१**	**२००**	**१४३५**	**४८११**

६. वित्तीय संसाधन

(क) विश्वविद्यालय वित्त

विश्वविद्यालय अपना वित्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं भारत सरकार से विभिन्न अनुदान प्राधिकरणों से परियोजनाओं और योजनाओं विकास मदों के अन्तर्गत प्राप्त अनुदान से पूरा करता है। अनुरक्षण व्यय एवं विकास व्यय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्राप्त क्रमश: ''गैर-योजना'' व ''योजना'' मद से पूरा किया जाता है। विश्वविद्यालय अपने संसाधनों को विश्वविद्यालय द्वारा उपार्जित छात्र शुल्क, सम्पत्तियों से आय, दुग्धशाला एवं कृषि फार्म, चिकित्सालय, दुकानों की अनुज्ञप्ति शुल्क, आयुर्वेदिक औषधियों की बिक्री, दान व अन्य आमदनियों के माध्यम से प्राप्त करता है। वर्ष २०११-१२ के लिए विश्वविद्यालय का वार्षिक वित्तीय विवरण तैयार होने के अंतिम चरण में है। तद्नुसार, दिए गए आँकड़े परिवर्तित हो सकते हैं। कोषों की प्रकृति के अनुसार, विश्वविद्यालय अपना लेखा-जोखा का रख-रखाव निम्नलिखित मदों के अन्तर्गत करता है:-

(अ) सामान्य कोष ('आर' खाता)

विश्वविद्यालय को उपलब्ध कोषों का मुख्य स्रोत वेतन व भत्ता, छात्रवृत्ति, विकास कार्यों पर व्यय, भवनों का रख-रखाव, सहायक सेवाएँ आदि के भुगतान हेतु किया जाता है, जिसके अन्तर्गत हैं:

१.विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुदान

२.आन्तरिक आय

३.निवेशों पर ब्याज

विश्वविद्यालय को वित्तीय अनुदान भारत सरकार से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से प्राप्त होता है। यह अनुदान ब्लाक अनुदान के रूप में भी जाना जाता है। विश्वविद्यालय का अनुरक्षण कोष निम्नलिखित क्षेत्रों के वार्षिक व्यय को पूरा करता है:

सम्पत्ति मद

पुस्तकालय-पुस्तकें एवं शोध पत्रिकायें, अन्य सम्पत्ति (भवन व मशीनें), कार्यालयी उपकरण, शिक्षण में सहायक सामग्रियाँ इत्यादि। व्यय का विवरण का वर्गीकरण इस प्रकार है:

संस्थापन

वेतन एवं अतिरिक्त डी. ए. सहित भत्ते, सेवानिवृत्ति लाभ, सेवानिवृत्ति वेतन, कम्यूटेशन, ग्रेच्यूइटी, अवकाश नगदीकरण, भविष्य निधि में अंशदान और शिक्षक एवं गैर-शिक्षक कर्मचारियों के अन्य भत्ते।

गैर-संस्थापन

छात्रवृत्ति व वृत्ति, शैक्षणिक विभागों का रसायन व प्रयोगशालयी खर्च, छात्रावासों का अनुरक्षण, भवन, विद्युत व जल आपूर्ति सेवाएँ, दूरसंचार, यात्रा भत्ता, वर्दी, स्टेशनरी व छपाई, डाक खर्च, स्टाफ कार का अनुरक्षण, सहायक इकाईयों, मुद्रणालय, दुग्धशाला, फार्म, स्वास्थ्य सेवाओं का अनुरक्षण, चिकित्सालय का उद्यानिक रख-रखाव, क्रीड़ा परिषद् सहित छात्र सुविधाएँ, सफाई एवं सहायक सेवाएँ, अतिथि गृह संकुल, जलपान गृह, संगणक केन्द्र, आई.आर.डी.पी.एवं एन.एस.एस, इत्यादि।

विगत् कुछ वर्षों से विश्वविद्यालय वित्त समिति द्वारा अनुमोदित बजट प्रावधानों के अनुसार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/मानव संसाधन विकास मंत्रालय से पर्याप्त धनराशि विमुक्त न होने के कारण आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। तद्नुसार, विश्वविद्यालय ने बजट अनुशासन क्षेत्र को बनाये रखने के क्रम में गैर-संस्थापन खण्ड के अन्तर्गत व्यय को प्रतिबंधित कर दिया है एवं इस संदर्भ में वित्तीय वर्ष में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित सीमा में व्यय को भी बनाये रखा है।

राजस्व खाता

वर्ष २०११-१२ के लिए प्रमुख मदों (राजस्व खाता) के अन्तर्गत व्ययों का विवरण इस प्रकार है:

संस्थापन:

१. वेतन व भत्ता	रु.३८५०५.०२ लाख
२. सेवानिवृत्ति लाभ और सेवानिवृत्ति वेतन	रु. ११४७०.७१ लाख
कुल योग संस्थापन	रु.४९९७५.७३ लाख
गैर-संस्थापन:	रु.४६३९.४५ लाख
सम्पूर्ण व्यय (संस्थापन + गैर-संस्थापन)	रु.५४६१५.१८ लाख

विश्वविद्यालय (२०११-१२) के अनुरक्षण अनुदान के अन्तर्गत वित्तीय स्थिति विश्वविद्यालय की आय को समायोजित करने के बाद इस प्रकार है:

१) ०१.०४.११ को खाते में प्रारम्भिक धनराशि	रु.३७०.८८ लाख
२) २०११-१२ में यू. जी. सी. से प्राप्त धनराशि	रु५०१६७.२८ लाख
३) आन्तरिक आय	रु. १६४४.६२ लाख
सम्पूर्ण योग	**रु. ५२१८२.७८ लाख**

२०११-१२ की अवधि में व्यय रु.५४६१५.१८ लाख

३१-०३-१२ को बन्दी पर धनराशि

रु.(-)२४३२.४० लाख

(अ- २) पूँजीगत वस्तु

ग्रंथालय–पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ, अन्य पूँजी (भवन एवं मशीनें, कार्यालय उपकरण, शिक्षण सम्बन्धी वस्तुएँ इत्यादि प्रोत्साहन हेतु उपरोक्त व्यय में सम्मिलित एवं निर्धारित है।

(आ) विशेष कोष

१. विशेष उद्देश्यों से दिये गये दान व उसके ब्याज जिसके अन्तर्गत अध्यापक पदों, छात्रवृत्तियों, पुरस्कारों व पदकों के लिए स्थायी निधि है।

२. जमा कोषों जैसे जी. आई. एस, शिक्षक कल्याण कोष, जमानत राशि, सुरक्षा जमाराशि, संघ शुल्क कोष, इत्यादि।

३. विशेष शुल्क जैसे क्रीड़ा शुल्क, सार्वजनिक कक्ष, शैक्षणिक यात्रा शुल्क इत्यादि।

४. विभागीय विशेष (आय पैदा करने वाले) कोष जैसे संगणक केन्द्र, भारत कला भवन, प्रवेश परीक्षा, सर सुन्दरलाल चिकित्सालय का आवर्ती कोष, परामर्श शुल्क, इत्यादि।

इन मदों के अन्तर्गत प्राप्त धनराशि का उपयोग एक मात्र विशेष कार्यों के लिए ही किया जाता है और इनके खर्च को आय के अन्दर ही नियंत्रित रखा जाता है।

वर्ष २०११-१२ के अन्तर्गत सम्पूर्ण आय व व्यय इस प्रकार है:

आय : रु.१३३०३.६६ लाख

व्यय : रु.६३४४.६६ लाख

(इ) परियोजना कोष

विशेष कार्यों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता, जैसे

१. शोध परियोजनाएँ
२. जीवनवृत्ति व अन्य पुरस्कार
३. यात्रा अनुदान
४. संगोष्ठी व सम्मेलन
५. छात्रवृत्तियाँ

ये अनुदान शिक्षकों को विभागों के विकास में उनकी गतिविधियाँ नियोजित करने के लिए प्रदान की जाती हैं। वर्ष २०११-१२ की अवधि में आय व व्यय की स्थिति नीचे दी गयी है -

आय: रु.५७७७.२४ लाख

व्यय: रु.६२८३.१७ लाख

(ई) विकास कोष:

योजना अवधि के अन्तर्गत विभागों के विकास के लिए भवनों, उपकरणों, सामानों व फर्नीचर इत्यादि के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अनुदान।

चयनित विभागों के लिए आधारभूत सुविधाओं की समृद्धि के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता।

पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अनुदान।

विशेष कार्यों के लिए अनुदान।

विभाग वित्त प्रदायी अभिकरणों को प्रस्ताव प्रेषित करते हैं जो इन प्रस्तावों का सीधे तौर पर अथवा विशेषज्ञ समितियों के माध्यम से परीक्षण करवाते हैं।

वर्ष २०११-१२ की अवधि में आय व व्यय की स्थिति नीचे दी गयी है:

अनावर्ती

आय : रु.८२१७.५० लाख

व्यय : रु.१८८९९.८५ लाख

आवर्ती

आय : रु.३२३७.६१ लाख

व्यय : रु.४६७२.१२ लाख

(ब) प्रमुख उपलब्धियाँ

दोहरी लेखा प्रणाली को अपनाने के बाद से वित्त विभाग द्वारा लेखा को तैयार करने हेतु यू.जी.सी. द्वारा समय-समय पर जारी किए गए दोहरी लेखा प्रणाली आधारित भारत सरकार के प्रारूप का अनुपालन किया जा रहा है।

वार्षिक लेखा एवं बैलेंस शीट के साथ बैंक समाशोधन विवरण ऑडिट को प्रेषित किया जा चुका है।

वित्त विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के विभिन्न खातों में विभागाध्यक्षों के एवं व्यक्तिगत लंबित पड़े असमायोजित अग्रिम को समायोजित करने के भरपूर प्रयास किए गए हैं और अधिकतर असमायोजित अग्रिम समायोजित किए जा चुके हैं।

७.संकाय सदस्यों द्वारा अर्जित पुरस्कार, अध्येतावृत्ति, विशिष्टताएँ (अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय) एवं पेटेन्ट

पुरस्कार

पुरस्कारों का नाम व अधिनिर्णय प्रधिकारी	विभाग एवं प्राप्तकर्ता
लाईफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, बायो स्पेक्ट्रम अवार्ड्स, २०११	डा. लालजी सिंह, कुलपति, का. हि. वि. वि.
दुग्ध तकनीकी में विशेष योगदान के लिए भूमि निर्माण पुरस्कार, भूमि निर्माण, भोपाल, मध्यप्रदेश (२०११)	डॉ. डी. सी. राय पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग
एक्रोलॉजी में योगदान के लिए आजीवन उपब्ध पुरस्कार, एक्रोलॉजी पर अर्न्तराष्ट्रीय काग्रेस, टेलर एण्ड फ्रान्सीस ग्रुफ, लन्दन	प्रो. जनार्दन सिंह कीट एवं कृषि जन्तु विज्ञान विभाग
विशेष विज्ञान पुरस्कार, सोसाइटी फार रिसर्च डब्लपमेंट	प्रो. एच बी सिंह कवक एवं पादप रोग विभाग
प्रो० पंचानन महेश्वरी मेडल, भारतीय औद्यानिक सोसाइटी	प्रो. एच बी सिंह कवक एवं पादप रोग विभाग
व्यक्तिगत उपलब्धियाँ और बौद्धिक उत्कृष्ठता और राष्ट्रीय विकास पर आयोजित सेमीनार में राष्ट्रीय शिक्षा सम्मान पुरस्कार और गोल्ड मेडल, उद्योग और बौद्धिक विकास भारतीय सोसाइटी, ४ नवम्बर २०११, नई दिल्ली	प्रो. बी बोस पादप कार्यिकी विभाग
खाद्य जैव तकनीकी में उत्कृष्ठता के लिए सम्मान, सोसायटी ऑफ एप्लाइड बायो टेक्निोलॉजी	डॉ. आलोक झा खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
एम.एन.ए.एम.एस., राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान अकादमी	डॉ. रोयना सिंह, एनाटमी विभाग
एफ.ए.एम.एस., राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान अकादमी	प्रो. एम.के. अग्रवाल कर्ण नासा कण्ठ विभाग
एफ ए ए डी वी, एशियन एकेडमी ऑफ डर्माटोलॉजी एण्ड वेनरोलॉजी (एएडीवी)	प्रो. एस. एस. पाण्डेय त्वचा एवं रति रोग विभाग
क्रियाकलाप के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि के लिये (भारत विद्या शिरोमणि पुरस्कार), भारतीय सॉलिडरिटी कौंसिल, नई दिल्ली	प्रो. एस. के. सिंह, विभागाध्यक्ष एवं संकाय प्रमुख, प्रबन्धशास्त्र संकाय के लिये पुरस्कार
प्रबन्ध शिक्षा में योगदान के लिये राष्ट्रीय विद्या गौरव गोल्ड मेडल, अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा एवं प्रबन्धन संस्थान, दिल्ली	प्रो. एस. के. सिंह, विभागाध्यक्ष एवं संकाय प्रमुख, प्रबन्धशास्त्र संकाय के लिये पुरस्कार
प्रबन्ध शिक्षा के लिये एशिया प्रशान्त अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार, ग्लोबल एचिवर्स, दिल्ली	प्रो. एस. के. सिंह, विभागाध्यक्ष एवं संकाय प्रमुख, प्रबन्धशास्त्र संकाय के लिये पुरस्कार
अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय में सर्वश्रेष्ठ शिक्षण निवेश के लिये डेवंग मेहता बी - स्कूल पुरस्कार २०११, बिजनेस स्कूल अफेयर्स, मुम्बई	प्रबन्धशास्त्र संकाय
अभिनव नेतृत्व पुरस्कार, डीएनए एवं स्टार्स ऑफ इण्डस्ट्री ग्रुप्स	प्रबन्धशास्त्र संकाय
इण्डियन सोलीडारिटि काउन्सिल अवार्ड, ज्वेल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, इण्डियन सोलीडारिटि काउन्सिल, नई दिल्ली,	डॉ. सरयू आर. सोन्नी गायन विभाग
राष्ट्रीय महिला रत्न, अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा प्रबन्ध संस्थान, नई दिल्ली	डॉ. सरयू आर. सोन्नी गायन विभाग
शिक्षा रत्न पुरस्कार, इण्डियन इण्टर्नल फ्रेंडशिप सोसाइटी, नई दिल्ली	डॉ. सरयू आर. सोन्नी गायन विभाग

ग्लोबल एचीवर्स अवार्ड, नई दिल्ली	डॉ. सरयू आर. सोनी गायन विभाग
विज्ञान शोध में विशिष्टता के लिये प्रो. सी. एन. रॉव शिक्षा फाउण्डेशन पुरस्कार, २०१२, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय	प्रो. ए. एम. कायस्थ जैव प्रौद्योगिकी स्कूल
विज्ञान शोध में विशिष्टता के लिये प्रो. सी. एन. रॉव शिक्षा फाउण्डेशन पुरस्कार, २०११, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय	प्रो. एल. सी. राय वनस्पति विज्ञान विभाग
प्रो. एस. बी. सक्सेना स्मृति पुरस्कार २०११, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली	प्रो. एल. सी. राय वनस्पति विज्ञान विभाग
शिक्षा रत्न पुरस्कार २०११, भारत अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता समाज, नई दिल्ली	प्रो. एल. सी. राय वनस्पति विज्ञान विभाग
डॉ. शोम स्मृति व्याख्यान पुरस्कार, भारतीय कवक विज्ञानी समाज, चेन्नई	डॉ. आर .एन. खरवार वनस्पति विज्ञान विभाग
प्रो. आर .सी. शाह स्मृति पुरस्कार, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ	डॉ. वी. के. तिवारी रसायन विज्ञान विभाग
इनरियमेन्ट फण्ड पुरस्कार, अमेरिकन भूगोल विज्ञानी संघ, वाशिंगटन (यू. एस. ए.)	डॉ. रवि एस. सिंह भूगोल विभाग
यू. जी. सी. - बीएसआर फैकल्टी पुरस्कार २०११ प्राप्त, यू. जी. सी.	प्रो. बी. एन. सिंह जीव विज्ञान विभाग
यू. जी. सी. - बीएसआर पुरस्कार २०११, भारतीय विज्ञान कांग्रेस	प्रो. सी. हल्दर जीव विज्ञान विभाग
ए. वी. हम्बल्टर इन्सटूमेन्ट सबवेन्सन पुरस्कार (तीसरा फेस) २०११, एवीएच फाउण्डेशन, जर्मनी	प्रो. सी. हल्दर जीव विज्ञान विभाग
आइफेक्स अवार्ड, ऑल इडिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट सोसाइटी, नई दिल्ली-२०११	श्री संजीव किशोर गौतम चित्रकला विभाग
अकादमी अवार्ड, २०१२, ललित कला अकादमी, लखनऊ	श्री संजीव किशोर गौतम चित्रकला विभाग
युवा अभियान्त्रिकी पुरस्कार, अभियांत्रिकी संस्थान (भारत)	डॉ. एस. के. पलई खनन अभियांत्रिकी विभाग
सर्वोत्तम पत्र, भारतीय भैषज्यिकी विज्ञान पत्रिका	डॉ. डी एन एस गौतम रस शास्त्र, रा. गॉ. द. प.
तत्त्वमीमांसा अनुभाग में सर्वोत्तम पत्र पर (डॉ. विजयश्री स्मृति युवा पुरस्कार), अखिल भारतीय बरशन परिषद	डॉ. राजेश कुमार चौरसिया, दर्शनशास्त्र, वसन्त महिला महाविद्यालय
विद्या श्री पुरस्कार, विद्या श्री धर्मार्थ न्यास, वाराणसी	डॉ. कमला पाण्डेय वसन्त कन्या महाविद्यालय
ग्रीन टैलेन्ट एवार्ड २०११ - सम्पोष्यता के क्षेत्र में कार्य के लिये युवा वैज्ञानिक एवार्ड, फेडेरल मिनिस्ट्री फॉर एजुकेशन एण्ड रिसर्च (बीएमबीएफ), जर्मनी सरकार, जर्मनी	डॉ. राजीव पी. सिंह पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास संस्थान
व्यास पुरस्कार, कालिदास अकादमी, उज्जैन,, मध्य प्रदेश	प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्रा वैदिक दर्शन विभाग
न्याय भारती एवार्ड, महर्षि व्यासदेव राष्ट्रीय शोध संस्थान, राउरकेला, उड़ीसा	डॉ. धनंजय कुमार पाण्डेय वैदिक दर्शन विभाग
विवेकानन्द एवार्ड, असम बंगाल तन्त्र समिति, पश्चिम बंगाल	प्रो. के. झा धर्मागम विभाग
विवेकानन्द एवार्ड, असम बंगाल तन्त्र समिति, पश्चिमी बंगाल	डॉ. एस.पी. पाण्डेय धर्मागम विभाग

शिक्षा रत्न पुरस्कार २०११, भारत अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता समाज, नई दिल्ली द्वारा २६ मई, २०११ को प्राप्त	प्रो. सुरेन्द्र कुमार रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
भारत ज्योति एवार्ड २०११, भारत अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता समाज, नई दिल्ली द्वारा ४ मार्च, २०११ को प्राप्त	प्रो. सुरेन्द्र कुमार रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
राजीव गांधी एक्सीलेन्स एवार्ड २०११, भारत अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता समाज, नई दिल्ली द्वारा २६ अगस्त, २०११ को प्राप्त	प्रो. सुरेन्द्र कुमार रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
उत्कृष्ट शिक्षाविशारद एवार्ड २०११, अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा एवं प्रबन्धन संस्थान, नई दिल्ली द्वारा १० सितम्बर, २०११ को प्राप्त	प्रो. सुरेन्द्र कुमार रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
विद्या रत्न स्वर्ण पदक पुरस्कार २०११ भारतीय सॉलिडेरिटी कौंसिल, नई दिल्ली द्वारा ३० नवम्बर २०११ को प्राप्त	प्रो. सुरेन्द्र कुमार रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
राजीव गाँधी शिक्षा विशिष्टता पुरस्कार २०११, अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा एवं प्रबन्धन संस्थान, नई दिल्ली द्वारा ३० नवम्बर २०११ को प्राप्त	प्रो. सुरेन्द्र कुमार रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
इंदिरा गाँधी विद्या गौरव पुरस्कार २०१२ भारतीय सालिडेरीटी कौंसिल, नई दिल्ली द्वारा ३१ जनवरी २०१२ को प्राप्त	प्रो. सुरेन्द्र कुमार रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
भारत रत्न पुरस्कार २०१२, स्वास्थ्य एवं शिक्षा विकास संघ, नई दिल्ली द्वारा प्राप्त	प्रो. सुरेन्द्र कुमार रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन के लिये आईटी, बी.एच.यू. ग्लोबल एलुमनी - २०११ (नगद रू. ५००० एवं प्रमाण पत्र)	प्रो. राम प्रसाद रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन के लिये आई टी, बी.एच.यू. ग्लोबल एलुमनी २०११ (नगद रू. ५००० एवं प्रमाणपत्र)	डॉ. आर.एस. सिंह रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
सॉलिड वेस्ट मैनेजमेन्ट पर दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ९ से ११ नवम्बर, २०११ के मुक्त श्रेणी में तकनीकी पत्र प्रस्तुतीकरण के लिए विशिष्टता पुरस्कार, जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता, भारत	प्रो. प्रभात कुमार सिंह सिविल अभियांत्रिकी विभाग
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में पद्धतियों एवं प्रतिमानों पर दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन १९ से २० नवम्बर २०११, जयपुर, राजस्थान, भारत, (सर्वोत्कृष्ट पत्र)	डॉ. पी. आर .मैती सिविल अभियांत्रिकी विभाग
भारत का सर्वोत्तम नागरिक २०११, इन्टरने शनल पब्लिशिंग हाउस	डॉ. पी. आर. मैती सिविल अभियांत्रिकी विभाग
आईईआई युवा अभियन्ता पुरस्कार -२०११-१२, अभियंता संस्थान (भारत), कोलकाता द्वारा धातुकीय एवं वस्तुपरक अभियांत्रिकी में	डॉ. के चट्टोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
युवा अभियन्ता पुरस्कार, अभियन्ता संस्थान (भारत)	डॉ. एस. के. पलेई खनन अभियांत्रिकी विभाग
२०११ सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन पुरस्कार, आई टी, बीएचयू, ग्लोबल अलुमनी एसोशिएसन	प्रो. बी. मिश्रा भैषज्यिकी विभाग
२०१२ सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन पुरस्कार, आईटी, बीएचयू, ग्लोबल अलुमनी एसोि शएसन	प्रो. बी. मिश्रा भैषज्यिकी विभाग
आईडीएमए पुरस्कार, इण्डियन ड्रग मैन्युफैक्चर्स एसोशिएसन	प्रो. बी. मिश्रा भैषज्यिकी विभाग
सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन पुरस्कार - २०११, आईटी, बी.एच.यू. ग्लोबल अलुमनी एसोशिएसन	प्रो. एम.ए. कुरैशी प्रयुक्त रसायन विभाग
सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन पुरस्कार -२०१२, आईटी, बी.एच.यू. ग्लोबल अलुमनी एसोशिएसन	प्रो. एम.ए. कुरैशी प्रयुक्त रसायन विभाग
इलिनुयस युर्निवसिटी में कार्य के लिये, आईएसएन - सीएईएन एवार्ड, यूएसए	श्री पल्लव भट्टाचार्य जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी स्कूल
आउटस्टैण्डिंग एवार्ड (मोडेक्स-२०११), अन्तर्राष्ट्रीय न्यूरोकेमेस्ट्र समाज, आई.टी., बी.एच.यू.	श्री पल्लव भट्टाचार्य जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी स्कूल

चयनित अध्येता

चयनकर्ता प्राधिकारी का नामप्राप्तकर्ता एवं विभाग	
फेलो, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी	प्रो. पी. जैन प्लास्टिक सर्जरी विभाग
विजिटिंग फेलो, रॉयल कॉलेज ऑफ पेडियाट्रिक्स एण्ड चाइल्ड हेल्थ, लन्दन	डॉ. श्रीपर्णा बसु बालरोग विभाग
फुलब्राइट वरिष्ठ शोध अध्येता, यूएसए. २०११-२०१२ अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय स्कालर्स कौंसिल, यू. एस. राज्य विभाग, यू. एस. ए.	डॉ. सिद्धार्थ सिंह पालि एवं बौद्ध अध्ययन विभाग
अध्येता, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, २०१२ नई दिल्ली	प्रो. एल.सी. राय वनस्पति विज्ञान विभाग
चयनित अध्येता, भारतीय फिटोपैथोलॉजिकल सोसायटी, नई दिल्ली	प्रो. एन.के. दूबे वनस्पति विज्ञान विभाग
अध्येता, एम एस आई, एफ एम एस आई २०११, भारतीय कवक विज्ञान समाज, चेन्नई	डॉ. आर.एन. खरवार वनस्पति विज्ञान विभाग
अध्येता, एकेडमिया एम्ब्रोसियाना, इटली	प्रो. राना पी.बी. सिंह भूगोल विभाग
आन्ध्र प्रदेश विज्ञान अकादमी फेलो, आन्ध्र प्रदेश विज्ञान अकादमी, आन्ध्र प्रदेश सरकार	डॉ. एन.वी.सी. राव भू विज्ञान विभाग
अध्येता, रॉयल सांख्यिकी समाज, रॉयल सांख्यिकी समाज	प्रो. एस. के. उपाध्याय सांख्यिकी विभाग
इन्सा का चयनित अध्येता नई दिल्ली, इन्सा	प्रो. के.पी. ज्वॉय जीव विज्ञान विभाग
अध्येता, रॉयल सांख्यिकी समाज (एफएसएस)	प्रो. एस.के. उपाध्याय डीएसटी - सीआईएमएस एवं सांख्यिकी विभाग
एपीएएन इण्डियन फेलो, एशिया पेसिफिक एडवान्स्ड नेटवर्किंग एण्ड इआरएनईटी इण्डिया	प्रो. बी. मिश्रा भैषज्यिकी विभाग

अध्येतावृत्तियाँ/ एसोसियेटशिप/ प्रायोजनन

अध्यंतावृत्ति का नाम प्राप्तकर्ता एवं विभाग	
फेस्टा स्कॉलरशिप	डॉ. एस.के. भारतीय सामान्य शल्य विभाग
फेस्टा स्कॉलरशिप	डॉ. आर.एन. मीना सामान्य शल्य विभाग
मेन्टर, डा. डी.एस. कोठारी फेलोशिप (यू.सी.जी.)	प्रो. एच.एस. शुक्ला सर्जिकल आंकोलॉजी विभाग
सेन्ट जूडे फोरम ट्रैवेलिंग फेलोशिप, अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्क कैंसर उपचार एवं शोध, ब्रसेल्स, बेल्जियम	डॉ. विनीता गुप्ता बालरोग विभाग
भारतीय बायव्ड शोध समाज का फेलोशिप, भारतीय बायव्ड शोध समाज	प्रो. आर.एस. दूबे जैव रसायन विभाग
इन्सा - जेएसपी एस एक्सचेंज फेलोशिप, इन्सा-जे.एस.पी.एस.	प्रो.ए.के. रॉय वनस्पति विज्ञान विभाग
ए.वी. हम्बोल्ट रीइन्ट्री फेलोशिप २०११, ए.वी.एच. फाउण्डेशन, जर्मनी	प्रो. ए. कृष्णा जीव विज्ञान विभाग

यू.जी.सी. - बीएसआर फेलोशिप, यू.जी.सी., नई दिल्ली	प्रो. अशोक कुमार जैव प्रौद्योगिकी स्कूल
चार्ल्स वालैक फेलोशिप २०१२, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, यू.के.	डॉ. तेज प्रताप सिंह राजनीति विज्ञान विभाग
सुश्री अगाथा हरिसन संस्मृति अध्येतावृत्ति, यू.के., २०११ -१२, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली	डॉ. सोनाली सिंह राजनीति विज्ञान विभाग
बॉयस्कास्ट फेलोशिप, २०११, डीएसटी	प्रो. एस. जित विद्युतकीय अभियांत्रिकी विभाग
चयनित अध्येतावृत्ति, भारतीय इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी सोसायटी, इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी सोसायटी	प्रो. जी.वी. एस. शास्त्री धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
(क) टाटा स्टील-टीआर अनाथरमन शिक्षा एवं शोध फाउण्डेशन फैकल्टी फेलोशिप (२०११)	डॉ. आर. मन्ना धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग

सम्मान/श्रेष्ठता

सम्मान/श्रेष्ठता की प्रकृति प्राप्तकर्ता एवं विभाग	
*** व्यावसयिक संगठनों के चयनित अध्यक्ष/उपाध्यक्ष/सचिव/मानद कोषाध्यक्ष**	
आजीवन प्रवक्ता एवं सम्मान, राष्ट्रीय उद्यान विज्ञान एवं शोध और विकास फाउन्डेशन, कानपुर	डॉ कार्तिका श्रीवास्तव आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग
चयनित अध्यक्ष, भारतीय मनोरोग संस्था	प्रो. इन्दिरा शर्मा मनोरोग विभाग
सम्मान, रोटरी क्लब, त्रिवेणी महोत्सव	प्रो. शारदा वेलेंकर गायन विभाग
संयुक्त सचिव, रसायन शोध संस्था	डॉ. डी. एस. पाण्डेय रसायन विभाग विभाग
चयनित अध्यक्ष, भारतीय तुलनात्मक अन्त: स्त्राव विज्ञान समाज (२०११-१३), आई एस सी ई	प्रो. सी. एम. चतुर्वेदी जीव विज्ञान विभाग
अध्यक्ष, एशिया ओसिनिया सोसायटी फॉर फिज़ियोलॉजी (२००८-२०११), एओएस पी	प्रो. सी. हल्दर जीव विज्ञान विभाग
उपाध्यक्ष, पुनरुत्पादन जीव विज्ञान एवं तुलनात्मक अन्त:स्त्रावी समाज, यू.जी.सी.	प्रो. सी. हल्दर जीव विज्ञान विभाग
चयनित संयुक्त सचिव, भारतीय कोशिका जीव समाज, आई.एस.सी.बी.	प्रो. एम. विनायक जीव विज्ञान विभाग
कोषाध्यक्ष, आई.एस.सी.ई., आई.एस.सी.ई.	प्रो. बी. लाल जीव विज्ञान विभाग
कोषाध्यक्ष, जेरन्टोलॉजी संघ सदस्य, पी.जी.बोर्ड ऑफ स्टडी, नेहू, एजीआई-नेहू	प्रो. एस. प्रसाद जीव विज्ञान विभाग
वाक- वाक्यम् सम्मान, वाकवाक्यम् संस्कृत संस्थान, वाराणसी	डॉ. कमला पाण्डेय वसन्त कन्या महाविद्यालय
विश्व भारती सम्मान, विश्वभारती अनुसंधान परिषद- सन्त रविदास नगर, ज्ञानपुर, भदोही	डॉ. कमला पाण्डेय वसन्त कन्य महाविद्यालय
मैन ऑफ द ईयर २०१२, ए बी आई	प्रो. एस. जित विद्युतकीय अभियांत्रिकी विभाग
अध्यक्ष, राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, उत्तर प्रदे श एवं उत्तराखंड	डॉ. डी.एन. सिंह दयानन्द महाविद्यालय, वाराणसी

सभापति/उप-सभापति

सभापति/उप-सभापति प्राप्तकर्ता एवं विभाग	
२०१३ में आयोजित कीट विज्ञान पर ७वें एशिया प्रशान्त सम्मेलन के चेयर मैन, कीट विज्ञान का एशिया प्रशान्त संगठन	प्रो. एन. एन. सिंह कीट एवं कृषि जन्तु विज्ञान विभाग
संस्कृत एवं बौद्ध अध्ययन का अल्पावधि चेयर, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली	प्रो. प्रद्युम्न दूबे पाली एवं बौद्ध अध्ययन विभाग
रिप्रोडक्टिव फिज़ियोलॉजी ऑफ फिश पर ९वें अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद के सभापति, २०११, आईएसआरपीएफ, कोचीन	प्रो. के.पी. ज्वॉय जीव विज्ञान विभाग
चेयर, लाइब्रेरी कमेटी, शास्त्री इण्डो-कैनेडियन संस्थान, नई दिल्ली	प्रो. रजनी रंजन झा राजनीति विज्ञान विभाग
सभापति, वाराणसी चैप्टर, भारतीय धातु संस्थान, कोलकाता (२०११-१२)	प्रो. एनके मुखोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सभापति, अन्वेषण – ११	प्रो. सुनील मोहन धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सह-सभापति, अन्वेषण-११	डॉ. के.के. सिंह धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग

राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय समितियों के सदस्य

राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय समितियों के सदस्य	प्राप्तकर्ता एवं विभाग
चयनित सेक्शनल समिति सदस्य (उत्तरी क्षेत्र) : पादप विज्ञान अनुभाग, १००वाँ भारतीय विज्ञान कांग्रेस २०१२-१३	डॉ. पद्मनाभ द्विवेदी पादप कार्यिकी विभाग
निदेशक, शिकायत समिति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार	प्रो. टी.एम. महापात्रा सूक्ष्म जीविकी विभाग
भारतीय समुद्री शोध पर अर्थविज्ञान मंत्रालय की बैठक के राष्ट्रीय समिति सदस्य, अर्थ विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार	डॉ. एन.वी.सी. राव भू विज्ञान विभाग
न्यूरोइण्डोक्रिनोलॉजी के अन्तर्राष्ट्रीय परिषद्, के सदस्य	प्रो. के.पी. ज्वॉय जीव विज्ञान विभाग
सदस्य, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, इलाहाबाद, एनएएसआई	प्रो. सी. हल्दर जीव विज्ञान विभाग
कार्यकारिणी परिषद् के सदस्य के रूप में चयन, भारतीय कोशिका जीव समाज २०११-२०१३, आईएससीबी	प्रो. एम. विनायक जीव विज्ञान विभाग
सदस्य, शोध सलाहकारी समिति, राष्ट्रीय मत्स्य प्रजनन शोध ब्यूरो, लखनऊ, आईसीएआर	प्रो. बी. लाल जीव विज्ञान विभाग
सदस्य, यूजीसी नेट राष्ट्रीय समीक्षक समिति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली	प्रो. चन्द्रकला पाडिया राजनीति विज्ञान विभाग
शासक मंडल के सदस्य के रूप में नामांकन हिमालय हेरिटेज़ स्कूल, जीरो, अरुणाचल प्रदेश	प्रो. चन्द्रकला पाडिया राजनीति विज्ञान विभाग
उच्चतर शिक्षा में महिला प्रबन्धकों की कार्य क्षमता विकास के लिये यूजीसी राष्ट्रीय परामर्शदाता समिति की सदस्य	प्रो. चन्द्रकला पाडिया राजनीति विज्ञान विभाग
चन्द्र भानु गुप्त चेयर के सलाहकार समिति का सदस्य, लखनऊ विश्वविद्यालय	प्रो. रजनी रंजन झा राजनीति विज्ञान विभाग
सम्पादन मण्डल सदस्य - बायोमॉस एवं बायोएनर्जी इल्सिवियर पब्लिशर्स -(२०१२), इल्सिवियर पब्लिशर्स	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास संस्थान
अमेरिकन केमिकल सोसायटी मेम्बरशिप (२०११) के लिये नामांकन (२०११)	डॉ. देबाशीष खान यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग
राष्ट्रीय सलाहकार समिति सदस्य, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी में नैनो सामग्रियों पर राष्ट्रीय परिसंवाद २०११, इलाहाबाद	प्रो. वकील सिंह धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग

राष्ट्रीय सलाहकार समिति सदस्य, क्रीप फ्रेटिगु एवं क्रीप फेटिगु इन्टरेक्शन पर ६ठाँ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, २२-२५ जनवरी २०१२, कलपक्कम, भारत	प्रो. वकील सिंह धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, कार्यक्रम सलाहकार समिति, खनन, मिनरल एवं डीएसटी के वस्तुपरक ग्रुप	प्रो. एस. एन. ओझा धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, राष्ट्रीय धातुकीय प्रयोगशाला अनुंसंधान परिषद् (सी एस आई आर), जमशेदपुर	प्रो. एस. एन. ओझा धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
एमएचआरडी एपाइन्टेड-सदस्य, शासक मण्डल, एन आई एफ एफ टी राँची	प्रो. एस. एन. ओझा धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, आई पी आर - आई आई टी सलाहकार समिति, फ्यूज़न रिएक्टर के लिये वस्तुपरक पर कानपुर प्रोजेक्ट	प्रो. एस.एन. ओझा धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, सलाहकार समिति, बंगाल अभियांत्रिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय शिवपुर पं. बंगाल द्वारा आयोजित एनर्जी एवं पर्यावरण विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन दिसम्बर ७ से ८, २०१२	प्रो. टी.आर. मानखण्ड धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, अप्रियाडिक कमीशन, (आईयूक्र) (२०११-१४)	प्रो. एनके मुखोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल, अन्तर्राष्ट्रीय क्वैसिक्रिस्टल्स सम्मेलन, (आईसीक्यू १२) पोलैण्ड (२०१०-१३)	प्रो. एनके मुखोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार समिति, मेकेनोकेमेस्ट्री एवं मैकेनिकल एलोइंग (२००३-११)	प्रो. एनके मुखोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, (क) शिक्षा एवं परीक्षा समिति (ख) प्रकाशन समिति, आईआईएम, कोलकाता (२०११-१४)	प्रो. एनके मुखोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, धातु एवं वस्तुपरक मण्डल, अभियन्ता संस्थान, (भारत), कोलकाता	प्रो. एनके मुखोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, एम एण्ड ए पैनल, राष्ट्रीय शोध मण्डल (एन आर बी)	प्रो. एनके मुखोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, वस्तुपरक संभाग, एयरोनौटिकल रिसर्च एण्ड डेवलेपमेंन्ट बोर्ड (एआरडीबी)	प्रो. एनके मुखोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, ब्यूरो ऑफ इण्डियन स्टैण्डर्डस	प्रो. सुनील मोहन धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
आईआईएम के आजीवन सदस्य, कोलकाता	प्रो. (श्रीमती) एन.सी. शान्ति श्रीनिवास धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
फेल्युर एनालिसिस समाज के आजीवन सदस्य	प्रो. (श्रीमती) एन.सी. शान्ति श्रीनिवास धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, अभियन्ता संस्थान, भारत	डॉ. सी.के. बेहरा धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
आजीवन सदस्य, आईआईएम, कोलकाता	डॉ. सी.के. बेहरा धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप सोसायटी ऑफ इण्डिया	डॉ. आर. मन्ना धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
(क) आजीवन सदस्य, भारतीय धातु संस्थान (ख) सदस्य, ग्लिबल यूज़र फोरम ऑफ इण्डिया	डॉ. आर. मन्ना धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, विद्वत परिषद् कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा, बिहार	डॉ. विक्रमादित्य राय दयानन्द महाविद्यालय, वाराणसी

शोध पत्रिकाओं के सम्पादक/समीक्षक

शोध पत्रिकाओं के सम्पादक/समीक्षक	प्राप्तकर्ता एवं विभाग
विशेषज्ञ समीक्षक एवं समन्वयक, (१) आइसीएआर माइक्रोबॉयलॉजी पैनल (२) आर्क. माइक्रोबॉयलॉजी (३) आस्ट्रेलिया जर्नल स्वायल माइक्रोबॉयलॉजी (४) आर्क. वातावरण कन्टेम टॉक्सीकोल (५) इन्सा टाइप बी (जीव विज्ञान जर्नल)	प्रो. ए.वैशम्पायन आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग
समीक्षक एवं परामर्श सम्पादक, एक्टा फिजियोलॉजी प्लेनटेरम (पोलैंड), फाइटो पैथोलॉजी (यू.एस.ए), इण्डियन जर्नल ऑफ फिजीयोलॉजी, लेग्यूम शोध, फ्रान्टीयर्स ऑफ एग्रीकल्चर इन चाइना, अफ्रीकन जर्नल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, रसियन जर्नल ऑफ प्लांट फिज़ियोलॉजी	प्रो. ए. हेमन्त रंजन पादप कार्यिकी विभाग
संयुक्त सम्पादक, जर्नल ऑफ फंक्शनल एण्ड इन्वॉयरमेंटल बॉटनी (ए एम यू, अलीगढ़)	डॉ. पद्मनाभ द्विवेदी पादप कार्यिकी विभाग
तकनीकी सम्पादक, इण्टर नेशनल जनरल ऑफ एग्रीकल्चर, पर्यावरण एवं जैव प्रौद्योगिकी (नई दिल्ली पब्लिशर्स)	डॉ. पद्मनाभ द्विवेदी पादप कार्यिकी विभाग
सम्पादन मण्डल, इण्टरनेशनल जर्नल फॉर वूमेन एण्ड जेण्डर रिसर्च, झांसी	प्रो. चन्द्रकला पाडिया राजनीति विज्ञान विभाग
सम्पादन मण्डल, फेमिलीज़, इण्डो-यूएस जर्नल ऑफ रिप्रेजेन्टेशन, कोलकाता	प्रो. चन्द्रकला पाडिया राजनीति विज्ञान विभाग
सम्पादक, नारी दर्पण, समाचार पत्र	प्रो. चन्द्रकला पाडिया राजनीति विज्ञान विभाग
धर्मशास्त्र में महिलाओं पर एक पुस्तक का सम्पादन: ''फेनोमेनोलॉजिकल एण्ड क्रिटिकल एनालिसिस'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर	प्रो. चन्द्रकला पाडिया राजनीति विज्ञान विभाग
सम्पादक, इण्डियन जर्नल ऑफ नेपलीज़ स्टडीज़	प्रो. अंजू शरण उपाध्याय राजनीति विज्ञान विभाग
सदस्य, प्रज्ञा सम्पादन मण्डल, बी.एच.यू. मैगज़ीन	प्रो. आर.पी. सिंह राजनीति विज्ञान विभाग
सदस्य, नगर छात्र निकाय का सम्पादन मण्डल, का.हि.वि.वि.	प्रो. आर.पी. सिंह राजनीति विज्ञान विभाग
सह सम्पादक - सम्पोष्य विकास के लिये शस्य विज्ञान, स्प्रिंगर पब्लिशर्स (२०११), स्प्रिंगर पब्लिशर्स	डॉ. पी.सी. अभिलाष पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास संस्थान
राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जर्नलों के समीक्षक : अन्तर्राष्ट्रीय फतिगु जर्नल, धातुकीय एव वस्तुपरक ट्रान्सेक्शन ए, वस्तुपरक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी ए, वस्तुपरक विज्ञान एवं आईआईएम के ट्रांसेक्शन्स बुलेटिन	प्रो. वकील सिंह धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, सम्पादन समिति, ट्रान्स भारतीय धातु संस्थान	प्रो. एस.एन. ओझा धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
सदस्य, सम्पादन मण्डल, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ नॉनफेरस मेटल्स, यूएसए	प्रो. टी.आर. मानखण्ड धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
की रीडर (सम्पादक मण्डल) धातुकीय एवं वस्तुपरक ट्रान्सेक्शन्स ए (यूएसए) (२००७-१२)	प्रो. एन.के. मुखोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
रिपोर्टर, धातु समाचार, भारतीय धातु संस्थान	प्रो. (श्रीमती) एन.सी. शान्ति श्रीनिवास धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
पत्रिकाओं के समीक्षक ''जर्नल ऑफ फिजिक्स एण्ड केमेस्ट्री ऑफ सॉलिड्स तथा मैटेरियल्स साइंस एण्ड इन्जिनियरिंग बी''	प्रो. एन. के. प्रसाद धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग

अन्य विशेष सम्मान

अन्य विशेष सम्मान प्राप्तकर्ता एवं विभाग	
विज़िटिंग प्रोफेसर, खाद्य विज्ञान विभाग, कार्नेल विश्वविद्यालय, इथाका, यू.एस.ए एवं खाद्य विज्ञान विभाग, जार्जिया विश्वविद्यालय, एथेन्स, यू.एस.ए	डॉ. आलोक झा खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
विजिटिंग प्रोफेसर, हैदराबाद विश्वविद्यालय	डॉ. के.आर.सी. रेड्डी, रस शास्त्र विभाग
अन्तर्राष्ट्रीय गेस्ट स्कॉलर, अमेरिकन कॉलेज ऑफ सर्जन्स	डॉ. सोम प्रकाश बसु जनरल सर्जरी विभाग
डब्लू.एच.ओ. सीडीसी कन्सल्टैन्ट, डब्लू.एच.ओ.	प्रो. टी.एम. महापात्रा माइक्रोबायोलॉजी विभाग
तुलनात्मक अन्त:स्राव विज्ञान एवं स्ट्रेस फिजियोलॉजी पर अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद में एक वैज्ञानिक सत्र के अध्यक्ष, आईआईएफएस, नई दिल्ली	प्रो. सी.एम. चतुर्वेदी जीव विज्ञान विभाग
७वें एओएससीई कांग्रेस २०१२ के एक वैज्ञानिक सत्र के अध्यक्ष, एओएससीई कांग्रेस, कुआलालम्पुर	प्रो. के. पी. ज्वॉय जीव विज्ञान विभाग
प्लेटिनम जुबली लेक्चर, ९९वां भारतीय विज्ञान कांग्रेस	प्रो. सी. हल्दर जीव विज्ञान विभाग
परिवार नियोजन के लिये योजना पर महत्व के साथ पुन: प्रवर्धक स्वास्थ्य पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक वैज्ञानिक सत्र की अध्यक्षता	प्रो. एस.के. सिंह जीव विज्ञान विभाग
चीटियों पर ८वां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में कीनोट लेक्चर देने के लिये आमन्त्रित, आईएनएआर	प्रो. एन.के. रस्तोगी जीव विज्ञान विभाग
तुलनात्मक अन्त:स्राव विज्ञान एवं स्ट्रेस फिज़ियोलॉजी पर अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद में एक वैज्ञानिक सत्र के अध्यक्ष, नई दिल्ली	प्रो. बी. लाल जीव विज्ञान विभाग
सेंट एन्ड्रीव वि श्वविद्यालय ब्रिटिश कौंसिल एवं डण्डी विश्वविद्यालय, स्कॉटलैण्ड द्वारा प्रवर्तित प्रयाग माघ मेला अध्ययन पर एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट के लिये १ से १४ जून २०११ तक शोध विचार विमर्श के लिये आमंत्रित।	प्रो. आर.सी. मिश्रा मनोविज्ञान विभाग
वैल्यू ऑफ चिल्ड्रेन एण्ड इन्टर जेनेरेसनल रिलेशन्स पर सम्मेलन में स्पीकर एवं डिस्कसेन्ट के लिये २९ से ३१, मार्च, २०१२ तक कोस्टान्ज विश्वविद्यालय में आमन्त्रित।	प्रो. आर.सी. मिश्रा मनोविज्ञान विभाग
एडवांस रिसर्च ट्रेनिंग स्कीम के लिये चयनित, अन्तर्राष्ट्रीय प्रयुक्त मनोविज्ञान संघ, केप टाउन, दक्षिणी अफ्रीका	डॉ. संदीप कुमार मनोविज्ञान विभाग
इमर्जिंग साइकोलॉजिस्ट प्रोग्राम के लिये चयनित, अन्तर्राष्ट्रीय मनोविज्ञान विज्ञान यूनियन, केप टाउन, दक्षिण अफ्रीका	डॉ. तुषार सिंह मनोविज्ञान विभाग
यू.जी.सी., नई दिल्ली द्वारा प्रवर्तित बलदेव पी.जी. कालेज, बड़ागाँव, वाराणसी द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में १० दिसम्बर २०११ को दानशील मूल्यों एवं मानव अधिकारों पर व्याख्यान	प्रो. आर.पी. पाठक अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
गाँधीवादी सोच एवं शान्ति अध्ययन संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा आयोजित नेहरूयन पर्सपेक्टिव एण्ड कन्टेम्पोरेरी चैलेन्जेज पर ८ फरवरी २०१२ को राष्ट्रीय संगोष्ठी में एक संदर्भ व्यक्ति के रूप में सहायता।	प्रो. आर.पी. पाठक अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
आईसीसीआर के इण्डिया चेयर प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति का प्रस्ताव, विश्व अर्थव्यवस्था एवं कूटनीति विश्वविद्यालय, ताशकेन्ट	डॉ. संजय श्रीवास्तव राजनीति विज्ञान विभाग
आईसीएसएसआर सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम, चाइनीज़ सामाजिक विज्ञान अकादमी, बीजिंग, चीन	डॉ. केशव मिश्रा इतिहास विभाग
यूनेस्को चेयर, यूनेस्को	प्रो. प्रियन्कर उपाध्याय मालवीय शान्ति अनुसंधान केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय
सीनियर एसोसिएट (२०१२-२०१८) आईसीटीपी - इटली (यूनेस्को एवं आईएईए आरगेनाइजेशन)	डॉ. आर.के. मल्ल पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास संस्थान
डी.एन. अग्रवाल संस्मृति व्याख्यान दिये, भारतीय सिरेमिक समाज	प्रो. जी.एन. अग्रवाल सिरेमिक अभियांत्रिकी विभाग

मानद विज़िटिंग प्रोफेसर, सास्त्र विश्वविद्यालय, थन्जावर, तमिलनाडु	प्रो. सुरेन्द्र कुमार रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
टेक्नोलॉजी कमर्शियलाइज़ेशन के लिये इण्डो - यूएसाइंस फोरम का डीएसटी - लॉकहीड नामिनेशन, आईसी २ संस्थान, टेक्सास विश्वविद्यालय - आस्टिन, २०१२	प्रो. पी.के. मिश्रा रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
निदेशक, एनआईटी, कुरूक्षेत्र, एमएचआरडी	प्रो. आनन्द मोहन विद्युतकीय अभियांत्रिकी विभाग
निदेशक, एमएनएमआईटी, इलाहाबाद, एमएचआरडी	प्रो.पी. चक्रवर्ती विद्युतकीय अभियांत्रिकी विभाग
चौथा यूजीसी - टीईसी कॉनसारटियम एग्रीमेन्ट २०१० के अन्तर्गत ४ से २७ अगस्त २०११ तक विज़िटिंग फैकल्टी के रूप में नियुक्त एवं कार्य किया, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, यू.जी.सी., नई दिल्ली	डॉ. एस.के. शुक्ला यांत्रिकी अभियांत्रिकी
''न्यूक्लियर ग्राफ़िट कम्पोनेन्ट्स के लिए वेलबुल स्टेटिस्टीकल डिज़ाइन के अध्ययन'' पर संशोधित परियोजना प्रस्ताव अक्टूबर २०११ में प्रस्तुत किये, बी आर एन एस, डी ए ई, मुम्बई	डॉ. देबाशीष खाँन यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग
विश्व २०१२ (२९वां संस्करण) में मॉरक्यूइस हूज़ हू में विस्तत्रत बायोग्राफिकल सम्मिलित।	डॉ. देबाशीष खाँन यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग
क्री फेटिगु एवं क्रीप फेटिगु इन्टरेक शन पर ६ठां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, २२-२५ जनवरी २०१२, कलपक्कम, भारत में एक सत्र के सभापति	प्रो. वकील सिंह धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
एटीसीओएम - २०११ जुलाई में एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता एवं व्याख्यान के लिये आमन्त्रित, आरडीसीआईएस एसएआईएल राँची। सॉलिडिफिकेशन साइंस एण्ड प्रोसेसिंग पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के राष्ट्रीय सलाहकार समिति के सदस्य, भुवनेश्वर (आईसीएसएसपी–V), २०१२	प्रो. एस.एन. ओझा धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
छात्र सलाहकार, भारतीय धातु संस्थान, वाराणसी चैप्टर	प्रो. आर.के. मण्डल धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
आमंत्रित व्याख्यान, आईएससीए, भुवनेश्वर जनवरी ३ से ७, २०१२ (वस्तुपरक विज्ञान सेक्शन)	प्रो. आर.के. मण्डल धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
आईआईएम के एनएमडी - एटीएम में व्याख्यान के लिये आमन्त्रित, हैदराबाद, १३-१६, नवम्बर, २०११	प्रो. आर.के. मण्डल धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
भारतीय इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी समाज पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में व्याख्यान हेतु आमन्त्रित, हैदराबाद, ६ से ८ नवम्बर, २०११	प्रो. एन.के. मुखोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
अप्रियाडिक क्राइस्टाल पर आयोजित माइक्रोसिम्पोज़ियम, अन्तर्राष्ट्रीय क्राइस्टालोग्राफी यूनियन के अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में एक सत्र की अध्यक्षता, मैड्रिड, स्पेन, २२-३० अगस्त, २०११	प्रो. एन.के. मुखोपाध्याय धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
संदर्भ व्यक्ति, मॉडलिंग सिमुलेशन एण्ड डिज़ाइन ऑफ मैटेरियल्स में कार्यशाला, हैदराबाद विश्वविद्यालय	प्रो. बी.एन. शर्मा धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय में एक आमन्त्रित व्याख्यान दिये	प्रो. बी.एन. शर्मा धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग
शिक्षण प्रणाली अध्ययन एवं प्रो. एच.के.डी.एच. भदेशिया से अन्त:सम्बन्ध के लिये १ अक्टूबर से ३१ दिसम्बर २०११ तक कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय का भ्रमण	डॉ. आर. मन्ना धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग

पेटेन्ट

१.	इफेक्ट ऑफ सर्फेस नैनो किस्टलाइजेशन आन आशियोंइन्टीग्रेशन ऑफ सीपी -टाइटेनियम; इन्डियन पेटेन्ट एप्लीकेशन फाइल्ड ऑन २५.०५.२०११ एण्ड पब्लिशड इन जर्नल नं. ३३/२०११ आन १९.०८.२०११; प्रो. वकिल सिंह, डिपार्टमेंट ऑफ मेटालर्जीकल इंजिनियरिंग, आई. टी., बीएचयू. ।
२.	ए केमिकली स्टेन्डर्डाइज़्ड कम्पोजिशन कन्टेनिंग प्लांट एसेन्शियल ऑयल्स एफिकेशियस एस एन्टिफंग्ल, एफलेटाक्श िन सप्रेशर, इन्सेक्टीसाडल एण्ड एन्टिआक्सीडेन्ट; मोडिफाइड टाइटल: ए नोवल प्लान्ट एसेन्शीयल आयल सिनरजिस्टक कम्पोजिशन एण्ड इट्स प्रीपरेशन; इण्डियन पेटेन्ट एप्लिकशन फाइल्ड थ्रू टाइफेक, डीएसटी, न्यू डेल ही नं. २३३/डी इएल/ २०११ डेटेड ०१.०२.२०११; प्रो. एन. के. दूबे डिपार्टमेन्ट ऑफ बॉटनी, फेक्ल्टी ऑफ साइंस।
३.	इन्वेंशन आन एस्टेरेसी एण्ड पेपेवरी प्लांटस एक्सट्रेक्टस एस एफिसिएण्ट कोरोज़न इन हिबिटर्स, ० कैलशियम आयन – सेन्सर कम्पराइज़िंग आइनोफोर/कैरियर आयन – फ्रि पोलीइन्डोल – कैम्फर सल्फोनिक एसिड कम्पोजिट; इण्डियन पेटेन्ट एप्लिकेशन/ नेशनल पेटेन्ट फाइल्ड सीवीआर नं. ८३७८ डेटेड ०४.१०.२०१०; डॉ. राजीव प्रकाश, काआर्डिनेटर, स्कूल ऑफ मेटेरियल साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, आई. टी. बीएचयू. ।
४.	ए नोवल आर्किटेक्टर फार वेरी सेन्सेटीव प्रेशर सेन्सर; इण्डियन पेटेन्ट एप्लिकेशन नं. ६७/डी ईएल/२०११; डॉ. बी. एस. चौरसिया, गेस्ट फेक्ल्टी एण्ड पीएच. डी. स्कालर, डिर्पाटमेंट ऑफ इलेक्ट्रानिक्स इंजिनियरिंग, आई. टी. बीएचयू. ।
५.	नॉवल स्यूडोमोनास एरुजिनोसा बेक्टेरियोफेज़श एण्ड देयर यूसेज़ेज इन सेप्टीकिमिया; एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस – ड्राफ्ट पेटेन्ट इज इन प्रोसेस टू बी सेन्ट टू इक्जामिनर; प्रो. गोपाल नाथ, डिर्पाटमेंट ऑफ माइक्रोबायोलॉजी, आईएमएस., बीएचयू।
६.	थेरापेटीक यूजेज ऑफ पाइपर लांगम रुट पाउडर फार प्रिवेंशन एण्ड ट्रीटमेंट ऑफ माइल्ड इन्टरमिटेन्ट स्ट्रेस इन्डयूसिज़ साइकोपैथोलॉजी; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; डॉ. विकास कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर , डिर्पाटमेंट ऑफ फार्मास्यूटिक्स, आई. टी. बीएचयू. ।
७.	ए नॉवल पोली हर्बल प्रीप्रेशन फार द प्रीवेशन ऑफ एथरोस्क्लेरोसीस एण्ड हाइपर लिपिडेमिया; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; प्रो. यामिनि भूषण त्रिपाठी, डिर्पाटमेंट ऑफ मेडिसिनल केमिस्ट्री, आईएमएस., बीएचयू।
८.	नॉवल एण्टी – प्लेटलेट एण्ड एन्टीथ्रोम्बोटिक प्रोप्रटीज़ ऑफ नैनो सिलवर विद पोटेन्शियल थेरापेटीक एप्लिके शनस; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; प्रो. डी. दास, हेड, डिर्पाटमेंट ऑफ बायोकेमिस्ट्री, आईएमएस., बीएचयू।
९.	फेनोमेनन ऑफ ह्यूमिडिटी कन्ट्रोल्ड रिगेनिंग ऑफ मोबाइल आयोनिक चाज र्कैरियर्स इन स्टार्च बेस्ड इलेक्ट्रालाइट; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; डॉ. नीलम श्रीवास्तव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, डिर्पाटमेंट ऑफ फिजिक्स, महिला महाविद्यालय, बीएचयू।
१०.	डायग्नोसिस ऑफ इ ण्डियन विसेरल लिशमेनिएशिस (वीएल) बाइ न्यूक्लिक एसिड डिटेक्शन यूजिंग पीसीआर आइडेन्टीफिकेशन एण्ड करेक्टराइलेशन ऑफ एल. डोनोवानी स्पेसीफिक एण्टीजेन; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसे स; प्रो. श्याम सुन्दर, डिर्पाटमेंट ऑफ मेडिसिन, आईएमएस., बीएचयू।
११.	आइरन एन्यूमिना बेसड मेटल मैट्रीक्स कम्पोजिट मैटेरियल; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; प्रो. देवेन्द कुमार, डिर्पाटमेंट ॲ ॉफ सिरामिक इंजिनियरिंग, आई. टी., बीएचयू. ।
१२.	रिमूवल ऑफ आरसिनिक (iii) फ्रॉम वेस्ट वाटर यूज़िंग लेक्टोबेसिलस एसिडोफाइलस; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; डॉ. (मिसेज) आशा लता सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इन्वायरमेंन्टल साइंस, डिर्पाटमेंट ऑफ बाटना, फेक्ल्टी आफ साइंस, बीएचयू. ।
१३.	रियेक्टीव कॉम्पैटीबिलाइज़ेशन ऑफ पालिकार्बोनेट एण्ड पोलि (मिथाईल मेथाक्रा इलेट) विद नॉवल केटालिस्ट्स ($SnCl_2.2H_2O$, $[CH_3 (CH_2)_3CH(C_2H_5) COO]_3 Sn(CH_2)_3 CH_3$ } SC[{$CH_3 (CH_2)_3$ CH) C $_2H_5$) $COO]_2Sn$}:) एविडेन्स फॉर होमोजेनस ब्लेन्ड फॉरमेशन; मिसाइबल पोलिकार्बोनेट – पोलिक्राइलेटस ब्लेंड्स थ्रू रियेक्टीव एक्सट्रूज़न काम्पेटिबल ब्लेंड ऑफ पोलीकार्बोनेट विद ए क्राइलेट पॉलिमर; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; प्रो. धनन्जय पाण्डेय, स्कूल ऑफ मेटेरियल साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, आई. टी. बीएचयू. ।

१४.	पेंटेन्टींग ऑफ एन इनोवेटिव आइडिया इन द फिल्ड ऑफ फार्मास्यूटिकल इंजिनियरिंग; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; प्रो. संजय सिंह, डिर्पाटमेंट ऑफ फार्मास्यूटिक्स, आई. टी. बीएचयू.।
१५.	ए न्यूरल नेट इम्प्लिमेन्टेशन ऑफ एसपीसीए प्री -प्रोसेसर फॉर गैस/ओडोर क्लासिफिकेशन यूजिंग द रिसपोंसेस ऑफ थिक फिल्म गैस सेंन्सर एरे; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसे स; डॉ. एन. एस. राजपूत; डिर्पाटमेंट ऑफ इलेक्ट्रानिक्स इंजिनियरिंग, आई. टी. , बीएचयू.।
१६.	फार्मास्यूटिक्ल स्टडी एण्ड फार्माकोलाजीकल इवेल्यूयेशन ऑफ ब्राह्मी घृीता: ए प्री क्लीनीकल स्ट डी; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; डॉ. के. आर .सी. रेड्डी, ऐसोसिएट प्रोफेसर, डिर्पाटमेंट ऑफ रसशास्त्र, फेक्ल्टी ऑफ आयुर्वेदा, आई. एमएस. , बीएचयू.।
१७.	हियरिंग एड एलोंगविद वायरलेस डो रबेल वाईब्रेटर सिस्टम एण्ड इलेक्ट्रानिक डोरबेल वाईब्रेटर एण्ड इलेक्ट्रानिक टॉर्च लाइट फैसिलिटी; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; श्री सूदीप पौल, सिनियर रिसर्च फेलो, स्कूल ऑफ बायोमेडिकल इंजिनियरिंग, आई. टी. , बीएचयू.।
१८.	सिन्थेसिस ऑफ प्रोमिसिंग नॉवल बाइनरी आरगेनिक व्हाइट लाइट एमिटिंग मेटेरियल; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; डॉ. आर .एन. राय, एसोसिएट प्रोफेसर, डिर्पाटमेंट ऑफ केमिस्ट्री, फेक्ल्टी ऑफ साइंस।
१९.	डीसल्फराइज़ेशन ऑफ कोल विद रेल्सटोनिया एसपी. एण्ड स्यूडोजेन्थेमोनास एसपी. ; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; डॉ. (मिसेज) आशा लता सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इन्वायरमेंन्टल साइंस, डिर्पाटमेंट ऑफ बाटनी, फेक्ल्टी आफ साइंस, बीएचयू.।
२०.	हेपोटोप्रोटेक्टीव इफेक्ट ऑफ फाइलेन्टस फ्रेटर्नस अगेन्सट साइक्लाफॉसफामिडी पोटेन्ट एण्टी केंसर ड्रग; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; डॉ. स्वर्ण लता, एसोसिएट प्रोफसर, डिर्पाटमेंट ऑफ जूलाजी, एमएमवी. , बीएचयू.।
२१.	प्रोसेस फॉर आइसोलेशन एण्ड प्यूरिफिकेशन ऑफ पेरौक्सीडे. ज एन्जाइम फ्राम राइस एण्ड एप्लीकेशन; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; डॉ. कविता शाह, एसोसिएट प्रोफसर, इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्वायरमेंटर एण्ड सस्टनेबल डेवलपमेंट, बीएचयू।
२२.	पाइजोलेक्ट्रीक बोन सिमेन्ट फॉर बायोमेडिकल एप्लीकेशन; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; श्री गोविन्द कपूसेट्टी, सिनियर रिसर्च फेलो, स्कूल ऑफ बायोमेडिकल इंजिनियरिंग, आई. टी. , बीएचयू.।
२३.	डेवलपमेंट ऑफ नैनो गोल्ड बेस्ड डायग्नोस्टीक मार्कर फॉर कार्डिओवास्कूलर डिसोआडर्स; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; प्रो. डी. दास, हेड, डिर्पाटमेंट ऑफ बायोकेमिस्ट्री, आईएमएस. , बीएचयू.।
२४.	रिमूवल ऑफ टोक्सीक ट्रेस मेटल्स फ्राम कोल विद मिक्सड बेक्टेरियल कोन्सोर्टीया; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; डॉ. पी. के. सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, डिर्पाटमेंट ऑफ जियोलॉजी, बीएचयू.।
२५.	कार्बन पेस्ट इलेक्ट्रोड मोडीफाइड विद पेरोक्सीडेज़ज फ्राम राइस प्लांटस एण्ड इट्स एप्लिकेशन; पेटेन्ट एप्लिकेशन अण्डर प्रोसेस; डॉ. कविता शाह, एसोसिएट प्रोफसर, इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्वायरमेंटर एण्ड सस्टनेबल डेवलपमेंट, बीएचयू।

८. छात्रवृत्तियाँ/अध्येतावृत्ति (छात्रों के लिये) २०११-१२

क्र. सं.	छात्रवृत्ति का नाम	संख्या
१.	XI प्लान स्कीम न.४०२७ के अन्तर्गत यू.जी.सी. अध्येतावृत्ति मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के लिए रु.५०००/- प्रति माह व रु.८०००/ - प्रति वर्ष की दर से आनुषंगिक अनुदान और विज्ञान सहित प्रौद्योगिकी, चिकित्सा व कृषि विज्ञान के लिए रु.१०,०००/- प्रति वर्ष की दर से आनुषंगिक अनुदान के साथ।	१३७३
२.	विज्ञान में यू.जी.सी. (किसी भी देय समय में) नेट – जे.आर.एफ. को रु.१६,०००/- प्रति माह व रु.१२,०००/- प्रति वर्ष की दर से आनुषंगिक अनुदान; तथा एस.आर.एफ. को रु.१८,०००/- प्रति माह व रु.२५,०००/ - प्रति वर्ष आनुषंगिक अनुदान के साथ और मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान में नेट – जे.आर.एफ. को रु.१६,०००/- प्रति माह की दर व रु. १०,०००/ - प्रति वर्ष की दर से आनुषंगिक अनुदान के साथ, तथा एस.आर.एफ. को रु.१८,०००/- प्रति माह व रु.२०,५००/ - प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान के साथ।	६००
३.	विज्ञान में सी.एस.आई.आर. नेट-जे.आर.एफ. को रु.१६,०००/- प्रति माह व रु.२०,०००/- प्रति वर्ष आनुषंगिक अनुदान के साथ, एस.आर.एफ. को रु.१८,०००/- प्रति माह व रु.२०,०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान के साथ।	३२६
४.	प्रौद्योगिकी संस्थान के लिए जे.आर.एफ. को रु१२,०००/- प्रति माह व रु. १२,०००/-प्रति वर्ष की दर से आनुषंगिक अनुदान तथा एस. आर .एफ. को रु. १४,०००/- प्रति माह व रु.२५,०००/- प्रति वर्ष की दर से आनुषंगिक अनुदान के साथ।	६७
५.	प्रौद्योगिकी संस्थान के लिए जे .आर.एफ. स्नातकोत्तरोपरान्त शोध अध्येतावृत्ति रु.१२,०००/- प्रति माह व रु.१२,०००/- प्रति वर्ष की दर से आनुषंगिक अनुदान के साथ।	१४
६.	प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान व इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी विभागों में सी .ए.एस./एस.ए.पी. में विलय की जा चुकी कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति और रिसर्च एसोशिएटशिप्स को रु.१६,०००/- प्रति माह व रु.१२,०००/- प्रति वर्ष की दर से आनुषंगिक अनुदान के साथ।	१८
७.	चिकित्सा विज्ञान संस्थान में मानविकी स्नातकोत्तरों को आयुर्वेद कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति रु.१६,०००/- प्रति माह व रु.१०,०००/- प्रति वर्ष की दर से आनुषंगिक अनुदान तथा विज्ञान एवं आयुर्वेद स्नातकोत्तर के लिए रु.१६,०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान।	१३
८.	चिकित्सा विज्ञान संस्थान में प्रायोगिक चिकित्सा केन्द्र एवं शल्य शोध प्रयोगशाला में विज्ञान स्नातकोत्तरों के लिए कनिष्ठ व वरिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति क्रमश: रु.१२ ,०००/- प्रति माह व रु.१८,०००/- प्रति माह और रु.१२,०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान के साथ।	१५
९.	राजीव गाँधी राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान में जे.आर.एफ. को रु.१६,०००/- प्रति माह व एसआरएफ को रु.१८,०००/- प्रति माह तथा क्रमश: रु.१०,०००/- व रु.२०,५००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान और विज्ञान में क्रमश: रु.१२,०००/- व रु.२५,०००/- प्रति वर्ष के आनुषंगिक अनुदान के साथ।	२४१
१०.	प्रतिभावान छात्रों के लिए विज्ञान में यू .जी.सी. शोध अध्येतावृत्ति एस .ए.पी. चिन्हित विभागों को नवम् योजना आर.एफ.एस.एम.एस. योजना के अनतर्गत जे.आर .एफ.को रु.१४,०००/- प्रति माह व रु.१६०००/- प्रति माह की दर (केवल गेट क्वालिफाई उम्मीदवार के लिए) एवं रु. १२०००/ - प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान के साथ तथा एस.आर .एफ.को रु. १६०००/ - प्रतिमाह व रु. १८०००/- प्रतिमाह की दर (गेट क्वालिफाई उम्मीदवार के लिए) एवं २५०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान के साथ।	७०
११.	नेपाल अध्ययन केन्द्र में शोध अध्येतावृत्ति रु.१ ६,०००/- प्रति माह व रु.१०,०००/- प्रति वर्ष की दर से आनुषंगिक अनुदान के साथ।	०४
१२.	जैव प्रौद्योगिकी विभाग, पूना विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त डी .बी.टी.-जे.आर.एफ. रु.१६,०००/- प्रति माह व रु.३०,०००/- प्रति वर्ष की दर से आनुषंगिक अनुदान के साथ।	१६
१३.	एक मात्र संतान लड़की के लिए इन्दिरा गाँधी स्नातकोत्तर छात्रवृत्ति।	१०
१४.	पुलिस शोध व विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय के अन्तर्गत भारत सरकार छात्रवृत्ति।	०१
१५.	व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए एस.सी./एस.टी. को यू.जी.सी.-स्नातकोत्तर (छात्रवृत्ति)	००
१६.	यू.जी.सी.-डॉ. डी.एस. कोठारी पोस्ट डाक्टोरल अध्येतावृत्ति रु.२२,०००/- प्रति माह एवं रु.२८,०००/ - प्रति माह की दर व रु.५०,०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान के साथ।	१३
१७.	यू.जी.सी.-महिला पोस्ट डॉक्टोरल अध्येतावृत्ति रु. २५,०००/- प्रतिमाह व रु. ५०,०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान के साथ।	१३
१८.	मौलाना आजाद नेशनल फेलोशिप के अन्तर्गत विज्ञान वर्ग के शोधार्थियों को कनिष्ठ शोधवृत्ति (जे.आर.एफ.) को रु.१६,०००/ - प्रति माह एवं कन्टिजेन्सी रु.१२,०००/ - प्रति वर्ष तथा वरिष्ठ शोधवृत्ति (एस.आर.एफ.) को रु.१८,०००/- प्रति माह व रु.२५,०००/- प्रति वर्ष और मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान वर्ग के शोधार्थियों का कनिष्ठ शोधवृत्ति (जे.आर.एफ.) को रु.१६,०००/- प्रति माह एवं कन्टिजेन्सी रु.१०,०००/ - प्रति वर्ष तथा वरिष्ठ शोधवृत्ति (एस.आर.एफ.) को रु.१८,०००/ - प्रति माह व रु.२०,५००/- प्रति वर्ष देय होती हैं।	१४
१९.	यू.जी.सी.-पोस्ट डॉक्टोरल अध्येतावृत्ति एस.सी./एस.टी. के लिए रु.१६,०००/- प्रति माह की दर व रु.३०,००० प्रति वर्ष के आनुषंगिक अनुदान के साथ।	०२

२०.	सी.एस.आई.आर. - आर.ए. को अध्येतावृत्ति रु.२२,०००/- प्रति माह की दर व रु.२०,०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान।	१०
२१.	आई.सी.ए.आर. - जे.आर.एफ. (पी.जी.) रु.१६०००/- प्रति माह के दर से व रु.२००००/- प्रति वर्ष के आनुषंगिक अनुदान के साथ।	६२
२२.	आई.सी.एम.आर. अध्येतावृत्ति रु.१६,०००/- प्रति माह की दर व रु.२०,०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान।	५०
२३.	आई.सी.पी.आर. अध्येतावृत्ति रु.६०००/- प्रति माह की दर व रु.१२०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान के साथ।	१७
२४.	नेट रहित के लिए आई.सी.एच.आर. अध्येतावृत्ति रु.५०००/- प्रति माह तथा नेट उत्तीर्ण के लिए रु.६०००/- प्रति माह की दर व रु.१२०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान।	२१
२५.	ए.आई.सी.टी.ई. राष्ट्रीय डॉक्टोरल अध्येतावृत्ति रु.१८०००/- प्रति माह की दर व रु.२५०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान।	१०
२६.	आई.सी.एस.एस.आर. अध्येतावृत्ति रु.१८०००/- प्रति माह की दर व रु.३०,०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान।	१७
२७.	प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि. के दस शीर्ष अनु.जाति/अनु.जनजाति छात्रों के लिए भारत सरकार छात्रवृत्ति	२०
२८.	राष्ट्रीय बौद्धिक खोज योजना/एन.सी.ई.आर.टी. छात्रवृत्ति।	३०
२९.	अनु.जाति/अनु.जनजाति/अन्य पिछड़ी जाति/सामान्य श्रेणी/अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति (उ. प्र.)	४५६२
३०.	उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त अन्य राज्यों से अनु.जाति/अनु.जनजाति/अन्य पिछड़ी जाति छात्रवृत्ति ।	४५०

विश्वविद्यालय की छात्रवृत्तियाँ

क्र सं.	छात्रवृत्ति का नाम	संख्या
१.	एम.टेक. एवं ड्यूल डिग्री छात्रों के लिए छात्रवृत्ति रु.८,०००/-प्रति माह की दर और रु.५,०००/- प्रति वर्ष का आनुषंगिक अनुदान।	१२६०
२.	बी.टेक. छात्रों के लिए छात्रवृत्ति रु.३००/- प्रति माह की दर और रु.३००/- प्रति वर्ष का शुल्कमुक्ति।	३१८
३.	संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय छात्रवृत्ति शास्त्री (५१) तथा आचार्य (४०)	९१
४.	जैव प्रौद्योगिकी विभाग के स्कीम नं.८२७ के अन्तर्गत एम.एस-सी. प्रीवियस एवं फाइनल वर्ष के छात्रों के लिये वृत्तिक.रु १२००/- प्रतिमाह की दर से	३७
५.	एमएचए-बीपीआर एण्ड डी/ आई एस आर ओस/ आईएनबीपीआईआरई/ एनएसीओ/ एमएनआरई	३९

९. सुविधाएँ

९. सुविधाएं
- ९.१. आवास
- ९.२.१. छात्रावास (बालक)
- ९.२.२. छात्रावास (बालिका)
- ९.२.३. छात्रावास (विवाहित/विदेशी छात्र)
- ९.२.४. विश्वविद्यालय कर्मचारियों के निवास हेतु आवास सुविधाएँ

९.२. अतिथि गृह संकुल
९.३. इन्टरनेट एवं संगणक
९.४. सम्मेलन कक्ष
९.५. पुरातन छात्र प्रकोष्ठ
९.६. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्
९.७. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
९.८. अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र
९.९. समाचार पत्र प्रकाशन एवं प्रचार प्रकोष्ठ
९.१०. विद्युत, जल और दूरभाष केन्द्र
९.११. अनुरक्षण (भवन एवं उपकरण)
९.१२. स्वास्थ्य देखभाल (अस्पताल और स्वास्थ्य केन्द्र)
९.१३. विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद
९.१४. छात्र अधिष्ठाता द्वारा आयोजित कार्यक्रम
९.१५. अभिरुचि केन्द्र
९.१६. जलपान गृह
९.१७. राष्ट्रीय सेवा योजना
९.१८. नेशनल कैडेट कोर
९.१९. बैंक एवं डाक घर
९.२०. रेल आरक्षण पटल
९.२१. एयर स्ट्रीप एवं हेलीपैड
९.२२. विपणन संकुल
९.२३. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय क्लब
९.२४. छात्र कल्याण
- ९.२४.१. संस्थापन सेवा
- ९.२४.२. विश्वविद्यालय सेवायोजन सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र
- ९.२४.३. छात्र परिषद्
- ९.२४.४. नगर छात्र निकाय
- ९.२४.५. पाठ्येतर क्रियाकलाप

सरदार वल्लभ भाई पटेल, ब्वायज़ हॉस्टल

निर्माणाधीन ट्रॉमा सेन्टर

९. सुविधाएँ

९.१. आवास

९.१.१. छात्रों के लिये छात्रावास

क्र. सं.	छात्रावासों के नाम	संस्थान/संकाय	कमरों की संख्या	कुल छात्र	कुल छात्रावासी	सार्वजनिक कक्ष	भण्डार कक्ष
१.	विश्वकर्मा छात्रावास	प्रौद्योगिकी संस्थान	२००	१९८	३८३	०	२
२.	विवेकानन्द छात्रावास	प्रौद्योगिकी संस्थान	२००	१९८	३९२	०	२
३.	एस. सी. डे. छात्रावास	प्रौद्योगिकी संस्थान	१२२	१२०	२४२	१	१
४.	लिम्डी छात्रावास	प्रौद्योगिकी संस्थान	१८८	१८६	४४३	१	१
५.	राजपूताना छात्रावास	प्रौद्योगिकी संस्थान	१८८	१८६	४२७	१	१
६.	विश्वेश्वरैया छात्रावास	प्रौद्योगिकी संस्थान	३२१	३१८	६२६	१	२
७.	धनराजगिरी छात्रावास	प्रौद्योगिकी संस्थान	१८८	१८६	३७०	१	१
८.	मौर्वी छात्रावास	प्रौद्योगिकी संस्थान	१९६	१८८	३७५	२	६
९.	डॉ. सी. वी. रमण छात्रावास	प्रौद्योगिकी संस्थान	२०२	१९९	३८८	२	१
१०.	धनवन्तरी छात्रावास	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	२१६	२१०	२१०	२	४
११.	रुईया (मेडिकल) छात्रावास	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	८९	८५	२३७	२	२
१२.	न्यू पी. जी. डाक्टर्स छात्रावास	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	९९	९६	९३	२	१
१३.	नागार्जुन (आयु.) छात्रावास	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	९७	९४	१४२	१	२
१४.	पुनर्वसु (आत्रेय) छात्रावास	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	७९	७६	१८०	१	२
१५.	डॉ. एस. राधाकृष्णन् छात्रावास	कृषि विज्ञान संस्थान	१२०	११८	२४०	१	१
१६.	बाल गंगाधर तिलक छात्रावास	कृषि विज्ञान संस्थान	२०४	२००	४००	२	२
१७.	रामाकृष्णा छात्रावास	विज्ञान संकाय	१३०	१२७	२४६	१	२
१८.	डॉ. सी. पी. आर. अय्यर छात्रावास	विज्ञान संकाय	१३२	१३०	२५६	१	१
१९.	डालमिया छात्रावास	विज्ञान संकाय	२३४	२२२	३७९	२	१०
२०.	भाभा छात्रावास	विज्ञान संकाय	२०१	१९२	३१९	४	५
२१.	ब्रोचा छात्रावास	विज्ञान संकाय	३१२	३०४	६५८	६	२
२२.	आचार्य नरेन्द्र देव छात्रावास	सामाजिक विज्ञान संकाय	१०६	१०२	१९३	१	३
२३.	राजा राममोहन राय छात्रावास	सामाजिक विज्ञान संकाय	२३२	२२७	४०२	२	३

२४.	बिरला 'अ' छात्रावास	कला संकाय	१३८	१३०	२८५	३	५
२५.	बिरला 'ब' छात्रावास	कला संकाय	११५	११०	१२९	२	३
२६.	बिरला 'स' छात्रावास	कला संकाय	१२६	१२४	२५५	१	१
२७.	डॉ. ए. बी. हॉस्टल (कमच्छा)	कला संकाय	९८	९२	१८०	३	३
२८.	न्यू पी. जी. एजुकेशन छात्रावास	शिक्षा संकाय	४६	४५	९२	०	१
२९.	डॉ. आर .पी. हॉस्टल (कमच्छा)	शिक्षा संकाय	५८	५६	१२६	१	१
३०.	डॉ. भगवान दास छात्रावास	विधि संकाय	१२०	११८	२४८	१	१
३१.	डॉ. बी. आर .अम्बेडकर छात्रावास	विधि संकाय	७०	६९	१०५	०	१
३२.	मेनेजमेंट छात्रावास	प्रबन्धशास्त्र संकाय	६४	६३	१२८	०	१
३३.	डॉ. आई. एन. गुर्टू छात्रावास	वाणिज्य संकाय	१२०	११८	२२८	१	१
३४.	राम किंकर छात्रावास	दृश्य कला संकाय	१९	१७	३४	१	१
३५.	रींवा कोठी छात्रावास, अस्सी	मंच कला संकाय	४६	३८	४३	०	८
३६.	रुईया छात्रावास (संस्कृत ब्लाक)	संस्कृत विद्य ा धर्म विज्ञान संकाय	६९	६७	१८९	१	१
३७.	सरदार बल्लभ भाई पटेल छात्रावास	शोध छात्रों के लिए	५१	४९	७२	१	१
३८.	शिवालिक ब्वायज़ छात्रावास	राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा	१५५	१५०	२९६	२	३
३९.	विन्ध्यांचल ब्वायज़ छात्रावास	शोध छात्रों के लिए	१५५	१५०	३००	२	३
४०.	न्यू ब्वायज़ छात्रावास	राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा	३१	२९	६५	१	१

९.१.२.छात्राओं के लिये छात्रावास

क्र.सं.	छात्रावासों के नाम	संस्थान/संकाय	कमरों की संख्या	कुल छात्र	कुल छात्रावासी	सार्वजनिक कक्ष	भण्डार कक्ष
१.	गाँधी स्मृति महिला छात्रावास	प्रौद्योगिकी संस्थान	८४	८३	२६३	१	०
२.	आई. टी. गर्ल्स हॉस्टल नं. १	प्रौद्योगिकी संस्थान	२४	२१	७५	१	२
३.	आई. टी. गर्ल्स हॉस्टल नं. २	प्रौद्योगिकी संस्थान	९	७	१८	१	१
४.	महिला डॉक्टर्स हॉस्टल	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	६७	६३	६४	२	२
५.	कस्तूरबा गर्ल्स हॉस्टल	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	११४	११०	१५०	२	२
६.	सुकन्या गर्ल्स हॉस्टल (आयु.)	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	३६	३४	६९	१	१
७.	एग्रीकल्चर गर्ल्स हॉस्टल	कृषि विज्ञान संस्थान	१३	१३	४८	०	०
८.	गार्गी गर्ल्स हॉस्टल	विज्ञान संकाय	५६	५४	१४८	१	१
९.	एस. एन. पी. जी. गर्ल्स हॉस्टल	विज्ञान संकाय	७४	७०	१३२	१	३
१०.	डॉ. जे. सी. बोस गर्ल्स हॉस्टल	विज्ञान संकाय	९१	८९	१९६	१	१
११.	ज्योति कुंज गर्ल्स हॉस्टल	महिला महाविद्यालय	१५०	१४५	३०८	२	३
१२.	स्वास्ति कुंज गर्ल्स हॉस्टल	महिला महाविद्यालय	५०	४७	२१०	१	२
१३.	कीर्ति कुंज गर्ल्स हॉस्टल	महिला महाविद्यालय	६३	६१	२५७	२	०

१४.	कुन्दन देवी मालवीय गर्ल्स हॉस्टल	महिला महाविद्यालय	७४	७१	१४८	१	२
१५.	पाउगी हाउस गर्ल्स हॉस्टल	महिला महाविद्यालय	६	६	२१	०	०
१६.	नवीन गर्ल्स हॉस्टल	महिला महाविद्यालय	१८	१७	१०३	१	०
१७.	गंगा गर्ल्स हॉस्टल	त्रिवेणी परिसर	८९	८६	१८१	२	१
१८.	यमुना गर्ल्स हॉस्टल	त्रिवेणी परिसर	७१	७०	१७४	१	०
१९.	सरस्वती गर्ल्स हॉस्टल	त्रिवेणी परिसर	९८	९७	२०२	१	०
२०.	गोदावरी गर्ल्स हॉस्टल	त्रिवेणी परिसर	७८	७७	१९१	१	०
२१.	कावेरी गर्ल्स हॉस्टल	त्रिवेणी परिसर	७९	७८	२२८	१	०
२२.	विन्ध्यवासिनी गर्ल्स हॉस्टल	राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा	१२०	११६	२७८	२	२

९.१.३. छात्रों के लिये छात्रावास (विदेशी)

क्र.सं.	छात्रावासों के नाम	संस्थान/संकाय	कमरों की संख्या	कुल छात्र	कुल छात्रावासी	सार्वजनिक कक्ष	भण्डार कक्ष
१.	सिद्धार्थ विहार	विदेशी	१९	१८	४०	१	०
२.	इन्टरनेशनल हाउस	विदेशी	९०	८७	११३	१	२
३.	इन्टरनेशनल हाउस एनेक्सी (गर्ल्स)	विदेशी	१५	१३	२२	१	१
४.	इन्टरनेशनल गर्ल्स हॉस्टल	विदेशी	३४	२८	५६	२	४

९.१.४. विश्वविद्यालय कर्मचारियों के निवास हेतु आवास सुविधाएँ (शिक्षण एवं गैर-शिक्षण)

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना एक आवासीय विश्वविद्यालय के रूप मे इस उद्देश्य के साथ हुई थी कि यहाँ शिक्षक, छात्र एवं कर्मचारी शैक्षणिक वातावरण में परस्पर सहयोग से व्यक्तित्व का विकास कर सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु छात्र/छात्राओं हेतु छात्रावासों के साथ-साथ विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों हेतु क्रमश: ६६२ एवं ७२९ आवासों का निर्माण किया गया है।

इसी क्रम में आवासों की कमी को देखते हुए हाल ही में विश्वविद्यालय परिसर स्थित तुलसीदास कॉलोनी में १६ प्रवक्ता श्रेणी के आवासों का निर्माण किया गया है।

विश्वविद्यालय में दूर-दराज स्थानों की निवासी अविवाहित/विवाहित कामकाजी महिलाओं के आवास हेतु एक तीन मंजिले कामकाजी महिला छात्रावास का निर्माण किया गया है, जिसमें कुल ६८ कमरें है।

९.२. अतिथि गृह संकुल

अतिथि गृह समूह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अन्तर्गत लक्ष्मणदास अतिथि गृह, विश्वविद्यालय अतिथि गृह एवं फैकल्टी अतिथि गृह आता है। लक्ष्मणदास अतिथि गृह में कुल छ: सूट एवं एक कक्ष तथा एक तीन शैय्या वाला डॉरमेट्री हाल है। इसी अतिथि गृह में एक सुव्यवस्थित भोजनकक्ष एवं बैठक कक्ष भी हैं। विश्वविद्यालय अतिथि गृह में कुल छ: सूट, चौदह कक्ष तथा एक सोलह शैया वाला बड़ा डॉरमेट्री हाल तथा छ: शैया वाला छोटा डॉरमेट्री हाल है, साथ ही साथ एक सुव्यवस्थित भोजनकक्ष भी है। दोनों अतिथि गृह में सभी सूट, कमरे व भोजनकक्ष पूर्णरूप से वातानुकूलित सुविधा से युक्त हैं। फैकल्टी अतिथि गृह में तीन शैय्या वाले बारह कक्ष, पाँच शैय्या वाले सात कक्ष एवं छ: शैय्या वाले दो डॉरमेट्री हाल है। इनमें पाँच शैय्या वाले दो कक्ष एवं तीन शैय्या वाले छ: कक्ष पूर्णरूप से वातानुकूलित सुविधा से युक्त हैं। इस अतिथि गृह में एक सुविधाजनक भोजनकक्ष तैयार किया जा रहा है। सभी अतिथि गृहों में आधुनिक सुविधायुक्त रसोईघर हैं जो विश्वविद्यालय के अतिथियों की रूचि के अनुसार कम दामों में भोजन उपलब्ध कराता है। अतिथि गृह समूह विश्वविद्यालय कर्मचारियों के आवश्यकतानुसार पूर्व-सूचना पर व्यक्तिगत भोजन सम्बंधी जरूरतों को भी पूरा करता है, साथ ही साथ विश्वविद्यालय, संस्थानों एवं विभागों में समय-समय पर होने वाले विभिन्न प्रकार के आयोजनों में भोज्य सम्बन्धी पदार्थों की भी व्यवस्था करता आ रहा है। अतिथि गृह भारत के विभिन्न उच्च पदाधिकारियों एवं अन्य देशों के लोगों को भी श्रेष्ठ सेवा प्रदान करने का अवसर प्राप्त कर चुका है। समय-समय पर भारत के महामहिम राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं विभिन्न राज्यों के राज्यपालों अतिथि गृह में ठहर कर इसकी शोभा बढ़ाई है। कर्मचारियों के जर्जर आवास को तोड़कर लक्ष्मणदास अतिथि गृह का विस्तार भी किया जा रहा है, यह कार्य प्रगति पर है। इसका शिलान्यास कुलपति पद्मश्री प्रो. लालजी सिंह जी ने दिनांक १४.०३.२०१२ को किया। इसके कक्षों एवं स्नान गृहों का भी

परिवर्तन किया जा रहा है। यह अतिथि गृह समूह प्रतिवर्ष देश-विदेश से आये हुए लगभग २०,००० अतिथियों का स्वागत-सत्कार करता है।

९.३. इन्टरनेट सुविधा एवं संगणक केन्द्र (संगणक केन्द्र)

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शैक्षणिक ज्ञान के विकास में संगणक केन्द्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह केन्द्र छात्रों, शोध छात्रों और शिक्षक सदस्यो में अनुसंधान एवं शिक्षा के विकास में महती योगदान करते हुए उन्हें संगणन सुविधायें, इन्टरनेट सुविधायें और वेब सेवा सम्बन्धी सुविधायें प्रदान कर रहा है। महामना की भावनाओं के अनुरुप विश्वविद्यालय के भावी विकास एवं उन्नति की दृष्टि से इसका उद्देश्य आधुनिक संगणक सेवाओं और सुविधाओं के साथ विश्वविद्यालय को सुसज्जित करना है।

विश्वविद्यालय के लगभग ४०,००० इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं जिनमें सभी संस्थानों, संकायों, विभागों, स्कूलों, ऑफिसों एवं छात्रावासों के उपयोगकर्ता सम्मिलित हैं। विश्वविद्यालय समुदाय द्वारा सूचनाओं और संचार के आदान प्रदान के लिए ओपेन सोर्स सॉफ्टवेयर के उपयोग द्वारा मेल सुविधाएँ प्रदान की जा रही है। वर्तमान शैक्षणिक सत्र में का.हि.वि.वि. मेल सेवाओं के लगभग २४०० उपयोगकर्ता है। वेब सेवायें भी उपयोग में हैं और इसकी सेवायें २०११-१२ में बढ़कर ४००० तक हो चुकी हैं। केन्द्र निम्नलिखित आईएसपी के लीज़्ड लाइन सेवाएं प्रदान कर रहा है जैसे बीएसएनएल (१०० एमबीपीएस), रिलायन्स (६० एमबीपीएस) और राष्ट्रीय ज्ञान संजाल (एन के एन)। केन्द्र ने अभी-अभी बीएसएनएल का १.५ जीबीपीएस (१:२) स्थापित किया है, जिसके माध्यम से इंटरनेट सेवायें प्रदान की जा रही है। केन्द्र द्वारा रेडवायर लिंक प्रूफ लोड बैलेन्सर और उच्च क्षमता का सिस्को फायरवाल स्थापित करने की प्रक्रिया जारी है।

संगणक केन्द्र विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंन्ता कार्यालय को स्नातक प्रवेश परीक्षा (यूईटी), स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा (पीईटी), स्कूल प्रवेश परीक्षा (एसईटी) और सम्मिलित शोध प्रवेश परीक्षा (आरईटी) और मेडिकल प्रवेश परीक्षा (एमईटी) के उत्तर प्रपत्रों का अग्रगमन में सहयोग करता है। उत्तर प्रपत्रों को संगणक केन्द्र में ओएमआर के माध्यम से स्कैन किया जाता है और आंकड़ों की स्थान वरिष्ठता सूची तैयार की जाती है। यह कार्य शत्-प्रतिशत शुद्ध होता है और इसके लिए सॉफ्टवेयर को यहीं विकसित और अद्यतन किया गया है। प्रवेश परीक्षा के सफल अभ्यर्थियों का परिणाम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.bhu.ac.in पर भी प्रकाशित किया जाता है। इस वर्ष से केन्द्र द्वारा ऑन लाइन प्रवेश परीक्षा आवेदन का कार्य भी प्रारम्भ किया गया है।

केन्द्र ने इस वर्ष भी एम.सी.ए. और एम.एससी.(संगणक विज्ञान) के छात्रों के लिए नियोजन सुविधायें प्रदान की हैं। दोनों पाठ्यक्रमों के छात्र राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में सूचना एवं संगणक उपयोग प्रौद्योगिकी हेतु उपस्थित हुए और चयनित भी हुए। आवश्यकता पड़ने पर एम.सी.ए.और एम.एससी.(संगणक विज्ञान) के छात्रों के नियोजन हेतु ऑनलाइन परीक्षा भी संचालित की जाती है। संगणक केन्द्र प्रत्येक वर्ष ग्रीष्मावकाश के दौरान हमारे देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों/संस्थानों के अभियांत्रिकी छात्रों, एम.सी.ए.और एम.एससी.(संगणक विज्ञान) के लिये ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण का आयोजन करता है।

९.४. सम्मेलन कक्ष

विश्वविद्यालय में विभिन्न संकायों/संस्थानों तथा महाविद्यालय के कई प्रेक्षागृह हैं। सभाओं के लिये कई सभागार हैं, जिनके मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य भी विश्वविद्यालय निर्माण विभाग सम्पादित करता है। जिनके विवरण निम्नलिखित हैं:-

१. स्वतन्त्रता भवन (विश्वविद्यालय का मुख्य प्रेक्षागृह)
२. के०एन० उडुप्पा प्रेक्षागृह (चिकित्सा विज्ञान संस्थान)
३. कला संकाय का प्रेक्षागृह
४. गोपाल त्रिपाठी सभागार (केमिकल इन्जिनियरिंग, प्रौ.सं.)
५. पं० ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह (संगीत एवं मंच कला संकाय)
६. राधाकृष्णन् सभागार (कला संकाय)
७. प्रदर्शनी कक्ष (दृश्य कला संकाय)
८. सभागार संख्या-१ (केन्द्रीय कार्यालय)
९. सभागार भवन (प्रौद्योगिकी संस्थान)
१०. सभागार संख्या-२ (केन्द्रीय कार्यालय)

११. महिला महाविद्यालय प्रेक्षागृह

१२. एनी बेसेन्ट सभागार (कला संकाय)

वित्तीय वर्ष २०११-१२ के दौरान कई गणमान्य अतिथि और आगन्तुक इस विश्वविद्यालय में आये। इन अवसरों पर विश्वविद्यालय निर्माण विभाग ने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनमें सबसे ख्यातिलब्ध अतिथि लोकसभा अध्यक्षा, श्रीमती मीरा कुमार ने ०७ मार्च, २०१२ को पधार कर विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया।

विभाग में कर्मचारियों की कमी होने के बावजूद २०११-१२ में ४०० से अधिक एग्रीमेन्ट तथा ४०६ वर्क आर्डर द्वारा विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यों को सम्पन्न किया गया।

योग्य, अनुभवी एवं निपुण कर्मचारियों की सेवा-निवृत्ति होने के बावजूद विश्वविद्यालय निर्माण विभाग दैनिक वेतन व संविदा कर्मियों द्वारा विश्वविद्यालय के विभिन्न भवनों का निर्माण कार्य, मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य यथासंभव सम्पादित कर रहा है।

९.५. पुरातन छात्र प्रकोष्ठ

फरवरी २००६ में तत्कालीन माननीय कुलपति प्रो. पंजाब सिंह जी के आदेश से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पुरातन छात्र प्रकोष्ठ की स्थापना पुरातन छात्रों से सम्बधित सभी क्रिया कलापों के अभिलेख एवं संचालन के लिए की गई। इसके अन्तर्गत पुरातन छात्रों की सूची तैयार एवं अद्यतन करना, महामना द्वारा किये गये कार्यों एवं उन पर हुए कार्यों को प्रकाशित करना, प्रान्तीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरातन छात्र समागम आयोजित करना तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्विभाषीय पुरातन छात्र समाचार पत्र का प्रकाशन करना है।

दिसम्बर २०११ में, माननीय कुलपति के संरक्षण में पुरातन छात्र प्रकोष्ठ द्वारा एक अन्तर्राष्ट्रीय बी.एच.यू. पुरातन समागम (आईबीएमएम २०१२) और २३-२४ दिसम्बर, २०१२ को संगोष्ठी आयोजित करने का निर्णय लिया गया। संगोष्ठी का विषय ''राष्ट्र निर्माण में महामना की दृष्टि'' है। समागम की विवरणिका उपलब्ध सभी पुरातन छात्रों को भेजी जा चुकी है और इसकी तैयारी संतोषप्रद ढंग से चल रही है। विभिन्न समितियाँ विभिन्न दृष्टिकोणों से इस कार्य को सफल बनाने हेतु संस्थापित हो चुकी है।

हमारे संस्थापक महामना पं.मदन मोहन मालवीय जी की १५०वीं जयंती वर्ष में आयोजित यह अन्तर्राष्ट्रीय पुरातन छात्र समागम अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मध्यावधि में एक विशेष व्याख्यान ''भारत में विश्व व्यापक स्वास्थ्य क्षेत्र समस्याएँ एवं समाधान'' विषय पर पद्मभूषण डॉ. पुष्प मित्र भार्गव, माननीय सदस्य, कार्यकारिणी परिषद् बी.एच.यू. का २९ जुलाई, २०१२ को स्वतंत्रता भवन में आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता माननीय कुलपति पद्मश्री डा. लालजी सिंह जी ने की।

९.६. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्

क्षितिज शृंखला के अन्तर्गत हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम - भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् द्वारा माहवार स्थानीय संस्थाओं, राज्य सरकार एवं बी.एच.यू. के साथ निम्न कार्यक्रमों का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया, जिसे मीडिया द्वारा प्रकाशित व सराहा गया:

क्र. सं.	महीना	दिनांक	कलाकारों के नाम	प्रस्तुति
१.	अप्रैल-११	२४-०४-११	सुश्री संगीता बन्दोपाध्याय	गायन
२.	मई-११	२८-०५-११	सुश्री देवयानी	भरतनाट्यम् नृत्य
३.	जून-११	२४-०६-११	सुश्री नीता माथुर	गायन
४.	जुलाई-११	१६-०७-११	श्री सलील भट्ट (जयपुर)	सात्विक वीणा
५.	अगस्त-११	३१-०७-११	उस्ताद अली अहमद हुसैन खान	शहनाई
६.	अगस्त-११	१३-०८-११	श्री सुरा रंजन मुखोपाध्याय	सरोदवादन
७.	सितम्बर-११	२७-०८-११	श्री देवाशीष भट्टाचार्या	शास्त्रीय गिटार
८.	सितम्बर-११	११-०९-११	सुश्री अजीता श्रीवास्तव (मिर्जापुर)	मिर्जापुरी कजरी
९.	अक्टूबर-११	१८-०९-११	श्री भोलानाथ मिश्रा (बनारस)	गायन
१०.	नवम्बर-११	०९-१०-११	श्रीमती कल्पना जोकरकर (इन्दौर)	गायन
११.	नवम्बर-११	०८-११-११	श्री रननजीत सेन गुप्ता (कोलकाता)	सरोदवादन
१२.	नवम्बर-११	१०-११-११	नाट्य सरस्वती (कुचिपुड़ी एकेडमी, बंगलूरु)	कुचिपुड़ी नृत्य
१३.	दिसम्बर-११	२६-११-११	श्री संदीपन समाजपति (कोलकाता)	गायन
१४.	दिसम्बर-११	११-१२-११	श्री भास्कर प्रसाद मुखोपाध्याय (कोलकाता)	गिटार वादन
१५.	जनवरी-१२	१८-१२-११	श्री पं० पार्थो सार्थी (कोलकाता)	सरोदवादन
१६.	जनवरी-१२	०३-०१-१२	सुश्री मेनका ठक्कर एण्ड कम्पनी समूह	नृत्य नाटक
१७.	फरवरी-१२	१३-०१-१२	सुश्री साधना राहतगाँवकर	गायन/गजल
१८.	फरवरी-१२	१३-०२-१२	सुश्री एन्ना समीरनोवा	भरतनाट्यम् नृत्य
१९.	मार्च-१२	१८-०२-१२	श्री मनोज कु. केडिया और श्री मोरमुकुट केडिया	जुगलबन्दी (सरोद एवं सितार)
२०.	मार्च-१२	०३-०३-१२	सुश्री रेखा सूर्या	गायन
२१.	मार्च -१२	१८-०३-१२	सुश्री तूलिका घोष (मुम्बई)	गायन

परिषद् द्वारा राष्ट्रीय सांस्कृतिक आयोजन संगठनों, वाराणसी और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा २०११-१२ में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम:-

परिषद् की सहायता से का. हि. वि. वि. द्वारा आयोजित कार्यक्रम

क्र. सं.	दिनांक	विवरण	कलाकारों के नाम	प्रस्तुति
१.	१५-०९-११	नृत्य विभाग संगीत एवं मंचकला संकाय	पण्डित बिरजू महाराज जी	नृत्य
२.	०९ से १२ फरवरी-१२	आई.टी.जिमखाना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित काशी यात्रा सन २०१२	राजस्थानी लोककला	लोकसंगीत
३.	१७-०२-१२	आई.एस.सी.टी.एम.टी.गायन, संगीत एवं मंच कला, बी.एच.यू. द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम	अन्तर्राष्ट्रीय मेहमान कलाकार द्वारा कला को प्रस्तुति	

परिषद् द्वारा निम्नलिखित सहायता स्थानीय आयोजकों को प्रदान किया गया :

क्र. सं.	दिनांक	विवरण	कलाकारों के नाम	प्रस्तुति
१.	०४-०५-११	दरबारी महफिल, आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	श्री सुशील भवेजा, श्रीमती अदिति चक्रवर्ती, कोलकाता	शास्त्रीय गायन
२.	३१-०७-११	शास्त्रीय संगीत, आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	श्रीमती अपूर्वा गोखले, पुणे	शास्त्रीय गायन
३.	०६-०७-११	कजरी-ठुमरी महोत्सव, आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	सुश्री सुचिस्मिता दास, मुम्बई श्रीमती शान्ती हीरानन्द, दिल्ली	शास्त्रीय गायन
४.		नृत्याजंलि २०११, आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	अन्तर्राष्ट्रीय कथकली ग्रुप	नृत्यनाटिका लव-कुश (रामायण)
५.	०४-०९-११	यादें बिस्मिल्ला, आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	श्री रामाशंकर (समूह), शहनाई वादन	लघु फिल्म शहनाई वादन और गायन
६.	१०-१०-११	प्रेम भक्ति उत्सव २०११, आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	पं० राहुल शर्मा, मुम्बई	सन्तूर वादन
७.	०६-०९-११	गंगा महोत्सव २०११, आई.सी.सी.आर (९ नवम्बर २०११)	सुश्री सरस्वती राजतधीश, बंगलूरु, सुश्री शैलेश श्रीवास्तव, मुम्बई, श्री रानाजीत सेनगुप्ता, कोलकाता, सुश्री सीरिन सेन गुप्ता, कोलकाता,	शास्त्रीय गायन कुचीपूड़ी नृत्य सरोदवादन
८.	०७-११-११	शास्त्रीय संगीत कार्यशाला, आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	पं० विनायक तोर्वी, बंगलूरु	संवाद एवम् प्रस्तुतिकरण शास्त्रीयकण्ठ संगीत
९.	१३-११-११	बसन्त उत्सव २०११, आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	पं० प्रसाद खापर्ड़े	गायन
१०.	०७/०८-०१-१२	बसन्त उत्सव २०१२, आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	पं० देबू चौधरी और प्रतीक चौधरी, बेगम परवीन सुल्ताना	सितार जुगलबन्दी शास्त्रीय गायन
११.	११-३-१२	गुलाबबाड़ी, आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	सुश्री नन्दिता पुरी (मुम्बई), श्रीमती मालिनी अवस्थी	कथक नृत्य, लोकसंगीत, गायन
१२.	२५-३-१२	शास्त्रीय गायन, आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	श्रीमती मैत्री तुलकर, कोलकाता श्री हिमांशु विश्वरूप	शास्त्रीय गायन, वायलिन
१३.	२७ से ३१मार्च और ०३-०४-१२	छ: दिवसीय राष्ट्रीय नाट्य आन्दोलन आई.सी.सी.आर एवं स्थानीय संगठन	मुम्बई, जबलपुर, जमशेदपुर और झारखण्ड के कलाकारों द्वारा	थियेटर नाटक

अन्तर्राष्ट्रीय कला: आई०सी०सी०आर०, क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी द्वारा इस्टोनिया के सात कलाकारों के समूह द्वारा बाँसुरी वादन की मोहक प्रस्तुति का आयोजन पं० ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह, मंच कला संकाय, का.हि.वि.वि. में किया गया।

परिषद् द्वारा निम्नलिखित फोटो पेंटिंग प्रदर्शनी का आयोजन

क्र.सं.	दिनांक	विवरण	कलाकारों के नाम
१.	२५ से २८ अप्रैल २०१२	पेंटिंग प्रदर्शनी और कला शिविर	श्री एस प्रणाम सिंह, श्रीमती मृदुला सिन्हा, श्री डी.पी. मोहंती, श्री एस. के. नायर और श्री अंजन चक्रवर्ती
२.	२७-०८-२०११	पेंटिंग प्रदर्शनी	श्री नारायन प्रसाद भेजु, श्री सतीश कुमार, श्री जीवन सुवल
३.	११-०९-२०११	फोटो प्रदर्शनी क्षितिज शृंखला के अन्तर्गत स्थानीय संस्थाओं के साथ	श्री चन्द्र कुमार सिंह, श्री मयंक मिश्रा, श्री संतोष कुमार, श्री हरिओम रावल मो० अंजुम, श्री अजय उपासमी, रीह विनय रावल
४.	२५-०२-१२	पेंटिंग प्रदर्शनी साधुघाट और बनारस की गली, आई.सी.सी.आर एवं दृश्यकला संकाय	श्री विवेक देसाई (अहमदाबाद)

सम्मेलन और सेमिनार - संगीत एंव मंच कला विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा इस वर्ष ०१ से ०३ दिसम्बर तक चले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन टैगोर की खोज और कला संगीत और भाषण के आयोजन के लिए परिषद् द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान किया गया।

छात्रवृत्ति - इस वर्ष २०११-१२ में रू. ६७०५११४/- छात्रवृत्ति, आईसीसीआर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा वितरित किया गया। वर्तमान में १७ देशों के ४५ छात्र बी.एच.यू. और वाराणसी के अन्य विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे हैं।

९.७. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी की स्थापना इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की बोर्ड ऑफ मैनेजमेन्ट की ९३वीं बैठक के द्वारा ०७.०१.२००८ को की गई। इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी में ४७ अध्ययन केन्द्र हैं। वर्तमान में इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र वारणसी में लगभग ४७५८९ (जनवरी २०१२ सत्र तक) विद्यार्थी विभिन्न पाठ्यक्रमों में पंजीकृत हैं। इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी का कार्य क्षेत्र अम्बेडकर नगर, कुशीनगर, आजगमढ़, महराजगंज, बलिया, मऊ, चंदौली, मिर्जापुर, देवरिया, सन्त कबीर नगर, गाजीपुर, सन्त रविदास नगर, गोरखपुर, सोनभद्र, जौनपुर एवं वाराणसी हैं।

शिक्षार्थी अध्ययन केन्द्र : वर्तमान समय में कुल ४७ अध्ययन केन्द्र इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी से जुड़ चुके हैं। जिनमें १७ नियमित स्टडी सेन्टर, ९ प्रोग्राम स्टडी सेन्टर, २ मान्यता प्राप्त स्टडी सेन्टर, १५ विशेष स्टडी सेन्टर ईईबीबी योजना के अन्तर्गत, २ समुदाय कॉलेज, १ साझेदारी संस्था है।

सहायक अध्ययन केन्द्र में विभिन्न वर्ष के अन्तर्गत हुए दाखिला का विवरण :

वर्ष	नया पंजीकरण	पुनः पंजीकरण
२००७	३६४४	३०३०
२००८	३५६४	४५३३
२००९	४१२३	५१८५
२०१०	३८६६	५०७७
२०११	३७६८	४४८०

क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ

क्षेत्रीय केन्द्र के समस्त कर्मचारी संयुक्त रूप से विद्यार्थियों की समस्याओं का निदान टेलीफोन, पत्र, एसएमएस एवं ईमेल द्वारा करते हैं।

क्षेत्रीय केन्द्र पर विद्यार्थियों की सहायता हेतु एकल खिड़की स्थापित की गयी है जिसमें सभी प्रकार से संबंधित प्रपत्र, सूचना, विवरणिका एवं अन्य सूचनायें उपलब्ध करायी जाती हैं।

इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ एक कम्प्यूटर स्थापित किया गया है जिससे विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान ईमेल के द्वारा किया जाता है एवं जिसकी सूचना इग्नू की वेबसाइट (www.ignou.ac.in) पर उपलब्ध है।

विद्यार्थियों की जानकारी हेतु 'मे आई हेल्प यू' काउण्टर पर एक डेडीकेटेड टेलीफोन स्थापित किया गया है। इसके द्वारा विद्यार्थियों के समस्याओं का निस्तारण किया जाता है।

'मे आई हेल्प यू' काउन्टर पर एक सुझाव/शिकायत बॉक्स रखा गया है ताकि विद्यार्थी एवं सामान्य जन के सुझाव एवं उनकी शिकायतों के समर्थन से प्रणाली में सुधार किया जा सकें।

'मे आई हेल्प यू' काउन्टर पर विद्यार्थियों हेतु एक रजिस्टर उपलब्ध है जिसमें वे अपनी समस्याओं को बता सकें एवं उन्हें अपने टेलीफोन नम्बर एवं ईमेल आईडी को भी लिखने के लिये कहा जाता है जिससे कि उनकी समस्याओं का समाधान कर उनके टेलीफोन अथवा ईमेल आईडी पर बताया जा सके।

क्षेत्रीय केन्द्र के वरिष्ठ अधिकारी भी उनकी समस्याओं के समाधान हेतु क्षेत्रीय केन्द्र पर मौजूद रहते हैं।

अध्ययन सामग्री वितरण हेतु अपनायी गयी तकनीक

क्षेत्रीय केन्द्र एवं अध्ययन केन्द्र से अध्ययन प्राप्त करने हेतु विद्यार्थियों को एस.एम.एस के द्वारा सूचना मुहैया कराना।

फोन के माध्यम से विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री प्राप्त करने हेतु समय एवं स्थान की सूचना मुहैया कराना।

ई-मेल के जरिये विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री वितरण के संदर्भ में सूचित करना।

अध्ययन सामग्री वितरण की सूचना प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाना।

अध्ययन सामग्री का वितरण अधिकांशत: परिचय सभा के दौरान ही किया जाता है जिसमें उन्हें अन्य जानकारी जैसे सत्रांत परीक्षा फार्म भरने की तिथि एवं पुन: पंजीकरण कराने के बारे में बताया जाता है।

जनपद वाराणसी में स्थित अध्ययन केन्द्रों में पंजीकृत विद्यार्थियों की अध्ययन सामग्री क्षेत्रीय केन्द्र से दी जाती है।

परीक्षा

वर्तमान में क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के अन्तर्गत ४७ अध्ययन केन्द्र हैं। सभी अध्ययन केन्द्रों पर परीक्षा केन्द्र नहीं हैं। केवल कुछ चुनिंदा अध्ययन केन्द्रों को ही परीक्षा केन्द्र बनाया गया है जो निम्नवत हैं: यू.पी. कॉलेज, वाराणसी; डीडीयू गोरखपुर यूनिवर्सिटी, गोरखपुर; एस.सी. कॉलेज, बलिया; एन.टी.पी.सी. शक्तिनगर; चिल्ड्रेन्स कॉलेज, आजमगढ़; मदन मोहन मालवीय इंजी. कालेज, गोरखपुर; जी.डी. बिन्नानी पी.जी. कॉलेज, मिर्जापुर; यूपीटेक, वाराणसी; पी.जी. कॉलेज, गाजीपुर; शिक्षा संकाय, कमच्छा परिसर, बी.एच.यू. वाराणसी; सेन्ट्रल जेल वाराणसी (केवल जेल बंदियों हेतु); जिला जेल वाराणसी (केवल जेल बंदियों हेतु); टी.डी. कॉलेज, जौनपुर; चौरी बेलहा महाविद्यालय, तरवाँ, आजमगढ़; दारूल उलूम हबीबिया रिजविया, मदरसा, भदोही।

परीक्षा को सुचारु रूप से संचालन हेतु क्षेत्रीय केन्द्र के अधिकारियों द्वारा औचक निरीक्षण किया जाता है।

विश्वविद्यालय/कॉलेजों के वरिष्ठ सेवानिवृत्त प्रोफेसरों को रजिस्ट्रार (एस.ई.डी.), नई दिल्ली से स्वीकृति मिलने पर उन्हें परीक्षा केन्द्रों पर निगरानी हेतु पर्यवेक्षक नियुक्त किया जाता है।

क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी द्वारा उड़न दस्ता दल परीक्षा केन्द्रों पर आकस्मिक निरीक्षण हेतु भेजा जाता है।

दिसम्बर २०११ सत्रांत परीक्षा (केन्द्रीय कारागार, वाराणसी)।

इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, गांधी भवन बी.एच.यू. परिसर, वाराणसी के पहल पर आधार पंजीकरण केन्द्र इग्नू परिसर में २१ दिसम्बर २०११ का शुभारम्भ हुआ।

२१ दिसम्बर, २०११ को आधार पंजीकरण केन्द्र इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी पर विशिष्ट पहचान पत्र हेतु लोगों ने अपना नामांकन दर्ज कराया।

इग्नू के अध्ययन केन्द्र २७०८ यू.पी. कालेज, वाराणसी पर इग्नू के नव-प्रवेशित विद्यार्थियों के परिचय सभा का आयोजन दिनांक २१ जनवरी २०१२ को किया गया।

इग्नू के अध्ययन केन्द्र २७१०९ शिक्षा संकाय, कमच्छा परिसर, बी.एच.यू. वाराणसी पर इग्नू के नव-प्रवेशित विद्यार्थियों का परिचय सभा का आयोजन दिनांक २२ जनवरी २०१२ को किया गया ।

इग्नू के अध्ययन केन्द्र २७१६ एस.सी.कॉलेज, बलिया में दिनांक २ फरवरी २०१२ को क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी द्वारा एक प्रेसवार्ता एवं इग्नू के नव प्रवेशित विद्यार्थियों का परिचय सभा का आयोजन।

पद्मश्री डॉ. लालजी सिंह, कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं डॉ. अमित चतुर्वेदी, क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी-ज्ञानवाणी, वाराणसी लाइव फोन इन प्रोग्राम स्थान ऑल इण्डिया रेडियो, वाराणसी दिनांक ८ फरवरी २०१२। इस अवसर पर पद्मश्री डॉ. लालजी सिंह, कुलपति जी ने इग्नू ज्ञानवाणी के प्रसारण के लिये क्षेत्रीय निदेशक को धन्यवाद दिया तथा आभार प्रकट किया। उन्होनें कहा कि ज्ञानवाणी एक सशक्त

माध्यम है जिसके द्वारा ज्ञान का प्रचार प्रसार किया जा सकता है इसको और उच्चस्तरीय बनाने के लिये क्षेत्रीय निदेशक को निर्देश दिये।

प्रयास संस्था के तत्वावधान में मंद बुद्धि बच्चों के लिए दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन मारवाड़ी युवक संघ भवन, लक्सा, वाराणसी में ३० मार्च, २०१२ को किया गया।

९.८. अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र (२००४ में स्थापित) मालवीय भवन संकुल के टैगोर भवन, जो का.हि.वि.वि. का एक प्राचीनतम् भवन है, में स्थित है। यह केन्द्र विदेशी नागरिकों के लिए एकल पटल प्रणाली के अन्तर्गत प्रवेश सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारियाँ एवं विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रमों की उपलब्धता की जानकारियाँ प्रदान करता है। इसके साथ ही यहाँ बीएचयू पोर्टल पर आवेदन पत्र डाउनलोड करने की सुविधा उपलब्ध है।

वर्तमान में ६० देशों के अन्तर्राष्ट्रीय छात्र जिनमें यू.एस.ए., यू.के., कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, ईरान, इराक, चिली, पोलेण्ड, यमन, फिज़ी, यूक्रेन, रूस, बांग्लादेश, नेपाल, और इस्टोनिया आदि के नागरिक इस विश्वविद्यालय में अध्ययनरत हैं।

इस अवधि के दौरान कुल ६३५ छात्र विभिन्न पाठ्यक्रमों में पंजीकृत हुए हैं जिनमें २४६ नवीन छात्र विभिन्न संकायों मे अध्ययन कर रहे हैं। इनमें से १६४ पुरूष एवं ८२ छात्रायें हैं।

सत्र २०११-१२ में ४ अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय/संस्थाओं द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के साथ शैक्षणिक एवं अनुसंधान सहयोग के लिए आपसी सहमति पत्र को अन्तिम स्वरूप प्रदान किया गया और कुछ पर कार्यवाही हो रही है।

उपरोक्त के अतिरिक्त ५० से अधिक विदेशी महानुभावों जिनमें १६ वियतनाम प्रतिनिधि मण्डल एच. ई. डॉ. नगुयेन वान थान द्वारा नेतृत्व, वियतनाम पार्टी केन्द्र समिति के सदस्य, (हई फंग के पार्टी सचिव), हई फंग पीपुल्स कौंसिल के सभापति (एच ई, मंत्री के समकक्ष श्रेणी), उप-पोलिस कमाण्डर, पोलिस नर्सिंग कॉलेज, बैंकॉक, थाइलेण्ड, डॉ.शिबु साह, केन्टुकी विश्वविद्यालय, लेक्सिंग्टन, यू.एस.ए., मि. सतबीर सिंह, मंगोलिया से भारत के राजदूत इत्यादि ने विश्वविद्यालय का भ्रमण किया।

९.९. समाचार पत्र प्रकाशन एवं प्रचार प्रकोष्ठ
प्रेस पब्लिकेशन एण्ड पब्लिसिटी सेल

१. सुविधाएं: सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय में मल्टीमीडिया कक्ष है जो वातानुकूलित है। यहां कम्प्यूटर के साथ इन्टरनेट सुविधा भी उपलब्ध है। कार्यालय में प्रथम तल पर अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित मीडिया कान्फ्रेंस हॉल है, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिन्ट मीडिया के बैठने हेतु आकर्षक टेबल लगाई गयी है। मीडिया हॉल में दो कम्प्यूटर, इन्टरनेट तथा प्रिंटर, फोटोकॉपी एवं फोन के साथ जुड़े हैं। इसके अतिरिक्त पावर प्वाइंट प्रोजेक्टर, टीवी सेट तथा पब्लिक एड्रेस सिस्टम भी उपलब्ध है। यह हॉल वातानुकूलित है। पीपीपी सेल के कक्षों में दो रंगीन फोटोकॉपियर, दो उच्च गति वाले प्रिंटर तथा कम्प्यूटर मौजूद है।

२. पत्रकार वार्ता एवं बैठक: मीडिया कॉन्फ्रेंस हाल में वर्ष २०११-१२ के दौरान लगभग १५ पत्रकार वार्ताओं का आयोजन किया गया जिसमें कुलपति जी की तीन पत्रकार वार्ताएँ हुईं। इसके अतिरिक्त इसमें अन्य बैठकें भी हुई।

३. पूछताछ: सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय में लगभग २००० लोगों ने सीधे आकर पूछताछ किया, जबकि दूरभाष से लगभग ३००० व्यक्तियों ने विश्वविद्यालय के कार्यकलापों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की।

४. प्रेस विज्ञप्ति: गत वर्ष स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर से संचार माध्यमों के लिए विश्वविद्यालय के कार्यकलापों से सम्बन्धित २००० से ज्यादा विज्ञप्तियां लिखित, फैक्स तथा ई-मेल द्वारा जारी की गयी।

५. प्रकाशित समाचार: विभिन्न मुद्रित माध्यमों में विश्वविद्यालय की विकासात्मक गतिविधियों से सम्बन्धित ५००० ाचार विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित किए गए तथा इन्हें क्ट्रॉनिक माध्यमों द्वारा भी प्रसारित किया गया।

६. साक्षात्कार: विभिन्न संचार माध्यमों द्वारा माननीय कुलपति का पन्द्रह एवं विभिन्न अधिकारियों का व्यक्तिगत तौर पर लगभग साक्षात्कार लिया गया।

७. प्रकाशन: वर्ष २०११-१२ के दौरान न्यूज़ तथा स्पेशल कों एवं ब्रोशर पर्यावरण आदि का प्रकाशन किया गया।

८. विज्ञापन: विश्वविद्यालय से सम्बन्धित तथा तदर्थ विज्ञापनों राष्ट्रीय तथा स्थानीय समाचार पत्रों में प्रेस पब्लिकेशन तथा ब्लिसिटी सेल द्वारा किया गया। वर्तमान वर्ष में ३५८ विज्ञापन ाशन हेतु जारी किया गया।

९. विशेष कार्य: इसके अतिरिक्त प्रेस पब्लिकेशन तथा पब्लिसिटी सेल ने देश के लोकसभा की माननीय अध्यक्षा श्रीमती मीरा कुमार द्वारा सम्बोधित ९५वें दीक्षांत समारोह, कुलाधिपति डॉ.कर्ण सिंह जैसे देश के माननीय शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों तथा ख्याति प्राप्त व्यक्तियों के आगमन तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रसिद्ध वार्षिक कार्यक्रमों के आयोजन में मीडिया ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया, जिससे बीएचयू के ब्रांड छवि को देश में स्थापित करने में सफलता प्राप्त हुई।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रेस

का. हि. वि. वि. प्रेस अपने स्थापना वर्ष १९३६ से ही विश्वविद्यालय के विभिन्न महत्वपूर्ण पुस्तक, पुस्तिकाओं, पत्रिकाओं, पंजिकाओं, फार्मों, सर सुन्दरलाल चिकित्सालय एवं परीक्षा नियन्ता कार्यालय के अति आवश्यक मुद्रण कार्यों में अपना योगदान करता आ रहा है। बी.एच.यू. प्रेस के चहारदीवारी का क्षेत्रफल ८०,००० वर्ग फुट तथा भवन का क्षेत्रफल २५,००० वर्ग फुट में फैला हुआ है। स्थापना वर्ष में ही ७ लेटर प्रेस की मशीनें लगायी गयी थीं, वर्तमान में चार ऑफसेट मशीन तथा ४ स्थायी व १३ अस्थायी कर्मचारियों के माध्यम से यह प्रेस विश्वविद्यालय की सेवा कर रहा है।

वित्तीय वर्ष २०११-२०१२ का मुख्य प्रिंटिंग कार्य

सेन्ट्रल हिन्दू ब्वॉयज स्कूल	४०,०००+६०,०००+२०,०००	१६ पेज, ८ पेज, ४ पेज
हेल्थ डायरी (स्टाफ एवं स्टूडेंट)	५०,००० प्रतियाँ	३६ पेज
यू.ई.टी. आवेदन पत्र	१,६५,००० प्रतियाँ	५६ पेज
पी.ई.टी. आवेदन पत्र	७०,००० प्रतियाँ	७८ पेज
यू.ई.टी./पी.ई.टी. लिफाफा	२,६५,००० प्रतियाँ	१+१ पेज
टेलीफोन डायरेक्ट्री	३००० प्रतियाँ	३०० पेज
कॉउन्सिलिंग लेटर	१,००,००० प्रतियाँ	४ पेज
विश्व पंचांग	३१,००० प्रतियाँ	४८ पेज
परीक्षा फार्म (नियमित छात्र)	७२,५०० प्रतियाँ	६ पेज
परीक्षा उत्तर पुस्तिका	४,००,००० प्रतियाँ	३६ पेज
परीक्षा उत्तर पुस्तिका (पूरक एवं प्रैक्टि.)	१,३०,००० प्रतियाँ	१२ पेज
आई.टी.की कॉपी	३४,००० प्रतियाँ	२८ पेज
सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल प्रवेश आवेदन पत्र	५०,००० प्रतियाँ	१६ पेज
परीक्षा उत्तर पुस्तिका, आई.टी.	१,००,००० प्रतियाँ	८ पेज
परीक्षा उत्तर पुस्तिका, आई.एम.एस.	४५,००० प्रतियाँ	१२ पेज
मंत्र पुष्पांजलि पुस्तक	३००० प्रतियाँ	१२४ पेज
गाय कूपन १ लीटर	१०००० किताब (४,००,००० कूपन)	१०
ओ.पी.डी.प्रिस्क्रिप्शन स्लिप रु२०/-	६००० पुस्तक	१०० पेज
ए.आर.-०१	१०,००० किताब	५० पेज
डिग्री फार्मेट	१०,००० प्रतियाँ	५ इम्प्रेशन

बी.एच.यू. प्रेस की आय

स्टेशनरी का विक्रय	रु. ६,३५,२५९.००
स्टेशनरी का विक्रय (नगद)	रु. १,०१,९८८.००
प्रिन्टिग का बिल	रु. १,०६,४६,८४२.००
योग	**रु. १,१३,८४,०८९.००**

९.१०. विद्युत, जल और दूरभाष केन्द्र

विश्वविद्यालय मुख्य परिसर, वाराणसी परिसर के अन्तर्गत वर्तमान समय में छात्र/छात्राओं की बढ़ती हुई संख्या एवं ओबीसी कोटे के अन्तर्गत आने वाले अन्य छात्र/छात्राओं को जल की आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुये उसकी पूर्ति हेतु जल एवं विद्युत आपूर्ति विभाग द्वारा परिसर के पुराने ओवर हेड टैंकों का जीर्णोद्धार कराया गया तथा अन्य चार ५०० किलो लीटर क्षमता वाले ओवर हेड टैंकों का निर्माण कार्य प्रगति पर है, जो सत्र २०१२-१३ के अन्तर्गत अपना कार्य करने लगेंगे तथा पाँच नये नलकूपों का भी निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है जिसका उपयोग प्रारम्भ हो गया है।

परिसर में बढ़ती विद्युत माँग को ध्यान में रखते हुये ३ एम वी ए की अतिरिक्त विद्युत भार की स्वीकृति पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड द्वारा प्राप्त कर ली गयी है जिसकी आपूर्ति हेतु विकास कार्य प्रगति पर है।

राजीव गांधी दक्षिणी परिसर, बरकछा

राजीव गांधी दक्षिणी परिसर अन्तर्गत जल आपूर्ति हेतु लोवर खजुरी बन्धा से परिसर तक लगभग २२०० मीटर तक पाइप लाइन बिछाने का कार्य पूरा करा लिया गया है तथा परिसर अन्तर्गत जल शोधन संयत्र एवं एक ओवर हेड टैंक का कार्य अन्तिम चरण में है। इसके संचालन हेतु एक नये विद्युत सब स्टेशन का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

दूरभाष केन्द्र

बी. एस. एन. एल. के पुराने एक्सचेन्ज के स्थान पर एक नया टेलीफोन एक्सचेन्ज स्थापति किया गया है, इसका रख-रखाव बी.एस. एन.एल.द्वारा किया जा रहा है। यह पूर्ण रुप से इलेक्ट्रॉनिक पद्धति से संचालित है। वर्तमान में एक्सचेन्ज में १००० लाइन का टेलीफोन कनेक्शन का कार्य चल रहा है, जो कि समस्त संस्थानों/ संकायों/ विभागों/ कार्यालयों/ सरसुन्दर लाल चिकित्सालय विभिन्न आवासों तथा विश्वविद्यालय के शिक्षकों व अधिकारियों को टेलीफोन की सुविधा प्रदान करेगा। इसी प्रकार संस्थानों व सर सुन्दर लाल चिकित्सालय में अपने एक्सचेन्ज लगे हुए हैं, जिसका विवरण निम्नलिखित है-

१. सर सुन्दरलाल चिकित्सालय में ४०० लाइनों का एक्सचेन्ज कार्यरत है।
२. केन्द्रीय कार्यालय में १०० लाइनों का एक्सचेन्ज कार्यरत है।
३. प्रौद्योगिकी संस्थान में ५० लाइनों का एक्सचेन्ज कार्यरत है।
४. केन्द्रीय ग्रन्थागार में ७२ लाइनों का एक्सचेन्ज कार्यरत है।

इसी प्रकार विभिन्न विभागों में सुविधानुसार एक्सचेंज लगे हुए हैं।

विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा टेलीकम्यूनिकेशन की अत्याधुनिक सुविधाएँ एवं अत्याधुनिक प्रयासों का विकल्प विचाराधीन है। जिसके परिणाम स्वरूप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को नित्य अपने प्रयासों से बेहतर से बेहतर बनाने की दिशा में टाटा इन्डिकॉम ने ३००० कनेक्शन की टेलीफोन सुविधा विश्वविद्यालय के कार्यालयों, विभागों में शुरू की है, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक अध्यापकों एवं अधिकारियों के कार्यालयों एवं परिसर स्थित उनके आवासों पर दूरभाष की सेवा उपलब्ध कराने का प्रावधान है। इसी संदर्भ में करीब २२१९ टेलीफोन लाइन का कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

९.११. अनुरक्षण (भवन एवं उपकरण)

''विश्वविद्यालय निर्माण विभाग'' का गठन विश्वविद्यालय की स्थापना के समय से ही की गयी है। विश्वविद्यालय निर्माण विभाग विश्वविद्यालय के समस्त भवनों की वार्षिक मरम्मत के साथ-साथ, सड़क, मल एवं जल निकासी की लाइनों का अनुरक्षण, बरसाती पानी की निकासी के लिए नाला का निर्माण एवं पुराने नालों की मरम्मत, सफाई इत्यादि के साथ-साथ विभिन्न संस्थानों, संकायों, विश्वविद्यालय की बाहरी चहारदीवारी एवं आंतरिक चहारदीवारी का निर्माण एवं अनुरक्षण का भी कार्य करता है। साथ ही साथ विश्वविद्यालय के चिरईगाँव, नरायनपुर एवं टिकरी स्वास्थ्य केन्द्र के भवनों का अनुरक्षण कार्य सम्पादित करता है। विश्वविद्यालय के राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, मीरजापुर के भवनों की मरम्मत तथा नवीन भवनों, सड़क, सीवर, चहारदीवारी इत्यादि का निर्माण कार्य भी सम्पादित करता है।

विभाग मुख्य परिसर एवं राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, मीरजापुर में स्वीकृत नवीन भवनों का निर्माण कार्य भी अपने स्तर पर तथा केन्द्र व प्रदेश सरकार के उपक्रमों द्वारा सम्पादित कराता है। विभाग विभिन्न मदों में स्वीकृत अतिरिक्त निर्माण कार्य, भवनों के नवीनीकरण के कार्य के साथ-साथ विशेष मरम्मत का कार्य भी करता है। विभाग सड़क, सीवर, चहारदीवारी इत्यादि का निर्माण कार्य भी सम्पादित कराता है। विभाग आंतरिक साज-सज्जा, योजना निर्माण के साथ-साथ फर्नीचर के खरीद का भी कार्य करता है।

विश्वविद्यालय निर्माण विभाग, विश्वविद्यालय के सभी मुख्य राष्ट्रीय पर्व- गणतन्त्र दिवस, स्वतन्त्रता दिवस, गाँधी जयन्ती के साथ विश्वविद्यालय के मुख्य आयोजनों- विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह, सरस्वती पूजन समारोह, कृष्ण जन्माष्टमी समारोह के साथ-साथ विभिन्न संस्थानों, संकायों, महाविद्यालय, विद्यालयों एवं छात्रावासों के वार्षिक समारोहों, स्थापना समारोहों में भी व्यापक भूमिका निभाता है एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न दीक्षान्त समारोहों, सेमिनारों एवं संगोष्ठियों में भी आयोजकों के आवश्यकतानुसार कार्य सम्पादित करता है। विश्वविद्यालय में विभिन्न पाठ्यक्रमों के नियामक संस्थाओं के निरीक्षण के समय विभाग उनकी मान्यता प्राप्त करने के लिए एवं जारी रखने के लिए अपने संसाधन द्वारा सहायता प्रदान करता है। विश्वविद्यालय के मुख्य भवनों जैसे- मालवीय भवन, टैगोर भवन, सुन्दरम लाज, भारत कला भवन, स्वतन्त्रता भवन, उडुप्पा प्रेक्षागृह, पं० ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह, कला संकाय प्रेक्षागृह, श्री विश्वनाथ मन्दिर का अनुरक्षण एवं वातानुकूलन का कार्य भी सस्पादित करता है।

विभाग द्वारा सभी छात्रावासों, शैक्षिक भवनों व आवासीय भवनों की मरम्मत के साथ-साथ छतों पर जल अवरोधी उपचार, रसोईघरों व शौचालयों का नवीनीकरण व बाहरी दीवारों की रंगाई-पुताई इत्यादि का कार्य व्यापक तौर पर कराता जाता है।

विभाग ने सत्र २०११-१२ में अतिरिक्त स्वीकृत रू०१,८८,००,५८५.०० के साथ-साथ भवनों के रख-रखाव के लिए स्वीकृत नियमित बजट रू०१.१८ करोड़ का भी पूरा सदुपयोग विभिन्न भवनों के रख-रखाव में किया।

वित्तीय वर्ष २०११-१२ में स्वीकृत धनराशि विभिन्न मद में निम्नवत् दिया गया है:-

१.	विशेष मद	रू० २५.३७ करोड़
२.	विश्वविद्यालय परिसर में भवनों की मरम्मत हेतु आवर्ती मद	रू० ३.०६ करोड़
३.	विकास मद	रू० ९३.०० करोड़
४.	अन्य पिछड़ा वर्ग के लिये बढ़ी छात्र संख्या के लिये भवन निर्माण मद	रू० ३०१.१४ करोड़ (रू० २७४.०६६ करोड़ + रू० २७.१४ करोड़)

उपर्युक्त मद का सन् २०११-१२ में पूर्ण उपयोग किया गया।

नीचे दिये गये कुछ मुख्य निर्माण कार्य वित्तीय वर्ष २०१०-११ में कराये जा रहे हैं। जिस कार्य के नाम तथा धनराशि की विवेचना सारिणी में दिये गये हैं।

अन्य पिछड़ा वर्ग कोटा के अन्तर्गत
केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग

क्र.सं.	भवन/कार्य का नाम	प्लिंथ एरिया	आंकलित कीमत	कार्य स्थिति
१.	कला संकाय में पुस्तकालय एवं संकाय कक्ष का निर्माण	३४७७ वर्ग मीटर	७६५.०० लाख	कार्य प्रगति पर
२.	कला संकाय के ओल्ड पीजी भवन और इंडोलॉजी के बीच में व्याख्यान कक्ष का निर्माण कार्य	२१५० वर्ग मीटर	४४०.०० लाख	कार्य प्रगति पर
३.	कला संकाय में २२५ कमरे के भवन (बिरला हॉस्टल के पीछे, धन्वन्तरि हॉस्टल के बगल में) का निर्माण कार्य	८००० वर्ग मीटर	१२००.०० लाख	कार्य प्रगति पर
४.	सामाजिक विज्ञान संकाय में नये व्याख्यान कक्ष संकुल का निर्माण कार्य	२५७८ वर्ग मीटर	५२८.०० लाख	कार्य प्रगति पर
५.	आचार्य नरेन्द्र देव हॉस्टल में ५८ कमरे के भवन का निर्माण कार्य	२५८४ वर्ग मीटर	३६०.०० लाख	कार्य प्रगति पर
६.	राजा राममोहन राय हॉस्टल में ५८ कमरे के भवन का निर्माण कार्य	२५८४ वर्ग मीटर	३६०.०० लाख	कार्य प्रगति पर
७.	विधि संकाय में व्याख्यान कक्ष १५ अध्यापक क्यूबिकल का निर्माण कार्य	१४४० वर्ग मीटर	३१६.८० लाख	कार्य प्रगति पर
८.	प्रबन्ध शास्त्र संकाय में पुस्तकालय व संकाय कक्ष का निर्माण कार्य	१४०० वर्ग मीटर	३०५.०० लाख	कार्य प्रगति पर
९.	चिकित्सा विज्ञान संस्थान में ३४९ कमरे के छात्रावास का निर्माण कार्य	११२१९ वर्ग मीटर	२४६८.१८ लाख	कार्य प्रगति पर
१०.	चिकित्सा विज्ञान संस्थान के रूइया मेडिकल ब्लॉक में १०० कमरे के छात्रावास का निर्माण कार्य	३५०० वर्ग मीटर	७७०.०० लाख	कार्य प्रगति पर
११.	कृषि विज्ञान संस्थान में चार तल्ले के भवन संकुल साथ में पठन कक्ष, लैब तथा संकाय कक्ष का निर्माण कार्य	५८४० वर्ग मीटर	१२८४ लाख	कार्य प्रगति पर

१२.	कृषि विज्ञान संस्थान में ४०० व्यक्ति क्षमता वाले ऑडिटोरियम का निर्माण कार्य	२२०९ वर्ग मीटर	४८६ लाख	कार्य प्रगति पर
१३.	विज्ञान संकाय में व्याख्यान कक्ष संकुल तथा १८ व्याख्यान हाल का निर्माण कार्य	५४५६ वर्ग मीटर	१२००.३२ लाख	कार्य प्रगति पर
१४.	भूगर्भ विज्ञान विभाग में एक नये भवन का निर्माण कार्य	६९९ वर्ग मीटर	१५४ लाख	कार्य प्रगति पर
१५.	भूगोल विभाग में एक नये भवन का निर्माण कार्य	११३४.३८ वर्ग मीटर	२४९.५६ लाख	कार्य प्रगति पर
१६.	रसायन विज्ञान विभाग में एक नये भवन व साइकिल स्टैंड का निर्माण कार्य	२४१९ वर्ग मीटर	५३२ लाख	कार्य प्रगति पर
१७.	वनस्पति विज्ञान विभाग में एक नये भवन का निर्माण कार्य	१०२७.८० वर्ग मीटर	२२६.१२ लाख	कार्य प्रगति पर
१८.	भू-भौतिकी विभाग में साइकिल स्टैण्ड के ऊपर एक नये भवन का निर्माण कार्य	५३९ वर्ग मीटर	११८.७८ लाख	कार्य प्रगति पर
१९.	संगणक विज्ञान विभाग में एक नये भवन का निर्माण कार्य	५३७ वर्ग मीटर	१२४.८५ लाख	कार्य प्रगति पर
२०.	जे.सी. बोस छात्रावास के पीछे ३१४ कमरे के एक नये छात्रावास का निर्माण कार्य	४७३५.०० वर्ग मीटर	१०४१ लाख	कार्य प्रगति पर
२१.	एसएनपीजी छात्रावास के पीछे महिला छात्रावास का निर्माण कार्य	१४०० वर्ग मीटर	३०८ लाख	कार्य प्रगति पर
२२.	प्रौद्योगिकी संस्थान में व्याख्यान कक्ष संकुल-१ का निर्माण कार्य	३९८२ वर्ग मीटर	८७६ लाख	कार्य प्रगति पर
२३.	प्रौद्योगिकी संस्थान में व्याख्यान कक्ष संकुल-२ का निर्माण कार्य	२७२१ वर्ग मीटर	५९८.६२ लाख	कार्य प्रगति पर
२४.	प्रौद्योगिकी संस्थान में व्याख्यान कक्ष संकुल-३ का निर्माण कार्य	२१०६.३१ वर्ग मीटर	४६३.३८ लाख	कार्य प्रगति पर
२५.	फार्मेसी विभाग के पीछे ६ लैब का निर्माण कार्य	६८५ वर्ग मीटर	१०३ लाख	कार्य प्रगति पर
२६.	बायोकेमिकल विभाग में नये भवन का निर्माण कार्य	२१४५ वर्ग मीटर	३२२ लाख	कार्य प्रगति पर
२७.	मैकेनिकल इंजीनियरिंग में कामन कक्ष और पठन कक्ष का निर्माण कार्य	२५७० वर्ग मीटर	५६५ लाख	कार्य प्रगति पर
२८.	संगणक इंजीनियरिंग विभाग में एक लैब का निर्माण कार्य	५४४ वर्ग मीटर	११९ लाख	कार्य प्रगति पर
२९.	बायोकेमिकल विभाग में नये भवन का निर्माण कार्य	१२२५ वर्ग मीटर	२६९ लाख	कार्य प्रगति पर
३०.	१८६ कमरे के हॉस्टल ब्लॉक का निर्माण कार्य	६३७७ वर्ग मीटर	९५६ लाख	कार्य प्रगति पर
३१.	१०५ कमरे के हॉस्टल ब्लॉक का निर्माण कार्य	३६७२ वर्ग मीटर	५५० लाख	कार्य प्रगति पर
३२.	३८९ कमरे के हॉस्टल ब्लॉक का निर्माण कार्य	१३३४२ वर्ग मीटर	२००१ लाख	कार्य प्रगति पर
३३.	९० कमरे के विवाहित छात्राओं के छात्रावास का निर्माण कार्य	१८७१ वर्ग मीटर	४११ लाख	कार्य प्रगति पर

मे० हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स कन्स्ट्रक्शन लिमिटेड

क्र. सं.	भवन/कार्य का नाम	प्लिंथ एरिया	आंकलित कीमत	कार्य स्थिति
१.	मेडिसिनल केमेस्ट्री विभाग में व्याख्यान भवन का निर्माण कार्य	६०० वर्ग मीटर	१३२.०० लाख	कार्य प्रगति पर
२.	वाणिज्य संकाय में व्याख्यान कक्ष तथा पार्किंग आदि का निर्माण कार्य	९६३.६४ वर्ग मीटर	२१२ लाख	कार्य प्रगति पर
३.	विज्ञान संकाय के जन्तु विज्ञान विभाग के भवन का विस्तार तथा साइकिल स्टैण्ड का निर्माण कार्य	१३०० वर्ग मीटर	२८६ लाख	कार्य प्रगति पर
४.	विज्ञान संकाय के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के भवन के विस्तार का निर्माण कार्य	११६२ वर्ग मीटर	१९१.७७ लाख	कार्य प्रगति पर
५.	संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय में पुस्तकालय एवं सेमिनार भवन का निर्माण कार्य	९९० वर्ग मीटर	२२०.०० लाख	कार्य पूर्ण
६.	प्रौद्योगिकी संस्थान में मैटेरियल साइंस विभाग भवन के दोनों दिशा में एक नये ब्लॉक का निर्माण कार्य	७३६ वर्ग मीटर	११५ लाख	कार्य प्रगति पर
७.	प्रौद्योगिकी संस्थान में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के संकाय कक्ष का निर्माण कार्य	१२०० वर्ग मीटर	१८० लाख	कार्य प्रगति पर
८.	प्रौद्योगिकी संस्थान में केमिकल इंजीनियरिंग विभाग के संकाय कक्ष का निर्माण कार्य	४७५ वर्ग मीटर	७२ लाख	कार्य प्रगति पर
९.	प्रौद्योगिकी संस्थान में १०७ कमरों के गांधी स्मृति महिला छात्रावास का निर्माण कार्य	३९९० वर्ग मीटर	५९८.५० लाख	कार्य प्रगति पर

विश्वविद्यालय निर्माण विभाग

क्र. सं.	भवन/कार्य का नाम	प्लिंथ एरिया	आंकलित कीमत	कार्य स्थिति
१.	विज्ञान संकाय के वनस्पति विज्ञान विभाग में संकाय कक्ष का निर्माण कार्य	१३५ वर्ग मीटर	२०.२५ लाख	कार्य प्रगति पर

ग्यारहवीं योजना में केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, मे० हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स कन्स्ट्रक्शन लिमिटेड तथा विश्वविद्यालय निर्माण विभाग द्वारा कराये जा रहे कार्य

क्र. सं.	भवन/कार्य का नाम	आंकलित कीमत	कार्य स्थिति
१.	फिज़िकल एजुकेशन विभाग के लिए भवन निर्माण कार्य	९९९.५० लाख	कार्य प्रगति पर
२.	स्थापना स्थल में एक तले डेन्टल कालेज भवन का निर्माण कार्य	८२८.५८ लाख	कार्य प्रगति पर
३.	तुलसीदास कालोनी में १६ लेक्चरर ग्रेड आवास का निर्माण कार्य	२००.०० लाख	कार्य प्रगति पर
४.	नवीन गर्ल्स हॉस्टल का विस्तार का कार्य	२४०.०० लाख	कार्य प्रगति पर
५.	कृषि विज्ञान संस्थान में गर्ल्स हॉस्टल का निर्माण कार्य	२६६.०० लाख	कार्य प्रगति पर
६.	विवाहित महिला छात्रावास का विस्तार कार्य	४००.०० लाख	कार्य प्रगति पर
७.	चिकित्सा विज्ञान संस्थान के पीछे दो तले व्याख्यान कक्ष संकुल का निर्माण कार्य, तीन तले के प्रोविजन के साथ	९००.०० लाख	कार्य प्रगति पर
८.	कृषि विज्ञान संस्थान में जेनेटिक्स व प्लांट ब्रीडिंग तथा उद्यान विभाग के लिए भवन का निर्माण कार्य	१२०.२८ लाख	कार्य प्रगति पर
९.	प्रथम तल व द्वितीय तल कार्यकारी महिला छात्रावास का निर्माण कार्य	१००.०० लाख	कार्य प्रगति पर

चल रहे मुख्य निर्माण काय

कम्यूनिटी सेन्टर

विवाहित चिकित्सक छात्रावास

ट्रॉमा सेन्टर

दन्त विज्ञान संकाय का भवन

१०.	केन्द्रीय विद्यालय में दो तले अध्ययन कक्ष का निर्माण कार्य	२५०.०० लाख	कार्य प्रगति पर
११.	एकेडमिक स्टॉफ कॉलेज में अतिथि भवन का निर्माण कार्य	४९.९४ लाख	कार्य प्रगति पर
१२.	कम्यूनिटी सेन्टर हॉल का निर्माण कार्य	२५०.०० लाख	कार्य प्रगति पर
१३.	जोधपुर कालोनी में कर्मचारी स्वास्थ्य केन्द्र- प्रथम का निर्माण कार्य	१२१.०० लाख	कार्य प्रगति पर
१४.	सर सुन्दरलाल चिकित्सालय में नये पेडियाट्रिक मेडिसिन भवन के भूतल का निर्माण कार्य	१००.०० लाख	पूर्ण
१५.	सर सुन्दरलाल चिकित्सालय में नये पेडियाट्रिक मेडिसिन भवन के प्रथम तल का निर्माण कार्य	९५.५० लाख	कार्य प्रगति पर
१६.	डेन्टल सर्जरी भवन ओपीडी के द्वितीय तल पर एक बड़े हॉल का निर्माण कार्य	९.७० लाख	पूर्ण
१७.	डेन्टल सर्जरी भवन ओपीडी के स्टेयरकेस के पास द्वितीय तल का निर्माण कार्य	११.५० लाख	पूर्ण
१८.	रेडियो डायग्नोसिस रेडिएशन व ब्लॅड बैंक के द्वितीय तल भवन का निर्माण कार्य	५२.२५ लाख	कार्य प्रगति पर
१९.	मुख्य आरक्षाधिकारी कार्यालय पर मेस का निर्माण कार्य	४८.८२ लाख	पूर्ण
२०.	विश्राम कुटीर के प्रथम तल का निर्माण कार्य	२४.५० लाख	पूर्ण
२१.	स्वागत कक्ष एवं पूछताछ केन्द्र का निर्माण कार्य	३.३० लाख	पूर्ण
२२.	रेडियो थेरेपी मेडिसिन भवन के प्रथम तल का निर्माण कार्य	७५.५० लाख	कार्य प्रगति पर
२३.	लक्ष्मणदास अतिथि गृह के पास नये अतिथि गृह का निर्माण कार्य	२२४.०० लाख	कार्य प्रगति पर
२४.	मुख्य आरक्षाधिकारी कार्यालय के पीछे सेक्योरिटी बैरक के द्वितीय तल का निर्माण कार्य	५५.०० लाख	पूर्ण
२५.	सर सुन्दरलाल चिकित्सालय में द्वितीय तल ओपीडी भवन पर एआरटी भवन का निर्माण कार्य	५०.०० लाख	पूर्ण
२६.	सर सुन्दरलाल चिकित्सालय में क्षार-सूत्र थेरेपी भवन का निर्माण कार्य	५.६३ लाख	कार्य प्रगति पर
२७.	सर सुन्दरलाल चिकित्सालय में कैश कलेक्शन भवन का निर्माण कार्य	१.०७ लाख	पूर्ण
२८.	आयुर्वेद संकाय के क्रिया-शरीर विभाग में नये विभागीय भवन का निर्माण	१३०.०० लाख	पूर्ण

कमच्छा कॉम्पलेक्स, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

कमच्छा कॉम्पलेक्स में शिक्षा संकाय, सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज़ स्कूल, सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल, रणवीर संस्कृत पाठशाला, कोल्हुआ प्राईमरी स्कूल, बैजनत्था कालोनी, डॉ० ए०बी० छात्रावास व डॉ० आर०पी० छात्रावास इत्यादि।

वित्तीय वर्ष २०११-१२ में कमच्छा कम्पलेक्स में निम्नलिखित कार्य पूर्ण हुआ।

क्र. सं.	भवन/कार्य का नाम	आंकलित कीमत	कार्य स्थिति
१.	शिक्षा संकाय के विस्तार का कार्य	२२०.०० लाख	पूर्ण
२.	सेन्ट्रल हिन्दू ब्वायज़ स्कूल में ५० कमरे के छात्रावास का निर्माण कार्य	१६२.०० लाख	पूर्ण
३.	सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल में पठन कक्ष तथा अध्यापक केबिन का निर्माण कार्य	५९.२४५ लाख	पूर्ण
४.	सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल के वाणिज्य भवन के प्रथम तल का निर्माण कार्य	२५.४९ लाख	पूर्ण
५.	रणवीर संस्कृत पाठशाला में पठन कक्ष का निर्माण कार्य	४०.०० लाख	पूर्ण

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, मीरजापुर

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा लगभग २७०० एकड़ भूमि में फैला हुआ है। यहाँ पर शैक्षणिक कार्य का शुभारम्भ सन् २००६ ई० में हुआ है। अधिक संख्या में भवन, छात्रावास, व्याख्यान कक्ष, महिला छात्रावास, प्रशासनिक भवन, केन्द्रीय पुस्तकालय भवन, किसान आवास, टिशू कल्चर भवन, अतिथि गृह, बीज भण्डार, जलपान गृह इत्यादि पूर्णरूप से तैयार है। कुछ पहले से पूर्ण हो चुके हैं और वर्तमान में इस्तेमाल भी हो रहा है। प्रशिक्षण क्रिया-कलाप २००५-०६ से चल रहा है। राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा में बहुत ही तीव्र गति से विकास कार्य चल रहा है। भवन निर्माण, रोड, जल-आपूर्ति और विद्युतीकरण का कार्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय- डाइवर्सिटी पार्क, बड़ा बीज भण्डार इत्यादि कार्य भी शीघ्रता से किया जा रहा है।

वित्तीय वर्ष २०११-१२ में राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा में निम्नलिखित कार्य पूर्ण हुआ।

क्र.सं.	कार्य का नाम	लागत	स्थिति
१.	एथलेटिक ट्रैक का निर्माण कार्य	रु० ३३-०० लाख	पूर्ण
२.	पेवेलियन भवन का निर्माण कार्य	रु० १००.०० लाख	कार्य प्रगति पर
३.	आयुर्वेद प्लार्टेशन की चहारदीवारी का निर्माण कार्य	रु० ५०.०० लाख	कार्य अवरूद्ध है।

विश्वविद्यालय यंत्र समुच्चय विज्ञान केन्द्र

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा विश्वविद्यालय विज्ञान यंत्र समुच्चय केन्द्र (यूसिक) लेवल-II वर्ष १९८० में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में केन्द्रीय सुविधा के रूप में स्थापित किया गया। यूसिक लेवल-II एक गैर-शैक्षणिक विभाग के अन्तर्गत आता है।

क्रिया-कलाप

विश्वविद्यालय विज्ञान यंत्र समुच्चय केन्द्र सम्बन्धित सेवाएं त्वरित प्रदान करता है जैसे -

- इलेक्ट्रिकल/ इलेक्ट्रॉनिक्स/ मैकेनिकल/ एनलिटिकल यंत्रों/ उपकरणों का मरम्मत एवं रख-रखाव करना।
- विभिन्न संस्थानों/संकायों/विभागों के यंत्रों/उपकरणों का डिज़ाइन/निर्माण करना।
- विश्वविद्यालय के विभागों में शोधरत छात्र/छात्राओं का प्रोजेक्ट तैयार करना इत्यादि।

संकायों/संस्थानों तथा इकाईयों इत्यादि की सूची जहाँ यूसिक कर्मचारी सेवाएं देते हैं -

- प्रौद्योगिकी संस्थान
- विज्ञान संकाय
- बी०एच०यू० प्रेस
- चिकित्सा विज्ञान संस्थान
- कृषि विज्ञान संस्थान

अधिकाधिक संख्या में कीमती उपकरणों/मशीनों के रख-रखाव तथा मरम्मत का कार्य केन्द्र द्वारा पूरा किया गया।

विश्वविद्यालय विज्ञान यंत्र समुच्चय केन्द्र द्वारा किये गये कार्यों का विवरण

१ अप्रैल २०११ से ३१ मार्च २०१२ के अंतर्गत यूसिक द्वारा किये गये मरम्मत कार्यों का विवरण तालिका तथा बार ग्राफ के माध्यम से दिया जा रहा है -

क्र. सं.	विभाग/संकाय का नाम	कार्यों की संख्या
१.	प्रौद्योगिक संस्थान	२८
२.	विज्ञान संकाय	१५
३.	बी०एच०यू० प्रेस	११
४.	चिकित्सा विज्ञान संस्थान	४
५.	कृषि विज्ञान संस्थान	३
६.	विद्युत एवं जल आपूर्ति विभाग	१
कुल		**६२**

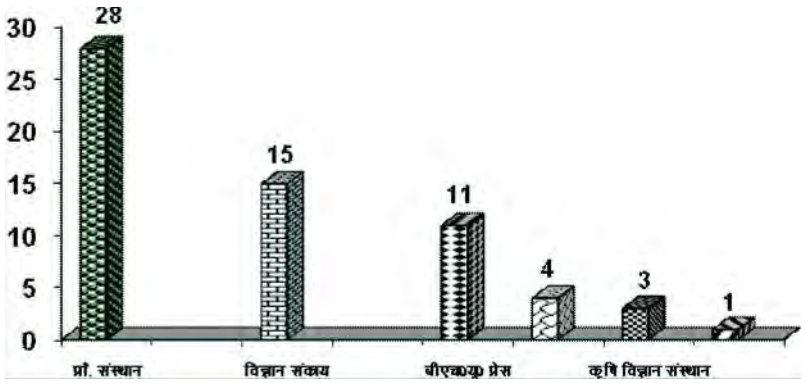

संकाय/विभागानुसार : यूसिक द्वारा किये गये कार्य (१ अप्रैल २०११ से ३१ मार्च २०१२ तक)

यूसिक लेवल-II की कार्य पद्धति

प्रथम चरण : यंत्रों/उपकरणों की मरम्मत हेतु सम्बन्धित विभागों से पत्र के साथ-साथ उपकरण/यंत्र का मगांया जाना।

नोट : भारी उपकरणों/मशीनों का विभाग में जाकर मरम्मत का कार्य करना।

द्वितीय चरण : टेक्नीशियन द्वारा सम्बन्धित उपकरणों के खराबी का जांच करना।

तृतीय चरण : सम्बन्धित विभाग को उपकरण के मरम्मत के लिए अवयवों की सूची भेजना।

चतुर्थ चरण : सम्बन्धित विभाग द्वारा अवयवों (कम्पोनेंट) को देना।

पंचम चरण: यंत्रों/उपकरणों के मरम्मत के पश्चात सम्बन्धित विभाग से कार्य संतोषजनक का प्रमाण-पत्र यूसिक लेवल-२ को दिया जाता है।

भविष्य की योजनाएँ

आवश्यकतानुसार डिजाइन, डेवलपमेंट तथा आधुनिक यांत्रिक पद्धति से मरम्मत कार्य।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा टेक्निकल तथा स्नातकोत्तर अनुसंधान स्तर पर 'इन्स्ट्रूमेंटेशन' के तहत प्रशिक्षण का आयोजन कराना, जिससे विद्यार्थी पूरे विश्वास के साथ बेहतर प्रयोग कर लाभान्वित हो सकें।

विश्वविद्यालय तथा समीप के व्यवसायों के लिये यंत्रों का प्रेक्षण करना।

बी०एससी० डिप्लोमा इन इन्स्ट्रूमेंटेशन के स्तर पर स्पेशल पाठ्यक्रम/प्रशिक्षण इत्यादि का आयोजन करने के लिए यूसिक के दिशा-निर्देशन में आवश्यक कार्यवाही की जाये, जिससे भविष्य में आगे बढ़सके।

९.१२. स्वास्थ्य देखभाल

सर सुन्दरलाल अस्पताल

सर सुन्दरलाल अस्पताल सन् १९२६ में ९६ बिस्तरों की क्षमता के साथ स्थापित किया गया। अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त अब इसकी क्षमता १२०० बिस्तरों वाला हो गया है। यह पूर्वांचल का एक मात्र चिकित्सालय है जहाँ पर सम्पूर्ण पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश एवं पड़ोसी देश नेपाल के रेफरल रोगी आते हैं। यह अस्पताल लगभग २० करोड़ जनसंख्या को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराता है।

चिकित्सा विज्ञान संस्थान में एक ही छत के नीचे आयुर्वेद एवं आधुनिक चिकित्सा द्वारा दो विधाओं की चिकित्सा पद्धतियों से जनता की सेवा की जाती है। अभी हाल में प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के अन्तर्गत एक अलग प्रखण्ड निर्माणाधीन है जो ट्रॉमा रोगियों के लिए समर्पित है, जो शीघ्र ही बनकर तैयार हो जायेगा। यहाँ पर ४४ क्लीनिक एवं ओपीडी, ५१ अन्तरंग वार्ड्स हैं। अस्पताल में १००० बिस्तर, आधुनिक चिकित्सा में तथा १८६ बिस्तर आयुर्वेद प्रखण्ड में इसके साथ २२ ऑपरेशन थिएटर और आधुनिक चिकित्सा एवं आयुर्वेद में अलग से प्रसव कक्ष हैं। अस्पताल शिक्षण, प्रशिक्षण और सेवा उपलब्ध कराने में प्रयुक्त होने वाली क्लीनिकल सामग्री के मामले में बहुत समृद्ध है। अस्पताल के पास योग्य एवं अनुभव प्राप्त चिकित्सकों की टीम है। अस्पताल में अत्याधुनिक समकालीन नैदानिक सुविधाओं एवं विशेष निदान सुविधा के साथ चिकित्सा एवं सर्जरी विधा में विशेष विशेषज्ञता वाली सुविधाएं उपलब्ध है। यहाँ पर आपातकालीन सेवाएं, जाँच सुविधा, दवा की दुकान और सी.टी. स्कैन की सेवाएं २४ घण्टे उपलब्ध है।

विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निम्न विशेष क्लीनिक चलाए जा रहे है-

वेल बेबी क्लीनिक, टीकाकरण केन्द्र, जेरियाट्रिक क्लीनिक, डि-एडिक्शन क्लीनिक, वोण्ड क्लीनिक, डाट्स क्लीनिक, एडॉलसेन्ट एण्ड मेनोपॉज़ल क्लीनिक, हेमैटोलॉजी क्लीनिक, ग्लूकोमा क्लीनिक,

क्षार-सूत्र क्लीनिक, एआरटी क्लीनिक, पोस्टपार्टम क्लीनिक, डायबेटिक कॉम्पलीकेशन क्लीनिक, पेडियाट्रिक हेमैटोलॉजी, ऑकोंलॉजी यूनिट एवं थैलेसीमिया डे केयर यूनिट, रिमैटोलॉजी, रिमैटोलॉजी क्लीनिक एण्ड डायबेटिक क्लीनिक।

अस्पताल अनेक विशिष्ट थीरैप्यूटिक एवं नैदानिक सुविधाओं के साथ लैस है जैसे- कैंसर रोगियों के लिए रेडियोथिरेपी सेवाएं, किडनी फेल में हेमोडायलिसिस, पथरी रोग के लिए लीथोट्रिप्सी सेवाएं, १६ बिस्तरों वाला आधुनिक आई.सी.यू. यूनिट, कार्डियक पेस मेकर लैब, नियोनेटोलॉजी/नियोनेटल सर्जरी आई.सी.यू., दन्त रोग इकाई, फिजियोथिरेपी एवं रिहैबिलिटेशन यूनिट, पेडियाट्रिक आई.सी.यू., इण्डोस्कोपी एवं पेडियाट्रिक यूरोलॉजी यूनिट, पेडियाट्रिक आई.सी.यू., सर्जिकल ऑकोंलॉजी में लेज़र ओ.टी., न्यूरो नेवीगेशन सिस्टम, न्यूरोइण्डोस्कोपी, ए.आर.टी. सेन्टर, पोस्टपार्टम प्रोग्राम, आयुर्वेदिक पंचकर्म थिरेपी एवं लीच थिरेपी, नेत्र कोष एवं कार्निया ट्रान्सप्लान्ट यूनिट आदि।

अस्पताल के आँकड़े

सत्र २०११ में अस्पताल के आँकड़े इस प्रकार हैं : कुल बहिरंग रोगी संख्या- १०२९९९५, कुल एडमिशन संख्या – ४९ ७६५, कुल आपरेशन संख्या-२७१४१, कुल जन्म संख्या – २४५४, कुल मृत्यु संख्या – २८००, आपातकालीन बहिरंग उपस्थिति- ८३८०४, कुल जाँच संख्या- १०२१०५९, कुल स्वयंसेवी रक्तदान – १६८९, कुल रक्त के स्थान पर रक्तदान – ४३८०, कुल संख्या एम एल सी – ६८७, कुल संख्या आई.सी.यू. में एडमिशन -१००८।

विकासपरक कार्य : १. कैश कलेक्शन एवं रजिस्ट्रेशन काउण्टर के लिए अलग भवन। २. श्री श्यामलाल भुवालका आई आपरेशन थिएटर का निर्माण। ३. स्पेशल वार्ड के ए और बी प्रखण्ड का मरम्मत व जीर्णोद्धार। ४. एआरटी सेन्टर का निर्माण।

५. स्वागत एवं पूछताछ केन्द्र की स्थापना। ६. आयुर्वेद भवन के फर्श का जीर्णोद्धार। ७. दन्त विज्ञान के बहिरंग का विस्तार व जीर्णोद्धार। ८. नये शवशाला के लिए कमरे का निर्माण। ९. आपातकालीन चिकित्सा में नये आपातकालीन वार्ड एवं एम.डी.आर.टी.बी. वार्ड का निर्माण। १०. फॉरेन्सिक चिकित्सा एवं एनाटॉमी विभाग के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मानक शवशाला का निर्माण। ११. रोगियों के परिचरों के लिए सर सुन्दरलाल चिकित्सालय के भूतल का जीर्णोद्धार।

हमें गर्व है कि अस्पताल ने क्षेत्रीय लोगों की इच्छा एवं आशा के अनुरूप अपना सर्वोत्तम योगदान दिया और उसे पूरा कर उनका विश्वास प्राप्त किया। हम वादा करते हैं कि अस्पताल भविष्य में भी सर्वोत्तम सेवाएं उपलब्ध करायेगा।

विश्वविद्यालय छात्र स्वास्थ्य निगरानी संकुल

विश्वविद्यालय के पास सभी छात्रावासी छात्रों और नगर में निवास करने वाले छात्रों के लिए एक सशक्त और बहुआयामी स्वास्थ्य

निगरानी सेवा प्रणाली उपलब्ध है। छात्रों के स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं के लिए एक स्वतंत्र ईकाई जिसका नाम ''यूनिवर्सिटी स्टूडेण्ट हेल्थकेयर कॉम्प्लेक्स'' है, जो विश्वविद्यालय परिसर के लगभग मध्य भाग में छात्रावास मार्ग पर स्थित है। इसके माध्यम से छात्रों को सेवायें प्रदान की जाती है। वस्तुत: यहाँ विभिन्न चिकित्सा विषयों में स्नातकोत्तर योग्यता वाले विशेषज्ञ चिकित्सकों के माध्यम से छात्रों के स्वास्थ्य की देखरेख की जाती है। यह व्यवस्था मुख्य चिकित्साधिकारी की निगरानी एवं प्रशासकीय नियंत्रण में प्रशिक्षित एवं समर्पित पैरामेडिकल और नर्सिग स्टाफ के सहयोग से पूरी की जाती है।

विश्वविद्यालय छात्र स्वास्थ्य निगरानी संकुल में समस्त छात्रों को कार्य दिवस बुधवार को छोड़कर क्लिनिकल सेवायें प्रदान की जाती है। अवकाश की अवधि में ये सेवायें सर सुन्दर लाल अस्पताल के अनुसार संचालित की जाती है। सभी छात्रों को बहुआयामी स्वास्थ्य सुविधायें बहिरंग और अन्तरंग रोगियों के रूप में प्रदान की जाती है। जिसमें शल्य विधियाँ, उच्चस्तरीय जाँच जैसे एमआरआई, सीटी स्कैन, इसीजी इत्यादि हैं। सन्दर्भित चिकित्सा नि:शुल्क की जाती है। प्रत्येक छात्र से उनकी चिकित्सकीय निगरानी के निमित्त स्टूडेन्ट हेल्थ वेलफेयर स्कीम के अन्तर्गत वार्षिक शुल्क के रूप में मात्र रु.३५०/- लिया जाता है।

विश्वविद्यालय छात्र स्वास्थ्य निगरानी संकुल का मुख्य इकाई और कार्यालय विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में स्थित है। इसके साथ ही दक्षिणी परिसर के छात्रों के लिए रा०गा०द० परिसर, बरकछा में एक छोटा डिस्पेन्सरी इकाई और शिक्षा संकाय के छात्रों के लिए कमच्छा (नगर में) स्थित है।

विश्वविद्यालय छात्र स्वास्थ्य निगरानी संकुल में उपलब्ध सेवाये/सुविधायें:

१. नैदानिकी सेवायें

(क) सामान्य बहिरंग रोगी परामर्श

(ख) डे केयर सेन्टर

(ग) शल्य सेवायें

सर सुन्दर लाल अस्पताल में नवसृजित सुविधाएँ

केन्द्रीय पंजीकरण एवं नगद संग्रहण

उच्च तकनीक मोबाइल आईसीयू एम्बुलेन्स

उच्च तकनीक कैथ लैब

(घ) आर्थोपेडिक सेवायें

(ङ) श्वसन क्लीनिक

(च) विशिष्ट चिकित्सा परामर्श

(छ) शल्य कक्ष चिकित्सा सेवायें

(ज) फार्मेसी सेवायें

(झ) ड्रेसिंग सेवायें

(ञ) इंजेक्शन और टीकाकरण सेवायें

(ट) दंत नैदानिक

(ठ) सेन्टर ऑफ क्लीनिकल इन्वेस्टिगेशन

(ड) होमियोपैथी क्लीनिक

अन्य सेवायें

(क) चिकित्सा प्रमाण पत्र

(ख) आपातकालीन दवाओं का स्थानीय क्रय

(ग) अन्तरंग चिकित्सा मांग प्रतिपूर्ति

डे केयर सेन्टर

(ग) शल्य सेवायें

(घ) आर्थोपेडिक सेवायें

(ङ) अन्य विश्वविद्यालयी घटनाओं/स्पोर्ट्स के नैदानिक

जून २३, २०१२ को माननीय कुलपति डॉ.लालजी सिंह जी ने संकुल में डिज़िटल एक्स-रे यूनिट का उद्घाटन किया।

भविष्य की योजनायें

स्वास्थ्य शिक्षा

मनोचिकित्सा परामर्श/तनाव प्रबंधन क्लीनिक

अन्तरंग सुविधा (४० बिस्तरों का आइसोलेशन वार्ड)

विश्वविद्यालय कर्मचारी स्वास्थ्य निगरानी संकुल उपलब्ध सेवायें सुविधायें

१. क्लीनिकल सेवायें : प्रात: ८.०० बजे से अपराह्न २.३० बजे तक

(क) सामान्य बहिरंग रोगी परामर्श

(ख) शल्य परामर्श

(ग) आर्थोपेडिक सेवायें

(घ) विशेषज्ञ चिकित्सा परामर्श

(ङ) फार्मेसी सेवायें

(च) ड्रेसिंग सेवायें

(छ) इंजेक्शन व टीकाकरण सेवायें

(ज) चिकित्सा प्रमाण पत्र

(झ) चिकित्सा दावा प्रतिपूर्ति (अन्तरंग व बहिरंग रोगी)

(ञ) रक्त एवं मूत्र इत्यादि परीक्षण

(ट) नियमित/पेंशनर/फेमिली पेंशन इत्यादि के लिए स्वास्थ पुस्तिका

(ठ) कर्मचारियों के अवकाश प्राप्ति के बाद यूईएचसीसी से सम्बन्धित नोड्यूज़ प्रमाण पत्र

२. वार्षिक बहिरंग रोगी उपस्थिति - १.७ लाख (लगभग)

९.१३. विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद्

विश्वविद्यालय क्रीड़ा संघ को उच्चीकृत करके वर्तमान विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् की स्थापना सन् १९७५ में की गई। इसका उद्देश्य, विश्वविद्यालय के छात्रों में खेल भावना जागृत करना तथा उनके लिये विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन तथा भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली द्वारा संचालित अन्तर-विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिता तथा दूसरे विभिन्न खेल संघो द्वारा आयोजित अन्य प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिये विश्वविद्यालय खेल दलों का चयन एवं उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था, विश्वविद्यालय से सम्बद्ध यूनिट के सदस्यों के सहयोग से करना है।

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् विश्वविद्यालय के विभिन्न खेल दलों के लिए प्रशिक्षण शिविर, उप-निदेशक, सहायक निदेशक एवं प्रशिक्षक के सहयोग से आयोजित करता है ।

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् से सम्बद्ध खेल

१. धनुर्विद्या (पु०)
२. एथलेटिक्स (पु० एवं म०)
३. बैडमिन्टन (पु० एवं म०)
४. बॉस्केटबॉल (पु०एवं म०)
५. बॉक्सिंग (पु०)
६. शतरंज (पु० एवं म०)
७. क्रिकेट (पु०)
८. फुटबॉल (पु०)
९. जिम्नास्टिक्स एवं मलखम्भ (पु० एवं म०)
१०. हैण्डबॉल(पु० व म०)
११. हॉकी (पु०)
१२. कबड्डी (पु० एवं म०)
१३. खो-खो (पु० एवं म०)
१४. भारोत्तोलन एवं शरीर सौष्ठव (पु० एवं म०)
१५. नौकायन (पु० एवं म०)
१६. स्क्वैश रैकेट (पु०)
१७. तैराकी (पु० एवं म०)
१८. टेबल टेनिस (पु० एवं म०)
१९. टेनिस (पु० एवं म०)
२०. वॉलीबॉल (पु० एवं म०)
२१. कुश्ती (पु०)

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् के खेल प्रांगण

१ एम्पिथियेटर मैदान

१. एथलेटिक्स (पु० एवं म०)
२. बास्केटबॉल (पु० एवं म०)
३. बॉक्सिंग (पु०)
४. क्रिकेट (पु०)
५. फुटबॉल (पु०)
६. हैण्डबॉल (पु० एवं म०)
७. हॉकी (पु०)
८. कबड्डी (पु० एवं म०)
९. खो-खो (पु० एवं म०)
१०. स्क्वैश रैकेट (पु०)
११. टेबल टेनिस (पु० एवं म०)
१२. टेनिस (पु० एवं म०)
१३. वॉलीबॉल (पु० एवं म०)

२. छत्रपति शिवाजी व्यायामशाला

१. जिम्नास्टिक एवं मलखम्भ (पु० एवं म०)
२. पावर लिफ्टिंग (पु० एवं म०) और भारोत्तोलन एवं शरीर सौष्ठव (पु०)
३. कुश्ती (पु०)

विश्वविद्यालय के कर्मचारी, छात्र एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न खेल दलों के सदस्यों को इस व्यायामशाला में जिम्नास्टिक्स, मलखम, कुश्ती, भारोत्तोलन, शरीर सौष्ठव, एवं योगासन सम्बन्धित सुविधाएं उपलब्ध हैं।

३. जे०के० बैडमिंटन हॉल

१. बैडमिंटन (पु० एवं म०)

यहाँ विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों के साथ साथ विभिन्न संकाय/संस्थान/कॉलेज को अपने अर्न्तकक्षा एवं अन्तर विभाग बैडमिंटन प्रतियोगिता आयोजित करने एवं प्रशिक्षण की सुविधा उनके अनुरोध पर प्राप्त है।

४. तरण-ताल

१. तैराकी एवं डाइविंग (पु० एवं म०) एवं वॉटर पोलो (पु०)

२. विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षण एवं गैर-शिक्षण कर्मचारी तथा उनके पाल्यों को प्रशिक्षित करने एवं आधारभूत तैराकी के कौशल को सिखाने हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जाते हैं।

५. महाराजा डा० विभूतिनारायण सिंह अन्तरंग क्रीड़ांगन

बहुउद्देशीय इस अन्तरंग क्रीड़ांगन में विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् द्वारा विश्वविद्यालय के छात्रों, शैक्षणिक एवं गैर- शैक्षणिक कर्मचारियों के लिए चार बैडमिंटन कोर्ट एवं बॉक्सिंग रिंग की सुविधा उपलब्ध है।

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् द्वारा सत्र २०११-१२ में आयोजित की गयी प्रतियोगिताएं

अन्तर-संकाय

१. अन्तर-संकाय फुटबॉल (पु०)	१५-१०-२०११ से २०-१०-२०११

अन्तर-विश्वविद्यालय

१.	पूर्वी क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालय क्रिकेट (पु०) प्रतियोगिता	२१-१२-२०११ से ३१-१२-२०११
२.	अखिल भारतीय अन्तर-विश्वविद्यालय क्रिकेट (पु०) प्रतियोगिता	०२-०१-२०१२ से ०७-०१-२०१२

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् द्वारा आयोजित अन्य गतिविधियाँ

ग्रीष्म कालीन प्रशिक्षण शिविर में सात विभिन्न खेलों का आयोजन किया जाता है।

पूर्वी क्षेत्र अन्तर-विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भागीदारी सत्र २०११-१२

क्रम संख्या	खेल का नाम	पुरुष/महिला	प्रतियोगिता का स्थान	उपलब्धि
१.	बास्केटबॉल	पुरुष	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय	चतुर्थ स्थान
२.	बास्केटबॉल	महिला	वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर	विजेता
३.	क्रिकेट	पुरुष	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय	विजेता
४.	फुटबॉल	पुरुष	सम्बलपुर विश्वविद्यालय	सहभागिता
५.	हॉकी	पुरुष	महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी	तृतीय स्थान
६.	कबड्डी	पुरुष	महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी	सहभागिता
७.	खो-खो	पुरुष	उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर	सहभागिता
८.	खो-खो	महिला	गुरु घासी दास विश्वविद्यालय, विलासपुर	सहभागिता
९.	टेबुल टेनिस	पुरुष	विश्वभारतीय विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन	सहभागिता
१०.	टेनिस	पुरुष/महिला	के. आई. आई. टी. , भुवनेश्वर	द्वितीय स्थान
११.	वॉलीबॉल	पुरुष	एमज़ी. ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट	विजेता

अखिल भारतीय अन्तर-विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भागीदारी सत्र २०११-१२

क्रम संख्या	खेल का नाम	पुरुष/ महिला	प्रतियोगिता का स्थान	उपलब्धि
१.	तीरंदाजी	पुरुष	पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला	सहभागिता
२.	एथलेटिक	पुरुष/ महिला	राजीव गाँधी विश्वविद्यालय	सहभागिता
३.	बास्केटबॉल	पुरुष	राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	सहभागिता
४.	बास्केटबॉल	महिला	कुरुक्षेत्र क्षेत्र विश्वविद्यालय	सहभागिता
५.	मुक्केबाजी	पुरुष	लवली विश्वविद्यालय	सहभागिता
६.	क्रिकेट	पुरुष	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय	रजत पदक
७.	क्रास कन्ट्री	पुरुष/ महिला	एम.डी. विश्वविद्यालय, रोहतक	सहभागिता
८.	जिम्नास्टिक	पुरुष/ महिला	जीएनडी. विश्वविद्यालय, अमृतसर	एक रजत पदक
९.	हॉकी	पुरुष	जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय	सहभागिता

१.	जूडो	पुरुष	तिलक महाराष्ट्र, पूणे	सहभागिता
२.	तैराकी	पुरुष / महिला	कलकत्ता विश्वविद्यालय	एक रजत पदक
३.	स्क्वैश रैकेट	पुरुष	पूणे विश्वविद्यालय	सहभागिता
४.	टेनिस	पुरुष	मनिपाल विश्वविद्यालय	सहभागिता
५.	वॉलीबॉल	पुरुष	डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर	सहभागिता
६.	कुश्ती	पुरुष / महिला	चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा	सहभागिता

विश्वविद्यालय क्रिकेट टीम के आठ खिलाडियों तथा एक कोच को पूर्वी क्षेत्र क्रिकेट टीम से विज़्ज़ी ट्रॉफी प्रतियोगिता के लिए चयनित किया गया। प्रतियोगिता फरवरी २०१२ को मुम्बई में सम्पन्न हुई।

९.१४. छात्र अधिष्ठाता द्वारा आयोजित कार्यक्रम

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की संस्थापना का मूल मंत्र है कि अध्ययन के साथ-साथ चरित्र निर्माण भी हो। संस्थापक पूज्य पंडित मदन मोहन मालवीयजी के अनुसार ज्ञान व चरित्र दोनों का मेल होने पर संसार में मान और गौरव प्राप्त होगा। जीवन का सर्वांगीण विकास शिक्षा का मूलमंत्र है। शिक्षा की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि विद्यार्थी अपनी भावनात्मक, शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों का विकास करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। सच्चाई और ईमानदारी से अपना जीवन निर्वाह कर सके, कलापूर्ण सौहार्द जीवन व्यतीत कर सके, समाज में आदरणीय व विश्वासपात्र बन सके। देश भक्ति व राष्ट्रीयता से, जो मनुष्य को उच्चकोटि की सेवा को प्रेरित करती हो, अपने जीवन को अलंकृत कर राष्ट्र की सेवा कर सके।

तदनुरूप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अनेक विधाओं से उत्सव, समारोह एवं विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित की जाती हैं, जिससे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को उचित प्रोत्साहन मिले तथा वे एक चरित्रनिष्ठ युवा के रूप में देश की सेवा कर सकें। सत्र २०११-१२ में आयोजित क्रियाकलापों का विवरण निम्नवत है :

उत्सव एवं समारोह प्रकोष्ठ के अधीन आयोजित कार्यक्रम

१. शैक्षणिक सत्र २०११-१२ का शुभारम्भ (०७.०६.२०११) : विश्वविद्यालय की परम्परा के अनुरूप दिनांक ०७ जुलाई २०११ को प्रात: ९.०० बजे परिसर स्थित श्री विश्वनाथ मंदिर में नये शैक्षणिक सत्र के शुभारम्भ के अवसर पर माननीय कुलपति महोदय ने रुद्राभिषेक एवं पूजन किया। इस समारोह में विश्वविद्यालय के अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी व छात्र उपस्थित रहे तथा नये शैक्षणिक सत्र की सफलता हेतु भगवान विश्वनाथ से प्रार्थना की।

२. स्वतंत्रता दिवस समारोह (१५.०८.२०११) : भारत के ६३वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एम्पीथियेटर मैदान में एन.सी.सी. के कैडेटों द्वारा भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय कुलपति महोदय ने प्रात: ९ बजे राष्ट्रध्वज फहराया व राष्ट्रगान के साथ तिरंगे को सलामी दी। एन.सी.सी. ग्रुप हेडक्वार्टर के कर्नल आर.सी. कटोच के साथ माननीय कुलपति ने एन.सी.सी. कैडेटों के परेड का निरीक्षण किया। तत्पश्चात् समारोह में उपस्थित दर्शकों को कुलपति महोदय ने संबोधित किया। एन.सी.सी. के आर्मी, नेवी व एयर विंग के छात्रों ने विविध प्रदर्शन किये। राष्ट्रगान व वन्देमातरम् की प्रस्तुति संगीत व मंचकला संकाय द्वारा की गयी। उक्त अवसर पर राष्ट्रभक्ति गीत व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

३. श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह (२१.०८.२०११) : दिनांक २१ अगस्त २०११ को मालवीय भवन में सायं ५ बजे से श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. शिवजी उपाध्याय, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया तथा विधिवत पूजन के उपरान्त कुलपति महोदय ने सभी को प्रसाद वितरित किया। हर वर्ष की भाँति छात्रावासों में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर झांकी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया व जिसके परिणाम निम्नवत रहे :-

कीर्ति कुन्ज छात्रावास को प्रथम पुरस्कार, न्यू. पी. जी. एजुकेशन छात्रावास द्वितीय पुरस्कार तथा मैनेजमेन्ट छात्रावास को तृतीय पुरस्कार मिला। प्रोत्साहन पुरस्कार त्रिवेणी संकुल, रामकिंकर व कृषि महिला छात्रावास को प्रदान किया गया। राजीव गांधी दक्षिणी परिसर स्थित छात्रावासों की प्रतियोगिता में शिवालिक छात्रावास प्रथम, विन्ध्यवासिनी छात्रावास द्वितीय, विन्ध्याचल छात्रावास तृतीय तथा न्यू ब्वॉयज छात्रावास को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी क्रम में विद्यालय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में सेंट्रल हिन्दू ब्वॉयज स्कूल प्रथम, सेंट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल द्वितीय व श्री रणवीर संस्कृत विद्यालय को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

४. शिक्षक दिवस समारोह (०५.०९.२०११) : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जयंती के अवसर पर ५ सितंबर २०११ को विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस समारोह मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. पृथ्वीश नाग, कुलपति, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ ने विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त शिक्षकों को अंग वस्त्र, स्मृति चिह्न तथा सम्मान पत्र द्वारा सम्मानित किया। मालवीय भवन में समारोह की अध्यक्षता करते हुए माननीय रेक्टर, प्रो. बी.डी. सिंह जी ने डॉ.

सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला।

५. गांधी जयन्ती (०२.१०.२०११) : २ अक्टूबर २०११ को गांधी जयन्ती के अवसर पर विश्वविद्यालय का मुख्य आयोजन पूर्वाह्न १० बजे से मालवीय भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विख्यात गाँधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता पद्मभूषण श्री चण्डी प्रसाद भट्ट ने अपने विचार व्यक्त किये। समारोह में सर्वधर्म प्रार्थना के साथ ही राष्ट्रपिता का प्रिय भजन 'वैष्णव जन.....' की प्रस्तुति की गयी। गांधी जयन्ती के अवसर पर कुलपति महोदय ने विश्वविद्यालय के ३९ प्रज्ञाचक्षु छात्रों को शिक्षण सहायता के रूप में रू. ५००० हजार नगद प्रदान किये तथा छात्र कल्याण योजना के अन्तर्गत १३ अतिविकलांग विद्यार्थियों को नि:शुल्क तिपहिया साईकिल प्रदान की। मालवीय भवन प्रांगण में आचार्य कुल एवं सर्वधर्म संघ के संयुक्त तत्वावधान में गांधी जीवन मूल्य प्रदर्शनी भी लगायी गयी।

६. राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (११.११.२०११) : भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री श्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के जन्म दिवस दिनांक ११ नवम्बर २०११ को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रुप में मनाया गया। कला संकाय प्रेक्षागृह में अंतर-संकाय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ''वर्तमान भारतीय परिदृश्य में सबके लिये शिक्षा की अनुकूलता बढ़ी है'' विषय पर समस्त संकाय के विद्यार्थियों ने भाग लिया व विजयी प्रतिभागियों को कला संकाय प्रमुख द्वारा पुरस्कृत किया गया। समारोह में अध्यापक, छात्र व कर्मचारी उपस्थित रहे।

७. महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की पुण्य तिथि (१४.११.२०११) : राष्ट्रीय हिन्दी पंचांग के अनुसार मार्गशीर्ष, कृष्णपक्ष, चतुर्थी, गुरुवार दिनांक १४ नवम्बर २०११ को महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की पुण्य तिथि प्रात: १०.०० बजे मालवीय भवन में आयोजित की गयी। इस अवसर पर संस्थानों के निदेशक, संकायों के प्रमुख, प्राचार्या महिला महाविद्यालय, छात्र अधिष्ठाता, मुख्य आरक्षाधिकारी सहित अध्यापकों व छात्रों द्वारा महामना की प्रतिमा पर पुष्प चढ़ाकर श्रद्धांजली अर्पित का तद्उपरान्त शांति एवं गीता का पाठ किया गया तथा दो मिनट का मौन रखा गया।

८. महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जयंती (११.१२.११ - २५.१२.११) : विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के जयंती का पखवाड़ा दिनांक ११ दिसंबर २०११ से २५ दिसंबर २०११ तक बड़े ही हर्षोल्लास से सम्पन्न किया गया। मालवीय जयंती समारोह का उद्घाटन ११ दिसंबर २०११ को प्रात: १० बजे माननीय कुलपति डॉ. लालजी सिंह के द्वारा किया गया व सप्ताहव्यापी श्रीमद्भागवत पारायण एवं श्रीमद्भागवत् प्रवचन का भी शुभारम्भ हुआ। मालवीय जयंती पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ - तत्काल चित्र कला प्रतियोगिता, फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता, लोकगीत व समूहगान प्रतियोगिता, हिन्दी व अंग्रेजी में वाद -विवाद प्रतियोगिता, शास्त्रार्थ प्रतियोगिता, संगीतमय कण्ठस्थ गीता पाठ प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। इस दौरान भजन व भक्ति संगीत व वेद शाखा स्वाध्याय का भी आयोजन किया गया। २५ दिसंबर, २०११ को मालवीय स्मृति पुष्प प्रदर्शनी का शुभारम्भ भी माननीय कुलपति डॉ. लालजी सिंह जी द्वारा किया गया तथा सायं काल मालवीय दीपावली का भी आयोजन किया गया। महामना के १५०वीं जन्म जयंती वर्ष के अवसर पर राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में भी उक्त सभी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

९. स्वामी विवेकानन्द जयंती (१२.०१.२०११) : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र व छात्र अधिष्ठाता कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक १२ जनवरी २०११ को स्वामी विवेकानन्द जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रुप में मनाया गया। अपराह्न २ बजे से डॉ. ए.बी. हाल, कला संकाय में आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता के रुप में स्वामी नीलकण्ठानंद जी महाराज, श्री रामकृष्ण सेवाश्रम, वाराणसी ने स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर अपने विचार व्यक्त किये। विशेष वक्ता के रुप में डॉ. एस.के. शर्मा ने अपने विचारों से आयोजन की शोभा बढ़ाई। समारोह की अध्यक्षता प्रो. बी. एम. शुक्ल, पूर्व कुलपति, गोरखपुर विश्वविद्यालय ने किया।

१०. गणतंत्र दिवस समारोह (२६.०१.२०१२) : दिनांक २६ जनवरी, २०१२ को एम्फीथियेटर के मैदान में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया। प्रात: ९.०० बजे एन.सी.सी. के ग्रुप कमांडर ब्रिगेडियर प्रवीन जोशी ने समारोह के मुख्य अतिथि माननीय कुलपति डॉ. लालजी सिंह का स्वागत किया। तदुपरान्त तिरंगा झंडा फहराया गया तथा राष्ट्रगान के उपरान्त कुलपति जी ने परेड का निरीक्षण किया।

श्री नमन अग्रवाल, इंटर्नशिप, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि को उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक ज्ञान, उत्तम साधारण बोध एवं सर्वोत्तम आचरण के लिये पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा स्वर्ण पदक तथा प्रमाण-पत्र द्वारा अलंकृत किया गया।

श्री रविकान्त तिवारी, आचार्य प्रथम वर्ष, वैदिक दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि. को ''राष्ट्रनिर्माणे महामनसां योगदानम्'' विषय पर संस्कृत में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने हेतु महामना संस्कृत पुरस्कार प्रदान किया गया।

शारीरिक शिक्षा विभाग, कला संकाय, का.हि.वि.वि. के बी.पी.एड. के छात्र श्री प्रांजन शाही को सर्वोत्तम एथलिट के रुप में मेज़र एस.एल. दर स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

३ यू.पी. आर्म्ड स्क्वार्डन एन.सी.सी, का.हि.वि.वि. के UPSD/१०/२८२१४७ SUO विनय कुमार सिंह को सर्वोत्तम एन.सी.सी कैडेट के रुप में मेज़र एस.एल. दर रजत पदक से अलंकृत किया गया।

समारोह में निम्नलिखित गैर शिक्षण कर्मचारियों को उनके सराहनीय सेवाओं के लिये ''सर्वोत्तम कर्मचारी पुरस्कार'' प्रदान किया गया :

- श्री देवाशीष दास अनुभाग अधिकारी, सर सुन्दर लाल चिकित्सालय
- श्री शिव भजन राम, कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, रसायन विभाग, विज्ञान संकाय
- श्री राम कृपाल, माली, उद्यान विशेषज्ञ कार्यालय

महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की १५०वीं जयन्ती वर्ष पर निम्न को विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया गया :-

- सुश्री सोनल सिंह, बी.एस.सी.(ए.जी.) तृतीय वर्ष, कृषि विज्ञान संस्थान
- श्री डी.वी.एल.के.डी.पी. वेनु गोपाल, वरिष्ठ निजी सहायक, कृषि विज्ञान संस्थान
- श्री परमात्मा नन्द सिंह, चपरासी, स्कूल आफ बायोमेडिकल इंजिनीयरिंग, प्रौद्योगिकी संस्थान
- श्री शिव भजन राम, कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, रसायन विभाग, विज्ञान संकाय

११. स्थापना दिवस समारोह (२८.०१.२०१२) : परम्परा के अनुसार बसंत पंचमी के अवसर पर विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह का आयोजन दिनांक २८ जनवरी, २०१२ को प्रात: ७ बजे स्थापना स्थल पर किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम स्थापना स्थल पर हवन-पूजन करने के उपरान्त सरस्वती पूजन माननीय कुलपति महोदय द्वारा किया गया। विश्वविद्यालय के अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र एवं छात्र परिषद् के सदस्य भी पूजन समारोह में उपस्थित रहे। विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न छात्रावासों में भी माँ सरस्वती की पूजा का आयोजन किया गया। कुलपति, कुलसचिव, छात्र अधिष्ठाता तथा मुख्य आरक्षाधिकारी महोदय भी छात्रावासों में आयोजित पूजन में उपस्थित थे।

१२. अम्बेडकर जयंती (१४.०४.२०१२) : राधाकृष्णन् सभागार, कला संकाय में दिनांक १४ अप्रैल, २०१२ को अपराह्न ३.०० बजे से भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर जयंती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. तुलसी राम, जवाहर लाल विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने अपना विशिष्ट व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में प्रो. तुलसी राम जी ने भारतीय संविधान में डॉ. भीम राव अम्बेडकर जी के योगदान पर बृहद् रूप से प्रकाश डाला।

छात्रों के बहुमुखी व्यक्तित्व विकास एवं कल्याण के कार्यक्रम

अंतर-संकाय निबंध प्रतियोगिता (२३.०९.२०१०) : छात्रों की लेखन क्षमता व ज्ञान वर्धन हेतु छात्र अधिष्ठाता कार्यालय द्वारा अंतर संकाय निबंध लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाता है। दिनांक २६ सितंबर २०११ को **''गाँधी का स्वराज विषयक चिंतन''** विषय पर ३००० शब्दों में अपने स्वयं के लिखे निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं विजयी छात्रों को गाँधी जयंती २०११ के अवसर पुरस्कृत किया गया।

अंतर-संकाय वाद विवाद प्रतियोगिता (२८.०९.२०११): छात्रों के बहुमुखी प्रतिभा के विकास हेतु छात्र अधिष्ठाता कार्यालय द्वारा समय समय पर प्रासंगिक एवं समसामयिक विषयों पर अंतर-संकाय वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। दिनांक २८ सितंबर, २०११ को कला संकाय प्रेक्षागृह में ''जनलोकपाल द्वारा भ्रष्टाचार से मुक्ति संभव है'' विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं विजयी प्रतिभागियों को गाँधी जयंती २०११ के अवसर पुरस्कृत किया गया।

पूर्वी क्षेत्र अन्तर्विश्वविद्यालयीय युवा महोत्सव (१६.१२.२०११ -२०.१२.२०११): पूर्वी क्षेत्र अर्न्तविश्वविद्यालयीय युवा महोत्सव २०११ भारतीय विश्वविद्यालय संघ तथा युवा मामले एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वाधान में तेजपुर विश्वविद्यालय असम में दिनांक १६ से २० दिसम्बर २०११ तक आयोजित किया गया। डॉ. विजय कपूर व डॉ. ओनिमा रेड्डी के नेतृत्व में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ४० सदस्यीय दल ने प्रतियोगिता में ४ स्वर्ण पदक, ४ रजत पदक तथा ३ कांस्य पदक प्राप्त किया और विश्वविद्यालय को उप विजेता घोषित किया गया। म्यूजिक व फाईन आर्ट इवेन्ट में चैम्पियन होकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पूर्वी क्षेत्र अन्तर्विश्वविद्यालयीय युवा महोत्सव में उप विजेता रहा।

अन्तर्विश्वविद्यालयीय राष्ट्रीय युवा महोत्सव (२२.०१.२०१२ - २६.०१.२०१२) : अन्तर्विश्वविद्यालयीय राष्ट्रीय युवा महोत्सव २०१२ भारतीय विश्वविद्यालय संघ तथा युवा मामले एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वाधान में नागपुर विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र में दिनांक २२ से २६ जनवरी २०१२ तक आयोजित किया गया। डॉ. ओनिमा रेड्डी के नेतृत्व में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ३० सदस्यीय दल ने प्रतियोगिता भाग लिया।

राष्ट्रीय वाद विवाद प्रतियोगिता (१०.०२.२०१२ - ११.०२.२०१२) : सरदार भगवान सिंह पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीच्यूट, देहरादून (यू.टी.यू.) द्वारा दिनांक १०-११ फरवरी २०१२ को आयोजित राष्ट्रीय वाद विवाद प्रतियोगिता में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के श्री विवेक विशाल व श्री शम्भू देवाचार्य ने भाग लिया तथा ३५ विश्वविद्यालयों के प्रतिभागियों के मध्य सर्वश्रेष्ठ दल के रुप में विजयी रहे। इन विद्यार्थियों को सर्व विजेता की ट्राफी व नकद पुरस्कार प्राप्त हुये।

अन्तर-संकाय युवा महोत्सव ''स्पंदन-२०१२'' (२५.०२.२०१२ - २९.०२.२०१२) : दिनांक २५ से २९ फरवरी, २०१२ तक अंतर-संकाय युवा महोत्सव ''स्पंदन-२०१२'' का आयोजन किया गया। इस आयोजन में सभी १५ संकाय, महिला महाविद्यालय, राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर व संबद्ध महाविद्यालयों के कुल २१ टीमों के लगभग २२०० छात्रों ने भाग लिया। छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु इस आयोजन में संगीत, नृत्य, नाट्य, दृश्य कला व साहित्यिक स्पर्धाओं को शामिल किया गया। दिनांक २५ फरवरी २०१२ को उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात संतूर वादक श्री भजन सपोरी ने अपने वादन की प्रस्तुति कर दर्शकों का मन मोह लिया। माननीय कुलपति डॉ. लालजी सिंह जी ने मुख्य अतिथि को अंगवस्त्र व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

दिनांक २९ फरवरी, २०१२ को सायं एम्फीथियेटर प्रांगण में

आयोजित स्पंदन समापन समारोह की मुख्य अतिथि प्रख्यात लोक गायिका श्रीमती मालिनी अवस्थी ने विद्यार्थियों को अपना आशीर्वचन व पुरस्कार वितरित किया।

छात्रावास उत्कृष्टता पुरस्कार-२०१२ (२४.०४.२०१२ - २६.०४.२०१२) : छात्रावासों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा तथा स्वच्छता के साथ सुविधाओं की उपलब्धता को बनाये रखने के लिये प्रतिवर्ष छात्रावास उत्कृष्टता पुरस्कार प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष दिनांक २४-२६ अप्रैल, २०१२ को छात्रावास उत्कृष्टता पुरस्कार प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल ६६ महिला व पुरुष छात्रावासों को शामिल किया गया। प्रतियोगिता के निष्पक्ष निर्णय के लिये विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कालेजों के शिक्षकों, व अन्य संस्थानों के सम्मानित व्यक्तियों को निर्णायक मण्डल के सदस्य के रुप में रखा गया। प्रतियोगिता में छात्रावास रख-रखाव, स्वच्छता, उपलब्ध सुविधाएँ, खेल, छात्रों की संतुष्टि आदि विषयों पर मूल्यांकन किया गया। इस प्रतियोगिता का परिणाम निम्नलिखित है -

पुरुष छात्रावास :

१.	बिरला 'अ' छात्रावास	प्रथम पुरस्कार
२.	डॉ. एस.राधाकृष्णन् छात्रावास	द्वितीय पुरस्कार
३.	भाभा छात्रावास	तृतीय पुरस्कार
४.	बिरला 'स' छात्रावास	प्रोत्साहन पुरस्कार
५.	बाल गंगाधर तिलक छात्रावास	प्रोत्साहन पुरस्कार
६.	डालमिया छात्रावास	प्रोत्साहन पुरस्कार

महिला छात्रावास :

१.	डॉ. जे.सी. बोस महिला छात्रावास	प्रथम पुरस्कार
२.	गार्गी महिला छात्रावास	द्वितीय पुरस्कार
३.	नवीन महिला छात्रावास	तृतीय पुरस्कार
४.	एस.एन.पी.जी महिला छात्रावास	प्रोत्साहन पुरस्कार
५.	गाँधी स्मृति महिला छात्रावास	प्रोत्साहन पुरस्कार

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर

१.	विन्ध्याचल छात्रावास	प्रथम पुरस्कार
२.	शिवालिक छात्रावास	द्वितीय पुरस्कार
३.	न्यू ब्वायज़ छात्रावास	तृतीय पुरस्कार
४.	विन्ध्यवासिनी महिला छात्रावास	प्रोत्साहन पुरस्कार

छात्र-अधिष्ठाता कार्यालय द्वारा सह-आयोजित कार्यक्रम

लाला लाजपत राय पाठशाला में नि:शुल्क गर्म वस्त्रों का वितरण

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी व उनके तत्कालीन सहयोगियों द्वारा विश्वविद्यालय में समाज के पिछड़े व दलित वर्ग के उत्थान हेतु सुन्दर बगिया में लाला लाजपत राय पाठशाला का निर्माण कराया गया। वर्तमान में इस पाठशाला में विश्वविद्यालय व आसपास रहने वाले गरीब परिवारों के लगभग ३२२ विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। सभी विद्यार्थियों को पाठशाला में पूर्णत: नि:शुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। इन विद्यार्थियों के परिवार की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर माननीय कुलपति महोदय के आदेशानुसार नि:शुल्क पठन सामग्री वितरित की गई। गत २८ दिसंबर २०११ को माननीय कुलपति महोदय ने स्वयं अपने हाथों से बच्चों को नि:शुल्क स्वेटर पहनाया।

छात्र कल्याण योजना के अधीन विद्यार्थियों को प्रदान की जाने वाली सुविधाएं

१. छात्र कल्याण योजना के अंन्तर्गत दिनांक २ अक्टूबर २०१२ को मालवीय भवन में आयोजित गाँधी जयंती के अवसर पर माननीय कुलपति महोदय ने विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् ३९ प्रज्ञाचक्षु विद्यार्थियों को पठन सामग्री क्रय किये जाने हेतु रु ५०००/- प्रति छात्र प्रदान किये।
२. छात्रावासों में रहने वाले समस्त प्रज्ञाचक्षु छात्रों को उनके संबंधित मेसों में २ अक्टूबर २०११ से ३० अप्रैल २०१२ तक नि:शुल्क भोजन उपलब्ध कराया गया। विकलांग छात्रों को भी उनके संबंधित मेसों में रियायती भोजन प्रदान किया गया। निर्धन व मेधावी छात्रों को छात्र कल्याण योजना के अधीन विश्वविद्यालय स्थित श्री अन्नपूर्णा भोजनालय में नि:शुल्क मध्याह्न एवं रात्रि भोजन प्रदान किया गया। इस योजना के अन्तर्गत मुख्य परिसर व राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर के लगभग २०० विद्यार्थी लाभान्वित हुए।
३. छात्र कल्याण योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के अति विकलांग विद्यार्थियों को तिपहिया साईकिल प्रदान किये जाने का प्रावधान है। इस वर्ष गाँधी जयंती के अवसर पर माननीय कुलपति महोदय ने १३ अति विकलांग विद्यार्थियों को नि:शुल्क तिपहिया साईकिल प्रदान किया।
४. विभाग स्तर पर छात्रों के लिये आयोजित किये जाने वाले सेमिनार, कार्यशाला व व्याख्यान हेतु विभिन्न विभागों को रु ५०००/-प्रति के दर से कुल रु २ लाख का आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया।
५. परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों को कान्फ्रेन्स, सेमिनार, कार्यशाला आदि में शामिल होने व पंजीकरण हेतु छात्र कल्याण योजना के अंतर्गत आर्थिक सहायता प्रदान की गई।
६. केन्द्रीय ग्रन्थालय में प्रज्ञाचक्षु विद्यार्थियों से संबंधित पठन सामग्री की ऑडियो रिकार्डिंग का कार्य छात्रों द्वारा किया गया। रिकार्डिंग के कार्य में संलग्न छात्रों को अर्न व्हाइल लर्न योजना के समान पारिश्रमिक प्रदान किया गया।

९.१५. अभिरुचि केन्द्र

छात्र अधिष्ठाता के पर्यवेक्षण में विश्वविद्यालय में अभिरुचि केन्द्र का संचालन होता है। विश्वविद्यालय के छात्र एवं कर्मचारियों को कक्षा एवं कार्यालय के उपरान्त विभिन्न क्षेत्रों में सायंकाल प्रशिक्षण दिया जाता है। शैक्षणिक सत्र २०११-१२ में अभिरुचि केन्द्र में छाया चित्रण, इलेक्ट्रॉनिक, प्रतिशीतन एवं वातानुकूलन, वीडियो एडिटिंग, छाया चित्रण (विशेष) की निर्धारित सीटों पर विद्यार्थियों को पंजीकृत कर प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

विश्वविद्यालय पर्वतारोहण केन्द्र

विश्वविद्यालय पर्वतारोहण केन्द्र की स्थापना सन् १९७१ में हुई। यह केन्द्र भारतीय पर्वतारोहण फाउण्डेशन, नई दिल्ली से सम्बद्ध है।

इस केन्द्र की स्थापना छात्रों के शारीरिक, मानसिक और साहसिक विकास के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किया गया। केन्द्र का संक्षिप्त उद्देश्य निम्न है :

१. छात्रों में दल नेतृत्व की भावना का विकास।
२. मातृभूमि तथा पर्यावरण के प्रति प्रेम की भावना विकसित करना।
३. युवाओं का साहसिक एवं सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेना।
४. पर्वतारोहण से प्राकृतिक, दुर्गम एवं प्राचीन स्थलों का आनन्द लेना।

उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये केन्द्र ने सत्र २०११-१२ के अन्तर्गत एक प्राथमिक पर्वतारोहण पाठ्यक्रम संख्या १७ (०५.०९.२०११ से ०५.०१.२०१२), आत्मरक्षार्थ मार्शल आर्ट पाठ्यक्रम संख्या १३ (२०.०९.२०११ से १२.१२.२०१२), अग्रिम पर्वतारोहण पाठ्यक्रम संख्या ११ (१२.०२.२०१२ से ३०.०३.२०१२), आत्मरक्षार्थ मार्शल आर्ट पाठ्यक्रम संख्या १४ (०१.०३.२०१२ से) वार्षिक पर्वतारोहण अभियान २०१२ (०५.०६.२०१२ से ०७.०७.२०१२) का आयोजन किया।

यह अग्रिम पर्वतारोहण कोर्स नं. ११ "ट्रांस हिमालयन एक्सपिडिशन" नाम के विशेष पर्वतारोहण अभियान दल ने कश्मीर के लेह-लद्दाख क्षेत्र में स्थित स्टोक कांगरी (२०१६० फिट) नामक पर्वत शिखर पर बी.एच.यू. का परचम लहराया।

"नेशनल वर्कशाप ऑन एडवेंचर स्पोर्ट्स् एण्ड सर्टिफिकेट कोर्स इन माउंटेनियरिंग एण्ड अलाइड स्पोर्ट्स्" नामक एक कार्यशाला का आयोजन २३ फरवरी से २९ फरवरी, २०१२ आयोजित किया गया जिसमें लगभग २०० छात्र-छात्राओं ने पंजीकरण करवाया, जिसमें नामी-गिरामी हस्तियाँ शामिल हुई। इस कार्यशाला का उद्घाटन दो बार एवरेस्ट पर चढ़ने वाली भारत की प्रथम महिला पर्वतारोही पद्मश्री संतोष यादव ने दीप प्रज्जवलित कर किया।

९.१६. जलपान गृह

छात्रों, कर्मचारियों एवं विभिन्न कार्यालयों को उचित मूल्य "बिना लाभ/हानि के" पर उच्च गुणवत्ता वाले स्वच्छ भोजन सामग्री जैसे छोटा-भटूरा, पेटीस, पूड़ी-सब्जी, ब्रेड पकौड़ा, आलूचाप, कटलेट, चाय, कॉफी, मिनरल वाटर, बिस्कुट, कोल्ड ड्रिक (ठंडा) मुहैया कराने के लिए विश्वविद्यालय के लगभग सभी संस्थानों एवं संकायों में विश्वविद्यालय द्वारा संचालित, सुसज्जित एवं सुव्यवस्थित निम्नलिखित जलपान गृहों की व्यवस्था है और जल्द ही कैम्पस में एक 'बी.एच.यू. का मिनिकैफे' भी खुलने जा रहा है।

उपरोक्त व्यवस्था के अलावा विश्वविद्यालय की यूईटी, पीएमटी, जेईई (आईटी) इत्यादि प्रवेश परीक्षा मे दूर से आए हुए छात्रों, अभिभावकों एवं कर्मचारियों हेतु स्टॉल का प्रबन्ध तथा समय-समय पर विश्वविद्यालय की मिटिंग में सुव्यवस्थित जलपान की भी व्यवस्था की जाती है। विश्वविद्यालय में बाहर से आए हुए अतिथि एवं गणमान्य लोगों का अच्छी तरह सत्कार हेतु मैत्री जलपान गृह हमेशा तत्पर रहता है।

इस समय निम्न कैन्टीन चल रहे हैं:

१. मैत्री जलपान गृह एवं इसकी निम्नलिखित शाखाएँ

(क) चिकित्सा विज्ञान संस्थान जलपान गृह

(ख) विश्वविद्यालयी चिकित्सालय जलपान गृह

(ग) चिकित्सा ऑपरेशन थियेटर जलपान गृह

(घ) रूचिरा, महिला महाविद्यालय जलपान गृह

(च) मधुबन जलपान गृह

(छ) केन्द्रीय कार्यालय जलपान गृह

(झ) केन्द्रीय विद्यालय जलपान गृह

२. एग्रो जलपान गृह

३. आई.टी. जलपान गृह

९.१७. राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)

राष्ट्रीय सेवा योजना की विभिन्न ईकाइयों में इस वर्ष ८,३०० विद्यार्थियों का पंजीकरण किया गया। इनमें से ३,४६९ छात्राएँ तथा ४,८३१ छात्र थे। इसमें राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा आयोजित विशेष शिविर कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न शिविरों में १,५५० छात्रों तथा १,३५० छात्राओं (कुल २,९०० विद्यार्थियों) ने भाग लिया। इस वर्ष १५ महाविद्यालयों/ संकायों/ संस्थानों (राजीव गाँधी दक्षिण परिसर को मिलाकर) ने राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों में भाग लिया। राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों का संचालन कार्यक्रम समन्वयक प्रो० एस०पी० सिंह के साथ विभिन्न इकाइयों के ८३ कार्यक्रम अधिकारियों के द्वारा किया जाता है।

सामान्य कार्यक्रम

राष्ट्रीय सेवा योजना के सामान्य क्रिया कलापों के अन्तर्गत वर्ष २०११-२०१२ में इकाइयों की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं :

अधिगृहित ग्राम/मलिन बस्तियाँ : इस सत्र में निम्नलिखित २३ गाँवों/मलिन बस्तियों को अधिगृहीत किया गया-

(१) कमच्छा, वाराणसी, (२) किरहिया मलिन बस्ती, वाराणसी, (३) बैजनत्था मलिन बस्ती, वाराणसी, (४) भगवानपुर, वाराणसी, (५) छित्तूपुर, वाराणसी, (६) रमना, वाराणसी, (७) सुसुवाही, वाराणसी, (८) बेनियाबाग, वाराणसी, (९) चौकाघाट, वाराणसी, (१०) कोटवाँ, वाराणसी, (११) पिशाचमोचन, वाराणसी, (१२) लहुराबीर, वाराणसी, (१३) लल्लापुरा, वाराणसी, (१४) कन्दवा, वाराणसी, (१५) आदित्यनगर, वाराणसी, (१६) सुन्दरबगिया, वाराणसी, (१७) अस्सी मलिन बस्ती, वाराणसी, (१८) बजरडीहा, वाराणसी, (१९) दुर्गाकुण्ड, वाराणसी, (२०) भदैनी घाट, वाराणसी,

(२१) नगवाँ, वाराणसी, (२२) बेलहरा, मिर्जापुर, (२३) गुडुटुटवा, मिर्जापुर।

१. स्वयंसेवकों के लिए अभिविन्यास : राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों/स्वयंसेविकाओं को कार्यक्रम समन्वयक प्रो० एस० पी० सिंह के द्वारा व्याख्यानों के माध्यम से रा०से०यो० के लक्ष्य, उद्देश्यों एवं रा.से.यो. की गतिविधियों तथा राष्ट्र निर्माण में इसके छात्रों की भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

२. जन-जागरूकता कार्यक्रम: रा.से.यो. की सभी ईकाइयों ने सम्बन्धित कार्यक्रम अधिकारियों के नेतृत्व में गावों एवं शहरों की मलिन बस्तियों में लोगों के साथ बैठकें आयोजित कीं और व्याख्यानों, विचार गोष्ठियों, नारों, पोस्टरों तथा दीवार लेखन के द्वारा बाल विवाह, दहेज प्रथा, जातिवाद, छुआछूत एवं शराब खोरी आदि बुराइयों से दूर रहने का संदेश दिया।

३. वृक्षारोपण/वन-महोत्सव कार्यक्रम: इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भगवानपुर, छित्तूपुर, सुन्दर बगिया एवं कोटवाँ, राजघाट में वृक्षारोपण के लिए ८५० गड्ढे खोदे गये और उनमें पौध रोपण किया गया। छात्रों द्वारा पुराने लगे पेड़ों की सफाई और उनकी सिंचाई भी की गई।

४. पर्यावरण संवृद्धि: विभिन्न संकायों के छात्रों ने विश्वविद्यालय परिसर के संकायों/महाविद्यालयों के आस पास उगी हुई झाड़ियों तथा ऊंची घास की सफाई का कार्य किया। कला एवं समाज विज्ञान संकाय के स्वयंसेवकों ने राजीव गांधी दक्षिण परिसर, मिर्जापुर की सफाई का कार्य अपने हाथों में लिया।

५. हिन्दी पखवाड़ा (दिनांक १४ से २८ सितम्बर): राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के द्वारा हिन्दी दिवस समारोह आयोजित किया गया, जिसके मुख्य अतिथि हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रोफेसर राधेश्याम दुबे एवं विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर सदानन्द शाही थे। समारोह की अध्यक्षता राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कार्यक्रम समन्वयक प्रोफेसर एच. के. सिंह ने की। मुख्य अतिथि प्रोफेसर राधेश्याम दुबे ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिन्दी भाषा के ज्ञान के माध्यम से ही युवा और राष्ट्र का निर्माण एवं विकास संभव हो सकता है। हिन्दी भाषा पठन-पाठन की भाषा ही नही अपितु देश में व्यवहार एवं काम-काज की भाषा होनी चाहिए, तभी इस हिन्दी दिवस की सार्थकता होगी। प्रोफेसर सदानन्द शाही ने भी अपने उद्बोधन में कहा कि हिन्दी अनुनय की भाषा है। हिन्दी हिन्दुस्तान में राजकाज एवं शासन की भाषा होनी चाहिए, जो कार्यालयों में प्रयोग की जाती है। समारोह में कार्यक्रम अधिकारी डॉ० ओम प्रकाश भारतीय, डॉ० अमरनाथ एवं डॉ० विमल कुमार लहरी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

६. गांधी जयन्ती (२ अक्टूबर, २०११): राष्ट्रीय सेवा योजना काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी तथा पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयन्ती का आयोजन लाला लाजपत राय प्राथमिक विद्यालय, सुन्दर बगिया पर किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो० वी० के० कुमरा, कुलसचिव, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने कहा कि गाँधी जी ने स्वच्छता पर विशेष जोर दिया था और उसमें वे सबकी भागीदारी चाहते थे, हमें उनके मर्म को समझते हुए उनके बताये रास्ते पर चलने का प्रयास करना चाहिए। लाल बहादुर शास्त्री जी का ''जय जवान जय किसान'' तथा महात्मा गाँधी जी की ''ग्राम स्वराज'' की परिकल्पना किसानों की खुशहाली के लिए ही थी। इन दोनों का संदेश था कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुरूप उपभोग करें ताकि बचे हुए संसाधनों का लाभ अन्य जरूरतमन्दों को मिल सके। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक प्रो० हरेन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना की ईकाइयाँ ५७ से बढ़कर ८४ एवं स्वयंसेवको/स्वयंसेविकाओं की संख्या ५७०० से बढ़कर ८४०० हो गयी है। उक्त अवसर पर मुख्य आरक्षाधिकारी प्रो० एच०सी०एस० राठौर ने भी गांधी जी के आदर्श वाक्य 'सत्य और अहिंसा' के मार्ग पर चलने के लिए युवाओं को प्रेरित किया। इसी क्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना की नवीन योजना सेवा बाजार का उद्घाटन करते हुए प्रो० वी० के० कुमरा, कुलसचिव, का.हि.वि.वि. ने गरीब बच्चों को पुस्तक एवं वस्त्र वितरित किया। उक्त अवसर पर विद्यालय परिसर में कुलसचिव के नेतृत्व में सफाई कार्यक्रम और वृक्षारोपण भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० बिपिन कुमार ने किया और धन्यवाद एवं आभार ज्ञापन श्री अवधेश श्रीवास्तव, प्राचार्य, लाला लाजपत राय प्राथमिक विद्यालय ने किया। उक्त अवसर पर डॉ० अशोक कुमार सिंह, डॉ० शिव बहादुर सिंह, डॉ० मंजू बनिक, डॉ० नमिता गुप्ता, डॉ० आर० एन० मीना, डॉ० पूनम आदि कार्यक्रम अधिकारी प्रमुख रूप से उपस्थित थे। स्वयंसेवक श्री अमित नारायण उपाध्याय ने अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता की।

७. कौमी एकता सप्ताह (दिनांक १९-२५ नवम्बर, २०११)

राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा कौमी एकता सप्ताह के अन्तर्गत मतदाता जागरूकता कार्यक्रम दिनांक २० नवम्बर, २०११ को कला संकाय प्रेक्षागृह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पूर्वाह्न ११ बजे से एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात लोक गायिका श्रीमती मालिनी अवस्थी ने मतदाता जागरूकता से संबंधित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर युवा मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूक

किया। साथ ही अपराह्न ३ बजे से प्रसिद्ध समाजसेवी श्री एस० एन० सुब्बाराव जी ने भी स्वयंसेवक/स्वयंसेविकाओं को मतदान के प्रति जागरूक किया। आर्य महिला पी.जी. कॉलेज में कौमी एकता सप्ताह का समापन कार्यक्रम आयोजित हुआ।

८. विश्व एड्स दिवस (दिनांक १ दिसम्बर, २०११): राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला संकाय के कार्यक्रम अधिकारी डॉ० सत्यपाल शर्मा, डॉ० बिपिन कुमार एवं डॉ० इन्दु चौधरी के संयुक्त नेतृत्व में दिनांक १ दिसम्बर, २०११ को विश्व एड्स दिवस के अवसर एक दिवसीय शिविर एवं एड्स जागरूकता रैली का आयोजन रा०से०यो० कार्यालय पर प्रात: ९ बजे से किया गया। रा०से०यो० के कार्यक्रम समन्वयक प्रो० एच० के० सिंह ने रैली में सहभागी स्वयंसेवकों को एड्स के प्रति जागरूक किया। उसके पश्चात रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। उक्त रैली रा०से०यो० कार्यालय से प्रारंभ हुई तथा लंका, मालवीय गेट तक नारे लगाते हुए एड्स के प्रति बचाव हेतु जन साधारण को जागरूक किया। रैली के पश्चात् रा०से०यो० कार्यालय पर स्वयंसेवकों ने एड्स से बचाव के प्रति अपने विचार व्यक्त किये।

९. अन्तर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दिवस (दिनांक ५ दिसम्बर, २०११): ५ दिसम्बर, २०११ को अन्तर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा एक विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ और साथ ही बसन्त कन्या पी०जी० कालेज, कमच्छा वाराणसी के स्वयं सेविकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

१०. ९९वाँ विज्ञान कांग्रेस (दिनांक २१ दिसम्बर, २०११): राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक २१ दिसम्बर, २०११ को राधाकृष्णन् सभागार में प्रात: १० बजे से विज्ञान ज्योति विषयक पर एक संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की पावन धरती पर माँ सरस्वती की असीम अनुकम्पा और पूज्यनीय मालवीय जी को माल्यार्पण कर उनके सम्मुख द्वीप प्रज्ज्वलित करके विज्ञान ज्योति २०११-१२ की ९९ वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस की संगोष्ठी का शुभारंभ किया गया। रा०से०यो० कार्यक्रम समन्वयक प्रो० एच० के० सिंह ने समाज में विज्ञान की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए विज्ञान ज्योति की महत्ता को रेखांकित किया। प्रो० एच० के० सिंह ने बताया कि ९९वाँ भारतीय विज्ञान कांग्रेस भुवनेश्वर में ३-९ जनवरी, २०१२ तक आयोजित होगा और यह तीसरी विज्ञान ज्योति है। इस विज्ञान ज्योति के माध्यम से छात्र-छात्राओं में विज्ञान आधारित सामाजिक प्रगति का मार्ग उन्नयन होगा। उसके पश्चात् श्री अंकुर रावत, सदस्य विज्ञान ज्योति, ने युवाओं के सम्मुख विज्ञान ज्योति की उपयोगिता पर प्रकाश डाला और इससे सम्बंधित एक संक्षिप्त चलचित्र प्रोजेक्शन के माध्यम से दिखाकर स्वयंसेवकों/स्वयंसेविकाओं को जागरूक किया। प्रो० आशाराम त्रिपाठी, छात्र अधिष्ठाता, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने धन्यवाद ज्ञापन और कार्यक्रम का संचालन डॉ० शत्रुघ्न त्रिपाठी, ने किया। उक्त अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी प्रो० राम बिलास यादव, प्रो० सदानन्द शाही, डॉ० राजीव भाटला, डॉ० वी०पी० सिंह, डॉ० वी०के० त्रिपाठी, डॉ० मंजू बनिक, डॉ मंजू मेहरोत्रा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। राधाकृष्णन् सभागार से सिंह द्वार तक लगभग ३०० छात्र-छात्राओं की विज्ञान ज्योति रैली प्रो० आशाराम त्रिपाठी और श्री अंकुर रावत के नेतृत्व में निकाली गयी। यह रैली पटना, गया, राँची, धनबाद, कोलकाता, बालेश्वर होते हुए ३ जनवरी, २०१२ को भुवनेश्वर पहुँची।

११. मालवीय दीपावली (दिनांक २५ दिसम्बर, २०११): राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक २५ दिसम्बर, २०११ को मालवीय जयन्ती के अवसर पर मालवीय दीपावली का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के अन्तर्गत रा०से०यो० के स्वयंसेवक/स्वयंसेविकाओं ने मालवीय भवन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पर लगभग १० हजार दीपक प्रज्ज्वलित किए एवं मालवीय जी के सुझाए आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

१२. युवा सप्ताह (दिनांक १२-१९ जनवरी, २०१२): राष्ट्रीय सेवा योजना, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा स्वामी विवेकानन्द जी के जयन्ती के शुभ अवसर पर दिनांक १२ जनवरी, २०१२ को मतदाता जागरूकता विषयक एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का समापन दिनांक १८ जनवरी, २०१२ को विचार गोष्ठी के आयोजन के साथ हुआ।

१३. राष्ट्रीय मतदाता दिवस (दिनांक २५ जनवरी, २०१२): राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर दिनांक २५ जनवरी, २०१२ को मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत बृहद् स्तर पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो० वी० के० कुमरा द्वारा उपस्थित छात्र-छात्राओं (रा०से०यो० स्वयंसेवक/स्वयंसेविकाओं, एन०सी०सी० कैडैट्स, शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कर्मचारीगण) को मतदान हेतु शपथ दिलायी गई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्र अधिष्ठाता प्रो० आशाराम त्रिपाठी, कार्यक्रम समन्वयक प्रो० एस० पी० सिंह एवं अन्य प्रशासनिक अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

विशेष शिविर कार्यक्रम

इस वर्ष ५८ विशेष शिविरों का आयोजन अधिगृहीत ग्रामों एवं शहर की मलिन बस्तियों में किया गया। शिविर के दौरान प्रमुखत: निम्नलिखित कार्यक्रम किये गये :-

(अ) अधिग्रहीत गावों में सम्बन्धित संकायों/महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा भ्रमण किया गया और वहाँ की गलियों तथा कुओं/तालाबों की सफाई की गई। सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान रा.से.यो. के शिविरार्थियों द्वारा विशेषकर कन्दवाँ, सुसुवाही, आदित्य नगर, अस्सी आदि के कुओं, तालाबों और घाटों की सफाई की गयी। विश्वनाथ मन्दिर तथा ब्रोचा छात्रावास समीपस्थ तालाब की भी सफाई की गयी।

(ब) विशेष शिविर के दौरान एड्स जागरूकता, मतदाता जागरूकता, जल संरक्षण एवं साम्प्रदायिक सद्भाव रैलियों का आयोजन महिला महाविद्यालय, बसन्त कन्या पी.जी. कॉलेज, वसन्त महिला महाविद्यालय राजघाट, आर्य महिला एवं डी.ए.वी. पी. जी. कॉलेज, विज्ञान संकाय, कला एवं समाज विज्ञान संकाय द्वारा किया गया।

(स) छात्रा शिविरार्थियों द्वारा गांव की महिलाओं को कपड़े काटना, सिलाई, तथा कढ़ाई-बुनाई की प्रशिक्षण दिया गया। छात्राओं ने महिलाओं को परिवार नियोजन के लाभ, बच्चों की देखभाल तथा पर्यावरण स्वच्छता के महत्व से भी अवगत करवाया।

(द) अधिगृहीत गाँवों का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण भी किया गया।

(य) शिविरों में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता जागरूकता एवं अन्य कई प्रकार के कार्यक्रम भी किये गये।

९.१८. राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.)

एन.सी.सी. ग्रुप हेडक्वार्टर 'ए' की स्थापना काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में १४ फरवरी १९६३ को हुआ। ग्रुप हेडक्वार्टर की नौ यूनिटें हैं जिसमें से पाँच यूनिट काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रांगण में, दो यूनीट बलिया तथा एक गाजीपुर तथा एक मुगलसराय में है। उपरोक्त सभी यूनिटों का भी उदय वर्ष १९६३ ही है। उक्त ग्रुप हेडक्वार्टर के प्रथम ग्रुप कमाण्डर लेफ्टिनेन्ट कर्नल बृजपाल सिंह (राजपूत) थे, तब से अब तक २१ ग्रुप कमान्डर अपनी सेवा उक्त ग्रुप हेडक्वार्टर को दे चुके हैं। वर्तमान में २१ जनवरी २०११ से ब्रिगेडियर प्रवीण जोशी ग्रुप कमांडर हैं।

राष्ट्रीय कैडेट कोर का विस्तार

ग्रुप हेडक्वार्टर में वाराणसी, चंदौली, गाजीपुर तथा बलिया जनपद के कुल ६२३४ लड़के तथा २५०० लड़कियाँ कैडेट के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

प्रशिक्षण : सत्र २०११-१२ में निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्य किए गए

-क) वर्तमान में १०० प्रतिशत कैडेटों की भर्ती हुई।

ख) १६ संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर (सी.ए.टी.सी.) संचालित किया गया, जिसमें ७३७५ कैडेटों की उपस्थिति रही।

ग) भेलगाम ट्रैक, शिवाजी ट्रैक, ओडिशा ट्रैक, अमरकंटक ट्रैक एवं उत्तराखंड ट्रैक - ९७ कैडेटों ने भाग लिया।

घ) साईकिल अभियान - २० कैडेटों ने भाग लिया।

च) आर्मी अटैचमेन्ट कैम्प - २७४ कैडेट ने भाग लिया।

झ) समुद्री प्रशिक्षण - ०३ कैडेट ने भाग लिया।

ज) १ कैडेट ने पैरा ट्रेनिंग कोर्स में भाग लिया।

उपलब्धियाँ

१. आठ कैडेटों को सर्वश्रेष्ठ कैडेट का पुरस्कार दिया गया।
२. ०९ कैडेटों ने थल सैनिक शिविर में भाग लिया।
३. १२ कैडेटों ने नौ सैनिक शिविर में भाग लिया।
४. १५ कैडेटों ने गणतंत्र दिवस शिविर में भाग लिया।
५. कैडेट विनय कुमार सिंह को मेजर एसएल दर रजत पदक से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया।
६. १२६ कैडेटों ने विभिन्न स्थानों पर आयोजित राष्ट्रीय एकता शिविर में भाग लिया।
७. एनसीसी निदेशालय, उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत सभी ग्रुपों में इस ग्रुप को तृतीय स्थान प्रदान किया गया।
८. ८ कैडेटों को वार्षिक सहारा छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया।
९. ४ कैडेटों को वार्षिक मुख्यमंत्री छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया।

सामुदायिक विकास और सामाजिक सेवा योजना

वृक्षारोपण	- ४०३ पेड़ लगाए गए
पल्स पोलियो अभियान	- ५४० कैडेट
अर्थ ऑवर डे	- १०० कैडेट
वर्ल्ड हेल्थ डे	- १५० कैडेट
वर्ल्ड अर्थ डे	- १५० कैडेट
वर्ल्ड नो टोबैको डे	- २०० कैडेट
विश्व पर्यावरण दिवस	- १७० कैडेट
माई अर्थ माई ड्युटी	- १०० कैडेटों
यू एन इन्टरनेशनल डे एवं नेशनल डिसास्टर रिडक्सन डे	- १०० कैडेट

अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों का आगमन

मेजर जनरल ए के राठी, एसएम. अपर महानिदेशक तथा ब्रिगेडियर रविन्दर श्रीवास्तव, उपमहानिदेशक, एनसीसी निदेशालय, लखनऊ के द्वारा समय-समय पर इस मुख्यालय का निरीक्षण किया गया।

विविध

स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के अवसर पर कैडेटों द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति को गार्ड ऑफ ऑनर प्रदान किया गया।

९.१९. बैंक एवं डाक घर

बैंक

विश्वविद्यालय परिसर में दो राष्ट्रीयकृत बैंक हैं जो छात्र, कर्मचारी एवं उनके परिवार के सदस्यों को बैंकिंग सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं।

१. भारतीय स्टेट बैंक की परिसर में निम्नलिखित चार शाखाएँ कार्यरत हैं:

(अ) बी.एच.यू. मुख्य शाखा

(ब) शॉपिंग सेन्टर शाखा

(स) आई.एम.एस. शाखा

(द) आई.टी. शाखा

२. बैंक ऑफ बड़ौदा, सर सुन्दरलाल चिकित्सालय परिसर

उपरोक्त बैंकों के ४ एटीएम केन्द्र विश्वविद्यालय परिसर में कार्यरत हैं।

डाकघर

विश्वविद्यालय परिसर में निम्नलिखित चार शाखाएँ कार्यरत हैं:

(अ) मुख्य/ एच.वी.वी. डाकघर

(अ) मालवीयनगर डाकघर

(ब) चिकित्सालय डाकघर

(स) हैदराबाद कालोनी डाकघर

एच.वी.वी. डाकघर में उपलब्ध सुविधाएँ :

१. सभी तरह की बचत बैंक सुविधाएँ
२. एक्सप्रेस मेल सेवा
३. मेघदूत मिलेनियम
४. बिजनेस पोस्ट
५. खुदरा पोस्ट
६. वेस्टर्न यूनियन मनी ट्रांसफर
७. डाक जीवन बीमा पॉलिसी
८. एक्सप्रेस पार्सल पोस्ट

९.२०. बी.एच.यू. कम्प्यूटरीकृत रेलवे आरक्षण केन्द्र

बी.एच.यू.स्थित उत्तर रेलवे आरक्षण केन्द्र ने १३ जून, २००६ से कार्य प्रारम्भ किया। वित्तीय वर्ष २०११-२०१२ के दौरान कुल आय रु.२९२७९३८० थी। इस केन्द्र से प्रात: ९ बजे से अपराह्न ३ बजे तक (रविवार को छोड़कर) परिसर एवं परिसर के बाहर के लोगों को भी आरक्षण की सुविधा प्राप्त होती है। इस केन्द्र द्वारा वित्तीय वर्ष २०११-१२ में कुल ७३३४३ यात्रियों का आरक्षण हुआ एवं ५४९९६ मांग पत्रों का निस्तारण किया गया। आरक्षण केन्द्र के कर्मचारियों के कुशल कार्यक्षमता के कारण ही यह उपलब्धि प्राप्त की गयी।

९.२१एयर स्ट्रिप (हवाई पट्टी) एवं हेलीपैड

विश्वविद्यालय के छात्रों के बहु-आयामी व्यक्तित्व को निखारने के उद्देश्य से परिसर में एक हवाई पट्टी/हेलीपैड की भी व्यवस्था है जहाँ ७ यू पी एयर स्क्वाड के सहयोग से ९०० एयर फ्लाईट कैडटों (७०० सीनियर डिविजन एवं २०० जूनियर डिविजन) को हवाई जहाज उड़ाने एवं इससे संबंधित तकनीकी प्रशिक्षण दी जाती है। ३३% सीटें महिला कैडेट के लिए आरक्षित हैं।

९.२२. विपणन संकुल

मरीजों एवं उनके सहयोगियों, आगन्तुओं, छात्रों एवं विश्वविद्यालय कर्मचारियों को उच्च गुणवत्ता का अल्पाहार, शीतल पेय, कॉफी, चाय इत्यादि प्रदान करने के लिए चार नेस्टल किओस्क्स खोलने हेतु अनुज्ञप्ति स्वीकृत किये गये हैं। इसमें तीन चिकित्सालय परिसर एवं एक मधुबन में चल रहे हैं। इनके अलावा दो अमूल किओस्क्स सर सुन्दरलाल चिकित्सालय परिसर एवं एक अमूल किओस्क्स लिम्बडी छात्रावास के निकट चल रहे हैं।

कर्मचारियों, छात्रों और विश्वविद्यालय परिसर में भ्रमण करने के लिये आये आगन्तुकों के लिए पार्किंग की सुविधा सर सुन्दरलाल अस्पताल और श्री विश्वनाथ मन्दिर पर साइकिल स्टैण्ड हेतु लाइसेंस इस शर्त के साथ दिया गया कि विश्वविद्यालय के छात्रों और कर्मचारियों से पार्किंग शुल्क नहीं लेना होगा।

९.२३. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय क्लब

विश्वविद्यालय क्लब की स्थापना सन् १९३४ ई.में महामना पं. मदन मोहन मालवीय द्वारा अपने सदस्यों के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं बौद्धिक जीवन को समुन्नत बनाने के उद्देश्य से की गयी थी।

इन उद्देश्यों के अनुसार वर्ष २०११-१२ के दौरान निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्पादित की गयीं-

सांस्कृतिक–दीपावली त्यौहार के दौरान तथा नववर्ष सेलिब्रेशन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। ये कार्यक्रम बहुत सफल रहे और लगभग ४०० (सदस्य और उनके परिजन) लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

सामाजिक – सामाजिक एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्यों से १५ अगस्त २०११ एवं २६ जनवरी २०१२ को गेट-टुगेदर का आयोजन किया गया तथा झंडोत्तोलन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने अपने परिजनों के साथ भाग लिया। होली के दिन सांय ६.०० बजे होली मनायी गयी।

एथलेटिक्स- पूरे साल के दौरान सदस्य और उनके परिजन विभिन्न खेलों को जैसे कि बैडमिंटन, बिलियर्ड्स, टेबल टेनिस, कार्ड एवं कैरम बोर्ड इत्यादि खेलते हैं। यद्यपि लॉन

दुर्गा पूजा समारोह

गांधी जयंती

गांधी जयंती के अवसर पर ट्राइसाइकिल दान

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

श्री अनूप जलोटा द्वारा भजन संध्या

टेनिस के उद्देश्य से एक अच्छा स्पेस यहाँ मौजूद है किंतु कई वर्षों से लॉन टेनिस खेला नहीं जा रहा है। प्रतिवर्ष इस जगह के रख-रखाव में पैसे खर्च किए जाते हैं।

बौद्धिक - बौद्धिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न ज्वलंत मुद्दों पर साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

आधारभूत संरचना – निम्नलिखित विकास कार्य सम्पादित किए गए-

(क) यूनिवर्सिटी क्लब के प्रवेश द्वार पर एक फाइबर शेड का निर्माण किया गया।

(ख) जिम के लिए दो एक्सरसाइज़ साईकिल खरीदे गए।

(ग) हॉल में दो दीवार पंखे लगे।

(घ) एक वजन लेने वाली मशीन खरीदी गयी।

(च) खेलों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से टेबल टेनिस के लिए बैट और बॉल खरीदे गए।

(छ) बैडमिंटन को प्रोत्साहन देने हेतु लगभग रु. ३५,०००/- मूल्य का शटल कॉक खरीदा गया।

(ज) क्लब के सभी कमरों की इलेक्ट्रिक वायरिंग नये तार लगाकर की गयी।

(झ) विश्वविद्यालय निर्माण विभाग (यूडब्ल्यूडी) की मदद से यूनिवर्सिटी क्लब के पूरे लॉन की फेन्सिंग की गयी

(ट) क्लब के सभी शौचालय का मरम्मत किया गया।

(ठ) पूरे क्लब में रंगरोगन और पुताई का कार्य किया गया।

९.२४.१ संस्थापन सेवा

कृषि विज्ञान संस्थान

कृषि विज्ञान संस्थान के पाँच छात्रों का चयन आई.सी.ए.आर. द्वारा आयोजित एग्रीकल्चर रिसर्च सर्विस के लिए हुआ। अन्य पाँच छात्रों का चयन उत्तर प्रदेश राज्य परीक्षा के माध्यम से हुआ है। इस संस्थान का प्लेसमेंट का रिकार्ड पिछले वर्षों में बहुत ही अच्छा रहा है। संस्थान में आकर प्राइवेट एवं पब्लिक सेक्टर कम्पनी, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, बैंकों और गैर सरकारी संगठनों ने बड़ी संख्या में छात्रों का चयन जॉब के लिये किया। विभिन्न संगठनों एवं बैंकों ने हमारे स्नातक, परास्नातक और पीएच.डी.के कुल ९३ छात्रों का चयन कैम्पस इण्टरव्यू के माध्यम से किया है जैसे (i) बैंक ऑफ बड़ौदा (ii) बैंक ऑफ इंडिया (iii) यूनियन बैंक ऑफ इंडिया (iv) प्रदान (v) ऐक्सिस (vi) मोनसेन्टों (vii) त्रिवेनी इंजीनियरिंग (viii) डी०सी०एम० श्री राम कोन्सलिडेटेड लि० (ix) हरिसंस मलयालम लि० (x) देना बैंक (xi) पॉयोनियर सीड (xii) सिनजेन्टा (xiii) इण्डियन ट्रेसी सिस्टम (ix) रैलिज इण्डिया लि०। कृषि स्नातकों के अध्ययन में प्रायोगिक प्रशिक्षण के महत्व को देखते हुये कृषि के यूजी छात्रों को प्रायोगिक प्रशिक्षण निजी संस्थान, मुज़फ्फरपुर, केन्द्रीय टसर अनुसंधान प्रशिक्षण संस्थान राँची, सारस डेयरी कोटा, सारस डेयरी जयपुर, इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ राँची, आइसीएआर शोध कॉम्पलेक्स, पूर्वी क्षेत्र, राँची।

प्रौद्योगिकी संस्थान

प्रशिक्षण और संस्थापन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रौद्योगिकी संस्थान के प्रशिक्षण एवं संस्थापन प्रकोष्ठ (टीपीओ) ने वर्ष १९७७-७८ से कार्य करना प्रारम्भ किया तभी से इस प्रकोष्ठ ने विभिन्न उद्योगों/संगठनों में छात्रों के संस्थापन का समन्वयन करने के साथ-साथ प्रत्येक वर्ष बी. टेक./बीफ़ार्मा./आईडीडी/आई एम डी पाठ्यक्रमों के छात्रों का ग्रीष्मकालीन व्यावहारिक प्रशिक्षण, जो उनके पाठ्यक्रम का एक आवश्यक भाग है, के लिए व्यवस्था करता आ रहा है। आज तक १३,२५० से अधिक बीटेक्./एम.टेक्.एवं बीफ़ार्मा./एम.फार्मा छात्रों को परिसर साक्षात्कार द्वारा देश और विदेशों के अग्रणी उद्योगों में आकर्षक पैकेज पर रोजगार प्राप्त हुए हैं। अनेक सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों के प्रतिष्ठित एवं विश्वसनीय प्रतिष्ठान, जो हमारे संस्थान में प्रतिवर्ष साक्षात्कार लेने के लिए आते हैं, उनकी संख्या वर्ष १९७७ में १६ से बढ़कर वर्ष २०११-१२ में ९४ हो चुकी है। इस प्रकोष्ठ का मुख्य ध्यान औद्योगिक प्रशिक्षण की व्यवस्था और छात्रों को उनकी क्षमता के अनुसार प्रमुख उद्योगों में रोजगार दिलवाना है। हालाँकि वित्तीय खण्ड और आपूर्ति शृंखला प्रबंधन, परामर्शी संगठन भी हमारे छात्रों के बड़े नियोजनकर्ता है।

वर्तमान वर्ष की अवधि में परिसर चयन का कार्य १७ अगस्त २०११ को प्रारम्भ हुआ। अनेक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठानों जैसे माइक्रोसॉफ्ट, एडोब, गोल्डमैन सॉक्स, मॉर्गन स्टेनले, ओरेकल, नेट एप् सिस्को, मेन्टरग्राफिक्स, डीई एसएचएडब्लू, एन-वीडिया, सेमसंग, एट्रेन्टा, एलजी, हिन्दुस्तान यूनी लीवर, आईओसीएल, टाटा मोटर्स, मारुति, अशोक लेलैण्ड, एल एण्ड टी, डीआरडीओ, रिलायंस एनर्जी, कोल इण्डिया, बीईएमएल, एसीसी, एनएमडीसी, सेल, भेल, एनटीपीसी, मेकॉन, जिन्दल, स्टेनलेस, विसा टीसीआईएल, एचलेडएल, नोमूरा, ओएनजीसी ओपीएएल, सूर्या रोशनी आदि हमारे संस्थान के छात्रों के चयन हेतु नियमित आते हैं एवं भारी संख्या में हमारे छात्रों में विश्वास जताते हुए उनका चयन करते हैं।

अनेक ऐसे प्रतिष्ठान हैं जो संस्थान में पहली बार पधारे जिनमें आरआईओ टिन्टो, ईराग्रुप, सेन्टगोबिन, वीबीसी ग्रुप, पावर ग्रिड कार्पोरेशन, केज्स्ट्रॉय, जीई, याहू, सिट्रिक्स, बीओसी इत्यादि के नाम शामिल हैं। चतुर्थ वर्ष के छात्रों के लिए ५०८ आमंत्रण थे जिनमें से बी. टेक्. और बी. फार्मा. भाग चार के ४१७ छात्रों को रोजगार प्राप्त हुए। आईडीडी प्रोग्राम पूर्ण करने वाले ८३ छात्रों को १०२ रोजगार आमंत्रण और आई एम डी प्रोग्राम पूर्ण करने वाले २६ छात्रों को २८ रोजगार आमंत्रण प्राप्त हुए। स्नातकोत्तर छात्रों को भी १४० रोजगार आमंत्रण प्राप्त हुआ। यह गर्व की बात है कि इस वर्ष मुख्य क्षेत्रों की प्रतिष्ठानों ने बड़ी संख्या में छात्रों को आई.टी.उद्योगों के बराबर के पैकेज के साथ

रोजगार हेतु आमंत्रित किया है। इस वर्ष का उच्चतम प्रतिपूर्ति पैकेज रु.१६.१० लाख प्रतिवर्ष है, जो मुख्य क्षेत्रों में भी है।

संस्थान में छात्रों को भविष्य में उद्योगों की बदलती आवश्यकताओं के अनुरुप सावधानी पूर्वक प्रशिक्षित किया जाता है। हमारे छात्रों को बारम्बार औद्योगिक भ्रमण द्वारा उचित औद्योगिक अनुभव मिलता है। हमारे स्नातक छात्र अपने ग्रीष्मकालीन अवकाश में आठ सप्ताह के प्रशिक्षण हेतु प्रतिष्ठित उद्योगों/संस्थानों/संगठनों (भारत एवं विदेशों में) में जाते हैं, जो उनके शैक्षणिक आवश्यकताओं का एक भाग है। यहाँ तक कि हमारे आईडीडी/आईएमडी और एम. टेक्. छात्रों को संस्थान के पर्यवेक्षण में औद्योगिक परिसर में छः माह से बारह माह तक की परियोजना पूरी करनी पड़ती है। ग्रीष्मकालीन अवकाश में हमारे स्नातक छात्रों को उद्योगों में व्यावहारिक प्रशिक्षण द्वारा उद्योगों के वातावरण एवं कार्यप्रणाली का अनुभव प्राप्त होता है। इस प्रकार के कार्यक्रम से संस्थान के संकाय एवं उद्योगों के आर एण्ड डी और परामर्शी जिम्मेदारियों के साथ प्रभावी रुप से कार्य करने का अवसर मिलता है। यह प्रकोष्ठ अपने बी.टेक्./बीफ़ार्मा./आई डीडी/आईएमडी छात्रों को ६ से ८ सप्ताहों के लिए लगभग २६० उद्योगों के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराता है। यह गर्व का विषय है कि हमारे यहाँ के जिन छात्रों ने देश के उपरोक्त उद्योगों/संगठनों में ग्रीष्मकालीन व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किये उनमें से लगभग सभी की नियुक्ति हो चुकी है। वर्तमान सत्र के लिए सभी अर्हक छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था प्रगति पर है। पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विदेशी अनुसंधान संगठनों से ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण आमंत्रण प्राप्त हुए हैं।

अनेक उद्योगों जैसे टीसीएस, ग्लोब एनजी, कोग्निजेन्ट, इत्यादि के साथ अनेक अतिथि व्याख्यान और अन्य गतिविधियों हेतु समझौता हुआ है जिसकी व्यवस्था वर्तमान शैक्षणिक सत्र में की गयी। अतिथि व्याख्यान का मुख्य उद्देश्य हमारे छात्रों को कार्पोरेट संस्कृति, उद्योगों हेतु आवश्यक साफ्ट स्किल और शैक्षणिक आवश्यकताओं से अवगत कराना है।

संस्थान अन्य संगठनों के १५२ छात्रों उनकी शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यवस्था प्रदान कर रहा है और उनकों ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण के कार्य करने हेतु अनुमति भी प्रदान की गयी।

विज्ञान संकाय

विज्ञान संकाय के विभिन्न विभागों के विशेषकर कम्प्यूटर साईंस (३८), भूगर्भ विज्ञान (१९), रसायन विज्ञान (७), भू-भौतिकी (६), भूगोल (५) एवं सांख्यिकी (१) के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को देश की अग्रणी प्राइवेट, पब्लिक सेक्टर एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों (हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, ओएनजीसी लिमिटेड, कोल इंडिया लिमिटेड, इम्पेक्ट्स टेक्नॉलॉजी, कॉगनिजेट टेक्निकल साल्यूशन्स, सैमसंग साफ्टवेयर इंडिया ऑपरेशन्स, आईबीएम ग्लोबल सर्विसेज़, रियो टिन्टो, जीयोमाईसोर सर्विसेज़ (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, माइलन फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड, टाटा स्टील, आकाश एजूकेशनल सर्विसज़ लिमिटेड, एम/एस प्रदान, डॉ.रेड्डी लेबोरेटरीज़ लिमिटेड, रेकिट बेनकिसर, ग्लोबल कोऑर्डिनेट्स प्रावेट लिमिटेड) द्वारा रू.१२ लाख प्रतिवर्ष तक के वेतन पैकेज पर नियोजित किया गया है।

प्रबंध शास्त्र संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रबंध शास्त्र संकाय के छात्रों ने इस वर्ष भी अपने महत्व को सिद्ध कर दिया है। सभी छात्रों को देश और विदेश के प्रतिष्ठित संगठनों द्वारा नियोजित किया गया है जो संकाय के मजबूत शैक्षणिक संस्कृति को दर्शाता है। शिक्षकों का समन्वित प्रयास संकाय के प्रबंधन स्नातकों को परिसर नियोजन के माध्यम से परिलक्षित होता है। छात्रों का कार्पोरेट विश्व में विस्तार संकाय को प्रसिद्धि दिला रहा है। सत्र २०१२ के नियोजन में नव नियोजनकर्ताओं के साथ नियमित नियोजनकर्ताओं ने सहभागिता की है। प्रबंध शास्त्र संकाय को गर्व है कि इस वर्ष परिसर नियोजनकताओं की सूची में भारत का आरम्भिक वित्त संस्थान रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया भी शामिल हो गया है। इसके साथ ही हमारे चार छात्रों को आईसीआरएम अनुसंधान एवं परामर्शी फर्म से अन्तर्राष्ट्रीय आमंत्रण प्राप्त हुआ है।

इस सत्र २०११-१२ में बड़े उद्योग घरानों सहित ३० शीर्ष नियोजनकर्ता प्रबंध शास्त्र संकाय, काहिविवि में पधारे। पिछले वर्ष हम औसत वेतन ७.५ लाख का बनाने में सफल रहे। इस वर्ष हमारे छात्रों का औसत वेतन ७ लाख रहा।

प्रोफाइल आमंत्रण में वित्त घराने, इक्विटी रिसर्च, इन्वेस्टमेंट बैंकिंग, मार्केटिंग, विक्रय एवं वितरण, विवरण शृंखला प्रबंधन, व्यापार परामर्श, आई टी परामर्श, कृषि-व्यापार औद्योगिक संबंध एवं कार्पोरेट मानव संसाधन की विविधताओं में भिन्नता पायी गयी है। इसके साथ ही उल्लेखनीय है कि संकाय में विद्यालय के अन्य संकाय के छात्रों जैसे एमपीएमआईआर, एम. एससी. एग्री. और मास्टर ऑफ फाइनेन्शियल मैनेजमेंट के छात्रों को भी जोड़े रखा। हमने काहिविवि से बाहर के एमएनएनआईटी और अन्य संस्थानों के लिए परिसर नियोजन हेतु भी अपनी सुविधायें प्रदान की।

परिसर नियोजन में विशिष्ट उपलब्धि सूचीबद्ध शीर्ष संकायों के क्रम में है जो वर्तमान अवधि के लिए प्रतिष्ठित बी-स्कूलों के सर्वेक्षण द्वारा प्रदर्शित होता है।

भ्रमण में सम्मिलित कम्पनियाँ : इलाहाबाद बैंक, अंसल एपीई, एक्सिस बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, बर्गर पेंन्ट्स, बैंक ऑफ इण्डिया, कनारा बैंक, कोल इंडिया लि., देना बैंक, फिनो, इन्फोसिस, आईसीआईसीआई बैंक, आईसीआरएम, आईडीबीआई बैंक, एनसीएमएसएल, पेन्टालून्स, रिर्जव बैंक ऑफ इण्डिया, यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, विसा स्टील इत्यादि।

कला संकाय

कुओनी डेस्टिनेशन मैनेजमेंट कम्पनी, गुड़गाँव, हॉलीडे इंडिया, दिल्ली ने भर्ती हेतु कैंपस को विजिट किया। कुओनी ने दो विद्यार्थियों का चयन किया तथा हॉलीडे इंडिया ने एम.टी.ए. के ५ विद्यार्थियों का

चयन किया। इसके साथ ही पांच विद्यार्थी स्पाइस जेट द्वारा चयनित हुए तथा कुछ और विद्यार्थियों की नियुक्तियाँ भी आने वाले दिनों में पाइपलाइन में हैं।

सामाजिक विज्ञान संकाय

मनोविज्ञान विभाग : ''कर्मचारी प्रबंधन तथा औद्योगिक संबंध'' के परास्नातक पाठ्यक्रम के छात्रों की परिसर नियोजन द्वारा नियुक्तियों में वृद्धि होकर कोल इंडिया लिमिटेड में तेरह छात्रों तथा डी.एस.सी.एल. में एक छात्र का चयन हुआ तथा इन्हें लगभग सात लाख रूपयों से भी अधिक के वेतन का प्रस्ताव मिला। पी.जी. डिप्लोमा के छात्रों के परिसर नियोजन के कार्यक्रमों को और भी प्रभावी बनाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

दृश्य कला संकाय

यह संस्थान अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों द्वारा विद्यार्थियों में सृजनात्मक विचारों को विकसित करने के साथ उनमें उद्यमशीलता को भी बढ़ावा देने का सतत् प्रयास कर रहा है, जिससे छात्र समाज में सकारात्मक भूमिका निभाते हुए सार्थक चिंतन के साथ, समग्र राष्ट्र की समसामयिक कलात्मक गतिविधियों में परस्पर सामंजस्य स्थापित कर सके। इसे और तर्क संगत बनाने के लिए सेमेस्टर प्रणाली के वैश्विक अनुरूप माध्यम से शिक्षा के मुख्य धारा में जोड़ने का प्रयास किया गया है जिससे वह समसामयिक कलात्मक गतिविधियों को आत्मसात करते हुए देश की मुख्य धारा से जुड़ सके। बीएफए एवं एमएफए स्तर के निर्धारित सभी पाठ्यक्रम रोजगार परक हैं तथा समस्त उपाधि धारक देश-विदेश में विभिन्न नियोजकों द्वारा रोजगार प्राप्त कर अपनी दक्षता का परिचय देते आ रहे हैं। शिक्षणेत्तर गतिविधियों में भी संकाय की भूमिका उल्लेखनीय रही है।

राजीव गांधी दक्षिणी परिसर, बरकछा

सत्र २०११-१२ में एम.बी.ए. संकाय सदस्यों द्वारा ४४ ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण एवं ४५ लघु शोध प्रबन्ध निर्देशित किये गये। एम. बी. ए. एग्रीबिजनेस के लगभग ९० प्रतिशत विद्यार्थियों का सम्मानित पब्लिक सेक्टर एवंम निजी संस्थानों में औसतन ४.५ लाख प्रति वर्ष वेतन पर चयन हुआ।

दयानन्द पी. जी. कॉलेज

महाविद्यालय द्वारा अपने विद्यार्थियों को काउंसिलिंग और दिशा निर्देशन के प्रयास किए जा रहे हैं। इस सम्बंध में प्रशिक्षण के साथ-साथ अपने विद्यार्थियों के सीधे कैम्पस सेलेक्शन हेतु महाविद्यालय द्वारा विभिन्न पेशेवर समूहों एवं संगठनों को आमंत्रित किया जा रहा है।

कई राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों जैसे कि रिलायंस इन्श्योरेंस, एडेका एवं यूनिवर्सल सोंपो इत्यादि में विद्यार्थियों को नियोजन मिला है। कुछ विद्यार्थी राष्ट्रीयकृत बैंको में भी चयनित हुए हैं। विद्यार्थियों को दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालय तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं में पी.एचडी. डिग्री के लिए प्रवेश मिला है।

९.२४.२. विश्वविद्यालय सेवायोजन सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र

'माडल ब्यूरो' के नाम से ख्याति-प्राप्त विश्वविद्यालय सेवायोजन सूचना एवं मन्त्रणा केन्द्र देश का सम्भवत: प्रथम केन्द्र है, जिसकी स्थापना जून, १९५९ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, रुइया छात्रावास, मेडिकल ब्लाक में की गयी थी। राष्ट्रीय नियोजन सेवा की ऐसी इकाईयां इस समय देश के लगभग ८२ विश्वविद्यालयों में कार्यरत हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का प्रयास है कि देश के सभी विश्वविद्यालयों में सेवायोजन सूचना एवं मन्त्रणा केन्द्रों की स्थापना की जाय। विश्वविद्यालय जीवन में इस केन्द्र की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा चुनौतियों से भरपूर है। शिक्षित नवयुवकों तथा युवतियों को समुचित शैक्षणिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन देकर उनका भविष्य निर्माण करना इन केन्द्रों का प्रमुख दायित्व है। विश्वविद्यालय के छात्रों तथा छात्राओं को परिसर में ही शैक्षणिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शक सेवाएं उपलब्ध कराई जा सके, इस उद्देश्य से इस केन्द्र का सूत्रपात किया गया था। विश्वविद्यालय की प्राचीन परम्पराओं तथा गरिमा के अनुकूल छात्रोपयोगी सेवाएं अर्पित करने की दिशा में केन्द्र सर्वथा सन्नद्ध रहा है।

पंजीयन, सम्प्रेषण और प्लेसमेण्ट
कैरियर स्टडीज एवं व्यावसायिक शोध
रोजगार एवं स्वरोजगार सम्बन्धी सूचना
शिक्षण-प्रशिक्षण, छात्रवृत्ति/अधिवृत्ति से सम्बन्धित सूचना
मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं सहयोग
व्यावसायिक निर्देशन एवं कैरियर काउंसिलिंग : व्यक्ति एवं सामूहिक
कैम्पस भर्ती
व्यावसायिक पत्रिका का प्रकाशन

व्यावसायिक सूचना कक्ष की स्थापना एक बड़े हाल में की गयी है। इस कक्ष को केन्द्र की सूचना सेवाओं का मेरूदण्ड कहना अधिक उपयुक्त होगा। कक्ष में कुल ८० फोल्डर है जिनका वर्गीकरण संकाय, उद्योग, संस्था तथा विभिन्न अनुभागों में किया गया है। कक्ष का महिला अनुभाग, अपना रोजगार अनुभाग, चिकित्सा तथा प्रावैधिक शिक्षा अनुभाग प्रतियोगितात्मक अनुभाग, राष्ट्रीय विकास और प्रतिरक्षा अनुभाग, रोजगार क्षेत्र सूचना अनुभाग आदि छात्रों में विशेष लोकप्रिय हैं। देश तथा विदेशों में उपलब्ध शिक्षा, प्रशिक्षण, रोजगार, छात्रवृत्ति, अधिवृत्ति आदि सम्बन्धित सूचना वर्गीकृत रूप से इस कक्ष में उपलब्ध की गयी है।

व्यावसायिक सूचनाओं का संकलन, अध्ययन, अनुशीलन, संदर्शन, वर्गीकरण तथा संरक्षण करना केन्द्र का प्रमुख दायित्व है। केन्द्र की समस्त सूचना तथा निर्देशन सेवाएं उपयुक्त सूचना साहित्य की उपलब्धि तथा उपादेयता पर ही आधारित है। छात्रों की व्यक्तिगत तथा सामूहिक आवश्यकताओं के अनुसार ही सूचना साहित्य का संग्रहण तथा सन्दर्शन किया जाता है। वांछित सूचना तत्काल उपलब्ध न होने पर सम्बन्धित स्थानों से प्राप्त कर अभ्यर्थियों को उपलब्ध करायी जाती है।

व्यावसायिक परामर्श इकाइयों का संचालन केन्द्र के निर्देशन में विश्वविद्यालय से सम्बद्ध विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में किया जा रहा है। ऐसी इकाईयां हमारी सेवाओं को लघु रूप में अपने छात्रों को उपलब्ध कराती हैं। किशोरावस्था में निर्देशन की महत्ता का अनुभव करते हुए केन्द्र इन इकाइयों को अधिकाधिक सूचना सम्पन्न तथा सुदृढ़ बनाने की दिशा में प्रयत्नशील है। केन्द्र इन्हीं के माध्यम से सम्बन्धित संस्थाओं में व्यावसायिक वार्ताओं का आयोजन कर, छात्रों को भावी जीवन की ठोस व्यावसायिक योजना बनाने में सहायता करता है।

केन्द्र के पुस्तकालय में कीमती तथा उपयोगी सन्दर्भ साहित्य उपलब्ध हैं। पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम, नियमावली, प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं के निर्देशन-साहित्य, स्वत: नियोजन, व्यवसाय प्रोन्नयन, व्यावसायिक मार्ग निर्देशन, आत्मविकास आदि से सम्बन्धित छात्रोपयोगी साहित्य पुस्तकालय में एकत्रित किया जा रहा है।

केन्द्र द्वारा व्यावसायिक शोध, अध्ययन, साहित्य सृजन तथा प्रकाशन सम्बन्धी कार्य अनवरत रूप से किया जा रहा है। प्रकाशन की तीन मालाओं 'प्लान ए कैरियर सीरीज़' 'नो योर सब्जेक्ट सीरीज़' तथा 'गाइडेन्स लीफ्लेट सीरीज़' मे अब तक कुल ५१ पुस्तकों, पुस्तिकाओं तथा विवरणिकाओं का प्रकाशन किया जा चुका है। समय-समय पर रोजगार सर्वेक्षण आयोजित कर प्रतिवेदन प्रकाशित किए जाते है। केन्द्र के प्रकाशन बेजोड़ माने जाते है। देश के कोने-कोने से प्राप्त मांग पत्रों से इन प्रकाशनों की लोकप्रियता स्वयं सिद्ध होती है।

प्लान ए कॅरियर सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित साहित्य का विषय-वस्तु अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत तथा सारगर्भित होता है। ये पुस्तकें विविध पाठ्य-विषयों से सम्बन्धित उच्चशिक्षा, प्रशिक्षण, रोजगार, स्वत: रोजगार आदि के साथ-साथ विदेशों में उपलब्ध विशेषीकरण और व्यावसायिक अवसरों की जानकारी देती है। व्यक्तिगत निर्देशन के अवसर पर छात्रों तथा अभ्यर्थियों को उनकी आवश्यकतानुसार इन पुस्तकों की प्रतियां उपलब्ध की जाती हैं। केन्द्र के सभी प्रकाशन नि:शुल्क रूप से देश के समस्त व्यवसाय निर्देशन से सम्बन्धित अभिकरणों, प्रमुख पुस्तकालयों, संस्थाओं आदि को प्रेषित किए जाते हैं।

छात्र व्यवसाय निर्देशिका (स्टूडेन्ट्स वोकेशनल गाईड) छात्रों की एक लोकप्रिय पाक्षिक पत्रिका है जो प्रत्येक महीने की १५वीं तारीख को प्रकाशित की जाती है। देश-विदेश की विभिन्न शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रवेश, छात्रवृत्ति तथा अधिवृत्ति और नियोजकों के अधीन रोजगार के वर्तमान अवसरों की जानकारी उपलब्ध कराना, इस पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य है। पत्रिका ऐसे छात्रों तथा अभ्यर्थियों के लिये विशेष रूप से उपयोगी है जिन्हें एक से अधिक समाचार पत्र यथासमय सुलभ नहीं हो पाते। विश्वविद्यालय के छात्रों, केन्द्र के आगन्तुकों निर्देशन संस्थाओं आदि में पत्रिका नि:शुल्क रूप से वितरित की जाती है।

पत्राचार निर्देशन सेवा केन्द्र की विशिष्ट सेवाओं में से एक है। देश के सभी भू-भागों से छात्रों, अभ्यर्थियों, संस्थाओं तथा अभिभावको से पृच्छायें प्राप्त होती रहती है जिनका समुचित उत्तर दिया जाता है। कभी-कभी बड़ी जटिल तथा समस्यापरक पृच्छाओं का भी निराकरण केन्द्र को करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में केन्द्र तथा अभ्यर्थी के बीच बराबर पत्राचार सम्पर्क बना रहता है।

विदेशों में उच्चाध्ययन तथा रोजगार के प्रति विश्वविद्यालय के छात्रों तथा अध्यापकों में विशेष आकर्षण दृष्टिगत होता है। सूचना कक्ष में अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, फ्रांस, रूस, जापान, आदि देशों से सम्बन्धित शिक्षा, छात्रवृत्ति, प्रवेश नियम, भौगोलिक परिस्थितियाँ आदि सम्बन्धी सूचना अलग-अलग पत्रावलियों में सन्दर्शित की गई है। विदेशी विनिमय, पारपत्र, वीसा, पूर्व परीक्षा, आदि सम्बन्धित जानकारियाँ भी दी जाती है।

रोजगार सूचना सहायता सभी इच्छुक अभ्यर्थियों को दी जाती है किन्तु पंजीयन की सुविधा केवल स्नातकोत्तर तथा व्यावसायिक स्नातकों (कृषि, चिकित्सा, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, कानून, शिक्षा, पुस्तकालय विज्ञान, प्रबन्ध शास्त्र आदि) तक ही सीमित हैं।

नियोजन हेतु पंजीकृत अभ्यर्थियों के विवरण तथा आवेदन पत्र सम्बन्धित नियोजकों को उनकी मांगों के सन्दर्भ में प्रेषित किए जाते है। ऐसी रिक्तियों की सूचना केन्द्र को सीधे नियोजक से स्थानीय तथा देश के अन्य सेवायोजन कार्यालयों तथा केन्द्रीय सेवायोजन कार्यालय, नई दिल्ली से प्राप्त होती है।

प्लेसमेन्ट सेल द्वारा समय-समय पर विभिन्न कम्पनियों के लिए कैम्पस प्लेसमेन्ट पर कार्य किया जा रहा है। वर्ष २०१०-११ में केन्द्र द्वारा आयोजित कैम्पस प्लेसमेन्ट कार्यक्रम में कुल ७१ अभ्यर्थियों ने भाग लिया जिसमें अन्तिम रूप से **१२** अभ्यर्थियों का चयन किया गया।

इण्टरनेट की सुविधा केन्द्र में आने वाले आगन्तुकों एवं अभ्यर्थियों को उनकी आवश्यकता अनुसार सेवायोजन, प्रवेश से सम्बन्धित जानकारी, छात्रवृत्ति/अधिवृत्ति आदि से सम्बन्धित सूचना इण्टरनेट के माध्यम से प्रदत्त की जाती हैं।

अपना व्यवसाय चुनिये पखवाड़ा : केन्द्र द्वारा **''अपना व्यवसाय चुनिये पखवाड़ा''** दिनांक ०५ सितम्बर २०११ से २० सितम्बर २०११ तक मनाया गया। पखवाड़े के दौरान देश-विदेश में रोजगार एवं स्वरोजगार, उच्च शिक्षा, शिक्षण-प्रशिक्षण की सुविधा, छात्रवृत्ति/अधिवृत्ति आदि से सम्बन्धित विशेषज्ञों की व्यावसायिक वार्ता विभिन्न विभागों, संस्थानों/विद्यालयों में करायी गयी।

अवसर शिविर करियर काउंसिलिंग प्रोगाम : केन्द्र द्वारा ''अवसर शिविर'' कॅरियर काउंसिलिंग प्रोगाम मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान देश-विदेश में रोजगार एवं स्वरोजगार, उच्च शिक्षा, शिक्षण-प्रशिक्षण की सुविधा, छात्रवृत्ति/अधिवृत्ति आदि से सम्बन्धित विशेषज्ञों की व्यावसायिक वार्ता विभिन्न विभागों, संस्थानों/विद्यालयों में करायी गयी।

आर्य महिला पी. जी. कॉलेज, वाराणसी, दिनांक ३०.०८.२०११

न्यू पी. जी. बिल्डिंग प्रेक्षागृह, बी.एच.यू., वाराणसी, दिनांक ०६.०२.२०१२

वर्ष २०११-२०१२ में किये गये कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है :

पंजीयन	—	२३३९
सम्प्रेषण	—	०१
सजीव पंजीयन	—	२५६४
व्यक्तिगत सूचना	—	६९२०
पंजीयन मार्गदर्शन	—	२३३९
व्यक्तिगत मार्गदर्शन	—	३७
पुनरावलोकन	—	३७
सामूहिक मार्गदर्शन	—	१२५
स्कूल/कॉलेज में वार्ता	—	२९
सूचनाकक्ष में आने वाले आगंतुक	—	७९००
विशिष्ट आगंतुक	—	४०
साहित्य का वितरण	—	६५
सूचना के संकलन से सम्बन्धित सम्पर्क	—	४०
सेवायोजन से सम्बन्धित सम्पर्क	—	३८
व्यावसायिक मार्गदर्शन से सम्बन्धित सम्पर्क	—	३८
प्रार्थना पत्रों का वितरण	—	२२
सेवायोजन सम्बन्धी आवेदन का अग्रसारण	—	००
कैम्पस प्लेसमेन्ट	—	१२
कैम्पस साक्षात्कार में भाग लेने वाले अभ्यर्थी	—	७१
मनोवैज्ञानिक परीक्षण		
अ. व्यक्तिगत		००
ब. सामूहिक		००

९.२४.३. छात्र परिषद् कार्यालय

छात्र परिषद् का गठन गत वर्ष दिनांक २४ अक्टूबर, २०११ को किया गया। सत्र २०११-२०१२ में छात्र परिषद् द्वारा विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न किये गये।

१. 'पौधारोपण': दिनांक १०/११/२०१२ कार्तिक पूर्णिमा के दिन नव गठित छात्र परिषद् द्वारा अपने कार्यकाल का शुभारम्भ छात्र कल्याण भवन में लगभग ५० पौधो का रोपण करके किया गया।

२. 'संगीतांजली': महामना की १५०वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर दिनांक २५/१२/२०११ को छात्र परिषद् द्वारा संगीत एवं मंच कला संकाय के ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में छात्रों के संस्कृतिक विकास हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे लगभग ४०० छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

३. सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती: सुभाष चन्द्र बोस के विचारों व उनके व्यक्तित्व के बारे में छात्र-छात्राओं को जानकारी प्रदान कराने हेतु एक कार्यशाला का आयोजन दिनांक २३/०१/२०१२ को कला संकाय प्रेक्षागृह में आयोजित किया गया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में डा० ध्रुव कुमार सिंह, इतिहास विभाग, समाज विज्ञान संकाय थे। प्रो. एम.पी.सिंह, विधि संकाय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

४. निबन्ध प्रतियोगिता: विधि संकाय के सभागार में दिनांक २२/०१/२०१२ को छात्रों के लिए निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था।

५. वाद-विवाद प्रतियोगिता: विधि संकाय के सभागार में दिनांक ०४/०२/२०१२ को छात्रों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें सम्पूर्ण विश्वविद्यालय के छात्रों ने भाग लिया।

६. योग शिविर कार्यक्रम: छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु विश्वविद्यालय परिसर में स्थित समस्त छात्रावासों में छात्र-छात्राओं के लिए योग शिविर का आयोजन छात्र परिषद् द्वारा किया गया। यह कार्यक्रम दिनांक २७/०१/२०१२ से १६/०२/२०१२ तक आयोजित किया गया।

७. अर्न व्हाइल लर्न योजना का क्रियान्वयन: गरीब एवं मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए छात्र परिषद् द्वारा ''अर्न व्हाइल लर्न'' योजना चलायी जाती है। गत वर्ष यह संख्या ५०० से बढ़ाकर ८०० कर दी गयी है। साथ ही उनका मानदेय भी ८०/- रूपये प्रतिदिन से १००/- रुपये प्रतिदिन कर दिया गया है।

८. दृष्टि पत्रिका द्वितीय अंक का विमोचन: वार्षिक पत्रिका ''दृष्टि'' सत्र २०१०-११ का विमोचन विश्वविद्यालय के कुलपति/संरक्षक छात्र परिषद् द्वारा किया गया।

९. सत्र २०११-१२ में 'दृष्टि' पत्रिका को अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका का दर्जा मिला।

१०. युवाओं के लिए छात्र परिषद् द्वारा नयी पत्रिका 'युवा आवाज' की शुरूआत की गई।

११. अन्तर-छात्रावासीय क्रिकेट प्रतियोगिता: अन्तर-छात्रावासीय क्रिकेट प्रतियोगिता का उद्घाटन दिनांक ०७/०२/२०१२ को कृषि विज्ञान संस्थान के मैदान में पूर्व रणजी खिलाड़ी श्री प्रताप नारायण सिंह 'राणा' द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में सभी छात्रावासों से टीम को आमंत्रित किया गया।

१२. तनाव व्यावस्थापन एवं व्यक्तित्व विकास: छात्र-छात्राओं के तनाव को कम करने एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहयोग प्रदान करने हेतु इस कार्यशाला का आयोजन दिनांक १३/०२/२०१२ को के.एन. उडप्पा ऑडिटोरियम में किया गया। इसमें मुख्य वक्ता प्रो. ए.के. श्रीवास्तव, मनोविज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. एच.सी. महापात्रा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान द्वारा किया गया। जिसमें लगभग ४५० छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

१३. कवि सम्मेलन: दिनांक ०१/०३/२०१२ को साहित्यिक कवि सम्मेलन का आयोजन एम.पी. थियेटर ग्राउण्ड में किया गया। इसमें विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं के साथ-साथ १४ अन्य

गणतंत्र दिवस समारोह
२६ जनवरी, २०१२

विश्वविख्यात वरिष्ठ कवियों द्वारा भी काव्यपाठ किया गया।

१४. क्विज़ प्रतियोगिता: संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय में संस्कृत के छात्रों के लिए वांग्मयी क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक ०४/०३/२०१२ को किया गया।

१५. राजीव गांधी दक्षिणी परिसर में आयोजित कार्यक्रम: अन्तर छात्रावासीय क्रिकेट टूर्नामेन्ट का आयोजन दिनांक ०८/०३/२०१२ को राजीव गांधी साउथ कैम्पस में आयोजित किया गया। इसमें राजीव गांधी साउथ कैम्पस के सभी छात्रों ने हिस्सा लिया।

१६. 'अनुरणन': दिनांक २०/०३/२०१२ को ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में वरिष्ठ अतिथियों द्वारा संगीत एवं मंच कला संकाय के छात्र-छात्राओं को संगीत के सूक्ष्म जानकारियाँ प्रदान की गई। उक्त कार्यक्रम में विश्वविख्यात वायलिन वादक पंडित सुखदेव मिश्र एवं शास्त्रीय संगीत गायक पंड़ित राजेश्वर आचार्य जी द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। छात्र परिषद् द्वारा अतिथियों को अंगवस्त्र एवं स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

९.२४.४. नगर छात्र-निकाय

विश्वविद्यालय के ऐसे सभी छात्र जो छात्रावास में न रह कर शहर के विभिन्न अंचलों या विश्वविद्यालय परिसर में निवास करते है उनका पंजीकरण नगर छात्र-निकाय के संरक्षण में किया जाता है। ऐसे छात्रों के शैक्षिक, सांस्कृतिक व बौद्धिक विकास के दायित्व का निर्वहन नगर छात्र-निकाय विभिन्न इकाईयों के संरक्षकों एवं मुख्य संरक्षक की देख-रेख में करता है। नगर छात्र निकाय की कुल पाँच इकाईयाँ निम्नलिखित हैं :

१. उत्तरी निकाय
२. दक्षिणी एवं रामनगर निकाय
३. पश्चिमी एवं डी.एल.डब्ल्यू. निकाय
४. पूर्वी निकाय
५. महिला महाविद्यालय इकाई (केवल छात्राओं के लिए)

नगर छात्र निकाय नगरीय छात्रों के लिए टेबल-टेनिस, शतरंज, कैरम, फुटबॉल, वालीबॉल व क्रिकेट इत्यादि खेलकूद के अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाएं (२७ पत्रिकायें और ८ राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र) हिन्दी एवं अंग्रेजी में छात्रों के अध्ययनार्थ उपलब्ध कराता है।

नगर छात्र निकाय द्वारा प्रतिवर्ष बहुउद्देशीय क्रिया-कलापों तथा विभिन्न प्रकार के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक (निबन्ध लेखन, प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद, सुभाषण, कार्टूनिंग, पेंटिंग, फोटोग्राफी, मेंहदी, रंगोली, वादन (तबला, सितार), एकल गायन व काव्य पाठ इत्यादि) प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में सत्र २०११-१२ में नगर छात्र निकाय द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में लगभग ६३६ छात्रों ने सक्रियता से भाग लिया। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विशेष समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया। वर्तमान सत्र (२०११-१२) का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह ११ अप्रैल २०१२ को आयोजित किया गया। जिसके मुख्य अतिथि प्रो. एस. सी. लखोटिया, अध्यक्ष, प्रो. वी. के. कुमरा, कुलसचिव, का. हि. वि. वि. तथा छात्र अधिष्ठाता डॉ. विनय कुमार सिंह थे। विजेता ८० प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि व माननीय कुलसचिव प्रो. वी. के. कुमरा द्वारा पुरस्कार व प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

९.२४.५. समान अवसर एवं समावेशी पद्धति

छात्र कल्याण : अनु.जाति/अनु.जनजाति

(क) अनु.जाति/अनु.जनजाति के लिए विशेष प्रकोष्ठ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय में सम्पर्क अधिकारी के रूप में उपकुलसचिव के प्रभार के अन्तर्गत अनु.जाति/अनु.जनजाति के लिए एक विशेष प्रकोष्ठ का गठन किया गया है जिसका कार्य आरक्षण नीति के क्रियान्वयन की देखरेख और सम्बन्धित सरकारी कार्यालयों को समय-समय पर सूचनाएँ उपलब्ध कराना है। यह प्रकोष्ठ अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ (पत्र सं. आर/जीएडी/जेन.२९७५७ दिनांकित ०३.११.२००७ के द्वारा) और अपंगता प्रकोष्ठ (पत्र सं. आर/जीएडी/ डिसेबिलिटी यूनिट/४४७३५ दिनांक १७.०२.२००९ के द्वारा) का कार्य भी देखता है।

(ख) अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति आरक्षण

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत सरकार द्वारा अधिसूचित अनिवार्य प्रावधान को विश्वविद्यालय द्वारा अनुसूचित जातियों के लिए १५ प्रतिशत और अनुसूचित जनजातियों के लिए ७.५ प्रतिशत निम्नलिखित आरक्षण लागू किया गया:

१. विभिन्न पाठयक्रमों मे प्रवेश
२. छात्रावासों में कमरों का आवंटन
३. शिक्षण एवं गैर-शिक्षण कर्मचारियों के आवासों का आवंटन
४. शिक्षक सदस्यों का चयन (असिस्टेंट प्रोफेसर से प्रोफेसर स्तर तक)
५. गैर-शिक्षण कर्मचारियों का चयन

(ग) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति हेतु स्थायी समिति

माननीय कुलपति के आदेशानुसार अधिसूचना सं.एससीटी/II/११.१२/२८८ दिनांक ०८.१०.२०११ द्वारा स्थायी समिति का पुनर्गठन किया गया है। माननीय कुलपति जी के आदेशानुसार अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की स्थायी समिति की एक उप समिति भी गठित की गयी है जो विभिन्न विभागों की प्रवेश समिति से मिलने वाले दोषपूर्ण जाति प्रमाण-पत्रों की जाँच एवं सत्यापन का कार्य करती है। उप-समिति के निर्देशानुसार दोषपूर्ण जाति प्रमाण-पत्रों को सक्ष्म अधिकारियों के माध्यम से सत्यापन के लिए मुख्य आरक्षाधिकारी, काशी हिन्दूविश्वविद्यालय को भेजा जाता है। प्रवेश समिति/चयन

छात्र कल्याण केन्द्र का पुनरुद्धार

केरियर गाइडेन्स एण्ड काउन्सिलिंग सेल

दृष्टि-२०११ का विमोचन

छात्र परिषद् २०११-१२

दृष्टि २०११, सम्पादक समूह का स्वागत

समिति/छात्रावास आवंटन समिति के साथ अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति शिक्षक के साहचर्य से सम्बन्धित अधिसूचना सं.एससीटी/मिस/X/२४२ दिनांक ०७.०९.२०११ को जारी किया गया है।

(घ) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति प्रेक्षक

विश्वविद्यालय अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समुदाय के हितों की रक्षा के लिए प्रवेश/ नियुक्ति/ पदोन्नति और छात्रावास आवंटन समितियों में अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति श्रेणी के अध्यापकों में से एक व्यक्ति को प्रेक्षक के रूप में नामित करता है ।

(च) समंक संकलन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की माँग पर यह प्रकोष्ठ नियमित रूप से छात्रों का प्रवेश, शिक्षक एवं गैर-शिक्षक, छात्रावास सुविधा, कर्मचारी आवासों और अध्येतावृत्ति/छात्रवृत्ति से सम्बन्धित सांख्यिकीय आंकड़ों को उपलब्ध कराता रहता है जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुवीक्षण समिति द्वारा अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों के लिये निर्धारित आरक्षण नीति के क्रियान्वयन के लिए उपयोग किया जाता है।

(छ) शिकायत पंजिका

अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति प्रकोष्ठ एक शिकायत पंजिका रखता है जिसमें अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के अभ्यर्थियों से प्राप्त शिकायतों को पंजीकृत किया जाता है और तब इन शिकायतों को सम्बन्धित ईकाइयों में आख्या हेतु प्रेषित कर दिया जाता है। इन शिकायतों का नियमानुसार निस्तारण यथाशीघ्र प्रेषित कर दिया जाता है।

अन्य पिछड़ी जाति

(क) अन्य पिछड़ी जाति के लिए विशेष प्रकोष्ठ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय में सम्पर्क अधिकारी के रूप में उप-कुलसचिव के प्रभार के अन्तर्गत अन्य पिछड़ी जाति वर्ग के लिए निर्धारित आरक्षण नीति के क्रियान्वयन की निगरानी हेतु एक विशेष प्रकोष्ठ की स्थापना की गयी है।

(ख) अन्य पिछड़ी जाति आरक्षण

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार विश्वविद्यालय में चयन एवं प्रवेश में अन्य पिछड़ी जाति वर्ग के लिए २७ प्रतिशत आरक्षण के अनिवार्य प्रावधान को विश्वविद्यालय द्वारा निम्नलिखित हेतु क्रियान्वित किया गया है।

१. विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश
२. छात्रावासों में कमरों का आवंटन
३. शिक्षक सदस्यों का चयन (असिस्टेंट प्रोफेसर स्तर तक)
४. गैर-शिक्षण कर्मचारी पदों पर चयन

(ग) समंक संकलन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की माँग पर यह प्रकोष्ठ छात्रों के प्रवेश, शिक्षण एवं गैर-शिक्षण कर्मचारियों के चयन, छात्रावास सुविधा, अध्येतावृत्ति/छात्रवृत्ति जैसे विभिन्न मामलों पर नियमित रूप से सांख्यकीय आँकड़े भेजता रहता है।

(घ) अभिभावकों की आय (अन्य पिछड़ी जाति)

अन्य पिछड़ी जाति के अभ्यर्थियों के प्रवेश के उद्देश्य से राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की संस्तुति के आधार पर अन्य पिछड़ा वर्ग के क्रीमी लेयर के निर्धारण हेतु आय सीमा को २.५ लाख से बदलकर रू.४.५ लाख कर दी गयी है।

(च) शिकायत पंजिका

अन्य पिछड़ी जाति प्रकोष्ठ एक शिकायत पंजिका रखता है जिसमें अन्य पिछड़ी जाति के अभ्यर्थियों से प्राप्त शिकायतों को पंजीकृत कर इन शिकायतों को संबंधित ईकाइयों में आख्या हेतु भेजा जाता है। इन शिकायतों का नियमानुसार निस्तारण यथाशीघ्र प्रेषित कर दिया जाता है।

रेमेडियल कोचिंग सेन्टर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ी जाति (नान-क्रीमी लेयर), अल्पसंख्यक समुदाय के लिए कोचिंग योजना के अन्तर्गत निर्धारित निर्देश के अनुसार नेट परीक्षाओं की तैयारी के लिए माननीय कुलपति महोदय ने एक सात सदस्यीय सलाहकार समिति का गठन किया है। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ी जाति (नान-क्रीमी लेयर) अल्पसंख्यक छात्रों के लिए सामाजिक विज्ञान संकाय के मनोविज्ञान विभाग में एक रेमेडियल कोचिंग सेन्टर का संचालन हो रहा है।

वर्ष २०११-१२ के दौरान अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों ने सिविल सेवा हेतु कोचिंग में प्रवेश लिया। रेमेडियल कोचिंग सेंटर में इन वर्गो के कमजोर विद्यार्थियों को होने वाली मुश्किलों का समाधान किया जाता है ताकि वे नियमित परीक्षाओं के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं में भी सफलता प्राप्त कर सकें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। इस सुविधा के बहुत अच्छे नतीजे प्राप्त हो रहे हैं। विभिन्न विषयों के कई विद्यार्थियों को यूजीसी–नेट एवं जेआरएफ परीक्षा में भी सफलता मिली है।

सत्र २०११-१२ में रेमेडियल कोचिंग सेन्टर प्रवेश प्राप्त विद्यार्थियों का विवरण

(अ) कोचिंग में प्रवेश सेवा

वर्ष	अनु. जाति	अनु. जनजाति	अन्य पिछड़ी जाति (नान-क्रीमी लेयर)	अल्पसंख्यक	योग
२०११-१२	३२	११	९७	१	१४१

(ब) कोचिंग में नेट/स्लेट में लेक्चररशिप के लिए तैयारी

वर्ष	अनु. जाति	अनु. जनजाति	अन्य पिछड़ी जाति (नान क्रीमी लेयर)	अल्पसंख्यक	योग
२०११-१२	१५२	५६	३५१	२०	५७९

समान अवसर प्रकोष्ठ

कुलपति महोदय के निर्देशानुसार (उप-कुलसचिव अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति) को समान अवसर प्रकोष्ठ का प्रभारी भी बनाया गया है (पत्र संख्या आर/डेव/मर्ज्ड स्कीम/इ.ओ.सी./४१७४ दिनांक २९.०३.२०१०)

समान अवसर प्रकोष्ठ का उद्देश्य/कार्य

इस प्रकोष्ठ का मुख्य उद्देश्य/कार्य अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक, विकलांग एवं अन्य पिछड़े वर्ग (नान-क्रीमी लेयर) के छात्रों को सफल एवं रोजगारपरक बनाने हेतु विशिष्ट योजना के तहत कोचिंग चला कर उन्हें मुख्य धारा में लाना है।

निःशुल्क कार्यशाला का आयोजन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रथम बार स्नातक (अन्तिम वर्ष) एवं स्नातकोत्तर वर्ग में अध्ययनरत अनुसुचित जाति/अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक, विकलांग एवं अन्य पिछड़े वर्ग (नान-क्रीमी लेयर) के छात्र/छात्राओं एवं बेरोजगार स्नातकों के लिए अंग्रेजी भाषा के ज्ञान, कम्प्यूटर संचालन में दक्षता, आत्मविश्वास बढ़ाने की कला तथा कॉरपोरेट जगत के नीति-नियमों से अवगत कराने एवं नियोजन के लिए उनकी क्षमता में सुधार हेतु दस दिवसीय निःशुल्क कार्यशाला **''सकारात्मक कार्रवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम''** का आयोजन विश्वविद्यालय के छात्र परिषद् भवन तथा प्रोद्योगिकी संस्थान स्थित व्याख्यान कक्ष में दिनांक १२ मार्च से २१ मार्च २०१२ तक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक, विकलांग एवं समान अवसर प्रकोष्ठ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं टाटा कन्सल्टेन्सी सर्विसेज़ लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

सकारात्मक कार्रवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागिता हेतु कुल ३५८ छात्र-छात्राओं ने आवेदन किया जिसमें से कुल २९५ छात्र-छात्राओं ने अपना पंजीकरण निर्धारित तिथि १२.०३.२०१२ को प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए कराया।

प्रशिक्षुओं का एक साधारण स्तर पर ''पूर्व-समाकलन परीक्षा'' प्रशिक्षुओं में अंग्रेजी ज्ञान के स्तर एवं समझ को बढ़ाने हेतु किया गया तदुपरान्त उन्हें प्रतिदिन अधिकतम ७-८ घण्टे का प्रशिक्षण दस दिनों तक टाटा कन्सलटेन्सी सर्विसेज़ लिमिटेड के अनुभवी प्रशिक्षक प्रो. एस.एम.गोम्स, सेण्ट ज़ेवियर्स कॉलेज, कोलकाता एवं वरिष्ठ कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी अधिकारी श्रीमती रूपश्री मुखर्जी द्वारा दिया गया। प्रशिक्षुओं का समाकलन प्रशिक्षण के दौरान समय समय पर लिखित एवं मौखिक परीक्षा द्वारा करते हुए परीक्षा में प्राप्त अंक को अभिलेखित किया गया।

दस दिनों के नि:शुल्क **''सकारात्मक कार्रवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम''** में प्रशिक्षक द्वारा अंग्रेजी तथा कम्प्यूटर ज्ञान के साथ-साथ पूर्ण व्यक्तित्व विकास के बारे में भी प्रशिक्षित किया गया जिसमें से करीब ६० घण्टे का अंग्रेजी प्रशिक्षण, १० घंटे का कम्प्यूटर प्रशिक्षण एवं १० घंटे का प्रशिक्षण विश्लेषणपरक विचार से संबंधित रहा।

दस दिवसीय नि:शुल्क प्रशिक्षण कार्यक्रम के समाप्त होने के पश्चात टाटा कन्सलटेन्सी सर्विसेज़ लिमिटेड के सकारात्मक कार्रवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम में सफल प्रशिक्षण प्राप्त करने के फलस्वरूप अनुसुचित जाति/अनुसुचित जनजाति, अल्पसंख्यक, विकलांग एवं अन्य पिछड़े वर्ग (नान-क्रीमी लेयर) के पंजीकृत २९५ प्रशिक्षुओं में से २७४ प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र निम्न रूप में प्रदान किया गये -

क्र.सं	वर्ग	छात्र	छात्रा	कुल प्रशिक्षु
१.	अनुसूचित जातिु	११०	१५	१२५
२.	अनुसूचित जनजाति	२०	०४	२४
३.	अन्य पिछड़ी जाति (नान-क्रीमी लेयर)	१०२	१६	११८
४.	विकलांग	०२	०१	०३
५.	अल्पसंख्यक	०४	००	०४
	कुल	**२३८**	**३६**	**२७४**

दस दिवसीय नि:शुल्क 'सकारात्मक कार्रवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम' के समापन पर टाटा कन्सलटेन्सी सर्विसेज़ लिमिटेड द्वारा चयन प्रक्रिया के सम्यक मानको का पालन करते हुए प्रतिभागियों की मेधा परीक्षा ली गई जिसमें कुल ९१ प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और उसमें से ४७ प्रतिभागियों को टाटा कन्सलटेन्सी सर्विसेज़ लिमिटेड में नियोजन हेतु साक्षात्कार हेतु चयनित किया गया।

सुविधायें

सत्र २०११-१२ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, विकलांग एवं अन्य पिछड़े वर्ग विद्यार्थियों को दी गई सुविधायें निम्नवत हैं:

अध्येतावृत्ति से लाभप्रद का नाम और नम्बर:

क्रम. सं.	अध्येतावृत्ति का नाम	अनु. जाति	अनु. जनजाति	विकलांग	अन्य पिछड़ी जाति
१.	राजीव गांधी राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति	२२४	२८	-	-
२.	यूजीसी-नेट-जेआरएफ	५३	१९	३	११३
३.	पोस्ट डॉक्टोरल अध्येतावृत्ति	०१	-	-	-

छात्रवृत्तियों से लाभप्रद का नाम और नम्बर:

क्रम. सं.	छात्रवृत्ति का नाम	अनु. जाति	अनु. जनजाति	विकलांग	अन्य पिछड़ी जाति
१.	राज्य सरकार छात्रवृत्तियाँ	९७४	१४५	-	१९१६

अन्नदान योजना

श्रीविश्वनाथ मन्दिर द्वारा संचालित अन्नदान योजना का प्रारम्भ वर्ष २००३ में किया गया था। इस योजना के अन्तर्गत काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के गरीब एवं मेधावी छात्रों को दोपहर एवं रात्रि का भोजन प्रदान किया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत चयनित छात्रों को प्रति वर्ष गाँधी जयन्ती से लेकर अप्रैल तक भोजन प्रदान किया जाता है। प्रारम्भिक वर्ष २००३ में इस योजना के अन्तर्गत १० छात्रों को भोजन दिया गया था। विगत सत्र २०११-१२ में ५६ छात्रों ने इस योजना का लाभ प्रदान किया गया।

९.२४.६. पाठ्येतर गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान संस्थान

छात्र कल्याण एवं सांस्कृतिक क्रियाकलाप

सांस्कृतिक क्रियाकलाप

हमारी शिक्षा पद्धति छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास पर बल देती है। हमारे संस्थान एवं अन्य संकायों के योग्य सदस्यों के नेतृत्व में गुणवत्तायुक्त मानव संसाधन विकास के उद्देश्य की प्राप्ति के लिये संस्थान छात्रों को पाठ्येत्तर क्रियाओं में स्वस्थ्य सहभागिता के लिये प्रोत्साहित करता है। शैक्षणिक वर्ष २०११-१२ में हमारे संस्थान ने अन्तर्कक्षा सांस्कृतिक कार्यक्रम (सृष्टि) के आयोजन के साथ-२ अंतर-संकाय प्रतिस्पर्धा (स्पन्दन) में सहभागिता के साथ-साथ कोरियोग्रैफी में प्रथम, टर्न कोर्ट में द्वितीय और अंग्रेजी वक्तृत्व और स्किप में तृतीय स्थान प्राप्त किया ।

खेलकूद क्रियाकलाप

संकाय के शिक्षकों, स्नातक एवं परास्नातक छात्रों के सहयोग से सत्र के दौरान नियमित रूप से खेल-कूद से सम्बन्धित गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों को खेल-कूद गतिविधियों में सहभागिता के लिये प्रशिक्षित एवं प्रोत्साहित किया जाता है जिससे कि वे अन्तर्विश्वविद्यालयी प्रतिस्पर्धाओं में सहभागी हो सकें। मुख्य आयोजन के साथ-साथ वॉलीबाल, फुटबॉल, क्रिकेट टूर्नामेंट वर्तमान शैक्षिणक वर्ष में आयोजित किये गये । हमारे स्नातक एवं परास्नातक स्तर के चार (४) छात्रों का विश्वविद्यालय टीम के सदस्य के रूप में फुटबॉल, बास्केटबॉल एवं एथलेटिक्स में चयन हो गया है। हमारे संस्थान की टीम ने वर्ष २०११-१२ के अर्न्तसकाय फुटबाल टूर्नामेंट और अन्तर्हास्टल क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया है।

छात्रावास क्रियाकलाप

संस्थान के पास दो छात्रावास (बाल गंगाधर तिलक छात्रावास पी०जी०/पीएच०डी के छात्रों एवं एस० राधाकृष्णन् छात्रावास स्नातक स्तर) छात्रों के लिये एवं दो छात्रावास छात्राओं के लिये (ओल्ड एण्ड न्यू) है। न्यू एग्रीकल्चरल गर्ल्स हास्टल के प्रथम तल के निर्माण पूर्ण होने के साथ इसका उद्घाटन माननीय कुलपति बीएचयू पद्मश्री डॉ. लालजी सिंह द्वारा विश्वविद्यालय स्थापना दिवस २८ जनवरी २०१२ को किया गया। इन छात्रवासों को जीरो रैकिंग प्रक्षेत्र बनाने के

लिए समय-समय पर इन छात्रवासों में काउंसलिंग और स्टूडेन्ट इवेन्ट्स का आयोजन किया गया।

प्रौद्योगिकी संस्थान

उद्घोष ११ भ्रमण (आई.आई.टी. कानपुर)

संस्थान के द्वारा राष्ट्रीय स्तर के वार्षिक क्रीड़ा समारोह में अब तक का सबसे बड़ा दल, जिसमें १०० छात्र एवं ४१ छात्राएँ थीं, भेजा गया। इस समारोह में विद्यार्थियों ने कई पदक जीते। वॉलीबाल (पुरुष एवं महिला) में रजत पदक, स्क्वाश में रजत पदक और एथलेटिक्स में रजत एवं कास्य पदक मिले। जबकि, पिछले वर्ष विजेता रही हमारी क्रिकेट टीम इस वर्ष आई.आई.टी.कानपुर से एक नजदीकी मुकाबले के बाद सेमी-फाइनल में खेल से बाहर हुई।

वॉलीबॉल टीम का उल्लेख यहाँ आवश्यक है जिसमें कि पुरूष टीम एवं महिला टीम दोनों ही फाइनल तक पहुँचे, जो कि बी.एच.यू. के बाहर उनका सर्वोत्तम प्रदर्शन रहा।

सैटर्नेलिया – २०१२ (नववर्ष समारोह) गेम्स और स्पोर्टस विंग, आई. टी., बी.एच.यू. द्वारा इसका आयोजन किया गया जिसने नृत्य, संगीत, फन स्टॉल और सुस्वाद भोजन से भरपूर आयोजन के रूप में अपनी छाप छोड़ी।

छठा डॉ.ए.के.चंदोला मेमोरियल इंटर हॉस्टल क्रिकेट टूर्नामेंट इस टूर्नामेंट के अन्तर्गत कई मैच खेले गए, जिसमें विवेकानंद छात्रावास ने टूर्नामेंट को जीता।

४२वाँ वार्षिक एथलेटिक्स मीट इस दो दिवसीय आयोजन में कई पुराने रिकार्ड टूटे और नये रिकार्ड बनाए गए।

स्पर्धा २०१२ आई.आई.टी., बी.एच.यू., का वार्षिक अखिल भारतीय क्रीड़ा उत्सव

आई.टी., बी.एच.यू.का यह खेल समारोह २३ फरवरी, २०१२ से प्रारम्भ होकर २६ फरवरी २०१२ तक चला। इस समारोह में कुल १२५० प्रतिभागियों ने शिरकत की जिसमें कि फील्ड इवेंट्स में ५० कॉलेजों एवं अनौपचारिक इवेंट्स में १५ कॉलेजों को मिलाकर १७५ छात्राओं ने भी सहभागिता की। इस समारोह का उद्घाटन अंतर्राष्ट्रीय एथलीट श्रीमति सुधा सिंह (३००० मीटर, स्टीपल चेज़) द्वारा किया गया।

स्पर्धा -१२ में विविध खेल शामिल रहे, जैसे –ट्रैक एवं फील्ड इवेंट, फुटबॉल, क्रिकेट साथ ही बैडमिंटन, स्क्वॉश वेट लिफ्टिंग और कम्प्यूटर पर खेले जाने वाले गेम भी शामिल किए गए। इस वर्ष कुछ नये इवेंट जैसे कि महिलाओं के लिए खो-खो और हैंडबॉल भी आयोजित हुए जिसमें सहभागियों ने असाधारण प्रदर्शन किया।

क्रिकेट टीम ने देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय को हराकर लगातार पांचवे वर्ष स्पर्धा ट्रॉफी को जीता। आई.टी., बी.एच.यू. ने लगभग सभी खेलों जैसे कि फुटबॉल, वॉलीबॉल हॉकी, बॉस्केटबॉल, हैंडबॉल, खो-खो, कबड्डी, ताइक्वान-डो और एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक जीते।

कला संकाय

डिपार्टमेंट ऑफ हिस्ट्री ऑफ आर्ट विविध कार्यक्रमों/पाठ्येतर गतिविधियों की सहभागिता

डिपार्टमेंट ऑफ टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी स्टडीज़, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर के क्विज प्रतियोगिता में एम.टी.ए.(चतुर्थ सेमेस्टर) के दो विद्यार्थियों ने द्वितीय पुरस्कार जीता।

ज्ञान प्रवाह, वाराणसी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्ट्री ऑफ आर्ट के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

संस्कृति' और 'स्पंदन' में हिस्ट्री ऑफ आर्ट के विद्यार्थियों ने भाग लिया और कई पुरस्कार जीते।

प्रबन्ध शास्त्र संकाय

अभी तक की गतिविधियाँ – रक्दान शिविर आयोजित करना, एसएस.हॉस्पिटल में भर्ती गरीब मरीजों को कंबल वितरण सामाजिक उद्यमियों के साथ अंत: क्रिया विविध सामाजिक उद्यमों का भ्रमण करना।

मंच कला संकाय

गायन विभाग

अध्येयता वृत्ति एवं छात्रवृत्ति/पुरस्कार

३ विद्यार्थियों कु० आंकाक्षा शर्मा, कु० पूनम श्रीनाथन तथा श्री भूपेन्द्र कुमार को एस०आर०एफ० अध्येयता वृत्ति।

५ विद्यार्थियों को जे०आर०एफ० अध्येयता वृत्ति।

श्री गति कृष्ण नायक तथा श्यामा कुमार भारती को क्रमश: गायन तथा हार्मोनियम वादन के क्षेत्र में मानव संसाधन मंत्रालय की ओर से छात्रवृत्ति।

कु० तन्वी भट्टाचार्या एवं श्री श्यामा कुमार भारती को उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी में क्रमश: गायन तथा हार्मोनियम वादन में प्रथम पुरस्कार।

स्पन्दन २०१२ शास्त्रीय गायन एकल में प्रथम पुरस्कार-विजेता गति कृष्ण नायक, सुगम संगीत में द्वितीय पुरस्कार। विजेता- श्री मासूम अलि, समूह गायन भारतीय में प्रथम पुरस्कार। विजेता- आकांक्षा तिवारी एवं समूह।

क्षेत्रीय युवा महोत्सव तेजपुर आसाम में शास्त्रीय गायन में प्रथम पुरस्कार एवं समूह गीत में प्रथम पुरस्कार।

राष्ट्रीय युवा महोत्सव, नागपुर, महाराष्ट्र - शास्त्रीय गायन में द्वितीय पुरस्कार और समूह गायन में तृतीय पुरस्कार।

कु० आकांक्षा तिवारी को भूपेन हजारिका स्मृति सुगम संगीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

वाद्य विभाग

विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ

क्षेत्रीय युवा महोत्सव २०११ में वाद्य संगीत वर्ग में सितार में प्रथम पुरस्कार विजेता - श्री अंकुर मिश्रा

क्षेत्रीय युवा महोत्सव २०११ में वाद्य संगीत वर्ग में तबला में प्रथम पुरस्कार विजेता - श्री आशीष मिश्रा

श्री अंकुर मिश्रा को मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पुरस्कार।

श्री कृतानन्द पाण्डेय वरिष्ठ अध्येयता वृत्ति।

स्पन्दन २०१२ में श्री अभिषेक महाराज को सितार वादन (एकल) में प्रथम पुरस्कार।

श्री चन्दन विश्वकर्मा को तबला वादन (एकल) में प्रथम पुरस्कार।

नृत्य विभाग

विद्यार्थियों की उपलब्धियां

अंकिता गोस्वामी, आनन्द कुमार विश्वकर्मा, रिंकी सिंह और निधि श्रीवास्तव ४ विद्यार्थियों को जे०आर०एफ० प्राप्त हुआ।

मनोज पंत और निष्ठा सिंह २ विद्यार्थियों ने नेट क्वालिफाई किया।

अंकिता गोस्वामी ने युवा वर्ग कलाकार शास्त्रीय गायन में प्रथम पुरस्कार (संगीत नाटक एकेडमिक एवार्ड) प्राप्त किया।

अंकिता गोस्वामी को एच.आर.डी. स्कालशिप का शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अंकिता गोस्वामी को अखिल भारतीय सगीत प्रतियोगिता, प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

जयप्रकाश (एम. फिल.), सीमा (एम. फिल.), ज्योति (एम. म्यूजिकोलॉजी), प्रतिभा (एम. फिल.), स्वाती (एम. फिल.), जयदेव (द्विवर्षीय पी.जी.डिप्लोमा) को स्पंदन, का.हि.वि.वि. में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

जयप्रकाश (एम. फिल.), सीमा (एम. फिल.), ज्योति (एम. म्यूजिकोलॉजी), प्रतिभा (एम. फिल.), स्वाती (एम. फिल.), जयदेव (द्विवर्षीय पी. जी. डिप्लोमा) को भावानुकीर्तनम् संस्थान में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

आशा त्रिपाठी (एम. फिल.) – 'धयास एक नाविओलाख' मराठी फिल्म में (गाना – कीप अलाइव द बर्निंग फ्लावर) जो कि चेन्नई, तमिलनाडू में रिलिज हुई।

आस्था त्रिपाठी का सारे गा मा पा प्रोग्राम, जी टी वी में चयन हुआ।

आस्था त्रिपाठी ने आई.डी.ई.ए.प्राइड ऑफ यूपी. में विजेता हुई।

भारत और वाराणसी के विभिन्न हिस्सों में होने वाले विभिन्न प्रकार के मंच प्रदर्शन कार्यक्रम में शानिश ग्यावाली, विदिशा हाजरा, शिवानी सोनकर, शुभ्रत राय चौधरी, अंकिता गोस्वामी ने भाग लिया।

दृश्य कला संकाय

वर्तमान सत्र विश्वविद्यालय तालिका के अनुसार निर्दिष्ट तिथियों के अनुरुप, ९ मई २०१२ तक सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया महामना पं.मदन मोहन मालवीयजी के १५०वीं जयंती वर्ष को समर्पित, संकाय ने अनेकानेक कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक आयोजन किया। वर्तमान सत्र २०११-१२ के दौरान शैक्षिक व पाठ्येतर कार्यक्रमों का विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित तिथियों के अनुरुप समय सीमा के अन्दर बिना किसी विलम्ब अथवा रुकावट के सफलता पूर्वक पूरा कर लिया गया।

महिला महाविद्यालय

सांस्कृतिक गतिविधियाँ-महिला महाविद्यालय में सांस्कृतिक संघ का गठन महामना जी की परिकल्पना के अनुरूप छात्राओं के बहुमुखी व्यक्तित्व के विकास को दृष्टि में रखते हुए किया गया है। सांस्कृतिक संघ, मंथन के तत्त्वावधान के अन्तर्गत छात्राओं को अपनी साहित्यिक एवं कलात्मक प्रतिभा प्रदर्शन का अवसर प्रदान करता है। वर्ष २०११-१२ में हिन्दी और अंग्रेजी में वाद-विवाद और निबंध लेखन, संस्कृत निबन्ध लेखन तथा बांग्ला निबन्ध लेखन अन्त्याक्षरी, उर्दू बैतबाज़ी, पेन्टिंग, रंगोली, शास्त्रीय एवं सुगम संगीत, लोक नृत्य एवं विज्ञान वाद-विवाद, क्विज़ इत्यादि की विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं और विजेता छात्राओं को महाविद्यालय के वार्षिक उत्सव के अवसर पर पुरस्कृत किया गया। विश्वविद्यालय के युवा महोत्सव 'स्पंदन' के तहत अन्तर संकाय प्रतियोगिताओं में ४२ छात्राओं ने हिस्सेदारी की और कई प्रतियोगिताओं में विजेता भी रहीं।

'वार्षिकोत्सव' समारोह का आयोजन ३ मार्च २०१२ को सम्पन्न हुआ। माननीय कुलपति **पद्मश्री डॉ० लालजी सिंह** ने विश्वविद्यालयीय स्तर पर योग्यता प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर सांस्कृतिक संघ की ओर से रवीन्द्र संगीत प्रस्तुति विशेष आकर्षण का केन्द्र बनी।

पूर्व छात्रा संघ संगठन

महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी के कवि रूप की स्मृति में पूर्व छात्रा संगठन की ओर से 'भाषा-उत्सव' का प्रारंभ विगत वर्ष से किया गया। ०९ फरवरी २०१२ में आयोजित भाषा-उत्सव में छात्राओं ने अंग्रेजी, हिन्दी, बांगला और संस्कृत भाषाओं में स्वरचित कविताओं का वाचन किया।

महामना व्याख्यान माला के अन्तर्गत **प्रो० देवव्रत चौबे** ने **'महामना की शिक्षा दृष्टि और उसकी प्रासंगिकता'** विषय पर ३ अप्रैल २०१२ को व्याख्यान् दिया।

खेलकूद

महिला महाविद्यालय के एथेलेटिक संघ द्वारा अन्तर्कक्षा खेलकूद-क्रिकेट, बास्केट बॉल, वालीबॉल, थ्रो बॉल, टेबल टेनिस, बैडमिन्टन और टग ऑफ वार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

महिला महाविद्यालय की छात्राओं ने अन्तर्विश्वविद्यालय टूर्नामेन्ट में भाग लिया और दो छात्राओं ने पूर्वी क्षेत्र के अन्तर्विश्वविद्यालय वास्केट बॉल टूर्नामेन्ट में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया और राष्ट्रीय स्तर तक पहुँच गईं।

वार्षिक एथेलेटिक उत्सव ३ फरवरी २०१२ को आयोजित किया गया। इस समारोह में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. वी. के. कुमरा, मुख्य अतिथि और विश्वविद्यालय स्पोंट्स बोर्ड के उपाध्यक्ष प्रो. एन. एन. सिंह विशिष्ट अतिथि थे। छात्राओं और गैर-शिक्षण कर्मचारी वर्ग ने भी खेलकूद में हिस्सेदारी की।

एन०सी०सी०/एन०एस०एस०

बी. एससी. भाग दो की छात्रा कुमारी रागिनी सिंह गणतन्त्र दिवस शिविर के लिए चुनी गई और नई दिल्ली में गणतन्त्र दिवस के सैन्य प्रदर्शन में शामिल हुईं।

महिला महाविद्यालय की ओर से २० जनवरी २०१२ से २६ जनवरी २०१२ तक राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय शिविर आयोजित किया गया। ३५० से अधिक छात्राओं ने भगवानपुर और छित्तूपुर के गाँवों में अपनी सेवाएं दीं।

आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, चेतगंज, वाराणसी

सहशैक्षणिक एवं शिक्षणेतर गतिविधियाँ

सत्र २०११-१२ का आरम्भ जुलाई २०११ से हुआ। स्वतंत्रता दिवस तथा कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर छात्राओं ने विविध प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। शिक्षक दिवस के अवसर पर स्नातक (कला), स्नातक वाणिज्य, प्रशिक्षण विभाग, स्नातकोत्तर की छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा प्राध्यापिकाओं का सम्मान किया।

इसके अतिरिक्त गणतन्त्र दिवस तथा सरस्वती पूजनोत्सव के अवसर पर छात्राओं ने एकल नृत्य, समूह नृत्य, सितार वादन इत्यादि सुरुचिपूर्ण एवं सुन्दर प्रस्तुतियाँ कर अपनी बहुविध प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया। दिनांक १४ दिसम्बर सन् २०११ को श्री आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद् का ९२वाँ स्थापना दिवसोत्सव उल्लास एवं गरिमापूर्ण वातावरण के साथ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति पद्मश्री डॉ.लालजी सिंह के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

स्थापना दिवस-समारोह

श्री आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद् ने अपना ९२वाँ स्थापना दिवस १४ दिसम्बर २०११ को मनाया, जिसमें महापरिषद् द्वारा संचालित सभी शिक्षण संस्थाओं ने भाग लिया। मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. लालजी सिंह, कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती विद्यादेवी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण से किया। उन्होंने संस्थापक महर्षि ज्ञानानन्द जी, श्रीमती विद्यादेवी जी एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी के चित्रों पर माल्यार्पण किया। डॉ. चन्द्रकान्त मिश्र, अध्यक्ष, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, डॉ. शशिकान्त दीक्षित, प्रबन्धक, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, डॉ. रचना दूबे, प्राचार्या, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज और महापरिषद् के अन्य सदस्यों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढाई। इस अवसर पर सर्वोच्च अंक प्राप्त छात्राओं को प्रमाण-पत्र एवं पदकों से सम्मानित किया गया।

अवकाश प्राप्त प्राध्यापिकाओं एवं कार्यालयीय सदस्य को उनके समर्पित सेवाभाव के लिए सम्मानित किया गया। प्रबन्धक महोदय डॉ. शशिकान्त दीक्षित जी द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि ने कॉलेज की वार्षिक पत्रिका **'सर्जना'**, शोधपत्रिका –'क्रिएशन' एवं समाचारपत्र **'दर्पण'** का विमोचन किया। उन्होंने डॉ. चन्द्रकान्ता राय, एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, डॉ. बृजबाला सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग द्वारा लिखित पुस्तकों का भी विमोचन किया। महापरिषद् के वरिष्ठ सदस्य श्री दीनानाथ झुनझुनवाला को उनके नि:स्वार्थ सेवा के लिए सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम का सफल संचालन संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. चन्द्रकान्ता राय ने किया एवं अभिनन्दन-पत्र का वाचन हिन्दी विभाग की वरिष्ठ सदस्य डॉ. बृजबाला सिंह ने किया। इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत 'नमक का हक' नामक नाटक का मंचन महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में अभिभावकों और छात्राओं ने सहभागिता की, तत्पश्चात् मुख्य अतिथि ने शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के साथ अल्पाहार लिया एवं छात्राओं को उच्च स्तरीय शिक्षा देने के लिए प्रबन्ध समिति की प्रशंसा की।

वसन्ता कालेज फार वूमेन, राजघाट, वाराणसी

'केयर' संस्था द्वारा 'व्यक्तित्व विकास' सम्बन्धी दो दिवसीय कार्यक्रम हुआ। वाणिज्य विभाग की छात्राओं के लिए रोजगार सम्बन्धी क्विज़ तथा प्रेजेन्टेशन का आयोजन एस. एम. एस. , वाराणसी द्वारा किया गया। बी.ए., बी.काम.एवं बी.एड.की अंतिम वर्ष की छात्राओं के लिए **'व्यक्तित्व विकास'** सम्बन्धी कार्यक्रम हुआ। बी.ए, बी.एड.एवं एम.ए.की छात्राओं हेतु अजेलिया, वाराणसी द्वारा 'व्यक्तित्व विकास' पर कार्यक्रम हुआ।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ - तीन दिवसीय, द्वितीय भारतीय छात्र संसद का आयोजन स्वामी विवेकानंद मंडप, एम. आई. टी. कैम्पस, पुणे में हुआ। भारतीय छात्र संसद का मुख्य था – **'युवा राजनीति से किस प्रकार जुड़ें'** महाविद्यालय की दस छात्राओं ने इसमें भाग लिया। युनाइटेड वर्ल्ड स्कूल ऑफ गुड़गाँव तथा आई. आई. एम. बंगलुरू के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित यूनाइटेड माइण्डस जरनल अवेयरनेस कार्यक्रम में चुनी गई चौबीस छात्रायें गुड़गाँव गईं। श्री रामचंद्र मिशन तथा यूनाइटेड नेशन इंफारमेशन सेण्टर फॉर इण्डिया द्वारा अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता में हिन्दी निबन्ध में दो तथा अंग्रेजी निबन्ध में दो छात्राओं को प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। सारस्वत खत्री पाठशाला

सोसाइटी तथा एस.एस.खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज (इलाहाबाद वि.वि.) द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता – **'शिक्षा और राष्ट्र निर्माण'** में महाविद्यालय की छः छात्राओं को प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ । सनबीम कॉलेज फॉर वूमेन, भगवानपुर (काशी विद्यापीठ) द्वारा आयोजित विविधा २०११, युवा महोत्सव में हुई प्रतियोगिता सुडाकू में एक छात्रा को प्रथम, कोलॉज मेकिंग में द्वितीय तथा सोशन एड्वर्टीजमेण्ट में एक छात्रा को प्रथम तथा चार छात्राओं को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। स्कूल ऑफ मैनेजमेण्ट साइंसेज़, वाराणसी द्वारा वारणसी और उसके आस पास के क्षेत्रों में आयोजित एस.एम.ए.आर.टी.टेस्ट में पाँच छात्रायें चुनी गईं। इसी टेस्ट के अंतिम चक्र में एक छात्रा को प्रथम पुरस्कार के रूप में पन्द्रह हजार रुपये नकद राशि के रूप में दिये गये। 'रामकथा के विदेशी विद्वान' विषय पर आयोजित पद्मभूषण फॉदर कामिल बुल्से स्मृति निबन्ध प्रतियोगिता में एक द्वितीय तथा एक सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। रोटरी क्लब द्वारा आर्य महिला पी. जी. कॉलेज में आयोजित **'लोकपाल भ्रष्टाचार को हटाने में सहायक है'** विषयक वाद-विवाद प्रतियोगिता में एक सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। महाविद्यालय में पाऊजी ए.डी.सर्राफ स्मृति भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अमर उजाला द्वारा आयोजित **'फ्यूचर मेरे हाथ में'** प्रतियोगिता में लगभग दो सौ छात्राओं ने कॅरिअर स्वप्न को कहानी रूप में प्रस्तुत किया।

का.हि.हि.वि. द्वारा आयोजित युवा महोत्सव स्पंदन-२०१२ में छात्राओं ने भाग लिया । जिसमें महाविद्यालय को 'शार्टप्ले' में द्वितीय स्थान, हिन्दी निबन्ध, हिन्दी भाषण प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान तथा स्केचिंग में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

प्रदर्शनी-

चित्रकला विभाग द्वारा आर. बी. एस. के एम्फीथियेटर परिसर में आयोजित 'कला मेला' में छात्राओं ने भाग लिया। इसमें छात्राओं द्वारा हस्तनिर्मित कलाकृतियाँ जैसे-मधुबनी, ग्लास पेटिंग, बाँस निर्मित कृतियाँ तथा ग्राफिक्स द्वारा डिजाइन किये कैलेण्डर का प्रदर्शन किया गया ।

डी.ए.वी.डिग्री कालेज, वाराणसी

सह-पाठ्यक्रम एवं पाठ्येतर गतिविधियाँ - महाविद्यालय विद्यार्थियों के लिए औद्योगिक, ग्राम दौरा एवं शैक्षणिक पर्यटन संचालित करता है।

ग्राम दौरा - ५ मार्च, २०११ को ग्राम-दसानिपुर, हरहुआ में 'दलित कामगारों हेतु डॉ० अंबेडकर के सामाजिक न्याय पर जागरूकता कार्यक्रम' विषय पर सर्वेक्षण करने के लिए एक ग्राम दौरे का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अन्य व्यक्तियों के अलावा डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज के समस्त सहायक आचार्य - डॉ० राकेश कुमार राम, डॉ० राहुल, श्री संजय शाह, डॉ० मुकेश सिंह शामिल थे।

शैक्षणिक दौरा - प्राचीन भारतीय इतिहास व संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग ने ऐतिहासिक कर्दमेश्वर मंदिर, कंदवा, वाराणसी का एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया।

सह-पाठ्यक्रम एवं पाठ्येतर गतिविधियों का सृदृढ़ीकरण -

१. विद्यार्थियों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन देना एवं अभियोग्यता परीक्षा आयोजित करना।

२. i. आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, वाराणसी: यह वाराणसी का प्रमुख उच्चतर शिक्षण संस्थान है और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के अधीनस्थ है।

ii. ज्ञान प्रवाह, वाराणसी: यह एक सांस्कृतिक अध्ययन एवं शोध केन्द्र है। यह वाद-विवाद, प्रश्नमंच का आयोजन करता है और शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के क्षेत्र में प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

iii. गंगा सेवा निधि: यह एक भविष्यदर्शी गैर-सरकारी संगठन है जिसका उद्देश्य बनारस, गंगा और इसके घाटों को स्वच्छ, हरा-भरा व निर्मल बनाना है और परम लक्ष्य स्वस्थ व श्रेष्ठ भारत निर्माण करना है।

iv. इलाहाबाद बैंक की इकाई यूनिवर्सल सोम्पो इन्योरेंश कंपनी लिमिटेड के साथ सहमति ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।

द) सांस्कृतिक कार्यक्रम -

शिक्षक दिवस - विभिन्न स्नातकोत्तर विभागों एवं स्नातक के विद्यार्थियों द्वारा अपने भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व० सर्वपल्ली राधाकृष्णन की स्मृति में शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय में फरवरी, २०१२ में अपना वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम युवा महोत्सव 'हॉरमनी' का आयोजन किया।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने काहिविवि द्वारा आयोजित 'स्पंदन' में भाग लिया और कई पुरस्कार जीते।

इतिहास विभाग द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

स्टॉफ सदस्यों का जन्म दिवस वर्ष पर्यंत (नियमित रूप से) मनाया गया।

खेल-कूद गतिविधि एवं कार्यक्रम

वर्ष २०१०-११ एवं २०११-१२ में डी.ए.वी. के विद्यार्थी काहिविवि की टीम में खिलाड़ी के रूप में शामिल किये गए।

बी.ए. भाग-III के विद्यार्थी अंकित वर्मा ने मंगलौर में अखिल भारतीय अंतर्विश्वविद्यालय २०११-१२ टूर्नामेंट एवं चैंपियनशिप में काहिविवि की टीम के सदस्य के रूप में प्रतिनिधित्व किया।

डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, वाराणसी काहिविवि अंतर संकाय शतरंज चैंपियनशिप २०११-१२ में चैंपियन बना।

चैंपियन टीम के सदस्य - १. अंकित वर्मा, बी.ए. भाग-III ; २. सौरभ मुखर्जी, बी.कॉम. भाग-I; ३. अवधेश, बी.ए. भाग-I; ४. सोनू सिंह, बी.ए. भाग-III; ५. उज्ज्वल, बी.कॉम. भाग-I; ६. रोशन तलरेजा, बी.कॉम. भाग-I ।

वर्ष २०११-१२ के दौरान डी.ए.वी. में इंटर क्लासेज टूर्नामेंट

२०.१२.२०१० को 'अलम्नाई सम्मिलन'

एनएसएस गतिविधियाँ : महाविद्यालय ने अपने तेरह एनएसएस इकाइयों के माध्यम से वाराणसी शहर के आसपास विभिन्न स्थानों पर कई शिविरों का आयोजन किया।

एनसीसी की एक इकाई का परिचालन

महाविद्यालय ने शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के लिए 'योग शिविर' का आयोजन किया।

महाविद्यालय के विद्यार्थी ज्ञान प्रवाह द्वारा दिनांक ०९.१०.२०१० को 'काशी की विरासत' विषय पर आयोजित प्रश्नमंच प्रतियोगिता में भाग लिए।

महाविद्यालय ने दिनांक २४.०२.२०११ को 'डॉ० अंबेडकर के सामाजिक आर्थिक विचार' विषय पर एक प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित की।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने अगस्त, २०१२ में श्री रामचन्द्र मिशन द्वारा आयोजित राष्ट्र स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में सहभागिता की।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद द्वारा आयोजित दामोदर श्री राष्ट्र स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में सहभागिता की।

महाविद्यालय ने 'प्रभा', 'स्त्री विमर्श' पत्रिका तथा 'जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एण्ड कॉमर्स' का प्रकाशन किया।

विद्यार्थियों द्वारा वॉल मैगज़ीन का प्रकाशन।

वॉल मैगज़ीन 'ईको-वीकली' एवं समाचार पत्र 'वॉइस ऑफ कॉमर्स' का प्रकाशन।

महाविद्यालय की वेबसाइट

संचालित पाठ्यक्रमों एवं शुल्क प्रारूप सहित विवरणिका

शैक्षणिक कैलेंडर

डिजिटल सूचना-पट्ट

पुस्तिकाओं के माध्यम से सूचना प्रसार का सुदृढ़ीकरण

१०. नवीन अध्यादेश/संशोधन

कुछ निश्चित अध्यादेशों के लिए नये अध्यादेश/संशोधन का सूत्रीकरण/प्रतिपादन और नियमों का निरुपण।

विभागीय नीतिनिर्धारण कमिटी (पी.पी.सी.) के सम्बन्ध में अध्यादेश ११.५ के अन्तर्गत निरुपति किए गए दिशानिर्देश (a), देखे कार्यकारिणी परिषद् रिजोल्यूशन सं. १९५, दिनांक २८-३० सितम्बर १९९१, को कार्यकारिणी परिषद् द्वारा संशोधित किया गया, देखें रिजोल्यूशन संख्या १७९ दिनांक २३ जून, २०१० और अनुमोदित किया गया जिसे निम्नलिखित रुप में पढ़ा जाएगा:

(a) उपरोक्त अध्यादेशों के अन्तर्गत यदि कोई शिक्षक सेवानिवृत्ति के कारण, मृत्यु, त्यागपत्र, बरखास्तगी या किसी अन्य कारण से विश्वविद्यालय को छोड़ दे, ऐसी स्थिति में यदि उपलब्ध हों तो, उसके पश्चात् वरीयता क्रम में स्थान धारण करने वाले व्यक्ति को विभागीय नीति निर्धारण समिति में नामित किया जाएगा।

कार्यकारिणी परिषद् के द्वारा विभागों के लिए विभागीय नीति निर्धारण समिति के संदर्भ में वर्तमान अध्यादेश ११.५ में संशोधन किए गए, देखे रिजोल्यूशन नं. २३५ दिनांक १४ फरवरी, २०११। साथ ही अन्त:अनुशासनात्मक स्कूलों के लिए निम्नलिखित प्रावधान ११.५(२) किये गये:

११.५ (२) वृहत् अन्त: अनुशासनात्मक स्कूलों/केन्द्रों.(जहाँ दस या अधिक शिक्षक हों) के लिए

(i) स्कूल/केन्द्र के दो वरिष्ठतम शिक्षक

(ii) स्कूल/केन्द्र के दो वर्तमान समन्वयक

(iii) वर्तमान समन्वयक के पूर्ववती समन्वयक

(iv) वर्तमान समन्वयक के कार्यावधि के समाप्त हो जाने के बाद अगले समन्वयक के तौर पर नियुक्त होने वाले शिक्षक

लघु अन्त: अनुशासनात्मक स्कूल/केन्द्र (जहाँ १० से कम शिक्षक हों) के लिये

(v) वर्तमान समन्वयक के पूर्ववर्ती रहे समन्वयक

(vi) स्कूल/केन्द्र के वर्तमान समन्वयक

(vii) वर्तमान समन्वयक के कार्यावधि के समाप्त होने के बाद अगले समन्वयक के तौर पर नियुक्त होने वाले शिक्षक

नोट:

अ- सहयोगी विभागों के सभी विभागाध्यक्ष/सहयोगी स्कूल के समन्वयक इत्यादि भी अन्त: अनुशासनात्मक स्कूल/केन्द्र की पीपीसी.के सदस्य होंगे।

ब- सेन्टर ऑफ एडवॉस स्टडीज के कार्यक्रम समन्वयक/स्पेशल असिस्टेन्ट प्रोग्राम इत्यादि, यदि अन्त: अनुशासनात्मक स्कूल/केन्द्र में पार्टनर हों, को अन्त: अनुशासनात्मक स्कूल/केन्द्र की पीपीसी. में शामिल किया जायेगा।

स- यदि अन्त: अनुशासनात्मक स्कूल/केन्द्र के थ्रस्ट एरिया के एक से ज्यादा समूह नेता हों तो वो भी पीपीसी. के सदस्य होंगे।

द- जब नितिनिर्धारण समिति के संघटन को भरने के लिये शिक्षकों की वांछित संख्या अयोग्यता या अनुपलब्धता के कारण कम हो तब ऐसी स्थिति में कुलपति संकाय के किसी शिक्षक को नामित कर सकते हैं।

• काशी हिन्दू विश्वविद्यालय अधिनियम के सेक्शन १७ के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों के अनुसार भारत के राष्ट्रपति द्वारा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विजिटर की कैपेसिटी में संज्ञाहरण सेक्शन को आयुर्वेद संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में संज्ञाहरण विभाग के रुप में उन्नत करने के सम्बन्ध में स्टैटयूट २५ (A) (२)२ के संशोधन को अनुमोदित किया गया, जैसा कि कार्यकारिणी परिषद् द्वारा संस्तुत किया गया था। देखे इसीआर संख्या १४१, दिनांक ३० जून, २००७। तद्नुसार संशोधित स्टैटयूट २५ (A) (२)२ को निम्नलिखित संशोधित रुप में पढ़ा जायेगा।

आयुर्वेद संकाय

विभाग

(i) सहिंता एवं संस्कृत

(ii) सिद्धांत दर्शन

(iii) द्रव्यगुण

(iv) काय चिकित्सा

(v) प्रसूती तंत्र

(vi) शल्य तंत्र

(vii) संज्ञाहरण

(viii) मेडिसिनल केमिस्ट्री (भेषज्य रसायन विभाग)

(ix) रस शास्त्र

(x) क्रिया शरीर

(xi) रचना शरीर

(xii) स्वास्थ्यवृत्त और योगा

(xiii) कौमारभृत्य / बालरोग

(xiv) विकिरण विज्ञान

(xv) शालाक्य तंत्र

परिशिष्ट - १

I - कोर्ट के सदस्य

१. डॉ. कर्ण सिंह
२. (क) प्रो. डी.पी. सिंह (२१.०८.२०११ तक)
(ख) डा. लालजी सिंह (२१.८.२०११ से)
३. प्रो.गिरीश कर्नाड
४. प्रो. सी.डी.सिंह
५. मे. ज. एस.एन. मुखर्जी (सेवानिवृत्त)
६. प्रो. (सुश्री) कमल सिंह
७. प्रो. (श्रीमती) एस. चूड़ामणी गोपाल
८. डॉ. डी.एस. राठौर
९. प्रो. लक्ष्मण चतुर्वेदी
१०. प्रो. एस.बी. सिंह
११. प्रो. शिव राज सिंह
१२. प्रो. (सुश्री) बेहरोज़ एस. गांधी
१३. डॉ. (सुश्री) निर्मला होरो
१४. डॉ. मन्जु शर्मा
१५. डॉ. नीतिश सेनगुप्ता
१६. प्रो. वी. एस. रेखी
१७. प्रो. एस. एफ. पाटिल
१८. डॉ. (श्रीमती) रूपा शाह
१९. डॉ. रामदास एम. पई
२०. प्रो. एम. शमीम जयराजपुरी
२१. डॉ. (श्रीमती) आर. एस. पाटिल
२२. जस्टिस डी.पी. एस. चौहान (सेवानिवृत्त)
२३. प्रो. एस.पी. सिंह
२४. प्रो. माधव गाडगिल
२५. प्रो. आई. एस. चौहान
२६. प्रो. एस.एस. सिंह
२७. प्रो. जी.गुरू
२८. प्रो. गेशे एन. समतेन
२९. प्रो. संजय जी. धन्दे
३०. डॉ. एन. के. जैन
३१. प्रो. वेद प्रकाश
३२. डॉ. सईदा अख्तर
३३. प्रो. एस.ए. अब्बासी
३४. प्रो. ज्ञानेन्द्र कुमार राय
३५. डॉ. एस.बी. सिंह
३६. डॉ. सैयद इकबाल अली
३७. डॉ. विजय वी. खोले
३८. ले.ज. डॉ. बी. एन. शाही
३९. प्रो. दिनेश सी पटेल
४०. प्रो. एस.एम. इकबाल
४१. डॉ. (श्रीमती) छाया बी. णहाजन
४२. प्रो. एस. एन. चौहान
४३. डॉ. अनन्त नारायण सिंह
४४. श्री कलराज मिश्रा

II - कार्यकारिणी परिषद् के सदस्य

१.	*प्रो. डी.पी. सिंह* (२१.०८.२०११ तक) कुलपति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (कार्यकारिणी परिषद् के पूर्व अनौपचारिक चेयरमैन)	१.	**प्रो. लालजी सिंह** (२१.८.२०११ से) कुलपति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (कार्यकारिणी परिषद् के पूर्व अनौपचारिक चेयरमैन)
२.	*श्री गिरीश कर्नाड* (३.१.२०११ तक) पूर्व अध्यक्ष संगीत नाटक अकादमी	२.	**डॉ. पुष्पा मित्रा भार्गव** (४.१.२०१२ से) पदम भूषण, सेन्टर फॉर सेलुलर एण्ड मोलेकुलर बायोलॉजी के भूतपूर्व स्थापक निदेशक
३.	*प्रो. सी.डी.सिंह* (३.१.२०११ तक) कुलपति इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय	३.	**प्रो. गोवर्धन मेहता** (४.१.२०१२ से) पदमश्री राष्ट्रीय शोध आचार्य एवं लिली-जुबिलेन्ट चेयर आचार्य हैदराबाद विश्वविद्यालय
४.	*मे.ज.एस.एन. मुखर्जी* (सेवानिवृत) (३.१.२०११ तक) कुलपति लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान	४.	**डॉ. टी. वी. रामाकृष्णन्** (४.१.२०१२ से) डिस्टिंग्विश्ड एसोसिएट सेन्टर फॉर कॉनडेन्स्ड मैटर थ्योरी, बंगलोर

१.	प्रो. (सुश्री) कमल सिंह (३.१.२०११ तक) कुलपति सनत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय	१.	**प्रो. अर्जुला रामचन्द्र रेडडी** (४.१.२०१२ से) कुलपति योगी वेमना विश्वविद्यालय
२.	प्रो.(श्रीमती) एस. चूडामणी गोपाल (३.१.२०११ तक) कुलपति छत्रपति शाहूजी महाराज चिकित्सा विश्वविद्यालय	२.	**डॉ. जी. एन. कॉजी** (४.१.२०१२ से) कुलपति जामिया हमदर्द (हमदर्द विश्वविद्यालय)
३.	डॉ. डी. एस. राठौर (३.१.२०११ तक) पूर्व कुलपति सी.एस.के.एच.पी.कृषि विश्वविद्यालय	३.	**डॉ. नरेश त्रेहन** (४.१.२०१२ से) चेयरमैन मेदान्ता – द मेडिसिटी, हरियाणा
४.	प्रो. लक्ष्मण चतुर्वेदी (३.१.२०११ तक) कुलपति गुरू घासीदास विश्वविद्यालय	४.	**डॉ. डी. एस. राठौर** (४.१.२०१२ से) भूतपूर्व कुलपति हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय
५.	प्रो. एस.बी. सिंह (३.१.२०११ तक) पूर्व प्राचार्य प्रादेशिक शिक्षा संस्थान	५.	**डॉ. पी. बी. सिंह** (४.१.२०१२ से) निदेशक यूरोलॉजिकल विज्ञान संस्थान मैक्स सुपर स्पेशलिटी हास्पिटल, दिल्ली

III - विद्वत् परिषद् के सदस्य

कुलपति

(परिनियम १७(१) (i) के अन्तर्गत)

प्रो. डी.पी. सिंह (२१.०८.२०११ तक)

प्रो. लालजी सिंह (२१.०८.२०११ से)

रेक्टर

सेक्शन १७ (१) (ii) के अन्तर्गत)

प्रो. बी.डी.सिंह (०१.१०.२०११ तक)

संस्थानों के निदेशक

(परिनियम १७ (१) (iii) के अन्तर्गत)

१. कृषि विज्ञान संस्थान

प्रो. आर.पी.सिंह

२. चिकित्सा विज्ञान संस्थान

प्रो. टी.एम. मोहपात्रा

३. प्रौद्योगिकी संस्थान

प्रो. के.पी. सिंह (३१.०१.२०१२ तक)

प्रो. जे.एन.सिन्हा (०१.०२.२०१२ से)

४. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान

प्रो. ए.एस.रघुबंशी

संकायों के प्रमुख

(परिनियम १७ (१) (iv) के अन्तर्गत)

आयुर्वेद संकाय

प्रो. वी. के. जोशी (३०.०६.२०११ तक)

प्रो. सी. बी. झा (०१.०७.२०११ से)

चिकित्सा संकाय

प्रो. बी.डी. भाटिया (११.०१.२०१२ तक)

निदेशक, चिकित्सा संस्थान (१२.०१.२०१२ से)

कला संकाय

प्रो. कमल शील

कृषि संकाय

प्रो. कल्याण सिंह (३१.०७.२०११ तक)

प्रो. सुबेदार सिंह (०१.०८.२०११ तक)

वाणिज्य संकाय

प्रो. वी.एस. सिंह

दन्त विज्ञान संकाय

प्रो. (सुश्री) नीलम मित्तल (०९.०९.२०११ तक)

प्रो. टी. पी. चतुर्वेदी (१०.०९.२०११ से)

शिक्षा संकाय

प्रो. पी.एन. सिंह

अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संकाय

प्रो. जी.एन. अग्रवाल

विधि संकाय

प्रो. डी.पी. वर्मा

प्रबन्ध शास्त्र संकाय

प्रो. एस.के. सिंह

मंच कला संकाय

प्रो. (सुश्री) शारदा वेलंकर

संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

प्रो. आर. सी. पंडा (१८.०२.२०१२ तक)

प्रो. जी. ए. शास्त्री (१९.०२.२०१२ से)

विज्ञान संकाय

प्रो. आर.सी. यादव (३०.०७.२०११ तक)

प्रो. अजीत सोढ़ी (३०.०९.२०११ तक)

प्रो. बी. के. राथा (०१.१०.२०११ से)

समाजिक विज्ञान संकाय

प्रो. ए.के. जैन (२९.०२.२०१२ तक)

प्रो. (सुश्री) चन्द्रकला पाडिया (०१.०३.२०१२ से)

दृश्य कला संकाय

प्रो. (सुश्री) भानु अग्रवाल (३०.११.२०११ तक)

प्रो. अंजन चक्रवर्ती (०१.१२.२०११ से)

पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संकाय

प्रो. ए.एस.रघुबंशी

शैक्षणिक विभागों के अध्यक्ष

(परिनियम १७(१) (v) के अन्तर्गत)

१. कला संकाय

१. प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व

प्रो. सीताराम दूबे

२. अरबी

प्रो. (सुश्री) नसीमा फारूकी

३. बंगाली

प्रो.(सुश्री) आलोका चटर्जी (३१.०७.२०११ तक)

प्रो.(सुश्री) बी.चक्रवर्ती (०१.०८.२०११ से)

४. अंग्रेजी

प्रो. आर.एन. राय

५. विदेशी भाषाएँ

प्रो. कमल शील

६. फ्रांसीसी

प्रो. एस.के. दास महापात्रा

७. जर्मन अध्ययन

संकाय प्रमुख (अध्यक्ष)

८. हिन्दी

प्रो. आर.एस. दूबे

९. कला इतिहास

प्रो. (सुश्री) रश्मि कला अग्रवाल

१०. भारतीय भाषाएँ

डॉ. संजय राय

११. पत्रकारिता एवं जनसम्प्रेषण

प्रो. शिशिर बसु

१२. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान

डॉ. अजय प्रताप सिंह

१३. भाषा विज्ञान

संकाय प्रमुख (अध्यक्ष)

१४. मराठी

संकाय प्रमुख (अध्यक्ष)

१५. पालि एवं बौद्ध अध्ययन
प्रो. विमलेन्द्र कुमार

१६. फारसी
डॉ. एस. एच. अब्बास

१७. दर्शन एवं धर्म
प्रो. डी.एन. तिवारी

१८. शारीरिक शिक्षा
प्रो. भुवन चन्द्र कापरी

१९. संस्कृत
प्रो. मनु लता शर्मा

२०. तेलगू
प्रो. जी. त्रिविकरामाइह

२१.उर्दू
डॉ. अब्दुल सलीम (३०.०११.२०११ तक)
डॉ.याकुब अली खान (०१.१२.२०११ से)

२. आयुर्वेद संकाय

१. द्रव्य गुण
प्रो..कमल नारायण द्विवेदी (३०.०९.२०११ तक)
प्रो.वी.के.जोशी (०१.१०.२०११ से)

२. कौमारभृत्य/ बाल रोग
डॉ. बृज मोहन सिंह

३. काय चिकित्सा
प्रो.श्रीकान्त तिवारी

४. क्रिया शरीर
डॉ. (सुश्री) संगीता गहलोत

५. औषधीय रसायन
प्रो. यामिनी भूषण त्रिपाठी

६. प्रसूति तंत्र
प्रो.(सुश्री) मुक्ता सिन्हा

७. रचना शरीर
डॉ. एच.एच. अवस्थी

८. रस शास्त्र
प्रो. सी.बी. झा

९. संहिता एवं संस्कृत
डॉ. प्रदीप कुमार गोस्वामी

१०. शालक्य तंत्र
डॉ. बी.एन. मुखोपाध्याय

११. शल्य तंत्र
प्रो. डी.एन. पाण्डेय (१६.०१.२०१२ तक)
प्रो. एम. शाहू (१७.०१.२०१२ से)

१२. सिद्धांत दर्शन
संकाय प्रमुख (अध्यक्ष) (१३.१२.२०११ तक)
डॉ.बी.के.द्विवेदी (१४.१२.२०११ से)

१३. स्वास्थ्यवृत एवं योग
संकाय प्रमुख (अध्यक्ष)

१४. विकृत विज्ञान
डॉ. ए.सी. कर

१५. संज्ञाहरण
प्रो.डी.एन.पाण्डेय

३. कृषि विज्ञान संकाय

१. कृषि अर्थशास्त्र
प्रो. राकेश सिंह

२. शस्य विज्ञान
प्रो. राजेन्द्र प्रसाद सिंह

३. पशु पालन एवं दुग्ध विज्ञान
प्रो. आलोक झा

४. कीट एवं कृषि जन्तु विज्ञान
प्रो. नरेन्द्र नाथ सिंह

५. प्रसार शिक्षा
प्रो. दीपक डे

६. कृषि अभियांत्रिकी
प्रो. सुबेदार सिंह

७. आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन
प्रो. रामधारी

८. उद्यान विभाग
प्रो. जे.एन. सिंह

९. कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान
प्रो. रमेश चन्द (३०.०६.२०११ तक)
प्रो. वीब्री.चौहान (३०.०९.२०११ तक)
प्रो. (सुश्री) आशा सिन्हा (०१.१०.२०११ से)

१०. पादप कार्यिकी विज्ञान

प्रो. जे.पी. श्रीवास्तव

११. मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन

प्रो. सुरेन्द्र सिंह

४. वाणिज्य संकाय

वाणिज्य

प्रो. वी.एस. सिंह

५. दन्त विज्ञान संकाय

दन्त विज्ञान

प्रो. (सुश्री) नीलम मित्तल (०९.०९.२०११ तक)

प्रो. टी.एम.चतुर्वेदी (१०.०९.२०११ से)

६. शिक्षा संकाय

शिक्षा

प्रो. पी.एन. सिंह

७. अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संकाय

१. प्रयुक्त रसायनशास्त्र

प्रो. पी.सी.पाण्डेय (३०.११.२०११ तक)

प्रो. एम.ए.कुरैशी (०१.१२.२०११ से)

२. प्रयुक्त गणित

प्रो. श्रीराम

३. प्रयुक्त भौतिकी

प्रो. के.एस. दूबे (३१.१०.२०११ तक)

प्रो. ओ.एन.सिंह (०१.११.२०११ से)

४. सिरेमिक अभियांत्रिकी

प्रो. ओम प्रकाश

५. रासायनिक अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी

प्रो. ए.के. वर्मा (१८.०१.२०१२ तक)

संकाय प्रमुख (अध्यक्ष) (१९.०१.२०१२ से)

६. सिविल अभियांत्रिकी

प्रो. पी.के. सिंह

७. संगणक अभियांत्रिकी

प्रो. ए.के.अग्रवाल (०८.०५.२०११ तक)

प्रो. आर.बी.मिश्रा (०९.०५.२०११ से)

८. वैद्युत अभियांत्रिकी

प्रो. जे.पी. तिवारी (३१.०१.२०१२ तक)

प्रो. एस.पी.सिंह (०१.०२.२०१२ से)

९. इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी

प्रो. एस.पी सिंह

१०. यांत्रिकी अभियांत्रिकी

प्रो. जे.पी. द्विवेदी (३१.०५.२०११ तक)

प्रो.वी.पी.सिंह (०१.०६.२०११ से)

११. धातुकीय अभियांत्रिकी

प्रो. ए.के.घोष (३१.०५.२०११ तक)

प्रो.जी.वी.एस.शास्त्री (०१.०६.२०११ से)

१२. खनन अभियांत्रिकी

प्रो. बी.के. श्रीवास्तव (२९.०२.२०१२ तक)

प्रो.अजीत जमाल (०१.०३.२०१२ से)

१३. भैषज्यिकी

प्रो. बी. मिश्रा

८. विधि संकाय

विधि

प्रो. डी.पी. वर्मा

९. प्रबन्ध शास्त्र संकाय

प्रबन्ध शास्त्र

प्रो. एस.के. सिंह

१०. चिकित्सा संकाय

१. निःसंज्ञा विज्ञान

प्रो. डी.के. सिंह

२. शरीर रचना विज्ञान

प्रो. (सुश्री) माधवी सिंह

३. जीव रसायन शास्त्र

प्रो.देबब्रत दास

४. जैव भौतिकी

प्रो. एच.डी. खन्ना

५. हृदय रोग

प्रो. पी.आर. गुप्ता (३०.०६.२०११ तक)

संकाय प्रमुख (अध्यक्ष) (०१.०७.२०११ से)

६. हृदय वक्ष शल्य चिकित्सा

डॉ.(सुश्री) दमयन्ती अग्रवाल

७. त्वचा एवं रति रोग विज्ञान

प्रो. संजय सिंह

८. अतःस्राव विज्ञान

प्रो. एन.के. अग्रवाल

९. फॉरेंसिक मेडिसिन

प्रो. सी.बी. त्रिपाठी

१०. जठरांत्र शोथ विज्ञान

प्रो. वी.के. दीक्षित

११. सामान्य चिकित्सा

प्रो. आई.एस. गम्भीर

१२. सूक्ष्मजीव विज्ञान

प्रो.(सुश्री) शम्पा अनुपुर्बा (३१.०१.२०१२ तक)

प्रो.गोपाल नाथ (०१.०२.२०१२ से)

१३. वृक्क रोग विज्ञान

प्रो. आर.जी. सिंह

१४. तंत्रिकीय चिकित्सा

डॉ. दीपिका जोशी

१५. तंत्रिकीय शल्य चिकित्सा

डॉ.विवेक शर्मा

१६. प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान

प्रो.(सुश्री) अनुराधा खन्ना (३१.०१.२०१२ तक)

प्रो.(सुश्री)एन.आर.अग्रवाल (१.२.२०१२ से)

१७. नेत्र विज्ञान

डॉ. एम.के. सिंह

१८. विकलांग विज्ञान

प्रो. एस.के. सर्राफ (२२.१२.२०११ तक)

प्रो.जी.एन.खरे (२३.१२.२०११ से)

१९. कर्ण नासा कण्ठ विज्ञान

प्रो. आर.के. जैन

२०. बाल चिकित्सा

डॉ. बी.के. दास

२१. बाल शल्य-चिकित्सा

प्रो. डी.के. गुप्ता

२२. पैथालाजी

प्रो.(सुश्री) ज्योति शुक्ला (३१.०१.२०१२ तक)

प्रो.(सुश्री) उषा (०१.०२.२०१२ से)

२३. भैषजकी विज्ञान

प्रो. बी.एल. पाण्डेय

२४. शरीर विज्ञान

प्रो. एस.बी.देशपांडे (१९.०७.२०११ तक)

प्रो.मलय बिकास मंडल (२०.०७.२०११ से)

२५. प्लास्टिक शल्य चिकित्सा

प्रो. प्रदीप जैन

२६. सामुदायिक चिकित्सा (पी एस एम)

प्रो. आर.के. श्रीवास्तवा (११.०७.२०११ तक)

प्रो.सी.पी.मिश्रा (१२.०७.२०११ तक)

२७. मनोरोग चिकित्सा

प्रो. (सुश्री) इन्द्रा शर्मा

२८. विकिरण-निर्धारण छायांकरण (विकरण विज्ञान)

प्रो. आर.सी. शुक्ला (२९.०२.२०१२ तक)

प्रो.ओ.पी.शर्मा (०१.०३.२०१२ से)

२९. विकिरण उपचार व विकिरण औषधि

डॉ. यू.पी. शाही (०१.१२.२०११ तक)

प्रो.ए.के.अस्थाना (०२.१२.२०११ से)

३०. शल्य-चिकित्सा

प्रो. संजीव कुमार गुप्ता

३१. यक्ष्मा एवं वक्ष रोग

प्रो. एस.सी. माटा

३२. मूत्ररोग विज्ञान

प्रो. यू.एस. द्विवेदी

३३. सर्जिकल ऑंकोलाजी

डॉ. मनोज पाण्डेय

११. मंच कला संकाय

१. नृत्य

श्री पी.सी. होम्बल

२. वाद्य संगीत

डॉ. वी. बलजीर

३. **संगीत शास्त्र**

डॉ. (सुश्री) लिपिका दासगुप्ता बोस

४. **कण्ठ संगीत**

प्रो. शारदा वेलंकर

१२. विज्ञान संकाय

१. **जैवरसायन**

प्रो. आर.एस. दुबे

२. **वनस्पति विज्ञान**

प्रो. बी.आर. चौधरी (०१.१२.२०११ तक)

प्रो.ए.के.राय (०२.१२.२०११ से)

३. **रसायन विज्ञान**

प्रो. बच्चा सिंह

४. **संगणक विज्ञान**

डॉ. एस.कार्तिकेयन

५. **भूगोल**

प्रो.एम.बी. सिंह

६. **भूविज्ञान**

प्रो. एच.बी. श्रीवास्तव

७. **भू- भौतिकी**

प्रो. जी.एस. यादव (११.०७.२०११ तक)

प्रो.यू.एस.सिंह (१२.०७.२०११ से)

८. **गृह विज्ञान**

प्रो. (सुश्री) कल्पना गुप्ता

९. **गणित**

प्रो. ए.के. श्रीवास्तव

१०. **भौतिक विज्ञान**

प्रो. जोखन राम

११. **सांख्यिकी**

प्रो. के.के. सिंह

१२. **प्राणि**

प्रो. के.पी. जॉय (०३.०६.२०११ तक)

प्रो.(सुश्री) सी.एम.चतुर्वेदी (०४.०६.११ से)

१३. **आण्विक एवं मानव आनुवांशिकी विज्ञान**

डॉ. असीम मुखर्जी (०५.०४.२०१२ तक)

प्रो.गोपेश्वर नारायन (०६.०४.२०१२ से)

१३. सामाजिक विज्ञान संकाय

१. **अर्थशास्त्र**

प्रो. राजेन्द्र राय

२. **इतिहास**

प्रो. लक्ष्मण राय

३. **राजनीति विज्ञान**

प्रो. आर.पी. पाठक

४. **मनोविज्ञान**

प्रो. (सुश्री) रीता कुमार

५. **समाजशास्त्र**

प्रो. जे.के. तिवारी

१४. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

१. **बौद्ध एवं जैन दर्शन**

प्रो.कमलेश कुमार जैन (२३.०९.२०११ तक)

डॉ.ए.के.जैन (२४.०९.२०११ से)

२. **धर्मागम**

डॉ. कमलेश झा

३. **धर्मशास्त्र एवं मीमांसा**

प्रो. एन.आर. श्रीनिवासन

४. **ज्योतिष**

प्रो. सच्चिदानन्द मिश्र

५. **साहित्य**

प्रो. सी.एम. द्विवेदी

६. **वेद**

डॉ.हरिश्वर दिक्षित (०१.०३.२०१२ तक)

संकाय प्रमुख (अध्यक्ष) (०२.०३.२०१२ से)

७. **वैदिक दर्शन**

प्रो.वी.पी. मिश्रा

८. **व्याकरण**

प्रो. बाल शास्त्री

१५. दृश्य कला संकाय

१. **प्रयुक्त कला**

डॉ. विधु भूषण सिंह

२. **चित्रकारी**

प्रो. रवीन्द्रनाथ मिश्रा

३. **प्लास्टिक कला**

श्री ए.सी. भट्टाचार्या (३०.०६.२०११ तक)

श्री एम.एल.गुप्ता (०१.०७.२०११ से)

१६. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संकाय

पर्यावरण एवं संपोष्य विकास विभाग

प्रो. ए.एस.रघुबंशी

अन्तर्विषयी स्कूल के समन्वयक

१. वस्तुपरक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी स्कूल

डॉ. राजीव प्रकाश (२४.०८.२०११ तक)

डॉ. प्रलय मैटी (२५.०८.२०११ से)

२. जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी स्कूल

डॉ. (सुश्री) नीरा मिश्रा

३. जैव रसायन अभियांत्रिकी स्कूल

प्रो. (श्रीमती) एम.डी. दास

४. जैव प्रौद्योगिकी स्कूल

प्रो. एस.एम. सिंह

५. खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्यागिकी केन्द

प्रो. आलोक झा

प्राचार्या, महिला महाविद्यालय

(परिनियम १७(१)(vi) के अन्तर्गत)

प्रो. (सुश्री) मीना सोढ़ी

विश्वविद्यालय की सुविधाओं के लिए स्वीकृत महाविद्यालयों के प्राचार्य

(परिनियम १७(१)(vii) के अन्तर्गत)

१. प्राचार्या, वसन्त कन्या महाविद्यालय

डॉ. (सुश्री) कुसुम मिश्रा

२. प्राचार्या, वसन्त महिला महाविद्यालय

डॉ. (सुश्री) विजया शिवपुरी

३. प्राचार्या, आर्य महिला पीज़ी.महाविद्यालय

डॉ. (श्रीमती) रचना दूबे

४. प्राचार्य, दयानन्द पोस्ट ग्रेजुएट महाविद्यालय

डॉ. सत्य देव सिंह

संकायों के वरिष्ठतम् प्रोफेसर (आचार्य), रीडर (सह-आचार्य) एवं लेक्चरर (सहायक आचार्य) जो शैक्षणिक विभागों के अध्यक्ष नहीं हैं (परिनियम १७ (१) (viii) के अन्तर्गत):

१. कृषि विज्ञान

१. डॉ. सुबेदार सिंह
प्रोफेसर

२. डॉ. कार्तिकेय श्रीवास्तव
असोसिएट प्रोफेसर

३. श्री. राम चन्द्र राम
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

२. कला संकाय

१. डॉ. कमल शील
प्रोफेसर

२. डॉ. संजय कुमार
असोसिएट प्रोफेसर

३. श्री. के.के. दत्ता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

३. आर्युवेद संकाय

१. डॉ. वी.के. जोशी
प्रोफेसर

२. डॉ. प्रदीप कुमार गोस्वामी
असोसिएट प्रोफेसर

३. डॉ. कामेश्वर नाथ सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

४. वाणिज्य संकाय

१. डॉ. एस. पी. श्रीवास्तव
प्रोफेसर

२. डॉ. मंजूर अहमद
असोसिएट प्रोफेसर

३. श्री. राम स्वरूप मीणा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

५. दन्त चिकित्सा संकाय

१. डॉ. (सुश्री) नीलम मित्तल
प्रोफेसर
२. डॉ. फ़रहान दुर्रानी
असोसिएट प्रोफेसर
३. डॉ. राजेश
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

६. शिक्षा संकाय

१. डॉ. हरिकेश सिंह
प्रोफेसर
२. डॉ. (सुश्री) सीमा सिंह
असोसिएट प्रोफेसर
३. सुश्री. दीपा मेहता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

७. अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संकाय

१. डॉ. एस. के. काक
प्रोफेसर
२. डॉ. आर.ए. द्विवेदी
असोसिएट प्रोफेसर
३. श्री. एस.के. साह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

८. विधि संकाय

१. डॉ. एम.पी. सिंह
प्रोफेसर
२. डॉ. एस.पी. राय
असोसिएट प्रोफेसर
३. सुश्री. आभा त्रिवेदी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

९. प्रबन्धशास्त्र संकाय

१. डॉ. एच.सी. चौधरी
प्रोफेसर
२. डॉ. आशीष बाजपेयी
असोसिएट प्रोफेसर
३. श्री. मदन लाल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१०. चिकित्सा संकाय

१. डॉ. गजेन्द्र सिंह
प्रोफेसर
२. डॉ. ए.एस.श्रीवास्तव
असोसिएट प्रोफेसर
३. डॉ. समीर त्रिवेदी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

११. मंच कला संकाय

१. डॉ.(सुश्री) रंजना श्रीवास्तव
प्रोफेसर
२. डॉ. वी. बालाजी
असोसिएट प्रोफेसर
३. श्री. पी.सी.होम्बल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१२. विज्ञान संकाय

१. डॉ. एस. के. सेनगुप्ता
प्रोफेसर
२. डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
असोसिएट प्रोफेसर
३. श्री. के.सी. सूद
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१३. सामाजिक विज्ञान संकाय

१. डॉ. (सुश्री) सी. पाडिया
प्रोफेसर
२. डॉ. राकेश पाण्डेय
असोसिएट प्रोफेसर
३. (सुश्री) ममता भटनागर
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१४. संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

१. डॉ. एन.आर. श्रीनिवासन
प्रोफेसर

२. डॉ. अशोक कुमार जैन
असोसिएट प्रोफेसर

३. डॉ. शिवराम गंगोपाध्याय
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१५. दृश्य कला संकाय

१. डॉ. रवीन्द्र नाथ मिश्रा
प्रोफेसर

२. डॉ. विधु भूषण सिंह
असोसिएट प्रोफेसर

३. श्री. विजय सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१६. पर्यावारण एवं संपोष्य विकास संकाय

१. डॉ. ए.एस. रघुवंशी
प्रोफेसर

२. डॉ. (सुश्री) कविता शाह
असोसिएट प्रोफेसर

३. जय प्रकाश वर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

१७. महिला महाविद्यालय

१. डॉ. (सुश्री) मीना सोढ़ी
प्रोफेसर

२. डॉ. (सुश्री) स्वाती
असोसिएट प्रोफेसर

३. सुश्री लयलिना भट्ट
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

विद्वत परिषद के बाह्य सदस्य (परिनियम १७ (१) (ix) के अन्तर्गत)

१. प्रो. राजन हर्षे
सदस्य

२. प्रो. नागेश्वर राव
सदस्य

३. प्रो. बैराज चौहान
सदस्य

४. प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी
सदस्य

५. प्रो. लालजी सिंह
सदस्य

६. प्रो. टी. कुमार
सदस्य

७. प्रो. एम.एस. यादव
सदस्य

८. प्रो. वीरेन्द्र वीर सिंह
सदस्य

९. प्रो. जी.के. सेंगर
सदस्य

१०. पद्मश्री (श्रीमती) गीता चन्द्रन
सदस्य

इमेरिटस प्रोफेसर (विशेष आमंत्रित)

(अध्यादेश १२ के प्रावधनों के अन्तर्गत)

१. **प्रो. सी.एल. सिंह**
भूभौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

२. **प्रो. एम.एस. श्रीनिवासन**
भूगर्भ विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय

३. **प्रो. आर.एस. अम्बस्ट**
वनस्पति विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय

४. **प्रो. के.डी. त्रिपाठी**
संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

५. **प्रो. जे.एस. सिंह**
वनस्पति विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय

६. **प्रो. ओ.एन. श्रीवास्तव**
भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

७. **प्रो. आर.एम.सिंह**
आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन

८. **प्रो. टी.वी. रामाकृष्णन्**
भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

९. **प्रो. के.पी. सिंह**
वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय

१०. **प्रो. सी.पी. सिंह**
भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

११. **प्रो. पी.के. अग्रवाल**
प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व

१२. **प्रो. के.के. नारंग**
अनुप्रयुक्त रसायनशास्त्र, प्रौद्योगिकी संस्थान

१३. **प्रो. यशवंत सिंह**
भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

१४. **प्रो. (श्रीमती) एस. चूड़ामणी गोपाल**
बाल शल्य चिकित्सा विभाग, कुलपति

१५. **प्रो. एच. एस. शुक्ला**
पूर्व प्रोफेसर, सर्जिकल ऑंकोलॉजी विभाग, चिकित्सा विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.

१६. **प्रो. श्री सिंह**
भौतिकी विभाग, विज्ञान संकाय

१७. **प्रो. एस.सी. लखोटिया**
जीव विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय

१८. **प्रो. बी.डी. सिंह**
जैव प्रौद्योगिकी स्कूल, विज्ञान संकाय

१९. **प्रो. बी.एन. सिंह**
प्राणी विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय

२०. **प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी**
संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

२१. **प्रो. सुशीला सिंह**
महिला महाविद्यालय

२२. **प्रो. वकिल सिंह**
धातुकीय अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी संस्थान

डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर (विशेष आमंत्रित)

१. **प्रो. डी.पी. सिंह**
खनन अभियांत्रिकी विभाग, प्रौद्योगिक संस्थान

२. **प्रो. ए.एन. त्रिपाठी**
वैद्युत अभियांत्रिकी विभाग, प्रौद्योगिक संस्थान

३. **प्रो. टी.के. लाहिरी**
हृदय वक्ष शल्य चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान

४. **प्रो. आर.एच. सिंह**
कायचिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद संकाय

५. **प्रो. एस. लेले**
धातुकीय अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी संस्थान

विश्वविद्यालय के अधिकारी

विजिटर
भारत के राष्ट्रपति

कुलाधिपति
डॉ. कर्ण सिंह

कुलपति
प्रो.डी.पी. सिंह (२२.०८.२०११ तक)
प्रो. लालजी सिंह (२२.०८.२०११ से)

कुलसचिव
श्री के. पी उपाध्याय (२८.०९.२०११ तक)
प्रो. विरेन्द्र कुमार कुमरा (२८.०९.२०११ से)

वित्त अधिकारी
डॉ. पराग प्रकाश (१५.०८.२०११ तक)
श्री ए. के. आइच (१६.०८.२०११ से)

परीक्षा नियन्ता
डॉ. के. पी. उपाध्याय

पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ. ए.के. श्रीवास्तव

छात्र अधिष्ठाता
प्रो. आशाराम त्रिपाठा

मुख्य कुलानुशासक
प्रो. एच. सी.एस. राठौर

चिकित्सा अधीक्षक
प्रो. आनन्द कुमार (२४.०९.२०११ तक)
प्रो. सी. बी. त्रिपाठी (२४.०९.२०११ से)

संस्थानों के निदेशक

१. कृषि विज्ञान

प्रो. आर.पी. सिंह

२. चिकित्सा विज्ञान

प्रो. टी.एम.महापात्रा

३. प्रौद्योगिकी

प्रो. के.पी. सिंह (३१.०१.२०१२ तक)

प्रो. जे. एन. सिन्हा (०१.०२.२०१२ से)

४. पर्यावरण एवं संपोष्य विकास

प्रो. ए.एस.रघुबंशी

संकायों के संकाय प्रमुख

आयुर्वेद संकाय

प्रो. वी.के. जोशी (३०.०६.२०११ तक)

प्रो. सी. बी. झा (०१.०७.२०११ से)

चिकित्सा संकाय

प्रो. बी.डी. भाटिया (११.०१.२०१२ तक)

निदेशक, चि. वि. स. (१२.०१.२०१२ से)

कला संकाय

प्रो. कमल शील (३१.०३.२०१२ तक)

प्रो. एम. एन. राय (०१.०४.२०१२ से)

कृषि संकाय

प्रो. कल्याण सिंह (३१.०७.२०११ तक)

प्रो. सुबेदार सिंह (०१.०८.२०११ से)

वाणिज्य संकाय

प्रो. वी.एस. सिंह

दन्तविज्ञान संकाय

प्रो. (सुश्री) नीलम मित्तल (०९.०९.२०११ तक)

प्रो. टी. पी. चतुर्वेदी (१०.०९.२०११ से)

शिक्षा संकाय

प्रो. पी.एन. सिंह

अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संकाय

प्रो. जी.एन. अग्रवाल (३१.०३.२०१२ तक)

प्रो. सुरेन्द्र कुमार (०१.०४.२०१२ से)

विधि संकाय

प्रो. डी.पी. वर्मा

प्रबन्ध शास्त्र संकाय

प्रो. एस.के. सिंह

मंच कला संकाय

प्रो. (सुश्री) शारदा वेलंकर

संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

प्रो. आर.सी. पंडा (१८.०२.२०१२ तक)

प्रो. जी. ए. शास्त्री (१९.०२.२०१२ से)

विज्ञान संकाय

प्रो. आर.सी.यादव (३०.०७.२०११ तक)

प्रो. अजित सोढ़ी (३०.०९.२०११ तक)

प्रो. बी. के. राथा (०१.१०.२०११ से)

समाजिक विज्ञान संकाय

प्रो. ए.के. जैन (२९.०२.२०१२ तक)

प्रो. (सुश्री) सी. पाडिया (०१.०३.२०११ से)

दृश्य कला संकाय

डॉ. (सुश्री) भानु अग्रवाल (३०.११.२०११ तक)

प्रो. अंजना चक्रवर्ती (०१.१२.२०११ से)

पर्यावरण एवं संपोष्य विकास

प्रो. ए.एस.रघुबंशी

महिला महाविद्यालय (प्राचार्या)

प्रो. (सुश्री) मीना सोढ़ी

परिशिष्ट - २

विश्वविद्यालय के शिक्षकों के शैक्षणिक योगदान का विवरण
(सत्र २०११-२०१२)

संस्थान का नाम	प्रकाशनों की संख्या								
	शोध-पत्र		लेख		पुस्तकें		मोनोग्राफ	मैन्युल	अन्य
	राष्ट्रीय	अन्तर्राष्ट्रीय	राष्ट्रीय	अन्तर्राष्ट्रीय	राष्ट्रीय	अन्तर्राष्ट्रीय			
चिकित्सा विज्ञान संकाय									
सामान्य चिकित्सा विभाग									
प्रो. आनन्द कुमार	१	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. वी. के. शुक्ला	४	४	०	०	०	१	०	०	३
प्रो. ए. के. खन्ना	५	७	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. के. गुप्ता	१	३	०	०	०	०	०	०	१
प्रो. राहुल खन्ना	२	५	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. पुनीत	०	२	०	०	०	०	०	०	३
डॉ. सोमप्रकाश बसु	०	८	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. सीमा खन्ना	२	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. राम निवास मीणा	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. विवेक श्रीवास्तव	०	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. तिवारी	०	१	०	०	०	०	०	०	०
विकलांग विज्ञान विभाग									
प्रो. एस. सी. गोयल	३	०	०	०	१	०	०	०	०
प्रो. एस. के. सर्राफ	२	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. जी. एन खरे	२	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. अमित रस्तोगी	२	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. के. राय	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. सौरभ सिंह	०	५	०	०	०	०	०	०	०
त्वचा एवं रतिरोग विज्ञान									
प्रो. एसएस. पाण्डेय	६	०	४	६	०	०	०	०	०
प्रो. लता शर्मा	१	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. संजय सिंह	२	२	२	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. सिंह	१	०	६	१	०	०	०	०	०
डॉ. मनीष बंसल	०	०	६	६	०	०	०	०	०
सूक्ष्म जीविकी विभाग									
प्रो. टी. एम. महापात्रा	०	४	०	४	०	०	०	०	३सारांश
प्रो. ए. के. गुलाटी	०	४	१	०	०	०	०	०	०
प्रो. एम. आर. सेन	१	४	०	२	०	३ अध्याय (किताब में)	०	१	०
प्रो. शम्पा अनुपूर्वा	०	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. गोपाल नाथ	०	१६	३	०	०	०	०	०	''मड़ई से खपरैल तक'' हिन्दी मैग-जीन के सम्पादक
डॉ. रागिनी तिलक	६	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. प्रद्युत प्रकाश	१	२	०	०	०	०	०	०	०

इन्डोक्रिनोलॉजी एण्ड मेटावोलिज्म									
प्रो. एस. के. सिंह	२	६	०	१	४	१	०	०	५जर्नल, ६प्रस्तुति करण''
डॉ. एन. के. अग्रवाल	१	२	०	०	०	०	०	०	१समाचार लेख
औषध रोग विज्ञान विभाग									
प्रो. आर .के. गोयल	१०	७	१	१	१	०	०	०	०
प्रो. बी. एल. पाण्डेय	५	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. पुरोहित	१०	२	०	०	०	१-अध्याय	०	०	०
डॉ. एम. एस. मुथु	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अंशुमान त्रिगुणायत	३	०	०	०	०	०	०	०	०
मोलेक्युलर बायोलॉजी विभाग									
प्रो. जे. वी. मेडिचेरला	०	१४	०	०	०	०	०	०	०
तंत्रिकीय चिकित्सा विभाग									
डॉ. दीपिका जोशी	०	१	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. वी. एन. मिश्रा	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .एन. चौरसिया	०	१	१	०	०	०	०	०	०
निश्चेतन विज्ञान विभाग									
प्रो. एल. डी. मिश्रा	२	२	२	०	०	०	०	०	०
जीव रसायन विभाग									
प्रो. डी. दास	१	९	१	१	०	०	०	०	०
शल्य चिकित्सा विभाग									
प्रो. वी. के. शुक्ला	४	४	३	०	१	०	०	०	०
प्रो. एस. के. गुप्ता	१	३	१	०	०	०	०	०	०
नेत्र विज्ञान विभाग									
डॉ. प्रशान्त भूषण	१	६	०	०	०	०	०	०	०
रोग विज्ञान विभाग									
प्रो. मोहन कुमार	४	६	०	०	०	०	०	०	०
शरीर विज्ञान विभाग									
प्रो. एस. बी. देशपाण्डे	३	३	१	०	०	०	०	०	०
बाल चिकित्सा विभाग									
प्रो. ओ. पी. मिश्रा	१२	२४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. अशोक कुमार	१	१८	२८	०	०	०	०	०	०
आयुर्वेद संकाय									
सिद्धान्त दर्शन विभाग									
डॉ. बी. के. द्विवेदी	५	१	०	०	०	०	०	०	०
विकृति विज्ञान विभाग									
डॉ. ए. सी. कर	४	१	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. पी. एस. ब्यादगी	०	४	०	१८	०	०	०	०	४
डॉ. (श्रीमती) पी. तिवारी	०	०	१	०	०	०	०	०	०
द्रव्यगुण विभाग									
प्रो. वी. के. जोशी	१	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. के. एन. द्विवेदी	२	०	२	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. के. सिंह	७	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. बी. राम	१	२	०	०	०	०	०	०	०

क्रिया शरीर विभाग									
डॉ. संगीता गेहलोट	४	५	२	०	०	१	०	०	०
डॉ. किशोर पटवर्धन	०	२	०	१	०	०	०	०	०
डॉ. एन. एस. त्रिपाठी	२	७	०	०	०	०	०	०	०
रचना शरीर विभाग									
डॉ. एच. एच. अवस्थी	०	०	१२	०	०	०	०	०	०
डॉ. के. एन. सिंह	०	०	२	१	०	०	०	०	०
औषधीय रसायन विभाग									
प्रो. वाइ. बी. त्रिपाठी	६	७	२	०	०	०	०	०	०
प्रो. एम. सहाय	१	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. टी. डी. सिंह	२	२	०	०	२	०	०	०	०
डॉ. अल्का अग्रवाल	४	८	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. वी. पी. सिंह	१	१	०	०	०	०	०	०	०
स्वास्थ्यवृत्त एवं योग									
डॉ. नीरु नथानी	१	१	१	०	१	०	०	०	०
डॉ. मंगलागौरी वी. राव	४	२	२	०	१	०	०	०	०
रसशास्त्र विभाग									
प्रो. सी. बी. झा	०	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. के. आर .सी. रेड्डी	०	४	०	०	१	०	०	०	०
श्री ए. के. चौधरी	०	०	०	२	०	०	०	०	०
दन्त विज्ञान चिकित्सा									
प्रो. नीलम मित्तल	०	०	९	१	०	०	०	०	०
प्रो. टी. पी. चतुर्वेदी	२	१	१०	२	०	०	१	०	०
प्रो. नरेश कुमार	०	०	१	१	०	०	०	०	०
डॉ. फरहॉ दुर्रानी	१	०	०	१	०	०	०	०	०
डॉ. अतुल भटनागर	०	१	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. एच. सी. बरनवाल	०	०	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. वी. के. श्रीवास्तव	०	०	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. रोमेश सोनी	०	०	२	१	०	०	०	०	०
डॉ. अजीत वी. परीहार	०	०	३	०	०	०	०	०	०
डॉ. एन. के. धिमन	०	०	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. अदित	१	०	३	१	०	०	०	०	०
डॉ. राहुल अग्रवाल	२	०	२	०	०	०	०	०	०
पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संकाय									
प्रो. ए. एस. रघुबंशी	०	९	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. के. शाह	०	३	०	०	३	१	०	०	०
डॉ. जी. एस. सिंह	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .के. मल्ल	०	२	१	१	१	०	०	०	०
डॉ. जे. पी. वर्मा	०	५	२	१	०	०	०	०	०
डॉ. आर .पी. सिंह	०	६	०	१	०	१	०	०	०
डॉ. पी. सी. अभिलाष	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. टी. बनर्जी	०	३	०	०	०	१	०	०	०

अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संकाय									
भैषजिकी विभाग									
डॉ. आर .एस. श्रीवास्तव	०	६	०	१	०	०	०	०	०
डॉ. बी. मिश्रा	०	१६	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. सिंह	१	२	३	०	०	०	०	०	०
डॉ. संजय सिंह	०	१०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. श्रीवास्तव	०	१२	०	०	०	०	०	०	०
श्री ए. के. श्रीवास्तव	०	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. (श्रीमती) एस. हेमलता	६	२९	०	५	०	०	०	०	०
डॉ. के. साईराम	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. विकास कुमार	३	५	०	१	०	१	१	०	०
डॉ. ए. सेन्थिल राजा	१	०	०	०	०	०	०	०	०
श्री ए. एन. शाहू	४	०	१	०	०	०	०	०	०
श्री एस. के. मिश्रा	०	३	०	१	०	०	०	०	०
श्रीमती रुचि चावला	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अशोक कुमार	०	०	१	०	०	०	०	०	०
खनन अभियांत्रिकी विभाग									
प्रो. बी. के. श्रीवास्तव	१	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एन. सी. कर्माकर	१	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. पी. राय	०	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. गुप्ता	१	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. जायसवाल	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. राजेश राय	१	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. जी. एस. पी. सिंह	०	३	०	०	०	०	०	०	०
यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग									
प्रो. जे. पी. द्विवेदी	०	६	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. पी. हर्ष	०	७	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. के. सिन्हा	०	४	०	०	१	०	०	०	०
डॉ. रजनेश त्यागी	०	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. शुक्ला	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. पी. घोष	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एन. मल्लिक	४	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. यू. एस. राव	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. जहार सरकार	०	५	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .के. गौतम	२	१	०	०	०	०	०	०	०
संगणक अभियांत्रिकी विभाग									
प्रो. ए. के. अग्रवाल	०	०	०	०	१	०	०	०	०
प्रो. ए. के. त्रिपाठी	०	४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. के. के. शुक्ला	५	१०	०	०	०	१	२	०	०
प्रो. आर .बी. मिश्रा	५	१२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. सिंह	०	१२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .श्रीवास्तव	१	४	२	३	०	२	०	०	०
डॉ. बी. बिसवास	३	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .एस. सिंह	०	१	०	०	०	१	०	०	०

प्रयुक्त रसायन विभाग									
प्रो. एम. एम. सिंह	०	४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. पी. सी. पाण्डेय	०	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एम. ए. कुरैशी	०	८	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. वाई. सी. शर्मा	०	८	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. एच. हसन	०	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आई. सिन्हा	०	७	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. के. डी. मंडल	०	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रयुक्त भौतिकी विभाग									
प्रो. बी. एन. द्विवेदी	०	७	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. के. एस. दूबे	०	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. डी. गिरि	०	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. पी. सिंह	०	२	०	०	०	१	०	०	०
डॉ. एस. चटर्जी	४	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .प्रसाद	१	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. मोहन	१	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. उपाध्याय	१	१	०	०	०	०	०	०	०
सिरामिक अभियांत्रिकी विभाग									
प्रो. देवेन्द्र कुमार	१	११	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ओम प्रकाश	०	७	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. पी. सिंह	०	४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. राम प्यारे	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. विनय कुमार सिंह	२	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एम. आर .माझी	२	५	०	०	०	०	०	०	०
प्रयुक्त गणित विभाग									
प्रो. के. एन. राय	०	५	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. टी. सोम	०	६	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एल. पी. सिंह	०	१०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. के. पाण्डेय	०	८	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. (श्रीमती) रेखा श्रीवास्तव	०	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. (श्रीमती) सान्त्वना मुखोपाध्याय	०	१२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. सुबिर दास	०	२२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. उपाध्याय	०	१२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अशोक जी गुप्ता	१	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. राजीव	०	२(स्वीकारना)	०	०	०	०	०	०	०
धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग									
प्रो. वकील सिंह	२	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. एन. ओझा	०	४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एम. शम्सुद्दीन	०	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. के. घोष	०	८	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. जी. वी. एस. शास्त्री	०	८	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. टी. आर .मानखण्ड	२	४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .के. मंडल	१	१०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एन. के. मुखोपाध्याय	०	१०	१	०	१	०	०	०	०
प्रो. सुनिल मोहन	१	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एन. सी. शांति श्रीनिवास	०	२	०	०	०	०	०	०	०

सिविल अभियांत्रिकी विभाग									
प्रो. वीरेन्द्र कुमार	१	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. प्रमोद कुमार सिंह	४	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. गौतम बनर्जी	३	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. देवेन्द्र मोहन	१	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. प्रभात कुमार सिंह	१	७	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. प्रभात कुमार सिंह दीक्षित	०	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अरुण प्रसाद	४	०	०	०	२	०	०	०	०
डॉ. एस. बी. द्विवेदी	६	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. राजेश कुमार	०	६	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. मंडल	०	१	०	०	०	०	०	०	०
श्री के. के. पाण्डेय	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. केशव प्रसाद	०	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. मेधा झा	१	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. पी. आर. मैटी	७	७	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. गुप्ता	६	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अनुराग ओहरी	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. पी. बाला रमूदू	०	१	०	०	०	०	०	०	०
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग									
प्रो. एस. एन. महेन्द्र	०	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. पी. सिंह	०	१२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. के. नागर	०	१०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. के. कपूर	०	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर.के. पाण्डेय	०	१०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर.के. श्रीवास्तव	०	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर.के. मिश्रा	०	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर.महन्ती	०	१०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. डी. सिंह	०	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर.एस. गोरायन	१	०	०	०	०	०	०	०	०
श्री गोपाल शर्मा	०	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर.के. साकेत	०	७	०	०	०	३	०	०	०
डॉ. एम. के. वर्मा	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. (श्रीमती) के. चौधरी	०	१	०	०	०	०	१	०	०
इलेक्ट्रानिक्स अभियांत्रिकी विभाग									
प्रो. एस. पी. सिंह	०	८	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. के. बालसुब्रहमण्यन	०	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. पी. के. जैन	०	७	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. जीत	०	११	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एन. एस. राजपूत	०	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एम. के. मेशराम	०	३	०	०	०	०	०	०	०
वस्तुपरक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी स्कूल									
प्रो. धनन्जय पाण्डेय	०	६	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. राजीव प्रकाश	०	१९	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. प्रलय मैटी	०	१३	०	०	१	०	०	०	०
डॉ. (श्रीमती) चन्दन रथ	०	५	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अखिलेश कुमार सिंह	०	३	०	०	०	०	०	०	०
जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी स्कूल									
प्रो. निरा मिश्रा	२	७	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. रंजना पटनायक	३	६	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. नीरज शर्मा	२	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. शीरु शर्मा	२	२	०	०	०	०	०	०	०
जैवरसायन अभियांत्रिकी स्कूल									
प्रो. सुबिर कुन्डु	०	५	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. के. श्रीवास्तव	०	८	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एम. देवनाथ (दास)	०	५	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर.एम. बनिक	०	६	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव	०	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आभा मिश्रा	०	४	०	०	०	०	०	०	०

कला संकाय									
पालि तथा बौद्ध अध्ययन									
प्रो. एच. एस. शुक्ला	२	०	०	०	१	०	०	०	०
प्रो. लालजी	२	०	०	०	१	०	०	०	०
प्रो. बिमलेन्द्र कुमार	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. सिद्धार्थ सिंह	२	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. प्रीति के. दूबे	१	१	०	०	०	०	०	०	०
भारतीय भाषा विभाग									
प्रो. एन. ए. भारती	४	०	२	०	०	०	२	१	०
डॉ. संजय राय	२	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. दिवाकर प्रधान	२	१	२	०	०	०	०	०	१
प्रो. पी. सी. प्रधान	२	१	२	२	०	१	१	०	०
उर्दू विभाग									
डॉ. याकूब अली खान	४	०	०	०	१	०	०	०	०
प्रो. नसीम अहमद	३	१	३	०	०	०	०	०	०
डॉ. आफताब अहमद	५	०	५	०	०	०	०	०	०
डॉ. मुशर्रफ अली	०	०	२	०	०	०	०	०	०
भाषा विज्ञान विभाग									
प्रो. आर .एन. भट	३	३	०	०	०	०	०	०	०
श्री ए. के. मिश्रा	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. ठाकुर	४	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. घोष	६	०	०	०	०	०	०	०	०
दृश्य कला संकाय									
प्रयुक्त कला विभाग									
डॉ. हीरालाल प्रजापति	०	०	०	०	१	०	०	०	२
डॉ. मनिष अरोरा	०	०	०	०	०	०	०	०	१८
चित्र कला									
श्री एस. के. गौतम	०	०	४	०	०	०	०	०	१०
डॉ. जसमिंदर कौर	४	०	०	०	०	०	०	०	१५
डॉ. उत्तम	०	०	०	०	०	०	०	०	७
मूर्ति कला									
श्री एम. एल. गुप्ता	०	०	२	०	०	०	०	०	३
श्री बी. के. सिंह	०	०	०	०	०	०	०	०	२
श्री. एम. पी. सिंह	०	०	०	०	०	०	०	०	२
श्री ब्रहमा स्वरुप	०	०	०	०	०	०	०	०	२
इतिहास कला एवं डिजाइन									
प्रो. अंजन चक्रवर्ती	२	०	०	०	०	०	०	०	२
डॉ. दिव्या ए. राय	३	०	२	०	०	०	०	०	११
डॉ. शान्ति स्वरुप सिन्हा	५	०	०	०	१	०	०	०	१२
शिक्षा संकाय									
प्रो. आशा पाण्डेय	४	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. पी. एन. सिंह	५	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .पी. शुक्ला	३	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. सीमा सिंह	३	१	०	०	१	०	०	०	०
डॉ. अंजली बाजपेयी	२	०	१	०	०	०	०	०	१ अध्याय (किताबमें)

मंच कला संकाय									
गायन संगीत विभाग									
प्रो. शारदा वेलकर	०	२	१	२	०	०	०	०	६
प्रो. ऋत्विक सान्याल	१	३	१	१	०	०	१	०	३
डॉ. एस. आर .सोनी	३	३	०	०	०	०	०	०	२
डॉ. के. शशी कुमार	१	२	२	०	०	०	१	०	५
डॉ. संगीता पंडित	३	२	१	०	०	०	०	०	६
डॉ. के. ए. चंचल	४	२	०	०	०	०	०	०	४
डॉ. जी. सी. पाण्डेय	२	२	०	०	०	०	०	०	४
डॉ. राम शंकर	१	२	३	०	२	०	०	०	९
वाद्य संगीत विभाग									
प्रो. कृष्णा चक्रवर्ती (सितार)	०	०	०	०	०	०	०	०	११
डॉ. वी. बालाजी (वायलीन)	०	२	०	०	०	०	०	०	३
डॉ. प्रहलाद नाथ (बासुरी)	०	१	०	०	०	०	०	०	१
डॉ. बिरेन्द्र नाथ मिश्रा (सितार)	०	१	०	०	१	०	०	०	४
डॉ. राजेश शाह (सितार)	०	२	०	०	०	०	०	०	३
डॉ. संगीता सिंह	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. प्रवीण उधव (तबला)	२	१	२	०	०	०	०	०	३
डॉ. प्रेम किशोर मिश्रा (सितार)	०	२	०	०	०	०	०	०	२
डॉ. स्वर्ण कुन्तिया (वायलीन)	०	२	०	०	०	०	०	०	४
डॉ. सुप्रिया शाह (सितार)	३	२	०	०	०	०	०	०	२
संगीत शास्त्र विभाग									
प्रो. लिपिका दासगुप्ता	४	२	८	०	०	०	२	०	४
डॉ. शिवराम शर्मा	२	२	०	०	०	०	०	०	१
विज्ञान संकाय									
जीवरासायन विभाग									
प्रो. आर .एस. दूबे	०	८	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एच. पी. पाण्डेय	०	१०	०	०	०	१	०	०	०
प्रो. (श्रीमती) एस. राठौर	०	८	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ओम प्रकाश	२	७	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. पी. के. श्रीवास्तव	१	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. पी. सिंह	०	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. श्रीकृष्णा	०	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .के. सिंह	०	१०	०	०	०	०	०	०	०
जैव-प्रौद्योगिकी स्कूल									
प्रो. बी. डी. सिंह	३	३	०	०	३	०	०	०	०
प्रो. ए. सोढ़ी	०	७	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. अशोक कुमार	०	९	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. के. त्रिपाठी	०	४	०	१	०	०	०	०	०
प्रो. एस. एम. सिंह	०	५	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. एम. कायस्थ	१	११	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अरविन्द कुमार	०	४	०	०	०	०	०	०	०
वनस्पति विज्ञान विभाग									
प्रो. बी. आर .चौधरी	०	२	०	०	१	०	०	०	०
प्रो. ए. के. राय	०	२	२	३	०	०	०	०	०
प्रो. एल. सी. राय	१	६	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. जे. पी. गौड़	०	४	०	०	०	०	०	०	०

प्रो. (श्रीमती) एम. अग्रवाल	०	७	२	०	०	०	०	०	०
प्रो. एन. के. दूबे	१	९	१	१	०	०	०	०	०
प्रो. एस. बी. अग्रवाल	२	१४	२	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. सिंह	२	९	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. नंदिता घोषाल	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .पी. सिन्हा	०	१४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. के. मिश्रा	०	३	१	१	०	०	०	०	०
डॉ. जे. पाण्डेय	२	४	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .एन. खरवार	१	४	०	३	०	१	०	०	०
डॉ. आर .सागर	०	३	०	२	०	१	०	०	०
डॉ. एम. अहमद	४	९	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आशा लता सिंह	२	६	२	०	०	०	०	०	०
रसायनशास्त्र विभाग									
प्रो. एस. के. सेनगुप्ता	०	६	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एन. के. सिंह	०	९	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. टी. आर .राव	०	४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. बी. सिंह	०	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एल. मिश्रा	४	११	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. वी. बी. सिंह	०	४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. यू. एस. राय	०	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .एन. सिंह	०	७	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एन. सिंह	०	९	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. डी. एस. पाण्डेय	०	११	०	२	०	०	०	०	०
प्रो. एम. एस. सिंह	३	१६	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .एम. सिंह	०	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. बी. बी. प्रसाद	०	६	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. के. एन. सिंह	०	११	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. डी. खत्री	०	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .एस. खन्ना	२	१३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. वी. पी. सिंह	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. वी. राय	०	८	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .एन. राय	०	१०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. के. के. उपाध्याय	०	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. भट्टाचार्या	१	७	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. इदा तिवारी	०	९	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. मिश्रा	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .कुमार	०	९	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. वी. गणेशन	०	७	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. के. तिवारी	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. वी. के. तिवारी	०	१४	०	०	०	५	०	०	०
डॉ. एस. कृष्णा मूर्ति	०	६	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. बी. मैटी	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. शाहा	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एम. के. भारती	०	९	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. पी. श्रीवास्तव	०	२	०	०	०	०	०	०	०

संगणक विज्ञान विभाग									
प्रो. एस. के. बसु	०	०	०	०	०	०	०	०	२
प्रो. पी. के. मिश्रा	०	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. कार्तिकेयन	०	०	०	०	०	०	०	०	३
डॉ. मंजरी गुप्ता	०	२	०	०	०	०	०	०	०
सुश्री वी. कुशवाहा	०	०	०	०	०	०	०	०	०
भूगोल विभाग									
प्रो. पी. आर .शर्मा	४	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. बी. सिंह	४	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एम. बी. सिंह	८	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. टी. डी. सिंह	१	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. राना पी. बी. सिंह	४	२	८	३	५	२	२	२	३
प्रो. के. एन. पी. राजू	१	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. जे. सिंह	४	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .एस. यादव	२	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. राम बिलास	३	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. बी. एन. सिंह	२	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. पी. मिश्रा	१	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. बी. आर .के. सिन्हा	१	०	०	०	१	०	०	०	०
प्रो. वी. एन. शर्मा	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. पी. मिश्रा	३	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. रवि एस. सिंह	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. वी. के. त्रिपाठी	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. डी. गोवनामणी	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. जी. राय	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. सान्याल	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. के. पी. गोस्वामी	३	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. के. राय	०	०	०	०	१	०	०	०	०
डॉ. एस. आलम	१	०	०	०	०	१	०	०	०
श्री एम. एल. मीणा	१	०	०	०	०	०	०	०	०
भूविज्ञान विभाग									
प्रो. एम. जोशी	१	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एच. बी. श्रीवास्तव	२	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एम. पी. सिंह	०	१४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .के. श्रीवास्तव	२	६	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. डी. सिंह	३	६	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. यू. के. शुक्ला	३	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .पी. सिंह	१	२	१	०	०	०	०	०	०
प्रो. बी .पी. सिंह	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एन. वी. सी. राव	१	८	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. पी. के. सिंह	१	१५	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. डी. प्रकाश	१	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. वी. श्रीवास्तव	४	०	०	०	०	०	०	०	०

भूभौतिकी विभाग									
डॉ. एस. एन. पाण्डेय	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .भाटला	१	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एन. पी. सिंह	२	०	०	०	०	०	०	०	१
डॉ. जी. पी. सिंह	०	०	०	०	०	०	०	०	२
डॉ. एच. एन. सिंह	१	४	०	०	०	०	०	०	२
डॉ. एम. के. श्रीवास्तव	१	५	०	०	०	०	०	०	१
गृह विज्ञान विभाग (म. म. व.)									
डॉ. कल्पना गुप्ता	३	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आई. बिशनोई	३	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. चक्रवर्ती	२	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. मुक्ता सिंह	३	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. पुष्पा कुमारी	०	०	०	०	०	१	०	०	०
गणित विभाग									
प्रो. ए. के. श्रीवास्तव	०	५	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. डी. सिंह	०	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. सत्तार	०	४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. आर .सिंह	०	४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. के. सिंह	०	११	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. लाल	०	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एम. एम. त्रिपाठी	१	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. डी. आर .साहू	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. के. मिश्रा	०	८	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. बी. एस. भादुरिया	०	२०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. मिश्रा	०	१६	०	०	०	०	२	०	०
डॉ. ए. के. सिंह	०	२	०	०	०	०	१	०	०
आणविक एवं मानव जनन विज्ञान									
डॉ. जी. नारायण	०	१	२	२	०	०	०	०	०
डॉ. ए. मुखर्जी	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. किरण सिंह	०	६	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एम. मुत्सुद्दी	०	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. गीता राय	२	३	१	२	०	०	०	०	०
भौतिकी विभाग									
प्रो. ओ. एन. श्रीवास्तव	१	१८	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. सी. पी. सिंह	१	१५	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. वाई. सिंह	०	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. श्री सिंह	०	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. पी. सी. मिश्रा	०	७	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. जे राम	०	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. बी. राय	०	२४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .एस. तिवारी	०	१०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. पी. एन. गुप्ता	०	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. पी. सी. श्रीवास्तव	०	३	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. बी. पी. अस्थाना	०	६	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .पी. मलिक	०	५	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .ए. यादव	०	१०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. कुमार	०	३	१	०	०	०	०	०	०

डॉ. डी. सा	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. बी. पी. मण्डल	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .के. सिंह	०	८	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंह	०	१५	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. के. घोष	०	५	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. के. सिंह	१	१८	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. बी. के. सिंह	१	१५	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एच. पी. शर्मा	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. श्रीवास्तव	०	१०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. केदार सिंह	०	११	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एम. ए. शाज	०	३	०	०	०	०	०	०	०
श्री एस. प्रसाद	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. विवेक सिंह	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. वेंकटेश सिंह	१	१८	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एन. मेहता	०	१३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. सिवाच	०	१	०	०	०	०	०	०	०
श्री. के. एल. सरोज	०	२	०	०	०	०	०	०	०
श्री एच. कुमार	०	१	०	०	०	०	०	०	०
जीवविज्ञान विभाग									
प्रो. के. पी. जॉय	०	८	०	०	०	०	०	०	१
प्रो. सी. एम. चतुर्वेदी	०	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. सी. हल्दर	०	१०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .रमन	०	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एम. के. ठाकुर	०	९	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. कृष्णा	०	१२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. डी. कुमार	२	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. जे. के. रॉय	०	५	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. के. सिंह	०	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. टी. के. बनर्जी	१	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एम. विनायक	१	४	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एन. के. रस्तोगी	१	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. के. त्रिगुन	०	५	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. प्रसाद	०	०	०	०	०	१	०	०	०
डॉ. एम. सिंग्रावेल	०	३	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. चौबे	०	८	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. के. सिंह	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एम. जी. तपाडिया	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. स्वाती मित्तल	०	७	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. पी. एस. सक्सेना	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. आर .मिश्रा	०	६	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. सी. लखोटिया	०	५	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. बी. एन. सिंह	०	५	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. बी. महापात्रा	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. बी. तिवारी	२	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एम. के. सिंह	१	१	०	०	०	१	०	०	१

आनुवांशिकी विकास केन्द्र									
प्रो. आर .रमन	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. के. राय	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ए. अली	०	२	०	०	०	०	०	०	०
सामाजिक विज्ञान संकाय									
सामाजशास्त्र विभाग									
प्रो. पी. एन. पाण्डेय	०	०	१	०	०	०	०	०	०
प्रो. जय कान्त तिवारी	०	०	६	०	२	०	०	०	०
प्रो. अशोक कौल	०	०	२	०	२	०	०	०	०
प्रो. ए. के. जोशी	०	०	२	१	०	०	०	०	०
प्रो. जे. एन. सिंह	०	०	०	०	१	०	०	०	०
प्रो. ए. के. पाण्डेय	०	०	४	०	०	०	०	०	०
प्रो. डी. के. सिंह	०	०	१	०	०	०	०	०	०
प्रो. एस. आर .यादव	०	०	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. ओ. पी. भारतीया	०	०	२	०	०	०	०	०	०
मनोविज्ञान विभाग									
प्रो. आर .कुमार	१	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .सी. मिश्रा	०	२	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. एम. अरोड़ा	२	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. ए. पी. सिंह	०	०	०	०	१	०	०	०	०
प्रो. आई. एल. सिंह	३	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .एन. सिंह	१	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. तारा सिंह	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. मनीषा अग्रवाल	३	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एच. एस. अस्थाना	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. यू. आर .श्रीवास्तव	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. संदीप कुमार	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. पूर्णिमा एस. अवस्थी	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. त्रयम्बक तिवारी	३	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. सबाना बानो	१	०	०	०	०	०	०	०	०
महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र									
प्रो. किरन बर्मन	३	०	०	०	०	०	०	०	७
प्रो. अनिता सिंह	२	०	०	०	१	०	०	०	१०
डॉ. मिनाक्षी झा	१	०	०	०	०	०	०	०	१
सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र									
प्रो. अजीत कु. पाण्डेय	०	०	०	०	०	०	१	०	०
डॉ. अमरनाथ राम	४	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. डी. शर्मा	०	२	०	०	०	०	०	०	०
मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र									
प्रो. प्रियंकर उपाध्याय	१	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. मनोज कुमार मिश्रा	१	०	०	०	०	०	०	०	०
संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय									
वेद विभाग									
प्रो. हरिश्वर दीक्षित	२	१	१	१	०	०	०	०	०
डॉ. उपेन्द्र कुमार तिवारी	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. सुनिल कात्यायन	१	०	०	०	०	०	०	०	०

साहित्य विभाग									
डॉ. रजनीश पाण्डेय	४	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी	४	०	०	०	१	०	०	०	०
डॉ. शान्ति लाल शाल्वी	५	१	०	०	०	०	०	०	०
ज्योतिष विभाग									
प्रो. सचिदानन्द मिश्रा	८	०	८	०	२	०	०	०	०
प्रो. चन्द्रमा पाण्डेय	३	०	३	०	०	०	०	०	०
प्रो. चन्द्रमौली उपाध्याय	२	०	४	०	१	०	०	०	०
डॉ. रामजीबन मिश्रा	१०	०	४	०	२	०	०	०	०
डॉ. शत्रुघ्न त्रिपाठी	४	०	२	०	२	०	०	०	०
डॉ. विनय कुमार पाण्डेय	४	०	२	०	१	०	०	०	०
डॉ. सुभाष पाण्डेय	२	०	२	०	१	०	०	०	०
वैदिक दर्शन विभाग									
प्रो. के. के. शर्मा	२	०	१	०	०	०	०	०	०
प्रो. जी. ए. शास्त्री	३	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. वी. पी. मिश्रा	४	१	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. आर .आर .शुक्ला	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. डी. के. पाण्डेय	६	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. त्रिपाठी	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. के. द्विवेदी	४	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. एस. आर .गंगोपाध्याय	५	०	०	०	१	०	०	०	०
डॉ. एस. के. पाढ़ी	४	०	०	०	०	०	०	०	०
धर्मागम विभाग									
प्रो. कमलेश झा	१	१	१	१	०	०	०	०	०
डॉ. भक्तिपुत्र रोहतम	५	५	५	४	०	०	०	०	०
डॉ. शीतला प्रसाद पाण्डेय	३	१	३	१	०	०	०	०	०
जैन बौद्ध दर्शन विभाग									
प्रो. कमलेश कुमार जैन	४	०	०	०	०	०	०	०	०
प्रो. सूर्य प्रकाश व्यास	३	०	०	४	०	०	०	०	०
डॉ. अशोक कुमार जैन	५	०	३	०	०	०	०	०	०
धर्मशास्त्र तथा मीमांसा विभाग									
प्रो. एन. आर . श्रीनिवासन	२	०	२	०	०	०	०	०	०
डॉ. माधव जर्नादन रटाटे	४	१	२	१	०	०	०	०	०
डॉ. शंकर कुमार मिश्रा	५	१	२	१	०	०	०	०	०
वाणिज्य संकाय	१९	५	७	०	६	०	०	०	०
प्रबन्ध शास्त्र संकाय	५६	१६	११	७	१८	०	०	०	०
कृषि विज्ञान संकाय									
कृषि अर्थशास्त्र विभाग	४	२	०	०	४	०	०	०	१०
शस्य विज्ञान विभाग	४	५	१	१	४	०	०	०	१५
पशुपालन और डेरी उद्योग विभाग	८	६	१	०	०	०	०	०	१५
कीट विज्ञान तथा कृषि जीव विज्ञान विभाग	१२	७	१	१	३	०	०	०	२४
प्रसार शिक्षा विभाग	९	३	३	१	०	०	०	०	१६
कृषि अभियांत्रिकी विभाग	७	५	१	०	१	०	०	०	१४
अनुवंशिकी और पादप प्रजनन विभाग	१५	६	३	२	७	०	०	०	३३
उद्यान विज्ञान विभाग	१२	७	१	१	५	०	०	०	२६

कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान विभाग	१९	१२	०	०	११	०	०	०	४२
पादप शरीर क्रिया विज्ञान	१४	६	०	०	१०	०	०	०	३०
मृदा और कृषि विज्ञान विभाग	१५	८	१२	७	९	०	०	०	५१
कृषि विज्ञान केन्द्र	३७	८	०	०	३	०	०	०	४८
मेगा सीड प्राजेक्ट	०	२	०	०	०	०	०	०	२
खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र									
डॉ. आलोक झा	१०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अनिल कुमार चौहान	२	०	०	०	०	०	०	०	०
श्री अभिषेक त्रिपाठी	१	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अरविन्द	५	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. राखी सिंह	१	०	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. डी. एस. बुनकर	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. जयीता मित्रा	१	२	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अमृता पुनिया	०	०	३	०	०	०	०	०	०
यू.जी.सी. ऐकेडमिक स्टाफ कॉलेज									
डॉ. एस. के. तिवारी	३	०	२	०	०	०	०	५	०
विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अन्तर्गत									
वसन्त कन्या महाविद्यालय									
डॉ. कमला पाण्डेय	०	०	२	०	०	०	०	०	०
डॉ. पुनम पाण्डेय	१	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. शुभ्रा सिन्हा	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. बिना सिंह	०	०	०	०	०	०	०	०	२
डॉ. कुमुद रंजन	०	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. ममता मिश्रा	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. तृप्ति रानी जायसवाल	३	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. उषा कुशवाहा	१	०	०	०	०	०	०	०	०
वसन्त महिला महाविद्यालय									
डॉ. उपासना पाण्डेय	२	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. मंजरी झुनझुनवाला	०	०	०	०	०	१	०	०	०
डॉ. इरावती	५	०	०	०	०	१	०	०	०
डॉ. सौरभ कुमार सिंह	०	४	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. मंगला सिंह	०	०	३	०	१	०	०	०	०
डॉ. मोहम्मद अख्तर	०	०	३	०	०	०	०	०	०
श्रीमती बिलामबिता बनिसुधा	२	२	२	०	०	०	०	०	०
डॉ. सुषमा जोशी	१	०	२	०	१	०	०	०	०
डॉ. आशा चतुर्वेदी	०	०	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. शीला सिंह	१	०	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. रमा पाण्डेय	०	०	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. योगिता बेरी	२	०	०	०	०	०	०	०	०
श्रीमती अमृता कात्यायनी	०	०	४	०	०	०	०	०	१
डॉ. मिनाक्षी बिस्वाल	०	३	०	०	०	०	०	२	१
डॉ. आशा पाण्डेय	०	०	४	०	०	०	०	०	०
डॉ. श्रेया पाठक	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अल्का सिंह	१	०	०	०	१	०	०	०	०
डॉ. राजेश कुमार चौरसिया	१	०	०	०	०	०	०	०	०

डॉ. परवीन सुल्ताना	१	०	०	०	१	१	०	०	०
डॉ. जी. आर .संतोष	०	०	०	०	१	०	०	०	०
डॉ. मीनू अवस्थी	२	१	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अंजना सिंह	१	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. राज जालान	०	०	१	०	०	०	०	०	०
डॉ. नफीस बानो	५	०	०	०	०	०	०	०	०
डॉ. अर्चना तिवारी	३	१	३	०	०	०	०	०	०
डॉ. अंशुला कृष्णा	०	१	०	१	०	०	०	०	०
डॉ. प्रीति सिंह	१	०	०	०	०	०	०	०	०
सुश्री सुशीला भारती	२	०	०	०	०	०	०	०	०
आर्य महिला महाविद्यालय									
बंगाली	७	०	०	०	०	०	०	२	२
हिन्दी	१९	४	१	०	०	०	०	०	०
संस्कृत	८	०	१	०	०	०	०	०	०
अंग्रेजी	१	१	०	०	०	०	०	०	०
इतिहास	१	०	१	०	०	०	०	०	०
वाणिज्य	०	०	३	०	०	०	०	०	६
प्रा. भा. इ. सं. तथा पुरातत्व	५	०	०	०	०	०	०	०	०
दर्शनशास्त्र	९	३	०	०	२	०	१	०	०
संगीत	७	११	४	२	०	०	०	०	०
मनोविज्ञान	७	२	९	०	०	०	०	०	०
गृह विज्ञान	०	०	०	०	१	०	०	०	०
शिक्षा	६	०	३	०	०	०	०	०	०
समाजशास्त्र	१	०	१	०	०	०	०	०	०
अर्थशास्त्र	६	०	०	०	०	०	०	०	०
दयानन्द पी. जी. कालेज									
वाणिज्य	१६	०	८	०	०	०	०	०	०
अर्थशास्त्र	१६	३	११	०	०	०	०	०	२ (स्मारिका सम्पादन)
इतिहास	५	०	७	०	३	०	०	०	०
राजनीति विज्ञान	६	१	०	०	१	०	०	०	०
मनोविज्ञान	५	०	०	०	०	०	०	०	०
समाजशास्त्र	८	७	०	०	०	०	०	०	०
प्रा. भा. इ. सं. तथा पुरातत्व	६	०	२	०	१	०	०	०	०
अंग्रेजी	७	२	२	०	१	०	०	०	२समीक्षा, सम्पादक १पत्रिका, और वाणी प्रलेख
हिन्दी	८	०	१	०	१	०	०	०	३ आत्मकथा में कविता प्रकाशन
दर्शनशास्त्र	९	०	१	०	१	०	०	०	०
संस्कृत	१	०	१	०	२	०	०	०	०
उर्दू	१	०	०	०	०	०	०	०	०

परिशिष्ट - ३

विभिन्न अभिकरणों द्वारा वित्तपोषित शोध परियोजनाओं की सूची

सत्र २०११-१२ में स्वीकृति नयी शोध परियोजनाएँ

अनुदानदाता अभिकरण का नाम		
संस्थान/ संकाय/ विभाग का नाम	परियोजनाओ की संख्या	स्वीकृत धनराशि
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग		
विज्ञान संकाय		
रसायनशास्त्र	३	१६,९२,६००.००
भौतिकी	३	२१,६५,६००.००
जीवविज्ञान	३	२४,५१,६००.००
भूगोल	१	१०,२१,८००.००
वनस्पति विज्ञान	२	२१,७८,८००.००
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डी एस टी)		
कृषि विज्ञान संकाय		
कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	१	८,८१,०००.००
पादप शरीर क्रिया विज्ञान	१	३३,५६,०००.००
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
वस्तुपरक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी स्कूल	१	२४,६१,४४०.००
चिकित्सा विज्ञान संकाय		
जीव रसायन	२	८१,३३,५००.००
औषध शल्य का परीक्षण केन्द्र	१	४६,५९,०००.००
विज्ञान संकाय		
जीव विज्ञान	५	१,३५,११,४००.००
भौतिकी	३	२,५०,८६,१८८.००
वनस्पति विज्ञान	१	२८,१३,६७२.००
रसायनशास्त्र	३	९८,५२,५२०.००
भूविज्ञान	१	३६,८५,४००.००
वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्		
कृषि विज्ञान संकाय		
कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	१	२१,५०,२८०.००
विज्ञान संकाय		
जीव विज्ञान	३	५९,५०,०००.००
वनस्पति विज्ञान	२	४६,९९,४००.००
रसायनशास्त्र	२	३९,५७,३००.००
भौतिकी	१	१७,७६,०००.००
जीव रसायन	१	२,८१,०००.००
विज्ञान व प्रौद्योगिकी परिषद् (उ.प्र.)		
कृषि विज्ञान संकाय		
शस्य विज्ञान	३	५९,५०,०००.००
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्		
कृषि विज्ञान संकाय		
मृदा और कृषि रसायन विज्ञान	१	१६,१७,०००.००
अनुवांशिकी और पादप प्रजनन	१	१,३८,००,०००.००
विदेशी अभिकरण		
कृषि विज्ञान संकाय		
शस्य विज्ञान	१	२,६७,८५०.००
भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (आई. सी. एम. आर .)		
चिकित्सा विज्ञान संकाय		
आयुर्विज्ञान	१	१४,२५,४००.००
विज्ञान संकाय		
जीवविज्ञान	१	२१,२१,०७६.००
डी. ए. ई.		
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
वस्तुपरक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी स्कूल	१	१,५०,२००.००
विज्ञान संकाय		
भूविज्ञान	१	१८,५७,०००.००
भौतिकी	२	७२,४९,७५०.००
जीवविज्ञान	१	६,३०,०००.००
आई. एस. आर .ओ. (अन्तरिक्ष)		
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
इलेक्ट्रानिक्स अभियांत्रिकी	१	५,८५,६००.००
आई. सी. एस. एस. आर .		
सामाजिक विज्ञान संकाय		
राजनीतिशास्त्र	१	५,२६,७५०.००
मनोविज्ञान	१	४,२४,६२५.००
ओ. एन. जी. सी.		
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
रासायनिक अभियांत्रिकी	१	७,०६,०००.००
सत्र २०११-१२ में जारी शोध परियोजनाएँ		
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग		
आयुर्वेद संकाय		
औषधीय रसायन	२	१३,०१,८००.००
कृषि विज्ञान संकाय		
कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	२	१२,७२,९००.००

अनुदानदाता अभिकरण का नाम		
संस्थान/ संकाय/ विभाग का नाम	परियोजनाओ की संख्या	स्वीकृत धनराशि
पादप शरीर क्रिया विज्ञान	१	१०,३२,७००.००
शस्य विज्ञान	२	१५,३५,६००.००
कृषि अर्थशास्त्र	१	२,९०,०००.००
अनुवांशिकी और पादप प्रजनन	१	७,८७,८००.००
प्रसार शिक्षा	१	७,६७,८००.००
कला संकाय		
अंग्रेजी	५	२३,६८,२००.००
हिन्दी	३	१२,१९,२००.००
फ्रेंच	१	२,९०,०००.००
उर्दू	२	९,७२,२००.००
फारसी	१	४,६८,७००.००
बंगाली	१	०.००
वाणिज्य संकाय		
संकायप्रमुख कार्यालय	४	२०,६४,७००.००
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
वस्तुपरक विज्ञान एंव अभियांत्रिकी स्कूल	१	७५,०००.००
यांत्रिकी अभियांत्रिकी	३	१८,११,५००.००
जैव रसायन अभियांत्रिकी स्कूल	२	१५,१८,४००.००
सिरामिक अभियांत्रिकी	१	७,४३,४००.००
रसायन अभियांत्रिकी	१	७,३६,८००.००
चिकित्सा विज्ञान संकाय		
अंत:स्राव विज्ञान	१	१०,१२,०००.००
विज्ञान संकाय		
भौतिकी	१३	५८,८३,१००.००
रसायन	१३	७५,९१,३००.००
भूविज्ञान	५	३०,५९,३००.००
वनस्पति विज्ञान	१३	१,००,१४,८००.००
जीवविज्ञान	१७	१,३७,०८,१००.००
गणित	३	११,६७,१००.००
संगणक विज्ञान	१	८०,०००.००
भूगोल	३	२३,६३,८००.००
सांख्यिकी	१	७,२६,८००.००
संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय		
धर्मागम	२	१३,५७,०००.००
ज्योतिष	३	१७,१०,२००.००
व्याकरण	३	१४,७६,०००.००
सामाजिक विज्ञान संकाय		
मनोविज्ञान	६	२५,४१,५००.००
अर्थशास्त्र	६	३०,२८,४००.००
राजनीति शास्त्र	४	२१,५४,०८०.००
सामाजिक विज्ञान	२	१०,९६,३००.००
इतिहास	१	४,५७,०००.००

अनुदानदाता अभिकरण का नाम		
संस्थान/ संकाय/ विभाग का नाम	परियोजनाओ की संख्या	स्वीकृत धनराशि
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डी एस टी)		
आयुर्वेद संकाय		
द्रव्यगुण	१	३,००,०००.००
कृषि विज्ञान संकाय		
कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	७	१,३५,३२,४००.००
अनुवांशिकी और पादप रोग विज्ञान	५	२,६५,५९,४००.००
प्रसार शिक्षा	१	४०,०९,३६०.००
पादप शरीर क्रिया विज्ञान	१	३३,५६,०००.००
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
सिरामिक अभियांत्रिकी	१	७१,८५,६००.००
वस्तुपरक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी स्कूल	२	६५,३३,४४०.००
रासायनिक अभियांत्रिकी	४	१,११,९८,४९०.००
जैव रसायन अभियांत्रिकी स्कूल	१	२०,५१,२००.००
सिविल अभियांत्रिकी	२	५०,५९,४००.००
यांत्रिकी अभियांत्रिकी	१	१०,०९,४००.००
चिकित्सा विज्ञान संकाय		
जैव रसायन	४	२,१६,३७,०००.००
शल्य चिकित्सा	२	४४,१८,०००.००
सूक्ष्म जीविकी	३	७५,२३,४००.००
वृक्क रोग विज्ञान	१	७,५६,१८,४१८.००
औषध शल्य परीक्षण केन्द्र	२	६४,५४,०००.००
विज्ञान संकाय		
भौतिकी	२४	१८,३५,३०,१२२.००
जीवविज्ञान	३२	९,२६,०८,६१४.००
वनस्पति विज्ञान	१३	३,६७,४०,४७२.००
रसायन विज्ञान	१०	२,०९,५७,१२०.००
जैव-प्रौद्योगिकी स्कूल	८	२,८७,५९,८००.००
भूविज्ञान	६	१,४५,३५,७००.००
भूभौतिकी	२	३५,६२,८२५.००
जीव रसायन	२	६९,१०,०००.००
भूगोल	१	१५,८०,९००.००
सेन्टर फार जेनेटिक डिसॉर्डर्स	१	२३,५४,८००.००
गणित	१	१५,५९,२००.००
आणविक एवं मानव जनन विज्ञान	१	२०,६२,०००.००

अनुदानदाता अभिकरण का नाम		
संस्थान/ संकाय/ विभाग का नाम	परियोजनाओ की संख्या	स्वीकृत धनराशि
सी. सी. आर .ए. एस.		
आयुर्वेद संकाय		
शल्य तंत्र	१	२०,५७,०००.००
वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्		
आयुर्वेद संकाय		
औषधीय रसायन	१	७,३२,०००.००
कृषि विज्ञान संकाय		
कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान	१	२१,५०,२८०.००
अनुवांशिकी और पादप रोग विज्ञान	१	१७,१५,५०१.००
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
सिरामिक अभियांत्रिकी	१	१९,००,८००.००
खनन अभियांत्रिकी	१	१०,८८,०००.००
चिकित्सा विज्ञान संकाय		
जीव रसायन	१	१९,७६,०००.००
विज्ञान संकाय		
जीवविज्ञान	८	१,३३,८७,०००.००
भौतिकी	८	७८,५१,६६७.००
वनस्पति विज्ञान	६	७४,६९,७५०.००
रसायनशास्त्र	२१	२,११,०५,५००.००
भूविज्ञान	३	२९,४९,०००.००
जैव-प्रौद्योगिकी स्कूल	१	५,३८,०००.००
जीव रसायन	२	२१,७७,०००.००
संगणक विज्ञान	१	९,९९,०००.००
डी. ए. ई.		
आयुर्वेद संकाय		
औषधीय रसायन	१	२०,८०,७५०.००
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
वस्तुपरक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी स्कूल	१	०.००
यांत्रिकी अभियांत्रिकी	१	१२,५९,४००.००
विज्ञान संकाय		
भौतिकी	५	२,९४,४८,७२५.००
रसायन	२	३४,१४,४५०.००
भूविज्ञान	१	१८,५७,०००.००
वनस्पति विज्ञान	१	२३,२८,२५०.००
जीवविज्ञान	४	४९,९८,१२५.००
आई. सी. एस. एस. आर .		
कृषि विज्ञान संकाय		
कृषि अर्थशास्त्र	१	४,२२,०००.००
सामाजिक विज्ञान संकाय		
अर्थशास्त्र	३	१४,५१,०२५.००
मनोविज्ञान	३	१२,४४,१२५.००
राजनीतिशास्त्र	१	५,२६,७५०.००

अनुदानदाता अभिकरण का नाम		
संस्थान/ संकाय/ विभाग का नाम	परियोजनाओ की संख्या	स्वीकृत धनराशि
वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक परिषद् (यू. पी.)		
कृषि विज्ञान संकाय		
कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान	७	३,०६,८७,०००.००
शस्य विज्ञान	६	५२,३८,३७०.००
पादप शरीर क्रिया विज्ञान	२	२४,५०,०००.००
अनुवांशिकी और पादप रोग विज्ञान	६	१,७४,०६,६८०.००
मृदा और कृषि रसायन विज्ञान	५	३६,४६,८५०.००
कीट विज्ञान तथा कृषि जीव विज्ञान	१	१,११,००,०००.००
कृषि अभियांत्रिकी	१	१,४८,८०९.००
पशुपालन और डेरी उद्योग	१	१४,७६,६४०.००
उद्यान विज्ञान	३	३२,५३,०००.००
चिकित्सा विज्ञान संकाय		
जीव रसायन	१	६,९६,०००.००
बाल चिकित्सा	१	४,८८,०००.००
विज्ञान संकाय		
वनस्पति विज्ञान	२	१३,०८,०००.००
जीव रसायन	२	९,२८,०००.००
आई. सी. ए. आर .		
कृषि विज्ञान संकाय		
शस्य विज्ञान	१	५,७२,२१,२००.००
कीट तथा कृषि जीव विज्ञान	१	१०,१६,४००.००
कवक एवं पादप रोग विज्ञान	१	३५,६०,०००.००
कृषि अभियांत्रिकी	१	२,९३,००,०००.००
अनुवांशिकी और पादप प्रजनन	२	१,४०,३०,०००.००
मृदा और कृषि रसायन विज्ञान	२	१७,०५,०००.००
विदेशी अभिकरण		
कृषि विज्ञान संकाय		
शस्य विज्ञान	१	२,६७,८५०.००
अनुवांशिकी और पादप प्रजनन	२	६,५९,१६४.००
विज्ञान संकाय		
जीव रसायन	१	२९,०९,५६८.००
वनस्पति विज्ञान	१	२,५६,८८३.००
रक्षा मंत्रालय		
कृषि विज्ञान संकाय		
मृदा और कृषि रसायन विज्ञान	१	३०,०५,४००.००
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
इलेक्ट्रानिक्स अभियांत्रिकी	१	११,१६,०००.००
जैवरसायन अभियांत्रिकी	१	१४,९०,०००.००
स्कूल		

अनुदानदाता अभिकरण का नाम		
संस्थान/ संकाय/ विभाग का नाम	परियोजनाओ की संख्या	स्वीकृत धनराशि
विज्ञान संकाय		
भौतिकी	४	२,०९,०६,२००.००
रसायन	३	४३,०२,८००.००
कृषि विज्ञान मंत्रालय		
कृषि विज्ञान संकाय		
अनुवांशिकी और पादप प्रजनन	१	५,९०,०००.००
शस्य विज्ञान	१	६९,०७,५००.००
निजी अभिकरण		
कृषि विज्ञान संकाय		
मृदा और कृषि रसायन विज्ञान	१	८,४२,८२०.००
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
वस्तुपरक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी स्कूल	१	१,८४,८०,६००.००
विद्युत अभियांत्रिकी	१	१९,५३,०००.००
विज्ञान संकाय		
वनस्पति विज्ञान	२	८३,६७,०००.००
भौतिकी	२	१,००,०४,०००.००
अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (ए आई सी टी ई)		
कृषि विज्ञान संकाय		
कृषि अभियांत्रिकी	१	१,५०,०००.००
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
खनन अभियांत्रिकी	१	२,९०,०००.००
सिरामिक अभियांत्रिकी	१	१,५०,०००.००
इलेक्ट्रानिक्स अभियांत्रिकी	१	१,५०,०००.००
वस्तुपरक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी स्कूल	१	२,९०,०००.००
विज्ञान संकाय		
भौतिकी	१	१,५०,०००.००
लघु मद परियोजना		
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
यांत्रिकी अभियांत्रिकी	१	१,२०,०००.००
विज्ञान संकाय		
भूविज्ञान	१	२७,५००.००
गणित	१	१,००,०००.००
आई. एस. आर .ओ (अंतरिक्ष)		
अभियांत्रिका एवं प्रौद्योगिकी संकाय		
रासायनिक अभियांत्रिकी	१	१८,००,०००.००
इलेक्ट्रानिक्स अभियांत्रिकी	१	५,८५,६००.००
विज्ञान संकाय		
भूभौतिकी	१	६,००,०००.००
भूविज्ञान	१	७,३४,०००.००
भौतिकी	२	१२,०२,९००.००

अनुदानदाता अभिकरण का नाम		
संस्थान/ संकाय/ विभाग का नाम	परियोजनाओ की संख्या	स्वीकृत धनराशि
भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (आई. सी. एम. आर .)		
चिकित्सा विज्ञान संकाय		
प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान	१	०.००
जीव रसायन (चि.)	१	४२,८८,३२०.००
शल्य चिकित्सा	२	१२,८९,५८५.००
आयुर्विज्ञान	२	२५,६१,५४४.००
रोग विज्ञान	१	१०,०७,३९७.००
शरीर विज्ञान	१	६,०३,९८४.००
अंत:स्त्राव विज्ञान	१	११,९९,८८०.००
विज्ञान संकाय		
वनस्पति विज्ञान	१	६,३१,६८४.००
जीवविज्ञान	४	४१,००,२३४.००
भारत सरकार		
आयुर्वेद संकाय		
द्रव्यगुण	१	६०,००,०००.००
चिकित्सा विज्ञान संकाय		
औषध रोग विज्ञान	१	२१,७८,५५०.००
विश्व स्वास्थ्य संगठन		
चिकित्सा विज्ञान संकाय		
आयुर्विज्ञान	२	४,८३,८१,२५१.००
विज्ञान संकाय		
साख्यिकी	१	४६,९५,७४४.००
ओ. एन. जी. सी.		
विज्ञान संकाय		
जैव प्रौद्योगिकी स्कूल	१	२,३७,८२०.००
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी		
विज्ञान संकाय		
वनस्पति विज्ञान	३	१३,८२,४१९.००
भौतिकी	१	१,७०,०००.००
सामाजिक विज्ञान संकाय		
अर्थशास्त्र	१	१,५०,०००.००
आई. सी. एच. आर .		
सामाजिक विज्ञान संकाय		
इतिहास	१	१,२५,०००.००

परिशिष्ट - ४

संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला का आयोजन

(अप्रैल २०११ से मार्च २०१२ तक)

अप्रैल २०११		
०२.०४.२०११	पेन अपडेट कार्यशाला	डॉ. ए.पी. सिंह, आयोजन सचिव, एनेस्थेसियोलॉजी विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.
०८.०४.२०११ से ०९.०४.२०११	रिसेन्ट एडवान्सेस इन द डेवलेपमेन्ट ऑफ फरमेन्टेड फूडस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. अनिल कुमार चौहान, आयोजन सचिव, खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र, कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.
१५.०४.२०११ से १६.०४.२०११	फेमिनिस्ट मैथोडोलॉजी पर परिसंवाद	डॉ. (सुश्री) किरण बर्मन, समन्वयक, महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि. वि.
१५.०४.२०११ से १६.०४.२०११	प्रिन्ट टू इ-रिसोर्सस: चैलेन्जेज एण्ड अपारच्युनिटी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. एम.आनन्दगुरूगन, उप-पुस्तकालयध्यक्ष, केन्द्रीय पुस्तकालय, का.हि.वि. वि.
१६.०४.२०११ से १७.०४.२०११	भारत में बीमा उद्योग-भविष्य के लिये कार्यावलीपर राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. वी.एस. सिंह, वाणिज्य संकाय, का.हि.वि. वि.
१९.०४.२०११ से २०.०४.२०११	''धान उत्पादन प्रौद्योगिकी'' पर कार्यशाला	प्रो. दीपक डे, प्रसार शिक्षा विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि. वि.
२३.०४.२०११ से २४.०४.२०११	भारत में व्यावसायिक शिक्षा की विभिन्न विशेषताओं से सम्बन्धित विषय पर निदेशक की निर्वाचिका सभा।	प्रो. एस.के.सिंह, समन्वयक, प्रबन्धशास्त्र संकाय, का.हि.वि. वि.
२५.०४.२०११	२००० एवं ३०० बी.सी. के बीच उत्त र पश्चिम भारत में ''भूमि, जल एवं व्यवस्था: पर्यावरणीय निरोध एवं मानव प्रतिक्रिया पर अतर्राष्ट्रीय कार्यशाला।''	डॉ. आर.एन.सिंह, कार्यशाला संयोजक, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, का.हि.वि.वि.
२९.०४.२०११ से ३०.०४.२०११	भारत में अनर्थ व्यवस्था में उच्चशिक्षा की भूमिका: विषय एवं चुनौतयां पर राष्ट्रीय कार्यशाला	डॉ. कविता शाह, आयोजन सचिव एन.डब्ल्यू डी एम सी सी २०११, पर्यावरण एवम् संपोष्य विकास संस्थान, का.हि.वि.वि.
३०.०४.२०११ से ०१.०५.२०११	पी.जी.आई.सी.आर.ओ. शिक्षण कार्यक्रम	प्रो. यू.पी.शाही, विकिरण उपचार एवं विकिरण औषधि, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.
मई, २०११		
०२.०५.२०११ से ११.०५.०२११	''अन्तरीय ज्यामिति'' पर कार्यशाला	डॉ. बण्कटेश्वर तिवारी, डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., का.हि.वि.वि.
०३.०५.२०११ से ०९.०५.०२११	''शोध प्रस्ताव लेखन'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. शिशिर बसु, कार्यशाला समन्वयक, पत्रकारिता एवं जन-संचार विभाग, का.हि.वि.वि.
१८.०५.२०११ से १९.०५.०२११	''कार्यालय एवं तकनीकी कर्मचारी के लिये बायोपेस्टिसाइड्स के गुण नियन्त्रण'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रो. एच.बी.सिंह, कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.
२३.०५.२०११ से २८.०५.०२११	ग्राफ थ्योरी एवं उनका उपयोग पर राष्ट्रीय शिक्षण कार्यशाला	डॉ. पी.के.मिश्रा, डी.एस.टी.-सी.आई.एम.एस., का.हि.वि.वि.
२३.०५.२०११ से २८.०५.०२११	लाइब्रेरियनशिप के आई.सी.टी. उपयोगों का आधुनिक झुकाव	डॉ. ए.पी.सिंह, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
१०.०६.२०११ से ११.०६.२०११	शोध पत्र लेखन पर राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. एम.के. ठाकुर, आयोजन सचिव, प्राणी विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२५.०६.२०११	प्रबन्धशास्त्र अध्ययन के लिये मॉडल पाठ्यक्रम विकास	प्रो. उषा किरण राय, समन्वयक, प्रबन्धशास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि.
२७.०६.२०११ से ०२.०७.२०११	चट्टान यान्त्रिक एवं भूमि नियन्त्रण पर अल्पावधि पाठ्यक्रम	प्रो. बी.के.श्रीवास्तव, समन्वयक, खनन अभियान्त्रिकी, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.

जुलाई, २०११		
१२.०७.२०११ से १५.०७.२०११	संस्कृत सांगणिक भाषाविज्ञान विषय पर कार्यशाला	डॉ. भगवत शरण शुक्ल एवं डॉ. रमाकान्त पाण्डेय, संयोजक, व्याकरण विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
अगस्त, २०११		
१९.०८.२०११ से १०.०८.२०११	टूवार्डस ऑन इनक्लुसिव सोसायटी डिबेटिंग लोयिाज सोसलिज्म, पर अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद	प्रो. अजित कुमार सिंह, समन्वयक, सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र विषय सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
२०.०८.२०११	''यूज आफ ट्रान्सक्रेनियल डाप्लर मॉनिटरिंग इन न्यूरोसर्जिकल पेसेन्ट्स'' पर लिव वर्कशााप एण्ड सीएमई	डॉ. आर. बी. सिंह, आयोजन सचिव एनेस्थिसियोलॅजी विभाग, का.हि.वि.वि.
२५.०८.२०११	''ड्रामा के माध्यम से संचार'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. शिशिर बसु कार्यशाला के समन्वयक पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग, का.हि.वि.वि.
सितम्बर, २०११		
०५.०९.२०११ से २५.०९.२०११	प्रयोगात्मक नाभिकीय भौतिकी विज्ञान पर समर स्कूल	प्रो. आर.पी.मलिक, संयोजक एवं डॉ. एच.पी. शर्मा, सह-संयोजक, भौतिक विभाग, का.हि.वि.वि.
०५.०९.२०११ से १०.०९.२०११	''क्षार सूत्र थेरेपी'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	डॉ. एस.जे.गुप्ता, शल्य तन्त्र विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.
१०.०९.२०११	''एल इन्साइनमेन्ट डु फ्रान्सियस: प्राबलम्स, परपेक्टिव्स एट डेफिस'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. डी.के.सिंह सेमिनार के निदेशक, फ्रेंच अध्ययन विभाग, कला संकाय, का.हि.वि.वि.
१४.०९.२०११ से १५.०९.२०११	''गालिब शख्सियत और कारनामें'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. एस.एच. अब्बास, अध्यक्ष एवं आयोजक, फारसी विभाग, कला संकाय, का.हि.वि.वि.
१६.०९.२०११ से १७.०९.२०११	''मणि कौल'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सह फिल्म उत्सव	प्रो. शिशिर बसु, संगोष्ठी के समन्वयक पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग, का.हि.वि.वि.
१७.०९.२०११ से १८.०९.२०११	ट्रान्सलेशनल न्यूरोसाइन्स पर ब्रेन स्ट्रामिंग मीटिंग	प्रो. एम.के. ठाकुर, उप-समन्वयक, ब्रेन रिसर्च केन्द्र, जीव विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
१९.०९.२०११ से २१.०९.२०११	''उत्तर प्रदेश की लोक संस्कृति: परम्परा और प्रतिबिम्ब'' पर संगोष्ठी	श्री पी.सी. हम्बल, संयोजक, नृत्य विभाग, मंचकला संकाय, का.हि.वि.वि.
२२.०९.२०११ से २४.०९.२०११	जिओडायनेमिक्स एण्ड मेटालोजेनेसि ऑफ द इण्डियन लिथोस्फीयर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. हरि बी.श्रीवास्तव, संयोजक, भू-विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२३.०९.२०११ से २५.०९.२०११	''रिसेन्ट एडान्सेज इन मोलेकलर एण्ड सेलुलर इन्डोक्राइनोलॉजी'' पर राष्ट्रीय संवाद	प्रो. सी.एम. चतुर्वेदी, संयोजक, जीव विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२५.०९.२०११	प्रिपेरेशन ऑफ हाई क्वालिटी थिन सेक्शन ऑफ रॉक्स एण्ड देअर पेट्रोग्राफिक इन्टरप्रिटेंशन्स पर कर्यशाला	प्रो. राजेश कुमार श्रीवास्तव, भू-विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२९.०९.०२११ से ३०.०९.२०११	''नारी विशेषज्ञ प्रणाली विज्ञान'' पर परिसंवाद	प्रो. किरण बर्मन, समन्वयक, महिला अध्ययन एवं विकास, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
अक्टूबर, २०११		
१०.१०.२०११ से १२.१०.२०११	''२१वीं सदी का लोहिया दर्शन एवं चुनौतियां'' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	संकाय प्रमुख, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
११.१०.२०११ से १३.१०.२०११	थरमोफिजिकल प्रापर्टी पर राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. के.एस. दूबे, संयोजक एवं संदीप चटर्जी आयोजन सचिव, प्रयुक्त भौतिकी विभाग, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.
१४.१०.२०११ से १५.१०.२०११	२२वाँ यू.पी. इतिहास कांग्रेस	प्रो. एल. राय, इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१५.१०.२०११	शल्य, संज्ञानहरण तथा विकिरण एवं छाया पर आधुनिक झुकाव पर सी.एम.ई.	डॉ. डी.एन. पाण्डे, शल्य तन्त्र विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.
१४.१०.२०११ से १६.१०.२०११	सिविल अभियांत्रिकी में आधुनिक उन्नति पर राष्ट्रीय सम्मेलन (आर ए सी ई-२०११)	डॉ. एस.बी. द्विवेदी, संयोजक, सिविल अभियान्त्रिक विभाग, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.

नवम्बर, २०११		
११.११.२०११ से १३.११.२०११	''धार्मिक एवं सामाजिक विकास'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	संकाय प्रमुख, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१३.११.२०११ से १४.११.२०११	''भारत में अध्यापक शिक्षा का प्रसार: संपोषित योग्यता'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. सुनिता सिंह, आयोजन सचिव, शिक्षा संकाय कमच्छा, का.हि.वि.वि.
१४.११.२०११ से १६.११.२०११	''अन्तर्राष्ट्रीय इण्डो स्वीडिश संगोष्ठी शीर्षक'' २१वीं सदी में प्रयोग आधारित ज्ञान	प्रो. डी.एन. तिवारी, अध्यक्ष एवं संयोजक, दर्शन एवं धर्म विभाग, कला संकाय, का.हि.वि.वि
१५.११.२०११ से १७.११.२०११	''डिकोलोनाइजिंग द स्टेज पैराडिज्म प्रेक्टिस एण्ड पॉलिटिक्स'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. आर.एन.राय, अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, का.हि.वि.वि
१८.११.२०११ से १९.११.२०११	म्युचुरल रिसर्च इन्टेरेस्ट ऑफ डीआरडीओ एण्ड एकेडेमिया पर इन्टेरेक्टिव	डॉ. आर.एन. राय, संयोजक, रसायन विभाग, विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
२३.११.२०११ से २६.११.२०११	वर्कशाप भारतीय चिकित्सा सूक्ष्म जीविका विशेषज्ञ संघ का ३५वाँ राष्ट्रीय सम्मेलन- माइक्रोकॉन २०११	प्रो. शम्पा अनुपूर्बा, आयोजन सचिव, सूक्ष्म जीविकी विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.
२३.११.२०११ से २९.११.२०११	''आशावादिता एवं इनका उपयोग'' पर विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम	डॉ. एस.के. मिश्रा, संयोजक, गणित विभाग एवं डी.एस.टी-सी.ई.एम.एस., का.हि.वि.वि
२३.११.२०११ से २५.११.२०११	अखिल भारतीय शास्त्रार्थ परिषद	प्रो. राजाराम शुक्ल, संयोजक, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
२५.११.२०११ से २९.११.२०११	''डिजिटल लाइब्रेरी सोल्युशन्स'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला	डॉ. अजय प्रताप सिंह, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२७.११.२०११ से २९.११.२०११	विश्वस्तरीय त्रिदिवसीय निगमागमशास्त्र सम्मेलन	प्रो. कमलेश झा, अध्यक्ष, धर्मागम विभाग, संस्कृत विद्याधर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
२८.११.२०११ से ०३.१२.२०११	''बहुचर विश्लेषण: मैट्रिक्स प्रणाली'' पर कार्यशाला	डॉ. मनोज कुमार सिंह, संयोजक, डीएसटी-सीआईएमएस, का.हि.वि.वि.
दिसम्बर २०११		
०१.१२.२०११ से ०३.१२.२०११	संगीत, साहित्य, कला और दर्शन के परिप्रेक्ष्य में विश्व वन्दनीय रविन्द्रनाथ पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. लिपिका दास गुप्ता, संयोजिका, अध्यक्ष, संगीतशास्त्र विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
०५.१२.२०११ से १०.१२.२०११	''क्षारसूत्र थेरेपी'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	डॉ. एस.जे.गुप्ता, शल्य तन्त्र विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.
०५.१२.२०११ से २४.१२.२०११	''शान्ति एवं युद्ध संकल्प: अन्त:सांस्कृतिक आयाम'' पर त्रिसाप्तहिकी अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. प्रियन्कर उपाध्याय, समन्वयक, मालवीय शान्ति केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१५.१२.२०११ से १६.१२.२०११	''एआईपी लाइब्रेरी एण्ड टीचिंग एक्सीलेन्स'' पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला	डॉ. ए.के. श्रीवास्तव, आयोजन सचिव एवं विश्वविद्यालय लाइब्रेरियन, केन्द्रीय ग्रन्थालय, का.हि.वि.वि.
१६.१२.२०११ से १७.१२.२०११	''मल्टीपल ट्राजेक्टरीज ऑफ अर्ली एसियन माडर्निटिज'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. राजकुमार आयोजन सचिव, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि.
०५.१२.२०११ से ११.१२.२०११	शोध प्रणाली एवं सांख्यिकी विश्लेषण यूजिंग आई बी एम एस पी एस एस १९.० पर राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. राजकुमार एवं प्रो. रेख प्रसाद, प्रबन्ध शास्त्र अध्ययन संकाय, का.हि.वि.वि.
०७.१२.२०११ से ०८.१२.२०११	''मैनेजिंग मल्टीकल्चरलिज्म इन डाइवर्स सोसाइटीज: लेसन्स फ्राम इण्डियन एण्ड आस्ट्रेलियन इक्सपिरियन्स'' पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. प्रियन्कर उपाध्याय, समन्वयक, मालवीय शान्ति अनुसंधान केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
०९.१२.२०११ से १०.१२.२०११	'बायेसियन स्टेस्टिकस एण्ड इट्स इमर्जिग एप्लीकेशन्स'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन	डॉ. प्रमेन्द्र सिंह पुन्दिर, डीएसटी-सीआई- एम एस, का.हि.वि.वि.
०९.१२.२०११ से १२.१२.२०११	''आर्टिफिसियल इन्टेलीजेन्स एण्ड एजेन्टस: थ्योरी एवं एप्लीकेशन्स'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो० आर.बी. मिश्रा, समन्वयक, संगणक अभियांत्रिक प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.
२६.१२.२०११ से ०१.०१.२०१२	नैनो एवं एडवान्स सामग्री एवं उनका उपयोग पर कार्यशाला	प्रो. ओ.एन. श्रीवास्तव, संयोजक, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
२६.१२.२०११ से	''जेनेटिक्स मारकर्स एण्ड ह्यूमन डिजिज'' पर सी एम ई	डॉ. ए.के. सक्सेना, प्रयोगात्मक औषधि एवं सर्जरी केन्द्र

जनवरी २०१२		
०३.०१.२०१२ से ०४.०१.२०१२	''एल इनसाइनेमन्ट डु फ्रान्सीस प्राब्लम्स परसमेक्टिस एट डेफिस'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. डी.के. सिंह संगोष्ठी के निदेशक, फ्रेन्च अध्ययन विभाग, कलासंकाय, का.हि.वि.वि.
०४.०१.२०१२	निराला की समकालीनता विषय पर संगोष्ठी	प्रो. राधेश्याम दूबे, आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि.
०६.०१.२०१२	''सामाजिक व्यवसाय प्रयोगशाला'' (सैप, यूजीसी के अन्तर्गत) पर राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. एच.सी. चौधरी, समन्वयक, प्रबन्धशास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि.
०६.०१.२०१२	ई रिसोर्सस एवं एन-लिस्ट के जागरूक कार्यक्रम पर संगोष्ठी	डॉ. एम.आनन्दभुरूगुन, उप पुस्तकालयाध्यक्ष एवं आयोजन सचिव, केन्द्रीय ग्रन्थालय, का.हि.वि.वि.
०७.०१.२०१२	''भूमा का राष्ट्रीय बैठक ''	संकाय प्रमुख, प्रबन्धशास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि.
०७.०१.२०१२	''उत्थान-२०१२''- सामाजिक व्यवसाय योजना प्रतियोगिता	प्रो. एच.सी.चौधरी, समन्वयक, प्रबन्धशास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि.
०७.०१.२०१२ से १६.०१.२०१२	नेचुरल लैंग्वेज प्रॉसोसिंग में दिशानिर्देशन सह कार्यशाला	डॉ. अनिल ठाकुर, समन्वयक, भाषा विज्ञान विभग, का.हि.वि.वि.
१०.०१.२०१२ से २२.०१.२०१२	संकाय विकास कार्यक्रम	प्रो. राजकुमार, प्रबन्धशास्त्र संकाय का.हि.वि.वि.
१२.०१.२०१२ से १३.०१.२०१२	''गुणवत्ता उत्पादन के लिये गुणवत्ता प्रसार'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. दीपक डे, आयोजन सचिव, प्रसार शिक्षा विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.
१६.०१.२०१२ से २१.०१.२०१२	क्षार सूत्र थेरेपी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	डॉ. लक्ष्मण सिंह, शल्य तन्त्र विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का. हि. वि. वि.
१९.०१.२०१२ से २१.०१.२०१२	शारीरिक शिक्षा, मनोरंजन एवं योगिक विज्ञान पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. वी० सी० कापरी, शल्य तन्त्र विज्ञान, शारीरिक शिक्षा विभाग, का. हि. वि. वि.
२०.०१.२०१२ से २१.०१.२०१२	''माइक्रोवेव इन्जिनियरिंग में रीसेन्ट एडवान्सेस : डिवासेस, टेक्नोलॉजिस एण्ड एप्लिकेसन्स'' पर कार्यशाला	प्रो. के० पी० सिंह, सभापति, विद्युतकीय अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी संस्थान, का. हि. वि. वि.
२२.०१.२०१२ से २३.०१.२०१२	जनसंख्या आनुवंशिक एवं क्रोमेटिन गतिविज्ञान पर परिसंवाद	प्रो. जे० के० रॉय, संयोजक, जीव विज्ञान विभाग, का. हि. वि. वि.
२३.०१.२०१२ से २४.०१.२०१२	ज्ञान एवं स्वास्थ्य में आधुनिक प्रगति	डॉ. इन्द्रमणी लाल सिंह, निदेशक, आई सी आर ए सी एच-२०१२ एवं डॉ. राकेश पाण्डेय, आयोजन सविच, आई सी आर सी एच-२०१२, मनोविज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२३.०१.२०१२ से २४.०४.२०१२	आधुनिक प्रौद्योगिकी किये डिजाइन एव सामग्री निर्माण पर राष्ट्रीय कन्वेन्शन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी (डीएम ए एट)	प्रो. जी वी एस शास्त्री, धातुकीय अभियांत्रिक, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.
२६.०१.२०१२ से ३१.०१.२०१२	५५वाँ एआईसीओजी २०१२ राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. अनुराधा खन्ना, प्रसूति विज्ञान एवं स्त्री रोग विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.
फरवरी २०१२		
०४.०२.२०१२ से ०५.०२.२०१२	भोजपुरी के विकास में राहुल सांकृत्यायन का योगदान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. सदानन्द शाही, समन्वयक, भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, कला संकाय, का.हि.वि.वि.
०४.०२.२०१२ से ०५.०२.२०१२	''पोस्ट इकोनॉमी मेल्टडाउन इरा चैलेन्जेज एण्ड स्ट्रेजिज'' पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. एस.के. सिंह, कार्यशाला के, समन्वयक, संकायप्रमुख, प्रबन्धशास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि.
०७.०२.२०१२ से १०.०२.२०१२	''स्पेक्ट्रोस्कोपिक सिग्नेजर ऑफ मोलेकुलर कॉम्लेक्सेस/आयन्स इन आवर एटमेस्फियर एण्ड वियान्ड'' पर दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशला	प्रो. बी.एन. द्विवेदी, उप-सभापति एवं डॉ. प्रभाकर सिंह, आयोजन सचिव, प्रयुक्त भौतिकी विभाग, प्रौद्योगिकी, का.हि.वि.वि.
०७.०२.२०१२	मोलेकुलर थेरेपियटिक्स एण्ड ट्रान्सलेशनल में मेडिसीन पर अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद	प्रो. जे.वी. मेडिचेरला, मोलेकूलर बॉयोलाजी यूनिट, चिकित्स विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.

०८.०२.२०१२ से १०.०२.२०१२	समग्र जीवन दृष्टि और चुनौतियाँ पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. कमलशील, संयोजक, मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र, का.हि.वि.वि.
०८.०२.२०१२ से १९.०२.२०१२	संकाय विकास कार्यक्रम	प्रो. राजकुमार प्रबन्धशास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि.
०९.०२.२०१२ से ११.०२.२०१२	स्वास्थ्य संचार सुअवसर एवं चुनौतियाँ पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सह कार्यशाला	प्रो. शिशिर बसु, संगोष्ठी के समन्वयक, पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग, का.हि.वि.वि.
१०.०२.२०१२ से ११.०२.२०१२	राष्ट्रीय सलाहकार समिति (एन ए सी) बैठक	डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव, प्रौद्योगिकी कार्य ऊष्माचित्र, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.
११.०२.२०१२ से १२.०२.२०१२	उच्च कार्यात्मक सामग्रियों पर राष्ट्रीय परिसंवाद	प्रो. यू.एस.राय, संयोजक, रसायन विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
११.०२.२०१२ से १२.०२.२०१२	शिक्षा में गाना एवं खेलकूद की भूमिका तथा बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. संजय सोनकर, संयोजक, शिक्ष संकाय, कमच्छा, का.हि.वि.वि.
१३.०२.२०१२ से १८.०२.२०१२	वनस्पति प्रशिक्षण कार्यक्रम	डॉ. पी.एस. पुन्दिर, संयोजक, डीएसटी-सीआईएमएस, का.हि.वि.वि.
१५.०२.२०१२ से १७.०२.२०१२	अखिल भारत अमेरिकन अध्ययन कार्यशाला	प्रो. प्रियन्कर उपाध्याय, समन्वयक, मालवीय शान्ति अनुसन्धान केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.
१७.०२.२०१२ से १९.०२.२०१२	''भारत में भाषा विज्ञान का छठा छात्र सम्मेलन''(एस सी ओ एन एल आई ६)	प्रो. कमलशील, अध्यक्ष, भाषा विज्ञान एवं संकाय प्रमुख, कला संकाय, का.हि.वि.वि.
१७.०२.२०१२ से १८.०२.२०१२	म्युजिक थेरेपी प्रैक्टिसेस में अद्यतन झुकाव। वर्गीकरण तकनीकी और क्रियान्वयन पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. शारदा वेलन्कर, संयोजक, गायन विभाग, मंच कला संकाय, का.हि.वि.वि.
२१.०२.२०१२ से २२.०२.२०१२	''भारत के राज्यों का पुनर्गठन समस्यांए एवं परिदृश्य'' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. आर.पी. पाठक, राजनीति विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२२.०२.२०१२ से २४.०२.२०१२	भू-रसायन एवं भू-भौतिकी भारतीय दृश्यलेख में आधुनिक उपयोगिता एवं भविष्य चुनौतियों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. एन.वी.चालपाती राव, संयोजक, भूविज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२३.०२.२०१२ से २९.०२.२०१२	''साहसिक खेलकूद तथा पर्वतारोहण एवं समवर्गी खेलकूदों में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. आर.जी.सिंह, वृक्क रोग विज्ञान विभाग, प्रो. इन्चार्ज, विश्वविद्यालय पर्वतारोहण केन्द्र एवं डॉ. विक्रम सिंह, सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग, कला संकाय, आयोजन सचिव, विश्वविद्यालय पर्वतारोहण केन्द्र, का.हि.वि.वि.
२४.०२.२०१२ से २५.०२.२०१२	''व्यर्थ प्रबन्ध में नूतन उपयेगिता'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन, आर ए डब्ल्यू एम-२०१२	प्रो. बी.एन.राय, संयोजक एवं डॉ. आर.एस.सिंह आयोजन सचिव, रासायनिक अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विभाग, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.
२४.०२.२०१२ से २५.०२.२०१२	विज्ञापन में आधुनिक झुकाव पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. मनीष अरोरा, आयोजन सचिव, व्यावहरिक कला, दृश्य कला संकाय, का.हि.वि.वि.
२५.०२.२०१२ से २६.०२.२०१२	''स्प्रिट २०१२ इट्स इन्साईडयू'' एक राष्ट्रीय स्तर संगोष्ठी सह विज्ञानी एवं साहित्यिक प्रतियोगिता	प्रो. एस.के.सिंह, आयोजन सचिव, भैषसिकी विभाग, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.
२५.०२.२०१२ से २६.०२.२०१२	भारत एवं कनाडा में अल्पसंख्यकों पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. रजनी रंजन झा, निदेशक, कनेडियन अध्ययन विकास कार्यक्रम, राजनीति विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२५.०२.२०१२	भौतिकी में आधुनिक झुकाव पर सम्मेलन	डॉ. रन्जन कुमार सिंह, संयोजक, भैतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
२७.०२.२०१२ से २९.०२.२०१२	कवक एवं पादप रोग विज्ञान: जैव प्रौद्योगिकी उपगमनों पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. आर.एन.खरवार, आयोजन सचिव, वनस्पति विज्ञान विभाग, का.हि.वि.वि.
२७.०२.२०१२ से २९.०२.२०१२	''अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन''	प्रो. हरीश्वर दीक्षित, संयोजक, अध्यक्ष, वेद विभाग, संस्कृत विद्याधर्म विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
२७.०२.२०१२ से २९.०२.२०१२	उत्तर एवं मध्यभारत के सामुदा यिक लोक संगीत एवं नृत्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. अर्चना कुमार, आयोजन सचिव, अंग्रेजी विभाग, का.हि.वि.वि.

मार्च २०१२		
०१.०३.२०१२ से ०२.०३.२०१२	''फसल खरीफ २०११ का मूल्यांकन और रबी २०११-१२ का आयोजन'' पर पुनरीक्षण बैठक	डॉ. आर.के. मल्ल, आयोजन सचिव, पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास संस्थान, का.हि.वि.वि.
०२.०३.२०१२ से ०४.०३.२०१२	''सांख्यिकी में नये आयामों धारणा और विषयों'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. वी.के.सिंह, सांख्यिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
०२.०३.२०१२ से ०३.०३.२०१२	''मोलेकूलर स्पेक्ट्रोस्कोपी थ्योरी, इनस्ट्रुमेन्ट एण्ड एप्लिकेशन'' पर विज्ञान शिक्षण व्याख्यान कार्यशाला	डॉ. सत्येन साह, व्याख्यान कार्यशाला के समन्वयक, रसायनशास्त्र विभाग
०२.०३.२०१२ से ०३.०३.२०१२	सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में ढाँचा समीकरण प्रतिरूपण पर राष्ट्रीय कार्यशाला	डॉ. आलोक कुमार रॉय, आयोजन सचिव, प्रबन्धशास्त्र संकाय, का.हि.वि.वि.
०२.०३.२०१२ से ०४.०३.२०१२	सीओएमईटी-२०१२ पर सम्मेलन	प्रो. वी.पी.सिंह, यांत्रिक अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.
०२.०३.२०१२ से ०४.०३.२०१२	''पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास। विषय एवं भारत के लिये चुनौतियाँ'' राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. जी.एस.सिंह, आयोजन सचिव पर्यावरण एवं सम्पोष्य विकास संस्थान, का.हि.वि.वि.
०३.०३.२०१२ से ०४.०३.२०१२	एशिया अध्येताओं का राष्ट्रीय बैठक	प्रो. कमलशील, आयोजन सचिव, कला संकाय, का.हि.वि.वि.
१२.०३.२०१२ से १७.०३.२०१२	आकाशीय भौतिकी, वायुमण्डलीय भौतिकी एवं खगोल भौतिकी में झुकाव पर कार्यशाला	डॉ. अभय कुमार सिंह, संयोजक, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
१३.०३.२०१२ से १४.०३.२०१२	''मल्टीपल मार्जिनेलिटीज'' पर सम्मेलन	डॉ. किरन बर्मन, समन्वयक, महिला अध्ययन एवं विकास, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१४.०३.२०१२ से १६.०३.२०१२	''रिओरियन्टिंग जाग्रफी टू मीट प्रेजेन्ट एण्ड फ्यूचर डिमाण्डस इन प्लानिंग एण्ड डिसीजन मेकिंग प्रोसेस'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. के.एन. प्रुथ्वी राजू एवं प्रो. जगदीश सिंह, संयोजक, भूगोल विभाग, का.हि.वि.वि.
१६.०३.२०१२ से १८.०३.२०१२	रिमोट सेन्सिंग एण्ड जी.आई.एस. पर अल्पावधि पाठ्यक्रम	डॉ. अनुराग ओहरी एवं डॉ. मेध झा, समन्वयक, सिविल अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.
१७.०३.२०१२ से १८.०३.२०१२	भारत और यूरोप में सामाजिक आर्थिक एवं राजनितिक विरोध का प्रस्ताव में अभिशासन की भूमिका पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला	प्रो. प्रियंकर उपाध्याय, समन्वयक, मालवीय शान्ति अनुसंधान केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.
१९.०३.२०१२ से २१.०३.२०१२	प्राचीन भारत में सामाजिक विचारों एवं वास्तविकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. एस.आर.दूबे समन्वयक, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, का.हि.वि.वि.
१७.०३.२०१२ से १८.०३.२०१२	''अन्वेषण २०१२'' पर धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग का प्रौद्योगिक प्रब्धनोत्सव	प्रो. जी.वी.एस.शास्त्री, धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.
२०.०३.२०१२ से २१.०३.२०१२	''गाँधी की सुसंगति एवं उनकी अनन्त पैतृक सम्पत्ति'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. मीना सोढ़ी, प्राचार्या, महिला महाविद्यालय, का.हि.वि.वि.
१९.०३.२०१२ से २४.०३.२०१२	''उच्च कार्यात्मक सामग्रियों'' पर कार्याशला	डॉ. अनूप कुमार घोष, संयोजक, भौतिकी विभाग, का.हि.वि.वि.
२२.०३.२०१२	''विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा में हिन्दी के उपयोग के परिप्रेक्ष्य में महामना की दृष्टि'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. शशि भूषण अग्रवाल, समन्वयक एवं संगोष्ठी संयोजक, हिन्दी प्रकाशन बोर्ड (भौतिकी प्रकोष्ठ) द्वितीय तल, हिन्दी भवन, का.हि.वि.वि.
२३.०३.२०१२ से २५.०३.२०१२	''गणितीय प्रतिरूपण एवं संगणक अनुरूपण'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. ओ.पी.सिंह, संयोजक, प्रयुक्त गणित विभाग, प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.
२३.०३.२०१२ से २५.०३.२०१२	अखिल भारत छात्र सम्मेलनः अध्ययन	डॉ. राजीव श्रीवास्तव, डॉ. आर.एस.सिंह एवं डॉ. अनन्त द्विवेदी, संगणक अभियांत्रिक प्रौद्योगिकी संस्थान, का.हि.वि.वि.
२५.०३.२०१२ से २६.०३.२०१२	प्रकृति विज्ञान एवं जैव विज्ञान के बीच अन्तरापृष्ठ पर कार्यशाला	डॉ. स्वाति, आयोजन सचिव, उपाचार्य भौतिकी, महिला महाविद्यालय, का.हि.वि.वि.
२६.०३.२०१२ से २८.०३.२०१२	''गंगा नदी की घाटी प्रबन्धन'' विषय एवं चुनौतियाँ पर राष्ट्रीय सम्मेलन	प्रो. बी.डी. त्रिपाठी, पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र, का.हि.वि.वि.
२६.०३.२०१२	आयुर्वेद में रिसेन्ट एडवांसेज एवं फ्यूचर चैलेन्जेज पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. देव नाथ सिंह गौतम, आयोजन सचिव, सहायक आचार्य, रसशास्त्र, आर.जी.एस.सी बरकच्छा, का.हि.वि.वि.
२८.०३.२०१२ से २९.०३.२०१२	ए आई पी प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रो. एच.बी.सिंह, कवक विज्ञान एवं पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान, का.हि.वि.वि.
२८.०३.२०१२ से ३०.०३.२०१२	''मस्सिर उर्दू नोबेल'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. याकूब अली खान, उर्दू विभाग, का.हि.वि.वि.
३०.०३.२०१२ से ३१.०३.२०१२	''पुनर्चिन्तन विकासः विकल्पों के लिये खोज'' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. अजित कुमार पाण्डेय, समन्वयक, सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, का.हि.वि.वि.

परिशिष्ट - ५

वर्ष २०११-१२ के अन्तर्गत शैक्षणिक विचार गोष्ठियों में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त शिक्षकों की संख्या का विवरण

क्र.सं.	विभाग	शिक्षण का नाम	कार्यक्रम का विवरण एवं अवधि
अ. भारत में			
१.	दन्त चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० रोमेश सोनी, सहायक आचार्य	"१३वीं आई पी एस राष्ट्रीय स्नातकोत्तर छात्र सम्मेलन" २४ से २६ जून, २०९९ तक बीबीडी दन्त चिकित्सा विज्ञान कालेज, लखनऊ में सम्पन्न।
२.	दन्त चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० अतुल भटनागर, सहायक आचार्य	"१३वीं आई पी एस राष्ट्रीय स्नातकोत्तर छात्र सम्मेलन" २४ से २६ जून, २०११ तक बीबीडी दन्त चिकित्सा विज्ञान कालेज, लखनऊ में सम्पन्न।
३.	दन्त चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० टी०पी० चतुर्वेदी	"४६वीं भारतीय आर्थोडॉन्टिक सम्मेलन" २२ से २५ सितम्बर, २०११ तक खजुराहो में सम्पन्न।
४.	दन्त चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० अजित विक्रम परिहार, सहायक आचार्य	"४६वीं भारतीय आर्थोडॉन्टिक सम्मेलन" २२ से २५ सितम्बर, २०११ तक खजुराहो में सम्पन्न।
५.	सामान्य शल्य चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ०(सुश्री) सीमा खन्ना	"भारतीय शल्य चिकित्सक संघ का वार्षिक सम्मेलन (एसिकॉन-२०११)" २५ से ३० दिसम्बर, २०११ तक कोच्चि में सम्पन्न।
६.	दन्त चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० आशीष अग्रवाल, सहायक आचार्य	"४६वीं भारतीय आर्थोडॉन्टिक सम्मेलन" २२ से २५ सितम्बर, २०११ तक खजुराहो में सम्पन्न।
७.	रोग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० विजय तिलक, सहायक आचार्य	भारतीय हेमैटोलॉजी एण्ड ब्लड ट्रान्सफ्युजन समाज का ५२वाँ वार्षिक सम्मेलन १० से १२ नवम्बर, २०११ तक चण्डीगढ़ में सम्पन्न।
८.	अन्त: स्राव विज्ञान एवं मेटॉबॉलिज्म, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० एस० के सिंह	"भारतीय इन्डोक्राइन समाज का ४१वाँ वार्षिक सम्मेलन" १ से ३ दिसम्बर, २०११ तक मैरियट होटल एवं सभा केन्द्र, पुणे में सम्पन्न।
९.	वृक्क रोग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० राणा गोपाल सिंह	"एशिया ओसीनिया का इम्युनोलॉजिकल सोसायटी फेडरेशन का ५वाँ कांग्रेस १४ से १७ मार्च, २०१२ तक नई दिल्ली में सम्पन्न"
१०.	औषध विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० सुरेश पुरोहित, सहायक आचार्य	"फरमाकोविजिलेन्स पर वर्कशाला" २१ से २४ फरवरी, २०१२ तक भारतीय जन स्वास्थ्य संस्थान, दिल्ली में सम्पन्न।
११.	बाल चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० बी०डी० भाटिया	राष्ट्रीय नियोनटोलॉजी फोरम-न्यूकॉन २०११ का ३१वाँ वार्षिक सभा १६वाँ तक चेन्नई ट्रेड सेन्टर, चेन्नई में सम्पन्न।
१२.	नेत्र विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० श्रीकान्त	७०वाँ अखिल भारत नेत्र रोग चिकित्सको का सम्मेलन २ से ५ फरवरी, २०१२ तक मरदु, कोचीन में सम्पन्न।
१३.	दन्त चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० नीलम मित्तल	"१३वाँ आई एस डी ई एवं आई ई एस स्नातकोत्तर सभा" २१ एवं २२ अप्रैल, २०१२ को कसौली, हिमाचल प्रदेश में सम्पन्न।
१४.	प्रसार शिक्षा, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० बासवप्रभु जिरली, सहायक आचार्य	"अट्रैक्टिंग फार्म यूथ टू सस्टेनेबल एग्रीकल्चर" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी २६ से २८ अगस्त, २०११ तक कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलूरु में सम्पन्न।
१५.	प्रसार शिक्षा, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० कल्यान गढ़ई, सहायक आचार्य	"इनोवेटिव एप्रोचेज फॉर एग्रीकल्चरल नॉलेज मैनेजमेन्ट: ग्लोबल इक्सटेन्सन इक्सपीरियन्सेस" पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ९ से १२ नवम्बर, २०११ तक नई दिल्ली में सम्पन्न।
१६.	कृषि अर्थशास्त्र, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० राकेश सिंह	"भारतीय कृषि अर्थशास्त्र समाज" का ७१वां वार्षिक सम्मेलन ३ से ५ नवम्बर, २०११ तक कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़ कर्नाटक में सम्पन्न।
१७.	कृषि अर्थशास्त्र, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० ओम प्रकाश सिंह, सहायक आचार्य	"भारतीय कृषि अर्थशास्त्र समाज" का ७१वां वार्षिक सम्मेलन ३ से ५ नवम्बर, २०११ तक कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़ कर्नाटक में सम्पन्न।

१८.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० मानोज कुमार सिंह, सहायक आचार्य	''जीविका सुरक्षा के लिये वातावरण परिवर्तन, भूमि उपभोग विविधता एवं शिल्प वैज्ञानिक उपकरण विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ८ से १० अक्टूबर, २०११ तक एस वी पी कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ में सम्पन्न।''
१९.	पादप कार्यिकी विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० पद्मनाभ द्विवेदी, सहायक आचार्य	''९९वां भारतीय विज्ञान कांग्रेस'' ३ से ७ जनवरी, २०१२ तक किट विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में सम्पन्न।
२०.	खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० अनिल कुमार चौहान	''किण्वित खाद्यो, स्वास्थ्य स्थिति और समाज कल्यण: चुनौतियाँ एवं सुअवसरों पर ५वां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन १५ से १६ दिसम्बर, २०११ तक केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकीय शोध संस्थान, मैसूर में सम्पन्न।''
२१.	पादप कार्यिकी विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० प्रवीण प्रकाश, सहायक आचार्य	''कार्यिकी मध्यस्थता द्वारा सम्पेष्य फसल उत्पादकता'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी २४ से २६ नवम्बर, २०११ तक गांटुगा, मुम्बई में सम्पन्न।
२२.	के०वी०के०, कृषि विज्ञान संस्थान, बरकच्छा	डॉ० सुनील कुमार गोयल, सहायक आचार्य	''आई.एस.ए.ई. का ४६वां वार्षिक सभा एवं अनाज संग्रहण का अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद, २६ से २९ फरवरी, २०१२ तक जी.बी.पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
२३.	कवक एवं पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० बी०के० शर्मा, सहायक आचार्य	''संक्रमित जीव, प्रतिरक्षा, रोगजनक पादप पारस्परिक क्रिया में रोग नियन्त्रण'' पर राष्ट्रीय परिसंवाद २ से ४ दिसम्बर, २०११ तक हैदराबाद विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
२४.	कवक एवं पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० रमेश चन्द	''संक्रमित जीव, प्रतिरक्षा, रोगजनक पादप पारस्परिक क्रिया में रोग नियन्त्रण'' पर राष्ट्रीय परिसंवाद २ से ४ दिसम्बर, २०११ तक हैदराबाद विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
२५.	मृदा एवं कृषि रसायन विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० ए०के० घोष, सहायक आचार्य	''भारतीय कृषि रसायन विज्ञानी समाज का ४५वां वार्षिक सभा एवं सम्पोष्य मृदा स्वास्थ्य के लिये संतुलित खाद, फसल उत्पादकता एवं खाद्य सुरक्षा'' पर राष्ट्रीय परिसंवाद २५ से २६ नवम्बर, २०११ तक जी.बी.पी.यू.ए. एवं टी., पन्तनगर में सम्पन्न।
२६.	कृषि अभियांत्रिकी, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० राम मन्दिर सिंह, सहायक आचार्य	''आई.एस.ए.ई. का ४६वां वार्षिक सभा एवं अनाज संग्रहण का अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद, २६ से २९ फरवरी, २०१२ तक जी.बी.पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
२७.	कवक एवं पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० हरिकेश बहादुर सिंह	''भारतीय कवक एवं पादप रोग विज्ञानी समाज का तीसरा विश्व सम्मेलन'' २६ से २९ फरवरी, २०१२ तक राजस्थान कृषि महाविद्यालय, एम पी यू ए टी, उदयपुर में सम्पन्न।
२८.	कीट एवं कृषि जीव विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० रामकेवल, सहायक आचार्य	''कृषि एवं कृषि उद्यमिता में विविधता'' पर १४वां भारतीय कृषि वैज्ञानिको एवं कृषक कांग्रेस १८ से १९ फरवरी, २०१२ तक विज्ञान परिषद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद में सम्पन्न।
२९.	जन्तु विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० बेचन लाल	''रिप्रोडक्टिव फिजियोलॉजी ऑफ फिश'' पर ९वां अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद ९ से १४ अगस्त, २०११ तक कोचि, केरला में सम्पन्न।
३०.	जन्तु विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० के०पी० ज्वाय	''रिप्रोडक्टिव फिजियोलॉजी ऑफ फिश'' पर ९वाँ अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद ९ से १४ अगस्त, २०११ तक कोचि, केरला में सम्पन्न।
३१.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो० ब्रज राज कुमार सिन्हा	''११वाँ एशियन नगरीकरण सम्मेलन'' १० से १३ दिसम्बर, २०११ तक उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में सम्पन्न।
३२.	रसायन शास्त्र, विज्ञान संकाय	प्रो० नन्हई सिंह	''भारतीय रसायन वैज्ञानिक संघ का वार्षिक बैठक'' २८ से ३० दिसम्बर, २०११ तक ओस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में सम्पन्न।
३३.	भूगोल , विज्ञान संकाय	डॉ० मुरारी लाल मीणा, सहायक आचार्य	''भारतीय भूगोल संस्थान का ३३वाँ वार्षिक सम्मेलन'' एवं जनसंख्या, विकास तथा अनर्थ प्रबन्धन पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी ८ से ११ फरवरी, २०१२ तक त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणीनगर, त्रिपुरा में सम्पन्न।
३४.	रसायन शास्त्र, विज्ञान संकाय	डॉ०(सुश्री) इदा तिवारी, सहायक आचार्य	''विद्युतरसायन'' (आई.एस.ई.ए.सी.-डब्ल्यू एस.-२०११) पर अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद सह कार्यशाला ७ से १० दिसम्बर, २०११ तक होटल साइडेड दे गोवा में सम्पन्न।

३५.	जन्तु विज्ञान, विज्ञान संकाय	डॉ० रजनीकान्त मिश्रा, सहायक आचार्य	''स्थानान्तरीय कैंसर अनुसंधान'' पर चौथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन १६ से १९ दिसम्बर, २०११ तक उदयपुर में सम्पन्न।
३६.	रसायन शास्त्र, विज्ञान संकाय	डॉ० सत्येन साहा, सहायक आचार्य	''रसायन शास्त्र'' में १४वाँ सीआरएसआई राष्ट्रीय परिसंवाद ३ से ५ फरवरी, २०१२ तक आई आई एस ई आर, तिरूवनन्तपुरम में सम्पन्न।
३७.	जन्तु विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० सुरेन्द्र कुमार त्रिगुण	''फ्री रेडिकल्स, एन्टिआक्सीडेन्टस में इमर्जिंग ट्रेन्डस एवं हेल्थ, डिजिज एण्ड रेडियेशन पर न्यूट्रास्युटिकल्स'' पर एस एफ आर आर का सम्मेलन १२ से १४ जनवरी, २०१२ तक कोलकाता विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
३८.	जन्तु विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० शिव कुमार सिंह	''परिवार नियोजन योजना पर महत्वपूर्ण प्रजनक स्वास्थ्य'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन एवं प्रजनन तथा जनन क्षमता के अध्ययन हेतु भारतीय समाज का २२वाँ वार्षिक बैठक १९ से २१ फरवरी, २०१२ तक आई सी एम आर, नई दिल्ली में सम्पन्न।
३९.	राजनीति विज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो० कौशल किशोर मिश्रा	२१वीं सदी में दक्षिण एशिया में कानफ्लिक्ट को प्रकृति पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी ९ से १० अप्रैल २०११ तक चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
४०.	राजनीति विज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० तेज प्रताप सिंह, सहायक आचार्य	''आस्ट्रेलियन-भारतीय सम्बन्धों में सैद्धान्तिक और व्यावहरिक डिप्लोमेसी पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' ८ से ९ अप्रैल २०११ तक भारत अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र, लोधी रोड, नई दिल्ली में सम्पन्न।
४१.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ०(सुश्री) बिन्दा परानजये, सहायक आचार्य	''विभिन्न स्मृतियों, इन्सक्रिप्सन और अन्य ऐतिहासिक रिकार्डों से महिलाओं की स्थिति की जानकारी'' पर एक संगोष्ठी १९ अप्रैल, २०११ को मुम्बई एसिएटिक समाज में सम्पन्न।
४२.	समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० दिनेश कुमार सिंह, सहायक आचार्य	''३७वाँ अखिल समाजशास्त्रीय सम्मेलन'' १० से १३ दिसम्बर, २०११ तक जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में सम्पन्न।
४३.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० घनश्याम, सहायक आचार्य	''भारत का तुलनात्मक शिक्षा समाज'' का वार्षिक सम्मेलन (२०११) १६ से १८ नवम्बर, २०११ तक हैदराबाद विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
४४.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० संदीप कुमार, सहायक आचार्य	''प्रत्यक्षवाद: पथ सफलता, सन्तोष एवं स्वर्गसुख पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' ६ से ८ अगस्त, २०११ तक अमिटि विश्वविद्यालय राजस्थान, जयपुर में सम्पन्न।
४५.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० त्रयम्बक तिवारी, सहायक आचार्य	''९९वाँ भारतीय विज्ञान कांग्रेस'' ३ से ७ जनवरी, २०१२ तक राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं शोध संस्थान, के आई आई टी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में सम्पन्न।
४६.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० (सुश्री) पूर्णिमा अवस्थी, सहायक आचार्य	''एन एओ पी का २९वाँ वार्षिक सभा १२ से १४ दिस्म्बर, २०११ को आई आर एम ए आनन्द में सम्पन्न।
४७.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० (सुश्री) शबाना बानो, सहायक आचार्य	''एन एओ पी का २९वाँ वार्षिक सभा १२ से १४ दिस्म्बर, २०११ को आई आर एम ए आनन्द में सम्पन्न।
४८.	समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो० अरविन्द कुमार जोशी	''३७वाँ अखिल समाजशास्त्रीय सम्मेलन'' १० से १३ दिसम्बर, २०११ तक जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में सम्पन्न।
४९.	राजनीति विज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० संजय श्रीवास्तव, सहायक आचार्य	''पहला राष्ट्रस्तरीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध सम्मेलन'' २२ से २३ अक्टूबर, २०११ तक विज्ञान भवन, नई दिल्ली में सम्पन्न।
५०.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो० (सुश्री) अरूणा सिन्हा	''भारत में सांस्कृतिक परम्परा: विशष रूप से राजस्थान एवं इनके पड़ोसी राज्यों के सन्दर्भ पर राष्ट्रीय संगोष्ठी'' २ से ३ दिसम्बर, २०११ तक मोहनलाल सुखादिया विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
५१.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० तुषार सिंह, सहायक आचार्य	(i) ''प्रौढ़ों एवं युवाओं की क्षमता बढ़ाना : एक आजीवन प्रवीणता उपागम'' पर तीसरा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन २२ से २५ नवम्बर, २०११ तक राजीव गाँधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान, श्रीपेरुम्बदुर में सम्पन्न। (ii) एन ए ओ पी का २१वां वार्षिक सभा ग्रामीण प्रबन्धन संस्थान, आनन्द (गुजरात) द्वारा १२ से १४ दिसम्बर, २०११ तक।

५२.	अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकय	डॉ० जे०बी० कोमारइह, सहायक आचार्य	''६४वाँ अखिल भारत वाणिज्य सम्मेलन'' १३ से १५ दिसम्बर, २०११ तक पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
५३.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० योगेश कुमार आर्य, सहायक आचार्य	(i) ''प्रौढ़ों एवं युवाओं की क्षमता बढ़ाना : एक आजीवन प्रवीणता उपागम'' पर तीसरा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन २२ से २५ नवम्बर, २०११ तक राजीव गाँधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान, श्रीपेरुम्बदुर में सम्पन्न। (ii) एन ए ओ पी का २१वां वार्षिक सभा ग्रामीण प्रबन्धन संस्थान, आनन्द (गुजरात) द्वारा १२ से १४ दिसम्बर, २०११ तक मेजबान हुआ।
५४.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० घनश्याम, सहायक आचार्य	''एम्पायर, नेशन एण्ड डायसपोरा: मैपिंग द ट्राजेक्टरोज ऑफ ट्रान्सफारमेशन्स इन इण्डियन डायसपोरा'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन २० से २३ फरवरी २०१२ तक हैदराबाद के सम्पन्न।
५५.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० ए० गंगाधरन, सहायक आचार्य	(i) ''भारतीय इतिहास कांग्रेस ७२वां सत्र'' १० से १३ दिसम्बर २०११ तक पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में सम्पन्न। (ii) ''भारत के इतिहासकारक नियुक्ति'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन। आर.एस. शर्मा के सम्मान में एक परिसंवाद २७ से २९ जनवरी २०१२ तक जे. एन. यू. , नई दिल्ली में सम्पन्न।
५६.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ०(सुश्री) स्वर्णलता, सहायक आचार्य	''व्यावहरिक मनोविज्ञान का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' २४ से २५ फरवरी, २०१२ तक पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ मे सम्पन्न।
५७.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० अजय प्रताप, सहायक आचार्य	''लोक कला विषयों के संरक्षण के अध्ययन हेतु भारतीय संघ'' का ४४वाँ वार्षिक सामान्य सम्मेलन १६ से १८ फरवरी २०१२ तक कुरूक्षेत्र में सम्पन्न।
५८.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० संदीप कुमार, सहायक आचार्य	''व्यावहारिक मनोविज्ञान का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' २४ से २५ फरवरी, २०१२ तक पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ मे सम्पन्न।
५९.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० विरेन्द्र ब्यादवाल, सहायक आचार्य	''व्यावहारिक मनोविज्ञान का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' २४ से २५ फरवरी, २०१२ तक पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ मे सम्पन्न।
६०.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ०(सुश्री) रंजना शील, सहायक आचार्य	''लिंग एवं प्रवसन पर राष्ट्रीय संवाद'' ६ मार्च, २०१२ को इण्डिया हैबिटेट सेन्टर, नई दिल्ली में सम्पन्न।
६१.	पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, कला संकाय	डॉ० भाष्कर मुखर्जी, सहायक आचार्य	(i) ''पुस्तकालय एवं सूचना सेवाओं की आगामी उत्पत्ति'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी २ से ३ अप्रैल, २०११ तक अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में सम्पन्न। (ii) ''सूचना एवं ज्ञान प्रसार : वर्तमान स्थिति एवं भविष्य निर्देश'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी ६ से ७ मई २०११ तक सीजीसीआई, कोलकाता में सम्पन्न।
६२.	पालि एवं बौद्ध अध्ययन, कला संकाय	प्रो० बिमलेन्द्र कुमार	''दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में बुद्धिस्थ सम्पर्क परिप्रेक्ष्य एवं भविष्य'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ६ से ९ अक्टूबर, २०११ तक बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
६३.	पालि एवं बौद्ध अध्ययन, कला संकाय	प्रो० लाल जी	''११वाँ सम्मेलन: एशियन एवं पेसिफिक अध्ययन'' का भारतीय कांग्रेस ४ से ५ सितम्बर, २०११ तक विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर में सम्पन्न।
६४.	शारीरिक शिक्षा, कला संकाय	डॉ० टी.ओनिमा रेड्डी, सहायक आचार्य	''सार्वभौम शिक्षा सुधार के लिये सामुदायिक सीख'' पर शैक्षिक अनुसंधान के लिये अखिल भारत संघ का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन १८ से २० नवम्बर, २०११ तक व्यावसायिक अध्ययन संस्थान, ग्वालियर में सम्पन्न।
६५.	पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, कला संकाय	प्रो० एच.एन. प्रसाद	''कोलेबोरेटिव एरा में कृषि पुस्तकालयों का रूपान्तरण'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन १७ से १९ नवम्बर, २०११ तक उद्यान एवं वन डॉ. वार्ड एस परमार विश्वविद्यालय नौनी, सोलन (हिमांचल प्रदेश) में सम्पन्न।
६६.	फ्रेंच अध्ययन, कला संकाय	डॉ० अखिलेश कुमार, सहायक आचार्य	''इटुडेस फ्रांसोफोन्स: इन्जुक्स एट परस्पेक्टिब्स'' पर ६ठा अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस १६ से १९ फरवरी, २०१२ तक मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, मदुरै में सम्पन्न।

६७.	संस्कृत, कला संकाय	प्रो० सोमनाथ नेन	अखिल भारतीय दर्शन का ५६वाँ संगोष्ठी ५ स ७ फरवरी, २०१२ तक श्री सोमनाथ संस्कृति विश्वविद्यालय, वेरावल (गुजरात) में सम्पन्न।
६८.	पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, कला संकाय	डॉ० भाष्कर मुखर्जी, सहायक आचार्य	यूजिंग डिफेरेन्ट मैट्रिक्स फॉर एसेसिंग रिसर्च प्रोडक्टविटी पर राष्ट्रीय कार्यशाला १६ से १७ फरवरी, २०१२ तक आई एस आई, नई दिल्ली में सम्पन्न।
६९.	कार्यालय प्रबन्धन एवं निगम सचिव पद, आर जी एस सी, बरकच्छा, मीरजापुर, कला संकाय	डॉ० रत्ना शंकर मिश्रा, सहायक आचार्य	''३४वाँ अखिल भारत लेखा सम्मेलन एवं लेखा शिक्षा एवं शोध'' पर अर्न्राष्ट्रीय संगोष्ठी १७ से १८ दिसम्बर, २०११ तक राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में सम्पन्न।
७०.	अंग्रेजी, कला संकाय	डॉ० (सुश्री) लता दूबे, सहायक आचार्य	''विश्व साहित्य में मिथक, मौखिकता और लोकसाहित्य पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (विशेष रूप से रवीन्द्रनाथ टैगोर के सन्दर्भ के साथ)'' २९ से ३१ मार्च, २०१२ तक श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटरा, जम्मू एवं कश्मीर में सम्पन्न।
७१.	अंग्रेजी, कला संकाय	डॉ० प्रकाश चन्द्र प्रधान, संयुक्त आचार्य	''विश्व साहित्य में मिथक, मौखिकता और लोकसाहित्य पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (विशेष रूप से रवीन्द्रनाथ टैगोर के सन्दर्भ के साथ)'' २९ से ३१ मार्च, २०१२ तक श्री माता वैष्णों देवी विश्वविद्यालय, कटरा, जम्मू एवं कश्मीर में सम्पन्न।
७२.	शारीरिक शिक्षा, कला संकाय	डॉ० अखिल मेहरोत्रा, सहायक आचार्य	शारीरिक शिक्षा खेलकूद विज्ञान में सम्पूर्ण परिवर्तन, योजनाओं एवं नीतियों पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन २४ से २६ फरवरी, २०१२ तक गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में सम्पन्न।
७३.	महिला महाविद्यालय	डॉ० (सुश्री) राधा चौबे, सहायक आचार्य	''रिप्रोडक्टिव फिजियोलॉजी ऑफ फिश'' पर ९वां अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद ९ से १४ अगस्त, २०११ तक कोचि, केरला में सम्पन्न।
७४.	गणित, महिला महाविद्यालय	डॉ० (सुश्री) प्रवति साहू, सहायक आचार्य	''गणित एवं सांख्यिकी के उपयोगों पर हेबर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' ५ से ७ जनवरी, २०१२ तक तिरूचिरापल्ली में सम्पन्न।
७५.	भौतिक, महिला महाविद्यालय	डॉ० (सुश्री) नीलम श्रीवास्तव, संयुक्त आचार्य	''तीसरा अन्तर्राष्ट्रीय बहुघटक बहुलक सम्मेलन'' आई एम पी सी २०१२, कोट्टयम, केरला में २३ से २५ मार्च २०१२ तक सम्पन्न हुआ।
७६.	प्राणी विज्ञान, महिला महाविद्यालय	डॉ० (सुश्री) करूणा सिंह, सहायक आचार्य	''भारतीय मानव एवं पशु कवक विज्ञानी'' संस्था का ९वाँ राष्ट्रीय सम्मेलन १० से १२ फरवरी, २०१२ तक सिलीगुड़ी में सम्पन्न।
७७.	प्राणी विज्ञान, महिला महाविद्यालय	डॉ० (सुश्री) पूनम सिंह, सहायक आचार्य	प्रजनन एवं अन्त:स्राव विज्ञान मे नवीन आकृति एवं इमजिंग ट्रेण्ड्स पर ३० जनवरी से १ फरवरी २०१२ तक प्रजनन जीव विज्ञान एवं तुलनात्मक एवं ३०वाँ वार्षिक परिसवाद, मोहनलाल सुखड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में सम्पन्न।
७८.	दर्शनशास्त्र अनुभाग, महिला महाविद्यालय	डॉ० जय सिंह, सहायक आचार्य	''अखिल भारतीय दर्शन परिषद का ५६वाँ अधिवेशन'' श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेशवल, गुजरात में ५ से ७ फरवरी २०१२ को सम्पन्न।
७९.	प्राणी विज्ञान अनुभाग, महिला महाविद्यालय	डॉ० (सुश्री) स्वर्ण लता	''इथनोफरमाकोलॉजी: ट्रेडिसनल मेडिसिन्स एण्ड ग्लोबलाइजेसन-द फ्यूचर ऑफ एन्सेन्ट सिस्टम्स ऑफ मेडिसिन'' का १२वाँ अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस १७ से १९ फरवरी २०१२ तक जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता में सम्पन्न।
८०.	वाणिज्य	डॉ० अखिल मिश्रा, संयुक्त आचार्य	''अखिल भारत वाणिज्य सम्मेलन'' १३ से १५ दिसम्बर, २०११ तक स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट, पांडिचेरी विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
८१.	वाणिज्य	प्रो० प्रशान्त कुमार	''३४वाँ अखिल भारत लेखा सम्मेलन एवं लेखा शिक्षा एवं शोध'' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी १७ से १८ दिसम्बर, २०११ तक राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में सम्पन्न।
८२.	वाणिज्य	डॉ० घनश्याम साहू, संयुक्त आचार्य	(i) ''एनर्जी एण्ड इन्फ्रास्टक्चर'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ३ से ४ जनवरी, २०१२ तक पण्डित दीनदयाल पेट्रोलियम विश्वविद्यालय, गांधीनगर में सम्पन्न। (ii) ''प्रबन्ध'' पर १४वां निरमा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ५ से ७ जनवरी, २०१२ तक प्रबन्धन संस्थान। निरमा विश्वविद्यालय, अहमदाबाद में सम्पन्न।

८३.	लॉ स्कूल	डॉ० अदेश कुमार	''एडवान्स लेवल इन्टेलेकचुअल प्रापर्टी लॉस'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन २४ से २७ फरवरी, २०१२ तक दिल्ली विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
८४.	शिक्षा	डॉ० लालता प्रसाद, सहायक आचार्य	''सार्वभौम शिक्षा सुधार के लिये सामुदायिक सीख'' पर शैक्षिक अनुसंधान के लिये अखिल भारत संघ का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन १८ से २० नवम्बर, २०११ तक व्यावसायिक अध्ययन संस्थान, ग्वालियर में सम्पन्न।
८५.	सेन्ट्रल हिन्दू, ब्वॉयज स्कूल (कमच्छा)	डॉ० नन्द जी राय, सहायक अध्यापक	''३९वाँ वार्षिक सम्मेलन एवं वार्षिक सामान्य बैठक'' ११ से १३ नवम्बर, २०११ तक त्रिवेन्द्रम, केरल में सम्पन्न।

ब. विदेश में

१.	वृक्क रोग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० जय प्रकाश	''नेफ्रोलॉजी २०११ का विश्व कांग्रेस'' ८ से १२ अप्रैल, २०११ तक वानकोवर, कनाडा के सम्पन्न
२.	अन्त:स्राव विज्ञान एवं मेटाबोलिज्म, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० एस.के. सिंह	''९३वाँ वार्षिक बैठक एवं एक्सपो (इ एन डी ओ-२०११)'' ४ से ७ जून, २०११ तक बूस्टन, यू.एस.ए. में सम्पन्न।
३.	दन्त चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० फरहॉ दुर्रानी, संयुक्त आचार्य	''यूरोपियन अर्थोडॉन्टिक सोसायट'' का ८७वाँ कांग्रेस १८ से २३ जून, २०११ तक इस्टान्बुल, तुर्की में सम्पन्न।
४.	सामुदायिक चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० (सुश्री) संगीता कंसल, संयुक्त आचार्य	''इपिडेमियोलॉजी का १९वाँ आई इ ए विश्व कांग्रेस'' ७ से ९९ अगस्त २०११ तक एडिन्बर्ग, स्काटलैण्ड में सम्पन्न।
५.	सामान्य चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० अजय कुमार खन्ना	''भारत के मिनिमम एक्सेस सर्जनों के संघ'' का ६७वाँ अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस २१ से २५ मई २०११ तक सिंगापुर में सम्पन्न।
६.	सामान्य शल्य चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० पुनीत, संयुक्त आचार्य	''ग्लोबल एकेडेमिक प्रोग्राम २०११ सम्मेलन'' ३१ मई से ३ जून, २०११ तक हाउसटन, टेक्सास यू.एस.ए. में सम्पन्न।
७.	प्लास्टिक सर्जरी, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० प्रदीप जैन	''अधिक अच्छा सुरक्षित यात्रा'' विषय पर ८वाँ एशिया न्योसिफिक वर्न कांग्रेस एवं एशियन बुन्ड हीलिंग एसोसिएशन का तीसरा कांग्रेस ११ से १४ सितम्बर, २०११ तक बी आई टी ई सी, बैंकाक, थाइलैण्ड में सम्पन्न।
८.	सामुदायिक चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० आलोक कुमार, सहायक आचार्य	''इपिडेमियोलॉजी का १९वाँ आई इ ए विश्व कांग्रेस'' ७ से ९९ अगस्त २०११ तक एडिन्बर्ग, स्काटलैण्ड में सम्पन्न।
९.	यक्ष्मा एवं वक्ष रोग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० गोविन्द नारायण श्रीवास्तव, सहायक आचार्य	''यूरोपियन रेसपिरेटरी सोसायटी २०११ का वार्षिक कांग्रेस'' २४ से २८ सितम्बर, २०११ तक अम्सटरडम, नेदरलैण्ड्स में सम्पन्न।
१०.	नि:संज्ञा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० डी०के० सिंह	''यूरोपियन सोसायटी ऑफ रीजनल एनेस्थिसिय'' का ३०वाँ वार्षिक कांग्रेस ७ से १० सितम्बर, २०११ तक ट्रेसडेन, जर्मनी में सम्पन्न।
११.	जठरांत्रशोध विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० विनोद कुमार दीक्षित	''पाचक रोग मंच २०११- अग्रगामी शोध एवं अभ्यास'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ११ से १२ जून, २०११ तक हांगकांग में सम्पन्न।
१२.	नि:संज्ञा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० अंकित अग्रवाल, सहायक आचार्य	क्रीटिकल केयर मेडीसिन के एशियन पेसिफिक एसोसिएसन का १७वाँ कांग्रेस २७ फरवरी से १ मार्च, २०१२ तक मकुहारी मेसे, चीबा, जापान में सम्पन्न।
१३.	विकलांग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० अनिल कुमार राय	''फिलिपिन्स विकलांग संघ'' का ६२वाँ वार्षिक कांग्रेस ३० नवम्बर से ३ दिसम्बर, २०११ तक क्राउन प्लाजा गैलरी मनीला के मेन बॉलरूम, क्यूजन सिटी, फिलिपिन्स में सम्पन्न।
१४.	तंत्रिकीय चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० दीपिका जोशी	(i) पारकिन्सन्स डिजीज एण्ड रीलेटेड डिसआर्डर पर १९वां विश्व कांग्रेस ११ से १४ दिसम्बर, २०११ तक शंघई, चीन में सम्पन्न। (ii) न्यूरोलॉजी का २०वां विश्व कांग्रेस १२ से १७ नवम्बर, २०११ तक मारकेश मोरोक्को में सम्पन्न।
१५.	नेत्र विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	डॉ० अभिषेक चन्द्र, सहायक आचार्य	''२०१२ विश्व नेत्र विज्ञान कांग्रेस'' १६ से २० फरवरी, २०१२ तक अबूधाबी में सम्पन्न।

१६.	सामान्य शल्य चिकित्सा, आई.एम.एस.	डॉ० मुमताज अहमद अंसारी, संयुक्त आचार्य	८वाँ यूरोपियन ब्रेस्ट कैंसर सम्मेलन, २१ से २४ मार्च, २०१२ तक विन्ना, आस्ट्रिया में सम्पन्न।
१७.	नेत्र विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० ओम प्रकाश सिंह मौर्य	''२०१२ विश्व नेत्र विज्ञान कांग्रेस'' १६ से २० फरवरी, २०१२ तक अबू धाबी में सम्पन्न।
१८.	नि:संज्ञाविज्ञान, चिकित्सा विज्ञान संस्थान	प्रो० एल.डी.मिश्रा	''१५वाँ डब्ल्यू एफ एस ए वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ एनेस्थिसिलॉजिस्ट'' २५ से ३० मार्च, २०१२ तक ब्यूनॉस एयरेस, अर्जेन्टीना में सम्पन्न।
१९.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० श्याम सरन वैश, सहायक आचार्य	''जैव-प्रौद्योगिकी का एशियन कांग्रेस-२००९'' २८ से ३० सितम्बर, २०११ तक शंघई, चीन में सम्पन्न।
२०.	कवक विज्ञान और पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० कालिका प्रसाद सिंह	''जैव-प्रौद्योगिकी का एसियन कांग्रेस-२००९'' २८ से ३० सितम्बर, २०११ तक शंघई, चीन में सम्पन्न।
२१.	पशुपालन और डेरी उद्योग, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० दिनेश चन्द्र राय	''बिजनेस मैनेजमेन्ट कान्फ्रेन्स २०११'' २८ से ३० सितम्बर, २०११ तक क्वाजुलु-नटल विश्वविद्यालय, डरबन, दक्षिण अफ्रीका में सम्पन्न।
२२.	प्रसार शिक्षा, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० दीपक डे	''आई ए एम सी आर सम्मेलन २०११: मीडिया एवं संचार अनुसंधान का अन्तर्राष्ट्रीय संघ'' १३ से १७ जुलाई, २०११ तक कादिर हस विश्वविद्यालय, तुर्की में सम्पन्न।
२३.	कीट एवं कृषि जीव विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० नरेन्द्र नाथा सिंह	''प्रकृति उर्जाओं पर ५वाँ अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशला'' ५ से ७ अगस्त, २०११ तक हूर नीयर माल्मो, स्वीडन में सम्पन्न।
२४.	शाक्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० रमेश कुमार सिंह	''२३वाँ एसियन-पेसिफिक वीड सांइस सोसाइटी कान्फ्रेंस'' २६ से २९ सितम्बर, २०११ तक क्वीन्सलैण्ड, आस्ट्रेलिया में सम्पन्न।
२५.	शाक्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० उदय प्रताप सिंह	''संरक्षण कृषि पर ५वाँ विश्व कांग्रेस साथ में दूसरा फार्मिंग सिस्टम्स डिजाइन कान्फ्रेन्स'' २६ से २९ सितम्बर, २०११ तक ब्रिस्बेन आस्ट्रेलिया में सम्पन्न।
२६.	आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० जय प्रकाश शाही	''११वाँ एसियन मक्का सम्मेलन'' ७ से ११ नवम्बर, २०११ तक नैनिंग, चीन में सम्पन्न।
२७.	कवक एवं पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० रमेश चन्द	''सी एस आई एस ए गेहूँ प्रजनन (आब्जेक्टिव ४) पर दूसरा वार्षिक रीव्यू मीटिंग'' ६ से १० सितम्बर, २०११ तक काठमाण्डू, नेपाल में सम्पन्न।
२८.	आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० वी० के० मिश्रा	''सी एस आई एस ए गेहूँ प्रजनन (आब्जेक्टिव ४) पर दूसरा वार्षिक रीव्यू मीटिंग'' ६ से १० सितम्बर, २०११ तक काठमाण्डू, नेपाल में सम्पन्न।
२९.	आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० लाल चन्द प्रसाद	''सी एस आई एस ए गेहूँ प्रजनन (आब्जेक्टिव ४) पर दूसरा वार्षिक रीव्यू मीटिंग'' ६ से १० सितम्बर, २०११ तक काठमाण्डू, नेपाल में सम्पन्न।
३०.	आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० बी०अरूण, सहायक आचार्य	''सी एस आई एस ए गेहूँ प्रजनन (आब्जेक्टिव ४) पर दूसरा वार्षिक रीव्यू मीटिंग'' ६ से १० सितम्बर, २०११ तक काठमाण्डू, नेपाल में सम्पन्न।
३१.	कृषि अर्थशास्त्र, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० साकेत कुशवाहा	''सी एस आई एस ए गेहूँ प्रजनन (आब्जेक्टिव ४) पर दूसरा वार्षिक रीव्यू मीटिंग'' ६ से १० सितम्बर, २०११ तक काठमाण्डू, नेपाल में सम्पन्न।
३२.	पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० आलोक झा	''मैरी क्युरी रिसर्चर सिम्पोजियम साइंस-पैशन, मिशन, रेस्पान्सिविलिटी'' २५ से २७ सितम्बर, २०११ तक वर्सा, पोलैण्ड में सम्पन्न।
३३.	प्रसार शिक्षा, कृषि विज्ञान संस्थान	डॉ० बासवप्रभु जिरली, सहायक आचार्य	''५वाँ जी सी आर ए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' २ से ४ दिसम्बर, २०११ तक साउथ चाइना नारमल युनिवर्सिटी, गौंगजदू, चीन में सम्पन्न।
३४.	शस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० राम प्रताप सिंह	''पहला शिमाड्जु ग्लोबल टेक्नोलॉजी फोरम ऑफ फूड सेफ्टी २०११'' ९ से ११ नवम्बर, २०११ तक मैरिना बे सैन्ड्स, सिंगापुर में सम्पन्न।
३५.	पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० आलोक झा	''पहला शिमाड्जु ग्लोबल टेक्नोलॉजी फोरम ऑफ फूड सेफ्टी २०११'' ९ से ११ नवम्बर, २०११ तक मैरिना बे सैन्ड्स, सिंगापुर में सम्पन्न।

३६.	प्रसार शिक्षा, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० दीपक दे	''संचार, शिक्षा विकास और परिवर्तन पर ५वाँ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' २ से ४ दिसम्बर, २०११ तक साउथ चाइना नारमल युनिर्वसिटी, गौंगजहू, चीन में सम्पन्न।
३७.	कवक एवं पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान संस्थान	प्रो० रमेश चन्द	''मक्का लांच और गेहूँ सीजीइएआर शोध कार्यक्रम'' १६ से २० जनवरी, २०१२ तक मेक्सिससोसिटी, मेक्सिसो में सम्पन्न।
३८.	भूगोल, विज्ञान संकाय	डॉ० रविशंकर सिंह	''अमेरिकन भूगोलवेत्ता संघ'' का वार्षिक बैठक १२ से १६ अप्रैल, २०११ तक वाशिंगटन डी.सी., यू.एस.ए. में सम्पन्न।
३९.	रसायन विज्ञान, विज्ञान संकाय	डॉ० प्रेम प्रकाश सोलंकी, सहायक आचार्य	''विश्व नवीनीकरण उर्जा कांग्रेस २०११'' ८ से ११ मई, २०११ तक लिंकोपिंग विश्वविद्यालय, स्वीडेन में सम्पन्न।
४०.	रसायन विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० भीम बली प्रसाद	''विकसित सामग्री २०११ पर पहला अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस'' १३ से १६ मई, २०११ तक जिनान, चीन में सम्पन्न।
४१.	सांख्यिकी, विज्ञान संकाय	प्रो० के.एन.एस. यादव	''जापान और भारत के बीच बिलाटेरल एक्सचेंज प्रोग्राम(इन्सा)'' २६ मई से १५ जून, २०११ तक बासदा विश्वविद्यालय, टोक्यो, जापान में सम्पन्न।
४२.	जैव रसायन विज्ञान संकाय	डॉ० सूर्य प्रताप सिंह, संयुक्त आचार्य	''अंत:स्त्रावी समाज का ९३वाँ वार्षिक बैठक एवं एक्सपो'' ४ से ७ जून २०११ तक बूस्टन, यू.एस.ए. में सम्पन्न।
४३.	सांख्यिकी, विज्ञान संकाय	प्रो० विजय कुमार सिंह	''प्रयुक्त एवं अभियांत्रिकी गणित का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन २०११'' ६ से ८ जुलाई, २०११ तक लंदन में सम्पन्न।
४४.	रसायन विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० यू.एस. राय	(i) ''लेसर इनड्यूस्ड ब्रेकडाउन स्पेक्ट्रास्कोपी-२०११'' तक क्लीयरवाटर बीच, एफ एल, यू. एस. ए. में सम्पन्न। (ii) संगणन रसायन पर १०वां दक्षिणी स्कूल एवं वस्तुपरक विज्ञान सम्मेलन २८ से २९ जुलाई, २०११ तक जैक्सन राज्य विश्वविद्यालय, एम एस, यूएसए में सम्पन्न।
४५.	भौतिकी विज्ञान, विज्ञान संकाय	डॉ० भवानी प्रसाद मंडल, संयुक्त आचार्य	''गैर-हरमिटियन ऑपरेटरों के साथ क्वाण्टम भौतिकी'' पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला १५ से २५ जून, २०११ तक ड्रेसडेन, जर्मनी में सम्पन्न।
४६.	संगणक विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० एस.के. बसु	''इन्टरनेट प्रौद्योगिकी एवं उपयोगों पर चौथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' ६ से ९ सितम्बर, २०११ तक ब्रेक्सहम, नार्थ वेल्स, यू.के. में सम्पन्न।
४७.	भौतिकी विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० पी.एन. गुप्ता	''सिंगापुर में विशिष्ट प्रौद्योगिकियों के लिये सामग्री पर छठवां द्वैवार्षिक सम्मेलन'' २६ जून से १ जुलाई, २०११ तक सुन्टेक, सिंगापुर में सम्पन्न।
४८.	वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय	डॉ० अरूण मिश्रा, संयुक्त आचार्य	''यूरोपियन माइक्रोबॉयोलाजिस्ट का चौथा कांग्रेस (एफ ई एम एस २०११)'' २६ से ३० जून, २०११ तक जेनेवा, स्वीट्जरलैण्ड में सम्पन्न।
४९.	भौतिकी विज्ञान, विज्ञान संकाय	डॉ० राजेन्द्र कुमार सिंह	''आयनिक द्रवों पर चौथा कांग्रेस'' १५ से १८ जून, २०११ तक वाशिंगटन, डी सी, यू.एस.ए. में सम्पन्न।
५०.	जैव रसायन, विज्ञान संकाय	डॉ० राकेश कुमार सिंह, सहायक आचार्य	''अमेरिकन डायबिटिक संघों का ७१वाँ वैज्ञानिक सत्र'' २४ से २८ जून, २०११ तक सैन डिगो, कैलीफोर्निया, यू.एस.ए. में सम्पन्न।
५१.	भौतिकी विज्ञान, विज्ञान संकाय	डॉ० बी.के.सिंह, संयुक्त आचार्य	''फोटो पहचान में नया विकास पर ६ठवां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' ४ से ८ जुलाई, २०११ तक लिऑन, फ्रांस में सम्पन्न।
५२.	वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय	डॉ०(सुश्री) नन्दिता घोषाल, संयुक्त आचार्य	''इन्सा के अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग/विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत नामांकन'' १४ सितम्बर से १४ अक्टूबर, २०११ तक अबरदीन विश्वविद्यालय, स्काटलैण्ड, यू.के. में सम्पन्न।
५३.	रसायन विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० लल्लन मिश्रा	''समन्वयन एवं बायोइनआरगेनिक रसायन'' पर २३वाँ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ५ से १० जून, २०११ तक स्लोवक टेक्निकल युनिर्वसिटी, स्मोलेनाइस, स्लोवाकिया में सम्पन्न।

५४.	भू-विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० रामाश्रय प्रसाद सिंह	''भूमि जल अनिश्चित भविष्य में हमारी सुरक्षा के स्त्रोत'' पर अन्तर्राष्ट्रीय द्वैवार्षिकी सम्मेलन १९ से २१ सितम्बर, २०११ तक सी एस आई आर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन केन्द्र, प्रिटोरिया, दक्षिण अफ्रीका में सम्पन्न।
५५.	सांख्यिकी, विज्ञान संकाय	प्रो० सत्यन्शु कुमार उपाध्याय	(i) ''अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन- संख्यिकी २०११, कनाडा/आई एम एस टी २०११- एफ आई एम २०वाँ, १ से ४ जुलाई २०११ तक कनकार्डिया विश्वविद्यालय, मॉनट्रीयल, कनाडा में सम्पन्न। (ii) ''वेएसियन सांख्यिकी'' पर वार्तालाप एवं संयुक्त शोध के लिये ४ से ८ जुलाई, २०११ तक टोरोन्टो विश्वविद्यालय (सम्मेलन के तुरन्त बाद) की ओर भ्रमण।
५६.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो० ब्रज राज कुमार सिन्हा	''एसेसिंग द कम्प्लेक्साइटीज ऑफ साउथ एसियन माइग्रेशन'' १९ से २२ मई २०११ तक विलफ्रिड लाउरियर विश्वविद्यालय, कनाडा में सम्पन्न।
५७.	जन्तु विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो०(सुश्री) चन्दना हल्दर	''प्रकाश जैविकी'' पर ५वाँ एशिया ओसेनिया सम्मेलन ३० जुलाई से १ अगस्त, २०११ तक नारा, जापान में सम्पन्न।
५८.	भूगोल, विज्ञान संकाय	प्रो० राणा पी.बी. सिंह	(i) ''बनारस पुनर्भ्रमण- स्कॉलरली पिलग्रिमेजेज टू द सिटी ऑफ लाइट'' ७ से ९ अक्टूबर, २०११ तक एन टी एन यू ट्रान्धियम, नार्वे में सम्पन्न। (ii) ''सांस्कृतिक, भूगोल एवं धर्मिक अध्ययन पर एक संगोष्ठी ११ से १३ अक्टूबर, २०११ तक गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय, स्वीडेन में सम्पन्न।
५९.	भू-विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० राजेश कुमार श्रीवास्तव	(i) ''लार्ज इग्नीयस प्रोविन्सेस ऑफ एशिया, मेन्टली प्लमेस एण्ड मेटालॉजेनी पर अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद २० से २३ अगस्त, २०११ तक इरकुत्स्क, रसिया में सम्पन्न। (ii) ''प्रोटेरोज्वास लार्ज इग्नीयस प्रोविन्सेस एण्ड देअर डीक स्वार्म्स ऑफ इण्डिया शील्ड'' पर व्याख्यान १६ अगस्त से १९ अगस्त, २०११ तक चीन विज्ञान अकादमी, बीजिंग में सम्पन्न।
६०.	पर्यावरण एवम् संमोष्य विकास संस्थान	डॉ० आशीष कुमार श्रीवास्तव, सहायक आचार्य	''प्रकाश जैविकी'' पर ५वाँ एशिया ओसेनिया सम्मेलन ३० जुलाई से १ अगस्त, २०११ तक नारा, जापान में सम्पन्न।
६१.	वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० अश्विनी कुमार राय	सन् २०११ से १२ में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत ३ सप्ताह के लिये नामांकन ३ अक्टूबर से २३ अक्टूबर, २०११ तक जापान में सम्पन्न।
६२.	पर्यावरण एवम् संपोष्य विकास संस्थान	डॉ० राजीव प्रताप सिंह, सहायक आचार्य	''सम्पोष्यता सम्मेलन २०११ के लिये अन्तर्राष्ट्रीय अभियांत्रिकी'' १४ से १६ अक्टूबर, २०११ तक सैन्स मलेशिया विश्वविद्यालय, पेनंग, मलेशिया में सम्पन्न।
६३.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो०(सुश्री) नील कमल रस्तोगी	''चींटी पर ८वाँ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' १७ से २९ अक्टूबर, २०११ तक हट याई, थाईलैण्ड में सम्पन्न।
६४.	वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० शशी भूषण अग्रवाल	''नीयर-टर्म एअर क्वालिटी एण्ड क्लाइमेट बेनीफिट्स-प्रमोटिंग इन्टरनेशनल को-आपरेशन एण्ड फेसिलिटेटिंग एक्शन'' पर संगोष्ठी १७ से १८ अक्टूबर, २०११ तक ढाका, बांग्लादेश में सम्पन्न
६५.	वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० (सुश्री) मधूलिका अग्रवाल	''फसल उत्पादन एवं साधना उपयोग'' शीर्षक पर कार्यशाला ७ से ११ सितम्बर, २०११ तक हैदियन, बीजिंग, चीन में सम्पन्न।
६६.	वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० रवि कुमार अस्थाना	''६ठवां एसियन पेसिफिक साइकोलॉजिकल फोरम'' ९ से १४ अक्टूबर, २०११ तक येसू, कोरिया में सम्पन्न।
६७.	जीवन विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० एम.के. ठाकुर	गेरन्टोलॉजी एवं गेरियाट्रिक्स का ९वाँ एशिया। ओसिनिया रीजनल कांग्रेस २३ से २७ अक्टूबर, २०११ तक मेलबोरने, आस्ट्रेलिया में सम्पन्न।
६८.	रसायन विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० कृष्णा नन्द सिंह	''रसायन एवं उपचायक विरोधी जीव पर १०वाँ इण्डो-इटलियन कार्यशाला'' १० से १२ नवम्बर, २०११ तक रोम के साइन्जा विश्वविद्यालय, इटली में सम्पन्न।

६९.	पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान	डॉ० जय प्रकाश वर्मा, सहायक आचार्य	''पर्यावरण उद्योग एवं प्रयुक्त सूक्ष्मीजीव पर चौथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन'' १४ से १६ सितम्बर, २०११ तक टोरेमोलिनस, मलगा, स्पेन में सम्पन्न।
७०.	भौतिक विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० संजय कुमार	''ग्रोथ ऑफ हिरैकिकल फंक्शनल मैटेरियल्स इन कॉम्प्लेक्स फ्लुड्स'' पर व्याख्यानों की श्रंखला प्रदान करने के लिये ११ जुलाई से ३० जुलाई, २०११ तक चीन विज्ञान अकादमी, बीजिंग में आमंत्रित।
७१.	भूगोल विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० राणा पी.बी.सिंह	''२०११ अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद: संपोष्य ग्रामीण भूदृश्य एवं एशिया पेसिफिक रीजन में प्लानिंग'' ५ से ८ दिसम्बर, २०११ तक एस.एन.यू., सियोल, कोरिया में सम्पन्न।
७२.	सांख्यिकी, विज्ञान संकाय	प्रो० के.एन.एस. यादव	''शिक्षा एवं विश्व जननक्षमता परिवर्तन'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ३० नवम्बर, से १ दिसम्बर, २०११ तक वियन्ना, आस्ट्रेलिया में सम्पन्न।
७३.	पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान	डॉ० तिर्थंकर बनर्जी, सहायक आचार्य	''मुक्त विज्ञान बैठक'' २८ एवं २९ नवम्बर, २०११ को जकार्ता, इण्डोनेशिया में सम्पन्न एवं बाद में १ से ३ दिसम्बर, २०११ तक आयोजित मास्टर क्लास बैलेन्स डेवलेपमेन्ट कार्यक्रम, योग्यकर्ता में सहभागिता के लिये आमन्त्रित।
७४.	जीव विज्ञान, विज्ञान संकाय	प्रो० के.पी. ज्वॉय	''एशिया एवं तुलनात्मक इण्डोक्रानोलॉजी ओसेनिया समाज'' का ७वाँ कांग्रेस ३ से ७ मार्च, २०१२ तक कुआल, लुम्पर, मलेशिया में सम्पन्न।
७५.	पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान	डॉ० पी.सी. अभिलाष, सहायक आचार्य	''प्लेनेट अण्डर प्रेशर-न्यू नॉलेज टूवार्ड्स सोलूशन'' पर सम्मेलन २६ से २९ मार्च २०१२ तक लंदन में सम्पन्न।
७६.	वनस्पति विज्ञान, विज्ञान संकाय	डॉ० जितेन्द्र पाण्डेय, संयुक्त आचार्य	''प्लेनेट अण्डर प्रेशर-न्यू नॉलेज टूवार्ड्स सोलूशन'' पर सम्मेलन २६ से २९ मार्च २०१२ तक लंदन में सम्पन्न।
७७.	अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान, संकाय	डॉ० राजीव कुमार भट्ट, संयुक्त आचार्य	''अर्थशास्त्र, व्यापार एवं विकास पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन २०११'' १ से ३, २०११ तक बलि, इण्डोनेशिया में सम्पनन।
७८.	इतिहास, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० ताबिर कलाम, सहायक आचार्य	''कीप मेमोरिज ऑफ एनेस्टोर्स टेबल्स एशियन फूड कल्चरल हेरिटेज फोरम'' १७ से २० अगस्त, २०११ तक हंगज्हू ज्हेजियंग चीन में सम्पन्न।
७९.	समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० मंजीत कुमार चतुर्वेदी	''सहकारी समाज, आर्थिक एवं सांस्कृतिक योग्यताओं'' पर पहला अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन १६ से १७, २०११ तक किश आइसलैण्ड, इस्लामिक इरान गणतन्त्र में सम्पन्न।
८०.	अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान, संकाय	डॉ० राकेश रमण, संयुक्त आचार्य	''फैकल्टी डेवलपमेन्ट प्रोग्राम'' २ से ७ मई, २०११ तक गइड्डु, चुरवा, भूटान में सम्पन्न।
८१.	सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० (सुश्री) विनीता चन्द्रा, सहायक आचार्य	(i) ''मौलिक अवकाश: एन इस्टर्न एप्रोच टू द इथोस ऑफ वर्क'' विषय पर गेस्ट लेक्चर २० से २३ अक्टूबर, २०११ तक धर्म एवं सकारात्मक मनोविज्ञान स्कूल, क्लेरमॅन्ट ग्रेज ुएट युनिर्वसिटी, कैलिफोंनिया, यू.एस.ए. में सम्पन्न। (ii) ''विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में सीरिज ऑफ क्लास लेक्चर्स २० नवम्बर से १ दिसम्बर, २०११ तक कलामजू कालेज, यू.एस.ए. में सम्पन्न।
८२.	अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय	डॉ० राजीव कुमार भट्ट, संयुक्त आचार्य	''पर्याप्त अर्थव्यवस्था का अर्थ: समाज अर्थव्यवस्था एवं व्यवसाय में थ्योरी एवं प्रैक्टिस'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन १६ से १७ फरवरी, २०१२ तक बैंकाक, थाइलैण्ड में सम्पन्न।
८३.	मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान संकाय	प्रो० आर.सी. मिश्राा	''आमन्त्रित शोध प्रस्तुत एवं डिस्कसैन्ट के साथ वैल्यू ऑफ चिन्ड्रन कान्फ्रेस २८ से ३१ मार्च, २०११ तक कॉन्सटैनस जर्मनी में सम्पन्न।
८४.	पालि एवं बौद्ध अध्ययन, कला संकाय	प्रो० विमलेन्द्र कुमार	''यूनाइटेड नेशन्स डे ऑफ बेसक का ८वाँ सम्मेलन'' १२ से १४ मई, २०११ तक बैंकाक, थाइलैण्ड में सम्पन्न।
८५.	पालि एवं बौद्ध अध्ययन, कला संकाय	डॉ० सिद्धार्थ सिंह, संयुक्त आचार्य	''महामहिम के ८४वाँ जन्म दिवस एव सामाजिक-आर्थिक विकास में बौद्ध सद्गुणों पर यूनाइटेड नेशन्स डे ऑफ वेसकोत्सव'' पर अन्तर्राष्ट्रीय समारोह १२ से १४ मई, २०११ तक आयुध्य, थाईलैण्ड में सम्पन्न।

८६.	शारीरिक शिक्षा, कला संकाय	डॉ० एन.बी. शुक्ला, संयुक्त आचार्य	(i) ''अन्तर्राष्ट्रीय स्पोर्टस लॉ एसोशिएसन'' का १७वाँ विश्व आई ए एस एल स्पोर्टस लॉ कांग्रेस २७ से ३० सितम्बर, २०११ तक मास्को में सम्पन्न। (ii) ''एकीकृत दवाइयों का ४९वाँ विश्व कांग्रेस'' २५ से २६ नवम्बर, २०११ तक कोलम्बो, श्रीलंका में सम्पन्न। (iii) ''क्रोनिक डेडली डिजिजेज मैनेजमेन्ट'' पर ७वाँ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन २६ से २८ जनवरी, २०१२ तक जीया हॉल, खुल्ना, ब ांग्लादेश में सम्पन्न।
८७	दर्शनशास्त्र एवं धर्म, कला संकाय	प्रो० देवेन्द्र नाथ तिवारी	''किकटूफ कान्फ्रेन्स ऑफ गो: इण्डिया प्रोजेक्ट ऑफ गोथेनबर्ग युनिर्वसिटीए स्वीडेन'' ७ से ९ जून, २०११ तक गोथेनबर्ग, स्वीडन में सम्पन्न।
८८.	पालि एवं बौद्ध अध्ययन, कला संकाय	प्रो० लाल जी	''जुआनगंज पर'' चौथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन २ से ६ अक्टूबर, २०११ तक नया जुआन जंग मन्दिर, ज्हेंगजहू, चीन में सम्पन्न।
८९.	अंग्रेजी, कला संकाय	डॉ०(सुश्री) अर्चना कुमार, संयुक्त आचार्य	''प्रतिज्ञाबद्ध श्रम नये परिप्रेक्ष्य'' पर अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन ५ से ७ दिसम्बर, २०११ तक मॉरीशस विश्वविद्यालय में सम्पन्न।
९०.	भूगोल अनुभाग, महिला महाविद्यालय	डॉ० बिक्रमादित्य कुमार चौधरी	''रिसाइकलिंग सिरीज'' पर इन्टर-एसिया राउण्डटेबुल'' १ से २ अगस्त, २०११ तक राष्ट्रीय सिंगापुर विश्वविद्यालय, सिंगापुर में सम्पन्न।
९१.	भौतिकी अनुभाग, महिला महाविद्यालय	डॉ०(सुश्री) स्वाति, संयुक्त आचार्य	''१७वाँ अन्तर्राष्ट्रीय जैव भौतिकी कांग्रेस'' ३० अक्टूबर से ३ नवम्बर, २०११ तक बीजिंग, चीन में सम्पन्न।
९२.	प्रबन्ध शास्त्र अध्ययन	डॉ० पी.वी. राजीव, संयुक्त आचार्य	(i) ''प्रौद्योगिकी एवं व्यवसाय प्रबन्धन'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन २६ से २८ मार्च, २०१२ तक दुबई में सम्पन्न। (ii) ''आर्थिक एवं सामाजिक विकास'' पर १३वाँ अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण सम्मेलन सम्मेलन ३ से ५ अप्रैल, २०१२ तक मास्को, रसिया में सम्पन्न।
९३.	प्लास्टिक कला दृश्य, कला संकाय	डॉ. मदन लाल गुप्ता, संयुक्त आचार्य	''क्रिएशन एण्ड वॉयस ऑफ वुड्स- २०११ द आर्ट इक्जीवेशन इन द फॉरेस्ट ऑफ योकोहमा'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन एवं परिसंवाद ३१ जुलाई से १४ अगस्त, २०११ तक योकोहमा, जापान में सम्पन्न।

परिशिष्ट - ६

सीधी नियुक्ति एवं पदोन्नति

(१ अप्रैल २०११ से ३१ मार्च २०१२)

शिक्षण कर्मचारी की नियुक्ति

पद का नाम	सामान्य	अनु. जाति	अनु. जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	अल्पसंख्यक	योग
आचार्य	-	-	-	-	-	-
संयुक्त आचार्य	-	-	-	-	-	-
सहायक आचार्य	०१ (VI)	-	-	-	-	०१

गैर-शिक्षण कर्मचारी की नियुक्ति

पद का नाम	सामान्य	अनु. जाति	अनु. जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	अल्पसंख्यक	योग
ग्रुप 'ए'	-	-	-	-	-	-
ग्रुप 'बी'	-	-	-	-	-	-
ग्रुप 'सी'	५	-	-	-	-	५
ग्रुप 'डी'	३३	४	३	१६	१	५७

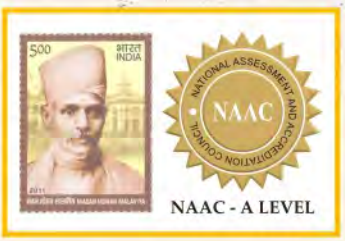

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी - २२१ ००५
Banaras Hindu University
Varanasi - 221 005

www.bhu.ac.in

admax 094152 01610